जैन विश्व भारती काशन

तेरापंथ दिग्दर्शन
१९८५-८६

॰ मुनि सुमेरमल "लाडनू"

सपादक

सं० मुनि सुमेरमल "लाडनू"

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के अमृत-महोत्सव के उपलक्ष मे
चगलपेठ (तमिलनाडु) निवासी प्रसन्नमल सुरेन्द्रकुमार
गादिया द्वारा सचालित श्रीमति शान्ता बाई
चैरिटीज ट्रस्ट द्वारा सप्रेम भेंट

मूल्य : पेंतीस रुपये / प्रथम सस्करण १९८६ / : जैन विश्व भारती, लाडनू, नागौर (राजस्थान)/मुद्रक . जैन विश्व भारती प्रेस, लाडनू-३४१ ३०६ ।

TERAPANTH DIGDARSHAN 1985-86
San Munı Sumermal 'Ladnun'
Rs. 35.

आशीर्वचन

वर्तमान की हर आहट पर समय का पहरा बैठा है। वह उसे अतीत मे ले जाता है और उस पर मौन की अमिट छाप लग जाती है। कुछ व्यक्ति ऐसे होते है जो उस आहट को स्थायित्व देने का काम करते है। इतिहास उन्ही के दिमाग की उपज है। 'तेरापन्थ दिग्दर्शन' तेरापन्थ धर्मसघ का वार्षिक इतिहास है। इतिहास की एक छोटी सी झलक इसमे दिखाई दे सकती है।

'तेरापन्थ दिग्दर्शन' का यह दूसरा वर्ष है। इसका प्रथम वर्ष अपने आप मे एक नया प्रयोग था। कोई भी नई धारा आगे बढती है तो उसमे कुछ छूटता है, कुछ जुडता है। 'तेरापन्थ दिग्दर्शन' १९८५, ८६ मे भी कुछ छोडने और कुछ जोडने का सलक्ष्य प्रयास किया गया है। पिछले वर्ष के इतिहास मे रही कमियो को परिमार्जित करने के बाद भी इसमे परिष्कार की सभावना सदा रहेगी। किसी भी लेखन या सम्पादन मे परिष्कार की दृष्टि जितनी स्पष्ट और उदार होती है, कृति का महत्त्व उतना ही बढता है।

पाठको का यह दायित्व है कि वे पुस्तक को पैनी दृष्टि से पढे और उसकी तटस्थ समीक्षा-समालोचना करे। पाठको की आलोचना की धार जितनी तीखी होगी, लेखक और सपादक की उतनी ही सजगता बढेगी। लेखक, सपादक भी अपने पुरुषार्थ को परिमार्जित करने मे अपनी सफलता समझे और विकास की सभावना देखे, यह आवश्यक है।

इतिहास के सकलन और सम्पादन का काम पूरी तरह से श्रम और शक्ति के नियोजन की अपेक्षा रखता है। आन्तरिक लगन और उत्साह के बिना ऐसा काम होना बहुत कठिन है। प्रस्तुत इतिहास के सकलन, सम्पादन मे मुनि सुमेरमल (लाडनू) ने निष्ठा और श्रमशीलता के साथ काम किया है। मै चाहता हू कि 'तेरापन्थ दिग्दर्शन' एक ऐसा ऐतिहासिक दस्तावेज बने, जो आने वाली पीढियो को युग-युग तक प्रेरणा दे सके। इसके लिए एक बात की ओर विशेष ध्यान देना है कि इसमे प्रशस्ति न हो, केवल प्रस्तुति हो। यथार्थ को प्रस्तुत करने का दृष्टिकोण ही इतिहास को एक निष्कलक दर्पण बना सकता है, जिसमे अतीत की प्रत्येक आकृति का सही रूपाकन सभव है।

२८-६-८६

—आचार्य तुलसी

स्वास्थ्य निकेतन, जैन विश्व भारती

लाडनू

मंगल-संदेश

पूरे मार्ग पर साथ चलना सम्भव नही होता, इतना ही बहुत है, कि कोई सही-सही दिशा दिखा दे। तेरापथ अनुगामिन और प्रगतिशील धर्मसघ है और उसे आचार्यश्री तुलसी जैसे प्रगतिशील आचार्य का नेतृत्व उपलब्ध है। उसने शतशाखी वट वृक्ष की भाति सभी दिशाओ मे विस्तार किया है। उसका समग्रता से लेखा-जोखा प्रस्तुत करना किसी लेखक के वश की बात नही, फिर भी उसका दिशादर्शन कर देना अपने आपमे एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। मुनि सुमेरमलजी 'लाडनू' तथा उनके सहयोगी मुनि उदितकुमार ने दिशा सूचन के लिये जो प्रयत्न किया है, वह प्रशस्य है। इससे ऐतिहासिक तथ्यो की सुरक्षा होगी, यह ग्रथ अगले वर्ष तथा चिर भविष्य के लिये प्रेरणासूत्र बना रहेगा।

२६-६-८६ —युवाचार्य महाप्रज्ञ

लाडनू, जैन विश्व भारती

प्राक्कथन

तेरापथ जैन धर्म का अर्वाचीन सस्करण है । भगवान महावीर के सिद्धान्तो पर पूर्ण समर्पित यह तेरापथ धर्मसघ अपने सस्थापक आचार्य भिक्षु के प्रति इस बात के लिए अत्यन्त आभारी रहेगा कि उन्होने धर्मसघ मे कुछ ऐसी लक्ष्मण रेखाए खीची हैं, जिसके भीतर किसी भी रावण की घुसपैठ नही होती । आचार्य भिक्षु ने एक आचार्य, एक आचार, एक विचार जैसे महत्व-पूर्ण सूत्र तेरापथ को दिये । जिनके बदौलत यह धर्मसघ एक आचार्य के नेतृत्व व मार्गदर्शन मे एक आचार और एक विचार की मौलिकता को कायम रखते हुए निरतर गतिमान है ।

सम्प्रति आचार्यश्री तुलसी के गतिशील नेतृत्व मे वर्तमान का तेरापथ विविधमुखी प्रवृत्तियो का केन्द्र बन गया है । आचार्यश्री ने साधु-साध्वियो के लिए जहा नूतन आयाम उद्घाटित किये है वहा उन्होने समाज को एक नई दिशा दी है । तेरापथ का मुख्य ध्येय आत्म-साधना है । इसके साथ शिक्षा, सेवा, यात्रा, जनसपर्क आदि भी साधु-साध्वियो के जीवन के अग हैं । वे अपनी साधना मे अहर्निश सलग्न रहते ही हैं, साथ ही अपने सपर्क मे आने वालो को अपनी अनुभूतिया बाटते हैं, दिशादर्शन करते हैं, उनके चरित्र-उन्नयन की प्रेरणा देते है । कुल मिलाकर 'तिन्नाण-तारयाण' के आगम वाक्य को चरितार्थ करते हुए वे स्व-कल्याण के साथ पर कल्याण की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है ।

पूरे वर्ष मे हुये कार्यक्रमो तथा घटित घटनाओ का समग्र सकलन किसी लेखक के लिए सभव नही है । उनमे से कुछ प्रतिशत सकलन भी हो जाये, तो इतिहास की अपूर्व थाती बन सकती है । तथ्यो के सकलन मे तेरापथ मे सदैव सजगता रही है, तब ही तरापथ के आदि से अब तक हुए साधु-साध्वियो का विवरण सुरक्षित है ।

पूर्व वष की भाति इस वर्ष भी तेरापथ की बहुआयामी प्रवृत्तियो के सकलन का प्रयास किया गया है । आचार्यश्री जहा स्वय की साधना मे सजग हैं—नियत समय पर उठना, ध्यान स्वाध्याय करना, साधु-साध्वियो को पढाना,

व सभाल करना आदि। वहा हजारो-हजारो लोगो के नैतिक जीवन को उन्नत बनाने, व्यसन मुक्त बनाने, दूर दूर से समागत अध्यात्म प्रेमियो को मार्गदर्शन करने जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य भी उनकी जीवन-चर्या के अग है। बहत्तर बसन्त पार करने के बावजूद वे पन्द्रह-बीस किलोमीटर चल लेते है। दो-तीन सभाओ को सबोधित करते हैं। क्षेत्रगत बुराई को मिटाने का सलक्ष्य यत्न करते है। इन सारे कार्य-कलापो के सपादन मे अनेको मधुर प्रसग घटित हो जाते हैं। जो न केवल रोचक, प्रेरणादायक व गुदगुदी पैदा करने वाले होते है, अपितु इतिहास की अमूल्य धरोहर बन जाते है।

जनसपर्क की दृष्टि से आलोच्य वर्ष बहुत महत्त्वपूर्ण रहा। हजारो-हजारो देहाती लोगो से सपर्क हुआ। भोले-भाले देहाती लोग आचार्यश्री को घटो-घटो घेरे रहते, अपने जीवन की समस्या का समाधान पूछते, अपनी ही भाषा मे आचार्यश्री से समाधान सुनकर गद्गद हो उठते। बहुतो के मुख से अनायास निकल पडता—'भगवान आये हैं, भगवान। पैसे टके को छूते नही, भेट पूजा लेते नही, केवल खोट मागते हैं, दो, इनको खोट दो'। देखते-देखते बीडियो के बडल टूट जाते, तबाखू की डिबिया फेंक दी जाती, वर्षो से शराब पी रहे लोगो की शराब छूट जाती। सैकडो-सैकडो सामाजिक कार्यकर्ता, राजनेता सम्पर्क मे आते रहे है। आचार्यश्री का द्वार सबके लिए खुला है। कोई भी आकर मार्गदर्शन पा सकता है। आज आचार्य तुलसी नैतिक अभियान के पर्याय बन गये है। सार्वजनिक स्वच्छता के प्रतीक बन गये हैं।

देश की जटिल समस्या के समाधान मे आचार्यवर निरन्तर सक्रिय रहते है। उलझी हुई पजाब-समस्या के समाधान हेतु अकाली दल के दोनो नेता श्री लोगोवाल व श्री बरनाला से आचार्यवर की महत्वपूर्ण बातचीत हुई। बातचीत के बाद एक सप्ताह के भीतर पजाब समझौता हो गया। पूरे राष्ट्र ने राहत की सास ली। उसके तत्काल बाद गृहमत्री ने आचार्यश्री के पास आकर आभार व्यक्त किया।

प्रस्तुत ग्रथ ८ नवबर १९८४ से १७ फरवरी, १९८६ तक के ४६७ दिनो की पूरी गतिविधियो, कार्यक्रमो का सकलन है। इस अवधि मे आचार्यवर के कार्यक्रमो, सस्मरणो, यात्रा-प्रसगो, भेटवार्ताओ का विवरण खड एक का मुख्य प्रतिपाद्य है। यह वर्ष अमृत महोत्सव का वर्ष है। आचार्यवर की पचास वर्षीय धर्मशासना की महानतम उपलब्धियो को यत्किचित प्रस्तुति देने हेतु युवाचार्यश्री ने अमृत महोत्सव के समायोजना की

व सभाल करना आदि। वहा हजारो-हजारो लोगो के नैतिक जीवन को उन्नत बनाने, व्यसन मुक्त बनाने, दूर-दूर से समागत अध्यात्म प्रेमियो को मार्गदर्शन करने जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य भी उनकी जीवन-चर्या के अग ह। वहत्तर बसन्त पार करने के बावजूद वे पन्द्रह-बीस किलोमीटर चल लेते है। दो-तीन सभाओ को सबोधित करते है। क्षेत्रगत बुराई को मिटाने का सलक्ष्य यत्न करते है। इन सारे कार्य-कलापो के सपादन मे अनेको मधुर प्रसग घटित हो जाते हैं। जो न केवल रोचक, प्रेरणादायक व गुदगुदी पैदा करने वाले होते हैं, अपितु इतिहास की अमूल्य धरोहर बन जाते है।

जनसपर्क की दृष्टि से आलोच्य वर्ष बहुत महत्त्वपूर्ण रहा। हजारो-हजारो देहाती लोगो से सपर्क हुआ। भोले-भाले देहाती लोग आचार्यश्री को घटो-घटो घेरे रहते, अपने जीवन की समस्या का समाधान पूछते, अपनी ही भाषा मे आचार्यश्री से समाधान सुनकर गद्गद हो उठते। बहुतो के मुख से अनायास निकल पडता—'भगवान आये है, भगवान। पैसे टके को छूते नही, भेट पूजा लेते नही, केवल खोट मागते है, दो, इनको खोट दो'। देखते-देखते बीडियो के बडल टूट जाते, तबाखू की डिबिया फेक दी जाती, वर्षो से शराब पी रहे लोगो की शराब छूट जाती। सैकडो-सैकडो सामाजिक कार्यकर्ता, राजनेता सम्पर्क मे आते रहे है। आचार्यश्री का द्वार सबके लिए खुला है। कोई भी आकर मार्गदर्शन पा सकता है। आज आचार्य तुलसी नैतिक अभियान के पर्याय बन गये है। सार्वजनिक स्वच्छता के प्रतीक बन गये हैं।

देश की जटिल समस्या के समाधान मे आचार्यवर निरन्तर सक्रिय रहते है। उलझी हुई पजाब-समस्या के समाधान हेतु अकाली दल के दोनो नेता श्री लोगोवाल व श्री बरनाला से आचायवर की महत्वपूर्ण बातचीत हुई। बातचीत के बाद एक सप्ताह के भीतर पजाब समझौता हो गया। पूरे राष्ट्र ने राहत की सास ली। उसके तत्काल बाद गृहमत्री ने आचार्यश्री के पास आकर आभार व्यक्त किया।

प्रस्तुत ग्रथ ८ नवबर १९८४ से १७ फरवरी, १९८६ तक के ४६७ दिनो की पूरी गतिविधियो, कार्यक्रमो का सकलन है। इस अवधि मे आचार्यवर के कार्यक्रमो, सस्मरणो, यात्रा-प्रसगो, भेटवार्ताओ का विवरण खड एक का मुख्य प्रतिपाद्य है। यह वष अमृत महोत्सव का वर्ष है। आचार्यवर की पचास वर्षीय धर्मशासना की महानतम उपलब्धियो को यत्किचित प्रस्तुति देने हेतु युवाचार्यश्री ने अमृत महोत्सव के समायोजना की

समय पर अपेक्षित सामग्री को जुटाने मे पूरा पूरा सहयोग रहा । मुनि किशनलालजी ने प्रेक्षाध्यान व जीवन-विज्ञान की रिपोर्ट तैयार की । मुनि धनजय कुमार जी ने युवाचार्यश्री की यात्रा व अन्य विवरण को अपनी कलम से उकेरा । मुनि बालचदजी व मुनि मधुकरजी का समय-समय पर योग मिला । आदर्श साहित्य सघ से प्रकाशित होने वाली साप्ताहिक विज्ञप्ति का यथोचित उपयोग हुआ । इसके अलावा अन्य सघीय पत्र-पत्रिकाओ जैन भारती, अणुव्रत, युवादृष्टि, पाथेय, प्रेक्षाध्यान से भी सामग्री प्राप्त हुई । ग्रथ की अवधारणा मे श्री प्रेमप्रकाश अग्रवाल का योग रहा । मैं इन सबके प्रति हार्दिक आभार मानता हू ।

मेरे सहयोगी मुनि उदित कुमार का इसमे सर्वाधिक श्रम रहा है । मेरा तो केवल मार्गदशन व तथ्य सकलन रहा है । शेष सारा काय उसके द्वारा हुआ है । उसकी लेखनी ओर सशक्त बने, इसी मगल भावना के साथ उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हू ।

तेरापथ दिग्दशन का यह दूसरा वर्ष है । इसमे काफी कुछ परिष्कार हुआ है, फिर भी इसमे सशोधन-परिवर्धन का अवकाश है । आशा है आने वाले वर्ष मे ओर अधिक तथ्यो का सकलन होगा । धर्मसघ के प्रत्येक साधु-साध्वियो का धार्मिक, आध्यात्मिक प्रवृत्तियो का लेखा-जोखा इसमे अकित होगा । पुस्तक पाठको के लिये प्रेरक बने, इसी शुभाशसा के साथ ।

२९-६-१९८६ —मुनि सुमेर 'लाडनू'

स्वास्थ्य निकेतन (भिक्षु विहार)
जैन विश्व भारती, लाडनू

कर्षण

- जसोल मे मर्यादा-महोत्सव पर श्री शिवाजी भावे को सन् १९८४ का अणुव्रत पुरस्कार समर्पित ।
- मेवाड प्रवेश पर टॉडगढ मे मेवाड प्रदेशीय स्वागत ।
- गगापुर मे अमृत-महोत्सव का प्रथम चरण आयोजित व अमृत-कलश पदयात्रा का शुभारभ ।
- आमेट चातुर्मासिक प्रवेश पर अमृत-कलश मे भरे ३५ हजार ४६० सकल्प पत्र आचार्यवर को समर्पित ।
- मुमुक्षु बहिनो व समणियो का साप्ताहिक प्रेक्षा शिविर ।
- अकाली दल के अध्यक्ष श्री लोंगोवाल की आचार्यवर से पजाब-समस्या के समाधान मे महत्वपूर्ण बातचीत ।
- पजाब समझौते के तत्काल बाद केन्द्रीय गृहमत्री श्री श० भा० चह्वान का आगमन ।
- अमृत-महोत्सव के द्वितीय-चरण पर चतुर्विध धर्मसघ द्वारा भावभरा अभिनन्दन ।
- साधु-साध्वियो का नवाह्निक प्रेक्षा-प्रयोग ।
- कानोड मे पचदिवसीय श्रावक सम्मेलन ।
- उदयपुर मे मर्यादा महोत्सव व अमृतम-होत्सव के तृतीय चरण का समायोजन ।
- महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह द्वारा आचार्यवर को 'भारत ज्योति' अलकरण प्रदत्त ।
- पूव गृहमत्री श्री गुलजारी लाल नदा को सन् १९८५ का अणुव्रत पुरस्कार समर्पित ।
- साध्वी श्री यशोधराजी का साध्वी नियोजिका के रूप मे मनोनयन ।
- मुनि श्री मुदित कुमार की युवाचार्यश्री के आतरिक काय मे व्यक्तिगत सहयोगी के रूप मे महत्वपूण नियुक्ति ।

खण्ड-१

खण्ड-२

परिशिष्ट

खण्ड १

एक महान् परिव्राजक

आचार्यश्री के चरण जहा टिकते है, वहा धम का पवित्र प्रवाह प्रारम हो जाता है। वातावरण मे नवीनता आ जाती है। भारी भीड जमा हो जाती है। आचार्यश्री अपने जनोपयोगी कार्यक्रमो से जनता को अवगत कराते है। वे आचरण की शुद्धि को मुख्यता देते है। अनुशासन एव ईमानदारी के गिरते हुए स्तर को ऊचा उठाने के लिए उन्होने अणुव्रत आदोलन का सूत्रपात्र किया, जिससे नैतिकता की पुर्नस्थापना को एक नया आयाम मिला।

आचार्यश्री तुलसी महान् परिव्राजक है। उन्होने अपने छोटे-छोटे कदमो से धरती के छोर को नापा है, हजारो लोगो से सपक साधा है, तथा लाखो उनके सपर्क मे आये है। शहरो की पढी-लिखी जनता को वे जीवन के सही माग की ओर गति करने का इगित करते है, वहा गावो की भोली-भाली जनता को व्यसन मुक्त एव रुढि मुक्त बनाने का सलक्ष्य प्रयास करते है। चार महीने का एक स्थान तथा शेप आठ महीनो मे पाद-विहार करते है। इस दौरान वे जनता को सयम का पाठ पढाते है।

चातुर्मास एक यादगार बन गया

जोधपुर का ऐतिहासिक चातुर्मास द नवम्बर को सानन्द सपन्न हो गया। इस चातुर्मास की सबसे बडी विशेपता यह थी सभी जाति और सभी वग के लोगो ने बिना किसी भेदभाव के आचार्यवर को सुना। राजनीति, धम, समाज एव शिक्षा आदि विभिन्न क्षेत्रो के लोग आचार्यश्री के सपक मे बराबर आते रहे। वे आचार्यश्री के असाम्प्रदायिक एव स्पष्ट विचारो से बहुत प्रभावित हुए। मरु-अनुसधान केन्द्र (काजरी) मे वैज्ञानिको के बीच आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री का 'धर्म और विज्ञान' विषय पर मार्मिक वक्तव्य हुआ। केन्द्र के इतिहास मे यह अपने ढग का पहला कार्यक्रम था। हजारो-हजारो लोग सपर्क मे आये, उनमे व्यसन मुक्ति की दिशा मे अनुठा काम हुआ। अनेक अनुसूचित परिवार सत्सस्कारी बने।

आचायवर का चातुर्मास जोधपुर के ही एक उपनगर सरदारपुरा मे हुआ। आधुनिक ढग से बसे इस उपनगर मे सौ से भी अधिक तेरापथी परिवार रहते है, छठी पाल रोड पर श्री छगनलाल तातेड के पुत्र द्वयश्री जिनेश्वर

कुमार एव श्री अमृतलाल के दो वगले है, जो परस्पर सटे हुए है, वहा आचार्यवर का चातुर्मास हुआ। पार्श्व मे मेघ गेस्ट हाउस है, जहा चातुर्मास व्यवस्था समिति का प्रधान कार्यालय था। जोधपुर वासियो द्वारा ८ नवम्बर को भावभीनी विदाई दी गई। ९ व १० को आचार्यवर जोधपुर के ही उपनगर शास्त्री नगर एव हाउसिंग बोर्ड विराजे। ११ नवम्बर को जोधपुर नगर परिषद् की सीमा समाप्त हो गई।

बाडमेर जिला मे प्रवेश

१४ नवम्बर। कोरणा / जोधपुर जिला की सीमा पारकर बाडमेर जिला मे प्रवेश किया। दूसरे दिन जिले की ओर से भावपूर्ण स्वागत किया गया।

इस अवसर पर बाडमेर के जिलाधीश श्री के० एस० मणी ने कहा—'नैतिक मूल्यो मे दिन-प्रतिदिन आ रही गिरावट एक चिन्ता का विषय है, किन्तु इस सदर्भ मे अणुव्रत एक आशा की किरण है। आचार्य तुलसी देश के एक मात्र आचार्य है जो नैतिक जागरण के लिए अनवरत प्रयत्नशील हैं।'

पचपदरा क्षेत्र के विधायक श्री अमराराम चौधरी ने कहा—'आचार्यश्री तुलसी धर्म की साक्षात् गगा है। बाडमेर के रेगिस्तानी क्षेत्र को सब प्रकार से हराभरा बनाने के लिए आपका शुभागमन हुआ है। आचार्यश्री जैन धर्म के एक सप्रदाय विशेष के आचार्य है, किन्तु आपके कार्यो को किसी वर्ग विशेप मे विभक्त नही किया जा सकता।'

पत्रकार श्री भूरचद जैन ने कहा—'मानव उत्थान के लिए आचार्यश्री जो कार्य कर रहे हैं, उसका वर्णन हमारे लिए शब्दातीत है। बाडमेर एक सीमात क्षेत्र है। आपकी कृपा से यहा कुछ ऐसे कार्य होगे, जिससे आपकी यह बाडमेर जिले की यात्रा ऐतिहासिक बन जायेगी।'

उपजिलाधीश श्री रामपालसिह चौहान, बालोतरा जिला के उपजिलाधीश श्री गुरुदयाल आर्य, विकास अधिकारी श्री रणछोडदास नामा, उपपुलिस अधीक्षक श्री विनोद बागड, कोरणा गाव के सरपच श्री सुरेन्द्र सिह तथा बाडमेर नगरपालिका के उपाध्यक्ष श्री नेमीचन्द गोलच्छा ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया।

आचार्यश्री ने अभिनन्दन के प्रत्युत्तर मे कहा—'यह स्वागत या अभिनन्दन किसी व्यक्ति का नही, त्याग का अभिनन्दन है, भारतीय सस्कृति का

अभिनन्दन है। हमारा सच्चा स्वागत तभी होगा, जब मानवीय मूल्यो को ऊपर उठाने मे आप सहयोगी बनेगे।'

१८ नवम्बर। आचार्यप्रवर के प्रवचन से प्रभावित होकर सैकडो ग्रामीणो ने मद्य, मास, धूम्रपान आदि का परित्याग किया।

शोक विमोचन

रायपुर मध्यप्रदेश के निवासी ३२ वर्षीय नौजवान वसन्त कुमार दुगड एव उसकी आठ वर्षीय पुत्री चन्द्रकला की स्टोव फट जाने से तत्काल मृत्यु हो गई। दो सगी बहिने आग से बुरी तरह झुलस गई। उनको अस्पताल मे दाखिल किया। इस दु खद घडी मे उसके माता-पिता व धर्मपत्नी ने दुर्घटना के मात्र चौवीस घटे के बाद आगोलाई मे गुरुदेव के दर्शन किये आचार्यवर ने पारिवारिक सदस्यो को सबल प्रदान किया।

श्री भवरलाल मालू गगाशहर की माताजी का ८२ वर्ष की वृद्धावस्था मे ५० मिनट अनशन मे स्वर्गवास। पारिवारिक जनो ने आचार्यवर के दर्शन किये। आचार्यवर ने माताजी की भावना के अनुरूप रूढि को प्रश्रय न देने पर प्रसन्नता व्यक्त की।

१८ नवम्बर। पाटोदी / किसान सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमे सैकडो किसानो ने आचार्यश्री के उपदेश को सुना। व्यसनमुक्त बने।

चार बार स्थान परिवर्तन

२० नवम्बर। गोपडी से पचपदरा के बीच मात्र पाच कि० मी० की दूरी थी, इसलिए पचपदरा के लोगो का दिनभर ताता लगा रहा। आज आचार्यवर को चार बार स्थान परिवर्तन करना पडा। यह आचार्यवर के जीवन का सभवत प्रथम अवसर था। स्थान परिवर्तन का कारण गाववासियो की अनुदारता नही थी। उन्होने तो अपने पूरे घर हमारे लिए खोल दिये थे। आचार्यवर सवप्रथम जहा ठहरे थे, वहा 'इलिया' आदि क्षुद्र जीवो की बहुलता होने से हिंसा की सभावना थी, इसलिए वह स्थान छोड दूसरे मकान मे पधारे, उस मकान की छत टीन की थी। दोपहर मे टीन के गर्म होते ही आचार्यवर को शीघ्र जुकाम होने की सभावना रहती है। अत उसे भी छोडना पडा। तीसरा स्थान इतना छोटा था कि जिसमे मुश्किल से चार आदमी ही बैठ सकते थे। गोपडी गाव एव पचपदरा के लोगो का बहुत आवागमन था, इसलिए रात्रि प्रवास बडे स्थान पर किया। बार-बार परिवर्तन करने से

आचार्यवर को कोई कष्टानुभूति नही हुई, प्रत्युत एक नैसर्गिक आनन्द का अनुभव हुआ।

पचपदरा मे भावभरा स्वागत

२१ नवम्बर। प्रात गोपडी से विहार कर आचार्यवर पचपदरा पधारे। पाच कि० मी० लम्बा यह माग जनाकीर्ण हो गया था। पचपदरा की प्रमुख गलियो से होते हुए एक भव्य जुलूस के साथ आचार्यवर नवनिर्मित प्रवचन पण्डाल मे पहुचे। श्री मोहनलाल दम्माणी का वगला आचार्यवर का प्रवास-स्थल वना। समागत बहिर्विहारी साधु-साध्वियो तथा स्थानीय सस्थाओ की ओर से आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया गया। श्री सोहनलाल सालेचा ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया।

आचायवर ने सभी अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियो मे सतुलित रहने का उपदेश दिया तथा गोपडी मे चार वार स्थान परिवतन की घटना का जिक्र करते हुए कहा—'गोपडी मे छोटी सी कुटिया मे हमारा मुकाम हुआ और आज इस आलीशान कोठी मे, पर साधना का परिणाम है कि हमारी मन स्थिति मे कोई अन्तर् नही आया। इस सदर्भ मे आचार्यवर ने दो पद्य भी फरमाये।

कोठी हो चाहे कुटी, समुचित सत अदीन।
पचपदरो और गोपडी, देखो दोनू सीन।
कोठी ओपे आज ओ, जनता रो उमडाव।
काल कुटी मे म्हे कियो, चार बार ।

२३ नवम्बर/प्रात कालीन प्रवचन मे आचायवर ने कहा—'मै आस्तिक उसे मानता हू जो धर्म, कर्म और परमात्मा के प्रति आस्थावान् होता हुआ भी गलत काम करते समय प्रकम्पित होता है। पापभीरुता आस्तिक का लक्षण है।'

२४ नवम्बर / जसोलवासी श्रीशकरलाल मेहता (बाबूजी) के ज्येष्ठ भ्राता श्री रायचद मेहता का निधन हो गया। पारिवारिक जनो ने आचार्यवर के दशन किये।

रायचदजी एक धार्मिक श्रावक थे—आचार्यवर ने उनके बारे मे ये पद्य भी फरमाए—

शकर रो बड भ्रात, रायचद श्रावक रसिक।
सचमुच बण्यो सनाथ, सुध धार्मिक जीवन जियो ॥

तोडी रूढ परपरा, दृढ मेहता परिवार।
उदाहरण सब सामने, रख्यो सहज साकार।।

श्री मानमल सिघवी की धर्मपत्नी श्रीमती उगमकवर (जोधपुर) के देहान्त के एक दिन पश्चात् ही शोक समाप्त कर आचार्यवर के दर्शन किये। आचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा—'बहिन उगमकवर एक धर्मनिष्ठ महिला थी। गुरुभक्ति उसकी रग-रग मे रमी हुई थी। सघवी परिवार परपरा मे वैष्णव रहा है, पर बहिन उगमकवर ने अपने परिवार को धार्मिक एव जैनत्व के सस्कारो से रगा। पारिवारिक जनो का यह दायित्व है कि वे बहिन मे प्राप्त सस्कारो को सजोकर रखे और अधिक विकसित करे।

पुत्र-जन्म पर गुरु-दर्शन

सुख-दुख हर्ष-विषाद के समय सतुलन स्थापित रहे, इसलिए गुरु का मार्ग-दर्शन जरूरी है।इन वर्षो मे समाज मे एक अच्छी परपरा चल रही है। शादी, मृत्यु, तपस्या आदि अवसरो पर प्राय पूरा परिवार गुरु-चरणो मे पहुचता है, और विशेष पाथेय प्राप्त करता है। अन्टालिया (मेवाड) के एक परिवार ने एक नई परपरा का सूत्रपात किया है। वह है पुत्र-जन्म के उपलक्ष मे गुरु-चरणो मे उपस्थित होना।

अण्टालिया निवासी श्री सागरमल राठोड के छह पुत्र है। उनके तीन पुत्रो के तीन-तीन पुत्रिया है। उन्होने यह सकल्प किया कि इस बार पुत्र-रत्न की प्राप्ति होगी तो, यथाशीघ्र गुरु-दर्शन करेगे। सयोग से तीनो को पुत्र-लाभ हुआ। श्रद्धालु जन इसे आस्था का चमत्कार मान सकते है खैर कुछ भी हो, तीन बसो से इस परिवार के सैकडो भाई-बहिन आचार्यवर की सन्निधि मे पहुचे।

रात्रि मे आचार्यवर के सान्निध्य मे कवि-सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमे अनेक प्रमुख कवियो ने भाग लिया।

२५ नवम्बर/आचार्यवर ने प्रात प्रवचन के दोरान कहा—"दहेज एक भयकर बीमारी है, समाज का कोढ है, बहुत बडा अपराध है। मैं इसे मानवता के खिलाफ मानता हू।"

२७ नवम्बर को रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वीप्रमुखाश्री के सान्निध्य मे हुआ। २८ नवम्बर को पचपदरावासियो द्वारा आचार्यवर को भावपूर्ण विदाई दी गई।

आचार्यवर को कोई कष्टानुभूति नही हुई, प्रत्युत एक नैसर्गिक आनन्द का अनुभव हुआ ।

पचपदरा मे भावभरा स्वागत

२१ नवम्बर। प्रात गोपडी से विहार कर आचार्यवर पचपदरा पधारे। पाच कि० मी० लम्बा यह मार्ग जनाकीर्ण हो गया था। पचपदरा की प्रमुख गलियो से होते हुए एक भव्य जुलूस के साथ आचार्यवर नवनिर्मित प्रवचन पण्डाल मे पहुचे। श्री मोहनलाल दम्माणी का बगला आचार्यवर का प्रवास-स्थल बना। समागत वहिर्विहारी साधु-साध्वियो तथा स्थानीय सस्थाओ की ओर से आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया गया। श्री सोहनलाल सालेचा ने आजीवन ब्रह्मचय व्रत स्वीकार किया।

आचार्यवर ने सभी अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियो मे सतुलित रहने का उपदेश दिया तथा गोपडी मे चार बार स्थान परिवर्तन की घटना का जिक्र करते हुए कहा—'गोपडी मे छोटी सी कुटिया मे हमारा मुकाम हुआ और आज इस आलीशान कोठी मे, पर साधना का परिणाम है कि हमारी मन स्थिति मे कोई अन्तर् नही आया। इस सदर्भ मे आचार्यवर ने दो पद्य भी फरमाये।

कोठी हो चाहे कुटी, समुचित सत अदीन।
पचपदरो और गोपडी, देखो दोनू सीन।
कोठी ओपे आज ओ, जनता रो उमडाव।
काल कुटी मे म्हे कियो, चार बार बदलाव।

२३ नवम्बर/प्रात कालीन प्रवचन मे आचार्यवर ने कहा—'मैं आस्तिक उसे मानता हू जो धर्म, कर्म और परमात्मा के प्रति आस्थावान् होता हुआ भी गलत काम करते समय प्रकम्पित होता है। पापभीरुता आस्तिक का लक्षण है।'

२४ नवम्बर / जसोलवासी श्रीशकरलाल मेहता (बाबूजी) के ज्येष्ठ भ्राता श्री रायचद मेहता का निधन हो गया। पारिवारिक जनो ने आचार्यवर के दशन किये।

रायचदजी एक धार्मिक श्रावक थे— आचार्यवर ने उनके बारे मे ये पद्य भी फरमाए—

शकर रो बड भ्रात, रायचद श्रावक रसिक।
सचमुच बण्यो सनाथ, सुघ धार्मिक जीवन जियो ॥

तोडी रूढ परपरा, दृढ मेहता परिवार।
उदाहरण सब सामने, रख्यो सहज साकार ।।

श्री मानमल सिघवी की धर्मपत्नी श्रीमती उगमकवर (जोधपुर) के देहान्त के एक दिन पश्चात् ही शोक समाप्त कर आचार्यवर के दर्शन किये। आचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा—'बहिन उगमकवर एक धर्मनिष्ठ महिला थी। गुरुभक्ति उसकी रग-रग मे रमी हुई थी। सघवी परिवार परपरा से वैष्णव रहा है, पर बहिन उगमकवर ने अपने परिवार को धार्मिक एव जैनत्व के सस्कारो से रगा। पारिवारिक जनो का यह दायित्व है कि वे बहिन से प्राप्त सस्कारो को सजोकर रखे और अधिक विकसित करे।

पुत्र-जन्म पर गुरु-दर्शन

सुख-दु ख, हर्ष-विषाद के समय सतुलन स्थापित रहे, इसलिए गुरु का मार्ग-दर्शन जरूरी है। इन वर्षो मे समाज मे एक अच्छी परपरा चल रही है। शादी, मृत्यु, तपस्या आदि अवसरो पर प्राय पूरा परिवार गुरु-चरणो मे पहुचता है, और विशेष पाथेय प्राप्त करता है। अन्टालिया (मेवाड) के एक परिवार ने एक नई परपरा का सूत्रपात किया है। वह है पुत्र-जन्म के उपलक्ष मे गुरु-चरणो मे उपस्थित होना।

अण्टालिया निवासी श्री सागरमल राठोड के छह पुत्र है। उनके तीन पुत्रो के तीन-तीन पुत्रिया है। उन्होने यह सकल्प किया कि इस बार पुत्र-रत्न की प्राप्ति होगी तो, यथाशीघ्र गुरु-दर्शन करेगे। सयोग से तीनो को पुत्र-लाभ हुआ। श्रद्धालु जन इसे आस्था का चमत्कार मान सकते है खैर कुछ भी हो, तीन बसो से इस परिवार के सैकडो भाई-बहिन आचार्यवर की सन्निधि मे पहुचे।

रात्रि मे आचार्यवर के सन्निध्य मे कवि-सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमे अनेक प्रमुख कवियो ने भाग लिया।

२५ नवम्बर/आचार्यवर ने प्रात प्रवचन के दौरान कहा—"दहेज एक भयकर बीमारी है, समाज का कोढ है, बहुत बडा अपराध है। मै इसे मानवता के खिलाफ मानता हू।"

२७ नवम्बर को रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वीप्रमुखाश्री के सान्निध्य मे हुआ। २८ नवम्बर को पचपदरावासियो द्वारा आचार्यवर को भावपूर्ण विदाई दी गई।

जोधपुर से पचपदरा तक यात्रा सघ की व्यवस्था का भार जोधपुर वासियो पर था। उनके पास टेण्ट, माइक, जेनरेटर आदि की पूरी व्यवस्था थी, जिसे उन्होने बडी जिम्मेवारी के साथ निभाया। साथ मे चलने वाले सेवार्थियो को किसी प्रकार असुविधा नही होने दी।

हम रेत मे जन्मे है

३० नवम्बर / बागुडी/स्कूल का स्थान बहुत सीमित था। आचार्यवर स्कूल के छोटे से कमरे मे ठहर गये। युवाचार्यश्री उससे सलग्न कोठरी मे ठहर गए। सत-जन सामने टूटे फूटे बरामदे मे तथा कुछ यत्र-तत्र कच्चे-झोपडो मे ठहर गये। साध्वियो ने स्थानाभाव के कारण स्कूल के पीछे हरे-भरे बबूल के वृक्षो की छाया मे रेतीली जमीन पर अपना आसन लगा लिया। व्यवस्थापको एव यात्रियो द्वारा अपने लिये निर्मित तबुओ मे ठहरने का निवेदन करने पर साध्वी प्रमुखाश्री जी ने कहा—"हम रेत मे जन्मे, रेत मे खेले और बडे हुए है फिर आज रेत का ही आनन्द क्यो न ले ?" इस प्रकार आज साध्वियो ने रेतीले गद्दे और बबूल की छाया मे दिन का विश्राम लिया।

बायतू का चतुर्दिवसीय प्रवास :

२ दिसम्बर/तेवीस बर्षो की प्रलम्ब अवधि के बाद बायतू पधारने पर आचायवर का अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर बाडमेर-जैसलमेर क्षेत्र के सासद श्री वृद्धिचद जैन ने कहा—"आचार्यश्री एव युवाचायश्री से जो धर्म की व्याख्याये सुनी है, उनसे मै बहुत प्राभावित हू। आपने धर्म को व्यापकता प्रदान की हे, इसलिए जैन-अजॅन सभी आपके प्रवचनों से लाभान्वित होते हे।',

आचार्यवर ने कहा—जो व्यक्ति बदलना नही जानता, वह गति नही कर सकता, पिछड जाता हे। आवश्यकता इस बात की हे कि परिवर्तन (बदलाव) के साथ मौलिकता सुरक्षित रहे।"

३ दिसबर/प्रात प्रवचन मे आचायवर ने कहा—"हलवा बनाने के लिए जिस प्रकार आटा, घी ओर चीनी का होना नितान्त जरूरी हे ठीक वैसे ही दाता, देय और पात्र तीनो के विशुद्ध होने से ही पवित्र दान का लाभ मिल सकता हे।"

४ दिसबर को जयपुर चातुर्मास सपन्न कर उग्रविहार करते हुए मुनि श्री मोहनलाल "आमेट" ने अपने सहयोगी मुनि द्वय के साथ आचार्यवर के

दर्शन किये। रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे चला। कवास गाव मे ७ दिसबर को श्री रूपमचद छाजेड ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया।

८ दिसबर/उत्तरलाई/कुछ सुलझे हुए विचारो के अध्यापक आचार्यवर की सन्निधि मे उपस्थित हुए। उन्होने आचार्यवर से प्रश्न पूछे। अध्यापको के प्रश्न व आचार्यवर के उत्तर प्रस्तुत है—

प्राध्यापक—हिन्दु धर्म के बारे मे आपका क्या अभिमत है ?

आचार्यश्री—मेरी दृष्टि मे हिन्दु कोई धर्म नही है। भारत मे मुख्यरूप से धर्म की तीन धाराए प्रवाहित हुई—जैन, बौद्ध और वैदिक। हिन्दुस्तान मे रहने वाला फिर चाहे वह किसी भी धर्म का अनुयायी क्यो न हो, हिन्दू अवश्य है। यदि वह व्यापक दृष्टिकोण सबकी समझ मे आ जाए तो देश का बहुत बडा हित हो सकता है। वैसी स्थिति मे हिन्दू शब्द किसी धर्म का प्रतीक न बनकर देश का प्रतीक बन जाएगा। आज जिसे हिन्दू धर्म कहा जाता है, वस्तुत वह वैदिक धर्म है।

प्राध्यापक—जातिवाद के सदर्भ मे आपकी क्या मान्यता है ?

आचार्यश्री—जैनदर्शन जाति के आधार पर किसी को ऊच-नीच नही मानता है। व्यक्ति जाति से नही चरित्र से ऊचा बनता है। ब्राह्मण कुल मे जन्म लेने वाला सदा पूज्य ही होता है और शूद्र कुल मे जन्म लेने वाला अस्पृश्य ही होता है, यह मान्यता उचित नही है। भगवान् महावीर ने जातिवाद और छुआछूत को कभी महत्व नही दिया। छुआछूत के कारण लाखो लोगो को हमने खो दिया। अब भी समय है कि हम जाति के आधार पर किसी को अस्पृश्य न माने। बौद्धिक वर्ग का कर्तव्य है कि वह इस दिशा मे एक सशक्त आवाज उठाए और स्वस्थ दृष्टिकोण का निर्माण करे।

प्राध्यापक—क्या भगवान् किसी को साक्षात् मिलते है ?

आचार्यश्री—सबसे पहले आप यह समझे कि भगवान् क्या है ? मेरे अभिमत से आत्मा ही परमात्मा है। ज्यो ज्यो आप साधना करेगे आपकी आत्मा सपूर्ण रूप से विशुद्ध बनेगी। जब आत्मा विशुद्ध बन जाएगी तो आप परमात्मा बन जाएगे। जैनदर्शन के अनुसार कोई एक ऐसी ईश्वरीय सत्ता नही है, जो सर्जन और विनाश करती हो।

विशुद्ध आत्मा ही परमात्मा है ।

प्राध्यापक—धर्म और मप्रदाय मे क्या अतर हे ?

आचार्यश्री—धम और सप्रदाय दोनो एक नही, अलग-अलग ह।धर्म जीवन का तत्त्व हे, पवित्र बनने का सावन हे, जवकि सप्रदाय धम की सुरक्षा का साधन ह । आज तक जितनी भी लडाइया हुई है, मप्रदाय के नाम पर हुई हे । धर्म किसी को लडना नही सिखाता। वह सदा प्रेम और मैत्रीकी भावना वढाता ह । धर्म और मजहव को पृथक्-पृथक् मानकर चलेगे तो हमारे सामने कोई कठिनाई नही होगी ।

सीमान्त क्षेत्र बाडमेर मे :

६ दिमवर/दो दशक के वाद प्रात एक विशाल स्वागत जुलूस के साथ आचार्यवर वाडमेर पधारे । अनेक सस्थाओ के द्वारा आचायवर का भावभीना स्वागत किया गया । वाडमेर नगर परिपद के अध्यक्ष श्री सुल्तान-मल जैन ने नगर की ओर से आचार्यवर का अभिनन्दन किया । युवाचाय श्री तथा साध्वीप्रमुखाश्री जी ने भी अपने उद्गार व्यक्त किये । आचार्यश्री ने वर्म को सकीर्ण दायरे से निकालकर आचरण मे लाने की वात कही ।

११ दिमबर/महिला जन-जागृति परिपद के तत्वावधान मे जैन छात्रा-वास मे साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे एक कार्यक्रम आयोजिन हुआ ।

दीक्षा-दिवस का समायोजन

१३ दिसबर/पौप कृष्णा पचमी का दिन हमारे वर्मसघ के लिए महत्व का दिन ह । इस दिन लाडनू की पावन धरा पर आचायवर पूज्य कालूगणी के करकमलो से दीक्षित हुए थे । आज के दिन पूज्य गुरुदेव ने साधनाकाल के ५९ वर्ष पार कर ६०वे वर्प मे प्रवेश किया । महापुरुपो के जीवन से जुडकर हर तिथि पुण्यमयी वन जाती हे । आज के दिन को निमित्त मानकर युवावर्ग विशेष प्रेरणा ले तथा अपने कार्यक्षेत्र मे गति करे । इस दृष्टि से पिछले वर्षो से यह युवा-दिवस के रूप मे मनाया जाता है ।

युवाचार्यश्री ने आचार्यवर को युवा मस्तिप्क वाला वताया । साध्वी प्रमुखाश्री ने युवको से आचार्यवर के सकेतो के अनुसार चलने का आह्वान किया । इस अवसर पर राजकीय माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्यश्री एम० आर० जैन तथा उपजिला विकास अधिकारी श्री के०के० सिंघल ने भी अपने

विचार रखे।

दीक्षा दिवस को सौभाग्य दिवस मानते हुए आचार्यवर ने कहा—"पारिवारिक सहयोग एव पूज्य कालूगणी की असीम कृपा का ही यह परिणाम था कि दीक्षा के भाव जगने के एक महीने के भीतर-भीतर मेरी दीक्षा हो गई।"

१४ दिसबर/रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री की सन्निधि मे आयोजित हुआ।

१५ दिसबर/१३ दिसबर को होने वाले लोकसभा चुनावो को मद्दे-नजर रखते हुए आचार्यश्री ने विशेष सदेश मे कहा—"लोकसभा के सात आम चुनाव हो चुके है। यह आठवा आम चुनाव हो रहा है। पहले के चुनावो से इस चुनाव का वातावरण और माहौल कुछ भिन्न है। प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरागाधी की हत्या और साम्प्रदायिक उत्तेजना की घटनाओ के बाद भी स्थितिया काफी उलझी हुई है। यद्यपि विकास हुआ है, उद्योग और उत्पादन बढा है, सपत्ति बढी है, फिर भी नही कहा जा सकता कि सारी समस्याए सुलझ गई है। यथार्थ के धरातल पर गरीबी आदि की समस्याए आज भी विद्यमान है। इससे भी अधिक भयकर समस्याए है विचारो, धारणाओ और रूढ सस्कारो की। हिन्दुस्तान की अखण्डता को चुनौती रोटी की समस्या के लिए नही दी जा रही है, किन्तु जातीयता, साम्प्रदायिकता के आधार पर दी जा रही है। इस स्थिति मे चुनाव का उद्देश्य गरीबी को मिटाना, आर्थिक विकास करना ही नही हो सकता। उसके साथ अखण्डता की बात भी जुडी हुई है। वह तभी सभव है, जब जातीयता और साम्प्रदायिकता उन्माद का स्वरूप न ले। उस पर नियत्रण पाने के लिए कोई दण्डशक्ति कामयाब नही हो सकती। नैतिक शक्ति का होना बहुत जरूरी है। इस चुनाव का एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा होना चाहिए, राष्ट्र को नैतिक विकास की दिशा मे आगे बढाना।

लोकसभा पूरे राष्ट्र की सर्वोच्च प्रतिनिधि सस्था है। उतना ही मूल्य है ससद के सदस्यो का। इस आधार पर उनका चुनाव भी एक साधारण घटना नही है। इसलिए नैतिकता की बात बहुत महत्त्वपूर्ण बन जाती है। यदि सासदो का चुनाव नैतिकता को बल देने वाला होता है, तो लोकसभा की गरिमा बढती है और साथ-साथ राष्ट्र की प्राणशक्ति भी बढती है। यदि ऐसा नही होता है तो दोनो की शक्ति का ह्रास होता है, फिर राष्ट्रीय-चरित्र और

नैतिकता के विकास की आवाज कोरी आवाज रह जाती हे ।

एक धर्म-गुरु के नाते हम चाहते है, भारत की त्याग प्रधान परम्परा दुर्बल और क्षीण न बने । उसकी अपराजेय शक्ति मे हमारी आस्था बनी रहे । इसी आधार पर हमने नैतिकता का आन्दोलन शुरू किया । उस अणुव्रत आन्दोलन की पृष्ठभूमि से हम जनता और उम्मीदवार दोनो से विनम्र अनुरोध करना चाहते है कि वे चुनाव को एक पवित्र सस्कार का रूप दे । हम अपेक्षा रखते हे कि साहित्यकार, पत्रकार, शिक्षक आदि सभी बुद्धिवादी लोग इस ओर देखे, वातावरण का निर्माण करे, जिससे हिसा, अपराध तथा अनुशासनहीनता मे कमी आए, अहिसा का वातावरण शक्तिशाली बने ।"

बाडमेर का सप्त दिवसीय प्रवास कई दृष्टियो से महत्त्वपूर्ण रहा, यहा तेरापन्थ के घर कोई अधिक नही हे, किन्तु जैन परिवार हजारो की सख्या मे हैं । नगर के सभी वर्ग के लोगो ने बिना किसी भेदभाव के आचार्यवर के प्रवास का लाभ उठाया । रात्रि मे होने वाले युवाचार्यश्री के विषयबद्ध प्रवचनो मे भी उल्लेखनीय उपस्थिति होती थी ।

१६ दिसबर/मध्याह्न मे स्थानीय लोगो द्वारा आचार्यवर को भावभीनी विदाई दी गई । सायकाल तेरापथ सभा भवन से विशाल जुलूस के साथ आचार्यवर ने विहार किया । आज का रात्रिकालीन प्रवास सहकारी बैंक मे हुआ । बैंक के चेयरमेन श्री चपालाल जैन ने बैंक परिवार की ओर से आचायवर का स्वागत किया ।

सर्दी का प्रकोप

१७ दिसबर/प्रात १३ कि०मी० का विहार कर आचार्यवर 'मगने की ढाणी' पधारे । बडे रेत के टीलो से घिरी हुई यह ढाणी सडक से दो कि०मी० अन्दर थी । सडक पर उतने बडे सघ के लिए वैसा स्थान नहीं था । अत दो कि०मी० का अतिरिक्त चक्कर लेना पडा । उस दिन रात्रि मे सर्दी के गहरे प्रकोप से साधु-साध्वियो एव यात्रियो को काफी शीत परिषह रहा । आचार्यवर ने इस वृत्त को ऐतिहासिकता प्रदान करते हुए काव्य की भाषा मे कहा—

बाडमेर सूँ पहली मजिल, मगने जी की ढाणी ।
जात्री टेंटा मे ठठरग्या, सेवा री सहनाणी ।।
दो जाणो दो आवणो, बे ढाणी रा धोर ।
मुश्किल सू मजिल मिली, बा रदखल सी रोड ।।

२० दिसबर/प्रात सरणु से विहार कर आचार्यवर धन्ने री ढाणी पधारे। यात्रा व्यवस्थापको के पूर्व कथनानुसार विहार साढे सोलह कि०मी० का था, अत आचार्यवर समेत सभी साधु-साध्विया इसी अनुमान के आधार पर चल रहे थे। जब ढाणी मात्र दो कि०मी० रही, तब अहमदावाद के प्रमुख श्रावक श्री जीतमल भसाली ने आचार्यवर के दर्शन किये और निवेदन किया यहा से गाव सिर्फ दो कि०मी० है। जबकि साढे सोलह कि०मी० के हिसाब से तीन कि०मी और होना चाहिए था, पर कुछ ही क्षणो मे श्री जीतमल की बात प्रमाणित हो गई। किलोमीटर के पत्थर की सख्या गलत थी। उसी समय इस घटनाक्रम को एक सोरठे के माध्यम से व्यक्त करते हुए आचार्यवर ने कहा—

धार्‌यो साढा सोल, साढे पनरे मे सर्‌यो।
बोल निभायो कोल, जीतो बाजी जं तर्‌यो॥

पोकरजी पुनवान

सरदारपुरा/जोधपुर/निवासी श्री पोकरचद तातेड ने बातचीत के दौरान निवेदन किया। गुरुदेव! जब से मैने शासन की सेवा मे अपने आपको नियोजित किया, तब से सभी दृष्टियो से मेरे वृद्धि होती रही है। मै धर्मसघ की सेवा को अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हू।

उस समय आचार्यवर के मुख से सहज ही एक पद मुखरित हो गया—

शासन सेवा मे लग्यो, जब स्यु अन्तर् ध्यान।
तब स्यु बढतो ही गयो, पोकरजी पुनवान॥

पचपदरा से बाडमेर तथा बाडमेर से टापरा तक आचार्यवर का प्राय प्रात और रात्रि को नियमित प्रवचन होता, जिसमे सैकडो ग्रामीण भाई-बहिन सोत्साह भाग लेते।

बाडमेर से बालोतरा के मध्य कई परिवार शोक विमोचन हेतु आचार्यवर की पावन सन्निधि मे उपस्थित हुए और उन्होने आचार्यवर से सबल प्राप्त किया। स्वर्गस्थ व्यक्तियो मे नोखामडी निवासी श्री चैनरूप नवलखा का लन्दन मे हृदय की सफल शल्य चिकित्सा के अनन्तर अकस्मात् निधन हो गया। सघ व सघपति के प्रति दृढ आस्था रखने वाले नवलखा जी के मन मे हमेशा गुरु-दर्शन की उत्कठा बनी रहती थी।

बडनगर-मध्यप्रदेश के श्री सूरजमल चौधरी ने पूज्य कालूगणी की

मालवा यात्रा के समय अच्छी सेवा की थी । उस क्षेत्र के वे जाने-माने विशिष्ट श्रावक थे ।

श्री वालचद तलेसरा (काकरोली) शासनभक्त और निष्ठाशील कार्यकर्ता थे । श्री हसराज नाहटा (राजगढ) गण और गणी के प्रति अटूट आस्था रखते थे । श्री नाहटा जी का पूरा परिवार धार्मिक सस्कारो मे ओत-प्रोत है ।

श्री गुमानमल सुराणा (जयपुर) आचार्यश्री के शब्दो मे—"कठिन परिस्थिति मे उनकी श्रद्धा मजबूत बनी रही यह महत्त्वपूर्ण वात है ।

२ जनवरी (आपाढा) साध्वियो के प्रवास-स्थल पर साध्वियो को सबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा—"साध्विया हमारे सघ की सपदा है । साध्वी-समाज की श्रद्धा और समर्पण-भाव अनन्य है । जब-जब मैं इस श्वेत सेना को देखता हू, सात्विक प्रसन्नता का अनुभव होता हे ।

आचार्यवर ने आगे कहा—"मै साध्वियो से कहना चाहता हू कि सभी-साध्विया ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना के साथ-साथ प्रसन्न रहने का विशेप अभ्यास करे । अनुकूलता मे प्रसन्न वन जाना और प्रतिकूलता मे उदासीन बन जाना साधना का लक्षण नही हे । साधक वह कहलाता है, जो प्रतिकूलता मे भी प्रसन्न रहता हे । प्रतिकूलता सब के जीवन मे आती है । यहा तक कि मुझे सवसे अधिक प्रतिकूलताओ का सामना करना पडता है । शारीरिक ओर मानसिक दोनो स्तर पर समता सधे, यह वहुत आवश्यक हे । यह तभी सभव है, जव हम सवेदन से ऊपर उठेगे ।"

बालोतरा मे भव्य स्वागत .

५ जनवरी / सिवाणची-मालाणी मे सवसे वडा क्षेत्र वालोतरा ही हे । इस नवोदित औद्योगिक नगरी मे पिछले वर्प आचार्यश्री का चातुर्मास भी हुआ था । वालोतरा के उस ऐतिहासिक चातुर्मास की यादे अभी भी ताजा थी । वालोतरा पदार्पण से पूर्व इस क्षेत्र के अन्य कस्वे, टापरा, आपाढा, आसोतरा मे भी आकर्पक कार्यक्रम हुए । आपाढा मे वडी हाजरी व किसान सम्मेलन का आयोजन हुआ । वालोतरा पहुचने पर स्थानीय जनता द्वारा आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया गया ।

नयापुरा स्थित नाहटा चौक मे नवनिर्मित वर्धमान समवसरण मे आयोजित स्वागत कायक्रम मे नगरपालिका अध्यक्ष श्रीनन्दकिशोर खत्री,

तेरापथी सभा के अध्यक्ष एव पूर्व न्यायाधीश श्री सोहनराज कोठारी ने अपने विचार रखे। आचार्यवर ने अपने प्रवचन मे गुणग्राहकता की ओर तत्पर रहने का उपदेश दिया।

साप्ताहिक प्रवचन माला :

पौष एव माघ का महिना हमारे धर्मसघ के लिए, विशेषत साधु-साध्वियो के लिए महत्वपूर्ण होता है। पूर्व मे कृत कार्यो का गुरु-चरणो मे समर्पण एव आगामी वर्ष के लिए नूतन पाथेय प्राप्त करते है। साधना के बहुमुखी विकास व रत्नत्रय की दृष्टि से एक विशेष प्रवचनमाला का आयोजन किया गया। इस प्रवचनमाला मे निर्धारित विषयो पर युवाचार्य श्री का विशेष प्रवचन होता। अ त मे आचार्यश्री का उद्बोधन होता। उन प्रवचनो का क्रम इस प्रकार था—

तारीख	विषय	तारीख	विषय
६ जनवरी	कैसे चले ?	१० जनवरी	कैसे खाये ?
७ जनवरी	कैसे ठहरे ?	११ जनवरी	कैसे बोले ?
८ जनवरी	कैसे बैठे ?	१२ जनवरी	कैसे श्वास ले ?
९ जनवरी	कैसे सोए ?		

मध्यान्ह मे युवाचार्यश्री ध्यान के विभिन्न प्रयोगो का प्रशिक्षण देते। इस विशेष प्रवचनमाला मे प्राय सभी साधु-साध्वियो ने भाग लिया।

वर्धमान महोत्सव :

१३ जनवरी / बालोतरा / आचार्यवर के सान्निध्य मे वर्धमान महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। मुनिश्री मधुकर आदि सतो ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी श्री सघमित्रा आदि साध्वियो ने भी एक सामूहिक गीत प्रस्तुत किया।

युवाचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे कहा—"सिद्ध बनने के लिए तीन बाते आवश्यक है—निर्मलता, तेजस्विता और गभीरता। तेरापथ धर्मसघ मे तीनो की आराधना होती है। इसीलिए यह वर्धमान है। यहा आत्मानुशासन, आत्मनिरीक्षण और आत्म-सयम की भावना ही प्रधान है इसीलिए यह वर्धमान है।"

आचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा—वर्धमान महोत्सव वह पर्व नही है, जिसकी कोई तिथि निश्चित हो। पहले इसका कोई व्यवस्थित रूप नही

था। हमने इन वर्षो मे इसे कार्यक्रम का रूप दे दिया और अब परपरा प्रारभ हो गयी और आगे भी चलती रहेगी।"

आचार्यश्री ने तेरापथ को मर्यादित बताते हुए मर्यादा को जीवन का प्राण बताया तथा श्रावक समाज को मर्यादा से परिचित कराने की दृष्टि से मर्यादा का वाचन किया जाये और सभी को जानकारी दी जाये।

१४ जनवरी को रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे आयोजित हुआ।

तत्त्वज्ञान-प्रतियोगिता :

साधु-साध्वियो मे तात्विक एव सैद्धान्तिक ज्ञान की अभिवृद्धि के लिए मर्यादा महोत्सव के प्रसग पर एक उपक्रम प्रारभ किया गया। वह उपक्रम था जैन तत्त्व प्रवेश (भाग-१) का, यह परीक्षा आषाढा मे ली गई थी। ८ जनवरी मध्यान्ह बालोतरा मे मुनि सुमेरमल ने परीक्षा परिणाम घोषित किया। कुल ३९ परीक्षार्थियो मे प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान इस प्रकार रहे—

प्रथम—मुनिश्री दिनेशकुमार
द्वितीय—साध्वी श्री चित्रलेखा,
तृतीय—मुनि धर्मेश कुमार, मुमुक्षु हसमुख
साध्वी श्री शारदाश्री, साध्वी श्री शातिलता
साध्वी श्री उर्मिला कुमारी साध्वी श्री वर्धमानश्री
साध्वी श्री विशुद्धप्रभा

इससे पूर्व साधुओ मे 'तत्त्व चर्चा' नामक थोकडे की परीक्षा हुई, जिसमे १३ मुनियो ने हिस्सा लिया, जिसमे मुनिश्री दिनेश कुमार, मुनिश्री धर्मेश कुमार, मुनिश्री ऋषभकुमार क्रमश प्रथम, द्वितीय एव तृतीय रहे।

शोक-विमोचन

श्री मिलापचद रुणवाल (जयसिंहपुर) ६६ वर्ष की उम्र मे हृदय गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। श्री रुणवाल एक धर्मनिष्ठ श्रावक थे। धार्मिक एव सामाजिक कार्यो मे बडी रुचि व निष्ठा के साथ भाग लेते थे।

श्री नेमचद दूगड (नोहर) का ३० सितम्बर ८४ को स्वर्गवास हो गया। भक्तिमान व साधु-साध्वियो की अच्छी सेवा करने वाले श्री दूगड ने साध्वीश्री कमलूजी से अतिम समय मे अनेक त्याग-प्रत्याख्यान स्वीकार किये।

श्रीमती माली देवी वाफणा (कलकत्ता) तेईस दिन के तिविहार अनशन मे ४ जनवरी, प्रात १०.१५ पर स्वर्गस्थ हुई। अतिम समय मे परिणाम ऊचे थे। कलकत्ता मे इस अनशन से धर्मसघ की उल्लेखनीय प्रभावना हुई।

श्रीमती केसरदेवी सेठिया (भीनासर) धार्मिक सस्कारो से ओत-प्रोत महिला थी। परिवार के सदस्यो पर उनके धार्मिक सस्कारो की अच्छी छाप है। उन्होने अपने पूर्व कृत सकल्प के अनुसार अनशन किया और वर्धमान परिणमो मे उसे सपन्न किया।

श्रीमती जमनादेवी लिगा (बीदासर) का सथारे मे स्वर्गवास हो गया। वह अपनी धार्मिक क्रिया के प्रति जागरूक थी। इन सबके पारिवारिक जनो ने बालोतरा मे आचार्यश्री के दर्शन किये व आध्यात्मिक सबल प्राप्त किया।

ोल मे जोरदार स्वागत :

१६ जनवरी/आचार्यश्री बृहद् साधु-साध्वी समुदाय के साथ बालोतरा से प्रस्थान किया। बालोतरा व जसोल के बीच की दूरी मात्र ५ कि० मी० है। दोनो ही क्षेत्रो तथा सिवाणची-मालाणी के हजारो नर-नारी आचार्यवर के साथ गगनभेदी नारो के साथ चल रहे थे। बालोतरा से विदाई व जसोल की ओर से स्वागत हो रहा था। वहा विदाई एव स्वागत का सगम हो गया।

तेरापथ धर्मसघ के १२१ वे मर्यादा महोत्सव की समायोजना के लिए एक विशाल जुलूस के साथ आचार्यवर ने जसोल की पावन धरती पर अपने चरण रखे। श्री मज्जयाचार्य के साथ सबधित 'धक्के जाओ' के इतिहास प्रसिद्ध प्रसग से जुडे इस जसोल कस्बे मे तेरापथ के सौ से अधिक परिवार है। 'पारस अणुव्रत भवन' के पीछे निर्मित विशाल 'मर्यादा समवसरण' मे स्वागत कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमे रानी लक्ष्मी कुमारी चूडावत, स्थानीय विधायक श्री अमराराम चौधरी व जसोल के सरपच श्री नाहरसिह ने अपने विचार रखे। आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे उपस्थित जनसमूह को सयमी व अनुशासित बनने का आह्वान किया।

अष्टाह्निक-प्रवचन माला

मर्यादा महोत्सव के पावन प्रसग पर सैकडो साधु-साध्वियो व हजारो श्रावक-श्राविकाओ की सहज ही अधिक उपस्थित होती है। तेरापथ धर्मसघ

की गतिविधिया व सैद्धान्तिक तथ्यो की यथाथ अवगति हस्तगत हो सके, इस दृष्टि से प्रात -काल इस प्रवचनमाला की आयोजना हुई जिसमे युवाचार्य श्री व आचायश्री का प्रवचन होता। उसका क्रम इस प्रकार है —

तारीख	विपय	विपय प्रवेश
१८ जनवरी	प्रेक्षाध्यान और शरीर विज्ञान	मुनिश्री किशनलाल
१९ जनवरी	तेरापथ और अनुशासन	मुनि सुमेरमल "लाडनू"
२० जनवरी	तेरापथ और आचार्य भिक्षु	साध्वीश्री जतनकुमारी "कनिष्ठा"
२१ जनवरी	श्रावक के वारह व्रत और अणुव्रत आचार-सहिता	मुनि सुमेरमल "लाडनू"
२२ जनवरी	,, ,,	,,
२३ जनवरी	जैन विद्या—तत्त्ववाद	साध्वीश्री सघमित्रा
२४ जनवरी	जैन विद्या—पराविद्या (पुनर्जन्म)	मुनिश्री महेन्द्र कुमार
२५ जनवरी	जैन विद्या—कर्मवाद	

रात्रि मे भी युवाचार्यश्री के महत्वपूर्ण वक्तव्य हुए।

१२१ वा मर्यादा महोत्सव

१६ जनवरी/प्रथम दिवसीय कार्यक्रम।

मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम त्रिदिवसीय होता है। जो बसतपचमी से प्रारभ हो जाता है। मगलाचरण व सामूहिक वदन के बाद कार्यक्रम का प्रारभ हुआ। साध्वीश्री फूलकुमारी (लाडनू) ओबरा (उत्तर प्रदेश) चातुर्मास सपन्न कर ६१ दिनो मे १४०० किलोमीटर की यात्रा कर आचार्यश्री के दर्शन किये। इससे पहले दिन मुनिश्री राजकरण ने मात्र ७७ दिनो मे १८०० कि० मी० यात्रा परिसपन्न कर आचार्यश्री के चरणो मे पहुचे।

युवाचार्यश्री ने अपने मगल प्रवचन मे कहा—"सम्वत्सरी का सबध जैन समाज से है, किन्तु मर्यादा महोत्सव का सबध पूरे ससार से है। आज की सबसे बडी समस्या है अनुशासन की। राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक इन तीनो क्षेत्रो मे अनुशासन की बहुत बडी माग है। बिना अनुशासन एव मर्यादा के किसी भी कार्य की निष्पत्ति सभव नही है।"

आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे कहा—"हमारे धर्मसघ मे कला को, विद्या को तथा अन्य आधुनिक विद्याओ को स्थान प्राप्त है, किन्तु सबमे

अधिक स्थान सेवा को दिया जाता है। रुग्ण और वृद्ध साधु-साध्वियो की सेवा करना हमारे यहा सर्वश्रेष्ठ कार्य माना जाता है और उनकी सेवा करना सभी अपना पुनीत धर्म मानते हे।"

मध्याह्न मे विराट महिला सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री एव साध्वी प्रमुखाश्री के महत्वपूर्ण उद्बोधन हुए। रात्रि मे दीक्षार्थिनी बहिनो को भावभीनी विदाई दी गई।

द्वितीय दिवस/विराट श्रावक सम्मेलन

२७ जनवरी/समणी वृन्द के मगलाचरण के पश्चात् कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। जैन श्वेताम्बर तेरापथी महासभा के अध्यक्ष श्री विजयसिंह सुराणा आदि वक्ताओ के भाषण हुए। व्यवस्था निकाय प्रमुख मुनि श्री बुद्धमल जी ने श्रावक-समाज को अपनी जिम्मेवारी को परिपूर्णता के साथ निभाने के लिए सदैव जागरूक रहने का आह्वान किया।

युवाचार्यश्री ने अपने वक्तव्य मे कहा—"साधु-साध्वियो का जितना मूल्य रहा है, सघीय दृष्टि से श्रावक-श्राविकाओ का उससे कम मूल्य नही रहा। तेरापथ धमसघ के अनुशासन, सगठन और व्यवस्था को चलाने मे श्रावक-श्राविकाओ का बहुत बडा योगदान है।"

युवाचार्यश्री ने विस्तार से धम सघ के साहित्य और अन्य प्रवृत्तियो पर प्रकाश डाला।

आचार्यश्री ने श्रावको को आह्वान किया—"अपनी सारी कुठाओ, सकीर्णताओ एव उलझनो को छोडकर कुछ करने का सकल्प लेना चाहिए। श्रावक समाज हमारे धमसघ का एक महत्वपूर्ण अग है। हमारे पूर्वाचार्यो ने श्रावको को बहुत महत्व दिया हे।"

दीक्षा-समारोह

दीक्षा का ऐसा सस्कार है जो बहिर्मुखता से अन्तर्मुखता की ओर ले जाता है, अधकार से प्रकाश की ओर ले जाता हे, भोग से योग की ओर ले जाता है। ऐसे तो सभी धर्मो मे दीक्षा-सस्कार दिया जाता है, पर जैन-दीक्षा काफी कठिन और घोर है। जीवन भर पदयात्रा करना, पाच महाव्रतो का पालन करना, रात्रि भोजन विरमण करना, आदि अनेक विषयो से आबद्ध होता है। तेरापथ-दीक्षा इससे भी कठिन है। इसमे इन विषयो के अतिरिक्त कठिन कार्य यह है गुरु-चरणो मे मन को सर्वात्मना समर्पित कर देना। कहा

जाना, कहा रहना, किसके साथ रहना, आदि का निर्णय गुरु के निर्देश से ही होता हे।

आज मध्याह्न मे बीस हजार की महती उपस्थिति मे दीक्षा-समारोह का भव्य आयोजन हुआ। सर्व प्रथम दीक्षार्थिनी वहिनो का परिचय प्रस्तुत किया गया। आचार्यप्रवर ने दीक्षा सस्कार पर सक्षेप मे प्रकाश डाला।

युवाचार्यश्री एव साध्वी प्रमुखाश्री के भावपूर्ण वक्तव्य हुए। उसके बाद आचार्यश्री ने आगम-वाणी का उच्चारण करते हुए दोनो बहिनो को दीक्षा प्रदान की, उनका परिचय इस प्रकार हे।

नाम	पूर्व नाम	आयु	अध्ययन	सस्था मे
साध्वीश्री लब्धि प्रभा	मुमुक्षु लता गर्ग	२९	स्नातक प्रथम वर्ष	६ वर्ष
साध्वीश्री अमित रेखा	मुमुक्षु अभिलापा छाजेड	१८	प्राग् स्नातक प्रथम वर्ष	१½ ,,

इनमे प्रथम टिटिलागढ (उडीसा) तथा द्वितीय जसोल की है।

रात्रि मे भी आचार्यवर के सान्निध्य मे कार्यक्रम चला। अनेक वक्ताओ ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए।

मर्यादा महोत्सव का मुख्य कार्यक्रम

२८ जनवरी, माघ शुक्ला सप्तमी, दोपहर १२ ३० बजे, उपस्थिति साधु ६७, साध्विया १६७, भाई-बहिन लगभग २५०००।

- मगलाचरण-मुनिश्री विजयकुमार आदि मुनि वृन्द।
- सुप्रसिद्ध गाधीवादी चिन्तक, विचारक एव श्री विनोवाभावे के अनुज श्री शिवाजी भावे को सन् १९८४ का अणुव्रत पुरस्कार दिया गया।
- केन्द्रीय शिक्षा मत्री श्री कृष्णचद पत, राजस्थान नहर मत्री श्री चदनमल वैद, पूव मत्री श्री मथुरादास माथुर, सासद श्री मोहरसिह आदि उपस्थित थे।

श्रीपत ने कहा—"दुनिया मे पुरस्कार कई तरह के मिलते है। हमारे देश मे भी कई तरह के पुरस्कार दिये जाते है। लेकिन चरित्र-निर्माण के लिए किसी प्रकार का पुरस्कार नही मिलता, जवकि मैं इसे आवश्यक मानता हू। देशवासियो के चरित्र को उन्नत वनाने मे गाधीजी ने वहुत काम किया। मुझे प्रसन्नता है कि आचार्यश्री तुलसी इस दिशा मे स्तुत्य प्रयास कर रहे हैं और उसका देशवासियो पर अच्छा असर पडा है।"

दैनिक जनसत्ता के सपादक श्री प्रभाप जोशी ने कहा—"अब जमाना विज्ञान और अध्यात्म का आया है। आजकल के बहुत सारे वैज्ञानिक अध्यात्म की मूल धारणाओ को सिद्ध करने मे लगे हुए है। अहिंसा की सार्वभौम शक्ति को वैज्ञानिक लोग भी स्वीकार करते हैं। जो समाज सबसे अधिक अहिंसक होगा, वही सबसे अधिक टिकाऊ होगा। मैंने आचार्यजी से इन बातो पर खुली बातचीत की है।"

दैनिक हिन्दुस्तान के सपादक श्री विनोद कुमार मिश्र ने कहा—"सत्ता और राजनीति के बिना यह दुनिया न पहले चली है, न वर्तमान मे चल रही है और न भविष्य मे चलने वाली है। हमारे यहा राम और कृष्ण की पूजा होती है, वाल्मीकि और तुलसी की पूजा नही होती। यह जीवन का एक बहुत बडा सत्य है। लेकिन साथ ही यह भी सत्य है कि राजनीति की अतिशयता समाज और देश को बर्बाद कर देती है। उसे विनाश की ओर ले जाती है राजनीति और अध्यात्म के समन्वय से ही यह समाज चल सकता है। आचार्य श्री तुलसी से दिल्ली मे मैं कई बार मिला हू। आप अणुव्रत के द्वारा बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।"

- जय तुलसी फाउन्डेशन के अध्यक्ष श्री धर्मचद चौपडा ने फाउन्डेशन की प्रवृत्तियो पर प्रकाश डाला।
- श्री शिवाजी भावे ने पुरस्कार ग्रहण करते हुए कहा—"परिवर्तन की प्रक्रिया मे सबसे पहले स्वय का परिवर्तन होना चाहिये। उसके बाद समाज-परिवर्तन तथा राष्ट्र-परिवर्तन की बात होगी। सर्वोदय एव अणुव्रत समाज ने इस दिशा मे कुछ काम किया है। आचार्यश्री तुलसी का विनोबाजी से बहुत गहरा सबध था। जब आप पवनार पधारे थे, उस समय विनोबाजी दो कि० मी० आगे आकर आगवानी की तथा हाथ पकडकर अपने आश्रम तक ले गये। उस समय के फोटो आज भी सुलभ है।"
- साध्वी प्रमुखा श्री ने कहा—"चेहरे को सुन्दर बनाने के लिए रग का उपयोग किया जाता है, वैसे ही जीवन की आकृति को सुन्दर बनाने के लिए सर्वोत्कृष्ट उपयोगी तत्त्व है—चरित्र व अनुशासन"।
- युवाचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे कहा—"मर्यादा महोत्सव हमारे जीवित अनुशासन का परीक्षण है यह परीक्षा की एक कसौटी है। आज सघ और सस्थाओ की बहुलता है, किन्तु यह जीवित अनुशासन कही-कही

ही देखने को मिलता ह । जीवित अनुशासन वह होता ह, जिसमे अहकार ओर ममकार के परिष्कार की क्षमता होती ह। आग्रह के परिष्कार की क्षमता होती ह । अपनी असमथता को स्वीकार करने की क्षमता हाती ह । अपने घनिष्ठ से घनिष्ठ व्यक्ति को भी सिद्धान्त च्युत होने पर छोडने की क्षमता होती ह ।"

- आचायश्री ने अपन महत्वपूण उद्‌वोधन मे कहा—"मर्यादा महोत्सव कवल साधु-साध्वियो तथा श्रावक-श्राविकाओ के लिए ही नही, मानव मात्र के लिए है। हर व्यक्ति के लिये मर्यादा आवश्यक ह । हर व्यक्ति को मर्यादित जीवन जीन का प्रयास करना चाहिये ।"

आचायश्री ने विस्तार से अणुव्रत एव सम-सामयिक समस्याओ पर विस्तार से प्रकाश डाला, साथ ही आचायवर के सद्य रचित एक भावपूर्ण गीत* से पडाल मे समा बध गया। आचायवर ने आगामी मर्यादा महोत्सव उदयपुर मे मनाने की घोषणा की तथा होली चौमासा टाडगड, महावीर जयति आसीन्द, अक्षय तृतीया गगापुर करने की घोषणा की । आचायश्री ने कुछ साधु-साध्वियो के आगामी चातुर्मासो की नियुक्तिया की ।

श्री विजयसिह सुराना श्री जेन श्वे० तेरापथी महासभा तथा श्री खेमचन्द सेठिया जैन विश्व भारती के सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये ।

शोक विमोचन

श्री झीटुलाल दूगड (राजलदेसर) एक सघनिष्ठ श्रावक थे । अपने क्षेत्र मे साधु-साध्वियो की पूरी सार सभाल रखते थे ।

- श्री केसरीचद सेठिया शार्दुलपुर के जाने माने सेठिया परिवार के प्रमुख सदस्य व वरिष्ठ श्रावक थे । वे साधु-साध्वियो की अच्छी सेवा करते थे । उनकी धमपत्नी एक धमनिष्ठ महिला ह ।
- श्रीमती छोगीवाई सुराणा (सुजानगढ) मुनिश्री सुमेरमल "सुमन" की ससार पक्षीया माता थी । कुछ समय सवा करके मुनिश्री "सुमन" को अच्छी तरह विदाई दी और उसके वाद स्वय इस ससार से विदा ले ली ।
- श्री मोहनलाल कावडिया (राजनगर) ८० वर्ष की अवस्था मे दिवगत हो गये । वे राजनगर के अच्छे श्रावको मे थे ।
- श्री धर्मचन्द दूगड (सरदारशहर)—उनकी सघ-सघपति के प्रति गहन

---

* देखे परिशिष्ट १ ।

आस्था एव भक्ति थी।

- श्री मोहनलाल सेठिया (चाडवास) का कलकत्ता मे निधन हो गया। शीघ्र गुरुदेव के दर्शन कर उनकी धर्मपत्नी ने बडी हिम्मत का परिचय दिया।
- श्री मागीलाल वैगानी (बीदासर) पिछले कई वर्षो मे जलोदर की की बीमारी से पीडित होते हुए भी बडी हिम्मत और साहस का परिचय देते रहते थे। वे गाव मे दाठीक व दबग व्यक्ति थे। मातुश्री वदनाजी के अनन्य सेवा भावी श्रावक थे। धर्मसघ के प्रति उनकी गहरी निष्ठा थी।

इन सभी के पारिवारिक जनो ने जसोल मे आचायवर के दर्शन किये और उन्होने आध्यात्मिक सबल प्राप्त किया।

जसोल से विहार

५ फरवरी को बीस दिवसीय सफल प्रवास व्यतीत कर आचार्यवर ने जसोल से विहार किया। बालोतरा के पार्श्व से गुजरते हुए एक विशाल जुलूस के साथ आचार्यवर जाणियाणा पधारे। मार्गवर्ती काणाणा, पारलू, समदडी, रासी, खाण्डप आदि गावो का स्पर्श किया। सभी जगह हजारो लोगो ने आचार्यवर को सुना और अपने जीवन को व्यसन मुक्त बनाने का प्रयास किया।

१३ फरवरी को जालौर जिला पार कर पाली जिला मे प्रवेश किया। कुलथाना मे पाली जिला की ओर स्वागत करने के लिए विशेष रूप से जिलाधीश श्री पी० के० देव, पाली से विधान सभा के लिए काग्रेस प्रत्याशी श्री शौकतअली, पुलिस अधीक्षक श्री परमानन्द रछोइया तथा न्यायाधिकर्ता दण्डनायक श्री वसतिलाल बावेल आदि ने आचायश्री का भावभीना स्वागत किया। आचायश्री ने अणुव्रत को मानव धर्म की प्रक्रिया उजागर करने वाला तत्त्व बताया।

पाली मे भव्य स्वागत

१६ फरवरी/कुछ भक्तजनो की मार्गगत फैक्ट्रियो का स्पर्श करते हुए विशाल जन समूह के साथ पाली नगर मे प्रवेश किया। जालोरी गेट, गजानन्द मार्ग, जैन मार्केट, राणा प्रताप चौक आदि को पार करता हुआ स्वागत जुलूस नेहरु नगर मे भगवान महावीर समवसरण मे स्वागत सभा के

ही देखने को मिलता है। जीवित अनुशासन वह होता ह, जिसमे अहकार और ममकार के परिष्कार की क्षमता होती ह। आग्रह के परिष्कार की क्षमता होती ह। अपनी असमथता को स्वीकार करने की क्षमता हाती ह। अपने घनिष्ठ से घनिष्ठ व्यक्ति को भी सिद्धान्त च्युत होने पर छोडने की क्षमता होती ह।"

- आचायश्री न अपन महत्वपूण उद्‌वोधन मे कहा—"मर्यादा महोत्सव कवल साधु-साध्वियो तथा श्रावक-श्राविकाओ के लिए ही नही, मानव मात्र के लिए है। हर व्यक्ति के लिये मर्यादा आवश्यक ह। हर व्यक्ति को मर्यादित जीवन जीने का प्रयास करना चाहिये।"

आचायश्री ने विस्तार से अणुव्रत एव सम-सामयिक समस्याओ पर विस्तार से प्रकाश डाला, साथ ही आचायवर के सद्य रचित एक भावपूर्ण गीत* से पडाल मे समा वध गया। आचायवर न आगामी मर्यादा महोत्सव उदयपुर मे मनाने की घोपणा की तथा होली चौमासा टाडगड, महावीर जयति आसीन्द, अक्षय तृतीया गगापुर करने की घोषणा की। आचार्यश्री ने कुछ साधु-साध्वियो के आगामी चातुर्मासो की नियुक्तिया की।

श्री विजयसिह सुराना श्री जैन श्वे० तेरापथी महासभा तथा श्री खेमचन्द सेठिया जैन विश्व भारती के सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये।

शोक विमोचन

श्री भीखूलाल दूगड (राजलदेसर) एक सघनिष्ठ श्रावक थे। अपने क्षेत्र मे साधु-साध्वियो की पूरी सार सभाल रखते थे।

- श्री केसरीचद सेठिया शार्दुलपुर के जाने माने सेठिया परिवार के प्रमुख सदस्य व वरिष्ठ श्रावक थे। वे साधु-साध्वियो की अच्छी सेवा करते थे। उनकी धमपत्नी एक धमनिष्ठ महिला है।
- श्रीमती छोगीवाई सुराणा (सुजानगढ) मुनिश्री सुमेरमल "सुमन" की ससार पक्षीया माता थी। कुछ समय सेवा करके मुनिश्री "सुमन" को अच्छी तरह विदाई दी और उसके वाद स्वय इस ससार से विदा ले ली।
- श्री माहनलाल कावडिया (राजनगर) ८० वप की अवस्था मे दिवगत हो गये। वे राजनगर के अच्छे श्रावको मे थे।
- श्री वमचन्द दूगड (सरदारशहर)—उनकी सघ-सघपति के प्रति गहन

---

* देखे परिशिष्ट १।

आस्था एव भक्ति थी।

- श्री मोहनलाल सेठिया (चाडवास) का कलकत्ता मे निधन हो गया। शीघ्र गुरुदेव के दर्शन कर उनकी धर्मपत्नी ने वडी हिम्मत का परिचय दिया।
- श्री मागीलाल वैगानी (वीदासर) पिछले कई वर्षो से जलोदर की की बीमारी से पीडित होते हुए भी बडी हिम्मत और साहस का परिचय देते रहते थे। वे गाव मे दाठीक व दवग व्यक्ति थे। मातुश्री वदनाजी के अनन्य सेवा भावी श्रावक थे। धमसघ के प्रति उनकी गहरी निष्ठा थी।

इन सभी के पारिवारिक जनो ने जसोल मे आचार्यवर के दर्शन किये और उन्होने आध्यात्मिक सवल प्राप्त किया।

[जस]ोल से विहार

५ फरवरी को वीस दिवसीय सफल प्रवास व्यतीत कर आचायवर ने जसोल से विहार किया। वालोतरा के पार्श्व से गुजरते हुए एक विशाल जुलूस के साथ आचार्यवर जाणियाणा पधारे। मार्गवर्ती काणाणा, पारलू, समदडी, राखी, खाण्डप आदि गावो का स्पर्श किया। सभी जगह हजारो लोगो ने आचायवर को सुना और अपने जीवन को व्यसन मुक्त बनाने का प्रयास किया।

१३ फरवरी को जालौर जिला पार कर पाली जिला मे प्रवेश किया। कुलथाना मे पाली जिला की ओर स्वागत करने के लिए विशेष रूप से जिलाधीश श्री पी० के० देव, पाली से विधान सभा के लिए काग्रेस प्रत्याशी श्री शौकतअली, पुलिस अधीक्षक श्री परमानन्द रछोइया तथा न्यायाधिकर्ता दण्डनायक श्री बसतिलाल बावेल आदि ने आचायश्री का भावभीना स्वागत किया। आचार्यश्री ने अणुव्रत को मानव धर्म की प्रक्रिया उजागर करने वाला तत्त्व वताया।

पाली मे भव्य स्वागत

१६ फरवरी/कुछ भक्तजनो की मार्गगत फैक्ट्रियो का स्पश करते हुए विशाल जन समूह के साथ पाली नगर मे प्रवेश किया। जालोरी गेट, गजानन्द मार्ग, जैन मार्केट, राणा प्रताप चौक आदि को पार करता हुआ स्वागत जुलूस नेहरू नगर मे भगवान महावीर समवसरण मे स्वागत सभा के

रूप मे परिणत हो गया। समारोह के मुख्य अतिथि थे केन्द्रीय सचार मत्री श्री रामनिवास मिर्धा। अध्यक्ष सासद श्री मूलचन्द डागा तथा मुख्य वक्ता थे न्यायाधीश श्री वावेल।

श्री मिर्धा ने कहा "देश भौतिक रूप से कितना ही उन्नति कर ले, मगर जब तक हमारे सामाजिक जीवन या व्यक्तिगत जीवन मे नैतिकता का समावेश नही हो पाता, तव तक वह समाज व देश आगे वढ नही सकता। आचाय तुलसी हमारे देश की उन कुछ महान् आत्माओ मे से है, जो नैतिकता का मार्ग प्रशस्त कर रहे ह।"

श्री मूलचद डागा ने कहा—"धर्म के मार्ग पर चलकर ही जीवन की कालिमा को धोया जा सकता ह। आचायश्री का पाली पर महान उपकार होगा जो कि यहा के लोगो का जीवन का सही मार्ग दिखाने आये है।"

श्री वावेल ने कहा—"लक्ष्मी, सरस्वती और कीर्ति—ये तीन दैविक शक्तिया हर समय आपके साथ वनी रहती हे, पर आचार्यजी इनसे निर्लिप्त रहते है, उसकी चाह नही रखते। आप चाह रखते है कि सारा ससार सत्य, अहिसा ओर सदाचार के माग पर चले।"

आचायश्री न अपने उद्बोधन मे वर्तमान ममय मे सपूर्ण मानव जाति के लिए एक आचार-सहिता की आवश्यकता पर जोर दिया।

"नाथु से महाप्रज्ञ" पुस्तक का विमोचन

१७ फरवरी / पाली / आचार्यप्रवर के सान्निध्य मे 'नाथु से महाप्रज्ञ' पुस्तक का विमोचन किया गया, जिसके लेखक हे जोधपुर के श्रद्धालु श्रावक श्री चन्दनराज मेहता। लेखक ने स्वय उपस्थित होकर यह पुस्तक आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री को समर्पित की।

आचार्यश्री ने कहा—"पूज्य कालूगणी भविष्य द्रष्टा तथा हमारे निर्माता थे। मुनि नथमल जी को होनहार समभकर मुझे सोप दिया। इनकी शिक्षा का पूरा दायित्व मेरे पर था और ये सदा मेरे प्रति पूर्णतया समर्पित रहे। मेरे सजग दायित्व इनके सजग समपण से जो घटित हुआ उसे सभी मुनि नथमल से वने युवाचाय महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व से जानते ह।"

आचायश्री ने पुस्तक स्वीकार करते हुए कहा—कालूगणी इनको (युवाचाय महाप्रज्ञ) वात्सल्य से नाथु ही कहा करते थे। इस पुस्तक मे नाथु के जीवन की शुरुआत से लेकर आज युवाचार्य महाप्रज्ञ के पद तक की जीवन-

यात्रा का वर्णन एव घटनाओ की अनुभूतियो का सचालन बडे ही सुन्दर ढग से किया गया है।"

युवाचार्यश्री ने कहा—"मेरे दीक्षादाता गुरु पूज्य कालूगणी थे और शिक्षा गुरु के रूप मे दीक्षित होते ही उसी दिन आचार्यश्री तुलसी मिले। ऐसे दो महान् और समर्थ गुरु शताब्दियो मे किसी-किसी को ही मिलते है, जैसे मुझे मिले है। मैने आज तक जो कुछ किया उसके पीछे श्रद्धेय आचार्यश्री की प्रेरणा और शक्ति ही काम करती रही है।"

१९ फरवरी / पाली / प्रात कालीन प्रवचन मे आचार्यवर ने कहा—भगवान न तो प्रणाम करने से खुश होता है। और न अप्रणाम से नाखुश। हम अपने लिए भगवान की वन्दना करते है। क्योकि वह वदनीय है। वन्दनीय को वन्दना करना हमारा दायित्व है, फर्ज ह। लेना-देना कुछ नहीं है। भगवान कुछ देता नही, हमे कुछ लेना नही हे। यह तो हमारा कतव्य है कि हम उसकी वदना करे।"

२० फरवरी / पाली/विशाल जनसमुदाय को सबोधित करते हुए आचार्य श्री ने कहा—"मै परदे को कायरता का प्रतीक मानता हू। धर्म की पालना के लिए, अहिंसा की पालना के लिए पर्दा प्रथा का अत करना आवश्यक समझता हू।'

२१ फरवरी / पाली/अष्टमाचार्य कालूगणी का जन्मदिन फाल्गुन शुक्ला द्वितीया थी। प्रात कालीन कार्यक्रम मे उनका पावन स्मरण किया गया। मुनि श्री महेन्द्र कुमार ने अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। आचार्यवर ने कालूगणी को महान् प्रेरणास्रोत बताते हुए अपनी विनम्र भावाञ्जलि प्रकट की।

आकाशवाणी, जोधपुर के श्री वेद बजाज ने आचार्य श्री, युवाचार्य श्री एव साध्वी प्रमुखा श्री की वार्ता रेकार्ड की। इस वार्ता मे सच्चा भारत के सम्पादक श्री सम्पत भडारी व मनमोहन कर्णावट ने भी भाग लिया। वार्ता मे तेरापथ, अणुव्रत, रूढिमुक्त समाज सरचना, साहित्य तथा अनेक ज्वलत विषयो पर विस्तार से चर्चा चली। आचार्य श्री से यह पूछा जाने पर कि "आपकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पदयात्रा कौन सी रही।" प्रत्युत्तर मे आचार्यवर ने कहा—हमारी पद यात्राओ मे सबसे महत्त्वपूर्ण पदयात्रा दक्षिण की रही। मैं इस यात्रा को इसलिए महत्त्व देता हू कि उस समय हिन्दी को लेकर भाषा-विवाद जोरो पर था उस स्थिति मे मै दक्षिण-

गया था। मै पूरी दक्षिण-यात्रा मे हिन्दी मे बोला। मुझे सभी ने प्रेम से सुना। ऐसे तो वहा अनुवादक की भी व्यवस्था थी।

युवाचार्य श्री से प्रेक्षा ध्यान, उसकी उपयोगिता एव शिविर आदि पर विस्तार से प्रश्नोत्तर चले। जैन धर्म व गाधी जी की अहिंसा विचार धारा पर युवाचार्य श्री ने मार्मिक तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया।

२२ फरवरी / पाली / रात्रि मे युवाचार्य श्री के सान्निध्य मे मुनि श्री महेन्द्र कुमार ने स्मरण शक्ति के चामत्कारिक अवधान प्रयोग किये। हजारो लोगो व गणमान्य व्यक्तियो के बीच यह कार्यक्रम पूर्ण सफल रहा।

२३ फरवरी / पाली / प्रवास का अतिम दिन। रात्रि मे विदाई समारोह का कार्यक्रम था। अनेको वक्ताओ ने आचार्यवर को भावभीनी विदाई देते हुए सन् १९८६ का चातुर्मास पाली मे करने की पुरजोर प्रार्थना की।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए पाली जिला पुलिस अधीक्षक श्री परमानद रोछैया ने कहा—"आचार्य तुलसी जी के दर्शन करने का यह मेरा प्रथम अवसर है। मै आपके उदात्त विचारो एव निर्माणकारी कार्यो से बहुत प्रभावित हू। तेरापथ सघ की मर्यादा और अनुशासन को देखकर मे स्वय अनुशासित बन गया। आपकी शिक्षा का ही यह परिणाम मानता हू कि तीन-तीन पाकेट सिगरेट पीने वाला मैं केवल तीन सिगरेट पर आ गया हू इसे भी मैं शीघ्र छोड दूगा।"

२४ फरवरी को पाली से विहार हो गया। प्रात रावलियास व साय तीन हजार की आबादी वाले लाबिया गाव पधारे। रात्रि प्रवचन से प्रभावित होकर अनेक व्यक्तियो ने मद्य-मास का परित्याग किया। २५ फरवरी को चवाडिया गाव मे श्री घूलचद ने सपत्नी आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया।

२६ फरवरी / खारची गाव एक घटे विराज कर आचार्यवर मारवाड जक्शन पधारे। स्थानीय जनता द्वारा आपका स्वागत किया गया। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे कहा—"मारवाड जक्शन ट्रेनो का सगम स्थल है। यहा यातायात की बहुत अच्छी सुविधा है। मैं उपस्थित जनसमुदाय से कहना चाहता हू कि आप लोगो का जीवन भी नैतिकता, प्रामाणिकता एव चरित्र निष्ठा का सगम स्थल बने।"

आचार्यवर यहा दो दिन विराजे। यातायात की अच्छी सुविधा होने

के कारण पार्श्ववर्ती क्षेत्रो के लोग बहुत बडी तादाद मे पहुचे । २६ फरवरी को रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखा श्री के सान्निध्य मे आयोजित हुआ ।

चिरपटिया होकर २८ फरवरी को नीवली पधारे, रात्रिकालीन कार्य-क्रम मे श्री धर्मेश मुनि ने अपनी जन्मभूमि की ओर से आचार्यवर का स्वागत किया। सारण, राढझालरा होते हुए २ मार्च को दुधालेश्वर महादेव पधार गये। यहा पधारने के साथ ही पाली जिले की सीमा पार कर अजमेर जिले की सीमा मे प्रविष्ट हो गए। यह ऐतिहासिक उत्तुग हरे-भरे पर्वतो से घिरा हुआ है। वहा ५०० वर्ष से भी अधिक समय से अनवरत एक पहाडी झरना प्रवाहित हो रहा है।

मध्याह्न मे पहाडो एव वृक्षो की सघन छाया मे बने प्राकृतिक पण्डाल मे मेवाड की ओर से आचार्यवर का अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया। अनेको वक्ताओ ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। इस अव-सर पर साध्वी प्रमुखाश्री, युवाचार्यश्री, एव आचार्यवर के प्रेरणादायी वक्तव्य हुए।

टॉडगढ मे मेवाड स्तरीय अभिनन्दन

३ मार्च / टाडगढ / सूर्योदय के साथ ही आचार्यवर ने टॉडगढ के लिए दुधालेश्वर महादेव से प्रस्थान किया। चारो ओर ऊचे पर्वत, सवत्र हरियाली, टेडे-मेढे पहाडी रास्तो के मध्य से होकर गुजरता रग विरगा काफिला, बडा ही मनभावना लग रहा था। मेवाड के कोने-कोने से समागत हजारो लोगो के एक भव्य जुलुस के साथ आचार्यवर ग्राम बाहर स्थित डाक-बगले मे पधारे। आधा घटा ठहरने के बाद आचार्यवर साहित्य सस्थान का नव क्रीत भवन 'प्रज्ञा शिखर' पर, जो पूर्व मे कर्नल टॉड का बगला था, पधारे। विविध आयामी रचनात्मक कार्यो के केन्द्र इस साहित्य सस्थान के निर्देशक श्री लालचद कोठारी, सहनिदेशक श्री भीखम चद कोठारी है। ऊची पहाडी पर स्थित इस प्रज्ञा शिखर मे साहित्य सस्थान द्वारा 'जैन साहित्य प्रदर्शनी' का समायोजन किया गया। इस प्रदर्शनी मे विभिन्न सस्थाओ द्वारा प्रकाशित पाच हजार पुस्तके प्रदर्शित की गई। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा उपस्थित जन समूह को सम्बोधित किया।

डाक बगले से विहार कर आचार्यप्रवर 'प्रज्ञा समवसरण' पधारे।

मेवाड का प्रवेश द्वार होने से टॉडगढ मे मेवाड स्तरीय स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वोलने वालो मे प्रमुख थे—माध्यमिक शिक्षा वोर्ड, अजमेर के अध्यक्ष श्री जगन्नाथ सिंह मेहता, पूर्व विधायक श्रीमती लक्ष्मीवाई चुडावत तथा मेवाड स्तरीय तेरापथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री उत्तम चद सकलेचा, अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के सयोजक श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट, मेवाड तेरापथ कान्फ्रेस के अध्यक्ष श्री मनोहर कोठारी, मेवाड प्रान्तीय महिला मडल की अध्यक्षा श्रीमती हर्षिला हिरण, मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट, साध्वीश्री कीर्तिलता, श्री भीखमचद कोठारी। मेवाड के कवि श्री माधवराज, श्री शीलव्रत शर्मा, आकाशवाणी-उदयपुर की युवा कलाकार सुश्री सध्या शर्मा ने आचार्यवर का काव्यात्मक अभिनन्दन किया।

हरियाणा के पूर्व मुख्यमत्री श्री वनारसीदास ने कहा—'आज का दृश्य देखकर पन्द्रह-वीस वर्ष पूर्व का भिवानी दृश्य याद आ रहा है। आचार्यश्री का स्वागत करने के लिए मुख्यमत्री की हैसियत से मैं स्वय उपस्थित था। आचार्यश्री देश के महान् सत है। आपके कार्यो को हम शब्दो के घेरे मे नही वाध सकते।

अमृत महोत्सव क्या है, इस पर प्रकाश डालते हुए युवाचार्यश्री ने कहा 'आचायवर ने अपने प्रशासन के पचास वर्षो मे जो समुद्र मथन किया और उससे जो अमृत प्राप्त हुआ उसे वाटने का अवसर ही अमृत-महोत्सव है।'

आचार्यवर ने विस्तार से आगामी वर्ष के कार्यक्रमो पर प्रकाश डाला। आमेट के वरिष्ठ श्रावक श्री कजोडी मल वोहरा ने आभार ज्ञापन व मच के दायित्व का निर्वहन किया श्री महेद्र कर्णावट ने।

टॉडगढ प्रवास के दौरान पचासो राजपूतो ने आचार्यवर की प्रेरणा से होली के उपलक्ष मे एक साथ शिकार न करने का सकल्प लिया। उनमे होली पर 'हेडो' खेलने का परम्परागत रिवाज था। आचार्यश्री के सान्निध्य का सव पर सात्विक असर हुआ और सदा के लिए उनका शिकार छूट गया।

शोक विमोचन

पाली व टॉडगढ के वीच वे परिवार आचार्यवर की उपासना मे पहुचे, जिनके पारिवारिक सदस्य की मृत्यु के उपरान्त विशेष आध्यात्मिक सवल पाने हेतु आये। वे ये हैं—

- श्री चन्दनमल बैंगानी (बीदासर) का कलकत्ता मे स्वर्गवास हुआ। उनकी धर्म मे न केवल गहरी निष्ठा थी, बल्कि धर्म उनके जीवन-व्यवहार मे परिलक्षित होता था। उनके रहन-सहन, खान-पान में सहज सयम था। उनके पुत्र श्री सरदार मल बैंगानी वर्षो से दिल्ली मे अणुव्रत के कार्य से सपृक्त है।
- स्वर्गीय श्री सुगनचद चौपडा की धर्म पत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी का ८३ वर्ष की परिपक्व अवस्था मे ३५ घटो के तिविहार सथारे मे स्वर्गवास हो गया।
- श्रीमती अणची देवी बैद (राजलदेसर) का स्वगवास हो गया, आचार्यश्री ने कृपा करके उनके बारे मे ये पद्य फरमाये—

भीखम चद बैद की अम्बा, अणची बाई आस्थावान।
पाच पुत्र अरु च्यार पुत्रिया, शुभ सस्कारी नव सतान॥
त्याग तपोमय जीवन जीयो, परतख पुन्याई रे पाण।
दोन्यु जन्म सुधार्‌या देवी, सहज सादगी पूर्ण प्रयाण॥२॥

८ मार्च को बरार, १० मार्च को ठीकरवास पधारे। बरार-ठीकरवास मध्य आसन गाव मे एक घण्टा विराजे। आचार्यवर के स्वागत मे पाच दम्पतियो ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। वे है—श्री धनराज बावेल, श्री भवरलाल बावेल श्री भूरालाल दक, श्री भूरालाल छाजेड, श्री मोहनलाल छाजेड। आचार्यवर के सान्निध्य मे मेवाड के कार्यकर्ताओ की एक आवश्यक मीटिंग रखी गई। कार्यकर्ताओ की महती उपस्थिति मे अमृत-महोत्सव के कार्यक्रमो पर चिंतन चला। कुछ महत्त्वपूर्ण निर्णय भी लिये गये। रात्रि-कालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे चला।

११ मार्च को बगड, १२ को काच्छवली तथा १३ मार्च को आचार्यश्री पीपली पधारे। रावत समाज के प्रमुख श्री भीमसिंह ने अपनी सामाजिक सस्था की ओर से आचार्यश्री का अभिनन्दन किया। आचार्यश्री ने श्री मागीलाल छाजेड व श्री हस्तीमल दक की याद करते हुए उनकी सेवाओ की भूरि-भूरि प्रशसा की तथा पच सूत्री कार्यक्रम की चर्चा की।

देवगढ मे

१३ मार्च/अल्प समय मे देवगढ मे दुबारा पधारने पर स्थानीय जनता द्वारा भावभरा अभिनन्दन किया गया। राव साहब श्री नाहरसिंह ने अपने

मेवाड का प्रवेश द्वार होने से टॉडगढ मे मेवाड स्तरीय स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बोलने वालो मे प्रमुख थे—माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर के अध्यक्ष श्री जगन्नाथ सिह मेहता, पूर्व विधायक श्रीमती लक्ष्मीबाई चुडावत तथा मेवाड स्तरीय तेरापथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री उत्तम चद सकलेचा, अमृत महोत्सव राष्ट्रीय सीमति के सयोजक श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट, मेवाड तेरापथ कान्फ्रेस के अध्यक्ष श्री मनोहर कोठारी, मेवाड प्रान्तीय महिला मडल की अध्यक्षा श्रीमती हर्षिला हिरण, मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट, साध्वीश्री कीर्तिलता, श्री भीखमचद कोठारी। मेवाड के कवि श्री माधवराज, श्री शीलव्रत शर्मा, आकाशवाणी-उदयपुर की युवा कलाकार सुश्री सध्या शर्मा ने आचार्यवर का काव्यात्मक अभिनन्दन किया।

हरियाणा के पूर्व मुख्यमत्री श्री बनारसीदास ने कहा—'आज का दृश्य देखकर पन्द्रह-बीस वर्ष पूर्व का भिवानी दृश्य याद आ रहा हे। आचार्यश्री का स्वागत करने के लिए मुख्यमत्री की हेसियत से मैं स्वय उपस्थित था। आचायश्री देश के महान् सत है। आपके कार्यो को हम शब्दो के घेरे मे नही बाध सकते।

अमृत महोत्सव क्या हे, इस पर प्रकाश डालते हुए युवाचार्यश्री ने कहा 'आचार्यवर ने अपने प्रशासन के पचास वर्षो मे जो समुद्र मथन किया और उससे जो अमृत प्राप्त हुआ उसे बाटने का अवसर ही अमृत-महोत्सव है।'

आचायवर ने विस्तार से आगामी वर्ष के कार्यक्रमो पर प्रकाश डाला। आमेट के वरिष्ठ श्रावक श्री कजोडी मल बोहरा ने आभार ज्ञापन व मच के दायित्व का निवहन किया श्री महेद्र कर्णावट ने।

टॉडगढ प्रवास के दौरान पचासो राजपूतो ने आचार्यवर की प्रेरणा से होली के उपलक्ष मे एक साथ शिकार न करने का सकल्प लिया। उनमे होली पर 'हेडो' खेलने का परम्परागत रिवाज था। आचायश्री के सान्निध्य का सब पर सात्विक असर हुआ और सदा के लिए उनका शिकार छूट गया।

शोक विमोचन

पाली व टॉटगढ के बीच वे परिवार आचार्यवर की उपासना मे पहुचे, जिनके पारिवारिक सदस्य की मृत्यु के उपरान्त विशेप आध्यात्मिक सबल पाने हेतु आये। वे ये हैं—

० श्री चन्दनमल बैंगानी (बीदासर) का कलकत्ता मे स्वर्गवास हुआ। उनकी धर्म मे न केवल गहरी निष्ठा थी, वल्कि धर्म उनके जीवन-व्यवहार मे परिलक्षित होता था। उनके रहन-सहन, खान-पान मे सहज सयम था। उनके पुत्र श्री सरदार मल बैंगानी वर्षों से दिल्ली मे अणुव्रत के कार्य से सपृक्त है।

० स्वर्गीय श्री सुगनचद चौपडा की धर्म पत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी का ८३ वर्ष की परिपक्व अवस्था मे ३५ घटो के तिविहार सथारे मे स्वर्गवास हो गया।

० श्रीमती अणची देवी बैंद (राजलदेसर) का स्वर्गवास हो गया, आचार्यश्री ने कृपा करके उनके बारे मे ये पद्य फरमाये—

भीखम चद बैंद की अम्बा, अणची बाई आस्थावान।
पाच पुत्र अरु च्यार पुत्रिया, शुभ सस्कारी नव सतान॥
त्याग तपोमय जीवन जीयो, परतख पुन्याई रे पाण।
दोन्यु जन्म सुधार्‌या देवी, सहज सादगी पूर्ण प्रयाण॥२॥

८ मार्च को बरार, १० मार्च को ठीकरवास पधारे। बरार-ठीकरवास मध्य आसन गाव मे एक घण्टा विराजे। आचार्यवर के स्वागत मे पाच दम्पतियो ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। वे हैं—श्री धनराज बाबेल, श्री भवरलाल बाबेल श्री भूरालाल दक, श्री भूरालाल छाजेड, श्री मोहनलाल छाजेड। आचार्यवर के सान्निध्य मे मेवाड के कार्यकर्ताओ की एक आवश्यक मीटिंग रखी गई। कार्यकर्ताओ की महती उपस्थिति मे अमृत-महोत्सव के कार्यक्रमो पर चिंतन चला। कुछ महत्त्वपूर्ण निर्णय भी लिये गये। रात्रि-कालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे चला।

११ मार्च को बग्गड, १२ को काच्छवली तथा १३ मार्च को आचार्यश्री पीपली पधारे। रावत समाज के प्रमुख श्री भीमसिंह ने अपनी सामाजिक सस्था की ओर से आचार्यश्री का अभिनन्दन किया। आचार्यश्री ने श्री मागीलाल छाजेड व श्री हस्तीमल दक की याद करते हुए उनकी सेवाओ की भूरि-भूरि प्रशसा की तथा पच सूत्री कार्यक्रम की चर्चा की।

देवगढ मे

१३ मार्च/अल्प समय मे देवगढ मे दुबारा पधारने पर स्थानीय जनता द्वारा भावभरा अभिनन्दन किया गया। राव साहब श्री नाहरसिंह ने अपने

विचार रखे। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे कहा—'मै प्रकृति का उपासक हू। प्रकृति से मुझे बहुत प्रेरणा मिलती है। मेरा मानना है कि मनुष्य को प्रकृति मे जीना चाहिए। बनावटीपन मे मेरा कोई विश्वास नही है। बाह्य साज-सज्जा को बुरा नही मानता, किन्तु इसी तरह भीतर को भी सजाना चाहिए।'

देवगढ के विशिष्ट कार्यकर्ता स्वर्गीय श्री धूलचद डागा की स्मृति मे प्रकाशित 'समय गोयम मा पमायए नामक स्वाध्याय पुस्तक आचार्यश्री को भेंट की गई। मध्याह्न मे स्थानकवासी समाज के श्री शिवमुनि, विजयमुनि आदि सत आचार्यश्री, युवाचार्यश्री की सान्निध्य मे उपस्थित हुए और लगभग एक घटा तक सौहार्दपूर्ण वातावरण मे बातचीत हुई। रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे चला।

आचार्यश्री की मेवाड यात्रा एक विशेष उद्देश्य को लेकर हो रही है और वह उद्देश्य है अमृत-महोत्सव की समायोजना। इस यात्रा के दौरान पच सूत्री सकल्प अभियान को तीव्रता के साथ चलाया जा रहा है। इसके साथ-साथ रूढि मुक्ति एव विग्रह-शमन की दिशा मे भी आचार्यश्री सघन प्रयत्न कर रहे हे। आचार्यश्री जहा जाते ह वहा गाव का पूरा प्रतिलेखन करते हे। उन्हे जहा खोट नजर आती है वहा करारी चोट करते है। सामाजिक या पारिवारिक वैमनस्य / विग्रह / तड को मिटाने मे वे पूरी शक्ति के साथ लग जाते है। १५, १६ माच को आचायश्री के द्विदिवसीय प्रवास के दौरान लसानी गाव के वर्षो के विवाद का पटाक्षेप हो गया।

लसानी के विवाद का मुख्य मुद्दा था—मृत्युभोज, जो स्थानकवासी एव तेरापथी समाज के बीच था। तेरापथी श्रावको के मृत्युभोज का परित्याग करने से स्थानकवासी भाइयो ने आपत्ति उठाई और मृत्युभोज मे शामिल होने पर जोर दिया। तेरापथी त्याग-भग के लिए कतई तैयार नही थे, अन्तत दोनो के बीच विवाह आदि प्रसगो मे भी आना-जाना बद हो गया। आचार्यश्री ने समझाने का प्रयास किया। वे समझते हुए भी अपने आग्रह पर अडे रहे। स्थानकवासी सम्प्रदाय के पजाबी साधु श्री विजयमुनि तथा डा० शिव मुनि ने भी इस झगडे को मिटाने का सफल प्रयास किया और वर्षो के वैमनस्य को समाप्त कर दिया।

साध्विया कम झोलके अधिक

१७ मार्च / आचायवर को लसाणी से ताल पहुचना था। उन दोनो

गावो के बीच की दूरी मात्र आठ कि० मी० है। ताल से चार कि० मी० की दूरी पर काकरोदगाव था, पर वह मार्ग मे नही आता था। लसाणी से काकरोद होते हुए ताल जाये, तो छह कि० मी० अतिरिक्त पडता था, इस तरह आठ कि० मी० की जगह चौदह कि० मी० हो जाता था। पहले तो काकरोद जाना स्थगित कर दिया, पर वहा के श्रद्धालु भाई-बहिनो के विशेष अनुरोध पर आचार्यवर ने काकरोद जाने की स्वीकृति दी।

आचार्यवर ११ साधुओ तथा साध्वी प्रमुखाश्री समेत छह साध्वियो के साथ काकरोद पधारे। शेष साधु-साध्विया सीधे ताल पहुचे। काकरोद के लिए जो रास्ता था ताल जाने के लिए पुन उसी रास्ते से आना था, इसलिए साधुओ ने अपना वजन वही रास्ते मे रख दिया। साध्वियो का वजन ताल जाने वाली साध्वियो ने ले लिया।

डेढ घण्टे के प्रवास के अनन्तर आचार्यवर पुन रवाना हुए। आचार्यवर से आगे चल रही साध्वियो के मानस मे सतो का वजन देखकर उत्साह जागा। साध्विया सख्या मे कम थी और सतो के झोलके अधिक। कमजोर सी दीखने वाली साध्वियो ने दो-दो झोलके अपने-अपने कधो पर उठा लिये। स्वय साध्वी प्रमुखाश्री भी झोलके हाथ मे लेकर चल पडी। साध्वियो के अत्यधिक अनुरोध के बावजूद साध्वी प्रमुखाश्री जी झोलके लेकर सहज भाव से चलती रही। पीछे आ रहे सतो को जब यह जानकारी मिली कि साध्विया वजन लेकर चली गयी, दो सत काफी तीव्र गति से चले, पर वे साध्वियो के निकट पहुचे, तब तक साध्विया ताल पहुच चुकी थी। स्थान पर पहुचकर सतो ने कृतज्ञता ज्ञापित की। आचार्यवर ने प्रसन्नता अभिव्यक्त की।

काकरोद से ताल पधारने तक ग्यारह बज चुके थे। गर्मी तेज हो गई थी। फिर भी स्वागत का सक्षिप्त कार्यक्रम रखा गया। सरपच के स्वागत भाषण के पश्चात् आचार्यवर ने अपने प्रवचन मे अच्छे इन्सान बनने के दो तरीके बताये—उपदेशश्रवण और उसका प्रयोग।

रमणीय पर्वतो की गोद मे

कुक्कर खेडा, भीम होते हुए २० मार्च को आचार्यश्री बडाखेडा पधारे। यह गाव पहाडो के मध्य बसा हुआ है। चारो ओर दृष्टिपात करने पर नजर आते है वृक्षो, लताओ हरियाली से लदे हुए पहाड। ऊचाई पर

स्थित इस गाव मे अनेको पक्के मकान है। आचार्यवर के पधारने पर स्थानीय जनता द्वारा भावभीना स्वागत किया गया। आचार्यश्री ने अपने वक्तव्य मे कहा—"भारतीय सस्कृति मे वैभव का स्थान त्याग से नीचे रहा है। मै मानता हू कि जब तक त्याग का सम्मान रहेगा, भारत सदा उन्नत रहेगा।

साध्वी श्री सोहनाजी (छापर) ने बगाल, बिहार, असम, आदि सुदूर प्रदेशो की यात्रा सपन्न कर ६ वर्ष ४४ दिन की सुदीर्घ अवधि के बाद आज आचार्यप्रवर के दर्शन किये। साध्वी श्री ने कलकत्ता चातुर्मास परिसपन्न कर अनवरत यात्रा करते हुए १३० दिनो मे २२०० किलोमीटर लबा मार्ग तय किया। इस प्रलब यात्रा मे कलकत्ता से जयपुर तक साध्वियो की उपासना कर कलकत्ता श्रावक समाज ने विशेष दायित्व निभाया। साध्वियो ने अपनी यात्रा के सस्मरणो को गीत के माध्यम से प्रस्तुति दी और आचार्यवर के प्रति अपनी असीम आस्था अभिव्यक्त की।

भीम और बडाखेडा गावो मे एक-एक परिवार मे आग्रही वृत्ति होने से वैमनस्य व्याप्त था और वे अपनी बात से झुकने के लिए तैयार नही थे। आचार्यश्री के विशेष प्रयत्नो से वर्षो का झमेला सुलझ गया। यह झगडा बडा-खेडा आसन, बराकन इन तीन गावो से सबद्ध था।

२१ मार्च को भीम, सायकाल थाणा पधारे। आज तीन जिलो का स्पर्श हो गया। प्रात बडाखेडा से चले, जो अजमेर जिले मे है। दिन का प्रवास भीम मे हुआ जो उदयपुर जिले के अन्तर्गत है। सायकाल आचार्यश्री थाणा पधार गये जो भीलवाडा जिला मे है। राणावास स्थित तेरापथ होस्टल के मुख्य गृहपति श्री मूलसिंह की भावना उस समय साकार हो गई, जब उन्होने आचार्यवर के अपने गाव मे शुभ दर्शन किये। आचार्य श्री ने थाणा गाव आने का श्रेय एकमात्र मुलसिंह जी को दिया। श्रीसिंह ने इसके लिए हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

थाणा से शिवपुर, ज्ञानगढ होते हुए २३ मार्च को चीताम्बा पधारे। स्कूल मे आचार्यवर का सार्वजनिक अभिनन्दन रखा गया। आचार्यश्री का द्विदिवसीय प्रवास ऊची पहाडी पर स्थित तेरापथ भवन मे हुआ। इस भवन की निर्मिति मे श्री कजोडीमल का श्रम जुडा हुआ है।

२५ मार्च को आचार्यश्री झालरा पधारे। आज आसीन्द पचायत समिति की सीमा प्रारभ हो गई। इस अवसर पर मेवाड कान्फ्रेन्स के पूर्व अध्यक्ष श्री चादमल दूगड, आसीन्द ग्राम पचायत विकास अधिकारी श्री

भवरलाल गन्ना, आसीन्द ग्राम पचायत समिति के प्रधान श्री किशनसिंह चूण्डावत ने अपने विचार रखे । आचार्यश्री ने उपस्थित जन समूह को उद्बोधन दिया । साथ रघुनाथपुरा पधारे ।

२६ मार्च को आचार्यश्री के कटार पधारने पर विद्यालय की ओर से प्रधानाध्यापक श्री मदनचन्द कोठारी, गाव की ओर से सरपच श्री ईश्वर प्रसाद ने आचार्यवर का स्वागत किया । अध्यापक ने खडे होकर आजीवन शराब पीने का प्रत्याख्यान कर दिया । शराब को लेकर अध्यापक महोदय स्वय दु खी थे, बदनाम भी थे । आचार्यश्री के सामीप्य से उसमे आत्मविश्वास जागा, सदा-सदा के लिये व्यसन से छुटकारा पा लिया । पचायत समिति के प्रधान श्री किशन सिंह चूण्डावत ने स्वागत मे कहा—"आज आसीन्द तहसील का बच्चा, बूढा जवान हर व्यक्ति उल्लसित है क्योकि देश के महान् सत उनके मध्य पधारे है आपका सच्चा स्वागत तभी होगा जब हम आपके उपदेशो को आत्मसात् करेंगे ।"

आचार्यश्री ने स्वागत के जवाब मे जनता से दृष्टि का सम्यक् निर्माण करने की बात कही ।

किसान सम्मेलन

२७ मार्च/कटार आचार्यवर के सान्निध्य मे मध्याह्न किसान सम्मेलन का आयोजन हुआ । इसमे न केवल कटार के किसान ही अपितु, पार्श्ववर्ती अनेक स्थानो, गावो के किसान बडी सख्या मे उपस्थित हुए । सर्वोदयी नेता श्री मनोहरसिंह मेहता ने आचार्यश्री प्रेरित पच सूत्री कार्यक्रम की चर्चा की ।

आचार्यश्री वृहद् किसान सम्मेलन को सबोधित करते हुए अज्ञान जन्य बुराइयो एव व्यसन मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी । प्रवचनोपरान्त अनेक लोगो ने धूम्रपान व मद्यपान का परित्याग किया । पूव निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार २७ माच को आचार्यवर कटार से विहार कर कीडीमाल पधारने वाले थे, और उससे आगे कई क्षेत्रो को स्पर्श करते हुए आसीन्द पधारने वाने थे, पर इस क्रम मे थोडा परिवर्तन करना पडा । उस परिवर्तन का कारण आचार्यवर के घुटनो का दर्द था । २७ मार्च को कटार मे विराजना हुआ । वहा से सीधे कीडीमाल होते हुये आचार्यवर सीधे आसीन्द पधार गये । श्रद्धेय युवाचार्यश्री वदनोर रूट से होते हुए ३१ मार्च को आसीन्द पधार गये ।

आसीन्द मे आचार्यवर का गर्मजोशी से स्वागत

३१ मार्च / आसीन्द बावीस वर्षो की प्रलब अवधि के बाद आसीन्द

पधारने पर खारी नदी मे निर्मित महावीर समवसरण मे आचार्यश्री का स्थानीय जनता द्वारा भावभीना स्वागत किया गया। आसीन्द नगरपालिका अध्यक्ष श्री शकर देव भारतीय, स्थानीय प्रमुख कायकर्ता श्री चादमल दूगड ने स्वागत मे अपने विचार रखे। भीलवाडा क्षेत्र के सासद श्री गिरधारीलाल व्यास ने कहा—"आचार्य तुलसी हमारे देश की महान विभूति है। आपने अणुव्रत के माध्यम से जनता मे एक नई चेतना जागृत की हे और उसके कल्याण का पथ प्रशस्त किया हे। मै अपने क्षेत्र की ओर से आपका स्वागत करता हू।

साध्वी प्रमुखाजी ने मानव मन मे फैली प्रदूषण की बीमारी को दूर करने परबल दिया। युवाचार्यश्री ने यथाथवादी दृष्टिकोण बनाने पर जोर देते हुए कहा—"धन सिर्फ धन होता है। वह न तो काला होता है और न ही सफेद होता हे। काला होता है आदमी का मन। जब तक वह स्वच्छ नही होगा, सफेद नही होगा, तब तक कालेधन को समाप्त करने की बात कोई अर्थ नही रखती।" आचार्यवर ने उपस्थित जनसमूह से मन की कालिमा धोने का आह्वान किया।

१ अप्रैल / रात्रि मे "राम और महावीर" विषय पर युवाचार्यश्री का महत्वपूर्ण वक्तव्य हुआ। विषय प्रवेश किया मुनि सुमेरमल "लाडनू" ने। अत मे आचार्यश्री का उद्बोधन हुआ।

२ अप्रैल / रात्रि मे "परामनोविज्ञान" विषय पर विशेष वक्तव्य हुआ युवाचार्यश्री का। कार्यक्रम के पूर्व ब्यावर कालेज के समाज विज्ञान के प्रोफेसर एव पुर्नजन्म पर शोध करने वाले श्री कीर्तिस्वरूप रावत ने पुनर्जन्म पर अपने एक दो खोजपूर्ण तथ्यो से जनता को अवगत किया तथा स्वलिखित सद्य प्रकाशित "परामनोविज्ञान" पुस्तक आचार्यवर को भेट की। इस विषय पर हिन्दी मे लिखी गई यह प्रथम पुस्तक हे। रात्रि के दोनो प्रवचन बाजार मे हुए। इन दोनो प्रवचनो मे नगर के सभी वर्गो की महती उपस्थिति थी।

महावीर जयन्ति

३ अप्रैल / आसीन्द / भगवान महावीर का २५८४ वा जन्म दिवस आचार्यवर के सान्निध्य मे बडे ही हर्ष एव उल्लास पूर्ण वातावरण मे मनाया गया। कायक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान के शिक्षामत्री श्री रामपाल उपाध्याय तथा अध्यक्ष पूर्व राजस्थान नहर मत्री मच प्रवक्ता श्री चन्दनमल वैद थे। कार्यक्रम का प्रारभ मुनिश्री श्यामकुमार के गीत से हुआ। मुमुक्षु

बहिनो समणियो, साध्वियो की सामूहिक गीतिकाए हुई । राजकीय महाविद्यालय, भीलवाडा के प्राचार्य डा० महावीर राज गेलडा, मुनिश्री किशनलाल, साध्वीश्री कनकश्री तथा ब्यावर क्षेत्र के विधायक श्री माणक डाणी ने भगवान महावीर के जीवन-दर्शन पर प्रकाश डाला । साध्वी प्रमुखाश्री जी ने महावीर के उपदेशो का जिक्र करते हुए कहा—"महावीर ने जाति, वर्ण, वर्ग के अतर को पाट कर "एगेव माणुसी जाई" का उपदेश दिया, पर आज जैनो मे भी विभेद की दीवारे खडी हो गई । जब तक हम विभक्त रहेगे, महावीर को अच्छी तरह नही मना सकेगे । उन्हे मनाने के लिए उनके सिद्धान्तो को अपनाना होगा और वैचारिक आग्रह को त्यागना होगा ।"

श्री रामपाल उपाध्याय ने कहा—"कार्ल मार्क्स ने समाजवाद के बारे मे जो कुछ कहा है, उससे भी हजारो वर्ष पहले भगवान महावीर ने और अधिक क्रातिकारी विचार दिये है । यदि देशवासी भगवान महावीर के विचारो पर चलते, तो यह हमारा देश न तो सैकडो वर्षो तक गुलाम रहता और न ही आज की यह अराजकता देखने को मिलती ।"

युवाचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा—"वर्तमान मे जिसकी प्रासगिकता होती है, उसी का स्मरण किया जाता है । मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि ज्यो-ज्यो समय बीतता जा रहा है, भगवान महावीर उतने ही अधिक प्रासगिक बनते जा रहे है । महावीर ने सापेक्षवाद के आधार पर मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या प्रस्तुत की । वर्तमान की पहली आवश्यकता यह है कि महावीर के भक्त सही माने मे भक्त बने ।"

महावीर जयन्ति मनाने के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए परमाराध्य आचार्य प्रवर ने कहा—"इस आयोजन के माध्यम से भगवान महावीर के उपदेशो, शिक्षाओ एव पराक्रमी जीवन को हम स्मृति मे लाए और भावीपीढी को सस्कार दे ।" आचार्यवर ने विस्तार से भगवान महावीर के व्यक्तित्व एव कर्तृत्व पर प्रकाश डाला ।

रात्रि मे सघ प्रवक्ता श्री चन्दनमल वैद का आसीन्दवासियो द्वारा अभिनन्दन किया गया ।

४ अप्रैल को महावीर जयन्ति का द्वितीय चरण मनाया गया, जिसमे आसीन्द क्षेत्र के विधायक श्री वी० पी० सिंह ने अपने विचार रखते हुए कहा—"भगवान महावीर क्षत्रिय थे । उनके पूर्व भी जितने तीर्थंकर हुए वे सब क्षत्रिय थे । जैन धर्म को क्षत्रियो की महत्वपूर्ण देन है । बादशाह जहागीर ने

जव विश्वविख्यात जैन मदिर राणकपुर पर आक्रमण किया था, उस समय हमारे पूर्वज श्री जयमल्ल ने उसके साथ जग किया और मदिर को नष्ट होने से वचाया।" आचार्य श्री ओर युवाचार्यश्री के भी विस्तार से प्रेरक प्रवचन हुए।

महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे मेवाड प्रान्तीय महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमे लगभग ३५ गावो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। अमृत-महोत्सव के प्रसग पर महिला समाज मे विशेष जागृति आए, इसी उद्देश्य से कार्यक्रम का समायोजन किया गया था। साध्वी प्रमुखा श्री ने महिला प्रतिनिधियो को महत्त्वपूर्ण उद्वोधन दिया।

अमृत-यात्रा-प्रशिक्षण शिविर का भी आसीन्द मे आयोजन हुआ। श्री मानव मुनि श्री पूर्णचन्द्र वडाला आदि ने इसमे विशेष रूप से भाग लिया।

विदेशो मे अणुव्रत व प्रेक्षा-ध्यान की पद्धति को जन-जन को अवगत कराने हेतु समाज भूषण श्री मोहनलालजी कठौतिया तथा तुलसी अध्यात्म नीडम् के निदेशक श्री धर्मानन्दजी विदेश रवाना होने वाले थे। उससे पूर्व उन्होने आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के दर्शन किए और उनको यात्रा कायक्रम की जानकारी दी। आचार्यवर युवाचार्यश्री ने उनकी यात्रा के प्रति मगल भावना व्यक्त की।

६ अप्रैल / वाराणा/आचार्यवर के स्वागत मे सासद श्री गिरधारीलाल व्यास ने अपने विचार रखे। आचार्यश्री ने जनता से अपने जीवन को उन्नत वनाने का आह्वान किया।

८ अप्रैल / दौलतगढ / आसीन्द पचायत समिति के प्रधान श्री किशनसिंह चुण्डावत ने अपनी जन्मभूमि की ओर से आचार्यश्री का अभिनदन किया। आचार्यश्री ने अपने सवोधन मे कहा—"दौलत दो प्रकार की होती हे एक दौलत तो हीरे, जवाहिरात आदि। दूसरी दौलत हे त्याग, तपस्या व सयम की। वास्तविक धनी तो दूसरी दौलत वाला होता हे।" द्विदिवसीय प्रवास के दूसरे दिन रात्रि मे 'कैसे जीए' विपय पर युयाचार्यश्री का विशेष वक्तव्य हुआ। युवाचार्यश्री से पूर्व मुनि सुमेरमल 'लाडनू' का वक्तव्य हुआ।

१० अप्रैल / लाछुडा / साध्वीश्री सुवोधकुमारी ने अपने चातुर्मासिक क्षेत्र की ओर से आचार्यश्री का स्वागत किया। आचार्यश्री ने अपने उद्वोधन मे सवको अणुव्रत के पथ पर चलने का उपदेश दिया।

मध्याह्न मे किसान सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमे हजारो किसानो

ने भाग लिया। ढोली ग्राम के ठाकुर श्री उम्मेदसिंहजी, आसीन्द क्षेत्र के विधायक व बदनोर ठाकुर वृजेन्द्रपालसिंह, सर्वोदयी कार्यकर्ता श्री मनोहर मेहता ने किसान-सम्मेलन को सबोधित किया। आचार्यश्री के शिक्षामृत से प्रभावित होकर सैकडो किसानो ने मद्य, मास, धूम्रपान आदि का परित्याग किया। ११ अप्रैल को "धार्मिक कैसा हो ?" विषय पर युवाचार्यश्री का सार-गर्भित वक्तव्य हुआ, विषय प्रवेश मुनिश्री किशनलाल ने किया।

१२ अप्रैल / तिलोली / आचार्यवर के स्वागत मे ७० खटीक परिवारो ने एक साथ खडे होकर मद्य-पान न करने का नियम लिया। १३ व १४ अप्रैल को बेमाली मे आचार्यवर का प्रवास हुआ।

१५ अप्रैल / चादरास/सरपच श्री चादमल घोडावत, प्रधानाध्यापक श्री राधेश्याम शर्मा ने स्वागत मे अपने दो शब्द कहे। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे सुसस्कारी बनने की प्रेरणा दी। सुदूर दक्षिण यात्रा करने वाली साध्वीश्री रामकुमारी 'लाडनू' ने अपनी चार सहयोगिनी साध्वियो के साथ आचार्यवर के दर्शन किये। नौ वर्षो की प्रलम्ब अवधि तक सुदूर क्षेत्रो मे विचरण करने वाला यह प्रथम ग्रुप है। साध्वियो ने एक सुमधुर गीतिका के द्वारा आचार्यवर की अभ्यर्थना की। आचार्यवर ने दक्षिण भारत मे उनके द्वारा किये धार्मिक उपकारो पर सतोष व्यक्त किया।

१६ अप्रैल / बाचलास/स्थानीय ठाकुर श्री जसवतसिंह ने अपनी प्राचीन परम्परा के मुताबिक आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। उन्होने अपने स्वागत भाषण मे कहा—'आचार्यश्री के स्वागत मे न केवल गाव को सजाया-सवारा गया है, अपितु अपने दिलो की सफाई मे भी लोग लगे है। आपका सच्चा स्वागत आपकी शिक्षाओ का जीवन मे अवतरण करने से होगा।'

१० अप्रैल / अडसीपुरा/सरपच श्री प्रकाशचन्द सुतरिया, गुजर समाज की ओर से श्री ओकारमल ने आचार्यश्री का हार्दिक स्वागत किया। मुनिश्री मानमलजी ने अपने चातुर्मासिक क्षेत्र की ओर से आचार्यश्री का अभिनन्दन किया। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे प्रतिकूल परिस्थिति मे धैयवान बनने की प्रेरणा दी। अडसीपुरा गाव को अणुव्रत गाव बनाने की घोषणा की गई। इस गाव की अधिकाश जनता व्यसन मुक्त तथा शिक्षित है, कोई भी भूमिहीन नही है। अणुव्रत आदर्शो पर विकसित होने पर इसका नाम आदर्शपुरम् दिया गया। रात्रि म 'जीवन का लक्ष्य' विषय पर युवाचार्यश्री का विशेष वक्तव्य

जब विश्वविख्यात जैन मदिर राणकपुर पर आक्रमण किया था, उस समय हमारे पूर्वज श्री जयमल्ल ने उसके साथ जग किया और मदिर को नष्ट होने से बचाया।" आचार्य श्री और युवाचायश्री के भी विस्तार से प्रेरक प्रवचन हुए।

महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे मेवाड प्रान्तीय महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमे लगभग ३५ गावो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। अमृत-महोत्सव के प्रसग पर महिला समाज मे विशेष जागृति आए, इसी उद्देश्य से कार्यक्रम का समायोजन किया गया था। साध्वी प्रमुखा श्री ने महिला प्रतिनिधियो को महत्त्वपूर्ण उद्बोधन दिया।

अमृत-यात्रा-प्रशिक्षण शिविर का भी आसीन्द मे आयोजन हुआ। श्री मानव मुनि श्री पूर्णचन्द्र बडाला आदि ने इसमे विशेष रूप से भाग लिया।

विदेशो मे अणुव्रत व प्रेक्षा-ध्यान की पद्धति को जन-जन को अवगत कराने हेतु समाज भूषण श्री मोहनलालजी कठौतिया तथा तुलसी अध्यात्म नीडम् के निदेशक श्री धर्मानन्दजी विदेश रवाना होने वाले थे। उससे पूर्व उन्होने आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के दर्शन किए और उनको यात्रा कार्यक्रम की जानकारी दी। आचार्यवर युवाचार्यश्री ने उनकी यात्रा के प्रति मगल भावना व्यक्त की।

६ अप्रैल / बाराणा/आचार्यवर के स्वागत मे सासद श्री गिरधारीलाल व्यास ने अपने विचार रखे। आचार्यश्री ने जनता से अपने जीवन को उन्नत बनाने का आह्वान किया।

८ अप्रैल / दौलतगढ / आसीन्द पचायत समिति के प्रधान श्री किशनसिंह चुण्डावत ने अपनी जन्मभूमि की ओर से आचार्यश्री का अभिनदन किया। आचायश्री ने अपने सबोधन मे कहा—"दौलत दो प्रकार की होती है एक दौलत तो हीरे, जवाहिरात आदि। दूसरी दौलत है त्याग, तपस्या व सयम की। वास्तविक धनी तो दूसरी दौलत वाला होता है।" द्विदिवसीय प्रवास के दूसरे दिन रात्रि मे 'कैसे जीए' विषय पर युवाचार्यश्री का विशेष वक्तव्य हुआ। युवाचार्यश्री से पूर्व मुनि सुमेरमल 'लाडनू' का वक्तव्य हुआ।

१० अप्रैल / लाछुडा / साध्वीश्री सुबोधकुमारी ने अपने चातुर्मासिक क्षेत्र की ओर से आचार्यश्री का स्वागत किया। आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे सबको अणुव्रत के पथ पर चलने का उपदेश दिया।

मध्याह्न मे किसान सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमे हजारो किसानो

ने भाग लिया। ढोली ग्राम के ठाकुर श्री उम्मेदसिंहजी, आमीन्द क्षेत्र के विधायक व बदनोर ठाकुर वृजेन्द्रपालसिंह, सर्वोदयी कार्यकर्ता श्री मनोहर मेहता ने किसान-सम्मेलन को सबोधित किया। आचार्यश्री के शिक्षामृत से प्रभावित होकर सैकड़ो किसानो ने मद्य, मास, धूम्रपान आदि का परित्याग किया। ११ अप्रैल को "धार्मिक कैसा हो ?" विषय पर युवाचार्यश्री का सार-गर्भित वक्तव्य हुआ, विषय प्रवेश मुनिश्री किशनलाल ने किया।

१२ अप्रैल / तिलोली / आचार्यवर के स्वागत मे ७० खटीक परिवारो ने एक साथ खडे होकर मद्य-पान न करने का नियम लिया। १३ व १४ अप्रैल को बेमाली मे आचार्यवर का प्रवास हुआ।

१५ अप्रैल / चादराम/सरपच श्री चादमल घोटावत, प्रधानाध्यापक श्री राधेश्याम शर्मा ने स्वागत मे अपने दो शब्द कहे। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे सुसस्कारी बनने की प्रेरणा दी। सुदूर दक्षिण यात्रा करने वाली साध्वीश्री रामकुमारी 'लाडनू' ने अपनी चार सहयोगिनी साध्वियो के साथ आचार्यवर के दर्शन किये। नौ वर्षो की प्रलम्ब अवधि तक सुदूर क्षेत्रो मे विचरण करने वाला यह प्रथम ग्रुप है। साध्वियो ने एक सुमधुर गीतिका के द्वारा आचार्यवर की अभ्यर्थना की। आचार्यवर ने दक्षिण भारत मे उनके द्वारा किये धार्मिक उपकारो पर सतोष व्यक्त किया।

१६ अप्रैल / बावलास/स्थानीय ठाकुर श्री जसवतसिंह ने अपनी प्राचीन परम्परा के मुताबिक आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। उन्होने अपने स्वागत भाषण मे कहा—'आचार्यश्री के स्वागत मे न केवल गाव को सजाया-सवारा गया है, अपितु अपने दिलो की सफाई मे भी लोग लगे है। आपका सच्चा स्वागत आपकी शिक्षाओ का जीवन मे अवतरण करने से होगा।'

१७ अप्रैल / अडसीपुरा/सरपच श्री प्रकाशचन्द सुतरिया, गुजर समाज की ओर से श्री ओकारमल ने आचार्यश्री का हार्दिक स्वागत किया। मुनिश्री मानमलजी ने अपने चातुर्मासिक क्षेत्र की ओर से आचार्यश्री का अभिनन्दन किया। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे प्रतिकूल परिस्थिति मे धैर्यवान बनने की प्रेरणा दी। अडसीपुरा गाव को अणुव्रत गाव बनाने की घोषणा की गई। इस गाव की अधिकाश जनता व्यसन मुक्त तथा शिक्षित है, कोई भी भूमिहीन नही है। अणुव्रत आदर्शो पर विकसित होने पर इसका नाम आदर्शपुरम् दिया गया। रात्रि मे 'जीवन का लक्ष्य' विषय पर युवाचार्यश्री का विशेष वक्तव्य

जव विश्वविख्यात जैन मदिर राणकपुर पर आक्रमण किया था, उस समय हमारे पूर्वज श्री जयमल्ल ने उसके साथ जग किया और मदिर को नष्ट होने से वचाया।" आचार्य श्री और युवाचायश्री के भी विस्तार से प्रेरक प्रवचन हुए।

महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे मेवाड प्रान्तीय महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमे लगभग ३५ गावो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। अमृत-महोत्सव के प्रसग पर महिला समाज मे विशेष जागृति आए, इसी उद्देश्य से कार्यक्रम का समायोजन किया गया था। साध्वी प्रमुखा श्री ने महिला प्रतिनिधियो को महत्त्वपूण उद्बोधन दिया।

अमृत-यात्रा-प्रशिक्षण शिविर का भी आसीन्द मे आयोजन हुआ। श्री मानव मुनि श्री पूर्णचन्द्र वडाला आदि ने इसमे विशेष रूप से भाग लिया।

विदेशो मे अणुव्रत व प्रेक्षा-ध्यान की पद्धति को जन-जन को अवगत कराने हेतु समाज भूषण श्री मोहनलालजी कठौतिया तथा तुलसी अध्यात्म नीडम् के निदेशक श्री धर्मानन्दजी विदेश रवाना होने वाले थे। उससे पूर्व उन्होने आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के दर्शन किए और उनको यात्रा कायक्रम की जानकारी दी। आचार्यवर युवाचार्यश्री ने उनकी यात्रा के प्रति मगल भावना व्यक्त की।

६ अप्रैल / वाराणा/आचार्यवर के स्वागत मे सासद श्री गिरधारीलाल व्यास ने अपने विचार रखे। आचार्यश्री ने जनता से अपने जीवन को उन्नत बनाने का आह्वान किया।

८ अप्रैल / दौलतगढ / आसीन्द पचायत समिति के प्रधान श्री किशनसिंह चुण्डावत ने अपनी जन्मभूमि की ओर से आचार्यश्री का अभिनदन किया। आचार्यश्री ने अपने नवोधन मे कहा—"दौलत दो प्रकार की होती हे एक दौलत तो हीरे, जवाहिरात आदि। दूसरी दौलत है त्याग, तपस्या व सयम की। वास्तविक धनी तो दूसरी दौलत वाला होता है।" द्विदिवसीय प्रवास के दूसरे दिन रात्रि मे 'कैसे जीए' विपय पर युयाचार्यश्री का विशेप वक्तव्य हुआ। युवाचार्यश्री मे पूर्व मुनि सुमेरमल 'लाडनू' का वक्तव्य हुआ।

१० अप्रैल / लाछुडा / साध्वीश्री सुवोधकुमारी ने अपने चातुर्मासिक क्षेत्र की ओर से आचार्यश्री का स्वागत किया। आचार्यश्री ने अपने उद्वोधन मे सवको अणुव्रत के पथ पर चलने का उपदेश दिया।

मध्याह्न मे किमान सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमे हजारो किसानो

ने भाग लिया। ढोली ग्राम के ठाकुर श्री उम्मेदसिंहजी, आमीन्द क्षेत्र के विधायक व बदनोर ठाकुर वृजेन्द्रपालसिंह, सर्वोदयी कार्यकर्ता श्री मनोहर मेहता ने किसान-सम्मेलन को सबोधित किया। आचार्यश्री के शिक्षामृत से प्रभावित होकर सैकडो किसानो ने मद्य, मास, धूम्रपान आदि का परित्याग किया। ११ अप्रैल को "धार्मिक कैसा हो ?" विषय पर युवाचार्यश्री का सार-गर्भित वक्तव्य हुआ, विषय प्रवेश मुनिश्री किशनलाल ने किया।

१२ अप्रैल / तिलोली / आचार्यवर के स्वागत मे ७० खटीक परिवारो ने एक साथ खडे होकर मद्य-पान न करने का नियम लिया। १३ व १४ अप्रैल को बेमाली मे आचार्यवर का प्रवास हुआ।

१५ अप्रैल / चादरास/सरपच श्री चादमल घोडावत, प्रधानाध्यापक श्री राधेश्याम शर्मा ने स्वागत मे अपने दो शब्द कहे। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे सुसस्कारी बनने की प्रेरणा दी। सुदूर दक्षिण यात्रा करने वाली साध्वीश्री रामकुमारी 'लाडनू' ने अपनी चार सहयोगिनी साध्वियो के साथ आचार्यवर के दर्शन किये। नौ वर्षो की प्रलम्ब अवधि तक सुदूर क्षेत्रो मे विचरण करने वाला यह प्रथम ग्रुप है। साध्वियो ने एक सुमधुर गीतिका के द्वारा आचार्यवर की अभ्यर्थना की। आचार्यवर ने दक्षिण भारत मे उनके द्वारा किये धार्मिक उपकारो पर सतोष व्यक्त किया।

१६ अप्रैल / बावलास/स्थानीय ठाकुर श्री जसवतसिह ने अपनी प्राचीन परम्परा के मुताबिक आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। उन्होने अपने स्वागत भाषण मे कहा—'आचार्यश्री के स्वागत मे न केवल गाव को सजाया-सवारा गया है, अपितु अपने दिलो की सफाई मे भी लोग लगे है। आपका सच्चा स्वागत आपकी शिक्षाओ का जीवन मे अवतरण करने से होगा।'

१० अप्रैल / अडसीपुरा/सरपच श्री प्रकाशचन्द सुतरिया, गुजर समाज की ओर से श्री ओकारमल ने आचार्यश्री का हार्दिक स्वागत किया। मुनिश्री मानमलजी ने अपने चातुर्मासिक क्षेत्र की ओर से आचार्यश्री का अभिनन्दन किया। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे प्रतिकूल परिस्थिति मे धैर्यवान बनने की प्रेरणा दी। अडसीपुरा गाव को अणुव्रत गाव बनाने की घोषणा की गई। इस गाव की अधिकाश जनता व्यसन मुक्त तथा शिक्षित है, कोई भी भूमिहीन नही है। अणुव्रत आदर्शो पर विकसित होने पर इसका नाम आदर्शपुरम् दिया गया। रात्रि मे 'जीवन का लक्ष्य' विषय पर युवाचार्यश्री का विशेष वक्तव्य

हुआ, प्राग् वक्तव्य मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' ने दिया ।

१८ अप्रैल को वोरियापुर, १९ को आशाहोली, २० को नान्दशा पधारे । नान्दशा मे रात्रिकालीन कार्यक्रम महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे आयोजित हुआ ।

तिलक भूमि गगापुर मे

२१ अप्रैल / आचार्यश्री साधु-साध्वियो के विशाल परिवार के साथ गगापुर पधारे । गाव वाहर सडक के सन्निकट ही अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी का समाधि-स्थल है । आचार्यवर वहा पधारे तथा कुछ क्षण ठहरे भी । पिछले वर्ष मेवाड मे विचरने वाले मुनिश्री हनुमानमलजी 'हरीश' ने वही दर्शन किये । मुनिश्री सुखलाल, जो कई दिनो से यहा पर थे, ने आचार्यवर की अगवानी की । समाधि स्थल से विहार कर आचार्यवर रग-भवन पधारे । यह वही भवन है जहा आज से ४९ वर्ष पूर्व आचार्यवर आचार्यपद पर आसीन हुए थे । लगभग आधा घटा आचार्यवर वहा ठहरे । उस समय आचार्यवर ने एक सोरठा फरमाया—

रग-भवन मे रग, अमृत-महोत्सव अवसरे ।
आए अमित उमग, 'तुलसी' युव प्रमुखा सहित ।।

नगर के मुख्य मार्गो से होता हुआ जुलूस राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्रागण मे स्थित विशाल प्रवचन पडाल मे पहुचने पर सभा रूप मे परिणत हो गया । नगरपालिका तथा समाज की सभी सस्थाओ के द्वारा आचार्यवर का अभिनन्दन किया गया । साध्वीश्री आनन्दकुमारी एव साध्वीश्री सुजानाजी, जो पिछले २२ महीनो से गगापुर विराज रही है, की ओर से साध्वीश्री उज्ज्वल रेखा ने अपनी एक कविता के माध्यम से आचार्यवर का स्वागत किया । राजस्थान के शिक्षामत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने अपनी मातृभूमि की ओर से आचार्यश्री का स्वागत किया । मुमुक्षु वहिनो का एक सुमधुर गीत हुआ ।

युवाचार्यश्री ने महावीर के अनेकात सिद्धात की चर्चा करते हुए अमृत-महोत्सव की आयोजना पर प्रकाश डाला । आचार्यश्री ने मेवाड यात्रा को उत्साह व उल्लासपूर्ण वताते हुए मेवाडी भाई-वहिनो की श्रद्धा-भक्ति की सराहना की तथा ५० वर्ष पूर्व के इतिहास का सक्षिप्त सजीव चित्रण प्रस्तुत किया जिसे सुनकर श्रोता सरावोर हो गये ।

अक्षय तृतीया

२३ अप्रैल / गगापुर/वैसाख शुक्ला तीज को मनाया जाने वाला यह 'अक्षय तृतीया' पर्व प्राग् ऐतिहासिक काल से ही विशिष्ट महत्त्व का दिन माना जाता रहा है। आज के दिन भगवान् ऋषभदेव ने अपने पौत्र श्रेयास के हाथो इक्षु रस से पारणा किया था। तब से यह दिन अक्षय तृतीया के रूप मे मनाया जाता है। इस दिन सैकडो भाई-बहिन एकातर तपस्या का स्वीकरण व समापन करते है। प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष अक्षय तृतीया का भव्य कार्य-क्रम गगापुर मे मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित जन-समूह को देखकर मर्यादा-महोत्सव का-सा आभास हो जाता है।

साधु-साध्वियो आदि के वक्तव्यो एव गीतिकाओ से आज के दिन की महत्ता पर प्रकाश डाला गया। साध्वी प्रमुखाश्री ने अपने मजे हुए विचार रखे।

युवाचार्यश्री ने अपने भाषण मे कहा—'गोस्वामी तुलसीदास ने रामायण (रामचरित मानस) लिखा है और वह जन-जन मे लोकप्रिय है। वैसे ही भगवान् ऋषभ का जीवनचरित्र पद्यमय ऋषभायण लिखा जाना चाहिए।'

आचार्यश्री ने अक्षय तृतीया पर्व की विस्तृत अवगति दी और कहा—'तपस्या आत्म-शुद्धि के लिए की जानी चाहिए, आडम्बर और प्रदर्शन के लिए नही। मै चाहता हू कि लेने-देने की परम्परा डालकर तपस्या को भारी न बनाया जाए।'

आचार्यवर के सान्निध्य मे पारणा करने वाले भाई-बहिनो की सख्या १२४ थी।* उनमे बहुत सारे तपस्वियो के साथ-साथ अनेक भाई-बहिन ऐसे भी थे, जिनके पाचवा सातवा, दशवा बारहवा वर्षी तप चल रहा है। स्वय आचार्यश्री ने तपस्वी भाई-बहिनो से मच पर भिक्षा ग्रहण की। इस अवसर पर कुछ साधु-साध्वियो ने भी आचार्यवर के सान्निध्य मे वर्षीतप का पारणा किया, वे है—

- मुनिश्री मिश्रीमल (तेले-तेले)
- मुनिश्री अर्जुनलाल, मुनिश्री कमल कुमार
- दीर्घ तपस्विनी साध्वीश्री पन्नाजी (३६ वर्षों से निरन्तर), साध्वीश्री सुजानाजी (१७ वर्षो से निरतर)।

२३ अप्रैल / रात्रि मे 'तप का जीवन मे प्रभाव' विषय पर मुनिश्री

* देखे परिशिष्ट २

किशनलाल ने अपने विचार रखे। आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के प्रेरणादायी प्रवचन हुए।

२४ अप्रैल। रात्रि मे 'दहेज उन्मूलन' विषय पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के प्रेरक प्रवचन हुए। प्रारम्भ मे मुनिश्री सुखलाल, सर्वोदयी कार्यकर्ता श्री मनोहर सिंह मेहता ने अपने मजे हुए विचार रखे। सभी वक्ताओ ने कानून के जरिये इस बीमारी का इलाज करने की अपेक्षा हृदय परिवर्तन व सामाजिक बहिष्कार को अधिक कारगर उपाय बताया।

२५ अप्रैल / रात्रि मे 'मद्य निषेध' विषय पर मुनिश्री सुखलाल ने अपने विचार रखे। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के भी महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुए।

२६ अप्रैल / रात्रिकालीन कार्यक्रम मे 'अस्पृश्यता निवारण' विषय पर रखा गया। प्रारम्भ मे राजस्थान के शिक्षामंत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने विस्तार से इस विषय पर अपने विचार रखे। उन्होने अणुव्रत के माध्यम से आचार्यश्री द्वारा मानव मात्र के लिए किये जा रहे कार्यों की सराहना की। अन्त मे आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री ने विशाल जनसभा को सबोधित किया।

अमृत-महोत्सव का शुभारम्भ

आचार्यश्री तुलसी वर्तमान के एक बहुचर्चित प्रतिभा सपन्न आचार्य है। आचार्यश्री ने समग्र मानव जाति को जो अवदान दिया है, उसको हम घेरे मे नही बाध सकते। आचार्यश्री अपने आचार्यकाल के पचासवे वर्ष मे प्रवेश करने जा रहे है। समाज ने इस वर्ष को युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के निर्देशन मे अमृत-महोत्सव वर्ष के रूप मे मनाने का निर्णय लिया। यह समारोह मात्र स्तुतिपरक नही, कर्तृत्व-प्रस्तुति देने वाला है। इस अवसर पर आचार्यश्री के विचारो एव कार्यक्रमो से जनता को अवगत कराया जायेगा। यह समारोह समाज व राष्ट्र के आतरिक विकास मे एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। इस समारोह को चार चरणो मे मनाने की परिकल्पना है, जिसका प्रथम चरण २८ एव २९ अप्रैल को गगापुर मे समायोजित हुआ।

२८ अप्रैल / सूर्योदय के पूर्व पूरे नगर मे प्रभात-जागरिका निकाली गई, जिसमे हजारो स्त्री-पुरुष, युवक, कन्याओ ने अपने-अपने गणवेश मे भाग लिया,

आचार्यश्री प्रवास-स्थल (स्कूल) के ठीक पीछे के अहाते मे नव

निर्मित अमृत समवसरण मे ८ ३० वजे कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ ।

- मगलाचरण—समणीवृन्द ।
- आचार्यवन्दना—मुनिश्री सुमेरमल 'सुदर्शन', मुनिश्री मधुकर ।
- त्रिपदी वन्दना—मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ।
- सगीत—साध्वी प्रमुखाश्रीजी आदि ५१ साध्विया मुनिश्री श्रेयासकुमार आदि युवा सत, पारमार्थिक शिक्षण सस्था की बहिने ।
- वक्तव्य—मुनि सुमेरमल 'लाडनू', मुनिश्री किशनलाल, समणी सुप्रज्ञा, श्री देवेन्द्र हिरण, श्री देवेन्द्र कर्णावट ।
- परिसवाद—'प्रकृति की पुलकन' शीपक से साध्विश्री विवेकश्री आदि साध्विया ।
- साहित्य भेट—मुनिश्री सुखलाल के अन्तरिम सयोजन मे साहित्य-भेट का क्रम चला, जिसमे पृथक्-पृथक् सस्थानो द्वारा प्रकाशित एव साधु-साध्वियो द्वारा लिखित/अनुदित/सपादित पुस्तके आचार्यवर को भेट की गई ।

राजस्थान के शिक्षामत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने आचायवर की शिक्षाओ को भावी पीढी के लिए शुभ कदम बताया ।

राजस्थान के मुख्यमत्री श्री हरिदेव जोशी ने कहा—'व्रतो का महत्त्व तभी हे जब वे जीवन मे उतरे । भगवान महावीर ने जो सिद्धात प्रतिपादित किया है, उसे आचार्य तुलसी जी वर्तमान के सदभ मे समीचीन रूप से प्रस्तुति दे रहे ह । आप मानव-मानव के जीवन व्यवहार मे प्रामाणिकता एव नैतिकता को अवतरित करने का स्तुत्य प्रयास कर रहे है । मै इस प्रयास की मगल कामना करता हू ।'

मुख्यमत्री ने अमृत-महोत्सव कार्यक्रम की सफलता हेतु सप्राप्त प्रधान-मत्री श्री राजीव गाधी का सदेश पढकर सुनाया, जो अविकल इस प्रकार है—

मानव जन्म विकास के लिए हे, विनाश के लिए नही ।

व्यक्ति और समाज निष्ठा, सादगी और सत्य के अन्वेपण से बढते है । आचार और विचार मे सयम होना चाहिए और हम सब मनुष्य की एकता के लिए काम करे ।

आचाय तुलसी इन नैतिक मूल्यो के प्रसार के काम मे लगे हे । उनके

अमृत-महोत्सव के अवसर पर मै उनके दीर्घ जीवन की कामना करता हू।

नई दिल्ली   (ह०) राजीव गाधी
१६ अप्रैल, १६८५

साध्वी प्रमुखाश्री जी ने अमृत महोत्सव की सार्थकता पर प्रकाश डालते हुए कहा—'कार्यकाल के पचास वर्ष हर व्यक्ति पूरे करता हैं, पर अमृत महोत्सव सबका नही मनाया जाता। मनाया उसी का जाता है, जो अमृत वितरण करे। स्वय विप पीकर भी औरो को अमृत पिलाये। युग की समस्याओ का युगीन भापा मे समाधान देने से ही आपको युग प्रधान के रूप मे अभिनन्दित किया'।

साध्वी प्रमुखाश्री ने आगे कहा—'इग्लैण्ड के इतिहास मे क्रामविल नही आता, तो इग्लैण्ड का इतिहास कुछ दूसरा ही होता। फ्रास के नभ मे नेपोलियन का उदय न होता, तो फ्रास की कहानी कुछ दूसरे प्रकार की होती। इसी प्रकार तेरापथ की धरती पर आचायश्री तुलसी न आते तो तेरापथ का इतिहास भी दूसरा ही होता। समग्र मानव जाति के हितो को ध्यान मे रख कर आपने जो अवदान दिया है, इतिहास की विरल घटना ह।

जैन दशन के मर्मज्ञ विद्वान् श्री दलसुख भाई मालवणिया ने अपने लिखित सदेश मे कहा—'अठारहवी सदी अग्रेजो की, बीसवी सदी अमेरिका की और इक्कीसवी सदी आचाय तुलसी की हे। आज आचायश्री के उदार दृष्टिकोण से तेरापथ शब्द जैन धम का पर्यायवाची बन गया है।'

देश के सुप्रसिद्ध कवि, साहित्यकार श्री कन्हेयालाल सेठिया ने अपने सदेश मे काव्यात्मक भापा मे लिखा—

तुम अमृत के रूप कर दिया, तुमने क्षर को अक्षर।
धन्य हो गया तुम्हे प्रकट कर, यह भव रत्नाकर॥

ये दोनो सदेश पढकर सुनाये गए।

अमृत महोत्सव मनाने के प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए युवाचायश्री ने कहा—'अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियो के बावजूद आज आदमी घूटन महसूस कर रहा है। उसका कारण है एक पक्षीय विकास। आज आदमी पदार्थ जगत् की ओर बहुत गतिशील बना हुआ हे तथा उसके भीतर मे टूटन जारी है। जब तक दोनो पक्षो की समानता नही होगी, विपमता मिट नही पायेगी। अमृत-महोत्सव का उद्देश्य ही यह हे कि दोनो समानान्तर रेखा पर चले'। युवाचार्यश्री ने विस्तार से आचार्यश्री के जीवन चित्र को विभिन्न कोणो से

दीक्षा तथा उनके चरित्र निर्माण एव व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से किए गये कार्यो को सपूर्णमानव जाति के लिए महत्त्वपूर्ण अवदान माना। इस अवसर पर युवाचार्यश्री ने अमृत-महोत्सव वर्ष को 'जीवन-विज्ञान वर्ष' के रूप मे मनाने की घोषणा की।

आचार्यश्री ने अपने अमृत-सदेश मे कहा—'मैने अमृत-महोत्सव के आयोजनात्मक रूप को पसन्द नही किया, रचनात्मक व प्रयोजनात्मक रूप को पसन्द किया है। हमारे सामने दो मुख्य काम है—चरित्र निर्माण और जीवन-विज्ञान। हमे ऐसा धर्मसघ मिला है, जिसमे हम खुलकर काम कर सकते है। हम अणुव्रत के माध्यम से व्यापक दृष्टिकोणपरक काय कर रहे है।' आचार्यश्री ने पचास वर्ष पूव की स्मृतियो का एक सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया तथा गगापुर से सबधित आचाय पद प्राप्ति की घटनाओ से उपस्थित जनसमूह को अवगति दी।

२९ अप्रेल। प्रात काल की मगलवेला मे आचार्यवर के सान्निध्य मे अमृत-यात्रा का प्रारभ हुआ। अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति के सयोजक श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट ने अपने वक्तव्य मे यात्रा के उद्देश्य को स्पष्ट किया।

आचार्यवर ने सर्वप्रथम इस यात्रा के प्रथम यात्री दल को सामूहिक रूप से पाच सकल्प कराये। आचार्यवर, युवाचार्यश्री, साध्वी प्रमुखाश्री तथा साधु-साध्वी परिवार के साथ अमृत-कलश-पदयात्रा का शुभारभ किया। आकाश जयनारो से गूज उठा और वातावरण खुशियो से झूम उठा।

प्रात कालीन अमृत-महोत्सव के द्वितीय दिवस का कार्यक्रम ठीक साढे आठ बजे प्रारभ हुआ। अनेको साधु-साध्वियो ने गीतिका, मुक्तक, एव कविताओ के द्वारा आचायवर का गुणानुवाद किया। साध्वीश्री कमलूजी, साध्वीश्री जिनप्रभा, साध्वीश्री कल्पलता आदि ग्यारह साध्वियो ने 'तब से अब' शीर्षक से एक रोचक परिसवाद प्रस्तुत किया, जिसमे समावेश था आचार्यवर के आचाय पट्टाभिषेक के समय की साध्वियो की स्थिति तथा वतमान मे साध्वियो की स्थिति। परिसवाद मे भाग लेने वाली सभी साध्वियो को आचायवर ने १३ दिनो की पट् विगय वर्जन की बख्शीश की। इस अवसर पर साध्वी प्रमुखाश्री ने साध्वियो द्वारा गृहीत सकल्पो से युक्त एक अमृत-कलश आचार्यवर को भेट किया।

युवाचार्यश्री एव आचार्यश्री के इस अवसर पर महत्वपूर्ण उद्बोधन

अमृत-महोत्सव के अवसर पर मैं उनके दीर्घ जीवन की कामना करता हू।

नई दिल्ली (ह०) राजीव गाधी
१६ अप्रैल, १६८५

साध्वी प्रमुखाश्री जी ने अमृत महोत्सव की सार्थकता पर प्रकाश डालते हुए कहा—'कार्यकाल के पचास वर्प हर व्यक्ति पूरे करता है, पर अमृत महोत्सव सबका नही मनाया जाता। मनाया उसी का जाता है, जो अमृत वितरण करे। स्वय विप पीकर भी औरो को अमृत पिलाये। युग की समस्याओ का युगीन भापा मे समाधान देने से ही आपको युग प्रधान के रूप मे अभिनन्दित किया'।

साध्वी प्रमुखाश्री ने आगे कहा—'इग्लैण्ड के इतिहास मे क्रामविल नही आता, तो इग्लैण्ड का इतिहास कुछ दूसरा ही होता। फ्रास के नभ मे नेपोलियन का उदय न होता, तो फ्रास की कहानी कुछ दूसरे प्रकार की होती। इसी प्रकार तेरापथ की धरती पर आचार्यश्री तुलसी न आते तो तेरापथ का इतिहास भी दूसरा ही होता। समग्र मानव जाति के हितो को ध्यान मे रख कर आपने जो अवदान दिया है, इतिहास की विरल घटना है।

जैन दर्शन के ममज्ञ विद्वान् श्री दलसुख भाई मालवणिया ने अपने लिखित सदेश मे कहा—'अठारहवी सदी अग्रेजो की, बीसवी सदी अमेरिका की और इक्कीसवी सदी आचार्य तुलसी की है। आज आचार्यश्री के उदार दृष्टिकोण से तेरापथ शब्द जैन धम का पर्यायवाची वन गया है।'

देश के सुप्रसिद्ध कवि, साहित्यकार श्री कन्हैयालाल सेठिया ने अपने सदेश मे काव्यात्मक भापा मे लिखा—

तुम अमृत के रूप कर दिया, तुमने क्षर को अक्षर।
धन्य हो गया तुम्हे प्रकट कर, यह भव रत्नाकर॥

ये दोनो सदेश पढकर सुनाये गए।

अमृत महोत्सव मनाने के प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियो के वावजूद आज आदमी घूटन महमूस कर रहा है। उसका कारण है एक पक्षीय विकास। आज आदमी पदार्थ जगत् की ओर वहुत गतिशील वना हुआ है तथा उसके भीतर मे टूटन जारी है। जव तक दोनो पक्षो की समानता नही होगी, विपमता मिट नही पायेगी। अमृत-महोत्सव का उद्देश्य ही यह है कि दोनो समानान्तर रेखा पर चले'। युवाचार्यश्री ने विस्तार से आचार्यश्री के जीवन चित्र को विभिन्न कोणो से

सीचा तथा उनके चरित्र निर्माण एव व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से किए गये कार्यो को सपूर्णमानव जाति के लिए महत्त्वपूर्ण अवदान माना। इस अवसर पर युवाचार्यश्री ने अमृत-महोत्सव वर्ष को 'जीवन-विज्ञान वर्ष' के रूप मे मनाने की घोषणा की।

आचार्यश्री ने अपने अमृत-सदेश मे कहा—'मैने अमृत-महोत्सव के आयोजनात्मक रूप को पसन्द नही किया, रचनात्मक व प्रयोजनात्मक रूप को पसन्द किया है। हमारे सामने दो मुख्य काम है—चरित्र निर्माण और जीवन-विज्ञान। हमे ऐसा धर्मसघ मिला है, जिसमे हम खुलकर काम कर सकते है। हम अणुव्रत के माध्यम से व्यापक दृष्टिकोणपरक कार्य कर रहे है।' आचार्यश्री ने पचास वर्ष पूर्व की स्मृतियो का एक सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया तथा गगापुर से सबधित आचार्य पद प्राप्ति की घटनाओ से उपस्थित जनसमूह को अवगति दी।

२६ अप्रेल। प्रात काल की मगलवेला मे आचार्यवर के सान्निध्य मे अमृत-यात्रा का प्रारभ हुआ। अमृत-महोत्सव राष्टीय समिति के सयोजक श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट ने अपने वक्तव्य मे यात्रा के उद्देश्य को स्पष्ट किया।

आचार्यवर ने सर्वप्रथम इस यात्रा के प्रथम यात्री दल को सामूहिक रूप से पाच सकल्प कराये। आचार्यवर, युवाचार्यश्री, साध्वी प्रमुखाश्री तथा साधु-साध्वी परिवार के साथ अमृत-कलश-पदयात्रा का शुभारभ किया। आकाश जयनारो से गूज उठा और वातावरण खुशियो से झूम उठा।

प्रात कालीन अमृत-महोत्सव के द्वितीय दिवस का कार्यक्रम ठीक साढे आठ बजे प्रारभ हुआ। अनेको साधु-साध्वियो ने गीतिका, मुक्तक, एव कविताओ के द्वारा आचार्यवर का गुणानुवाद किया। साध्वीश्री कमलूजी, साध्वीश्री जिनप्रभा, साध्वीश्री कल्पलता आदि ग्यारह साध्वियो ने 'तब से अब' शीर्षक से एक रोचक परिसवाद प्रस्तुत किया, जिसमे समावेश था आचार्यवर के आचार्य पट्टाभिषेक के समय की साध्वियो की स्थिति तथा वर्तमान मे साध्वियो की स्थिति। परिसवाद मे भाग लेने वाली सभी साध्वियो को आचार्यवर ने १३ दिनो की षट् विगय वर्जन की बख्शीश की। इस अवसर पर साध्वी प्रमुखाश्री ने साध्वियो द्वारा गृहीत सकल्पो से युक्त एक अमृत-कलश आचार्यवर को भेट किया।

युवाचार्यश्री एव आचार्यश्री के इस अवसर पर महत्वपूर्ण उद्बोधन

हुए । श्री शुभकरण दसाणी, श्री सीताशरण शर्मा ने भी अपने विचार रखे । श्री चपालाल आचलिया (कलकत्ता) द्वारा प्रेपित पत्र सुनाया गया । पत्र मे इस वात का विशेप उल्लेख था कि कलकत्ता स्थित विश्व विख्यात मस्था एसिकाटिक सोसायटी ने अपने यहा जैन चेयर की स्थापना की ह । मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' तथा मुनिश्री कमलकुमार ने स्थान-स्थान पर होने वाली तपस्याओ का विवरण देते हुए तप-जप मे सवको नियोजित होने की प्रेरणा दी । इस तरह अमृत-महोत्सव के प्रथम चरण का यह द्विदिवसीय कार्यक्रम वडे ही उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया ।

३० अप्रैल/रात्रि मे 'पीछे मुडकर देखना होगा' विषय पर युवाचाय श्री का विशेप प्रवचन हुआ । विपय प्रवेश मुनि सुमेरमल 'लाडनू ने किया ।

१ मई / 'अनेकान्तवाद' पर युवाचार्यश्री का दार्शनिक प्रवचन हुआ । शुरू मे मुनिश्री किशनलाल ने विपय की पृष्ठभूमि पर अपने विचारो की प्रस्तुति दी ।

पट्टाभिषेक स्थल-रग भवन मे

२ मई / प्रात विद्यालय से विहार कर आचायवर रग भवन पधारे। यह वही भवन हे जहा अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी का स्वर्गवास हुआ था ।

रग भवन के मुख्य हाल मे ज्योही आचायवर पट्ट पर विराजे, सभी साधु-साध्विया वहा वैठ गए । आचायश्री ने पचास वर्ष पूर्व के प्रसगो का मार्मिक एव सजीव वर्णन किया । एक घटे चली इस गोष्ठी मे आचायवर ने भाव-विभोर होकर घटना प्रसगो की प्रस्तुति दी ओर साधु-साध्वियो ने भी एकाग्रता से सुना । आचार्यवर ने भवन के उन भागो के वारे मे भी वताया कि आचार्य वनने से पूव मैं कहा वैठा करते थे, कहा सोते थे, और कहा सतो को पटाते थे ।

श्री गणपतलाल हिरण ने आचायवर के रग भवन पधारने के लिए कृतज्ञता ज्ञापित की व पूरे परिवार की ओर से स्वागत किया । श्री भवरलाल हिरण ने अष्टमाचार्य श्री कालूगणी की वैकुण्ठी मे चादी के कलश तथा उछाल के लिए निर्मित चादी के फूल, कपडे की फरिया व अत्येष्ठी मे काम आया चदन दिखाया । रग भवन मे आचार्यवर का त्रिदिवसीय प्रवास हुआ । साध्वी प्रमुखाश्री जी ने ५ मई को शिवरति के लिए विहार कर दिया । रात्रि-कालीन प्रवास वही हुआ ।

शोक विमोचन

टाडगढ व गगापुर के वीच ३ माच से २१ अप्रैल के मध्य शोक विमोचन हेतु कई परिवार आचायवर के दशनाथ पहुचे। अपने पारिवारिक सदस्य के बिछुडने पर सबको दुख होता है, पर आचायवर की पावन सन्निधि से सबको तोष मिला, प्रेरणा मिली, सबल मिला। जो स्वर्गस्थ हुए वे निम्नोक्त है—

श्रीमती सेवा बाई चिण्डालिया आरकोणम-तमिलनाडु के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री सोवनराज की धर्मपत्नी थी। वे कुछ वर्षो से केसर रोग से पीडित थी। असह्य शारीरिक वेदना के क्षणो मे भी वे सहनशील बनी रहती थी। गुरुदेव व साधु-साध्वियो की उपासना व दान देने की उनकी भावना वेजोड थी। अन्तिम समय मे उनको साध्वीश्री किस्तुराजी का आध्यात्मिक सबल भी प्राप्त हो गया।

'दीवानजी' उपनाम से प्रसिद्ध तथा साध्वीश्री रूपा के ससार पक्षीय भाई श्री जयचदलाल छाजेड (सरदारशहर) सघ-सघपति के प्रति समर्पित थे। वे जीवन भर इकरगे रहे।

श्री भूरामल बावलिया (पुर) एक श्रद्धालु श्रावक थे। उनमे पात्र-दान देने की अभिलाषा सतत बनी रहती थी।

श्रीमती रायकवरी बैगानी (बीदासर) श्री मेघराज की पत्नी थी। वह एक धमनिष्ठ महिला थी।

श्री मदनचद बोरड (लाडनू) एक धार्मिक व्यक्ति थे। उनकी एक पुत्री वर्तमान मे पारमार्थिक शिक्षण सस्था मे अध्ययनरत है।

श्रीमती भवरीदेवी बैगानी (लाडनू) का ८५ वप की अवस्था मे ४३ दिनो के तिविहार व २ दिनो के चौविहार अनशन मे दिल्ली मे स्वर्गवास हो गया। इस अनशन से दिल्ली मे उल्लेखनीय प्रभावना हुई। दो समणिया भी वहा गई। आचार्यश्री ने बैगानी परिवार को शासन भक्त परिवार बताते हुए उनकी सघीय सेवाओ का उल्लेख किया। श्रीमती भवरीदेवी धर्म की धोरिणी (श्रद्धालु) महिला थी। गुरु के नाम से तो वह सोती जाग जाती।

श्री नेमीचद गोगड (बालोतरा) एक तपस्वी, श्रद्धालु और भक्तिमान श्रावक थे। विवाह के १० वप बाद ही पत्नी का देहावसान होने के बाद शेष जीवन अध्यात्म-साधना मे लगा दिया।

श्री शातिभाई मूलत वाव निवासी थे, अब अहमदाबाद मे बस चुके

थे। वे अच्छे धार्मिक रुचि वाले व्यक्ति थे। प्रेक्षाध्यान के प्रति उनकी विशेष अभिरुचि थी। वे हार्ट के मरीज थे।

मास्टर गुलावचदजी मनोत (अजमेर) सहज सस्कारी श्रावक थे। वे जहा भी गए, अपने सपर्क मे आने वालो मे धार्मिक सस्कार भरते रहे। लगभग पचास वर्षो तक वे अध्यापक रहे। उन्होने अपने पूरे परिवार को बौद्धिक दृष्टि से परिसपन्न बनाने के साथ धर्म के गहरे सस्कारो से सस्कारित भी किया।

श्री सूरजमल वाठिया (राज्लदेसर) आयुर्वेदिक, एलोपैथिक तथा होमियोपैथिक औषधियो के काफी अनुभवी थे। साधु-साध्वियो की औषधि के रूप मे अच्छी सेवा करते थे। सेवाकेन्द्र मे सेवारत साध्वीश्री भीखाजी दर्शन देने उनके घर गई। उनके रहते-रहते श्री वाठिया जी का देहान्त हो गया।

श्रीमती वोलिया (पुर) श्री हीरालाल वोलिया की धर्मपत्नी थी। वह एक जागरूक व सस्कारी महिला थी।

श्री मिश्रीमल सेठिया (पूना) एक जिम्मेदार श्रावक थे। उस क्षेत्र मे आने वाले साधु-साध्वियो की पूरे दायित्व के साथ सेवा करते थे।

श्री चैनरूप मुसरफ (राजगढ) एक श्रद्धालु श्रावक थे। इस परिवार के कुछ व्यक्ति सघ-बहिर्भूत साधुओ के सपर्क के कारण गुमराह भी हुए, पर उन पर उसका कोई असर नही हुआ। वे बराबर इकरगे श्रावक रहे।

श्री गोपीचद चोपडा गगाशहर का जैन विश्व भारती के प्रागण मे ६ अप्रैल को अकस्मात् बीमारी मे स्वर्गवास हो गया। आचार्यश्री के शब्दो मे—'गोपीचदजी तेरापथ धर्मसघ के प्रथम समाज-भूषण, विशिष्ट विद्वान, कर्मनिष्ठ श्रावक श्री छोगमल चौपडा के ज्येष्ठ पुत्र थे। वे भी पिता की तरह कर्मठ और विद्वान थे। हिन्दी, अग्रेजी, सस्कृत व बगला भाषा के अच्छे ज्ञाता थे। वे अनुभवी, सूझबूझ वाले तथा पत्र-प्रेषण मे दक्ष थे। अस्सी वर्ष की अवस्था मे भी वे परवश नही हुए। विगत सात वर्षो से वे जैन विश्व भारती को अपनी सेवाये दे रहे थे।'

अणुव्रत ग्राम आमली मे

६ मई / अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री के अणुव्रत ग्राम आमली पधारने पर भावभीना स्वागत किया गया। गगापुर से आमली तक पूरा मार्ग जनाकीर्ण हो गया था। आमली प्रवेश पर अणुव्रत द्वार का उद्घाटन हुआ। सन् १९६२ से आमली को अणुव्रत ग्राम बनाने का प्रयास चल रहा था।

अमृत-महोत्सव के इस पावन प्रसग पर इस आयाम को एक आकार मिला। गाव के सभी लोगो मे अच्छा साम्प्रदायिक सौहार्द हे। गाव की ९५ प्रतिशत जनता मद्य-मुक्त है। आपसी मामलो को कोर्ट के बजाय पारस्परिक समझौते के जरिये सुलझाया जाता हे। गाव मे कोई भी भूमि हीन एव वेघरबार नही है। शिक्षा एव चिकित्सा की समुचित व्यवस्था ह। हर वर्ग का व्यक्ति अणुव्रत के साथ जुडा हुआ है और उसके प्रति आस्थाशील है।

आमली ग्राम को सस्कारी बनाने मे वहा चतुर्मास करने वाले साधु-साध्वियो मे स्वर्गीय मुनिश्री नेमीचन्द ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुनिश्री सुखलाल का भी इस दिशा मे सक्रिय प्रयास रहा। आमली ग्राम मे अणुव्रत पुस्तकालय व वाचनालय, साक्षरता केन्द्र, अणुव्रत न्याय समिति आदि अनेक प्रवृत्तिया चल रही है। आचार्यवर ने आमली के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री राम-नारायण चेचानी की सेवाओ को ध्यान मे रखते हुए 'अणुव्रत सेवी के रूप मे सम्मानित किया।

आमली से महेन्द्रगढ, कारोई, सागवा, वागौर, घोडास, भादू, पिथास होते हुए आचार्यवर पुर पधारे। इन गावो मे आचार्यवर के प्रवचनो से प्रभा-वित होकर सैकडो लोगो ने धूम्रपान व मद्यपान का परित्याग किया। 'हम लोग रोटी पानी छोड सकते हे, पर शराव को नही छोड सकते'—ऐसा कहने वालो ने जव शराव न पीने का सकल्प लिया और तो जनता के आश्चर्य का पार नही रहा। घोडास ग्राम मे शराव के पच प्यारो द्वारा शराव को सदैव के लिये अलविदा करने का पूरे गाव पर गहरा असर पडा।

मेवाड मे हर पाच-सात किलोमीटर पर कोई न कोई गाव आ जाता है —काफी ग्रामो मे तेरापथ के एक-दो परिवार मिल जाते हे। युगीन प्रभाव से अछूते मेवाडी लोगो की श्रद्धा वेजोड है। उनके लिये १०-१५ कि०मी० चलना साधारण सी बात है। आचार्यवर की यात्रा मे जिस ग्राम मे पडाव होता उसके चारो ओर से १०-१५ कि०मी० पैदल चलकर दर्शन, प्रवचन-श्रवण के लिये आ जाते।

१५ मई / पुर/यहा आचार्य भिक्षु ने दो चतुर्मास किये, तब से केवल दो चातुर्मास छोडकर निरतर साधु-साध्वियो का चातुर्मासिक प्रवास हो रहा हे। आचार्य प्रवर के स्वागत समारोह मे बोलते हुए राजस्थान के भू० पू० सिचाई मत्री श्री रामप्रसाद लड्ढा ने कहा कि—"आज विश्व मे हिसात्मक उपकरणो का निर्माण तेजी के साथ हो रहा हे चारो ओर भय, आतक एव

थे। वे अच्छे धार्मिक रुचि वाले व्यक्ति थे। प्रेक्षाध्यान के प्रति उनकी विशेष अभिरुचि थी। वे हार्ट के मरीज थे।

मास्टर गुलावचदजी मनोत (अजमेर) सहज सस्कारी श्रावक थे। वे जहा भी गए, अपने सपर्क मे आने वालो मे धार्मिक सस्कार भरते रहे। लगभग पचास वर्षो तक वे अध्यापक रहे। उन्होने अपने पूरे परिवार को बौद्धिक दृष्टि से परिसपन्न बनाने के साथ धर्म के गहरे सस्कारो से सस्कारित भी किया।

श्री सूरजमल बाठिया (राजलदेसर) आयुर्वेदिक, एलोपैथिक तथा होमियोपैथिक औषधियो के काफी अनुभवी थे। साधु-साध्वियो की औषधि के रूप मे अच्छी सेवा करते थे। सेवाकेन्द्र मे सेवारत साध्वीश्री भीखाजी दर्शन देने उनके घर गई। उनके रहते-रहते श्री बाठिया जी का देहान्त हो गया।

श्रीमती बोलिया (पुर) श्री हीरालाल बोलिया की धर्मपत्नी थी। वह एक जागरूक व सस्कारी महिला थी।

श्री मिश्रीमल सेठिया (पूना) एक जिम्मेदार श्रावक थे। उस क्षेत्र मे आने वाले साधु-साध्वियो की पूरे दायित्व के साथ सेवा करते थे।

श्री चैनरूप मुसरफ (राजगढ) एक श्रद्धालु श्रावक थे। इस परिवार के कुछ व्यक्ति सघ-बहिर्भूत साधुओ के सपर्क के कारण गुमराह भी हुए, पर उन पर उसका कोई असर नही हुआ। वे बराबर इकरगे श्रावक रहे।

श्री गोपीचद चौपडा गगाशहर का जैन विश्व भारती के प्रागण मे ६ अप्रैल को अकस्मात् बीमारी मे स्वर्गवास हो गया। आचार्यश्री के शब्दो मे—'गोपीचदजी तेरापथ धमसघ के प्रथम समाज-भूषण, विशिष्ट विद्वान, कर्मनिष्ठ श्रावक श्री छोगमल चौपडा के ज्येष्ठ पुत्र थे। वे भी पिता की तरह कर्मठ और विद्वान थे। हिन्दी, अग्रेजी, सस्कृत व बगला भाषा के अच्छे ज्ञाता थे। वे अनुभवी, सूझबूझ वाले तथा पत्र-प्रेषण मे दक्ष थे। अस्सी वर्ष की अवस्था मे भी वे परवश नही हुए। विगत सात वर्षो से वे जैन विश्व भारती को अपनी सेवाये दे रहे थे।'

अणुव्रत ग्राम आमली मे

६ मई / अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री के अणुव्रत ग्राम आमली पधारने पर भावभीना स्वागत किया गया। गगापुर से आमली तक पूरा मार्ग जनाकीर्ण हो गया था। आमली प्रवेश पर अणुव्रत द्वार का उद्घाटन हुआ। सन् १९६२ से आमली को अणुव्रत ग्राम बनाने का प्रयास चल रहा था।

अमृत-महोत्सव के इस पावन प्रसग पर इस आयाम को एक आकार मिला। गाव के सभी लोगो मे अच्छा साप्रदायिक सौहाद है। गाव की ६५ प्रतिशत जनता मद्य-मुक्त है। आपसी मामलो को कोट के बजाय पारस्परिक समझौते के जरिये सुलझाया जाता है। गाव मे कोई भी भूमि हीन एव बेघरबार नही है। शिक्षा एव चिकित्सा की समुचित व्यवस्था है। हर वग का व्यक्ति अणुव्रत के साथ जुडा हुआ है और उसके प्रति आस्थाशील है।

आमली ग्राम को सस्कारी बनाने मे वहा चतुर्मास करने वाले साधु-साध्वियो मे स्वर्गीय मुनिश्री नेमीचन्द ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुनिश्री सुखलाल का भी इस दिशा मे सक्रिय प्रयास रहा। आमली ग्राम मे अणुव्रत पुस्तकालय व वाचनालय, साक्षरता केन्द्र, अणुव्रत न्याय समिति आदि अनेक प्रवृत्तिया चल रही है। आचार्यवर ने आमली के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री रामनारायण चेचानी की सेवाओ को ध्यान मे रखते हुए 'अणुव्रत सेवी के रूप मे सम्मानित किया।

आमली से महेन्द्रगढ, कारोई, सागवा, वागौर, घोडास, भादू, पियास होते हुए आचार्यवर पुर पधारे। इन गावो मे आचार्यवर के प्रवचनो से प्रभावित होकर सैकडो लोगो ने धूम्रपान व मद्यपान का परित्याग किया। 'हम लोग रोटी पानी छोड सकते है, पर शराब को नही छोड सकते'—ऐसा कहने वालो ने जब शराब न पीने का सकल्प लिया और तो जनता के आश्चर्य का पार नही रहा। घोडास ग्राम मे शराब के पच प्यारो द्वारा शराब को सदैव के लिये अलविदा करने का पूरे गाव पर गहरा असर पडा।

मेवाड मे हर पाच-सात किलोमीटर पर कोई न कोई गाव आ जाता है—काफी ग्रामो मे तेरापथ के एक-दो परिवार मिल जाते है। युगीन प्रभाव से अछूते मेवाडी लोगो की श्रद्धा बेजोड है। उनके लिये १०-१५ कि०मी० चलना साधारण सी बात है। आचायवर की यात्रा मे जिस ग्राम मे पडाव होता उसके चारो ओर से १०-१५ कि०मी० पैदल चलकर दर्शन, प्रवचन-श्रवण के लिये आ जाते।

१५ मई / पुर/यहा आचाय भिक्षु ने दो चतुर्मास किये, तब से केवल दो चातुर्मास छोडकर निरतर साधु-साध्वियो का चातुर्मासिक प्रवास हो रहा है। आचाय प्रवर के स्वागत समारोह मे बोलते हुए राजस्थान के भू० पू० सिचाई मत्री श्री रामप्रसाद लड्ढा ने कहा कि—"आज विश्व मे हिसात्मक उपकरणो का निर्माण तेजी के साथ हो रहा है चारो ओर भय, आतक एव

अशाति का वातावरण बना हुआ है। इस सदर्भ मे आचार्यश्री तुलसी हमे यही बात बतला रहे है कि शाति तो स्वय अत करण मे विद्यमान है। अपेक्षा है उसे सही रूप मे पहचाने।"

आचार्यवर ने महापुरुषो द्वारा प्रदर्शित माग पर चलने का उपदेश दिया।

पुर मे तत्व ज्ञान प्रशिक्षण शिविर

आचार्यवर के सान्निध्य एव मुनि सुमेर मल "लाडनू" के निर्देशन मे एक सप्त दिवसीय शिविर (१२ मई से १८ मई) का आयोजन किया गया। इस शिविर मे मेवाड के ८२ बालको ने भाग लिया। शिविर समय मे बालको को विशेष रूप से तीन विषयो का प्रशिक्षण दिया गया। (१) तत्त्व-ज्ञान (२) अनुशासन (३) व्यावहारिक ज्ञान।

१८ मई को शिविर समापन कार्यक्रम मे शिविर सचालक श्री हस्तीमल सेठिया ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा शिविर की समस्त प्रवृत्तियो पर अपने सक्षिप्त विचार रखे। इन ७ दिनो मे अधिकाश बच्चे तीनो कसोटियो पर खरे उतरे। कार्यक्रम के बीच पूछे गये प्रश्नो के प्रदत्त उत्तरो से सबको यही अनुभूति हो रही थी कि शिविर से बालको मे सस्कार कितने गहरे एव परि-पक्व हो जाते है। तीनो कसौटियो मे प्रथम, द्वितीय एव तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रो को भीलवाडा गर्ल्स कॉलेज की प्रिंसीपल श्रीमती वडेरा ने पुरस्कार प्रदान किये।

अपने आशीर्वचन मे आचार्य प्रवर ने शिविरार्थियो से कहा—"वे शिविर मे प्राप्त तत्त्वज्ञान, अनुशासन व सुसस्कारो को सजोगकर रखे जिससे दूसरे बालको के लिये अनुकरणीय बन जाए। मुनि सुमेर मल "लाडनू" तथा इनके दोनो सहगामी मुनि विजय व उदित ने इस शिविर मे अच्छा श्रम किया है।" आचार्यप्रवर ने सस्कारो की सुरक्षा हेतु ऐसे शिविरो के समायोजन पर बल दिया।

१६ मई / पुर / सस्कार निर्माण सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमे स्थानीय बेरवा जाति (हरिजन) के लोगो ने विशेष रूप से भाग लिया। अनेको ने अपने विचार रखे। आचार्यवर का इस अवसर पर महत्वपूर्ण उद्बोधन हुआ। लगभग २६ वर्षो पूर्व मुनिश्री कानमल के विशेष प्रयत्नो से बेरवा जाति मद्य, मास से विमुक्त बनी तथा तेरापथ की गुरुधारणा स्वीकार की थी। आचार्य श्री इनके मोहल्ले मे भी पधारे। आचार्यश्री के उद्बोधन

से इस जाति के लोगो को गहरा आत्मतोष मिला ।

१८ मई/पुर/यहा तीन सामाजिक विग्रह शात हुए । पहला विग्रह था बावलिया परिवार व नैनावटी परिवार के बीच । यह कई वर्षो से चला आ रहा था । आचार्यश्री की विशेष प्रेरणा से वर्षो का मनोमालिन्य समाप्त हो गया तथा परस्पर क्षमा याचना की । दूसरा विग्रह था समूचे तेरापथी समाज से । उसका मूल था-मृत्युभोज । मृत्युभोज कोई करे और कोई न करे, यह मनोभेद का कारण बना । आचार्यवर के प्रयास से सबने सर्वसम्मत सकल्प किया कि भविष्य मे वे मृत्यु भोज नही करेगे । तीसरा बेरवा जाति से था, जो तेरापथी है । उनके विवाद का मुद्दा था—जमीन । विवाद इतना बढा कि मामला कोर्ट मे पहुच गया । आचार्यवर के समझाने से सबने श्री गणेशमल चोरडिया को अपना मध्यस्थ बना लिया और उनके किसी भी फैसले को स्वीकार्य मान लिया ।

पुर प्रवास के दौरान रात्रि मे युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण प्रवचन हुवे । जिनमे १५ मई को 'अन्दर का खजाना खोजे' १६ मई को 'धर्म और नैतिकता, तथा १७ को 'हिंसा आज की ज्वलन्त समस्या' विषय थे । १६ मई को स्थानीय कन्यामण्डल की कन्याओ ने दहेज पर एक रोचक परिसवाद किया ।

भीलवाडा मे भव्य स्वागत

२० मई/आचार्यवर के भीलवाडा प्रवेश पर आचार्यवर का भव्य स्वागत किया गया । बापू नगर से जवाहर रोड, सागानेरी दरवाजा, तथा मुख्य बाजार मार्ग होते हुए राजेन्द्र मार्ग स्थित रा० उ० मा० विद्यालय पहुचे । वहा आयोजित स्वागत समारोह मे आचार्यश्री ने उपस्थित जन समूह से अणुव्रत के नियमो को स्वीकार करने का आग्रह किया । युवाचार्यश्री ने समस्या के समाधान मे हिंसा को स्पष्ट शब्दो मे नकारा । कार्यक्रम के प्रारभ मे राजस्थान के पूर्व नहर मत्री श्री चदनमल बैद, पूर्व सिंचाई मन्त्री श्री राम प्रसाद लढ्ढा आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये । अभिनदन समारोह के साथ जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का प्रारभ हो गया । वर्तमान के परिप्रेक्ष्य मे शिक्षा के प्रारूप पर आचार्य श्री, युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुए । उन्होने बदलते समीकरण मे भावनात्मक विकास करने वाली शिक्षा प्रणाली की जोरदार वकालत की ।

२१ मई को 'भारतीय दर्शन मे समग्र जीवन की कल्पना' विषय पर युवाचार्य श्री का विशेष वक्तव्य हुआ । मुनि सुमेरमल "लाडनू" ने विषय

प्रवेश किया ।

आचार्यश्री कैदियो के बीच

२६ मई/भीलवाडा/ आचार्यवर सेन्ट्रल जेल के अधिकारियो एव अपराधियो के विशेप निवेदन पर वहा पधारे । जेल अधिकारियो ने मुख्य गेट पर स्वागत किया । आचायवर ने अपराधियो को महत्त्वपूर्ण उद्बोधन दिया, जिससे अनेको कैदियो ने मद्यपान का परित्याग किया तथा अपनी बुराइयो का जिक्र करते हुए भविष्य मे उन्हे न दोहराने का सकल्प लिया । रात्रि मे "सयम ही जीवन हे" विपय पर युवाचार्यश्री का सारगर्भित वक्तव्य हुआ । प्राग् वक्तव्य मुनि सुमेरमल "लाडनू" का हुआ ।

रात्रि मे मुनि श्री मधुकर के सान्निध्य मे 'काव्य सन्ध्या' का कार्यक्रम रखा गया, जिसमे अनेको मतो तथा मुमुक्षु बहिनो की भावपूर्ण गीतिका, कविता, मुक्तक हुए । जनता को भावविभोर बना देने वाले इस कार्यक्रम का सयोजन मुनि श्री मोहजीत कुमार 'निभय' ने कुशलता के साथ किया ।

२८ मई/आचार्यवर ग्राम भारती पधारे, जहा युवाचार्यश्री के निर्देशन मे २० मई को जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का प्रारभ हुआ था । शिविरार्थियो को सबोधित करते हुए साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा—"श्रद्धेय युवाचार्यश्री का ऊजस्वल व्यक्तित्व आपकी चेतना को आन्दोलित कर रहा हे । आप लोगो ने आठ दिनो मे जो कुछ प्राप्त किया हे उसका अभ्यास जारी रखे क्योकि वह आपके जीवन की अमूल्य थाती हे । युवाचार्य श्री ने अपने उद्बोधन मे कहा—"इस शिविर का उद्देश्य अध्यापको को प्रशिक्षित करना हे । वतमान शिक्षा पद्धति मे आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक कायक्रम को और जोड दिया जाये, तो निश्चय ही एक नया मोड आएगा । पर इसके लिये लोगो को खपना पडेगा ।"

आचार्यश्री ने अपने मगल प्रवचन मे कहा—"शाति,सुख, आनद प्राप्ति के लिये तीन अपेक्षाये है—जीवन प्रकाशमय बने, मोह का आवरण दूर करे, राग द्वेप को क्षीण कर वीतराग बने ।"

जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का समापन

२६ मई/इस शिविर मे देश के विभिन्न भागो से समागत १३० शिविरार्थियो ने भाग लिया । इसमे अधिकाश शिक्षक थे । डा० धर्मानन्द जैन ने शिविर की रिपोट प्रस्तुत की । मुनिश्री सुखलाल, मुनिश्री किशनलाल,

आचार्यवर, युवाचार्य श्री, डा० महावीर गेलडा, प्रो० विपिन भाई, श्री रामेश्वर प्रसाद जैन, सुदशना खन्ना आदि ने अपने विचार व्यक्त किये ।

माध्यमिक शिक्षा बोड, अजमेर द्वारा स्वागत समिति भीलवाडा के आमत्रण पर आयोजित की गई २२ से २५ मई के मध्य शिविर मे जीवन-विज्ञान पुस्तक लेखन सगोष्ठी हुई । इसमे बोर्ड के अध्यक्ष श्री जगन्नाथ सिंह मेहता, सचिव श्री मागीलाल जैन ने विशेष रूप से भाग लिया । जीवन-विज्ञान के पाठ्यक्रम के सदर्भ मे सर्वसम्मति से निणय लिया गया कि शीघ्रातिशीघ्र जीवन-विज्ञान की पाठ्यपुस्तके तैयार की जाये । कक्षा ६ से ११ तक के जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम पर पुस्तके लिखने हेतु दो दलो का गठन किया गया । पहले दल के सयोजन का दायित्व डा० महावीर गेलडा तथा दूसरे दल का डा० शिवकुमार शर्मा को सौपा गया । समागत लेखको ने भी शिविर-समापन के प्रसग पर अपने विचार व्यक्त किये ।

पारदर्शी दृष्टिकोण

३० मई/भीलवाडा रोटरी क्लब तथा लायन्स क्लब के सयुक्त तत्त्वावधान मे एक सगोष्ठी का आयोजन हुआ । टाऊन हॉल मे आयोजित इस सगोष्ठी का विषय था "पारदर्शी दृष्टिकोण" । दोनो क्लबो के पदाधिकारियो, सक्रिय कायकर्ताओ के अलावा अनेको बुद्धिजीवियो एव पत्रकारो ने भी भाग लिया । रोटरी क्लब के अध्यक्ष श्री के० एन० भसाली तथा लायस क्लब के उपाध्यक्ष श्री बशीलाल जेन ने सस्था की ओर से स्वागत किया । कायक्रम के मुख्य अतिथि भीलवाडा जिलाधीश श्री सत्यप्रिय गुप्ता ने कहा—"वर्तमान माहौल मे आचायश्री का सदेश न केवल भारत के लिये, अपितु सपूर्ण विश्व के लिये महत्त्वपूण है । आवश्यकता इस बात की ह कि लोग इनसे प्रेरणा लेकर शोषण, छल, कपट व गरीबी से मुक्त आदर्श राष्ट्र के निर्माण मे सहयोग करे ।

श्री माणिक्य लाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय, भीलवाडा के प्राचार्य डा० महावीर राज गेलडा ने आचायश्री का परिचय देते हुए कहा कि—"सूरज आकाश मे सतत गतिमान रहता है । वहा पाव-पाच चलने वाला सूरज जन-जन की चेतना को जागृत करने के लिए अविराम गति से उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम घूम रहा है । लगभग समूचे भारत को आपने अपने कोमल पैरो से नापा है । आज अपेक्षा है कि ये पावन चरण विदेशी धरती पर टिके, जिससे वहा की जनता आपका पथ प्रदर्शन प्राप्त कर सके ।"

दीक्षा-समारोह

१ जून/भीलवाडा/स्थान-राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, समय-८ ३० बजे/उपस्थिति-१० हजार।

प्रात काल से हो रही वर्षा से कार्यक्रम मे विघ्न उपस्थित होने का अदेशा था, पर कार्यक्रम के पूर्व ही वर्षा प्राय थम गई। कई दिनो की भीषण गर्मी सुहावने मौसम मे परिवर्तित हो गई। सरदारशहर निवासिनी दीक्षार्थिनी बहिनो का सर्व प्रथम परिचय प्रस्तुत किया पारमार्थिक शिक्षण सस्था की बहिन मुमुक्षु शाता जैन ने। दोनो के पिताओ ने लिखित आज्ञा पत्र पूज्य गुरुदेव को समर्पित किया। इन दोनो बहिनो ने अपने मजे हुए विचार रखते हुए शीघ्र दीक्षा देने का निवेदन किया।

इस दीक्षा समारोह मे केन्द्रीय गृह राज्य मत्री श्रीमती रामदुलारी सिन्हा भी उपस्थित थी। उन्होने अपने भाषण मे कहा—"सत्य और अहिंसा के उपदेश का जमाना लदगया है, अब उसका हमारे जीवन मे प्रयोग होना चाहिये। भाषा, जाति प्रात और धर्म के नाम पर आज जो हिंसा का वातावरण बन रहा है, उसका मुकाबला हम आचार्यश्री के बताये हुए मार्ग पर ही चलकर कर सकते है।" युवाचार्य श्री एव साध्वी प्रमुखाश्री के प्रेरक प्रवचन हुए। आचार्यश्री ने आर्ष वाणी का उच्चारण करते हुए उन्हे अपनी अन्तरग परिषद मे शामिल किया। उनका परिचय इस प्रकार है—

नाम	पूर्वनाम	आयु	अध्ययन	सस्था
साध्वी श्री पीयूष प्रभा	मुमुक्षु प्रेम सेठिया	३० वर्ष	स्नातक प्रथम वर्ष	५ वर्ष
साध्वी श्री अमृत प्रभा	मुमुक्षु राकेश नौलखा	२६ वर्ष	सस्था का सम्पूर्ण अध्ययन	१० वर्ष

साध्वीश्री अमृत प्रभा सस्था मे अध्यापन भी करा रही थी।

इस अवसर पर सरदार शहर निवासी श्री अभय कुमार वैद को आचार्य प्रवर ने दीक्षा प्रदान की। लगभग २० वर्षो तक सयम पर्याय पालने के पश्चात् वे एक वर्ष पूर्व धर्मसघ को छोड गृहस्थ बन गये थे, किन्तु उन्हे अपने कृत्य का भान हुआ और पुन सघ मे प्रविष्ट होने की आचार्यवर से भावभरी प्रार्थना की। आज इस अवसर पर उन्हे पुन दीक्षा प्रदान की और वे मुनि अभय कुमार बन गये।

दीक्षा समारोह मे भाग लेने के बाद मध्याह्न मे केन्द्रीय गृह राज्य मत्री श्रीमती रामदुलारी सिन्हा ने आचार्यवर, युवाचार्यश्री से राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओ पर बातचीत की । पजाब, असम एव गुजरात की स्थिति पर भी सक्षिप्त चर्चा चली । एक घण्टे चली इस वार्ता मे आचार्यवर ने अणुव्रत को मानवीय आचार-सहिता एव प्रेक्षाध्यान को आन्तरिक परिवर्तन की प्रक्रिया बताया । युवाचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान को रासायनिक प्रक्रिया का उपक्रम बताते हुए कहा—"आवेश से असतुलित व्यक्ति का इस प्रक्रिया से आतरिक शोधन हो जाता है । अणुव्रत की आचार-सहिता को जीवन मे अवतरित करने के लिये प्रेक्षाध्यान भूमिका निर्माण का काय करती है । छात्रो मे भावनात्मक विकास हो, इस दृष्टि से जीवन-विज्ञान एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा पद्धति है ।" युवाचार्यश्री ने जीवन-विज्ञान के बारे मे सविस्तार विवेचन किया । आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण विचारो से श्रीमती सिन्हा काफी प्रभावित हुई ।

रात्रि मे जनता की ओर से आचार्यवर को भावभीनी विदाई दी गई ।

२ जून को भीलवाडा से विहार कर आरजिया पधारे । रावले मे आचार्यप्रवर का प्रवास होने से ठाकुर श्री भानुसिह तथा उनके पूरे परिवार ने अपने आपको कृतकृत्य माना । ३ जून को २० हजार की आबादी वाले तहसील क्षेत्र माडल पधारने पर आचार्यवर का भावभरा स्वागत किया गया । ४ जून को लुहारिया पधारने पर माडल तहसील के सरपच ठाकुर श्री शकरसिह, विधायक श्री बिहारीलाल पारीक ने आचार्यवर के स्वागत मे अपने विचार रखे । आचार्यवर ने अपने प्रवचन मे कहा—"मनुष्य ने अपनी बुद्धि से आकाश मे पक्षी की भाति उडना सीख गया है, जल मे मछली की तरह तैरना सीख गया है, चन्द्रलोक पर भी उसकी पहुच हो गई है, पर जब तक जीवन मे धर्म की कला का अवतरण नही होता, तब तक अन्य कलाये अकिंचित्कर है ।" अन्य सैकडो ग्रामीण भाइयो ने व्यसन मुक्त जीवन जीने का नियम लेकर आचार्यश्री को अच्छी खासी भेट दी । ६ जून को बाकली ग्राम मे विधायक श्री पारीक ने अपनी मातृभूमि की ओर से हार्दिक स्वागत किया । ७ जून को गोविन्दपुरा मे भी अनेको ने धूम्रपान न करने तथा शराब न पीने का नियम ग्रहण किया ।

८ जून/गौहाटी तेरापथी सभा भवन को लेकर स्थानीय श्रावको मे

दीक्षा-समारोह

१ जून/भीलवाडा/स्थान-राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
समय-८ ३० बजे/उपस्थिति-१० हजार।

प्रात काल से हो रही वर्षा से कार्यक्रम मे विघ्न उपस्थित होने का अंदेशा था, पर कार्यक्रम के पूर्व ही वर्षा प्राय थम गई। कई दिनो की भीषण गर्मी सुहावने मौसम मे परिवर्तित हो गई। सरदारशहर निवासिनी दीक्षार्थिनी बहिनो का सर्व प्रथम परिचय प्रस्तुत किया पारमार्थिक शिक्षण सस्था की बहिन मुमुक्षु शाता जैन ने। दोनो के पिताओ ने लिखित आज्ञा पत्र पूज्य गुरुदेव को समर्पित किया। इन दोनो बहिनो ने अपने मजे हुए विचार रखते हुए शीघ्र दीक्षा देने का निवेदन किया।

इस दीक्षा समारोह मे केन्द्रीय गृह राज्य मत्री श्रीमती रामदुलारी सिन्हा भी उपस्थित थी। उन्होने अपने भाषण मे कहा—"सत्य और अहिंसा के उपदेश का जमाना लदगया है, अब उसका हमारे जीवन मे प्रयोग होना चाहिये। भाषा, जाति प्रात और धर्म के नाम पर आज जो हिंसा का वातावरण बन रहा है, उसका मुकाबला हम आचार्यश्री के बताये हुए मार्ग पर ही चलकर कर सकते है।" युवाचार्य श्री एव साध्वी प्रमुखाश्री के प्रेरक प्रवचन हुए। आचार्यश्री ने आर्ष वाणी का उच्चारण करते हुए उन्हे अपनी अन्तरग परिषद मे शामिल किया। उनका परिचय इस प्रकार है—

नाम	पूर्वनाम	आयु	अध्ययन	सस्था
साध्वी श्री पीयूष प्रभा	मुमुक्षु प्रेम सेठिया	३० वर्ष	स्नातक प्रथम वर्ष	५ वर्ष
साध्वी श्री अमृत प्रभा	मुमुक्षु राकेश नौलखा	२६ वर्ष	सस्था का सम्पूर्ण अध्ययन	१० वर्ष

साध्वीश्री अमृत प्रभा सस्था मे अध्यापन भी करा रही थी।

इस अवसर पर सरदार शहर निवासी श्री अभय कुमार बैद को आचार्य प्रवर ने दीक्षा प्रदान की। लगभग २० वर्षो तक सयम पर्याय पालने के पश्चात् वे एक वर्ष पूर्व धर्मसघ को छोड गृहस्थ बन गये थे, किन्तु उन्हे अपने कृत्य का भान हुआ और पुन सघ मे प्रविष्ट होने की आचार्यवर से भावभरी प्रार्थना की। आज इस अवसर पर उन्हे पुन दीक्षा प्रदान की और वे मुनि अभय कुमार बन गये।

दीक्षा समारोह मे भाग लेने के बाद मध्याह्न में केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्रीमती रामदुलारी सिन्हा ने आचार्यवर, युवाचार्यश्री से राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओ पर बातचीत की । पंजाब, असम एव गुजरात की स्थिति पर भी संक्षिप्त चर्चा चली । एक घण्टे चली इस वार्ता मे आचार्यवर ने अणुव्रत को मानवीय आचार-संहिता एव प्रेक्षाध्यान को आन्तरिक परिवर्तन की प्रक्रिया बताया। युवाचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान को रासायनिक प्रक्रिया का उपक्रम बताते हुए कहा—"आवेश से असतुलित व्यक्ति का इस प्रक्रिया से आन्तरिक शोधन हो जाता है । अणुव्रत की आचार-संहिता को जीवन मे अवतरित करने के लिये प्रेक्षाध्यान भूमिका निर्माण का कार्य करती है । छात्रो मे भावनात्मक विकास हो, इस दृष्टि से जीवन-विज्ञान एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा पद्धति है ।" युवाचार्यश्री ने जीवन-विज्ञान के बारे मे सविस्तार विवेचन किया । आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण विचारो से श्रीमती सिन्हा काफी प्रभावित हुई ।

रात्रि मे जनता की ओर से आचार्यवर को भावभीनी विदाई दी गई ।

२ जून को भीलवाडा से विहार कर आरजिया पधारे । रावले मे आचार्यप्रवर का प्रवास होने से ठाकुर श्री भानुसिंह तथा उनके पूरे परिवार ने अपने आपको कृतकृत्य माना । ३ जून को २० हजार की आबादी वाले तहसील क्षेत्र माडल पधारने पर आचार्यवर का भावभरा स्वागत किया गया । ४ जून को लुहारिया पधारने पर माडल तहसील के सरपंच ठाकुर श्री शकरसिंह, विधायक श्री बिहारीलाल पारीक ने आचार्यवर के स्वागत मे अपने विचार रखे । आचार्यवर ने अपने प्रवचन मे कहा—"मनुष्य ने अपनी बुद्धि से आकाश मे पक्षी की भांति उडना सीख गया है, जल मे मछली की तरह तैरना सीख गया है, चन्द्रलोक पर भी उसकी पहुच हो गई है, पर जब तक जीवन मे धर्म की कला का अवतरण नही होता, तब तक अन्य कलाये अकिंचित्कर है ।" अन्य सैकडो ग्रामीण भाइयो ने व्यसन मुक्त जीवन जीने का नियम लेकर आचार्यश्री को अच्छी खासी भेट दी । ६ जून को बाकली ग्राम मे विधायक श्री पारीक ने अपनी मातृभूमि की ओर से हार्दिक स्वागत किया । ७ जून को गोविन्दपुरा मे भी अनेको ने धूम्रपान न करने तथा शराब न पीने का नियम ग्रहण किया ।

८ जून/गौहाटी तेरापथी सभा भवन को लेकर स्थानीय श्रावको मे

मनोमालिन्य उत्पन्न हो गया था । इस मनोमालिन्य को मिटाने हेतु जसोल म एक लिखित फसला भी हुआ, फिर भी उससे यथेष्ट समाधान नही निकल पाया । आखिर नाथडियास गाव मे दोनो पक्षो के प्रतिनिधि आचायवर की सन्निधि मे पहुचे । पूव निणय को कुछ सशोधनो के साथ पुन स्वीकार कर लिया । इस मामल का सलटान मे श्री शुभकरण दसाणी की भी अहम् भूमिका रही ।

रायपुर मे भावभीना स्वागत :

६ जून/ आचायवर के रायपुर पदापण पर स्थानीय जनता द्वारा भावभीना आभनदन किया गया । राजस्थान के शिक्षामत्री श्री रामपाल उपाध्याय न कहा—"मुझ अनक बार आपके दशनो का लाभ मिला ह । आचायश्री क प्रति मर मन मे श्रद्धा ह, विश्वास ह, इसलिए मै जयपुर, दिल्ली या आर अन्य कही भी रहू, आपके दशन अन्तर्मन से हा जात हे ।" शिक्षामत्री न आचायश्री क कायक्रमो पर विस्तार से अपन विचार रखे । इस प्रसग पर आचायश्री, युवाचायश्री एव सा०वी प्रमुखाश्री के भी महत्त्वपूण वक्तव्य हुए ।

रायपुरवासियो की विशेप प्रायना के कारण आचायवर दूसरे दिन रायपुर ही रुक । युवाचायश्री प्रात बोराणा पधारे गये । आचायश्री शाम को पधार । स्थानीय सरपच श्री वृद्धिचद मुणोत, उपखड अधिकारी श्री दीक्षित, उप पुलिस अधिक्षक श्री माहनलाल शर्मा न आचायवर का स्वागत किया । ११ जून को आचायश्री बागोलिया पधार गये । गाव के सरपच श्री लालूराम कुमावत न आचायश्री का स्वागत किया । १२ जून को आचायश्री राजाजी का करेडा पधार गय । स्थानीय सरपच श्री भरुलाल मेडतवाल ने आचायवर का भावभीना अभिनदन किया । गगाशहर चातुर्मास सानन्द सपन्न कर लव-लवे विहार करत हुए मुनिश्री राकेशकुमार न आज आचायश्री के दर्शन किये । विधायक श्री बिहारीलाल पारीक न अपन क्षेत्र की ओर से स्वागत किया । आचायश्री न वतमान युग म धम आर मजहब को आधुनिक सदर्भो मे व्याख्यायित करन पर बल दिया । साथ ही आचार्यश्री ने राकेश मुनि के काम करने के तौर तरीको पर प्रसन्नता प्रकट की तथा इस चिलचिलाती धूप मे आन को समपण का द्योतक माना ।

तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर .

६ जून से राजाजी का करेडा मे मुनि सुमेरमल "लाडनू" के निर्देशन

मे एक सप्तदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर की शुरुआत हुई । पुर के बाद मेवाड मे यह दूसरा शिविर था । १६ गावो के १३५ लडको ने इसमे भाग लिया । शिविर मे ली गई तत्वज्ञान परीक्षा का परिणाम ६२ प्रतिशत रहा ।

१४ जून को आचार्यवर के सान्निध्य मे शिविर समापन का कार्यक्रम रखा गया, जिसमे प्रधानाध्यापक माधोलाल कोठारी ने अपने विचार रखे । शिविर के प्रमुख सचालक श्री हस्तीमल सेठिया ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की । विभिन्न परीक्षाओ मे विशेष स्थान प्राप्त लडको को स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री कालूराम मेडतवाल के हाथो पुरस्कार प्रदान किया गया । मुनि सुमेरमल "लाडनू" ने अभिभावको से ऐसे शिविरो मे बच्चो को बार-बार अध्ययन करवाने का आह्वान किया ।

आचार्यश्री ने शिविरो को एक स्वस्थ उपक्रम एव रचनात्मक कार्य बताते हुए वर्तमान की शिक्षा मे समय, शक्ति व अनुशासन के महत्त्व को प्रतिपादित किया । उन्होने शिविरार्थियो से यह अपेक्षा महसूस की—"वे शिविर मे प्राप्त तात्त्विक तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण तथा अनुशासन को अपने जीवन मे स्थायी बनाये ।

१५ जून को करेडा का त्रिदिवसीय प्रवास सपन्न कर आचार्यवर निम्बाहेडा जाटान पधारे । स्थानीय ठाकुर श्री शिवचरण, सरपच श्री रामलाल ने गाव की ओर से आचार्यश्री का स्वागत किया । साय आचार्यश्री चिलेसर पधार गये ।

१६ जून को आचार्यश्री भीटा होते हुए सरेवडी पधारे । भीटा मे स्थानकवासी भाइयो के विशेष आग्रह पर एक घटा रुके तथा प्रवचन दिया । वहा से मेवाड के परपरागत उबड खाबड पहाडी रास्ते से होते हुए सरेवडी मे ऊची पहाडी पर स्थित स्कूल पधारे । आचार्यश्री के मगल प्रवचन से प्रभावित होकर कई व्यक्तियो ने मद्य-मास का परित्याग किया ।

१७ जून को आचार्यवर कमेडी पधारे । साय ऊमरी पधार गये । ऊमरी मे रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे हुआ । मुनि श्री कमल कुमार ने रात्रि कार्यक्रम कमेडी मे किया ।

१८ जून प्रात प्रवचन ऊमरी मे हुआ । साय कून्दवा पधार गये । १९ जून को प्रात युवाचार्यश्री पालडी पधार गये । आचार्यश्री प्रात कून्दवा विराजे । साय पालडी पधार गये ।

२० जून को प्रात बागड के लिए विहार किया रास्ते मे एक कि० मी०

का चक्कर लेकर आचायश्री डीडवाना पधारे। यह ठाकुर हरिदानजी का गाव है। २५ वष पूर्व जो खूखार व कुख्यात डाकु थे। जिनके नाम मात्र से कप-कपी छूट जाती थी। वे माध्वियो के सपर्क मे आये। विचार बदले। जीवन बदला। व्यवहार बदला और वे डाकुपन का बाना छोडकर एक सहज सद् गृहस्थ बन गये। उनके विशेप आग्रह पर ही आचार्यश्री पधारे। प्रवचन दिया और आगे बागड पधार गये। स्वागत-कायक्रम रावले मे रखा गया। ठाकुर मूलसिह तथा श्री मोहनलाल ओस्तवाल ने स्थानीय जनता की ओर से भावभीना स्वागत किया।

२१ जून को आचायवर माकरडा होते हुए साकरडा पधारे। आज मुनि सुमेरमल (लाडनू) बागड से सीधे आमेट तीन सतो से पहुच गये। २२ को जिलोला और २३ को आचायश्री चारभुजा रोड स्टेशन पधार गये। मुनि श्री अभयकुमार के पैर मे "मचरोड" पड जाने पर साधन से आमेट लाये।

शोक विमोचन :

गगापुर व आमेट के मध्य शोक विमोचन हेतु कई परिवार आचायश्री के दशनाथ पहुचे। स्वर्गस्थ व्यक्तियो के नाम निम्नोक्त है—

- श्री मूलचन्द चपलोत (राजनगर) उनका ८२ वर्ष की अवस्था मे २० मिनट के सथारे मे स्वगवास हो गया। वे धम सघ के सेवाभावी श्रावक थे।
- श्रीमती हुलासी देवी सुराणा (राजगढ) उनका चार दिन के चोविहार अनशन मे स्वर्गवास हुआ। वह एक धमनिष्ठ व श्रद्धालु श्राविका थी।
- श्री सोहनलाल बोथरा (लूनकरणसर) श्री बोथरा को मृत्यु के तीन पूर्व मृत्यु का आभास हो गया और अपने स्वजनो को मृत्यु के अनन्तर शोक सताप नही करना, जल्दी आचार्यश्री जहा विराजते है वहा पहुच कर दशन कर लेने की बात कही। वे एक धार्मिक व सस्कारी श्रावक थे।
- श्री हणूतमल बैद (चूरू) श्री बैद का कलकत्ता मे स्वर्गवास हो गया। वे स्वर्गीय श्रावक श्री सागरमल के पुत्र थे।
- श्री चुन्नीलाल नवलखा (लावा सरदारगढ) वकील श्री नाथूलाल के कनिष्ठ भ्राता श्री चुन्नीलाल एक निष्ठावान श्रावक थे। दोनो भाइयो

मे घनिष्ठ प्रेम था। भाई-भाई मे ऐसा प्रेम बहुत कम देखने को मिलता है।

- श्री राजकरण दूगड (सरदारशहर/अहमदाबाद) ४१ वर्ष की अल्पावस्था मे हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। वरिष्ठ श्रावक श्री शुभकरण दूगड के पुत्र तथा श्री श्रीचद नाहटा के वे जामाता थे। व्यवसाय के क्षेत्र मे उन्होने नाम कमाया। धार्मिक सस्कार उन्हे विरासत मे मिले थे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मपत ने बडी हिम्मत का परिचय दिया। पाच दिन के भीतर पूरे परिवार न रायपुर मे आचार्य श्री के दर्शन कर लिये।
- श्री चौथमल सेठिया (छापर) वे एक अर्थसपन्न व निष्ठाशील श्रावक थे। साधु-साध्वियो को दवा की अपेक्षा होने पर अच्छी दलाली करते थे।
- श्रीमती सुखीदेवी मालू (सुजानगढ) वह एक मनोबली श्राविका थी। अन्त समय मे डाक्टरो द्वारा दवा लेने के लिए जोर दिया, अन्यथा लकवा की चेतावनी दी। इतना भय दिखाने पर भी वह स्वीकृत व्रत पर अडिग रही और उसने रात्रि मे दवा नही ली।

मेवाड की कहानी

मेवाड पर्वतीय इलाका है। अरावली पर्वतमाला की चोटियो के मध्य छोटे-छोटे गाव बसे हुए है। दिल्ली से बम्बई को जोडने वाला राष्ट्रीय राजमार्ग न० ८ मेवाड मे जरूर है, पर सैकडो-सैकडो गाव ऐसे है जहा रोड नाम की चीज ही नही है और यदि है, तो वह ककरो का मलवा मात्र है। मेवाड जहा राणा सागा, महाराणा प्रताप जैसे वीरो की वीरता के लिए विख्यात है, वहा मीरा की भक्ति मेवाड की रग-रग मे समाई हुई है। भामाशाह जैसा राष्ट्रभक्त एव दानवीर भी इसी मेवाड भूमि का सपूत था। शील की अखडता के लिए हजारो राजकुमारियो एव रानियो का जौहर भी इसी धरती का दस्तावेज है। तेरापथ की जन्मस्थली बनने का गौरव भी इसी भूमि को प्राप्त है। अमृत-पुरुष आचार्यश्री तुलसी के अमृत-महोत्सव के भव्य आयोजन का सौभाग्य भी इसी भभाग को सप्राप्त हो रहा है।

करीब २१ वर्षो की प्रलम्ब अवधि के बाद आचार्यश्री मेवाडव्यापी दौरा कर रहे है। होली चौमासा टाडगढ करने के बाद आचार्यश्री छोटे-बडे

गावो मे जा रहे है। कई गाव ऐसे भी है, जहा ऊवड-खावड, टेढी-मेढी, ऊची-नीची पगडडियो से होकर पहुचना पडता है। आचार्यश्री ने कई स्थानो पर यह फरमाया—"मै जव मेवाड की मार्गगत कठिनाइयो को देखता हू, तो वहा जाने की इच्छा तक भी नही होती। पर जव श्रद्धा एव भक्ति से लवालब आग्रह ओर विनती को देखता हू, त्याग-प्रत्यारयान के क्रम को देखता हू, तो मन मे आता है कि इन गावो मे रहकर कुछ काम करना चाहिए।'

मेवाड के जिन गावो मे श्रद्धा के मात्र दस-वीस घर ही होते ह, किन्तु आचार्यश्री के पधारने के साथ ही हजारो-हजारो लोग इकट्ठे हो जाते है। मेवाडी लोगो की भावना और उत्साह वस्तुत श्लाघनीय है। सघ और सघ-पति के प्रति अगाध श्रद्धा है। आचायश्री के पास सभी जाति और धर्मो के व्यक्तियो के निस्सकोच ओर वेरोकटोक आगमन को देखकर अनेको व्यक्ति, जो समाज, धर्म, राजनीति आदि क्षेत्रो मे अपनी अर्हता रखते है, अतिशय प्रभावित होते हैं। एक वार सर्वोदयी कार्यकर्ता श्री मनोहरजी मेहता ने कहा—'आचायश्री! आप हमारे है यह अभिमान चूर-चूर हो गया है। आप तो जैनो के नही, जन-जन के पूज्य बन गए ह। आपकी प्रवचन सभाओ मे जैनो की अपेक्षा अजैनो की सख्या अधिक है। यह भेद करना मेरे लिए मुश्किल है कि इनमे कौन हिन्दू है? कौन जैन है? कौन मुसलमान है और कोन हरि-जन है?'

कोसो दूर से समागत ग्रामीणो की थकान उस समय काफूर हो जाती है, जव आचार्यश्री उनकी ही भाषा मे कुछ वोलते है। वे घण्टो आचार्यश्री को अपलक निहारते रहते है। आचार्यश्री उनसे न वोट मागते, न नोट मागते केवल उनके जीवन की खोट मागते है। आचायश्री जव शराव, तम्वाकू धूम्रपान से मुक्त जीवन जीने का उपदेश देते है, तो वर्षो से शराव आदि बुराइयो मे ग्रस्त ग्रामीण जन एक झटके के साथ उनको अलविदा कर देते है। लाखागुडा गाव मे जहा अध्यापक रामसिह व डूगरसिह ने वर्षो से पटी धूम्र-पान की लत को छोडा। वहा कटार गाव मे अध्यापक वशीलाल शर्मा पर आचार्यश्री के वचनो का ऐसा जादूई असर हुआ कि वीस वर्षो से निरन्तर शराव पीने की आदत को वदल दिया। इस यात्रा मे सैकडो-हजारो व्यक्तियो ने आचार्यश्री के पास अपनी वुराइयो को छोडकर सात्त्विक जीवन जीने का सकल्प लिया है।

जीवन के ७२ वसन्त पार करने के वाद भी आचायश्री मे वही युवकत्व,

वही स्फूर्ति और वही ताजगी है। उनका परिश्रम भी कमाल का है। वे दिन मे दो-दो गावो का स्पर्श कर लेते है। दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह कि०मी० विहार करते है। दिन मे दो-दो, तीन-तीन सभाओ को सम्बोधित करते है। श्रद्धालु परिवार और गाव की पूरी जानकारी हासिल करते है। जिस गाव मे आचार्यश्री का पदार्पण होता है, उस क्षेत्र के सासद, विधायक, सरपच, सरकारी अधिकारी आचार्यश्री से सम्पर्क, अभिनन्दन उनके विचारो को सुनना अपना सौभाग्य समझते है। आचार्यश्री की यह करीब सवा तीन महीने की मेवाड यात्रा यत्र-तत्र अध्यात्म की सुरभि बिखेरती हुई आमेट मे परिसपन्न हो गई। जोधपुर से आमेट की सीधी दूरी कोई अधिक नही है, पर आचार्यश्री के लिए जोधपुर से आमेट की दूरी १२०० किलोमीटर हो गई।

पलक पावडे बिछाये

जोधपुर चातुर्मास मे आगामी चातुर्मास आमेट घोषित होने के साथ ही आमेटवासी पलक पावडे बिछाये उस शुभ घडी का इन्तजार कर रहे थे, जिस दिन आचार्यश्री का मगलप्रवेश हो। आमेट वह नगर है जहा का इतिहास बडा ही गरिमामडित रहा है। रानी पद्मिनी को पाने हेतु ललचाई आखो से आए अलाउद्दीन खिलजी के साथ वीर योद्धा जयमल और पत्ता ने जमकर जग किया और उस युद्ध मे पत्ता खेत रह गया। उसी पत्ता की जन्मभूमि आमेट मे तेरापथ के बहुश्रुत सन्त मुनिश्री नथमलजी 'रीछेड' की ५४ दिन सलेखणा व १४ दिनो का प्रभावशाली अनशन हुआ, उस समय ८० साधु-साध्विया एकत्रित हो गये। साध्वीश्री भूराजी की भी यह अनशन भूमि रही है। बहुश्रुत, ज्योतिषवेत्ता, आगम मर्मज्ञ मुनिश्री भीमजी स्वामी इसी भूमि के लाडले सपूत थे। आचार्यश्री की शासन-सगीत गीतिका मे दृढ आस्था के लिए जिस चन्दू बाई श्राविका का उल्लेख है, वह इसी धरती पर जन्मी थी।

आमेटवासियो को तेरापथ के आचार्य का चातुर्मास पाने के लिए १७५ वर्ष तक लबी प्रतीक्षा करनी पडी। द्वितीय आचार्यश्री भारमलजी स्वामी के सवत् १८६६ के चातुर्मास के बाद सप्रति नवम आचार्यश्री तुलसी का चातुर्मास होने जा रहा है। तेरह हजार की आबादी वाले इस नगर मे तेरापथ के ३५० घर तथा अन्य जैन आम्नायनो के १०० घर है। गाव, लक्ष्मीबाजार व स्टेशन इन तीन खडो मे विभक्त इस आमेट कस्बे के डाकघर, स्टेशन

आदि का नाम चारभुजा रोड हे।

हैप्पी हाऊस मे

आमेटवासियो के लिए उस दिन खुशी का पार नही रहा, जब चिर प्रतीक्षा के वाद आचार्यश्री को अपने नगर मे अपनी नजरो से देख रहे थे।

२३ जून का शुभ प्रभात। आचायश्री जिलोला से विहार कर आमेट स्टेशन (चार भुजा रोड स्टेशन) पधारे। वहा 'हैप्पीहाऊस' आचार्यश्री का प्रवास स्थल बना। कच्छारा परिवार अपने वीच आचार्यश्री को पाकर प्रसन्नता का अनुभव कर रहा था।

खचाखच भरे पण्डाल मे आयोजित स्वागत कायक्रम मे बबई की प्रमुख समाज सेविका श्रीमती जयती वहिन मेहता, ब्लिट्ज के मपादक श्री नन्दकिशोर नौटियाल, भारत जैन महामडल के मत्री श्री चन्दमल चाद आदि उपस्थित थे।

श्रीमती मेहता ने कहा—'वतमान मे आचार्यश्री जो काय कर रहे है, उसकी हम किसी मे तुलना नही कर सकते ह। देश मे अनेक धम है, अनेक मप्रदाय हैं, अनेक आचाय हे, किन्तु आचार्यश्री के समान कोई भी सक्रिय नही है। आचायश्री अपने समाज की ही नही, मपूर्ण मानव ममाज की वहुमूल्य सेवा कर रहे ह।

श्री नौटियाल ने कहा—आज विश्व की महाशक्तियो मे शास्त्रो की होड लगी हुई हे। ससार विनाश के कगार पर खडा ह। सारा जगत् भयभीत है। अगर उसे कोई वचा सकता हे, तो वह अणुव्रत ही बचा सकता है।

इस अवसर पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाश्री के महत्त्वपूर्ण उद्‌वोधन हुए। कार्यक्रम का सयोजन श्री चन्दनमल 'चाद' ने किया। रात्रि प्रवास हेप्पी हाऊस मे ही हुआ।

अमृत-समवसरण मे अमृत पुरुष का भव्य अभिनन्दन

२४ जून / आमेट के प्रसिद्ध स्थल अखाडा से स्वागत जुलूम का प्रारभ हुआ। पक्तिवद्ध रग-विरगी पोशाको मे शोभित स्वागत-जुलूम मे आचार्यश्री अपने उत्तराधिकारी युवाचायश्री महाप्रज्ञ, साध्वी प्रमुखाश्री जी समेत ३१ साधु ६५ साध्वियो के साथ मन्थर गति से चल रहे थे। जिम गली से आचायश्री गुजरते, किनारे खडे हजारो-हजारो लोगो के हाथ जुड जाते, मस्तक झुक जाते। अमृत-समवसरण पहुचते ही स्वागत जुलूस एक विशाल-

स्वागत-सभा के रूप मे परिणत हो गया ।

समाज की सभी सस्थाओ के द्वारा मुक्तको, कविताओ, गीतिकाओ के माध्यम से अपने आराध्य का अभिनन्दन किया गया ।

राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष तथा आमेट क्षेत्र के विधायक श्री हीरालाल देवपुरा ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया । चातुर्मास व्यवस्था समिति के कार्याध्यक्ष श्री कन्हेयालाल कच्छरा ने भी अपने विचार रखे । स्वागत समिति के अध्यक्ष महन्तश्री जयरामदासजी महाराज ने आचायश्री को देश की महान विभूति बताया ।

साध्वी प्रमुखाश्री ने आचार्यश्री से ऐसी अमृत की बूदे प्राप्त करने का आह्वान किया, जो नई चेतना, नई शक्ति को जगा सके । युवाचायश्री ने अहिसा की तेजस्विता पर बल दिया । आचार्यश्री ने चातुर्मासिक प्रवास काल मे अधिकाधिक समत्व की साधना मे रहने का आह्वान किया ।

२५ जून / तेरापथ धममघ ने कुछ ऐसे अवदान दिये हे, जो न केवल तेरापथ और जैनो के लिए, अपितु समग्र मानव-जाति के लिए ह । उन अवदानो मे एक है—प्रेक्षाध्यान । अणुव्रत जहा चारित्रिक धरातल को ठोस बनाता हे, वहा प्रेक्षाध्यान उसे प्रायोगिक स्तर पर परिपक्व बनाता हे । सैकडो सैकडो व्यक्तियो के आदतो ओर व्यवहारो मे बहुत बडा अन्तर आया है । कइयो के लिए तो यह वरदान के रूप मे साबित हुआ है । पारमार्थिक शिक्षण सस्था की मुमुक्षु बहिने, उपासिकाए एव समणिया एक पावन उद्देश्य की सप्राप्ति के लिए अहर्निश प्रयत्नशील है । वे भी प्रेक्षाध्यान के सैद्धातिक व प्रायोगिक स्वरूप को समझे । स्वय पर प्रयोग करे तथा दूसरो को भी इस विधि से आकृष्ट करे, इस दृष्टि से केवल उनके लिए श्रद्धेय युवाचायश्री के निदेशन मे सप्तदिवसीय शिविर प्रात कालीन कार्यक्रम मे प्रारभ हुआ । शिविर-स्थल था रमणीक एव मनोहारी 'सूर्या निवास' ।

२५ जून से २६ जून तक रात्रि मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने प्रवचन किया । अन्त मे आचायवर का महत्त्वपूण उदबोधन हुआ ।

२६ जून / नीमली (पाली) निवासी श्री मिश्रीमल धोका का मद्रास मे ६ जून को हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया । नियमित सामायिक व प्रतिक्रमण करने वाले ७४ वर्षीय धोकाजी के पौत्र मुनिश्री धर्मेश कुमार एक वष पूव दीक्षित हुए थे । आज रात्रि मे उनके पारिवारिक जनो ने आचार्यवर के दर्शन किये ।

२७ जून / चूरू के सासद श्री मोहरसिंह राठौड का २४ जून को हृदयगति रुक जाने से देहान्त हो गया। उनके पारिवारिक जनो को प्रदत्त अपने सदेश मे आचार्यप्रवर ने कहा—'चूरू जिले के अन्तर्गत लाखाऊ ग्राम के श्री मोहरसिंह का दिल्ली मे स्वर्गवास हो गया। श्री राठौड तीन वार विधान सभा के सदस्य चुने गए। इस वार वे लोकसभा के सदस्य चुने गए। राजनैतिक व्यक्ति के जीवन और आचरण के बारे मे निश्चित रूप से कुछ भी कहना कठिन होता है, पर मोहरसिहजी के बारे मे कहा जा सकता है कि वे नीति निष्ठ, चरित्रवान और प्रामाणिक व्यक्ति थे। उनका जीवन व्यसनो से मुक्त था। यहा तक कि वे चाय भी नही पीते थे। ऐसा सुना है कि वे सप्ताह मे एक दिन उपवास करते थे। उस दिन वे अन्न, जल आदि कुछ भी नही लेते थे।

मोहरसिंह जी का हमारे धर्मसघ के साथ बहुत निकट का सबध था। सघ प्रवक्ता चदनमल जी वैद के वे मित्र थे। समाज के और भी अनेको लोगो के साथ उनका घनिष्ट सम्बन्ध था। वे पक्के अणुव्रती और श्रद्धालु थे। प्राय प्रतिवर्ष दर्शन करने आते थे। हमारे मन मे भी उनके प्रति बहुत आदर था।

मोहरसिंह जी ने आयुष्य कम पाया, वह किसी के हाथ की बात नही है, किंतु उन्होने राजनीति मे सक्रिय रूप से भाग लेते भी हुए अपने जीवन मे नैतिक मूल्यो को अक्षुण्ण रखा, वह वास्तव मे ही बहुत बडी बात है।

मोहरसिंहजी के परिवार के लोग इस दुख के समय अपने मनोबल का परिचय देंगे। उनकी चारित्रिक विशेषताओ को अपने जीवन मे सजोकर रखेंगे। यही उनकी सच्ची स्मृति होगी।

३० जून / रात्रिकालीन कार्यक्रम मुमुक्षु बहिनो का रहा, जिसमे उन्होने मुक्तक, कविता, भाषण आदि के द्वारा अपने विचारो की अभिव्यक्ति दी। १ जुलाई को रात्रि मे मुमुक्षु बहिनो ने रोचक चन्दनबाला परिसवाद प्रस्तुत किया।

२२६ वा तेरापथ स्थापना दिवस

२ जुलाई / आज का दिन तेरापथ धर्मसघ का महत्त्वपूर्ण दिन है। इस दिन एक ऐसी मशाल प्रज्वलित हुई थी, जिसने अज्ञान के आवरण को अनावृत कर यथार्थ के धरातल पर एक प्रकाशपुज का अभ्युदय किया। उस प्रकाशपुज के रश्मिवलय से सवा दो सौ वर्षो से सपूर्ण मानव जाति की राह आलोकित होती रही है।

विचार संगोष्ठी के रूप मे आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे जनजाति क्षेत्रीय विकास आयुक्त श्री मीठालाल मेहता ने लोगो को सलाह दी कि वे दया, दान व दमन करना सीखे।

उन्होने आगे कहा—'मेरा सप्रदाय मे विरोध नही है। बधन को मैं आवश्यक मानता हू। नदी पार करनी है, तो छलाग नही लगाई जा सकती। नौका का बधन स्वीकार करना होगा। धर्म की साधना के लिए सप्रदाय एक सहारा है। उसमे रहते हुए धर्म व्यापक बने, कोई कठिनाई नही है। कठिनाई वहा होती है, जहा वैचारिक स्वतन्त्रता से परे रहकर धर्म को जन्म के साथ ओढ लिया जाता है।'

मुख्य वक्ता के रूप मे बोलते हुए डा० के० एल० कोठारी व डा० के० सी० सोगानी ने 'भारतीय धर्म सस्कृति मे तेरापथ का योगदान' विषय पर विस्तृत वक्तव्य दिए। गीतिकाओ, भाषणो के अनन्तर युवाचार्यश्री ने कहा—'तेरापथ की नीव त्याग व अनुशासन पर रखी गई है। अनुशासन के कारण इस पथ की विशिष्ट परम्परा बनी व एक नए समाज का उदय हुआ।'

युवाचार्यश्री ने आगे कहा—'तेरापथ की स्थापना आचार्य भिक्षु ने की, पर वस्तुत स्थापना की नही गई, स्वत हुई। तीर्थंकर तीर्थ का प्रवर्तन करते नही, होता है। तीर्थंकर जब कैवल्य की भूमिका पर पहुचते है, उनके पीछे अपने आप समाज खडा हो जाता है। आचार्य भिक्षु त्याग की भूमिका पर खडे हुए, उनके पीछे स्वत समाज बन गया।'

आचार्यश्री ने कहा—'तेरापथ की परम्परा विष पीने की रही है, विष वमन की नही। हमने दूसरो की अच्छाइयो को हमेशा ग्रहण किया, पर उनकी बुराइयो की कभी आलोचना नही की। हम एक सप्रदाय मे रहते हुए भी असाप्रदायिक नीति मे है।' आचार्यश्री ने उपस्थित जनसमूह से अर्जन के साथ विसर्जन करने की बात कही।

मध्याह्न मे मत्र दीक्षा का कार्यक्रम था। नौ वर्ष तक की उम्र के सैकडो बच्चो को आचार्यश्री ने मत्र दीक्षा के सस्कार से सस्कारित किया। बच्चो को 'मत्र दीक्षा' पुस्तक व एक माला भेट की गई। इस कार्यक्रम के बाद जैन विचार गोष्ठी आयोजित की गई, जिसमे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के अलावा अनेक विद्वानो ने जैन धर्म के विविध आयामो पर अपने विचार रखे।

३ जुलाई / मुमुक्षु बहिनो, उपासिकाओ एव समणियो के लिए २५ जून को प्रारम्भ हुए शिविर का आज समापन कार्यक्रम था। मुनिश्री

किशनलाल, श्री सीताराम दाधीच, श्री आनन्दकुमार तिवारी, श्री श्यामलाल, कुमारी वीणा, श्री नाथूलाल 'जिज्ञासु' आदि ने अपने विचार रखे।

युवाचार्यश्री ने इस शिविर का मुख्य उद्देश्य स्वभाव परिवर्तन तथा नई आदतो के निर्माण को माना। उन्होने आत्म-निरीक्षण की शक्ति को जगाने के लिए उपदेश की अपेक्षा प्रयोग को महत्त्वपूर्ण बताया। आचार्यश्री ने अपने आशीर्वचन मे इस शिविर को लाभदायक बताया।

रात्रि मे युवाचार्यश्री का विशेष प्रवचन हुआ। विषय था—'क्या आपने अपना घर बना लिया।' विषय प्रवेश किया मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' ने।

श्री रूपचन्द गोखरू गगापुर, श्री रोशनलाल एव श्री प्रकाशचद्र सुत-रिया अडसीपुरा इन तीनो युवको ने मेवाड यात्रा मे मार्ग की लबी व अच्छी सेवा की। रात्रि मे वे आचार्यवर की सन्निधि मे बैठे थे। आचार्य श्री ने उनके बारे मे यह पद्य फरमाया—

जीभर गुरु सेवा करी, रोशन रूप प्रकाश।
दिवस रात पल-पल , भारी वरी सुवास॥

४ जुलाई/मध्याह्न मे ब्यावर कॉलेज के प्रोफेसर एव पुनर्जन्म के प्रमुख शोधकर्ता, हिन्दी मे प्रकाशित "परा मनोविज्ञान" पुस्तक के लेखक श्री कीर्तिस्वरूप रावत ने सपत्नीक आचार्यश्री से भेट की। सद्य घटित घटनाओ पर स्वय की शोध से अवगत कराया और कहा—'अब पुनर्जन्म सिद्धान्त स्पष्ट होता जा रहा है।'

रात्रि मे 'महाभारत और उत्तराध्ययन' विषय पर युवाचार्यश्री का तुलनात्मक वक्तव्य हुआ। प्राग् वक्तव्य मुनिश्री मुदित कुमार ने दिया।

५ जुलाई/'शात सहवास' विषय पर युवाचार्यश्री, आचार्यश्री के महत्त्व-पूर्ण प्रवचन हुए। अध्यात्म साधना केन्द्र, मेहरोली दिल्ली के प्रमुख श्री मोहनलाल कठोतिया तथा श्री धर्मानन्द जैन, जो विदेश यात्रा कर अभी-अभी लौटे है, ने आचार्यवर के दर्शन किये। प्रवचन मे उन्होने अपनी यात्रा के सस्मरण सुनाये और विदेशी जनता की प्रेक्षाध्यान के प्रयोगो के प्रति जागृत अभिरुचि के बारे मे भी बताया।

६ जुलाई/रात्रि प्रवचन का विषय था "क्या आप दिन मे सोते हैं?" प्रारम्भ मे मुनिश्री किशनलाल ने इस विषय पर प्रकाश डाला। युवाचार्यश्री ने कहा—"वही व्यक्ति जीवित है, जो जागृत है। जो व्यक्ति सोया रहता है

वह श्वास लेते हुए भी जीवित नहीं है। आयुर्वेद के अनुसार सामान्यत दिन मे सोना वर्जित है। दिन मे सोने से स्नायु तत्र सुस्त बनता है। स्नायुतत्र को सुस्त बनाने वाला रोगो को निमत्रण देता है।"

७ जुलाई/प्रात प्रवचन मे आचार्यश्री ने तेरापथ का मूल सिद्धान्त बताते हुए कहा—"जिस क्रिया मे ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की वृद्धि हो, उसमे धर्म है तथा जिस क्रिया मे इनकी वृद्धि न हो, उसमे धर्म नही है। लोक धर्म अवश्य है।"

एकाग्रता का जिक्र करते हुए आचार्यवर ने कहा—"सरसा मे एक भव्य जुलूस मेरे सामने से गुजरा। घटे भर तक वह मेरे सामने से गुजरता रहा। मैंने एकाग्रता का अभ्यास किया। एक बार भी मेरा मन उधर नही गया। मुझे विश्वास हो गया—जयाचार्य की भाति आज भी एकाग्र बना जा सकता है।"

रात्रि मे अवधान का भव्य कार्यक्रम आचार्यश्री के सान्निध्य मे रखा गया। अवधानकार थे मुनिश्री श्रीचद्र "कमल"। उन्होंने सूक्ष्म गणित व स्मृति के विलक्षण प्रयोग किए। दो घटे चले इस कार्यक्रम मे मुनिश्री ने जनता का मन मोह लिया।

८ जुलाई/जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का प्रारभ हुआ। युवाचार्य श्री ने आतरिक आवेगो पर नियत्रण की क्षमता प्राप्त करने को अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण बताया। राजस्थान राज्य शैक्षिक व अनुसधान विभाग के निदेशक श्री भवरलाल शर्मा ने भी अपने विचार रखे।

लोगोवाल का आगमन

९ जुलाई/पजाब कुछ अर्से से आतक, हत्या के गभीर दौर से गुजर रहा था। पूरे देश को यह समस्या घुण की तरह खाये जा रही थी, ऐसे मे आचार्यश्री निरन्तर प्रयत्नशील थे कि पजाब मे शान्ति, सौहार्द एव समन्वय का वातावरण निर्मित हो। समय-समय पर आचार्यश्री ने अपनी मशा भी जाहिर की और अपनी समाधानपरक बातो से भारत सरकार एव अकाली दल को भी अवगत कराया गया। दोनो ने इन विचारो का खुले दिल से स्वागत किया।

समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री शुभकरण ,दसाणी अकाली दल के अध्यक्ष श्री हरचदसिह लोगोवाल से मिले और उन्हे आचार्यश्री के विचारो से अवगत कराया। अन्तत दोनो सतो के मिलन का कार्यक्रम तय हुआ।

६ जुलाई को प्रात श्री हरचदसिह लोगोवाल तथा श्री सुरजीतसिह बरनाला विमान द्वारा उदयपुर और वहा से कार द्वारा आमेट पहुचे ।

मध्याह्न मे लगभग चार बजे से पौने छह बजे तक पौने दो घण्टे आचार्यवर तथा लोगोवाल के बीच वार्तालाप हुआ । बातचीत मे युवाचायश्री, साध्वी प्रमुखाश्री, श्री सुरजीतसिह बरनाला, श्री शुभकरण दसाणी उपस्थित थे । वार्तालाप के पश्चात् आचार्यश्री एव श्री लोगोवाल ने पत्रकारो के सवालो का जवाब दिया ।

रात्रि मे साढे आठ बजे सार्वजनिक सभा का आयोजन हुआ । श्री शुभकरण दसाणी ने अतिथियो का सक्षिप्त परिचय दिया । श्री लोगोवाल एव बरनाला के अमृत-कलश मे पचसूत्री सकल्प पत्र डालने के साथ ही समवसरण तालियो की गडगडाहट से गूज उठा ।

युवाचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा—"जैन, सिख, हिन्दू, मुसलमान सब भाई है । एक ही भारतीय परपरा के मूल स्रोत और इसी मातृभूमि का सिंचन करने वाले सब भाई-भाई है । नाना जातिया, नाना सप्रदाय और नाना विचार फिर भी सब मिलजुल कर रहे ह । ऊपर की बातो को कभी महत्त्व नही मिला ।" युवाचार्यश्री ने आमेट को ऐतिहासिक क्षेत्र बताते हुए तुलसी-लोगोवाल मिलन को सुखद वातावरण की निर्मिति मे महत्त्वपूण माना ।

आचायश्री ने इस मिलन पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा—"आतक एव अशान्ति के वातावरण को मिटाकर अहिसा व अमन चैन का साम्राज्य स्थापित करना सतो का पहला काम हे । मैने श्री लोगोवाल के साथ हुई बातचीत से यह पाया है कि उनके मन मे देश की एकता व अखण्डता के प्रति अटूट विश्वास है । हिसा के प्रति उनके मन मे पीडा हे । शान्ति स्थापना की गहरी तडफ है ।"

आचार्यश्री ने आगे कहा—"मै अपनी ओर से कुछ विशेष बाते कहना चाहता हू । पहली बात कि पजाब-समस्या का समाधान बातचीत के जरिये होना चाहिए, इसमे हिंसा को कोई प्रश्रय न मिले । दूसरी बात यह है कि बातचीत के लिए स्वस्थ वातावरण का निर्माण हो । तीसरी बात यह हे कि जहा कही किसी भी व्यक्ति या समुदाय के द्वारा हिसा होती है । उसकी खुले शब्दो मे भर्त्सना होनी चाहिये । चौथी बात यह हे कि कोई व्यक्ति खराब हो सकता ह, किन्तु उसे लेकर पूरी कौम को खराब बताना, बदनाम करना कभी उचित नही ह ।" आचार्यश्री ने इस काय मे छाया की तरह

गुरु दर्शन री सदा सुरगी चाह राखतो
गुरु अनुशासन री इकरगी राह झाकतो।
कारणीक मुनि सतियारी, सेवा रो मोको,
कभी न चूक्यो बो हो, शासन भक्त अनोखो ।।२।।

दोहा

सभी तरह सपन्न था, शात सुखी परिवार।
भींवराज तातेड री, स्मृति रहसी हर वार ।।३।।

० श्री चैनरूप सचेती मोमासर का पूर्णिया (विहार) मे निधन हो गया। वे एक धार्मिक तथा गणगणी के प्रति समर्पित श्रावक थे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतनदेवी एक तपस्विनी महिला है।

० श्री सोहनलाल हीरावत (चूरु) एक विश्वासी श्रावक थे। साधु-साध्वियो की सेवा जिम्मेदारी से करते थे। सघ व समाज के लिए उनके विचार ऊचे थे। वे अन्तिम श्वास तक सक्रिय रहे।

० प्रेक्षाध्यान के साधक श्री मोहनलाल आचलिया के पुत्रश्री निर्मलकुमार का बोलपुर पश्चिम वगाल मे २९ वप की स्वल्पावस्था मे निधन हो गया। ऐसे दु ख भरे क्षणो मे उनके माता-पिता ने दृढता व वैराग्य वृत्ति का परिचय दिया।

० श्री खेमचद चौपडा (गगाशहर) एक गुण सपन्न, वेदाग और समाज के दीपते श्रावक थे। वे अपनो के ही नही, वहुतो के काम आते थे। कोई भी व्यक्ति उनके पास कुछ अपेक्षा लेकर आता, वह निराश नही लोटता था। पूरे परिवार के वे प्रेरणास्रोत थे। श्री चौपडा दिन मे तीन समय सामायिक किया करते थे। सपन्नता के साथ जितने उदार थे उतने ही सादगी के प्रतीक थे।

० श्री मेघराज खटेड (लाडनू) आचार्यश्री के ससार पक्षीय सबसे बडे भाई स्वर्गीय श्री मोहनलाल जी के पुत्र तथा मुनिश्री हसराज के कनिष्ठ भ्राता थे। अपने परिवार का पूरा दायित्व वहन कर रहे थे। अचानक ब्रेन हेमरेज से देहावसान हो गया। उनकी धमपत्नी श्रीमती कचनदेवी (जो मुनिश्री सुखलाल की ससार पक्षीया वहिन है) ने वहुत दृढता और विवेक का परिचय दिया है।

११ जुलाई/प्रात कालीन प्रवचन मे आचार्यश्री ने समता धर्म की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा—"सम्मान-अपमान, सुख-दु ख, लाभ-अलाभ मे सम

रहने वाला व्यक्ति ही महानता की कोटि मे आता है। वही व्यक्ति जीवन्त व्यक्तित्व का धनी है, जिसके जीवन मे प्रशसा और निंदा की अतिशयता रही हो। उज्जैन मे एक मुसलमान गाधी मेरे पास आया। पैरो और कपडो मे इत्र लगा दिया। चारो और खुशबू फूटने लगी। देवास गाव मे किसी ने पत्थर दे मारा। हमारे लिए तो दोनो अवसरो पर समत्व रखना उचित है।" आचार्यश्री ने अपने आलोचको का आभार मानते हुए कहा—"उनका ही उपकार है, वरना इतने लोग आचाय तुलसी को कैसे जान पाते ?"

१२ जुलाई/श्रीडूगरगढ के पुगलिया परिवार के वरिष्ठ सदस्य श्री तोलाराम पुगलिया का २८ जून को पक्षाघात की लबी बीमारी मे देहावसान हो गया। वे एक प्रतिष्ठित श्रावक, साहसी व व्यापक विचारो के धनी थे। सेवा और दान की भावना उनकी सदा बनी रहती थी। व्यावसायिक, सामाजिक व धार्मिक दृष्टि से उन्होने सफल जीवन जीया। उनकी धमपत्नी तथा पूरे परिवार ने आज आचायवर के दर्शन किये और एक नई खुराक प्राप्त की।

शाम को इस्लामी शिक्षा अधिकारी मुल्ला साहब अली अजगर तथा आमिल साहब माहम्मद हुसैन उदयपुर से आचार्यवर के दर्शनार्थ आए और बातचीत की।

१३ जुलाई/आज आचार्यवर ने आहार-विवेक पर मार्मिक प्रवचन दिया। भोजन का शरीर के साथ क्या सबध है ? उसका शरीर पर क्या प्रभाव पडता है ? उसका साधना से क्या वास्ता है ? इन बिंदुओ को स्पश करते हुए आचार्यवर ने कहा—"हमारे भोजन का उद्देश्य है—शरीर को चलाना। चबा-चबाकर खाना, खाते वक्त आवेश नही करना, चीनी रहित दूध पीना—ये शारीरिक स्वस्थता के कुछ मूलभूत सूत्र है। चबाने को इसलिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है कि खाए हुए पदार्थो का काय आतो को करना पडता है। चबाने के अभाव मे आतो को अतिरिक्त श्रम करना पडता है, जिससे ऊर्जा अधिक खच हो जाती है।" रात्रि मे जैन स्थानकवासी कान्फ्रेस के उपाध्यक्ष श्री हस्तीमल मुणोत तथा अन्य पदाधिकारियो ने दशन किये।

१६ जुलाई/आज दो सघ शोक-विमोचन हेतु आचायश्री के सान्निध्य मे पहुचे। उनमे एक था पुर भीलवाडा का, जो पचपन वर्षीय फतहलाल बोरदिया के निधन के कारण श्री हरखलाल के नेतृत्व मे आया था। इस सघ मे ८५ व्यक्ति थे। दूसरा सघ था लाकोला का, जिसमे ४० व्यक्ति थे। उनके

परिवार के एक बुजुर्ग सदस्य श्री छगनलाल सूतरिया का देहान्त हो गया। वे अस्सी वर्ष के थे।

जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

१७ जुलाई/तुलसी अध्यात्म नीडम्, लाडनू तथा राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण सस्थान के तत्त्वावधान मे ८ जुलाई को जो शिविर प्रारभ हुआ था उसका आज समापन कार्यक्रम था। आज के शिक्षा जगत् मे बौद्धिक विकास बहुत हो रहा है तथा कुछ शारीरिक विकास भी हो रहा है। किन्तु मानसिक एव भावनात्मक विकास का अभाव है। जीवन-विज्ञान इन चारो के विकास का महत्त्वपूर्ण पाठ्यक्रम है।"

आचार्यवर के सान्निध्य तथा युवाचार्यश्री के निर्देशन मे आयोजित इस शिविर मे १०८ शिविरार्थी थे, जिनमे राजस्थान के विभिन्न जिलो की ४० स्कूलो के ८० अध्यापक, सस्थाओ के प्रधान तथा उपजिला निदेशक उपस्थित थे। शिविर के अन्तिम दिनो मे स्कूलो के प्रधानाध्यापक एव जिला शिक्षाधिकारी भी हाजिर हुए। श्रद्धेय युवाचार्यश्री का सतत सान्निध्य व मार्ग दर्शन प्राप्त था।

समापन कार्यक्रम का प्रारम्भ मुमुक्षु हसमुख दोषी के मगलाचरण से हुआ। मुनिश्री किशनलाल ने शिविर की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण सस्थान के अनुसधान अधिकारी श्री लक्ष्मीनारायण जोशी ने इस शिविर को प्रारम्भिक अभ्यास बताते हुए इसे उपयोगी माना।

सस्थान के सयुक्त निदेशक श्री चतरसिंह मेहता ने कहा—"आज दुःख का सबसे बडा कारण है कथनी और करनी मे असमानता। अब जीवन-विज्ञान शिक्षा जगत् का कार्यक्रम बन गया है। हम सबका दायित्व है कि इस काम को आगे बढाने मे मनोयोग से जुटे।"

राजस्थान शिक्षक सघ के अध्यक्ष श्री वासुदेव शास्त्री ने कहा—"साक्षरा बहुवचनान्त शब्द है। उसे उल्टा पढा जायेगा राक्षसा। आज के लोगो की यही स्थिति बनती जा रही है। जो जितने अधिक साक्षर बन रहे है। वे वृत्ति से उतने ही राक्षस बनते जा रहे है। यह चिंता की बात है। आज आचार्यश्री तुलसी नैतिक और चारित्रिक निर्माण का जो कार्यकर रहे है। वह वस्तुत स्तुत्य है।"

युवाचार्यश्री ने तनाव, अशाति व अनैतिकता की समस्या से भी कही

अधिक समस्या मिथ्या दृष्टिकोण की वताई। युवाचार्यश्री ने कहा —"आज मनुष्य का ऐसा दृष्टिकोण निर्मित हो गया है कि हिंसा का समाधान हिंसा है। उसने हिंसा को हथियार वना लिया है। मौजूदा हालात मे अपेक्षा है दृष्टि वदलने की। दृष्टिकोण की सम्यक् निर्मिति से सभी समस्याए स्वत समाहित हो जाती है।" युवाचार्यश्री ने जीवन-विज्ञान की उपादेयता पर भी महत्त्वपूर्ण शब्द कहे।

आचार्यश्री ने प्रायोगिक धर्म की विस्तृत व भावपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की।

१८ जुलाई/प्रात प्रवचन के दौरान आचार्यवर ने चतुर व्यक्ति की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए कहा—"जो दूसरो की कुटिलता को समझ जाता है और किसी से धोखा नही खाता। कुटिल वह होता है जो दूसरो को धोखा देता है। होशियार दोनो है पर अन्तर वहुत गहरा है।"

१९ जुलाई/श्री नवरत्नमल दूगड (सरदारशहर) का मात्र २७ वर्ष की उम्र मे हैदरावाद मे एक मोटर दुर्घटना मे निधन हो गया। आज उनका पूरा परिवार आचार्यवर के दर्शनार्थ पहुचा। उनकी धर्मपत्नी सहित पूरे परिवार ने इस वज्रपात को वडे ही धैर्य एव साहस के साथ सहन किया।

श्रीमती सीरू देवी गिडिया (वीदासर) ने अनशन पूर्वक समाधि मृत्यु का वरण किया। वह श्री चपालाल की धर्मपत्नी थी। धर्म के सस्कार उसके रग-रग मे रमे हुए थे।

श्री कुन्दनमल कोठारी (रीछेड) का हृदयगति रुक जाने से ववई मे निधन हो गया। वे एक सतदास श्रावक थे। उन्होने कम उम्र मे धार्मिक दृष्टि से अच्छा कार्य किया है।

श्री रणजीत कुमार वोकडिया के मेधावी एव तेजस्वी पुत्र श्री सुनील कुमार की मद्रास मे एक दुर्घटना मे मृत्यु हो गई। कुछ दिन पूर्व उसने जैन कॉलेज मे अध्यक्ष पद पर शानदार विजय प्राप्त की थी। उसकी माता श्रीमती मजु एक प्रबुद्ध महिला है। उसने इस अवसर पर वडी दृढता एव साहस का परिचय दिया है।

श्री गणपतमल भडारी (जोधपुर) एक निष्ठाशील, तत्वज्ञानी व तेरापथ के सिद्धान्तो के अच्छे जानकार थे। वे जो भी कार्य अपने हाथ मे लेते थे, वह वडी निष्ठा और तत्परता के साथ सपन्न करते थे।

इन सवके परिजनो ने पिछले दिनो आचार्यवर के दर्शन किये। तथा

परिवार के एक बुजुर्ग सदस्य श्री छगनलाल सूतरिया का देहान्त हो गया। वे अस्सी वर्ष के थे।

जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

१७ जुलाई/तुलसी अध्यात्म नीडम्, लाडनू तथा राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण सस्थान के तत्त्वावधान मे ८ जुलाई को जो शिविर प्रारभ हुआ था उसका आज समापन कायक्रम था। आज के शिक्षा जगत् मे वौद्धिक विकास वहुत हो रहा है तथा कुछ शारीरिक विकास भी हो रहा है। किन्तु मानसिक एव भावनात्मक विकास का अभाव ह। जीवन-विज्ञान इन चारो के विकास का महत्त्वपूण पाठ्यक्रम ह।"

आचायवर के सान्निध्य तथा युवाचायश्री के निर्देशन मे आयोजित इस शिविर मे १०८ शिविरार्थी थे, जिनमे राजस्थान के विभिन्न जिलो की ४० स्कूलो के ८० अध्यापक, सस्थाओ के प्रधान तथा उपजिला निदेशक उपस्थित थे। शिविर के अन्तिम दिनो मे स्कूलो के प्रधानाध्यापक एव जिला शिक्षाधिकारी भी हाजिर हुए। श्रद्धेय युवाचार्यश्री का सतत सान्निध्य व मार्ग दशन प्राप्त था।

समापन कायक्रम का प्रारम्भ मुमुक्षु हसमुख दोषी के मगलाचरण से हुआ। मुनिश्री किशनलाल ने शिविर की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण सस्थान के अनुसधान अधिकारी श्री लक्ष्मीनारायण जोशी ने इस शिविर को प्रारम्भिक अभ्यास वताते हुए इसे उपयोगी माना।

सस्थान के सयुक्त निदेशक श्री चतरसिह मेहता ने कहा—"आज दु ख का सवने वडा कारण है कथनी और करनी मे असमानता। अव जीवन-विज्ञान शिक्षा जगत् का कायक्रम वन गया ह। हम सवका दायित्व है कि इस काम को आगे वढाने मे मनोयोग से जुटे।"

राजस्थान शिक्षक सघ के अध्यक्ष श्री वासुदेव शास्त्री ने कहा—"साक्षरा वहुवचनान्त शव्द है। उसे उल्टा पढा जायेगा राक्षसा। आज के लोगो की यही स्थिति वनती जा रही ह। जो जितने अधिक साक्षर वन रहे हैं। वे वृत्ति मे उतने ही राक्षस वनते जा रहे हैं। यह चिता की वात है। आज आचायश्री तुलसी नैतिक और चारित्रिक निर्माण का जो कायकर रहे है। वह वस्तुत स्तुत्य है।"

युवाचायश्री ने तनाव, अशाति व अनैतिकता की समस्या से भी कहीं

अधिक समस्या मिथ्या दृष्टिकोण की बताई। युवाचार्यश्री ने कहा —"आज मनुष्य का ऐसा दृष्टिकोण निर्मित हो गया है कि हिंसा का समाधान हिंसा है। उसने हिंसा को हथियार बना लिया है। मौजूदा हालात मे अपेक्षा है दृष्टि बदलने की। दृष्टिकोण की सम्यक् निर्मिति से सभी समस्याए स्वत समाहित हो जाती है।" युवाचार्यश्री ने जीवन-विज्ञान की उपादेयता पर भी महत्त्वपूर्ण शब्द कहे।

आचार्यश्री ने प्रायोगिक धर्म की विस्तृत व भावपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की।

१८ जुलाई/प्रात प्रवचन के दौरान आचार्यवर ने चतुर व्यक्ति की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए कहा—"जो दूसरो की कुटिलता को समझ जाता है और किसी से धोखा नही खाता। कुटिल वह होता है जो दूसरो को धोखा देता है। होशियार दोनो है पर अन्तर बहुत गहरा है।"

१९ जुलाई/श्री नवरत्नमल दूगड (सरदारशहर) का मात्र २७ वर्ष की उम्र मे हैदराबाद मे एक मोटर दुर्घटना मे निधन हो गया। आज उनका पूरा परिवार आचार्यवर के दर्शनार्थ पहुचा। उनकी धर्मपत्नी सहित पूरे परिवार ने इस वज्रपात को बडे ही धैर्य एव साहस के साथ सहन किया।

श्रीमती सीरु देवी गिडिया (बीदासर) ने अनशन पूर्वक समाधि मृत्यु का वरण किया। वह श्री चपालाल की धर्मपत्नी थी। धर्म के सस्कार उसके रग-रग मे रमे हुए थे।

श्री कुन्दनमल कोठारी (रीछेड) का हृदयगति रुक जाने से बबई मे निधन हो गया। वे एक सतदास श्रावक थे। उन्होने कम उम्र मे धार्मिक दृष्टि से अच्छा कार्य किया है।

श्री रणजीत कुमार बोकडिया के मेधावी एव तेजस्वी पुत्र श्री सुनील कुमार की मद्रास मे एक दुर्घटना मे मृत्यु हो गई। कुछ दिन पूर्व उसने जैन कॉलेज मे अध्यक्ष पद पर शानदार विजय प्राप्त की थी। उसकी माता श्रीमती मजु एक प्रबुद्ध महिला है। उसने इस अवसर पर बडी दृढता एव साहस का परिचय दिया है।

श्री गणपतमल भडारी (जोधपुर) एक निष्ठाशील, तत्वज्ञानी व तेरापथ के सिद्धान्तो के अच्छे जानकार थे। वे जो भी कार्य अपने हाथ मे लेते थे, वह बडी निष्ठा और तत्परता के साथ सपन्न करते थे।

इन सबके परिजनो ने पिछले दिनो आचार्यवर के दर्शन किये। तथा

आध्यात्मिक सबल प्राप्त किया ।

अनुशासन की अनिवार्य अपेक्षा

२१ जुलाई/आज प्रात कालीन प्रवचन का विषय था—'अध्यात्म और अनुशासन' । साध्वी श्री सिद्ध प्रज्ञा ने प्राग् वक्तव्य मे आत्मा की भीतर की प्रक्रिया को अध्यात्म बताया । युवाचार्यश्री ने अपने प्रेरक प्रवचन मे कहा—"हमारे भीतर क्रिया की दो प्रणालिया है, एक इच्छा को जगाती है दूसरी उस पर नियत्रण रखती है । आगम की भाषा मे पहली उदय जन्य प्रणाली तथा दूसरी क्षयोपशम जन्य प्रणाली है ।" उन्होने आगे कहा—"अनुशासन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है और जीवनगत व्यवस्था है । जहा जीवन है वहा नियमन भी आवश्यक है । इच्छाओ पर अकुश करने का काय हमारी विवेक शक्ति करती है । यह विवेक शक्ति का अनुशासन है । अबोध के लिए विधि-निषेध का अनुशासन होता है, जबकि समझदार के लिए उपदेश-सकेत की भाषा उपयोगी रहती है ।"

आचार्यश्री ने कहा—" अध्यात्म और अनुशासन एक ही सिक्के के दो पहलू है । आत्मा मे निवास करने वाला कभी अनुशासनहीन नही हो सकता । अनुशासन की प्रत्येक क्षेत्र मे अनिवार्यता है । ऑफिस, सेना, सरकार, परिवार मे अनुशासन के बिना काम नही चलता । धर्मसघो मे भी उसकी अनिवार्य अपेक्षा है ।"

आचार्यश्री ने अनुशासन का ठोस धरातल समर्पण बनाते हुए युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ का उल्लेख किया और कहा—"इनके समर्पण भाव ने ही इनको नथमल से युवाचार्य महाप्रज्ञ की गरिमा से अभिमण्डित किया है ।"

आचार्यश्री ने मेवाड के युवक-युवतियो से तीन बातो की अपेक्षा की ।

१ रविवारीय जैन-विद्या की कक्षा मे अनिवार्य उपस्थिति हो ।

२ प्रत्येक युवक-युवती अणुव्रत नियमो को समझे व जीवन मे उतारे ।

३ प्रेक्षा-ध्यान की विधि को समझे व प्रयोग करे ।

काव्य-सन्ध्या

२१ जुलाई/रात्रि मे मुनिश्री मधुकर के सान्निध्य मे काव्य-सध्या का समायोजन किया गया । मुनिश्री विजयकुमार मुनिश्री, धमचन्द्रकुमार, मुनिश्री श्रेयासकुमार, मुनिश्री मुदितकुमार, मुनिश्री दिनेशकुमार श्री भीखमचद वैद तथा मुमुक्षु हसमुख ने अपने मुक्तक कविता, गीत प्रस्तुत किये । मुनि श्री

मधुकर ने अपनी कुछ चुनिन्दा गीतिकाओ से एक समा सा बाध दिया। कार्य-क्रम का कुशल सयोजन मुनिश्री लोकप्रकाश ने किया। जनता ने इस कार्यक्रम को बहुत पसन्द किया।

२४ जुलाई/रात्रि मे युवक-युवतियो की वाद-विवाद प्रतियोगिता रखी गई, जिसका विषय था—'आज का युवावर्ग दिशाहीन है।' पन्द्रह प्रतियोगियो मे श्री कुन्दन लोढा व घेवर मेहता प्रथम, श्री सुशील नौलखा द्वितीय तथा सुश्री रेखा हिरण तृतीय रही।

२५ जुलाई/मध्यान्ह १ बजे साधु-साध्वियो की गोष्ठी हुई, जिसमे पचम अग सूत्र भगवती (२/२५) के उस प्रसग पर युवाचार्यश्री ने विस्तृत व सारपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की, जिसमे अणगार के गुणो का उल्लेख है। अत मे आचार्यवर ने साधु-साध्वियो को महत्त्वपूण शिक्षा प्रदान की।

२६ जुलाई/प्रात प्रवचन के दौरान खारची ग्राम प्रधान श्री चक्रवर्ती-सिह ने कहा—"अकाली नेता सत लोगोवाल ने इस आमेट नगर मे आचार्यश्री से जो आलोक पाया, मार्गदर्शन प्राप्त किया। उसी के आलोक मे परसो २४ जुलाई को पजाब की समस्या का समाधान मिल गया। पता नही, आचार्यश्री की क्या अतिशयता है कि इनके पास कोई भी समस्या लेकर आता है, लौटते वक्त समाधान प्राप्त करके जाता है।"

त्याग का आसन ऊचा रहेगा

२७ जुलाई/भारत सरकार व शिरोमणी अकालीदल के अध्यक्ष श्री हरचदसिह लोगोवाल के मध्य २४ जुलाई को समझौता होते ही केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री शकरराव चव्हाण ने आचार्यवर के दर्शन करने का निश्चय किया। दिल्ली से विशेष विमान मे उदयपुर डबोक हवाई अड्डे उतरे और वहा से कार द्वारा आमेट पहुचे। पहुचते ही लगभग आधा घण्टा व्यक्तिगत वार्तालाप हुआ। उसके बाद सार्वजनिक समारोह रखा गया, जिसमे साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा—"कम्प्युटर युग मे विकास की बहुत सभावनाए है। उसकी क्षमता भी बहुत है। लेकिन आज जरूरत है अहिसा, मैत्री और प्रेम की।" उन्होने विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय पर बल दिया।

युवाचार्यश्री ने कहा—"आज एक नये जीवन दर्शन की खोज करनी है वह है त्याग की शक्ति का विकास। त्याग का आसन ऊचा और भोग का आसन नीचा रहेगा, तो सारी दुनिया को समाधान मिलता रहेगा।"

गृहमन्त्री ने कहा—"समाज जब छोटे-छोटे झगडो मे फसा रहता है,

आध्यात्मिक सवल प्राप्त किया ।

अनुशासन की अनिवार्य अपेक्षा

२१ जुलाई/आज प्रात कालीन प्रवचन का विषय था—'अध्यात्म और अनुशासन' । साध्वी श्री सिद्ध प्रज्ञा ने प्राग् वक्तव्य मे आत्मा की भीतर की प्रक्रिया को अध्यात्म बताया । युवाचार्यश्री ने अपने प्रेरक प्रवचन मे कहा—"हमारे भीतर क्रिया की दो प्रणालिया ह, एक इच्छा को जगाती है दूसरी उस पर नियत्रण रखती ह । आगम की भाषा मे पहली उदय जन्य प्रणाली तथा दूसरी क्षयोपशम जन्य प्रणाली ह ।" उन्होंन आगे कहा—"अनुशासन एक स्वाभाविक प्रक्रिया हे और जीवनगत व्यवस्था हे । जहा जीवन है वहा नियमन भी आवश्यक हे । इच्छाओ पर अकुश करने का काय हमारी विवेक शक्ति करती है । यह विवेक शक्ति का अनुशासन हे । अवोध के लिए विधि-निषेध का अनुशासन होता हे, जवकि समझदार के लिए उपदेश-सकेत की भाषा उपयोगी रहती है ।"

आचायश्री ने कहा—" अध्यात्म और अनुशासन एक ही सिक्के के दो पहलू हे । आत्मा मे निवास करने वाला कभी अनुशासनहीन नही हो सकता । अनुशासन की प्रत्येक क्षेत्र मे अनिवायता हे । ऑफिस, सेना, सरकार, परिवार मे अनुशासन के विना काम नही चलता । धमसघो मे भी उसकी अनिवार्य अपेक्षा है ।"

आचायश्री ने अनुशासन का ठोस धरातल समर्पण वनाते हुए युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ का उल्लेख किया और कहा—"इनके समपण भाव ने ही इनको नथमल से युवाचाय महाप्रज्ञ की गरिमा से अभिमडित किया हे ।"

आचार्यश्री ने मेवाड के युवक-युवतियो से तीन वातो की अपेक्षा की ।

१ रविवारीय जैन-विद्या की कक्षा मे अनिवाय उपस्थिति हो ।

२ प्रत्येक युवक-युवती अणुव्रत नियमो को समझे व जीवन मे उतारे ।

३ प्रेक्षा-ध्यान की विधि को समझे व प्रयोग करे ।

काव्य-सन्ध्या

२१ जुलाई/रात्रि मे मुनिश्री मधुकर के सान्निध्य मे काव्य-सध्या का समायोजन किया गया । मुनिश्री विजयकुमार मुनिश्री, कमलकुमार, मुनिश्री श्रेयासकुमार, मुनिश्री मुदितकुमार, मुनिश्री दिनेशकुमार श्री भीखमचद वैद तथा मुमुक्षु हसमुख ने अपने मुक्तक कविता, गीत प्रस्तुत किये । मुनि श्री

मधुकर ने अपनी कुछ चुनिन्दा गीतिकाओ से एक समा सा बाध दिया। कार्य-क्रम का कुशल सयोजन मुनिश्री लोकप्रकाश ने किया। जनता ने इस कार्यक्रम को बहुत पसन्द किया।

२४ जुलाई/रात्रि मे युवक-युवतियो की वाद-विवाद प्रतियोगिता रखी गई, जिसका विषय था—'आज का युवावर्ग दिशाहीन है।' पन्द्रह प्रतियोगियो मे श्री कुन्दन लोढा व घेवर मेहता प्रथम, श्री सुशील नौलखा द्वितीय तथा सुश्री रेखा हिरण तृतीय रही।

२५ जुलाई/मध्यान्ह १ बजे साधु-साध्वियो की गोष्ठी हुई, जिसमे पचम अग सूत्र भगवती (२/२५) के उस प्रसग पर युवाचार्यश्री ने विस्तृत व सारपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की, जिसमे अणगार के गुणो का उल्लेख है। अत मे आचार्यवर ने साधु-साध्वियो को महत्त्वपूर्ण शिक्षा प्रदान की।

२६ जुलाई/प्रात प्रवचन के दौरान खारची ग्राम प्रधान श्री चक्रवर्ती-सिंह ने कहा—"अकाली नेता सत लोगोवाल ने इस आमेट नगर मे आचार्यश्री से जो आलोक पाया, मार्गदर्शन प्राप्त किया। उसी के आलोक मे परसो २४ जुलाई को पजाब की समस्या का समाधान मिल गया। पता नही, आचार्यश्री की क्या अतिशयता है कि इनके पास कोई भी समस्या लेकर आता है, लौटते वक्त समाधान प्राप्त करके जाता है।"

त्याग का आसन ऊचा रहेगा

२७ जुलाई/भारत सरकार व शिरोमणी अकालीदल के अध्यक्ष श्री हरचदसिह लोगोवाल के मध्य २४ जुलाई को समझौता होते ही केन्द्रीय गृहमत्री श्री शकरराव चव्हाण ने आचार्यवर के दर्शन करने का निश्चय किया। दिल्ली से विशेष विमान मे उदयपुर डबोक हवाई अड्डे उतरे और वहा से कार द्वारा आमेट पहुचे। पहुचते ही लगभग आधा घण्टा व्यक्तिगत वार्तालाप हुआ। उसके बाद सार्वजनिक समारोह रखा गया, जिसमे साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा—"कम्प्युटर युग मे विकास की बहुत सभावनाए है। उसकी क्षमता भी बहुत है। लेकिन आज जरूरत है अहिंसा, मैत्री और प्रेम की।" उन्होने विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय पर बल दिया।

युवाचार्यश्री ने कहा—आज एक नये जीवन दर्शन की खोज करनी है वह है त्याग की शक्ति का विकास। त्याग का आसन ऊचा और भोग का आसन नीचा रहेगा, तो सारी दुनिया को समाधान मिलता रहेगा।"

गृहमत्री ने कहा—"समाज जब छोटे-छोटे झगडो मे फसा रहता है,

तो देश कमजोर होता है। यदि हम इन बेकार के झगडो को छोडकर एक हो जाए तो देश की ताकत का दुनिया मे कोई मुकाबला नही कर सकता।"

गृहमत्री ने आगे कहा—"हाल मे देश मे एक ऐसी शुभ घटना हुई है, जिससे देश के सामने उत्पन्न एक बहुत बडा खतरा टल गया है। राजीव गाधी व लोगोवाल के बीच हस्ताक्षरित समझौते मे आचार्यश्री तुलसी की बहुत बडी भूमिका रही है। प्राचीनकाल मे भारत मे सतजन जनता के प्रेरणास्रोत रहे है। आचार्यश्री ने लोगोवाल को सद्प्रेरणा देकर बातचीत के लिये तैयार किया। यह महान् कार्य देश को राहत दिलाने वाला सिद्ध हुआ है।" गृहमत्री ने युवाचार्यश्री द्वारा भोग और त्याग को लेकर व्यक्त किये विचारो से अपनी सहमति व्यक्त करते हुए कहा—"त्याग का महत्त्व ओर बढना चाहिये।"

इस अवसर पर अपने उद्बोधन मे आचार्यश्री ने कहा-"हमे इस बात का ध्यान रखना है कि अभी केवल एक समस्या हल हुई है। अभी देश के सामने गुजरात और असम और भी कई समस्याए है जिनका निवारण करना है। मनुष्य है, समाज है, राष्ट्र है, तो समस्याए होगी। मेरे सामने भी समस्याए आती है। मै उनका समाधान खोजता हू।"

उन्होने गृहमत्री को इ गित करते हुए कहा—"समस्याए है, पर हमे उनसे विचलित नही होना है" आचार्यश्री ने चुटकी ली कि समस्याए नही होगी, तो हमारे पास काम ही क्या बच जाएगा ?"

आचार्यश्री ने आगे कहा—"लोगोवाल जब मुझ से मिले तो मैने उनसे यही कहा कि अब आप लोगो को सरकार से खुलकर बात कर लेनी चाहिए। पहले तो वे तैयार नही हुए। मैंने उनसे स्पष्ट कहा—इस मौके पर अगर आप बात नही करते है, तो फिर यह मामला बहुत लबा पड जायेगा और जिसका खामियाजा सिख कौम को भुगतान पडेगा। उसके बाद लोगो-वाल वार्ता करने को तैयार हो गए।"

राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष श्री हीरालाल देवपुरा ने स्वागत भाषण किया। श्री शुभकरण दमाणी ने भी अपने विचार रखे। समाज कल्याण राज्यमत्रीश्री छोगालाल बाकोलिया भी इस अवसर पर उपस्थित थे। इस कार्यक्रम की सारे देश मे सुन्दर प्रतिक्रिया हुई।

३ अगस्त/राजस्थान उच्च न्यायलय मे न्यायाधीश पद पर नियुक्ति के कुछ दिन बाद ही श्री जसराज चौपडा ने सपरिवार आचार्यवर के दर्शन

किये । इससे पूर्व वे जिला एव सत्र न्यायधीश थे । वे एक सस्कारी और अपनी नियमित सामायिक आदि करने मे जागरूक व्यक्ति है ।

प्रात प्रवचन के दौरान श्री चौपडा ने कहा—"मै आचार्यश्री की कृपा से ही अपने जीवन मे कुछ सीख पाया हू, बढ पाया हू । आचार्यश्री का व्यक्तित्व जन-जन को प्रभावित करने वाला है । जिस व्यक्ति के जीवन मे धर्म उतरा हुआ होता है, वह सहज ही दूसरो को आकृष्ट कर लेता है ।"

श्री चौपडा ने आगे कहा—"हमारे घरो मे कुछ ऐसे प्रतीक रहने चाहिए जिन्हे देखने मात्र से आगन्तुक को यह अवगति हो जाये कि यह जैन है" श्रीचौपडा ने हमारे जीवन व्यवहार मे जैनत्वकी झलक के प्रकटीकरण की महत्ता प्रतिपादन की ।

आचार्यवर ने अपने उद्बोधन मे कहा—"हमे अनाग्रह का महत्त्वपूर्ण दर्शन मिला है, किंतु जैन समाज आग्रह मे जी रहा है । यदि आग्रह न हो तो आज सम्वत्सरी चार-चार बार नही मनाई जाती । जैनो मे सब कुछ अच्छा होते हुए भी कुछ कमिया भी है जैसे तत्त्वज्ञान की अल्पता, बच्चो मे सद्सकारो का अभाव, भविष्य के चितन का दारिद्रय—इन सबसे जैनो को बचाना है ।" आज की इस सगोष्ठी का विषय था "जैन धर्म और हमारा जीवन ।"

अनुशासन फलः समर्पण बीज

४ अगस्त/आज प्रात कालीन प्रवचन का विषय था—'अनुशासन और समपण ।' साध्वीश्री चदनबाला ने प्रारम्भ मे विषय की प्रस्तुति दी । युवाचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे कहा—"समपण के बिना अनुशासन सभव नही है । अनुशासन फल है बीज नही । इसका बीज है समपण । इसलिए जहा समर्पण है वही अनुशासन होगा ।

युवाचार्यश्री ने आगे कहा—"केवल व्यक्ति के प्रति समपण नही, आदर्श, सिद्धात, और विचारो के साथ तादात्म्यभाव स्थापित करना समर्पण है । शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण और गुरु का शिष्य के प्रति वात्सल्य भाव, दोनो ही सिद्धान्त के प्रति समपण है ।"

आचार्यश्री ने अनुशासन और समपण की विशद व्याख्या प्रस्तुत की । उन्होंने कहा—"तेरापथ-सघ मे साधु-साध्विया तो समर्पित है ही, श्रावक-श्राविका समाज का समर्पण भी बेजोड है । वह तीर्थ, धाम, मूर्ति सब कुछ गुरु को ही मानता है, इसलिए हजारो मीलो से कष्टो की परवाह नही कर गुरु दर्शन को आते है । वह कष्टपूर्ण स्थिति मे भी गुरु शरण की दवा का उपयोग

करते है ।"

८ अगस्त / प्रात कालीन प्रवचन मे आचायवर ने कहा—'जीवन की अनिवार्य अपेक्षाए हिंसा के विना पूरी नही होती। पर हिंसा को अहिंसा मानना मिथ्या दृष्टिकोण हे । हिसा को हिंसा मानना सम्यक् दृष्टिकोण हे ।'

उन्होने आगे कहा—'खून से सना वस्त्र कभी खून से साफ नही होता। बीमारी को बीमारी मे नहीं मिटाया जा सकता, वैसे ही हिसा से हिंसा का समाधान नही पाया जा सकता ।'

रात्रि मे 'आज गुरुवार है' विपय पर युवाचार्यश्री का प्रेरक प्रवचन हुआ। प्राग् वक्तव्य मुनिश्री मुदितकुमार ने दिया । अन्त मे आचायश्री का उद्बोधन हुआ ।

९ अगस्त / युवाचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे कहा—'हमारी भावधारा की दो विपरीत प्रवृत्तिया हे—निर्माण और ध्वम । शत्रुता ध्वसात्मक मनोभाव है और मैत्री निर्माणात्मक मनोभाव है दो विरोधी भाव एक साथ नही पनपते। एक सक्रिय होता है तो दूसरा निष्क्रिय हो जाता है ।'

११ अगस्त / प्रात आचार्यवर ने हिंसा-अहिसा पर सारगर्भित प्रवचन दिया । उन्होने कहा—'हमारा सिद्धात हिसा या अहिसा से जुडा हुआ नही है । हमारा सिद्धात तो आज्ञा प्रधान है । जिस प्रवृत्ति मे वीतराग की आज्ञा है, उसमे यदि हिसा है तो वह द्रव्य हिसा हे भाव मे हिंसा नही है । वह भाव से पापमुक्त बना रह सकता हे । जहा प्रमाद हे वहा हिंसा है । अप्रमाद अहिसा है ।'

१५ अगस्त/आज मध्याह्न १ बजकर १५ मिनट पर साध्वीश्री केसरजी (लाडनू) का ५६ वप की अवस्था मे मात्र १२ घण्टे की बीमारी मे अकस्मात् स्वगवास हो गया। दूसरे दिन १६ अगस्त को प्रात साध्वीश्री केसरजी के पार्थिव शरीर का चन्द्रभागा नदी के किनारे ढूढिया मगरी पर अन्तिम सस्कार किया । अन्तिम सस्कार मे मेवाड के अनेको क्षेत्रो तथा स्थानीय लोगो की उपस्थिति दस हजार से भी अधिक थी ।

स० १९९७ कार्तिक कृष्णा ८ को लाडनू मे तेरह वप की अवस्था मे आचायवर के करकमलो से दीक्षित साध्वीश्री केसर के दो भाई तेरापथ सघ मे दीक्षित है—मुनिश्री हनुमानमल 'हरीश', मुनि सुमेरमल 'लाडनू' । उन्होने ४५ वर्ष तक सयम-पर्याय का पालन किया। प्रारम्भ से ही वे साध्वीश्री सानाजी के साथ थी और वर्षो तक उन्हे गुरुकुलवास का सौभाग्य मिला । साध्वीश्री

सोनाजी के स्वर्गवास के बाद वे पिछले आठ वर्षों मे अग्रगण्य के रूप मे विचर रही थी।

मध्याह्न मे आचार्यवर के सान्निध्य मे उनकी स्मृति सभा आयोजित की गई। मुनि सुमेरमल ने अपनी ससार पक्षीया भगिनी को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा—'साधु जीवन की सफलता का एक मात्र राज है—समाधि-मृत्यु को प्राप्त करना। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि साध्वी केसरजी ने अपनी सयम यात्रा समाधि पूर्वक गुरु चरणो मे सानन्द सम्पन्न की। ऐसा अवसर किसी भाग्यशाली को ही मिलता है।'

साध्वी प्रभावना ने, जो लगभग बारह वर्षों तक उनके साथ रही, अपने विचार रखे।

आचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा—'दुनियादारी और धर्म के दो रास्ते है। दुनियादारी मे जन्म के समय हर्ष और मृत्यु के समय शोक होता है, पर धर्म के क्षेत्र मे सयमपूर्वक जीवन और सयमपूर्वक मृत्यु दोनो ही प्रसन्नता के विषय है। साधु-जीवन मे समाधि मृत्यु को प्राप्त करना सब खतरो को पार कर जाना है। साध्वी केसरजी ने सुखे-सुखे पडितमरण कर लिया, समाधि मृत्यु का वरण कर लिया यह जीवन की अपूर्व सफलता है। आचार्यवर ने उनके सम्बन्ध मे एक पद्य फरमाया, वह इस प्रकार है—

सती केसर! तू हुई है सफल अपनी सफर मे,
बाल्यवय से सजग चलती रही अपनी डगर मे।
अचानक ही आज पडित मरण गुरुकुलवास मे,
भाग्य से ही मिले ऐसा समय सहज सुवास मे।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

हिंसा और भ्रष्टाचार की धधकती हुई ज्वाला मानवीय मूल्यो को जिस रूप मे भस्मसात् कर रही है, यह एक बडी घटना है। इसकी त्रासदी बहुत भयावह है, किन्तु अणुव्रत की चिनगारी ने अपनी पैंतीस वर्षों की जिंदगी मे जो काम किया है, वह अहिंसा, शांति, मैत्री व चरित्र के क्षेत्र मे नई धारा के उद्गम का निमित्त बना है। अणुव्रत आन्दोलन के अन्तर्गत अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह पिछले कई वर्षों से प्रतिवर्ष व्यापक रूप से मनाया जाता है। इस वर्ष आमेट मे १५ अगस्त से २१ अगस्त तक इस सप्ताह के विविध कार्यक्रम आयोजित हुए। कार्यक्रम इस प्रकार थे—

करते है ।"

८ अगस्त / प्रातःकालीन प्रवचन मे आचार्यवर ने कहा—'जीवन की अनिवार्य अपेक्षाए हिंसा के विना पूरी नही होती। पर हिंसा को अहिंसा मानना मिथ्या दृष्टिकोण है । हिंसा को हिंसा मानना सम्यक् दृष्टिकोण है ।'

उन्होने आगे कहा—'खून से सना वस्त्र कभी खून से साफ नही होता। बीमारी को बीमारी मे नही मिटाया जा सकता, वैसे ही हिंसा से हिंसा का समाधान नही पाया जा सकता ।'

रात्रि मे 'आज गुरुवार है' विषय पर युवाचार्यश्री का प्रेरक प्रवचन हुआ। प्राग् वक्तव्य मुनिश्री मुदितकुमार ने दिया। अन्त मे आचार्यश्री का उद्‌बोधन हुआ।

९ अगस्त / युवाचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे कहा—'हमारी भावधारा की दो विपरीत प्रवृत्तिया है—निर्माण और ध्वस। शत्रुता ध्वसात्मक मनोभाव है और मैत्री निर्माणात्मक मनोभाव है दो विरोधी भाव एक साथ नही पनपते। एक सक्रिय होता हे तो दूसरा निष्क्रिय हो जाता है ।'

११ अगस्त / प्रात आचार्यवर ने हिंसा-अहिसा पर सारगर्भित प्रवचन दिया। उन्होने कहा—'हमारा सिद्धात हिसा या अहिसा से जुडा हुआ नही है। हमारा सिद्धात तो आज्ञा प्रधान है। जिस प्रवृत्ति मे वीतराग की आज्ञा है, उसमे यदि हिसा हे तो वह द्रव्य हिंसा हे भाव मे हिंसा नही है । वह भाव से पापमुक्त बना रह सकता हे। जहा प्रमाद है वहा हिंसा है। अप्रमाद अहिंसा है ।'

१५ अगस्त/आज मध्याह्न १ बजकर १५ मिनट पर साध्वीश्री केसरजी (लाडनू) का ५९ वर्ष की अवस्था मे मात्र १२ घण्टे की बीमारी मे अकस्मात् स्वर्गवास हो गया। दूसरे दिन १६ अगस्त को प्रात साध्वीश्री केसरजी के पार्थिव शरीर का चन्द्रभागा नदी के किनारे ढूढिया मगरी पर अन्तिम सस्कार किया। अन्तिम सस्कार मे मेवाड के अनेको क्षेत्रो तथा स्थानीय लोगो की उपस्थिति दस हजार से भी अधिक थी।

स० १९९७ कार्तिक कृष्णा ८ को लाडनू मे तेरह वर्ष की अवस्था मे आचार्यवर के करकमलो से दीक्षित साध्वीश्री केसर के दो भाई तेरापथ सघ मे दीक्षित हे—मुनिश्री हनुमानमल 'हरीश', मुनि सुमेरमल 'लाडनू'। उन्होने ४५ वर्ष तक सयम-पर्याय का पालन किया। प्रारम्भ से ही वे साध्वीश्री सोनाजी के साथ थी और वर्षों तक उन्हे गुरुकुलवास का सौभाग्य मिला । साध्वीश्री

सोनाजी के स्वर्गवास के बाद वे पिछले आठ वर्षों मे अग्रगण्य के रूप मे विचर रही थी।

मध्याह्न मे आचार्यवर के सान्निध्य मे उनकी स्मृति सभा आयोजित की गई। मुनि सुमेरमल ने अपनी ससार पक्षीया भगिनी को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा—'साधु जीवन की सफलता का एक मात्र राज है—समाधि-मृत्यु को प्राप्त करना। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि साध्वी केसरजी ने अपनी सयम यात्रा समाधि पूर्वक गुरु चरणो मे सानन्द सम्पन्न की। ऐसा अवसर किसी भाग्यशाली को ही मिलता है।'

साध्वी प्रभावना ने, जो लगभग बारह वर्षों तक उनके साथ रही, अपने विचार रखे।

आचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा—'दुनियादारी और धर्म के दो रास्ते है। दुनियादारी मे जन्म के समय हर्ष और मृत्यु के समय शोक होता है, पर धर्म के क्षेत्र मे सयमपूर्वक जीवन और सयमपूर्वक मृत्यु दोनो ही प्रसन्नता के विषय है। साधु-जीवन मे समाधि मृत्यु को प्राप्त करना सब खतरो को पार कर जाना है। साध्वी केसरजी ने सुखे-सुखे पडितमरण कर लिया, समाधि मृत्यु का वरण कर लिया यह जीवन की अपूर्व सफलता है। आचार्यवर ने उनके सम्बन्ध मे एक पद्य फरमाया, वह इस प्रकार है—

सती केसर! तू हुई है सफल अपनी सफर मे,
बाल्यवय से सजग चलती रही अपनी डगर मे।
अचानक ही आज पडित मरण गुरुकुलवास मे,
भाग्य से ही मिले ऐसा समय सहज सुवास मे।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

हिंसा और भ्रष्टाचार की धधकती हुई ज्वाला मानवीय मूल्यो को जिस रूप मे भस्मसात् कर रही है, यह एक बडी घटना है। इसकी त्रासदी बहुत भयावह है, किन्तु अणुव्रत की चिनगारी ने अपनी पैंतीस वर्षों की जिंदगी मे जो काम किया है, वह अहिंसा, शाति, मैत्री व चरित्र के क्षेत्र मे नई धारा के उद्गम का निमित्त बना है। अणुव्रत आन्दोलन के अन्तर्गत अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह पिछले कई वर्षों से प्रतिवर्ष व्यापक रूप से मनाया जाता है। इस वर्ष आमेट मे १५ अगस्त से २१ अगस्त तक इस सप्ताह के विविध कार्यक्रम आयोजित हुए। कार्यक्रम इस प्रकार थे—

१५ अगस्त	भावात्मक एकता दिवस
१६ अगस्त	व्यसन मुक्ति दिवस
१७ अगस्त	मिलावट निरोध दिवस
१८ अगस्त	अस्पृश्यता निवारण दिवस
१९ अगस्त	दहेज उन्मूलन दिवस
२० अगस्त	जीवन-विज्ञान दिवस
२१ अगस्त	अणुव्रत प्रेरणा दिवस

इन निर्धारित दिवसो मे आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण उद्बोधन होते तथा राजनीति, धार्मिक एव शैक्षिक जगत् के जाने-माने व्यक्ति भी इस मौके पर मौजूद रहते। मिलावट निरोध दिवस पर युवाचार्यश्री का मार्मिक प्रवचन हुआ। उन्होने कहा—'मिलावट एक ऐसा अपराध है, जिसे कभी वख्सा नही जा सकता, क्योकि इससे नैतिक और आध्यात्मिक वल का पतन होता हे। जिस समाज या राष्ट्र का नैतिक वल क्षीण हो जाता है, वह कभी सर्वागीण विकास नही कर सकता।'

मेवाड़ स्तरीय महिला प्रशिक्षण शिविर

१७ अगस्त व १८ अगस्त को आचार्यवर के सान्निध्य मे तथा साध्वी प्रमुखाश्री के निदेशन मे मेवाड स्तरीय महिला प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ, जिसमे २५ गावो की वहिनो ने सोत्साह भाग लिया। साध्वी प्रमुखाश्री ने मेवाडी वहिनो के अद्यापि रूढिग्रस्त होने की पृष्ठभूमि मे अशिक्षा को मूलभूत कारण माना। उन्होने वहिनो से पर्दाप्रथा का वहिप्कार करने की जोरदार अपील की।

२२ अगस्त / पिछले दिनो कई परिवार शोक विमोचन के लिए आचार्यवर की पावन सन्निधि मे पहुचे। स्वर्गस्थ व्यक्तियो का परिचय इस है—

- श्री रायचद सिघी (भादरा) व्यापरिक दृष्टि से वे सुपोल रहते थे। वहा के सार्वजनिक व सघीय कार्यक्रमो मे वे गहरी दिलचस्पी लेते थे।
- श्रीमती किरण देवी सेखानी (वीदासर) का चौविहार अनशन मे स्वर्गवास हो गया। कैसर रोग से पीडित होने पर भी वडी सहनशीलता के साथ जीवन जीया। वह श्री गोरधनजी सेखानी की धर्मपत्नी थी।

- श्री तोलाराम भसाली (छापर) की दिल्ली मे एक दुर्घटना मे मृत्यु हो गई। ऐसे विकट समय मे उनकी धर्मपत्नी की दृढता उल्लेखनीय थी।
- श्रीमती मनोहरीदेवी नाहटा (छापर) का ८४ वर्ष की उम्र मे वाराणसी मे ४१ दिन के तिविहार तथा ४ दिन के चौविहार अनशन मे स्वर्गवास हो गया। वह धर्मनिष्ठ व तपस्विनी महिला थी। उसने अपने जीवन-काल मे काफी तपस्याए की। इस अनशन से वाराणसी मे धर्मसघ की उल्लेखनीय प्रभावना हुई।
- श्री सोहनलाल इटोडिया (वनेडिया-मेवाड) का वनेडिया गाव मे एक मात्र तेरापथी घर है। पूरे गाव मे वे एक प्रभावशाली व्यक्ति थे। यही कारण है कि उनके चले जाने से गाव के प्राय सभी व्यक्ति अच्छी सख्या मे आये है।

श्रीमती मनोहरी देवी वैद (लाडनू) की अनशन पूर्वकसमाधि-मृत्यु हुई। श्री मोहनलाल कलचक्की वाले की वह धर्मपत्नी थी। वह एक आस्थाशील महिला थी। अन्त समय मे उसे गुरु ही गुरु दीखते थे। लगता है वह गुरुमय वन गई।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन

अखिल भारतीय तेरापथ युवक परिषद् का १९ वा वार्षिक अधिवेशन परम श्रद्धेय आचायवर के सान्निध्य मे आयोजित हुआ। परिषद् का मेवाड मे यह पहला अधिवेशन था। इस अधिवेशन मे देश के लगभग एक सौ स्थानो से तीन सौ पचासी युवक प्रतिनिधियो ने सोत्साह भाग लिया। तीन दिवसीय इस अधिवेशन की सक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत है।

२५ अगस्त/प्रात परिषद् अध्यक्ष श्री पदमचद पटावरी ने ध्वजारोहण किया। उन्होने अपने अध्यक्षीय भाषण मे नई सभावनाओ के साथ आचार्यवर से सवल प्राप्त करने का आव्हान किया। आचार्यवर ने कहा—"युवक शक्ति, सतुलन व सक्रियता को कायम रखने वाले हो।" कार्यक्रम के अन्त मे मस्कार केन्द्र के युवको ने योगासन की झलक प्रस्तुत की।

प्रात नौ वजे अधिवेशन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम परिषद् अध्यक्ष श्री पटावरी ने अध्यक्षीय भाषण दिया। मेवाड तेरापथी युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री उत्तमचद सकलेचा, आमेट परिषद् के मत्रीश्री उत्तमचद बोहरा

१५ अगस्त	भावात्मक एकता दिवस
१६ अगस्त	व्यसन मुक्ति दिवस
१७ अगस्त	मिलावट निरोध दिवस
१८ अगस्त	अस्पृश्यता निवारण दिवस
१९ अगस्त	दहेज उन्मूलन दिवस
२० अगस्त	जीवन-विज्ञान दिवस
२१ अगस्त	अणुव्रत प्रेरणा दिवस

इन निर्धारित दिवसो मे आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण उद्बोधन होते तथा राजनीति, धार्मिक एव शैक्षिक जगत् के जाने-माने व्यक्ति भी इस मौके पर मोजूद रहते। मिलावट निरोध दिवस पर युवाचार्यश्री का मार्मिक प्रवचन हुआ। उन्होने कहा—'मिलावट एक ऐसा अपराध है, जिसे कभी बख्सा नही जा सकता, क्योकि इससे नैतिक और आध्यात्मिक बल का पतन होता है। जिस समाज या राष्ट्र का नैतिक बल क्षीण हो जाता है, वह कभी सर्वांगीण विकास नही कर सकता।'

मेवाड़ स्तरीय महिला प्रशिक्षण शिविर

१७ अगस्त व १८ अगस्त को आचार्यवर के सान्निध्य मे तथा साध्वी प्रमुखाश्री के निदेशन मे मेवाड स्तरीय महिला प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ, जिसमे २५ गावो की बहिनो ने सोत्साह भाग लिया। साध्वी प्रमुखाश्री ने मेवाडी बहिनो के अद्यतन पि रूढिग्रस्त होने की पृष्ठभूमि मे अशिक्षा को मूलभूत कारण माना। उन्होने बहिनो से पर्दाप्रथा का बहिष्कार करने की जोरदार अपील की।

२२ अगस्त / पिछले दिनो कई परिवार शोक विमोचन के लिए आचार्यवर की पावन सन्निधि मे पहुचे। स्वर्गस्थ व्यक्तियो का परिचय इस है—

- श्री रायचद सिंघी (भादरा) व्यापरिक दृष्टि से वे सुपोल रहते थे। वहा के सार्वजनिक व सघीय कार्यक्रमो मे वे गहरी दिलचस्पी लेते थे।
- श्रीमती किरण देवी सेखानी (बीदासर) का चौविहार अनशन मे स्वर्गवास हो गया। कैंसर रोग मे पीडित होने पर भी बडी सहनशीलता के साथ जीवन जीया। वह श्री गोरधनजी सेखानी की धर्मपत्नी थी।

- श्री तोलाराम भंसाली (छापर) की दिल्ली मे एक दुर्घटना मे मृत्यु हो गई। ऐसे विकट समय मे उनकी धर्मपत्नी की दृढ़ता उल्लेखनीय थी।
- श्रीमती मनोहरीदेवी नाहटा (छापर) का ८४ वर्ष की उम्र मे वाराणसी मे ४१ दिन के तिविहार तथा ४ दिन के चौविहार अनशन मे स्वर्गवास हो गया। वह धर्मनिष्ठ व तपस्विनी महिला थी। उसने अपने जीवन-काल मे काफी तपस्याए की। इस अनशन से वाराणसी मे धर्मसघ की उल्लेखनीय प्रभावना हुई।
- श्री सोहनलाल इटोडिया (बनेडिया-मेवाड) का बनेडिया गाव मे एक मात्र तेरापथी घर है। पूरे गाव मे वे एक प्रभावशाली व्यक्ति थे। यही कारण है कि उनके चले जाने से गाव के प्राय सभी व्यक्ति अच्छी सख्या मे आये हे।

श्रीमती मनोहरी देवी बैद (लाडनू) की अनशन पूर्वकसमाधि-मृत्यु हुई। श्री मोहनलाल कलचक्की वाले की वह धर्मपत्नी थी। वह एक आस्था-शील महिला थी। अन्त समय मे उसे गुरु ही गुरु दीखते थे। लगता है वह गुरुमय बन गई।

अखिल भारतीय तेरापथ युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन

अखिल भारतीय तेरापथ युवक परिषद् का १६ वा वार्षिक अधिवेशन परम श्रद्धेय आचार्यवर के सान्निध्य मे आयोजित हुआ। परिषद् का मेवाड मे यह पहला अधिवेशन था। इस अधिवेशन मे देश के लगभग एक सौ स्थानो से तीन सौ पचासी युवक प्रतिनिधियो ने सोत्साह भाग लिया। तीन दिवसीय इस अधिवेशन की सक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत है।

२५ अगस्त/प्रात परिषद् अध्यक्ष श्री पदमचद पटावरी ने ध्वजारोहण किया। उन्होने अपने अध्यक्षीय भाषण मे नई सभावनाओ के साथ आचार्यवर से सबल प्राप्त करने का आव्हान किया। आचार्यवर ने कहा—"युवक शक्ति, सतुलन व सक्रियता को कायम रखने वाले हो।" कार्यक्रम के अन्त मे सस्कार केन्द्र के युवको ने योगासन की झलक प्रस्तुत की।

प्रात नौ बजे अधिवेशन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सवप्रथम परिषद् अध्यक्ष श्री पटावरी ने अध्यक्षीय भाषण दिया। मेवाड तेरापथी युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री उत्तमचद सकलेचा, आमेट परिषद् के मत्रीश्री उत्तमचद बोहरा

ने आगन्तुक युवक प्रतिनिधियो का स्वागत किया। मुनिश्री राकेशकुमार द्वारा लिखित तथा आदश साहित्य सघ द्वारा प्रकाशित तीन पुस्तके मुनिश्री धर्मेन्द्र ने भेंट की। अ० भा० ते० यु० प० के प्रथम अध्यक्ष श्री वच्छराज दूगड ने अपने विचार रखे।

आचार्यश्री ने आज के दिन को ग्रन्थि प्रतिलेखन का दिन वताते हुए युवको को महत्त्वपूर्ण उद्बोधन दिया। उन्होने विशेप रूप से तीन सकल्प सूत्रो की ओर युवको का ध्यान आकृष्ट किया।

- अनुचित तरीको से अर्थ का अर्जन न करना।
- अर्जित सपत्ति का व्यक्तिगत क्षेत्र मे अधिक उपयोग न करना।
- आवेग पर नियत्रण रखना।

२६ अगस्त/आज का प्रात कालीन कायक्रम श्री हसमुख दोपी के मगलाचरण से प्रारभ हुआ। श्री अरुण हिरण गगापुर, श्री हसराज मेहता भागलपुर तथा श्री धर्मेश डागी ने 'सगठन और हमारा दायित्व' विपय पर अपने विचार रखे। मुनिश्री मधुकर ने एक युवा-गीत द्वारा युवको की चेतना झकृत की।

युवाचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे चार सूत्री कार्यक्रम से युवको को विशेप रूप से आकृष्ट किया। वे चार सूत्र है—विसर्जन, समपण, व्रत दीक्षा और उपासक दीक्षा। युवाचार्यश्री ने कहा—इन चारो का विकास होता है तो समाज का काया-पलट हो सकता हे। सभी युवको को अपने जीवन मे एक बार उपासक दीक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिए।"

आचार्यवर ने अपने प्रवचन मे कहा—"युवको को अकन की दृष्टि अपनानी चाहिए। जो आवाज केन्द्र से उठती है, उस पर गहन निष्ठा रखते हुए उसे क्रियान्वित करने का प्रयास करना चाहिए।"

२७ अगस्त/आज प्रात कालीन कार्यक्रम मे नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री पद्मचद पटावरी ने शपथ ग्रहण की। मुनि सुमेरमल "लाडनू" ने उपासक दीक्षा की विस्तार से चर्चा करते हुए उसकी साधना पद्धति पर प्रकाश डाला एव इस वात पर वल दिया कि हर व्यक्ति के लिए आवश्यक हे कि वह पर्यु-पण मे आठ दिनो के लिए उपासक दीक्षा स्वीकार करे।

प्रतिवर्प की भाति इस वर्ष भी परिपद ने शेरपुर निवासी श्री प्रेमचद सिंगला एडवोकेट को "युवकरत्न" के अलकरण से सम्मानित किया। श्री सिंगला पजाव के एक सघनिष्ठ युवक ह। परिपद् के उपमत्री श्री

भवरलाल डागा गगाशहर ने श्री सिंगला का परिचय प्रस्तुत किया। श्री सिंगला ने अपने सक्षिप्त भाषण मे आचार्यवर के प्रति असीम श्रद्धा व्यक्त की।

श्री पदमचद पटावरी आगामी तीन वर्षों के लिए पुन सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इस प्रकार परिषद् का त्रिदिवसीय अधिवेशन सानन्द सपन्न हुआ। इस अधिवेशन मे अनेक प्रतिनिधियो ने कई प्रतियोगिताओ मे सोत्साह भाग लिया। प्रतियोगिता मे प्रमुख स्थान प्राप्त प्रतियोगी तथा सम्मानित परिषदो की सूची इस प्रकार है।

- चर्चा-स्पर्धा-चल विजयोपहार
  प्रथम—श्री सुरेन्द्र जैन, तेयुप भिवानी विपक्ष
  द्वितीय—श्री कमलकिशोर पुगलिया, तेयुप सिलिगुडी पक्ष
  तृतीय—श्री सुनिल सामोता, तेयुप इन्दौर पक्ष
- तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता
  प्रथम—श्री हसमुख दोसी, तेयुप सूरत
  द्वितीय—श्री आलोक पगारिया, तेयुप इन्दौर
  तृतीय—श्री भारत भूपण जैन, तेयुप भिवानी
  श्री डूगरचद चौपडा, तेयुप पाली
- सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता
  प्रथम—श्री हिम्मतमल कोठारी, तेयुप टाडगढ
  द्वितीय—श्री नवरत्न दूगड, तेयुप ब्यावर
  श्री महेन्द्रकुमार बोहरा, तेयुप आमेट
  तृतीय—श्री हसमुख दोसी, तेयुप सूरत
  श्री निर्मल के जैन, तेयुप मद्रास
- सस्कार केन्द्र योगासन स्पर्धा
  प्रथम—श्री उत्तमचद बोहरा, तेयुप आमेट
  द्वितीय—श्री राजेन्द्र भसाली, तेयुप गगाशहर
  तृतीय—श्री गणपतमल बोहरा, गोवन्डी
- युवादृष्टि उपहार योजना
  प्रथम—श्री अमृतलाल सचेती, तेयुप कलकत्ता
  द्वितीय—तेरापथ युवक परिषद्, बम्बई
- शाखा परिषद मूल्याकन

सेवा—तेयुप गोलकगज, तेयुप छापर, तेयुप सिलिगुडी
सस्कार—तेयुप आमेट, तेयुप गगाशहर, तेयुप बाव
सगठन—तेयुप कलकत्ता, तेयुप चाडवास, तेयुप सरदारशहर

- केन्द्रीय प्रवृत्तियो मे सहयोग
  तेरापथ युवक परिषद् गौहाटी
- सक्रिय परिषद
  तेरापथ युवक परिषद, मिरजापुर

३९ वां प्रेक्षा शिविर सपन्न

११ सितम्बर/युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के निदेशन मे तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा आयोजित ३९ वा प्रेक्षाध्यान शिविर सानन्द सपन्न हुआ। २ सितम्बर को प्रारभ हुए दस दिवसीय शिविर मे एक सौ से अधिक स्त्री-पुरुषो ने भाग लिया।

शिविरार्थियो को सबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा—"भौतिक चकाचौध एव विलासिता से दूर रहकर ही व्यक्ति स्वस्थ एव सुखी जीवन जी सकता है। जब तक हमारा दृष्टिकोण आध्यात्मिक एव अहिंसक नही होगा, तब तक हिंसा, क्रूरता एव आतकवाद का बोलबाला रहेगा। अपेक्षा है व्यक्ति आनन्द एव सुख का जीवन जीये। इसके लिए प्रेक्षा-ध्यान का अभ्यास बहुत उपयोगी है।"

युवाचायश्री ने कहा—"आज के परिवेश मे समपण की जरूरत है। प्रेक्षा-ध्यान के लिए समर्पण की आवश्यकता है। जो व्यक्ति समर्पित होकर प्रेक्षा-ध्यान का अभ्यास करता है, वह व्यक्तिगत, पारिवारिक एव भौतिक समस्याओ से समाधान पा सकता है।"

इस अवसर पर मुनिश्री किशनलाल ने प्रेक्षा-ध्यान को व्यसन-मुक्ति की प्रक्रिया बताया। अनेक शिविरार्थियो ने अपने शिविरकालीन अनुभवो को सुनाते हुए कहा—"वर्षो से चली आ रही अनेक आदते जो छोडना चाहते हुए भी नही छूट पा रही थी, वे शिविर मे सहज ही छूट गई।"

अहमदाबाद का ि सघ आमेट आया

इन दिनो अहमदाबाद तेरापथ महिला मडल की लगभग ५० सदस्याए आचार्यवर के दशनार्थ ससघ आमेट पहुची। बहिनो के उत्साह और उनकी हिम्मत देखकर लोगो को आश्चर्य भी हुआ। जो बहिने अभी तक घर से

निकलने मे भी सकोच करती थी, वे अब सघ लेकर सैकडो किलोमीटर दूर आचार्यवर की सन्निधि मे पहुच गई। लगभग एक सप्ताह तक वहिनो ने उपासना की। कुछ दिनो बाद भाई-वहनो का एक विशाल सघ अहमदावाद से और आया। उन्होने आचार्यवर के आगामी चातुर्मास अहमदाबाद कराने की जोरदार प्रार्थना की।

पर्युषण पर्व मे विशेष धर्माराधना

जैन धर्म का महत्त्वपूर्ण पर्व पर्युषण विशेष धर्म जागरण व आत्मराधना का प्रतीक है। प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष भी यह पर्व कुछ विशेष प्रयोगो के साथ मनाया गया। ११ सितम्बर को पर्युषण का नवाह्निक कार्यक्रम शुरू हुआ। १५ सितम्बर को परिषद् के मध्य आचार्य श्री एव युवाचाय का केशलोचन हुआ। आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री का सह्लुञ्चन प्रथम घटना थी। रात्रिकालीन कार्यक्रमो मे मूर्तिपूजा, जैन दर्शन मे दया-दान तथा रूढि-मुक्ति आदि विषयो तथा नूतन निर्मित व्रत दीक्षा के नियमो से श्रावक-श्राविकाओ को अवगत किया गया। प्रारम्भ मे मुनि सुमेरमल लाडनू तथा अत मे आचार्यवर का उद्बोधन होता। प्रात काल प्रवचन मे निर्धारित विषयो पर साधु-साध्वियो के प्रारम्भिक वक्तव्य होते। उसके बाद आचार्यवर एव युवाचायवर का महत्त्वपूर्ण उद्बोधन होता। प्रात कालीन कायक्रम इस प्रकार रहा—

तारीक	विषय	प्रारभिक वक्तव्य
१२ सितवर	जैन धर्म और आत्म कर्तृत्व	मुनि मोहनलाल 'आमेट'
१३ सितवर	नया मोड, जैन सस्कार विधि	साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञा
१४ सितवर	अणुव्रत	मुनि सुमेरमल "लाडनू"
१५ सितवर	आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव	साध्वीश्री कनकश्री
१६ सितवर	नारी जागरण	साध्वीश्री कल्पलता
१७ सितवर	भगवान ऋषभनाथ	साध्वीश्री ऋषभप्रभा
१८ सितवर	भगवान नेमिनाथ और पार्श्वनाथ	साध्वीश्री निर्वाणश्री

पर्युषण के दिनो मे प्रवचन आदि कार्यक्रमो मे पूरा पण्डाल भर जाता उन दिनो मे प्रतिदिन करीव ५ हजार से अधिक सामायिक हो जाती।

श्रमणोपासक दीक्षा

अमृत-महोत्सव के सदर्भ मे इस वर्ष प्रथम वार पर्युषण दिनो मे

श्रमणोपासक दीक्षा का अभिनव प्रयोग हुआ। पर्युषण पर्व मे नवीनता एव निखार लाने की दृष्टि मे इस बार आचार्यवर का सकेत था—श्रमणोपासक दीक्षा का आचायवर के इस सकेत से साढे तीन सौ भी अधिक भाई-वहिनो ने श्रमणोपासक दीक्षा अगीकार की। खाद्य-सयम, ब्रह्मचर्य-पालन, सादी वेशभूषा, मौन, आसन, ध्यान आदि से व्यस्त दिनचर्या श्रमणोपासक दीक्षा के मुख्य नियम थे। दीक्षित भाई-बहिनो के लिए प्रात काल साढे चार बजे से रात्रि मे साढे नौ बजे तक का कार्यक्रम बनाया गया।

वे ध्यान, स्वाध्याय, जप, कायोत्सर्ग, आसन आदि मे व्यस्त रहते थे। प्रात आसन श्री केवलचद दरला व मुमुक्षु हसमुख दोषी तथा सामूहिक जप मुनि श्री श्रेयास कुमार आदि कराते थे। दोपहर मे साध्वी प्रमुखाश्रीजी, मुनि सुमेरमल 'लाडनू', मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' के जैन धर्म, जैन सस्कार तेरापथ, समर्पण आदि बिन्दुओ पर महत्त्वपूण प्रवचन हुए। आचार्यश्री ने विशेष रूप से अपना बहुमूल्य समय दिया। कायोत्सर्ग, ध्यान का अभ्यास मुनिश्री किशनलाल करवाते थे।

सामूहिक आयबिल अनुष्ठान

१६ सितवर/दोपहर मे आचार्यवर की सन्निधि मे सामूहिक आयविल का कार्यक्रम हुआ। प्रारभ मे मुनिश्री किशनलाल ने इस अनुष्ठान की उपयोगिता एव सार्थकता पर प्रकाश डाला।

आचायश्री ने आयविल की उपयोगिता बताते हुए कहा—"आयविल का अनुष्ठान एक विशिष्ट अनुष्ठान है। शक्ति सवर्धन के साथ स्वाद-विजय का भी सहज अभ्यास हो जाता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को मानसिक तनाव जन्य अशाति एव कुण्ठा मे मुक्त कर शात एव सुखी जीवन की ओर अग्रसर कर देती है।"

युवाचार्यश्री ने कहा—'आयविल का अनुष्ठान एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमे व्यक्ति स्वस्थ एव सुखी हो सकता है। यह एक आध्यात्मिक चिकित्सा हे।'

इस अनुष्ठान मे १५०० भाई-बहिनो ने भाग लिया। श्रावक-श्राविकाओ ने अमृत-समवसरण मे एक साथ पक्तिबद्ध बैठकर एक ही द्रव्य अधपके चावल तथा चावलो के पानी "ओसावन" से आयबिल किया। साधु-साध्वियो ने आचायवर के सान्निध्य मे एक ही स्थान पर आयविल किया। यह सबके लिए अपूव अवसर था।

मेवाड मे सामाजिक वर्गभेद मिटाने का निर्णय

१७ सितम्बर / मेवाड जैन श्वेताम्बर तेरापथी कान्फ्रेंस का ३६ वा वार्षिक अधिवेशन समायोजित हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता कान्फ्रेंस के अध्यक्ष श्री मनोहर कोठारी ने की।

आचार्यश्री ने इस मौके पर कहा—'बदलते युग चितन के साथ जो समाज नही बदल सकता है, वह अपने अस्तित्व को कभी भी सुरक्षित नहीं रख सकता। आज अपेक्षा है कि भेद मे से अभेद खोजा जाए। बिखराव सारी दुनिया मे है, लेकिन बट-बट कर आदमी कितना बटेगा। आज जब अन्तर्जातीय सबध बन रहे है, वहा एक ही समाज ओसवाल हो या अग्रवाल, छोटे-छोटे तबको मे बट रहे हैं, यह उचित नहीं है।'

अधिवेशन मे सामाजिक वर्गभेद व नया मोड आदि प्रश्नो पर व्यापक विचार विमर्श के अनन्तर कुछ सशोधन किए गए। इस अवसर पर जो महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया गया, वह है तेरापथ ओसवाल समाज से छोटे-बडे साजन (दसा-बीसा) का भेद-भाव समाप्त करने का। यह समाज मे एक क्रान्तिकारी कदम है। अमृत-महोत्सव वर्ष मे लिया गया यह निर्णय सर्वत्र प्रशसित हुआ। सामाजिक वर्ग भेद समाप्ति की विचार-चर्चा मे अनेको व्यक्तियो ने भाग लिया।

उल्लेखनीय सेवा

१८ सितम्बर / मेवाड मे भीलवाडा जिला के अन्तर्गत आशाहोली क्षेत्र मे मुनिश्री मानमल का चातुर्मास था। १० सितबर प्रात सवा नौ बजे प्रवचन करते हुए मुनिश्री अचानक अस्वस्थ हो गये। उन्हे पक्षाघात हो गया। यह समाचार आनन-फानन आचार्यवर के पास पहुचा। उस समय आचार्यवर ने मुनिश्री सुमेरमल 'सुदर्शन' तथा मुनिश्री भवभूति को आशाहोली जाने के लिए आदेश दिया। आदेश मिलते ही दोनो मुनियो ने शाम को ही आमेट से विहार कर दिया। चालीस किलोमीटर चलकर दूसरे दिन साय मुनिश्री की परिचर्या मे उपस्थित हो गए। मुनिश्री की हालत काफी नाजुक थी। एक बार स्वास्थ्य मे थोडा सुधार हुआ, किन्तु पुन पक्षाघात का तेज दौरा आया और बेहोश हो गए। आखिर २२ सितबर को उनका स्वर्गवास हो गया। दूसरे दिन मुनिश्री मानमल के सहयोगी मुनिश्री निर्मल कुमार को साथ लेकर मुनिश्री सुमेरमल 'सुदर्शन' व मुनिश्री भवभूति ने आशाहोली से विहार किया

और आज प्रवचन मे आचायवर के दर्शन किये। मुनिश्री 'सुदशन ने वहा की पूरी स्थिति निवेदित की।

मुनिश्री मानमल के सबध मे अपने उद्गार व्यक्त करते हुए आचार्यवर ने कहा—'मुनि मानमल सघनिष्ठ और गुरु-इगित का आराधक था। अपनी पत्नी के साथ उसने दीक्षा ली थी। उनका नाम था साध्वी गुलाबाजी। दीक्षा लेकर बहुत लबे समय तक श्री डूगरगढ मे साध्वी लाडाजी के साथ रही। दो वर्ष पूव जोधपुर मे उनकी अनशनपूवक समाधि मृत्यु हो गई। मुनि मानमल शरीर से स्थूल था, पर उपकरणो से बहुत हल्का रहता था। व्याख्यान देने का उसको बडा शौक था।'

आचायवर ने दोनो मुनियो द्वारा अच्छी सेवा करने व आध्यात्मिक सबल प्रदान करने की भूरि-भूरि प्रशसा की।

सम्वत्सरी

१६ सितबर / सम्वत्सरी महापव आचायवर की पावन सन्निधि मे बडे ही हष एव उल्लास के साथ मनाया गया। प्रात साढे सात बजे से सायकाल चार बजे तक प्रवचन चला। आचायश्री, युवाचार्यश्री, मुनि सुमेरमल 'लाडनू', मुनिश्री किशनलाल, मुनिश्री उदित कुमार, मुनिश्री मुदित कुमार, साध्वीश्री जतनकुमारी, साध्वीश्री मधुस्मिता के विस्तार से प्रवचन हुए। मुनिश्री मधुकर, मुनिश्री विजयकुमार, मुनिश्री श्रेयास कुमार, मुनिश्री लोकप्रकाश तथा साध्वियो की सुमधुर गीतिकाए हुई। इस महापर्व पर करीब तीन हजार भाई-बहिनो ने अष्ट प्रहरी पौषध किए। सैकडो चतुष्प्रहरी पौषध हुए।

२० सितम्बर / खचाखच भरे अमृत-समवसरण मे क्षमापना का नयनाभिराम कायक्रम सपन्न हुआ। साधु-साध्वियो एव श्रावक-श्राविकाओ के भाषण एव गीतिकाओ के बाद साध्वी प्रमुखाश्री ने एक हृदयग्राही कविता प्रस्तुत करते हुए अपने विचार रखे। मैत्री और क्षमा पर युवाचार्यश्री का सारगर्भित वक्तव्य हुआ। आचायश्री ने आज के दिन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा—'क्षमा याचना एकागी होती हे। खमत-खामणा सर्वागीण होता हे। क्षमा याचना छोटा बडो से करता ह। खमत-खामणा छोटे-बडे दोनो करते ह, क्षमायाचना मे वह अथ नही, जो खमत-खामणा मे है, अत खमत-खामणा का खुला प्रयोग होना चाहिए।' सवप्रथम आचार्यश्री ने युवाचार्यश्री से गले मिलकर खमत-खामणा किया। साधु-साध्वियो, श्रावक-

श्राविकाओ से पृथक्-पृथक् खमत-खामणा किया, सबने आचार्यवर को वन्दन करते हुए खमत-खामणा किया। सुदूर क्षेत्रो मे प्रवासित साधु-साध्वियो, अन्य जैनाचार्यो, साधु-साध्वियो, श्रावक-श्राविकाओ से खमत-खामणा किया। आचार्यवर के खमत-खामणा के भाव-विभोर दृश्य को देखकर अनेक लोगो की आखे गीली हो गईं। साधु-साध्वियो तथा श्रावक-श्राविकाओ ने परस्पर खमत-खामणा किया। रात्रि मे कालूगणी स्मृति दिवस होने से उनके जीवन से सबधित भाषण, गीतिकाए आदि हुई। आचार्यश्री ने पूज्य कालूगणी को उपकारी बताते हुए कृतज्ञता से ओत प्रोत विचार रखे।

इदिरा ज्योति पदयात्री आमेट मे

आज रात्रि मे राजस्थान प्रदेश युवक काग्रेस 'आई' द्वारा आयोजित इदिरा ज्योति पदयात्रा दल ने आचार्यवर से भेट की। यह यात्रा महात्मा-गाधी की जन्मस्थली गुजरात होकर दिल्ली जाने वाली थी।

यात्रा दल को सबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा—'भावात्मक एकता का सकल्प आज की परिस्थितियो मे आवश्यक है। देश मे व्याप्त हिसा एव आतकवाद का मूल कारण भावात्मक एकता का अभाव है। स्वर्गीया प्रधानमत्री देश मे शाति एव सौहार्दपूर्ण वातावरण के लिए प्रयत्न करते हुए शहीद हो गई। विवेक हीन आततायियो ने असमय मे इन्दिरा जी की हत्या कर दी थी। यह इन्दिराजी की हत्या नही, बल्कि पूरी भारतीय सस्कृति की हत्या थी।'

आचार्यश्री ने हिसा और आतकवाद की इस परिस्थिति मे शान्ति व अहिसक शक्तियो को जागृत करने की अपेक्षा पर बल दिया।

इस अवसर पर पदयात्रा दल के सयोजक श्री गणपतसिह ने पदयात्रा की सक्षिप्त जानकारी दी। करीब एक सौ पदयात्रियो ने पाचसूत्री सकल्प पत्र भर कर अमृत कलश मे डाले।

सवत्सरी के दिन आमेट मे बैंगलोर की श्रीमती प्यारी बाई बोहरा का स्वर्गवास हो गया। उनके सम्बन्ध मे आचार्यवर ने कहा—'प्यारी बाई का ६४ प्रहरी पौषध मे स्वर्गवास हो गया। अठाई की तपस्या के दौरान उनके शारीरिक गडबड हो गई, पर उसने हिम्मत का परिचय दिया। वह साधु-साध्वियो की अच्छी सेवा करती थी।'

बबई के युवा श्रावक तथा रक्षा मत्रालय मे वरिष्ठ अधिकारी श्री नरेन्द्र मोरे का हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। बबई के जाने-माने व

तत्वज्ञ श्रावक श्री मगनभाई वकील वाला के लघु भ्राता श्री हीरा भाई की पुत्री बसता बहिन के वे पति थे। नरेन्द्र भाई जन्मना जैन नही, कर्मणा जैन थे। तेरापथ की प्रवृत्तियो मे अच्छा रस लेते थे। जहा भी रहे कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया। रक्षामत्रालय ने भी उनकी कर्तव्यनिष्ठा का जिक्र किया है। तेरापथ समाज को ऐसे युवको पर गर्व है।

अमृत-महोत्सव : द्वितीय चरण

एक महान् व्यक्तित्व का अभिनन्दन

आचार्यश्री तुलसी विश्व क्षितिज पर एक बहुचर्चित जैनाचार्य है। वे तेरापथ के नवम आचार्य है। उन्होने न केवल तेरापथ धर्म सघ को ही अवदान दिया है, अपितु सपूर्ण मानव जाति का पथ प्रशस्त किया है। उनके ऊजस्वल एव कर्मशील नेतृत्व से पूरा मानव समाज लाभान्वित और प्रभावित हुआ है। जीवन के एकोत्तर बसन्त पार करने के बावजूद आचार्यश्री मे आज भी वही चुम्बकीय आकर्षण एव स्फूर्ति दृष्टिगोचर हो रही है। समग्र मानव-जाति को प्रदत्त अवदानो, उपकारो को यत्किंचित् प्रस्तुति देने हेतु "अमृत-महोत्सव" के रूप मे समायोजना करने का निर्णय लिया गया। उनके उत्तरा-धिकारी युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ के निर्देशन मे यह भी तय हुआ कि समारोह केवल स्तुति व भक्ति अभिव्यक्ति का ही साधन न बने, जन-जन मे कर्तृत्व का जागरण एव उनके भविष्य को सवारने वाला हो। समारोह के चार चरणो की शृखला मे दूसरा चरण आमेट मे २२, २३ व २४ सितबर को मनाया गया।

२२ सितबर/पौ फटने के साथ ही प्रभात जागरिका निकाली गई, जिसमे हजारो-हजारो स्त्री-पुरुष, युवा सभी अपने-अपने गणवेश मे आदर्श वाक्य लिखी तख्तिया लिये हुए एव सयत नारे लगाते हुए अनुशासन बद्ध ढग से चल रहे थे।

दोपहर ठीक १२ बजे सुनील बाल निकेतन का विशाल मैदान। दूर-दूर तक सामियानो के नीचे बैठा विशाल जन समुदाय। आठ फुट ऊचे मच पर बडे तख्त पर विराजमान अमृत पुरुष आचार्यश्री तुलसी, उनके बाई ओर छोटे तख्त पर युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ, धवल आभा बिखेरता हुआ उनका शिष्य-शिष्या परिवार। मच के एक तरफ गणमान्य नागरिक।

अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति द्वारा आयोजित इस समारोह मे चालीस हजार से भी अधिक विशाल जननेदिनी की उपस्थिति मे युवाचार्यश्री

ने जनाभिननन्दन कार्यक्रम का उद्घाटन किया। मुमुक्षु बहिनो की स्वागत-अचना से समारोह का प्रारम्भ हुआ। महन्त श्री जयरामदास ने आचार्यवर का अभिनन्दन किया। मुनि श्री सुमेरमल "सुदशन", मेवाड स्तरीय महिला मडल, लोक कवि श्री अब्दुल जब्बार ने गीत-अचना की। अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के मत्री श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट ने आचार्यवर के पचास वर्षो की क्रातिकारी कहानी का सक्षिप्त बखान किया। युवाचायश्री के नेतृत्व मे साधु साध्वियो द्वारा "भैक्षव शासन के शृगार" बधाई गीत प्रस्तुत किया गया।

श्रद्धाभिवन्दन के क्रम मे राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष श्री हीरालाल देवपुरा ने कहा—"आज हम लोग अमृत-महोत्सव मनाने एव आचार्यश्री को अपना अभिनन्दन समर्पित करने के लिए एकत्र हुए हे। हमारा सौभाग्य हे कि आपने यह अवसर मेवाड को प्रदान किया। आप हमारा युगो-युगो तक मार्ग-दर्शन करते रहे, यही मगल भावना हे।" सर्वोदयी कार्यकर्त्री सुश्री निर्मला देशपाण्डे ने कहा—"हमारा अहोभाग्य हे कि हमे आचायश्री का सान्निध्य मिला है। अहिसा के विकास के लिए हम अपरिग्रह के सूत्र को अपनाए यह आवश्यक है।"

केन्द्रीय विज्ञान, तकनीकी, कार्मिक एव प्रशासनिक सुधार राज्य मत्री श्री शिवराज पाटिल ने कहा—"आचार्य तुलसी के प्रति किसी एक वर्ग के व्यक्ति नही, वरन् समस्त मानव समाज नतमस्तक है और आदर की भावना लिये हुए ह। इसका कारण है आपका उदार एव मानवता वादी दृष्टिकोण।" अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष श्री शुभकरण दसाणी ने कहा—"पचास वर्षो से एक छत्र नेतृत्व करना तेरापथ के इतिहास मे प्रथम घटना है। आपने तेरापथ सघ एव जैन धर्म को जो दिशा दी है, वह इतिहास की अमूल्य थाती हे।"

गुजरात के पूर्व मुख्यमत्री श्री बाबूभाई पटेल ने कहा—"न मैं जैन हू, न ही तेरापथी। अमृत-महोत्सव पर मै आचाय तुलसी जी को प्रणाम करने आया हू क्योकि मै आपका भक्त हू। और वह इसलिए हू कि आचायश्री ने जैन धर्म को जन धर्म के रूप मे प्रस्तुति दी है।" जैन दशन के मर्मज्ञ विद्वान श्री दलसुखभाई मालवणिया ने अप्रमत्तता, सतत जागरूकता व बेजोड अनु-शासन को तेरापथ की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता बतलाई और आचायवर के अवदानो की सक्षिप्त चर्चा की। भारत जैन महामडल के महामत्री श्री चन्दनमल 'चाद' ने भी अपने विचारो की प्रस्तुति दी।

राजस्थान शिक्षक सघ के अध्यक्ष श्री बिशनसिंह शेखावत ने एक लाख सा5 हजार शिक्षको की ओर से आचार्यवर को अपनी अभिवदना प्रस्तुत करते हुए कहा—"आचार्य तुलसी ने देश मे चरित्र निर्माण की दिशा मे जो ठोस कार्य किया है, वह अभिनन्दनीय है। राजस्थान का शिक्षक समुदाय चरित्र निर्माण के इस महान् यज्ञ मे आपके साथ है।" श्री राजकुमार वरडिया ने राजस्थान विश्वविद्यालय छात्रसघ तथा श्री शेखावत ने राजस्थान शिक्षक मघ द्वारा पारित अणुव्रत प्रस्ताव पढकर सुनाया। छात्र सघ के प्रस्ताव मे उन्होने हिंसात्मक आन्दोलनो के वजाय अहिसात्मक आन्दोलन के जरिये अपने मतव्य को प्रकट करने का निर्णय लिया। प्रस्ताव २० सितम्बर को पारित किया गया। पूरा पत्र अविकल इस प्रकार है।

"लोकतत्र मे अपने हितो और अधिकारो के लिए सबको सघर्ष करने का अधिकार है। किन्तु वह सघर्ष अहिसक मार्ग से होना चाहिए।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी ने जहा अन्याय का प्रतिकार जरूरी बताया है, वहा शाति और अहिसा के मार्ग पर भी विशेप बल दिया है।

हमारा सगठन अहिसा के माग मे आस्था रखता है। आचाय श्री तुलसी के आचार्य पदारोहण के ५० वर्ष के उपलक्ष मे आयोजित अमृत-महोत्सव के अवसर पर हमारा सगठन यह सकल्प प्रकट करता है कि यदि कोई भी समस्या हमारे सामने होगी, तो शान्ति और अहिसा के मार्ग से हम उसका समाधान करेगे, हिंसा और तोडफोडमूलक प्रवृत्तियो से दूर रहेगे।

हस्ताक्षर—सुभाप स्वामी चन्द्रशेखर खटेटा
महासचिव उपाध्यक्ष

मुनि सुमेरमल "लाडनू" के सयोजकत्व मे साहित्य-समर्पण एव अन्य भेट का क्रम चला। भेट मे हेदराबाद सघ द्वारा कलात्मक कल्प-वृक्ष, श्री सुभाप कच्छारा द्वारा विशेप निर्मित प्लेट जिसमे आचार्यवर के महत्त्वपूर्ण अवदानो की चर्चा थी, श्री भवरलाल डागलिया द्वारा अचना के श्लोको से अकित चादी का श्रीफल मुख्य थे। ववई, मगरूर, कर्नाटक आदि अनेक स्थानो से हजारो सकल्प पत्र अमृत-कलश मे समर्पित किए गए। वोरा-वड कन्यामण्डल ने अमृत-महोत्सव के उपलक्ष मे एक लाख पद्य कठस्थ किए।

युवाचार्यश्री ने तीस मिनट तक खडे रहकर आचार्यप्रवर का समस्त सघ की ओर से विनम्र अभिवन्दन किया। यह इस समारोह का सर्वाधिक

दर्शनीय एव ऐतिहासिक कार्यक्रम था। समूचे सघ की ओर से युवाचार्यश्री ने आचार्यवर को शाल ओढाई तथा अभिनन्दनपत्र समर्पित किया, जिसका चित्राकन साध्वीश्री विमलप्रज्ञा ने किया। साध्वी परिवार द्वारा निर्मित कलात्मक वस्तुए, पात्र, अमृत कलश, पीले कागज का हार, ओघा आदि आचार्यवर को अर्पित किए गए। इन कलात्मक वस्तुओ मे साध्वीश्री रामकुमारी "लाडनू" की कुशल अगुलियो का योग था। युवाचार्यश्री ने हस्तलिखित कविता सग्रह "पुरुषार्थ के पचास वर्ष" आचार्यवर को भेट की। डायरीनुमा इस कविता सग्रह की साज सज्जा मुनिश्री राजेन्द्रकुमार ने बडे ही मनोयोग पूर्वक की। भाव-विभोर होते हुए युवाचार्यश्री ने पीले कागज तथा 'नमीतिये' से निर्मित हार आचार्यश्री के गले मे अर्पित कर दिया।

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने उद्बोधन मे आचार्यश्री द्वारा प्रदत्त त्रिसूत्री अभियान अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान एव जीवन-विज्ञान की महत्त्वपूर्ण चर्चा की। उन्होने अपरिग्रह सिद्धान्त का उल्लेख करते हुए कहा—"अमृत महोत्सव के इस महान् अवसर पर आचार्यश्री ने एक ओर सूत्र दिया है—विसर्जन का, जो अपरिग्रह की दिशा मे मील का पत्थर है। व्यक्ति हिसा के लिए परिग्रह नही, परिग्रह के लिए हिसा करता है। समूची मानव जाति की चेतना को जागृत करने मे यह विसर्जन सूत्र बहुत मददगार साबित होगा। अपेक्षा है—अर्थ के प्रति ममत्व त्याग को हर व्यक्ति समझे और अपने जीवन मे उतारे।" युवाचार्य श्री के नेतृत्व मे समूचे सघ की ओर से "भैक्षव शासन के शृगार" बधाई गीत प्रस्तुत किया।*

आचार्यश्री तुलसी ने अमृत सदेश मे कहा—"आज विश्व की सबसे बडी आवश्यकता है—मैत्री। मैत्री के लिए विश्वास का वातावरण बनाया जाये। अणु-अस्त्रो की होड समाप्त की जाए। मनुष्य-मनुष्य के बीच मे वर्ण, जाति के आधार पर पडने वाली खाई को पाटी जाए। मै उस सवेरे की प्रतीक्षा मे हू जिस दिन भेदमुक्त मानवजाति मुक्त वातावरण मे जीने का आनन्द लेगी तभी अध्यात्म मे प्रगति सभव है।" आचार्यश्री ने अपरिग्रह, आज की शिक्षा पद्धति व धर्म और सप्रदाय की व्याख्या करते हुए वर्तमान की राष्ट्रीय समस्याओ के सदर्भ मे अपने बहुमूल्य विचार रखे। आचार्यश्री ने समग्र मानव जाति के प्रति मगलकामना करते हुए अध्यात्म रस लेने तथा जीवन की ज्वलन्त समस्याओ के समाधान मे योगभूत बनने का आह्वान किया।

* देखे परिशिष्ट—३।

आचार्यश्री ने अमृत-महोत्सव गीत का समुच्चारण किया† तथा अमृत महोत्सव का नवीन घोष दिया—"नया सवेरा आये, सोया मन जग जाए।" आचार्यश्री ने युवाचार्यश्री एव साध्वी प्रमुखाश्री को स्वय द्वारा निर्मित एव लिखित कुछ पद्य प्रदान किए। इस चातुर्मास मे आचार्यश्री ने गुरुकुलवासरत सभी साधु-साध्वियो के लिए उनके गुणो के अनुरूप पद्य बनाए है तथा समणियो के लिए भी पद्यो की रचना की हे।* आचार्यवर ने इस अवसर पर प्रेक्षा-गीत व जीवन-विज्ञान गीतो का भी सगान किया।•

"तुलसी जीवन दशन प्रदशनी" का आचायश्री के सान्निध्य मे सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार के हाथो उद्घाटन हुआ। आज के इस अर्चना समारोह मे प्रकृति ने भी अपने श्रद्धासुमन दस मिनट तक चढाये। हल्की वर्षा व तेज हवा से वातावरण सुरम्य हो उठा। कार्यक्रम का प्रभावी सयोजन डा० महेन्द्र कर्णावट ने किया।

२२ सितवर/द्वितीय कार्यक्रम/अमृत महोत्सव का रात्रिकालीन कार्यक्रम श्री जैन श्वे० तेरापन्थी महासभा के अध्यक्ष श्री विजयसिह सुराणा की अध्यक्षता मे हुआ। प्रारम्भ मुनिश्री विजय कुमार के सुमधुर गीत से हुआ। युवा-साधुओ ने ३० मिनट का 'आचाय तुलसी अतीत के झरोखे मे' नामक एक रोचक परिसवाद प्रस्तुत किया। श्रोताओ द्वारा प्रशसित तथा मुनिश्री मोहनलाल "आमेट" द्वारा निर्मित इस परिसवाद मे मुनिश्री श्रेयासकुमार, मुनिश्री अरविंद-कुमार, मुनिश्री धनजय कुमार, मुनिश्री प्रशान्तकुमार, मुनिश्री दिनेशकुमार, मुनिश्री जिनेश कुमार, मुनिश्री लाभरुचि तथा मुनिश्री लोकप्रकाश ने भाग लिया।

अर्चना के इन क्षणो मे अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री मोतीलाल एच० राका, श्री मागीलाल सेठिया, पुर वैरवा समाज की ओर से श्री देवी-लाल पचायत प्रधान खारची (मारवाड) ठाकुर चक्रवर्तीसिह, स्थानकवासी कान्फ्रेस के उपाध्यक्ष श्री हस्तीमल मुणोत, कविश्री माधव दरक, सुमधुर गायिका सुश्री सन्ध्या शर्मा, ससद सदस्य श्री रामचद्र विकल, कार्यक्रम अध्यक्ष श्री विजय सिह सुराणा ने अपनी भावनाए व्यक्त की। मुनिश्री श्रेयासकुमार, मुनिश्री दिनेशकुमार, मुनिश्री लाभरुचि, मुनिश्री लोकप्रकाश ने गीत प्रस्तुत

---

† दखे परिशिष्ट—४

* देखे परिशिष्ट—५।

• देखे परिशिष्ट—६।

किया।

नवभारत टाइम्स के उपसपादक श्री पारसदास जैन ने कहा—"आचार्यश्री ने तेरापथ और जैन धर्म के उन्नयन के लिए ही नही, वरन् समग्र मानव समाज के लिए कार्य किया है। अस्पृश्यता निवारण के लिए आपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।" दैनिक ट्रिब्यून" के सपादक श्री राधेश्याम शर्मा ने कहा—"आचार्य तुलसी सप्रदाय विशेष के आचार्य है, किन्तु आपके कायक्रम बहुत व्यापक है। आपके कायक्रम एक विचारधारा से घिरे हुए नही है। आप आधुनिक विचारो के पृष्ठ-पोपक है।"

आचार्यश्री व युवाचायश्री के महत्त्वपूण उद्बोधन हुए। श्री मानव मित्र (मानमलजी आचलिया—सरदारशहर) ने आचायवर से एक वप के लिए उपासक दीक्षा ग्रहण की। पिछले वर्ष जोधपुर मे चरमोत्सव के दिन उन्होने एक वष की उपासक दीक्षा स्वीकार की थी। पिछले वप तो उनके पैसे तक छूने का परित्याग था। वे साथ मे एकान्तर तप भी करते है।

२३ सितबर/तृतीय कार्यक्रम/मध्याह्न १२ १५ वजे अमृत महोत्सव कार्यक्रम के साथ अखिल भारतीय महिला मडल के ११ वे वार्पिक अधिवेशन के प्रारम्भ का कार्यक्रम भी था। साध्वी श्री मधुस्मिता के सुमधुर गीत से कार्यक्रम का प्रारभ हुआ। प्रारभिक औपचारिकताओ के वाद मडल की अध्यक्षा श्रीमती सज्जन देवी चौपडा ने अपने विचार रखे। साध्वी समाज ने एक सुमधुर सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। श्रीमती सरला रायजादा के स्वर मे महिला समाज ने आचार्यश्री की गीत-अर्चना की। मुनिश्री किशनलाल ने आचार्यवर का काव्यमय अभिनन्दन किया। मडल की मत्री श्रीमती निर्मला दूगड ने वार्पिक रिपोर्ट पेश की।

राजस्थान के पूव वित्तमत्री श्री चन्दनमल वैद ने कहा—"आचार्य श्री के सतत सान्निध्य एव मार्ग-दर्शन से समाज मे बहुमुखी परिवतन आया है। देश मे व्याप्त हिंसा को समाप्त करने के लिए आपने महत्त्वपूण भूमिका निभाई है।" जीवन-साहित्य के सपादक, गाधीवादी विचारक श्री यशपाल जैन ने कहा—"आचायश्री तुलसी ने मानवता की सेवा के लिए अपने जीवन को समर्पित किया है। मानव सच्चे अर्थो मे मानव बने, यही इनके जीवन का ध्येय है।"

सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार ने कहा—"तेरापथ समाज जो वेहद पिछडा माना जाता था और आज से चालीस वर्ष पूव मै सुनता था

आचार्यश्री ने अमृत-महोत्सव गीत का समुच्चारण किया† तथा अमृत महोत्सव का नवीन घोष दिया—"नया सवेरा आये, सोया मन जग जाए।" आचार्यश्री ने युवाचार्यश्री एव साध्वी प्रमुखाश्री को स्वय द्वारा निर्मित एव लिखित कुछ पद्य प्रदान किए। इस चातुर्मास मे आचार्यश्री ने गुरुकुलवासरत सभी साधु-साध्वियो के लिए उनके गुणो के अनुरूप पद्य बनाए है तथा समणियो के लिए भी पद्यो की रचना की है।* आचार्यवर ने इस अवसर पर प्रेक्षा-गीत व जीवन-विज्ञान गीतो का भी सगान किया।•

"तुलसी जीवन दर्शन प्रदर्शनी" का आचार्यश्री के सान्निध्य मे सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार के हाथो उद्घाटन हुआ। आज के इस अर्चना समारोह मे प्रकृति ने भी अपने श्रद्धासुमन दस मिनट तक चढाये। हल्की वर्षा व तेज हवा से वातावरण सुरम्य हो उठा। कार्यक्रम का प्रभावी सयोजन डा० महेन्द्र कर्णावट ने किया।

२२ सितबर/द्वितीय कार्यक्रम/अमृत महोत्सव का रात्रिकालीन कार्यक्रम श्री जैन श्वे० तेरापन्थी महासभा के अध्यक्ष श्री विजयसिह सुराणा की अध्यक्षता मे हुआ। प्रारम्भ मुनिश्री विजय कुमार के सुमधुर गीत से हुआ। युवा-साधुओ ने ३० मिनट का 'आचाय तुलसी अतीत के झरोखे में' नामक एक रोचक परिसवाद प्रस्तुत किया। श्रोताओ द्वारा प्रशसित तथा मुनिश्री मोहनलाल "आमेट" द्वारा निर्मित इस परिसवाद मे मुनिश्री श्रेयासकुमार, मुनिश्री अरविदकुमार, मुनिश्री धनजय कुमार, मुनिश्री प्रशान्तकुमार, मुनिश्री दिनेशकुमार, मुनिश्री जिनेश कुमार, मुनिश्री लाभरुचि तथा मुनिश्री लोकप्रकाश ने भाग लिया।

अर्चना के इन क्षणो मे अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री मोतीलाल एच० राका, श्री मागीलाल सेठिया, पुर वैरवा समाज की ओर से श्री देवीलाल पचायत प्रधान खारची (मारवाड) ठाकुर चक्रवर्तीसिह, स्थानकवासी कान्फ्रेम के उपाध्यक्ष श्री हस्तीमल मुणोत, कविश्री माधव दरक, सुमधुर गायिका सुश्री सन्ध्या शर्मा, ससद सदस्य श्री रामचद्र विकल, कायक्रम अध्यक्ष श्री विजय सिंह सुराणा ने अपनी भावनाए व्यक्त की। मुनिश्री श्रेयासकुमार, मुनिश्री दिनेशकुमार, मुनिश्री लाभरुचि, मुनिश्री लोकप्रकाश ने गीत प्रस्तुत

---

† देखे परिशिष्ट—४

* देखे परिशिष्ट—५।

• देखे परिशिष्ट—६।

किया।

नवभारत टाइम्स के उपसपादक श्री पारसदास जैन ने कहा—"आचार्यश्री ने तेरापथ और जैन धर्म के उन्नयन के लिए ही नही, वरन् समग्र मानव समाज के लिए कार्य किया है। अस्पृश्यता निवारण के लिए आपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।" दैनिक ट्रिब्यून" के सपादक श्री राधेश्याम शर्मा ने कहा—"आचार्य तुलसी सम्प्रदाय विशेप के आचाय है, किन्तु आपके कायक्रम बहुत व्यापक है। आपके कार्यक्रम एक विचारधारा से घिरे हुए नही है। आप आधुनिक विचारो के पृष्ठ-पोपक है।"

आचायश्री व युवाचायश्री के महत्त्वपूण उद्‌बोधन हुए। श्री मानव मित्र (मानमलजी आचलिया—सरदारशहर) ने आचायवर से एक वप के लिए उपासक दीक्षा ग्रहण की। पिछले वर्ष जोधपुर मे चरमोत्सव के दिन उन्होने एक वर्ष की उपासक दीक्षा स्वीकार की थी। पिछले वर्प तो उनके पैसे तक छूने का परित्याग था। वे साथ मे एकान्तर तप भी करते है।

२३ सितवर/तृतीय कार्यक्रम/मध्याह्न १२ १५ बजे अमृत महोत्सव कायक्रम के साथ अखिल भारतीय महिला मडल के ११ वे वार्पिक अधिवेशन के प्रारम्भ का कार्यक्रम भी था। साध्वी श्री मधुस्मिता के सुमधुर गीत से कायक्रम का प्रारभ हुआ। प्रारभिक औपचारिकताओ के बाद मडल की अध्यक्षा श्रीमती सज्जन देवी चोपडा ने अपने विचार रखे। साध्वी समाज ने एक सुमधुर सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। श्रीमती सरला रायजादा के स्वर मे महिला समाज ने आचार्यश्री की गीत-अर्चना की। मुनिश्री किशनलाल ने आचार्यवर का काव्यमय अभिनन्दन किया। मडल की मत्री श्रीमती निर्मला दूगड ने वार्पिक रिपोर्ट पेश की।

राजस्थान के पूव वित्तमत्री श्री चन्दनमल वैद ने कहा—"आचार्य श्री के सतत सान्निध्य एव मार्ग-दर्शन से समाज मे बहुमुखी परिवतन आया है। देश मे व्याप्त हिसा को समाप्त करने के लिए आपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।" जीवन-साहित्य के सपादक, गाधीवादी विचारक श्री यशपाल जैन ने कहा—"आचार्यश्री तुलसी ने मानवता की सेवा के लिए अपने जीवन को समर्पित किया है। मानव सच्चे अर्थो मे मानव बने, यही इनके जीवन का ध्येय है।"

सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार ने कहा—"तेरापथ समाज जो बेहद पिछडा माना जाता था और आज से चालीस वर्प पूव मे सुनता था

कि कोई एक समाज है जिसके बारे मे जो कुछ कहा जाता था वह मै आज नही कह सकता। आज वही तेरापथ समाज जैनो मे ही नही, समस्त भारत मे इस वक्त सबसे अधिक प्रगतिशील, मर्यादित और नैतिक समाज माना जाता है। यह सब आचार्यश्री के द्वारा सभव हुआ है।" उन्होने साध्वी-समाज की प्रगति पर आश्चर्य व्यक्त किया। साप्ताहिक हिन्दुस्तान की सपादिका श्रीमती शीला झुनझुनवाला ने कहा—"आचार्य तुलसीजी ने अधविश्वासो और रूढियो मे भटकी नारी को नई चेतना प्रदान की है। आज महिलाओ का शैक्षणिक स्तर बढ रहा है, पर आवश्यकता है इसके साथ सस्कारो का निर्माण हो।"

कार्यक्रम का सयोजन मेवाड प्रान्तीय महिला मडल की अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा कोठारी ने किया। इस अधिवेशन मे श्रीमती निर्मला जैन (जगराओ-पजाब) को "नारी रत्न" के अलकरण से सम्मानित किया। सूरत के विशिष्ट श्रावक श्री कुसुम भाई जवेरी की सेवाओ का स्मरण करते हुए आचार्यवर ने उन्हे 'सघ-प्रभावक' के सबोधन से सबोधित किया। जयपुर-मोमासर के श्रावक श्री उत्तमचद सेठिया की माता श्रीमती मनोहरी देवी सेठिया को मरणोपरान्त 'श्राविका रत्न' के सम्मान मे विभूषित किया। इस अवसर पर आचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण वक्तव्य हुए।

२३ सितबर/चतुर्थ कार्यक्रम/रात्रि कायक्रम के अध्यक्ष अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री गिरीश भगवतप्रसाद तथा प्रमुख वक्ता जय तुलसी फाउण्डेशन के सयोजक श्री धरमचद चौपडा थे। विभिन्न सस्थाओ का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री धरमचद चौपडा, अणुव्रत कार्यकर्ता श्री सावित्री प्रसाद गौतम, अ० भा० ते० युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री पदमचद पटावरी, अणुव्रत विश्वभारती के श्री मोहनलाल जैन, मित्र परिषद् कलकत्ता के अध्यक्ष श्री मन्नालाल बरडिया ने आचार्य-अर्चना मे श्रद्धा सुमन चढाये। समारोह का सयोजन मुनि सुमेरमल "लाडनू" ने किया।

२४ सितम्बर/पचम व अतिम कार्यक्रम/मध्याह्न १२ ३० बजे समणी परिवार की अमृत-वन्दना से समारोह का प्रारम्भ हुआ। मुनिश्री किशनलाल, मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट', साध्वीश्री कनकश्री, समणी कुसुमप्रज्ञा द्वारा आचार्यप्रवर का भावभीना अभिवन्दन किया गया। देवगढ कन्यामडल द्वारा गीत अर्चना तथा युवा साधुओ द्वारा आचायप्रवर का 'ओ जीवन के निर्माता जीवन की लो सौगाते' गीत से समूह अभिवदना की। मुनिश्री उदितकुमार

एव मुनिश्री मुदित कुमार ने आचार्यवर के शासनकाल के ऐसे रोचक पचास कीर्तिमान प्रस्तुत किये, जो पूर्व आठ आचार्यों के शासनकाल मे नही हुए। पत्रकार श्री राजेन्द्रशकर भट्ट, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचन्द सेठिया, राज्यसभा सदस्य श्री भवरलाल पवार, श्री शोभासार जोशी, श्री सोहनलाल गाधी, डा० आर० भटनागर ने अपनी भावनाए व्यक्त की।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित एव डा० भटनागर तथा एस० एल० गाधी द्वारा सपादित अग्रेजी पुस्तक 'आचाय तुलसी समपण के पचास वर्ष' का विमोचन हुआ। श्री मोतीलाल राका व श्री खेमचद सेठिया द्वारा अखिल भारतीय अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति एव जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित नवीन साहित्य आचायवर को भेट किया। अहमदाबाद सूरत, पाली, बगडी, पचपदरा, श्रीडूगरगढ, लाडनू तथा मेवाड की ओर से आचायवर के आगामी चातुर्मास की प्रार्थना की गई। आमेट क्षेत्र के सत्तर ग्रामीण भाइयो ने मद्यपान न करने का सकल्प लिया। धम की व्यापक प्रस्तुति देते हुए युवाचार्यश्री ने सम्यक् दृष्टिकोण के निर्माण की प्रेरणा दी।

आचायश्री ने अपने उद्बोधन मे जनता के सामने तीन मागे प्रस्तुत की—

१ पचास अणुव्रती कार्यकर्ता मिले, जो स्वय अणुव्रती रहते हुए वष भर मे चार महीने अणुव्रत कार्यक्रम को व्यापक बनाने मे लगाये।
२ पचास ऐसी महिला कायकर्त्री हो, जो कही भी जाकर समय-समय पर काम करने मे सक्षम हो।
३ पचास समर्पित व्यक्ति सामने आए, जो वर्ष मे कम से कम चार महीने का समय समाज-सेवा मे लगाये।

आचार्यश्री ने इन तीन मागो के अनुरूप प्रयत्न करने का आह्वान किया। सयोजन के दायित्व का निर्वहन डा० महेन्द्र कर्णावट ने कुशलतापूर्वक किया।

तेरापथ धमसघ व समाज की निष्ठापूवक एव निष्काम सेवा करने वाले को २१००१ रुपये का 'श्रीमती मनोहरी देवी डागा समाज सेवा पुरस्कार' प्रारम्भ किया गया। सरदारशहर के वरिष्ठ श्रावक श्री रिद्धकरण नौरतनमल डागा द्वारा इस वष का यह पुरस्कार समाज के वरिष्ठ कायकर्ता श्री शुभकरण दसाणी को प्रदान किया गया।

अमृत-महोत्सव के ऐतिहासिक अवसर पर अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय

समिति द्वारा 'तुलसी जीवन दर्शन' प्रदर्शनी का वृहद् निर्माण किया गया। प्रदर्शनी मे आचार्य तुलसी के जीवन से सबधित तीन सौ से अधिक बडे चित्र एव एक सौ के लगभग चार्टस जिनमे आचार्यश्री के व्यक्तित्व एव कर्तृत्व को दर्शाया गया। आचार्य तुलसी साहित्य, प्रथम मर्यादा-महोत्सव ब्यावर के समाचारो की कटिंग, रेखा चित्र, अभिनन्दन पत्र एव दुर्लभ चित्र प्रदर्शनी के आकर्षण बिन्दु थे। इस प्रदर्शनी को मूर्त रूप देने वाले थे—अखिल भारतीय राष्ट्रीय समिति के सयुक्त मत्री श्री डा० महेन्द्र कर्णावट।

इस प्रकार अमृत-महोत्सव का त्रिदिवसीय कार्यक्रम सानन्द सपन्न हुआ।

निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन

अमृत-महोत्सव के उपलक्ष मे साधु-साध्वियो की निबध प्रतियोगिता आयोजित हुई। प्रतियोगिता का विषय था—आचार्यश्री का जीवन एव उनके महत्त्वपूर्ण अवदान। प्रतियोगिता मे १२ साधु तथा १४ साध्वियो ने भाग लिया। दो श्रेणियो मे विभक्त इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा है—

	प्रथम श्रेणी	**द्वितीय श्रेणी**
प्रथम	मुनिश्री राजेन्द्रकुमार	मुनिश्री प्रशान्त कुमार
द्वितीय	मुनिश्री धनञ्जयकुमार	साध्वीश्री अमृतप्रभा
	साध्वीश्री निर्वाणश्री	
तृतीय	साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञा	साध्वीश्री अर्हत्प्रभा
	साध्वीश्री विमलप्रज्ञा	मुनिश्री अरविन्दकुमार

भिक्षु चरमोत्सव

२६ सितम्बर / अमृत समवसरण मे आचार्यश्री के सान्निध्य मे मध्यान्ह एक बजे १८६वा भिक्षु चरमोत्सव का कार्यक्रम आयोजित हुआ। तेरापन्थ के आद्य प्रवतक आचार्य भिक्षु को भावपूर्ण श्रद्धाजलि देने वाले थे—मुनि सुमेरमल 'लाडनू', मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट', साध्वीश्री उज्ज्वलरेखा, साध्वीश्री अर्हत् प्रभा, समणी मधुरप्रज्ञा, श्री सोहनराज कोठारी। साध्वीश्री चदनबाला आदि साध्विया, साध्वीश्री मधुस्मिता तथा पारमार्थिक शिक्षण सस्था की मुमुक्षु बहिनो ने सुमधुर गीतिकाओ के द्वारा अपने आराध्य की अर्चना की। साध्वीश्री मनीषाश्री ने कविता प्रस्तुत की।

साध्वी प्रमुखाश्री ने आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी अभ्यर्थना समर्पित करते हुए उनके जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला। युवाचार्यश्री ने स्वामीजी को सत्य-पथ का महान् अन्वेषक बताया। आचार्यश्री ने आचार्य भिक्षु के गुणो की एक प्रभावशाली गीतिका समुच्चारित की।* आचार्यश्री ने कहा—'स्वामीजी ने न केवल विचार के क्षेत्र मे क्राति की है, अपितु आचार के क्षेत्र मे भी की है। उसी का परिणाम है कि आज तेरापथ धर्मसघ का व्यवस्था पक्ष उतना ही मजबूत है जितना सैद्धान्तिक पक्ष'। आचार्यश्री ने आचार्य भिक्षु के जीवन-प्रसगो का रोचक वर्णन किया।

रात्रि मे चरमोत्सव का अवशिष्ट कार्यक्रम चला, जिसमे श्रद्धालु जनो ने गीतिका, मुक्तक एव अपने विचारो से अपने आराध्य की अभ्यर्थना की।

स्वामीजी की समाधि पर समाधिमरण

पूना निवासी स्वर्गीय श्री प्रेमराज मरलेचा के सुपुत्र श्री शातिलाल मरलेचा का हृदयगति रुक जाने से उपवास मे सिरियारी मे निधन हो गया। आचार्यवर ने उनके बारे मे कहा—'भाई शान्तिलाल आचार्य भिक्षु के साथ अपना इतिहास जोडकर युग-युग के लिए अपना स्मृति चिह्न अकित कर गया। स्वामीजी का जन्म त्रयोदशी का। शान्ति का जन्म भी त्रयोदशी का। स्वामीजी की जन्म स्थली कटालिया। शान्ति की जन्म स्थली भी कटालिया। स्वामीजी का परिनिर्वाण भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी, सिरियारी। शान्ति की भी वह त्रयोदशी, वही सिरियारी। स्वामीजी के चरमोत्सव के माहौल के बीच। इस घटना को मै इतिहास की विरल घटना मानता हू। शान्तिलाल शासन का भक्त श्रावक था। गुरु के प्रति उसमे अटूट श्रद्धा थी। उसके परिवार ने विशेषकर उसकी माता एव पत्नी ने इस अवसर पर जिस दृढता का परिचय दिया है, सचमुच मे वह श्लाघनीय है।

नवाह्निक प्रेक्षा-प्रयोग

यह वर्ष अमृत-महोत्सव का वर्ष है। इस वर्ष कुछ नूतन काय, नूतन प्रयोग प्रारम्भ होने है। चातुर्मास के प्रारभ मे आचार्यवर ने अपनी इच्छा जाहिर की कि गृहस्थो के लिए इतने शिविर आयोजित होते है। क्यो नही साधु-साध्वियो के लिए भी ऐसा शिविर लगे, जिससे उन्हे प्रेक्षाध्यान का सैद्धान्तिक एव प्रायोगिक स्वरूप समझाया जा सके। आचार्यवर एक प्रयोग-

* देखे परिशिष्ट—७।

धर्मा व्यक्तित्व है न जाने उन्होने अपने जीवन मे कितने प्रयोग किए है। उन्ही प्रयोगो की शृखला मे यह 'नवान्हिक प्रेक्षा-प्रयोग' था। अमृत-महोत्सव के द्वितीय-चरण की विराट् समायोजना के वाद ३० सितवर से ८ अक्टूवर का यह शिविर आयोजित हुआ।

३० सितम्बर/प्रात ८ ३० बजे आचार्यवर के सान्निध्य मे व युवाचायश्री के निदेशन मे उपसपदा ग्रहण के साथ नवाह्निक प्रेक्षा-प्रयोग प्रारभ हुआ। उपमपदा को विवेचित करते हुए युवाचार्यश्री ने शिविर मे करणीय कार्यो का दिशा-दर्शन दिया। इस तरह के पहले प्रयोग मे आचार्यवर, युवाचायवर सहित सभी साधु और साध्वी प्रमुखाश्री आदि प्राय सभी साध्विया सम्मिलित हुई। इस प्रयोग के दौरान साधु-साध्वियो का अधिकाश समय विभिन्न प्रयोगो मे बीता। इस अवधि मे गृहस्थो से सम्पर्क नही जैसा रहा।

प्रात ४ ३० बजे से रात्रि ९ ३० बजे तक के समय मे ध्यान, जप, मोन, स्वाध्याय, कायोत्सर्ग आदि उपक्रमो को कराने वाला यह एक अनुठा प्रयोग था।

प्रात आचार्यवर साधु-परिवार के साथ योगासन कराते। उस समय का दृश्य वहुत आकर्षक होता था। नवपदी जप का प्रयोग भी हुआ। नमस्कार महामत्र के पाच पद तथा एसो पच णमुक्कारो के चार पद, इस प्रकार नौ पदो का उच्चारण करते हुए नौ रगो के साथ नौ केन्द्रो पर सामूहिक जप का प्रयोग करवाया गया।

मध्याह्न १ ३० से ३ ३० तक सामूहिक सगोष्ठी का आयोजन हुआ करता था। पृथक्-पृथक् विपयो पर चर्चा चलने के साथ जिज्ञासा समाधान का क्रम भी चला। इस सगोष्ठी मे आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुए। आहार-विवेक, शरीर-विज्ञान, श्वास-प्रेक्षा, चैतन्य-केन्द्र-प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा आदि विभिन्न विपयो पर युवाचार्यश्री के मार्मिक प्रवचन हुए।

सगोष्ठी मे कैसे चलना, कैसे प्रमाजन करना, कैसे सफाई करना आदि छोटी-छोटी वातो का आचार्यवर ने स्वय सक्रिय प्रशिक्षण दिया।

इस प्रयोगकाल मे प्रतिदिन दो अतरग गोष्ठियो का आयोजन हुआ। उन गोष्ठियो मे साधना, शिक्षा, साहित्य, मर्यादा, व्यवस्था आदि अनेक विपयो पर चर्चा चली। आचायश्री, युवाचार्यश्री की सन्निधि मे कुछ चुने हुए साधु-साध्विया उन गोष्ठियो मे सम्मिलित हुए।

इस प्रेक्षा-प्रयोग के दौरान जनता के लिए आचार्यप्रवर का सान्निध्य निर्धारित समय पर ही उपलब्ध होता। तीन समय निश्चित थे प्रात और साय वन्दना व प्रतिक्रमण तथा प्रवचन के समय। इस प्रयोग मे आचायवर का चरण स्पर्श साधु-समाज व श्रावक-समाज दोनो के लिए निषिद्ध था।

शिक्षामत्री का आगमन

६ अक्टूवर/राजस्थान के शिक्षामत्री श्री रामपाल उपाध्याय आज आचार्यवर के दर्शनार्थ आमेट पहुचे। प्रात प्रवचन के वक्त अपने विचारो की प्रस्तुति करते हुए शिक्षामत्री ने कहा—'मै ऑपरेशन कराने विदेश गया, तव आपके दर्शन करके गया था और अब भारत आते ही आपके श्रीचरणो मे पहुच गया। मैंने इस यात्रा मे कई जगहो पर जीवन-विज्ञान की चर्चा की। मुझे ऐसा लगता है कि शिक्षा जगत् मे व्याप्त विसगतियो को दूर करने मे जीवन-विज्ञान परियोजना बहुत महत्त्वपूण है।' शिक्षामत्री ने रूढि उन्मूलन तथा पजाब समस्या के सन्दभ मे आचार्यवर की भूमिका पर अपनी ओर से प्रशस्तिपूर्वक अभ्यर्थना की।

युवाचार्यश्री ने समस्त समस्याओ का समाधान भौतिक ससाधनो से करने की प्रवृत्ति को मिथ्याधारणा बतलाया। इसके लिए उन्होंने जीवन-विज्ञान व प्रेक्षाध्यान को उत्तम प्रक्रिया बताया। आचार्यश्री ने नई पीढी के निर्माण मे इन प्रयोगो को व्यापक प्रभावशील माना।

ज्ञानशाला की बदौलत

कर्नाटक की राजधानी, फूलो की नगरी बैगलूर मे पिछले कई वर्षो से नियमित ज्ञानशाला चल रही है। इसके मुख्य सयोजक हे श्री सोहनलाल कटारिया। इस ज्ञानशाला मे सौ-सौ, दो-दो सौ, कभी-कभी चार सौ लडके-लडकिया शामिल होते है और धार्मिक ज्ञान प्राप्त करते हे। इस ज्ञानशाला से सैकडो विद्यार्थी ऐसे निकले हे जिनको पच्चीस बोल प्रतिक्रमण, भक्तामर आदि कठस्थ है। समाज सहयोग, अभिभावको की रुचि, लडके-लडकियो की लगन, कायकर्ताओ की कर्मठता का ही यह सुपरिणाम है कि बैगलूर तेरापथ ज्ञानशाला व्यवस्थित चल रही हे। अमृत-महोत्सव के सदर्भ मे श्री सोहनलाल कटारिया के नेतृत्व मे कई कायकर्ता व ४० लडके-लडकिया एक अक्टूबर को आमेट पहुचे। यहा वे पाच दिन ठहरे। इन दिनो आचार्यवर साधु-साध्वियो के साथ नवाह्निक प्रेक्षा-प्रयोग के तहत एकान्तवास कर रहे थे, उसके बाव-

जूद आचार्यवर प्रतिदिन मध्याह्न मे आधा घटा उनको समय देते। प्रात प्रवचन व रात्रि मे लडके-लडकियो ने सुमधुर गीतिका, लयबद्ध कव्वाली आदि का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, साथ ही साथ सामूहिक प्रतिक्रमण किया। उन्होने कुछ सास्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये।

शोक विमोचन

इन दिनो शोक विमोचन हेतु कुछ परिवार दर्शनार्थ आमेट पहुचे। दिवगत व्यक्तियो का परिचय इस है—

- श्री सतोषचद सेठिया (बीदासर) वे पिछले कुछ अर्से से अस्वस्थ थे। आचार्यवर ने उनके बारे मे कहा—'बीदासर का सेठिया परिवार श्रद्धानिष्ठ परिवार है। सतोषचदजी एक सघनिष्ठ, व भक्त श्रावक थे। पैंतीस वष की छोटी अवस्था मे ही उन्होने ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर लिया। तेरह वर्ष की किशोर वय से वे चतुर्दशी का उपवास करते थे।'
- श्री मूलचद शामसुखा (गगाशहर) का बगाईगाव (असम) मे हृदय-गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। वे एक सघनिष्ठ श्रावक थे मुनिश्री श्रेयासकुमार, मुनिश्री अजितकुमार एव साध्वी अनुशासनाश्री के वे ससारपक्षीय पिता थे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रूपादेवी की श्रद्धा उल्लेखनीय है। बच्चो को सस्कार देने वे मे बेजोड है।
- श्रीमती तिलोकचद बोरड (लाडनू) का धम जागरण करते स्वगवास हो गया। वह एक श्रद्धालु श्राविका थी। गुरु-उपासना मे उन्हे अधिक आनन्द की अनुभूति होती थी। उन्होने अपने जीवन मे रूढि को प्रश्रय नही दिया।
- श्री राणमल बूरड (बायतू) का ससार पक्षीय पुत्री साध्वीश्री राकेशकुमारी की सेवा मे सरदारपुरा (जोधपुर) मे निधन हो गया आचार्यवर के शब्दो मे 'राणमलजी अपने क्षेत्र के एक जिम्मेदार श्रावक थे। बायतू मे उन्हे शय्यातर होने का लाभ भी प्राय मिलता रहा है। वे उस क्षेत्र मे विचरण करने वाले साधु-साध्वियो की अच्छी सेवा करते थे।'
- श्रीमती मोहनदेवी सेठिया (चाडवास) का १० दिन के अनशन मे स्वर्गवास हो गया। वह साध्वीश्री विवेकश्री की ससार पक्षीय दादी थी।

० श्री ताराचद सेठिया (शार्दूलपुर) की माताजी का गौहाटी मे १७ दिनो के चौविहार अनशन मे स्वर्गवास हो गया। श्री सेठिया की माताजी ने निर्मल भावो व मजबूती से इतना लबा व महत्त्वपूर्ण अनशन कर सघ की उल्लेखनीय प्रभावना की।

० श्रीमती भूरादेवी जैन (टोहाणा) प्रसिद्ध श्रावक लाला रणजीतसिंह की धर्म पत्नी थी। उनके निधन पर उनके पुत्र श्री लाजपतराय जैन के नेतृत्व मे पूरे परिवार ने दर्शन किये। आचार्यवर ने श्रीमती भूरादेवी को मरणोपरान्त 'दृढधर्मिणी' के रूप मे सबोधित करते हुए कहा—'चौरासी वर्षीया भूरादेवी गुरुदर्शन के नाम पर हर वक्त तैयार रहती थी। वह अपने परिवार को एक ही शिक्षा देती थी कि धर्म को कभी मत भूलना। यही वजह है कि उनका पूरा परिवार संस्कारी है। लगभग ७० वर्षों तक टोहाना मे उनके घर चातुर्मास हुए है।'

० युवा कार्यकर्ता श्री करजनकुमार जैन (दिल्ली) की माताजी एक श्रद्धालु श्राविका थी। दिल्ली मे साधु-साध्वियो की अच्छी सेवा करती थी। वह एक सस्कारी माता थी।

० वाव के सिंघवी परिवार मे एक मास की अवधि मे तीन व्यक्तियो का हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। तीनो व्यक्ति थे—श्री बाघजी भाई, केशवभाई, एव नरपत भाई। केशव भाई और नरपत भाई दोनो सगे भाई थे। बाघजी उनके चाचा थे। उनके पारिवारिक-जन आचार्यश्री की पावन सन्निधि मे पहुचे। आचार्यवर ने सिंघवी परिवार को अपने सबोधन मे कहा—'वाव श्रद्धा का अच्छा क्षेत्र है। तीन सदस्यो के चले जाने पर भी परिवार के लोगो ने जिस दृढता का परिचय दिया है, वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है।'

० श्रीमती मक्खूदेवी लूणिया (चाडवास) एक दृढ सकल्पी श्राविका थी। वह धर्म सघ के प्रति आस्थाशील थी। उसने परिवार को अच्छे सस्कार दिये।

१० अक्टूबर/रात्रि मे 'क्या आप सुनना चाहते है?' विषय पर युवाचार्यश्री का मार्मिक प्रवचन हुआ। विषय की भूमिका पर मुनिश्री किशनलाल ने प्रकाश डाला।

२१ अक्टूबर/दस दिवसीय चालीसवे प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन

समारोह आयोजित हुआ। मगलाचरण के रूप मे कार्यक्रम का प्रारभ शिविरार्थिनी बहिनो द्वारा प्रेक्षा-सगान से हुआ। मुनिश्री किशनलाल ने प्रेक्षा-ध्यान की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री के इस अवसर पर प्रेरक उद्बोधन हुए। शिविरार्थियो ने अपने प्रेरणादायी मस्मरण सुनाये। कायक्रम का मयोजन श्री रसिक भाई मेहता ने किया।

अ० भा० अणुव्रत का ३४ वा वार्षिक अधिवेशन

२२ अक्टूबर/प्रात ९ बजे अखिल भारतीय अणुव्रत समिति का ३४वा वार्षिक अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। अणुव्रत गीत के द्वारा समणी वृन्द ने मगला-चरण प्रस्तुत किया। मुनि सुमेरमल 'लाडनू ने कायक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। अमृत-महोत्सव वष के अन्तर्गत आयोजित इस अधिवेशन की एक विशेषता यह थी कि इसमे देश के जाने-माने कुछ शिक्षाविद् विशेष रूप से आमन्त्रित थे। उनमे श्री ईश्वर भाई पटेल, श्री यशवत भाई शुक्ल, श्री चिनु-भाई नायक, डा० रामजी सिंह, डा० दयानद भागव आदि प्रमुख थे। अ० भा० अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री गिरीश भाई ने समागत अतिथियो का स्वागत किया। मत्री श्री शुभकरण सुराणा ने समिति का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

श्री ईश्वर भाई ने कहा—"जीवन का परिष्कृत करने वाला शिक्षण ही सही शिक्षा ह।" श्री दयानद भार्गव ने कहा—"साक्षर हाने वालो के लिए प्रज्ञा का जागरण व मस्कार परिष्कार होना बहुत जरूरी है। सत्सस्कारो के अभाव मे मस्कृत का 'साक्षर' शब्द उलटा होकर 'राक्षस' वन जाता है। बुद्धि और प्रज्ञा का समन्वय हो जाए, तो भारत विश्व का अग्रणी वन सकता ह।" श्री रामजीसिंह ने कहा—"आज हमारा देश भ्रष्टाचार से विनाश की ओर अग्रसर हो रहा हे। जिस देश मे मरस्वती की अधिक पूजा-वदना होती है उसी देश मे निरक्षरता हे। यह एक क्रूर व्यग्य ह। स्वतत्र भारत के पहले वप मे शिक्षा पर कुल आय का साढे मात प्रतिशत खर्च हुआ और आज ढाई प्रतिशत खच हो रहा ह। अव कैसे प्रगति हो शिक्षा के क्षेत्र मे। अणुव्रत आन्दोलन लोक प्रशिक्षण का एक उत्तम माध्यम ह। आचाय तुलसी जन चेतना को जगाने का महान् काय कर रहे ह।"

युवाचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे कहा—"अणुव्रत आन्दोलन स्वय मे एक विद्यापीठ है। इसकी शिक्षा सावधिक न होकर जीवन पयन्त होती है। शिक्षित व्यक्ति को ईमानदार होना आवश्यक ह, तभी वह समाज मे उपयोगी

बन सकता है ।" उन्होने समाज के लिए तीन अपेक्षाओ का निरूपण किया—श्रम, ईमानदारी व समन्वय वृत्ति । उन्होने कहा—"इस त्रिवेणी का प्रत्येक व्यक्ति मे अवतरण आवश्यक है । इन तीनो मे एक का अभाव भी जीवन को पगु बना देता है । इस त्रिवेणी के अवतरण मे जीवन-विज्ञान परियोजना सहायक सिद्ध हो रही है । इस शिक्षा-प्रणाली के द्वारा सकल्प शक्ति, सृजनात्मक शक्ति व भावनात्मक शक्ति के विकास का प्रयोग किया जा रहा है ।"

आचार्यवर ने अपने प्रवचन मे कहा—"अणुव्रत आन्दोलन पुरुषार्थ का प्रतीक है । उसके कतिपय निष्कर्ष है—धर्म किसी जाति, वर्ग व वर्ण की बपौती नही, जन-जन की सम्पत्ति है । धर्म परमार्थ का पथ प्रशस्त करता है । धर्म अधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाता है । इसलिए प्रत्येक आदमी अपने जीवन मे धर्म को अवतरित करे ।"

मध्यान्ह मे आचार्यवर के सान्निध्य मे कार्यकर्ताओ की गोष्ठी हुई । गोष्ठी के मुख्य उद्देश्य थे—अणुव्रत कार्यक्रम को गतिदेना, कार्यकर्ताओ की टीम तैयार करना, इस कार्य मे आनेवाली बाधाओ पर चिंतन करना आदि । इस गोष्ठी मे विभिन्न क्षेत्रो से समागत बीस कार्यकर्ताओ ने अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये । उन सुझावो का निष्कर्ष था—अणुव्रत कार्यक्रम मे तेरापथी लोगो को विशेष रूप से सहयोग करना चाहिए । अणुव्रत की भूमिका स्पष्ट हो, सक्रिय हो तथा इसके प्रचार-प्रसार का दायित्व नई पीढी को सौंपा जाना चाहिए । स्थान-स्थान पर कार्यकर्ता सक्रिय हो, अपना समय दे, तभी अणुव्रत कार्यक्रम को गति मिल सकती है । समय-समय पर कार्यकर्ताओ को प्रोत्साहित किया जाये । कार्यकर्ताओ को चरित्र-निष्ठ होना अत्यन्त अपेक्षित है ।

अन्त मे गोष्ठी को सबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा—"अणुव्रत-कार्यक्रम मानवता के साथ जुडा हुआ है । आज अनैतिकता से सभी दुखी है, उधर कार्यकर्ताओ की बहुत कमी है । इसको मैं अपनी कमी मान सकता हू क्योकि त्रुटि का स्वीकरण ही त्रुटि के परिष्कार का रास्ता है । अणुव्रत कार्यक्रम को गति देने के लिए आज ईमानदार कार्यकर्ताओ की महती अपेक्षा है ।"

२३ अक्टूबर/दूसरे दिन प्रात खुले अधिवेशन का प्रारभ मुनिश्री अरविन्द कुमार के मगलाचरण से हुआ । अधिवेशन के इस सत्र मे अणुव्रत-प्रवक्ता श्री देवेन्द्र कर्णावट, श्री चीनूभाई, श्री राधेश्याम, श्री यशवत भाई ने

समारोह आयोजित हुआ। मगलाचरण के रूप मे कार्यक्रम का प्रारभ शिविरार्थिनी बहिनो द्वारा प्रेक्षा-सगान से हुआ। मुनिश्री किशनलाल ने प्रेक्षा-ध्यान की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री के इस अवसर पर प्रेरक उद्बोधन हुए। शिविरार्थियो ने अपने प्रेरणादायी मस्मरण सुनाये। कार्यक्रम का सयोजन श्री रसिक भाई मेहता ने किया।

अ० भा० अणुव्रत का ३४ वा वार्षिक अधिवेशन

२२ अक्टूबर/प्रात ९ वजे अखिल भारतीय अणुव्रत समिति का ३४वा वार्षिक अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। अणुव्रत गीत के द्वारा समणी वृन्द ने मगला-चरण प्रस्तुत किया। मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। अमृत-महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत आयोजित इस अधिवेशन की एक विशेषता यह थी कि इसमे देश के जाने-माने कुछ शिक्षाविद् विशेष रूप से आमन्त्रित थे। उनमे श्री ईश्वर भाई पटेल, श्री यशवत भाई शुक्ल, श्री चिनु-भाई नायक, डा० रामजी सिह, डा० दयानद भार्गव आदि प्रमुख थे। अ० भा० अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री गिरीश भाई ने समागत अतिथियो का स्वागत किया। मन्त्री श्री शुभकरण सुराणा ने समिति का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

श्री ईश्वर भाई ने कहा—"जीवन को परिष्कृत करने वाला शिक्षण ही सही शिक्षा है।" श्री दयानद भार्गव ने कहा—"साक्षर होने वालो के लिए प्रज्ञा का जागरण व सस्कार परिष्कार होना बहुत जरूरी है। सत्सस्कारो के अभाव मे सस्कृत का 'साक्षर' शब्द उलटा होकर 'राक्षस' बन जाता है। बुद्धि और प्रज्ञा का समन्वय हो जाए, तो भारत विश्व का अग्रणी बन सकता है।" श्री रामजीसिंह ने कहा—"आज हमारा देश भ्रष्टाचार से विनाश की ओर अग्रसर हो रहा है। जिस देश मे सरस्वती की अधिक पूजा-वदना होती है उसी देश मे निरक्षरता है। यह एक क्रूर व्यग्य है। स्वतत्र भारत के पहले वर्ष मे शिक्षा पर कुल आय का साढे सात प्रतिशत खर्च हुआ और आज ढाई प्रतिशत खर्च हो रहा है। अब कैसे प्रगति हो शिक्षा के क्षेत्र मे! अणुव्रत आन्दोलन लोक प्रशिक्षण का एक उत्तम माध्यम है। आचार्य तुलसी जन चेतना को जगाने का महान् कार्य कर रहे है।"

युवाचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे कहा—"अणुव्रत आन्दोलन स्वय मे एक विद्यापीठ है। इसकी शिक्षा सावधिक न होकर जीवन पर्यन्त होती है। शिक्षित व्यक्ति को ईमानदार होना आवश्यक है, तभी वह समाज मे उपयोगी

बन सकता है।" उन्होने समाज के लिए तीन अपेक्षाओ का निरूपण किया—श्रम, ईमानदारी व समन्वय वृत्ति । उन्होंने कहा—"इस त्रिवेणी का प्रत्येक व्यक्ति मे अवतरण आवश्यक है। इन तीनो मे एक का अभाव भी जीवन को पगु बना देता है । इस त्रिवेणी के अवतरण मे जीवन-विज्ञान परियोजना सहायक सिद्ध हो रही हे । इस शिक्षा-प्रणाली के द्वारा सकल्प शक्ति, सृजनात्मक शक्ति व भावनात्मक शक्ति के विकास का प्रयोग किया जा रहा है।"

आचार्यवर ने अपने प्रवचन मे कहा—"अणुव्रत आन्दोलन पुरुषार्थ का प्रतीक है । उसके कतिपय निष्कर्ष ह—धर्म किसी जाति, वर्ग व वर्ण की बपौती नही, जन-जन की सम्पत्ति है । धर्म परमार्थ का पथ प्रशस्त करता है। धर्म अधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाता हे। इसलिए प्रत्येक आदमी अपने जीवन मे धर्म को अवतरित करे ।"

मध्यान्ह मे आचार्यवर के सान्निध्य मे कार्यकर्ताओ की गोष्ठी हुई । गोष्ठी के मुख्य उदेश्य थे—अणुव्रत कार्यक्रम को गतिदेना, कार्यकर्ताओ की टीम तैयार करना, इस कार्य मे आनेवाली बाधाओ पर चितन करना आदि। इस गोष्ठी मे विभिन्न क्षेत्रो से समागत बीस कार्यकर्ताओ ने अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये। उन सुझावो का निष्कर्ष था—अणुव्रत कार्यक्रम मे तेरापथी लोगो को विशेष रूप से सहयोग करना चाहिए । अणुव्रत की भूमिका स्पष्ट हो, सक्रिय हो तथा इसके प्रचार-प्रसार का दायित्व नई पीढी को सौंपा जाना चाहिए। स्थान-स्थान पर कार्यकर्ता सक्रिय हो, अपना समय दे, तभी अणुव्रत कार्यक्रम को गति मिल सकती है। समय-समय पर कार्यकर्ताओ को प्रोत्साहित किया जाये। कार्यकर्ताओ को चरित्र-निष्ठ होना अत्यन्त अपेक्षित है।

अत मे गोष्ठी को सबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा—"अणुव्रत-कार्यक्रम मानवता के साथ जुडा हुआ है। आज अनैतिकता से सभी दुखी है, उधर कार्यकर्ताओ की बहुत कमी है । इसको मैं अपनी कमी मान सकता हू क्योकि त्रुटि का स्वीकरण ही त्रुटि के परिष्कार का रास्ता हे। अणुव्रत कार्यक्रम को गति देने के लिए आज ईमानदार कार्यकर्ताओ की महती अपेक्षा हे।"

२३ अक्टूबर/दूसरे दिन प्रात खुले अधिवेशन का प्रारभ मुनिश्री अरविन्द कुमार के मगलाचरण से हुआ । अधिवेशन के इस सत्र मे अणुव्रत-प्रवक्ता श्री देवेन्द्र कर्णावट, श्री चीनूभाई, श्री राधेश्याम, श्री यशवत भाई ने

अपने उपयोगी विचारो से जनता को लाभान्वित किया । अ० भा० अणुव्रत समिति ने अमृत-कलश पदयात्रियो मे से श्री पूर्णचद बडाला तथा श्री रामनारायण चेचाणी को शाल ओढाकर सम्मानित किया । श्री चेचाणी ने अणुव्रत-ग्राम स्थापना मे प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओ को भी इस अवसर पर पुरस्कृत किया ।

महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री ने वतमान की सवसे वडी जरूरत चरित्र को वताते हुए कहा—"आचार्यश्री ने स्वतत्रता के साथ ही अणुव्रत आदोलन के माध्यम से यह कार्य प्रारभ किया है । भीतर के खोखलेपन को भरने के लिए अणुव्रत वहुत उपयोगी है ।" आचायश्री एव युवाचायश्री के भी महत्त्वपूण प्रासगिक उद्बोधन हुए ।

द्वि-दिवसीय अणुव्रत अधिवेशन की सबसे वडी विशेपता थी शिक्षा सगोष्ठी का आयोजन । प्रधानमत्री श्री राजीवगाधी की इस घोपणा से पूरे देश मे नई नीति पर खुली वहस चल रही है—शिक्षा नीति मे व्यापक फेर वदल किया जायेगा ।, जिसमे स्वतत्रता सग्राम तथा नैतिक मूल्यो को वल मिल सके "इस दृष्टि से देश के जाने-माने शिक्षा-शास्त्रियो ने परिसवाद मे "नई शिक्षा नीति" पर विचार मथन किया । वे शिक्षाशास्त्री थे—श्री ईश्वरभाई पटल, श्री यशवत शुक्ल, श्री चीनुभाई, नायक, डा० दयानद भार्गव डा० रामजी सिह । युवाचायश्री के सान्निध्य मे इस परिसवाद की तीन सगोष्ठिया हुई । अधिवेशन के अत मे इस सगोष्ठी द्वारा किये गये विचार सचय को श्री रामजीसिह ने प्रस्तुत किया । वह इस प्रकार है—

१ प्राक्कथन :

शिक्षा आज देश की ज्वलन्त समस्या है । इसका उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास करना है, फिर भी इसका मूल प्रयोजन मानव की अन्तर चेतना को जाग्रत करना है । शिक्षा के माध्यम से आज बुद्धि और मन को तो जगाया जा रहा है लेकिन हमारे अन्तर की चेतना जागृत नही होती और जव तक ऐसा नही होता, हमारी शिक्षा शिक्षा की चुनौतियो को उत्तर नही दे सकती, हमारी समस्याओ का समाधान भी नही कर सकती । वुद्धि के विकास के साथ प्रज्ञा का उदय और सस्कार-परिष्कार के साथ सम्यक् जीवन का निर्माण आवश्यक है । शारीरिक विकास और वौद्धिक विकास के द्वारा प्रामाणिकता और कर्त्तव्यनिष्ठा पैदा नही की जा सकती । यही नही हम अपने आवेगो और सवेगो पर नियत्रण नही कर सकते । बुद्धि से भापा का

परिष्कार, तर्क शक्ति की प्रखरता और उपादेय जानकारियो की उपलब्धि तो हो सकती है किन्तु नैतिकता का विकास एव चरित्र-निर्माण सभव नही है । जब तक भावना का विकास नही होगा, हमारे व्यक्तित्व मे उदारता, सहृदय्ता सहिष्णुता आदि के गुण भी पल्लवित नही होगे और सामाजिक सामजस्य की कल्पना भी दिवास्वप्न रहेगी । आचारण-शून्य शिक्षण कोरी बौद्धिकता है, उससे सद्‌गुण और सदाचार का विकास कोई अनिवार्य नही है ।

शिक्षा और समाज-व्यवस्था के बीच गहरा अनुबन्ध है । दुर्भाग्य से हमारी शिक्षा समाज-व्यवस्था से कटी हुई है। इसलिए इसकी प्रासगिकता दिनो-दिन क्षीण होती जा रही है । शिक्षा समाज-व्यवस्था के अनुरूप होकर ही प्रासगिक होती है । इसलिये न केवल व्यक्ति के निर्माण के लिए, बल्कि समाज-व्यवस्था को युगानुरूप ओर गतिशील बनाने के लिए शिक्षा अत्यन्त सशक्त उपकरण है । जीर्ण-शीण सामाजिक—सास्कृतिक मूल्यो के परिवर्तन तथा लोकतत्र, समाजवाद एव सर्व-धम समभाव एव अहिसा आदि के जीवन-मूल्यो के प्रति निष्ठा जागृत करना शिक्षा का मुख्य प्रश्न है । यदि हमारी शिक्षा व्यवस्था समाज मे धर्मान्धता, अन्धविश्वास, आर्थिक विषमता, हिसा और आतकवाद की चुनौतियो का उत्तर नही दे सकती तो वह अप्रासगिक है । वह ठीक है कि समाज मे बढती हुई हिसा और विघटन के अनेक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक कारण है, किंतु सबके मूल मे मुख्य रूप से अभाव है, जो सामान्यत श्रम निष्ठा की कमी से उत्पन्न होता है । दुर्भाग्य से हमारी शिक्षा पद्धति मे निकले बुद्धिजीवी श्रम से भी कतराते है और आचरण से भी । यदि उनकी बौद्धिकता और विशेषज्ञता मे श्रम-निष्ठा और चरित्र-निष्ठा जुड जाती, तो समाज का स्वास्थ्य बहुत कुछ ठीक हो जाता ।

२ नैतिक ह्रास और जीवन-विज्ञान के प्रयोगो की भूमिका

नैतिक और चारित्रिक शिक्षा पर विभिन्न शिक्षा आयोगो एव विशेषज्ञ समितियो ने समय-समय पर अपनी महत्त्वपूर्ण अनुशमाये दी है, किंतु उनके ठोस कार्यान्वियन का कभी गभीर प्रयास नही हुआ है । आज मूल्यो की इस सकटग्रस्त स्थिति को अत्यन्त खतरनाक माना जा रहा है और शिक्षा की प्रक्रिया को सुसगत और व्यवहार्य मूल्य—प्रणाली तथा तर्कसगत, वैज्ञानिक एव नैतिक दृष्टिकोण पर आधारित करने की आवश्यकता को महसूस किया

जा रहा है। यह एक शुभ लक्षण है।

मूल्यो के उत्तरोत्तर ह्रास को रोकने के लिये बौद्धिक पाठ्यक्रम मे भी बच्चे से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक यथायोग्य महापुरुषो की जीवनिया, महाकाव्यो से त्यागमय जीवन घटनाये, कला-साहित्य का ज्ञान, स्वातन्त्र्य सग्राम के इतिहास के साथ-साथ मानवीय सस्कृति के विकास की गाथा, धर्म के मूल तत्त्वो की जानकारी, विज्ञान और अध्यात्म का सामजस्य, तुलनात्मक धर्मदर्शन के अध्ययन आदि का समावेश अपेक्षित हे, किन्तु केवल बौद्धिकता एव विचारवादिता से भावना का विकास सभव नही। इसलिये हमे इसका अनुसधान करना होगा कि हम किस प्रकार शिक्षार्थियो मे नैतिकता एव चरित्र विकसित कर सके।

सौभाग्य से आचार्यश्री तुलसी के मार्गदर्शन मे उनके पट्टशिष्य युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने इस सदर्भ मे "जीवन-विज्ञान" की कल्पना और योजना रखी हे जो वैज्ञानिक एव तर्कसगत तो हे ही, अब प्रयोगसिद्ध भी हो चुकी हे। केवल सिद्धान्त बोध के द्वारा विद्यार्थी अपनी अस्मिता को पहचान सके और सामाजिक न्याय के प्रति समर्पित हो सके, यह कम सभव है। इसके लिये सिद्धान्त एव प्रयोग दोनो का समन्वय आवश्यक है। जीवन-विज्ञान मे अध्यात्म और विज्ञान, तत्वमीमासा और योग, मानविकी और भौतिकी, रसायनविज्ञान, मनोविज्ञान और समाजविज्ञान तथा सृष्टि सतुलनशास्त्र का समन्वय हे। सक्षेप मे जीवन-विज्ञान यह मानता है कि मस्तिष्क मे असीम शक्ति की जागृति तनाव और थकान के बिना की जा सकती हे। मस्तिष्क विद्या के अनुसार मस्तिष्क का बाया भाग तर्क, गणित, भाषा और भौतिक विचार के लिये उत्तरदायी है, उसका दाया भाग आध्यात्मिक जागृति, अन्त-र्प्रज्ञा, स्वप्न और कल्पना के लिये उत्तरदायी हे। अनुकपी नाडी तत्र की अति-सक्रियता से व्यक्ति आक्रामक, उद्धत एव अशान्त रहता हे, जबकि परानुकपी नाडी तत्र की अति सक्रियता से व्यक्ति डरपोक, दब्बू, हीनभावना से ग्रसित होता हे। यह स्नायविक असतुलन हे। जीवन-विज्ञान इन दोनो का सतुलन कर व्यक्ति को एक शात मानव एव स्वस्थ नागरिक बनाता हे। मनुष्य के अन्दर बुद्धि एव सवेग मे सघर्ष होता है। बुद्धि उचित अनुचित का भेद तो बता देती हे किंतु सवेग ही प्रबल होकर आचरण मे प्रवृत्त करता हे। इसलिये ज्ञान और आचरण की दूरी बनी रहती हैं। जीवन-विज्ञान का अभ्यास सवेग को नियत्रण मे रखने की पद्धति हे। उसी प्रकार सवेग निरन्तर

क्रियाशील रहते है जिससे शक्ति का बहुत अपव्यय होता है । अत सक्रियता से मस्तिष्क एव मेरु प्रणाली पर दबाव पडता है स्वचालित नाडी तत्र भी दबाव का अनुभव करता है, जीवन-विज्ञान सवेग का भी नियत्रण करता है । जीवन-विज्ञान के द्वारा चेतना प्रक्रिया को कम कर विव प्रक्रिया को बढाया जा सकता है ताकि मस्तिष्क पर दबाव न पडे। पीनियल ग्लैड की निष्क्रियता से नियत्रण की क्षमता और थाइमस ग्लैड की निष्क्रियता से आनन्द की अनुभूति मे कमी आ जाती है और वृत्ति बाह्यमूलक हो जाती है । हमे यह समझना चाहिये कि व्यवहार एव आचरण का मुख्य आधार भाव-धारा है। भाव दो भागो मे विभक्त है—विधेयात्मक एव निषेधात्मक । जीवन-विज्ञान के द्वारा विधेयात्मक भाव का विकास कर निषेधात्मक भाव से मुक्ति पायी जा सकती है । इस प्रकार जीवन-विज्ञान तनाव-मुक्ति की भी प्रक्रिया है । इसके साथ स्मृति सम्वधन और ग्रहण क्षमता का मौलिक आधार, लयबद्धश्वास जिससे मस्तिष्क को पर्याप्त ऑक्सिजन मिल जाता है और मानसिक तनाव कम कर अध्ययनशीलता को केन्द्रित एव प्रभावी बनाता है। सक्षेप मे जीवन-विज्ञान मस्तिष्क प्रशिक्षण की वह प्रवृत्ति है जिसमे सवेग, एव विचार—नियत्रण की पद्धति है, जिसके सात साध्य तत्व एव पाच साधन तत्व है।

भारतीय सस्कृति की परपरा मे ऋषिमुनियो ने हमारी उच्च चेतना को जगाने के लिये योग, ध्यान आदि के अभ्यास पर बल दिया है । श्रवण, मनन के साथ निदिध्यासन हमारी शिक्षा का अनिवार्य अग था । दुर्भाग्य से आज श्रवण और पठन तक बात रह गयी। मनन और निदिध्यासन दोनो हमने भुला दिये है। जब तक मनुष्य की भावना नही बदलती या दूसरे शब्दो मे जब तक उसका अन्त परिवर्तन या हृदय परिवर्तन नही होता, मात्र व्यवस्था परिवर्तन से उसका बदलाव नही होगा । भाव-परिष्कार एव आचरण परिवर्तन के लिये "जीवन-विज्ञान" एक अभिनव प्रयोग है । इसके अभ्यास से हम विद्यार्थियो मे एक ओर तो उनकी स्मृति, अवधान एव ग्रहण-शीलता को प्रखर कर सकते है, दूसरी ओर उनमे कर्तव्यनिष्ठा, दायित्वबोध और अनुशासन सरलता से ला सकते है ।

अत सगोष्ठी की यह सशक्त अनुशसा है कि "जीवन-विज्ञान" के अध्ययन और प्रयोग को "नयी शिक्षा नीति" मे प्रारभिक स्तर से ही यथा-योग अनिवार्य स्थान दिया जाए। इसमे परपरागत धार्मिक शिक्षा को लागू -करने के विवाद भी नही खडे होगे एव भारतीय सविधान की धारा २८ का

भी किंचित् उल्लघन नही होगा । जीवन-विज्ञान वास्तव मे केवल नैतिक शिक्षा का ही विकल्प नही, यह शिक्षा को सार्थक, समयोपयुक्त एव समग्र बनाने का एक विज्ञान है । इसमे न धर्म या अध्यात्म की एकागिता है, न विज्ञान की। यह अन्तर विषयानुबधी होने के कारण इसके अन्तर्गत एक साथ सामान्यीकरण एव विशिष्टीकरण दोनो का समन्वय है। सबसे महत्त्व की बात तो यह है कि जीवन-विज्ञान अब काफी हद तक प्रयोगसिद्ध हो चुका है। जीवन-विज्ञान शिविरो मे अनेको साधु-साध्वियो एव हजारो लोगो ने इसका लाभ तो उठाया ही है, अब तो राजस्थान सरकार ने जीवन-विज्ञान का पाठ्यक्रम प्रथम चरण मे २८ माध्यमिक विद्यालयो मे लागू कर दिया है। इसकी उपादेयता महसूस कर गुजरात विश्वविद्यालय ने अहमदाबाद मे एव राजस्थान पुलिस अकादमी ने जयपुर मे शिविर आयोजित किये । अहमदाबाद मे मेडिकल ऐसोसिएशन ने "अत स्रावी ग्रथियो एव प्रेक्षाध्यान" पर एक विशेप सगोष्ठी की। सबो को उत्साहवर्धक परिणाम मिले हे । अब तो जीवन-विज्ञान का विद्यार्थियो के लिए माध्यमिक स्तर तक एव शिक्षको के लिये शिक्षक-प्रशिक्षक का पूरा पाठ्यक्रम भी तैयार किया जा चुका है। इसको देखते हुए यदि भारत का कोई विश्वविद्यालय आगे बढकर अध्ययन एव शोध के लिए स्नातकोत्तर डिप्लोमा या डिग्री स्तर पर जीवन-विज्ञान का पाठ्क्रम प्रारभ कर देश को नेतृत्व दे सके तो एक बहुत बडा काम होगा ।

३ शिक्षा और आजीविका ·

शिक्षा मे जीवन-विज्ञान के साथ आजीविका का भी प्रश्न कम महत्त्वपूण नही हे। शिक्षा यदि हमारी जीविका का साधन नही बन सकती तो शिक्षा का प्रयोजन भी सिद्ध नही होगा और इसलिए पद्धति मे प्रवेश पाने या उसमे टिकने के लिए प्रेरणा भी नही रहेगी। यही कारण है कि सामजिक रूप से उसमे उपयोगी उत्पादक श्रम को शिक्षा का अनिवार्य अग बनाना ही चाहिये । इससे एक ओर तो हम शिक्षार्थियो को आजीविका के लिये आश्वस्त कर उनमे आत्मविश्वास और स्वावलबन की भावना का सचार कर सकेगे, साथ-साथ व्यक्तिगत एव सामाजिक जीवन मे शरीर श्रम की प्रतिष्ठा स्थापित कर ऊच-नीच के सामाजिक भेदभाव को भी कम कर सकेगे । श्रम जीवन का एक मूल्य हे। बिना हाथ-पाव हिलाये हम जी ही नही सकते । प्रश्न इतना ही है कि हम शरीर-श्रम को सामाजिक उपयोगिता से कितना जोड

सकते है। सगोष्ठी का स्पष्ट चितन है कि शिक्षा को हमे हस्त-शिल्प उद्योग और व्यवसाय से जोडना ही होगा। हाथ-पाव पैर से काम करने वालो को केवल कर्म कौशल ही प्राप्त नही होता है, वल्कि श्रम का अभ्यास बहुत हद तक उसका हृदय भी शुद्ध करता है। दूसरे शब्दो मे क्रियाशक्ति के विकास से हृदय या भाव-शक्ति का भी विकास होता है। इसलिए प्रायोगिकी के साथ शिक्षा का अनुबन्ध होना ही चाहिये। भारतीय सदर्भ मे प्रायोगिकी को ग्राम विकास तथा सामान्य लोगो के जीवन से अधिकाधिक जोडना होगा। इसके लिए शिक्षा को गावो मे कृषि, पशुपालन, कुटीर एव व्यावसायिक नगरो मे कल-कारखानो एव व्यावसायिक प्रतिष्ठानो से जोडकर इसे अधिक सार्थक बनाया जाना चाहिये। इस सदभ मे हमे शिक्षा—नीति का राष्ट्र की अर्थनीति के साथ मेल बैठाना होगा ताकि हमारे भौतिक एव मानवीय ससाधनो का सम्यक् उपयोग हो सके। जन शक्ति-योजना के साथ चूकि हम शिक्षा के क्षेत्र मे तकनीक एव उद्योग का मेल नही बिठा पाये। इसलिए देश की शिक्षा निर्जीव हो गयी और शिक्षित बेरोजगारी की समस्या भी विकराल बनती जा रही है। इस सबध मे समिति जहा भारत के औद्योगिक विकास का स्वागत करेगी वहा उद्योग के त्वरित आधुनिकीकरण के स्थान पर समुचित तकनीक अपनाने के लिये सरकार से आग्रह रखेगी क्योकि भारत की विराट् जनसख्या एव सीमित पूजी का खयाल रखना होगा। फिर तकनीक और प्रायोगिकी मनुष्य के लिये है, मनुष्य प्रायोगिकी के लिए नही।

कुछ लोगो को अभिभ्रम है कि जीविकोपार्जन की औद्योगिकी शिक्षा से साहित्यकला आदि का अध्ययन दुर्बल पडेगा। वास्तव मे कर्म से विच्छिन्न होकर साहित्य सचमुच साहित्य कहलाने लायक नही रहेगा। वेद, उपनिषद आदि के रचनाकारो के जीवन मे ज्ञान और कर्म अलग नही थे। प्राचीन युग मे सुक-रात और आधुनिक युग मे मस्क्यूलर ने दीर्घकालीन सैनिक जीवन व्यतीत किया। डिवी ने कार्यानुभव, क्रोमेको ने कर्म, माटेसरी ने क्रिया के द्वारा शिक्षण, माओ ने आधा काम-आधा पठन (हाफ-हाफ) एव गाधी ने उद्योग के माध्यम से शिक्षण का विचार रखा। इसलिये आभिजात्य प्रभाव के कारण शिक्षा मे कर्मकौशल की जो उपेक्षा हुई है उसका प्रायश्चित करना ही होगा एव हस्त-शिल्प-कृषि-उद्योग को पाठ्यक्रम एव परीक्षा का अनिवार्य अग बनाना होगा। प्रचलित पाठ्क्रम इतना बोझिल हो गया है कि इसमे न तो नैतिक शिक्षा और न आजीविका की शिक्षा के लिये गुजाइश है। जिस प्रकार प्राचीन भारतीय

सस्कृति मे ग्रहण शिक्षा के साथ आसेवन शिक्षा का समन्वय किया गया था। हमे भी साहस पूवक शिक्षा मे ज्ञान के साथ कर्म को जोडना होगा। हा, यह ध्यान रखना होगा कि जव बच्चे छोटे हो, तो उद्योग एव हस्त-शिल्प की शिक्षा उनके लिये बोझ नही, वल्कि आनन्द का पर्याय वने।

(४) शिक्षा का सार्वभौमीकरण एव अनौपचारिक शिक्षण तथा अणुव्रत की भूमिका

मूल्यो के ह्रास एव जीविकोपार्जन के दुर्दान्त सकट के साथ शिक्षा के सार्वभौमीकरण की समस्या शिक्षा को वडी चुनौती है क्योकि सविधान मे निरक्षरता निवारण के निर्देश के बावजूद भी देश मे आज लगभग ३/४ लोग निरक्षर है एव यदि ऐसी स्थिति रही तो इस शताब्दी के अन्त तक यहा के ५४ प्रतिशत लोग निरक्षर हो जायेगे।

इस दु स्थिति के निवारण के लिए शिक्षा पर हमे अपनी राष्ट्रीय आय का कम से कम ७ ५ प्रतिशत (जितना पहली पचवर्षीय योजना मे प्रावधान था) धन खर्च करना ही चाहिये एव उसमे प्राथमिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार को प्राथमिकता देनी होगी। हमे यह बराबर याद रखना होगा कि शिक्षा राष्ट्र की सर्वोत्तम प्रतिरक्षा हे और हमारे सामाजिक, आर्थिक विकास का भी सशक्त उपकरण हे। शिक्षा का सावभौमीकरण केवल स्कूली शिक्षा को सशक्त करने से ही नही, अपितु अनौपचारिक शिक्षण को व्यापक बनाने से फलीभूत होगा। इस पवित्र काम मे सरकार के साथ परिवार, स्वयसेवी, सस्थाओ, धार्मिक-सास्कृतिक सगठनो आदि का पुरुपार्थ लगाना चाहिये। सरकार जहा विद्यालय-भवन नही बना सके, वहा हम मदिर, उपाश्रय, धर्मशालाए एव अन्य सार्वजनिक स्थानो का उपयोग करे। अनौपचारिक शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिये निवर्तमान शिक्षको का योगदान लेना चाहिए, क्योकि वे दक्ष भी होगे एव उन पर खर्चा भी कम होगा। साक्षरता की प्रेरणा के लिए अन्य उपायो के अतिरिक्त किसी भी नौकरी या अनुदान प्राप्ति तथा वोट देने के लिये साक्षरता की योग्यता अनिवार्य कर दी जाय। अनौपचारिक शिक्षण को जीवन एव जीवनपरक वनाने के लिये हमे इसे समाजोपयोगी तथा जीविकोपयोगी भी वनाना होगा।

लेकिन यह महसूस किया गया कि निरक्षरता का कलक मिटाने के लिये एक कठोर राजनैतिक सकल्प एव एक व्यापक जनान्दोलन आवश्यक ह।

इसके लिये तकनिकी एव शिल्प सस्थानो को छोड कुछ समय तक देश के सभी शिक्षण सस्थानो को बद करके ३५ लाख शिक्षको, लगभग एक करोड विश्व-विद्यालय के विद्यार्थियो एव राष्ट्र के समस्त स्वयसेवी एव धार्मिक-सास्कृतिक सस्थाओ की सम्मिलित शक्ति को सयोजित कर युद्ध स्तर पर १ वर्ष के भीतर निरक्षरता-निवारण का कार्य पूरा किया जा सकता है। जिस प्रकार गुजरात मे शिक्षण-नवनिर्माण दल बना है, उसी प्रकार राष्ट्रीय स्तर पर एक शिक्षा सेना बनाकर यह अभियान किया जाए।

यह सतोष और हर्ष की बात है कि अणुव्रत आन्दोलन विगत कई दशाब्दो से नैतिक-आध्यात्मिक जागरण के द्वारा अनौपचारिक रूप से लोक-शिक्षण का एक महान् कार्य रहा है। इस अमृत वर्ष मे अणुव्रत आन्दोलन ने निरक्षरता निवारण का पुनीत कार्य अपने कार्यक्रमो मे विशेष रूप से जोडकर भारत की अन्य स्वयसेवी एव धार्मिक सास्कृतिक सस्थाओ के लिये एक उदाहरण एव आदर्श प्रस्तुत किया है।

राष्ट्रीय परिस्थितियो मे महत्वपूर्ण चिंतन

ससद सदस्य श्री रामचद्र विकल अणुव्रत-कार्यक्रमो से प्रारभ से जुडे हुए है तथा उसमे रुचि भी लेते है। दिल्ली मे आयोजित होने वाले कार्यक्रमो मे प्राय सम्मिलित होते है। समय-समय पर आचार्यवर के सान्निध्य मे भी समुपस्थित हो जाते है। अमृत-महोत्सव कार्यक्रम मे भी उन्होने भाग लिया। श्री विकल का जन्मदिन राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप मे मनाया गया। आचार्यवर ने इसके लिए एक सदेश भी प्रदान किया। उन्होने विकलजी के जन्मदिन को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप मे मनाने को वर्तमान की राष्ट्रीय परिस्थितियो मे एक महत्त्वपूर्ण चिंतन बताया।

जैन विद्या परिषद

२६ अक्टूबर / त्रिदिवसीय जैन विद्या परिषद का आज प्रात आचार्य-वर के सान्निध्य मे उद्घाटन हुआ। इस परिषद् मे साधु-साध्वियो, समणियो तथा समागत विद्वानो ने अपने शोध पत्र पढे। सभी शोध पत्रो का मुख्य प्रति-पाद्य था—पचम अग सूत्र भगवती। इस परिषद् के सयोजक थे श्री माणिक्य लाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्यश्री महावीर राज गेलडा। जैन विश्व भारती के द्वारा आयोजित इस परिषद् का प्रारभ समणी वृन्द की प्राकृत भाषा की श्रुत अभिवदना से हुआ। भीलवाडा महाविद्यालय के प्रवक्ता

डा० डी० सी० जैन ने अपने सयोजकीय वक्तव्य मे जैन विद्या परिषद् का सक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। परिषद् के सयोजक श्री गेलडा ने स्वागत-भाषण किया। समणी सुप्रज्ञा ने २५ अक्टूबर को उदयपुर मे हुए राजस्थान व्याख्याता सघ के समापन समारोह की चर्चा की। राजस्थान के ग्रामीण विकास एव पचायत राजमत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने इस कार्यक्रम को महत्त्वपूर्ण बताते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

तीन दिनो मे आठ सत्रो के अन्तगत इस पहले सत्र मे सुखाडिया विश्वविद्यालय के व्याख्याता डा० प्रेमसुमन जैन ने 'भगवती सूत्र मे प्रतिपादित धार्मिक उदारता' विषय पर अपना शोध प्रबन्ध पढा।

युवाचार्यश्री ने इस उद्‌घाटन सत्र मे कहा—'भगवती सूत्र का मूल नाम व्याख्या प्रज्ञप्ति है। इस का गाथा परिमाण है २०,००० पद्य। इस सूत्र मे समागत 'जाव' शब्द की सपूर्ति की जाये, तो सवा लाख पद्य परिमाणकी बन जाती है इसलिए इसको 'सवालक्खी' भी कहा जाता है। सवाद शैली का ग्रन्थ होने से इसको 'व्याख्या-प्रज्ञप्ति' की सज्ञा से अभिहित किया गया है। इस सूत्र मे श्वेताम्बर मान्यता के अनुसार ३६,००० प्रश्नोत्तर, जबकि दिगबर मान्यता के अनुसार ६०,००० प्रश्नोत्तर है। इस ग्रन्थ मे तत्त्वो तथा सिद्धान्तो का सुन्दर विवेचन है ही, साथ मे दुनिया के ज्ञान-विज्ञान का शायद ही कोई विषय अछूता रहा हो, जिसका थोडा-बहुत वर्णन इस महान् ग्रथ मे न हुआ हो। इस ग्रथ मे कई विषय ऐसे है, जो पर्याप्त वैज्ञानिक खोज मागते है, जिनसे दुनिया को एक नूतन आलोक मिल सकता है।'

तेरापथ के चतुर्थ आचार्यश्री जयाचार्य ने राजस्थानी भाषा मे इस गूढ ग्रथ को पाच सौ एक गीतिकाओ मे आबद्ध किया है। 'भगवती री जोड' नामक गेय काव्य ८०,००० पद्य परिमाण है। इसका जिक्र करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—जयाचार्य ने इस सूत्र के गूढ रहस्यो का मार्मिक वर्णन किया है। आज अगर पाच-दस जयाचार्य जन्म ले तब कही जाकर इस भगवती सूत्र के थोडे-बहुत रहस्यो का आधुनिक सदर्भ मे उद्‌घाटन हो सकता है।'

आचार्यवर ने अपने आशीर्वचन मे कहा—'भगवती एक ऐसा आगम ग्रथ है, जिसमे अढाई हजार पूर्व ही असाम्प्रदायिक धर्म की विवेचना दी है। उसके पुष्ट प्रमाण है—मिथ्यादृष्टि का देशाराधकत्व, असोच्चा केवली का प्रकरण आदि।'

आज के कार्यक्रम मे महन्तश्री जयरामदास भी उपस्थित थे। इस तरह यह प्रथम सत्र सानद सपन्न हुआ। मध्याह्न के सत्रो को छोडकर शेप सभी सत्र खुले चले। प्रत्येक सत्र की अध्यक्षता पृथक्-पृथक् विद्वानो ने की और उन अध्यक्षो ने अपने-अपने सत्र की कार्यवाही का कुशल सचालन किया। विद्वज्जनो ने पूर्व निर्धारित विषयो पर शोधपत्र पढे। समस्त सत्रो का विवरण इस प्रकार है—

सत्र-२, मध्याह्न २ से ४.३०,

अध्यक्ष—डा० नथमल टाटिया, निदेशक, शोध विभाग, जैन विश्व भारती, लाडनू

वक्ता	विषय
१ मुनिश्री श्रीचद्र 'कमल'	पर्व तिथियो मे हरियाली खाने का निषेध क्यो ?
२ साध्वीश्री कनकश्री	महावीर की अनुशासन-पद्धति
३ साध्वीश्री निर्वाणश्री	लोकस्थिति के मूल-तत्व एव प्रदूषण
४ श्री रमेशचद जैन (उज्जैन)	भगवती मे गणित एव उपमेय

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान के शिक्षा एव चिकित्सा मत्री श्री हीरालाल देवपुरा ने भी अपने विचार रखे। युवाचार्यश्री ने अपने सत्रान्त भाषण मे कहा—यह आश्वासन देना 'हम तुम्हे ज्यादा सुविधा देगे' एकदम गलत है। यह आश्वासन दिया जा सकता कि हम तुम्हे मरने नही देगे, आजीविका के साधन उपलब्ध करायेगे। अनावश्यक सुविधाओ की प्राप्ति, सुविधावाद को बढावा, शस्त्रो का निर्माण—प्रदूषण को बढाने मे अधिक मदद-गार साबित हो रहे है।' इस अवसर पर आचार्यवर का भी उद्बोधन हुआ।

सत्र-३, रात्रि—८ से ९.४५

अध्यक्ष—डा० प्रेमसुमन जैन

१ श्री कमलेश कुमार जैन (बनारस)	श्रमण परम्परा मे सवर
२ मुनिश्री उदित कुमार	श्वास-प्रेक्षा प्राचीन और आधुनिक सदर्भ मे
३ डा० प्रेमचद राका (जयपुर)	जैन दर्शन मे शरीर-निरूपण
४ मुनिश्री धनन्जयकुमार	सार्वभौम धर्म का घोषणापत्र
५ आचार्यश्री, युवाचार्यश्री	उद्बोधन

सत्र—४, २७ अक्टूबर, प्रात ६ से ११.३० बजे

अध्यक्ष—डा० महावीर राज गेलडा ।

१	मुनि सुमेरमल 'लाडनू'	महावीर का सम्प्रदायातीत दृष्टिकोण
२	समणी कुसुमप्रज्ञा	गर्भ प्रज्ञप्ति

इस सत्र मे 'विदेशो मे जैन धर्म' विषय पर विदेश-यात्रा करने वाले विद्वानो ने अपने विचार रखे । वे विद्वान थे—डा नथमल टाटिया, डा० प्रेमसुमन जैन (उदयपुर), डा० महावीर राज गेलडा, समणी नियोजिका स्मितप्रज्ञाजी । अत मे आचायश्री, युवाचार्यश्री के प्रेरक प्रवचन हुए ।

सत्र—५, मध्याह्न २ से ४ ३०

अध्यक्ष—साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

१	साध्वीश्री जिनप्रभा	महावीर चौबीसवे तीर्थंकर क्यो ?
२	साध्वीश्री अशोकश्री	'माहण' शब्द एक विमर्श
३	समणी स्मित प्रज्ञा	चेतन और अचेतन का सबध कैसे ?
४	डा० नन्दलाल जैन (रीवा)	सूत्रो मे लम्बाई की ईकाई
५	आचार्यश्री, युवाचायश्री	उद्‌बोधन

सत्र—६, रात्रि ८ से ६ ४५

अध्यक्ष—डा० रमेशचद जैन

१	डा० प्रेमचन्द जैन (जयपुर)	जमाली और बहुतरवाद
२	डा० फूलचन्द जैन 'प्रेमी' (बनारस)	भगवती मे उल्लिखित पार्श्वस्थल एव पार्श्वापत्यीय श्रमण ।
३	मुनिश्री प्रशान्तकुमार	ज्ञान और चरित्र का सबध

डा० नथमल टाटिया ने शोध के अनुभव सुनाये । युवाचार्यश्री एव आचार्यश्री के उद्‌बोधन हुए ।

सत्र—७, २८ अक्टूबर, प्रात. ६ से ११

अध्यक्ष—श्री नन्दलाल जैन

१	मुनिश्री राजेन्द्रकुमार	क्या आत्मा शरीर-परिमाण है ?
२	साध्वीश्री मधुस्मिता	भगवती मे मैत्री के तत्त्व
३	डा० महावीर राज गेलडा	क्या चन्द्रमा मे देवता है ?
४	समणी अक्षयप्रज्ञा	देवता भी बूढे होते हैं ?
५	समणी मुदित प्रज्ञा	भगवान महावीर एक परामनोवैज्ञानिक

६ समणी सुप्रज्ञा — सुख दुख की अवधारणा
७ मुनिश्री मुदित कुमार — आगम की व्याख्या पद्धति और नयवाद
८ साध्वीश्री विमलप्रज्ञा — कर्म-फल भोगना अनिवार्य-एक विमर्श पर
९ साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञा — पर्याय की अपेक्षा नास्तित्व स्रोत की खोज ।

सत्र-८ , मध्यान्ह २ से ४
अध्यक्ष—श्री डी० सी० जैन

इस सत्र मे जैनविद्या परिषद का समापन-कार्यक्रम था । श्री डी०सी० जैन ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया । श्री फूलचद जैन, डॉ० प्रेमसुमन जैन, श्री नदलाल जैन, डॉ० नथमल टॉटिया ने अपने अनुभव सुनाये, साथ ही कुछ सुझाव भी दिये । आचार्यवर, युवाचार्यश्री तथा साध्वी प्रमुखाश्री के भी दीक्षात भाषण हुए । डॉ० महावीरराज गेलडा ने आभार प्रदर्शन किया । बीकानेर के श्री अनूपचद बोथरा की ओर से समागत विद्वानो को साहित्य भेट किया गया ।

तीन दिवसीय इस जैन विद्या परिषद के आठ सत्रो मे २६ शोधपत्रो का वाचन हुआ । उन शोध पत्रो को प्रस्तुत करने वाले थे—६ मुनि, ६ साध्वी ५ समणी, ८ विद्वान । प्रत्येक शोध-पत्र के वाचन के बाद प्रश्नोत्तर का क्रम चलता । शोध पत्र प्रस्तुतकर्त्ता उन प्रश्नो का पूरी कोशिश के साथ समाधान देते । युवाचार्य श्री उन समाधानो को सजाने, सवारने, विस्तार देने, विवेचना प्रस्तुति का महत्वपूर्ण कार्य सपादित करते । इस जैन विद्या परिषद् के समायोजन से साधु-साध्वियो व समणियो मे नये उत्साह का सचार हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्रो मे आचार्यवर का आशीर्वाद, सतत प्रेरणा व प्रोत्साहन तथा युवाचार्यश्री का निरन्तर मार्गदर्शन व परिश्रम स्पष्ट बोल रहा था । युवाचार्य श्री ने अपना पूरा समय ही साधु-साध्वियो व समणियो के लिए समर्पित कर दिया । शोध पत्र के बिन्दु, कच्चा चिट्ठा, अतिम रूप सब कुछ युवाचार्यश्री की दृष्टि से होकर गुजरे । श्री गेलडा व श्री डी० सी० जैन ने परिषद् की सपूर्ण कार्यवाही का सागोपाग सचालन किया ।

जीवन-विज्ञान पर शिक्षा सगोष्ठी

अमृत-महोत्सव का यह ऐतिहासिक वर्ष जीवन-विज्ञान वर्ष के रूप मे मनाया जा रहा है । इस वर्ष आचार्यवर के सान्निध्य मे तथा युवाचार्यश्री के निदेशन मे जीवन-विज्ञान के क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्य हुआ । इस कार्यक्रम

सत्र—४, २७ अक्टूबर, प्रात. ६ से ११.३० बजे

अध्यक्ष—डा० महावीर राज गेलडा ।

१	मुनि सुमेरमल 'लाडनू'	महावीर का सम्प्रदायातीत दृष्टिकोण
२	समणी कुसुमप्रज्ञा	गभ प्रज्ञप्ति

इस सत्र मे 'विदेशो मे जैन धर्म' विपय पर विदेश-यात्रा करने वाले विद्वानो ने अपने विचार रखे । वे विद्वान थे—डा नथमल टाटिया, डा० प्रेमसुमन जैन (उदयपुर), डा० महावीर राज गेलडा, समणी नियोजिका स्मितप्रज्ञाजी । अत मे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के प्रेरक प्रवचन हुए ।

सत्र—५, मध्याह्न २ से ४ ३०

अध्यक्ष—साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

१	साध्वीश्री जिनप्रभा	महावीर चौबीसवे तीर्थंकर क्यो ?
२	साध्वीश्री अशोकश्री	'माहण' शव्द एक विमर्श
३	समणी स्मित प्रज्ञा	चेतन और अचेतन का मबध कैसे ?
४	डा० नन्दलाल जैन (रीवा)	सूत्रो मे लम्बाई की ईकाई
५	आचार्यश्री, युवाचार्यश्री	उद्बोधन

सत्र—६, रात्रि ८ से ६ ४५

अध्यक्ष—डा० रमेशचद जैन

१	डा० प्रेमचन्द जैन (जयपुर)	जमाली और वहुतरवाद
२	डा० फूलचन्द जैन 'प्रेमी' (बनारस)	भगवती मे उल्लिखित पार्श्वस्थल एव पार्श्वापत्यीय श्रमण ।
३	मुनिश्री प्रशान्तकुमार	ज्ञान और चरित्र का सवध

डा० नथमल टाटिया ने शोध के अनुभव सुनाये । युवाचार्यश्री एव आचार्यश्री के उद्वोधन हुए ।

सत्र—७, २८ अक्टूबर, प्रात. ६ से ११

अध्यक्ष—श्री नन्दलाल जैन

१	मुनिश्री राजेन्द्रकुमार	क्या आत्मा शरीर-परिमाण हे ?
२	माध्वीश्री मधुस्मिता	भगवती मे मैत्री के तत्त्व
३	डा० महावीर राज गेलडा	क्या चन्द्रमा मे देवता हे ?
४	ममणी अक्षयप्रज्ञा	देवता भी बूढे होते है ?
५	ममणी मुदित प्रज्ञा	भगवान महावीर एक परामनोवैज्ञानिक

६ समणी सुप्रज्ञा — सुख दुख की अवधारणा
७ मुनिश्री मुदित कुमार — आगम की व्याख्या पद्धति और नयवाद
८ साध्वीश्री विमलप्रज्ञा — कर्म-फल भोगना अनिवार्य-एक विमर्श पर
९ साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञा — पर्याय की अपेक्षा नास्तित्व स्रोत की खोज।

सत्र-८ , मध्यान्ह २ से ४

अध्यक्ष—श्री डी० सी० जैन

इस सत्र मे जैनविद्या परिषद का समापन-कार्यक्रम था। श्री डी०सी० जैन ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। श्री फूलचद जैन, डॉ० प्रेमसुमन जैन, श्री नदलाल जैन, डॉ० नथमल टॉटिया ने अपने अनुभव सुनाये, साथ ही कुछ सुझाव भी दिये। आचार्यवर, युवाचार्यश्री तथा साध्वी प्रमुखाश्री के भी दीक्षात भाषण हुए। डॉ० महावीरराज गेलडा ने आभार प्रदर्शन किया। बीकानेर के श्री अनूपचद बोथरा की ओर से समागत विद्वानो को साहित्य भेट किया गया।

तीन दिवसीय इस जैन विद्या परिषद के आठ सत्रो मे २६ शोधपत्रो का वाचन हुआ। उन शोध पत्रो को प्रस्तुत करने वाले थे—६ मुनि, ६ साध्वी ५ समणी, ८ विद्वान। प्रत्येक शोध-पत्र के वाचन के बाद प्रश्नोत्तर का क्रम चलता। शोध पत्र प्रस्तुतकर्त्ता उन प्रश्नो का पूरी कोशिश के साथ समाधान देते। युवाचार्य श्री उन समाधानो को सजाने, सवारने, विस्तार देने, विवेचना प्रस्तुति का महत्त्वपूर्ण कार्य सपादित करते। इस जैन विद्या परिषद् के समायोजन से साधु-साध्वियो व समणियो मे नये उत्साह का सचार हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्रो मे आचार्यवर का आशीर्वाद, सतत प्रेरणा व प्रोत्साहन तथा युवाचार्यश्री का निरन्तर मार्गदर्शन व परिश्रम स्पष्ट बोल रहा था। युवाचार्य श्री ने अपना पूरा समय ही साधु-साध्वियो व समणियो के लिए समर्पित कर दिया। शोध पत्र के बिन्दु, कच्चा चिट्ठा, अतिम रूप सब कुछ युवाचार्यश्री की दृष्टि से होकर गुजरे। श्री गेलडा व श्री डी० सी० जैन ने परिषद् की सपूर्ण कार्यवाही का सागोपाग सचालन किया।

जीवन-विज्ञान पर शिक्षा सगोष्ठी

अमृत-महोत्सव का यह ऐतिहासिक वर्ष जीवन-विज्ञान वर्ष के रूप मे मनाया जा रहा है। इस वर्ष आचार्यवर के सान्निध्य मे तथा युवाचार्यश्री के निदेशन मे जीवन-विज्ञान के क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्य हुआ। इस

से राजस्थान सरकार प्रभावित हुई और उसने भीलवाडा तथा आमेट मे दो जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये। ४० स्कूलो के दो-दो अध्यापको को जीवन-विज्ञान का प्रशिक्षण दिया गया।

जीवन-विज्ञान के सदर्भ मे ७ नवम्बर को आचार्यवर की पावन सन्निधि मे युवाचार्य श्री के निदेशन मे एक प्राथमिक एव औपचारिक शिक्षा सगोष्ठी आयोजित की गई। यह सगोष्ठी ग्रामीण विकास एव पचायती राज विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा समायोजित थी। जिसके अध्यक्ष थे राजस्थान के ग्रामीण विकास एव पचायती राज मत्री श्री रामपाल उपाध्याय। सगोष्ठी मे पूर्व केन्द्रीय शिक्षा मत्री प्रख्यात शिक्षाविद् श्री कालूलाल श्रीमाली, मेवाड मण्डलेश्वर मुरलीमनोहर शरण, पचायती राज राज्य मत्री श्री महेन्द्र कुमार परमार, ग्रामीण विकास एव पचायती राज निदेशक श्री लक्ष्मीचद गुप्ता, विकास आयुक्त श्री तेजकुमार, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण सस्थान, उदयपुर के निदेशक श्री भवरलाल शर्मा, उदयपुर की विधायिका गिरिजा व्यास तथा पचायत समितियो के पच, सरपच एव जिला शिक्षा अधिकारियो ने भाग लिया।

साध्वी वृन्द के मगलाचरण से प्रात कार्यक्रम का शुभारभ हुआ। डॉ० डी० सी० जैन के सजोयकीय वक्तव्य के पश्चात् श्री लक्ष्मी गुप्ता ने कहा—शैक्षिक जगत् मे प्राथमिक शिक्षा विकास की आधारभूत नीव है। उस शिक्षा से बच्चे अधिक से अधिक लाभान्वित हो, यह ग्राम पचायतो का लक्ष्य है। मै आचार्यजी से राजस्थान के शैक्षिक पिछडेपन को दूर करने के लिए मार्गदर्शन देने का निवेदन करता हू।"

डॉ० श्रीमाली ने प्रत्येक नागरिक को साक्षर बनाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। गिरिजा व्यास ने इक्कीसवी सदी मे नैतिक, आध्यात्मिक, एव सास्कृतिक, गति-प्रगति के साथ प्रवेश करने की बात कही।

श्री मुरली मनोहर शरण ने कहा—"वर्तमान मे शिक्षा से आनन्दानुभूति होने का एक मात्र कारण है कि हमने परमात्मभाव की लौ को बुझा दिया है। प्राथमिक शिक्षा के सदर्भ मे आवश्यक है कि पहले माताओ को शिक्षित बनाया जाय, तब घर सरस्वती का मदिर बन जाएगा।"

युवाचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे कहा—"प्राथमिक शिक्षा बीज वपन का अवसर है, सस्कार निर्माण और व्यक्तित्व निर्माण का समय है। मनोवैज्ञानिको ने जीवन के निर्माण मे शिशु अवस्था को महत्वपूर्ण माना है।

व्यक्तित्व का निर्माण उसी समय होता है। आज बच्चो पर पुस्तको का भार ज्यादा है। अपेक्षा है पुस्तको के भार को कम कर शिक्षा को रुचिकर और आकर्षक बनाया जाये। शिक्षा के साथ श्रम, स्वास्थ्य, बुद्धि और चरित्र विकास को जोड दिया जाए तो वह सपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण कर सकती है।" युवाचार्य श्री ने विस्तार से जीवन-विज्ञान पर प्रकाश डाला।

आचार्यश्री ने अपने समापन-भाषण मे कहा—"शिक्षा के साथ-साथ बच्चो को जीवन-निर्माण के लिए प्रायोगिक उपक्रम सिखाये जाए, जिससे ज्ञान के साथ चरित्र का विकास होगा। इसलिए शिक्षा नीति मे जीवन-विज्ञान का समावेश किया जाये। साइन्स मे जैसे पढने के साथ प्रयोग करने होते है। ऐसे ही जीवन-विज्ञान मे पढना कम और प्रयोग अधिक है। प्रायोगिक शिक्षा से ही हमारी शिक्षा सपूर्ण बनेगी।"

मध्यान्ह मे विचार-सगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमे शिक्षा सचिव सहित अनेक जिला अधिकारी तथा अध्यापक बधुओ ने भाग लिया। इस विचार-सगोष्ठी का सयोजन मत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने किया। बोलने के लिए एक-एक अधिकारी आ रहे थे। उनके पैरो मे चप्पल देखकर मत्री महोदय ने कहा—"आज की यह सगोष्ठी सचिवालय या किसी होटल मे नही हो रही है, एक महान् आचार्य की सन्निधि मे हो रही है। हमे हमारी सस्कृति का ख्याल रखना होगा। मैने तो अपनी चप्पल पहले से ही कार मे छोड रखी है। कृपया, आप भी अपने चप्पल, जूते खोलकर बोलने को आये। देखते-देखते सबके जूते खुल गये। तीन घटे चली यह विचार सगोष्ठी काफी महत्वपूर्ण रही। शैक्षिक सस्थान के निदेशक श्री भवरलाल शर्मा ने आभार ज्ञापन किया। जीवन-विज्ञान पाठ्यक्रम को गतिशील बनाने के लिए यह गोष्ठी एक मील का पत्थर बनी।

अहिंसा सार्वभौम दिवस

१४ नवम्बर/आज कार्तिक शुक्ला द्वितीया थी। आचार्यवर आज ७२ वे वर्ष मे प्रवेश कर रहे थे। आज का दिन पूरे देश मे अहिंसा सार्वभौम दिवस के रूप मे मनाया गया। प्रात ५ बजे सभी साधुओ की उपस्थिति मे श्रद्धेय युवाचार्य श्री ने समूचे धर्म सघ की ओर से आचार्यश्री का अभिनन्दन करते हुए कहा—

शतशाखो यतो जात सघ कल्पतरुर्महान्।
शतजीवी चिर भूयात्, आचार्यस्तुलसीप्रभो। ॥१॥

सोच्छ्वासा विजयोल्लासा, सापेक्षा सुसमन्विता।
सायासा सहजानन्दा, श्री धी कीर्ति प्रवर्धताम् ॥२॥

आशुकविता से रचे श्लोको की व्याख्या करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"आचार्यश्री ने इस सघ को अनेको क्षेत्रो मे प्रगति का अधिकार दिया है। उनके प्रयत्न, पुरुषार्थ और आशीर्वाद से ही सघ बहु आयामी गति कर पाया है। विद्या, साहित्य, सस्कृति, कला और योग आदि क्षेत्रो मे सघ ने अभूतपूर्व प्रगति की है। धर्मसघ रूपी कल्पतरु को आचार्यश्री ने शतशाखी बनाया है। इस शुभ अवसर पर हम कामना करते है कि आचार्यश्री शतजीवी बने और उन्होने सघ को जो विशिष्टता प्रदान की है, उसे हम निरतर बढाते रहे।"

युवाचार्य श्री ने आगे कहा—"आचार्यश्री ने धर्मसघ को नए-नए उन्मेष दिए है। उन उन्मेषो और सपनो को क्रियान्वित कर धर्मसघ को अपूर्व प्रतिष्ठा और विजय के उल्लास से भरा है। उनके सारे कदम सुसमन्वित और सापेक्ष है। नए-नए आयामो को मूर्त रूप देने मे आचार्यश्री ने अनथक श्रम किया है। फिर भी वे सहजानन्द से परिपूर्ण है। इसीलिए उन्होने श्री, बुद्धि और कीर्ति के अप्रतिम शिखर को छुआ है हम यह अभ्यर्थना करते है कि उनका यह जन्म दिन हमारे धर्मसघ की तेजस्विता बढाने मे महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो।"

धर्मसघ के अभिनन्दन को हृदय से स्वीकार करते हुए परमाराध्य आचार्य प्रवर ने कहा—अभी हम सब महाप्रज्ञजी को सुन रहे थे। उन्होने मेरे अवदानो की चर्चा की। अनेक मनीषियो ने सघ की प्रगति का सारा श्रेय मुझे दिया है। पर मैं मानता हू कि मैंने जो कुछ किया है, उसमे (युवाचार्यश्री और साध्वीप्रमुखाजी का) यह विरल योग कार्यकारी रहा है। विनीत, प्रबुद्ध और समर्पित साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका परिवार ने मुझे बहुत कुछ कर गुजरने का साहस और आधार दिया है। इन सबके सहयोग से मै अपने जीवन के क्षणो का सार्थक उपयोग कर पाया हू। मैने कभी यह नही चाहा कि मैं अकेला आगे बढू। यह मेरी अभिप्सा रही कि मै भी आगे बढू और सघ भी आगे बढे।"

प्रात प्रभात जागरिका निकाली गई, जिसमे सैकडो स्त्री-पुरुषो ने सोत्साह भाग लिया। प्रात ९ ३० बजे कार्यक्रम का शुभारभ हुआ। अनेको ने आचार्यवर को कविता, मुक्तक, गीतिकाओ के द्वारा भावाञ्जलि समर्पित की।

वरिष्ठ श्रावक श्री कजोड़ीमल बोहरा ने आमेट मे अमृत-विद्या-पीठ की स्थापना एव उसके निर्माण के लिए एक लाख रुपये की राशि आमेट तेरापथी सभा द्वारा प्रदान करने की घोपणा की। साध्वियो ने आचार्य-अर्चना मे सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। समणी कुसुम प्रज्ञा ने आज के इस जन्म दिन पर समण श्रेणी के जन्म की याद दिलाते हुए इस श्रेणी के उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीर्वाद मागा। अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष श्री शुभकरण दसाणी, मत्री श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट, महत श्री जयरामदासजी ने अपने विचार रखे।

राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति श्री जनार्दनराय नागर ने कहा—"गाधी के बाद अहिंसा के क्षेत्र मे आचार्यश्री तुलसी महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे है। गाधीजी ने सत्य और अहिंसा का मार्ग बताया, पर व्रत नही। आचार्यश्री ने उसे जीवन मे उतारने के लिए व्रत की बात कही।"

साध्वी प्रमुखाश्री ने अपने विचारो की प्रस्तुति के बाद एक कलात्मक डिब्बा श्री चरणो मे भेंट किया। उस डिब्बे मे आचार्यश्री का एक भोजन पात्र (तासक) माला आदि आवश्यक वस्तु थी। इन उपहारो का साध्वी प्रमुखाश्री ने परिचय दिया तथा आज के दिन प्रदत्त आचार्यवर के विशेष सदेश का भी वाचन किया।

युवाचार्यश्री ने आज के दिन को पवित्र व पुलकन का दिन माना। उन्होने कहा—"आचार्यश्री की सबसे बडी विशेषता यह है कि वे विकास के पथ पर अकेले नही बढे, पूरे सघ को साथ बढाया। आचार्यश्री ने अपने मगल-सदेश मे कहा—"मैंने इन साठ वर्षो मे दो प्रमुख कार्य किये है। मूर्च्छा का परित्याग और ज्ञान की आराधना। मूर्च्छा के परित्याग के कारण ही निदा और प्रशसा दोनो स्थितियो मे समान रूप से गति कर सका।"

श्री गुलजारीलाल नन्दा को अणुव्रत पुरस्कार

जय तुलसी फाउन्डेशन द्वारा विगत कुछ वर्षो से नैतिक क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्तियो को अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है। इस वर्ष का यह पुरस्कार नि स्वार्थ देश सेवा मे लगे, दो बार भारत के प्रधानमत्री रह चुके, साफ-सुथरे व्यक्तित्व के धनी श्री गुलजारीलाल नन्दा को प्रदान करने की घोपणा की गई।

उक्त घोपणा आचार्यश्री के सान्निध्य मे आयोजित इस जन्म दिन समारोह में फाउन्डेशन के उपाध्यक्ष श्री मागीलाल सेठिया ने की। इससे पूर्व

यह पुरस्कार विख्यात वैज्ञानिक स्व० डा० आत्माराम, साहित्यकार एव चिन्तक श्री जैनेन्द्र कुमार, शिक्षा सेवी श्री दौलत सिह कोठारी एव सादगी की प्रतिमूर्ति श्री शिवाजी भावे को मिल चुका है। अणुव्रत पुरस्कार एक पुरस्कार न होकर समाज एव राष्ट्र सेवा मे लगे मूक एव समर्पित व्यक्तित्व के पुरुषार्थ का अकन मात्र है। अणुव्रत आन्दोलन पिछले सैतीस वर्षो से नैतिक एव चारित्रिक मूल्यो के प्रसार मे लगा एक रचनात्मक आन्दोलन है और अणुव्रत पुरस्कार भी इन्ही भावनाओ को कायरूप देने वालो का एक भावनात्मक सम्मान है। यह पुरस्कार मर्यादा-महोत्सव पर प्रदान किया जाता है।

श्री नन्दा अणुव्रत आन्दोलन के बहुत निकट रहे है। उन्होने आचार्य तुलसी से मिलकर इस आन्दोलन को अधिकाधिक लोगो तक पहुचाने मे अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया है। श्री नन्दा जैसे व्यक्ति ही वास्तविक अणुव्रती कहलाने के पात्र है। दो बार प्रधानमत्री बनने के बावजूद चाहे कुछ दिनो के लिये ही सही, वह अपने लिए एक ऐश्वय पूण जीवन का इतजाम नही कर पाये। दो-दो बार गृहमत्री, योजनामत्री और रेलमत्री रहे। श्री नन्दा आजकल मात्र साढे सात सौ रुपये मे नई दिल्ली मे अपना गुजारा कर रहे है। ढाई सौ रुपये स्वतत्रतासेनानी पेशन और पाच सौ रुपये सासद पेशन ही मात्र उनकी आय के साधन है। बडे ही सादगी एव समपण भाव से अपने व्यक्तित्व एव कर्तृत्व द्वारा राष्ट्र एव समाज की सेवा रहे है। उनके कार्यो एव विचारो पर गाधीजी की अमिट छाप है, गाधीवादियो की असली नस्ल के गिने-चुने लोगो मे श्री नन्दा प्रमुख है।

१८ नवम्बर/चातुर्मास मे चल रही 'जैन विद्या ८५' की परीक्षा स्थानीय हायर सेकेण्डरी स्कूल मे हुई, इस परीक्षा मे कुल ८२ परीक्षार्थी थे। रात्रि मे सस्कार निर्माण शिविर के समापन का कायक्रम था। शिविर मे ९२ छात्र-छात्राए थी। शिविर-सचालक श्री हस्तीमल सेठिया ने शिविर की रिपोट प्रस्तुत की।

२० नवम्बर/मध्याह्न दीक्षार्थिनी बहिनो की शोभायात्रा निकाली गई। भव्य एव विशाल यह शोभायात्रा नगर के मुख्य मार्गो से होती हुई पुन अमृत-समवसरण मे पहुची। शोभायात्रा मे कई झाकिया भी थी। रात्रि मे दीक्षार्थिनी बहिनो का विदाई-कायक्रम था। मुमुक्षु बहिनो के सचालन मे चलने वाले इस कार्यक्रम मे दीक्षार्थिनी बहिनो के पारिवारिक जनो, मुमुक्षु बहिनो के प्रासगिक भाषण एव गीतिकाए हुई।

दीक्षा समारोह

२१ नवम्बर/प्रात ६ बजे समायोजित दीक्षा कार्यक्रम का प्रारभ समणी वृन्द के मगलाचरण से हुआ। इस शुभ समारोह मे श्री कन्हैयालाल हीरावत ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार लिया। युवामतो के गीत के बाद 'दीक्षा क्या है ?' विषय पर साध्वीश्री जिनप्रभा का वक्तव्य हुआ। श्री कन्हैयालाल कच्छारा द्वारा स्वागत भाषण, मुमुक्षु लेखा द्वारा दीक्षार्थिनी बहिनो का परिचय प्रस्तुत किया गया। दीक्षार्थिनी बहिन मुक्ता के वक्तव्य के बाद महत श्री जयरामदास ने बहिनो को शुभकामनाए दी। श्री अर्जुन बाफणा ने आज्ञा पत्र का वाचन किया। चद पुस्तक समर्पण के बाद मुनि सुमेरमल 'लाडनू' का नया मोड पर वक्तव्य हुआ। मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' के वक्तव्य के पश्चात् युवाचार्यश्री का मगल उद्बोधन हुआ। आचार्यवर की पावन सन्निधि मे युवाचार्यश्री ने आर्षवाणी का उच्चारण करते हुए पाचो दीक्षार्थिनी बहिनो का दीक्षा-सस्कार सपन्न किया। लगभग दस हजार की विशाल उपस्थिति मे आचार्यश्री ने नव दीक्षित साध्वियो को कुछ महत्त्वपूर्ण शिक्षाये दी। सिधी परिवार से कुमारी स्नेहलता की तेरापथ मे प्रथम दीक्षा है। दीक्षार्थिनी बहिनो का परिचय इस प्रकार है।

क्र० स०	पूर्व नाम	साध्वी नाम	अध्ययन	सस्था मे
१	श्रीमती दीपमाला (धूलिया)	साध्वीश्री दीपयशा	स्नातक द्वितीय वर्ष	४ वर्ष
२	श्रीमती लक्ष्मी (रतननगर)	साध्वीश्री लोकयशा	प्राग् स्नातक 'क'	१३/४ ,,
३	कुमारी मुक्ता (गाधीधाम)	साध्वीश्री मगलयशा	स्नातक तृतीय वर्ष	५ ,,
४	कुमारी माधुरी (गगाशहर)	साध्वीश्री मधुरयशा	स्नातक प्रथम वर्ष	४१/२ ,,
५	कुमारी स्नेहलता (धूलिया)	साध्वीश्री सौम्ययशा	स्नातक द्वितीय वर्ष	३ ,,

२२ व २३ नवम्बर को प्रात कालीन कार्यक्रम के प्रारम्भ मे साध्वियो की गीतिकाए हुई। साध्वीश्री विमलप्रज्ञा के प्राग् वक्तव्य के बाद आचार्यवर का उद्बोधन हुआ। २२ को 'बासठिया', 'बावन बोल' थोकडो का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त छात्र-

छात्राओ को पुरस्कार दिया गया।

२४ नम्बर/आज रविवारीय प्रवचनमाला के अन्तर्गत 'रूढि मुक्त समाज और धर्म' विपय रखा गया, जिसमे प्रमुख वक्ता थे भीलवाडा भारतीय जनता पार्टी के सयोजक श्री पारसमल राका। आचार्यवर ने अपने उद्‌बोधन मे कहा—'धर्म व्यक्तिगत होता है, पर उसका प्रभाव पूरे समाज पर पडता है। व्यक्तिगत धार्मिक जीवन का सही प्रशिक्षण तो समूह मे ही होता ह। आज समाज मे अनेको विकृतिया उत्पन्न हो गई है। उनको समूल मिटाना नितान्त अपेक्षित ह क्योकि रूढि मुक्त समाज ही आसानी से धर्म का आचरण कर सकता हे।'

मध्याह्न मे जैन विश्व भारती द्वारा प्रतिवर्प आयोजित होने वाली जैन विद्या परीक्षाओ का दिन था। आमेट की अनेको छात्र-छात्राओ ने परीक्षाये दी। आमेट कस्बे के तीन भाग है—स्टेशन, जहा चातुर्मासिक प्रवेश के पूर्व एक दिवसीय प्रवास हो चुका था। दूसरा भाग लक्ष्मीबाजार, जहा आचार्यवर का चातुर्मास हे। तीसरा भाग—गाव, जहा आचार्यवर का रात्रिकालीन प्रवास अभी तक हुआ नही था। गाववासियो के विशेप निवेदन पर आचार्यवर का आज रात्रिकालीन प्रवास गाव मे हुआ। पहले साय चार वजे श्री कजोडीमल वोहरा के मकान मे पधारे। इनके मकान मे वहुत लवे अर्से से साधु-साध्वियो के चातुर्मास होते रहे है। पूरा परिवार निष्ठाशील है। रात्रि कार्यक्रम रावले मे हुआ। विषय था 'वदलता युग-राष्ट्रीय चरित्र'। विपय प्रवेश किया मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' ने। खचाखच भरे रावले के मैदान मे युवाचार्यश्री ने उपस्थित जनसमूह से आन्तरिक परिवर्तन पर वल दिया। आचार्यश्री ने प्रामाणिक जीवन जीने की प्रेरणा दी। कवर प्रतापसिह ने आचार्यवर के रावला पधारने पर हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

२५ नववर/प्रात आचार्यवर अखाडा पधारे। महतश्री जयरामदास ने भावभीना स्वागत किया। करीब आधा घटे सौहार्दपूर्ण वातावरण मे वातचीत हुई। उन्होने अपने को अणुव्रत कार्यक्रम मे समर्पित रहने का वचन दिया। महतजी आचार्यश्री तुलसी स्वागत समिति के अध्यक्ष ह। उनके मन मे आचार्यश्री के प्रति गहरी आस्था हे। पूरे चातुर्मास मे उन्होने भरपूर सहयोग दिया। प्रत्येक कार्यक्रम मे वे निष्ठा के साथ शामिल होते। उनकी भाषण शैली रोचकता एव माधुर्य लिये हुए थी।

जोधपुर से श्री इन्द्रचद सिंघी के नेतृत्व मे पूरा सिघी परिवार शोक

विमुक्ति हेतु आया। उनके ि ता श्री हणूतराज सिघी का हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। मध्याह्न मे पूरा परिवार आचार्यवर के उपपात मे वैठा था। बातचीत के बीच श्री मनोहरमल लोढा ने आचायवर से निवेदन किया— गुरुदेव ! इस परिवार मे बटवारे को लेकर झझट चल रहा है। एक भाई तो चल बसे, पर झगडा समाप्त नही हुआ। आप कुछ मार्गदर्शन करे, जिससे इनमे पुन सामजस्य स्थापित हो जाये।' आचार्यवर ने सारी बात सुनी। शिक्षा फरमाई। दोनो ओर परिवर्तन आया। भाई पारसमलजी तथा श्री इन्द्रमल के पुत्रो ने जमीन आदि मामलो को वही सलटाया और वर्षो से चले आ रहे विवाद का चद क्षणो मे शमन हो गया।

मध्याह्न २ बजे एक विशेप कार्यक्रम आयोजित था। वह कार्यक्रम था—अमृत स्तभ व तुलसी अमृत विद्यापीठ का शिलान्यास। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त डा० दौलतसिह कोठारी इस कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि थे। अमृत-स्तम्भ का शिलान्यास श्री शकरलाल कोठारी तथा अमृत विद्यापीठ का श्री गुलाबचद लोढा ने किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री शुभकरण दसाणी, श्री के० एल० कोठारी, श्री सोहन लाल चडालिया, श्री कन्हैयालाल बाफणा, महतश्री जयरामदास ने अपने विचार रखे। श्री डी० एस० कोठारी ने शिक्षा का मूल आधार सयम बताते हुए शिक्षा को सद्-सस्कारो की जननी बताया।

अपने उद्बोधन मे आचार्यवर ने कहा—'रचनात्मक कार्यक्रम का अपना महत्त्व होता हे। ऐसे कायक्रमो से हमारा कोई सीधा सबध नही होता। शिक्षा के क्षत्र मे इन्होने प्राथमिक कार्यक्रम की बात हाथ मे ली ह। यह कार्य बच्चो को सस्कारी बनाने की दृष्टि से उपयोगी हे। ऐसे सस्थानो मे सस्कार देने के लिए जीवनदानी कायकर्ताओ की महती आवश्यकता हे।'

२६ नवबर/आज चातुर्मासिक चतुर्दशी थी। लोगो की महती उपस्थिति मे बडी हाजरी का नयनाभिराम दृश्य देखने को मिला। श्री रायचद गादिया (रामसिहजी का गुडा) ने सपत्नीक ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। आचार्यवर ने मर्यादा की महत्ता पर प्रकाश डाला। सभी साधु-साध्वियो ने आचार्यश्री के आह्वान पर खडे-खडे मर्यादाओ मे समागत सकल्पो का उच्चारण किया।

नाम काम आया

दक्षिण के वरिष्ट कार्यकर्ता श्री सोहनराज चडालिया द्वारा मद्रास

से प्रेपित एक पत्र मुनि सुमेरमल "लाडनू" ने परिषद् मे सुनाया। उस पत्र मे लिखा था—तेरापथ सभा भवन मे १४ नववर को साध्वी श्री किस्तुराजी के सान्निध्य मे आचार्य श्री तुलसी का जन्म दिन मनाया गया। इस कार्यक्रम मे तमिलनाडु के खाद्य मत्री श्री सुन्दरराजन् उपस्थित थे। उन्होने अपने वक्तव्य मे आचार्यश्री को महान् तपस्वी वताते हुए उनके जन-हितकारी कार्यो की सराहना की। जब मत्रीजी बोल रहे थे, उस समय बाहर मूसलाधार बरसात हो रही थी। आकाश वाणी का उद्घोपक बार-बार घोपणा कर रहा था—समुद्री तूफान मध्याह्न दो बजे तमिलनाडु मे प्रवेश कर रहा है। मत्रीजी इस व्यथा को कहे बिना नही रह सके। उन्होने भाव-विभोर होकर कहा—"आचार्य तुलसी जी! आप महान् है आप ही तमिलनाडु को आज तूफान से बचा सकते है। महापुरुप की अनन्त अनुकम्पा से हम त्राण पा सकेंगे। सभा मे उपस्थित सोहनराज चडालिया ने कहा—उस महापुरुप की अनुकपा से जरूर सकट टलेगा। इस कथन के मात्र आधा घटा वाद वर्षा थम गई। सुहावनी धूप निकल गई और रेडियो से यह उद्घोपणा हो गई—तूफान आध्र-प्रदेश की ओर मुड गया है। इस तरह तमिलनाडु समुद्री चक्रवात से बच गया।

यह घटना सुनाने के बाद आचार्यवर ने अपने प्रवचन मे चारभुजा से समागत मन्दिर के पुजारी श्री नाथूजी का जिक्र करते हुए कहा—"उन्होने मुझे भेट स्वरूप रुपयो के नोट चढाये। इस पर मैंने कहा—नाथूजी! हमे नोट नही, खोट दो। तत्काल उन्होने धूम्रपान का यावज्जीवन परित्याग कर कीमती भेट दी। ज्ञात रहे कि पुजारी नाथूजी धूम्रपान के पक्के आदी थे।

२७ नववर/आज कार्तिक पूर्णिमा थी। आचायवर की पावन सन्निधि मे चातुर्मास का केवल एक दिन शेप था। आमेटवासियो के लिए रात्रि मे विदाई समारोह का कार्यक्रम रहा। अनेको भाई-बहिनो ने कविता, मुक्तक, भापण व गीतिकाओ के द्वारा भावपूर्ण विदाई दी।

२८ नववर/प्रात आचार्यवर, युवाचार्यश्री समघ श्री देवीलाल कच्छारा के सदन "हप्पी होम" पधारे। वहा आचायवर ने कुछ भिक्षा भी ग्रहण की और पुन तेरापथ भवन पधार गए। ठीक ११ वजे मेवाड के महाराणा श्री महेन्द्रसिह जी आचार्यश्री से मिले तथा एकान्त मे कुछ वातचीत की। ११ ४५ वजे पाच साध्वियो को छेदोपस्थापनीय चारित्र (बडी दीक्षा) दिया गया, जिनकी दीक्षा २१ नववर को हुई थी।

विदाई-समारोह का द्वितीय चरण मध्याह्न १ बजे शुरु हुआ। पूरा अमृत समवसरण लोगो से खचाखच भरा था। इस अवसर पर महन्तश्री जयरामदास का अभिनन्दन किया गया। महन्तजी बडे ही श्रद्धानिष्ठ और विनम्र व्यक्ति है। उन्होने अपने भाषण मे इस चातुर्मास को ऐतिहासिक बताया। अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के मत्री श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट, श्री नन्दलाल मेहता, आदि ने अपने विचारो को प्रस्तुति दी। मुनिश्री मोहनलाल "आमेट" आदि मुनियो ने एक सुमधुर गीत गाया। मधु गेलडा व रेखा छाजेड ने परिसवाद प्रस्तुत किया। चातुर्मास व्यवस्था समिति के कार्या-ध्यक्ष श्री कन्हैयालाल कच्छारा ने आचार्यवर की विदाई के इस प्रसग पर आमेट की उपलब्धियो पर प्रकाश डालते हुए आचार्यवर के प्रति हार्दिक कृत-ज्ञता ज्ञापित की।

युवाचार्यश्री ने सतो के आगमन को दृष्टिकोण के बदलाव मे योगभूत मानते हुए कहा—२४ जून से २८ नवबर का यह कालखण्ड अमृत-महोत्सव के द्वितीय चरण के रूप मे आमेट नगर को प्राप्त हुआ। मात्र तेरह हजार की आबादी वाले इस छोटे कस्बे ने करीब चालीस हजार लोगो की एक साथ व्यवस्था का कुशलता से निर्वाह कर लोगो को आश्चर्य मे डाल दिया।" "युवाचार्यश्री ने केशीकुमार श्रमण व राजा प्रदेशी के कुछ रोचक प्रसग भी सुनाये।

महाराणा महेन्द्रसिह जी ने मेवाडी भाषा मे बोलते हुए कहा—"आचार्यश्री मेवाड पधारे। अमृत महोत्सव का अवसर मेवाडवासियो को दिया। यह आपश्री की विशेष कृपा है। वैसे उदयपुर राजघराने के साथ तेरापथ का पुराना सबध है। आपके श्रावक हमारे यहा वफादारी से काम किया करते थे। मुझे खुशी है आज मै दर्शन कर सका। आप जनता का भला कर रहे है, इसलिए जनता के सत बन गए है। केवल मेवाड या राजस्थान पर ही नही, पूरे भारत पर आपका असीम उपकार है।"

आचार्यवर ने अपने विदाई सदेश मे कहा—"आचार्य केशीकुमार श्रमण को विदा देने के लिए श्वेताविका नगरी से राजाप्रदेशी आया था और आज हमे इस आमेट कस्बे मे विदा देने के लिए मेवाड के महाराणा समु-पस्थित हैं। मेवाड के राजवश का भारतीय सस्कृति की सुरक्षा मे उल्लेखनीय योगदान रहा है।" उन्होने आगे कहा—"चरैवेति-चरैवेति" के सिद्धान्त को लेकर चलने वाले मुनि हमेशा सबको उबारने का सलक्ष्य प्रयास करते है।

आमेट सदा अध्यात्म से अनुप्राणित रहे, हरा-भरा रहे, गहरा रग रहे। वह रग कभी भी फीका न पडे। समय-समय पर हम भी इसे सिंचित करने का प्रयत्न करेंगे।"

कायक्रम के तत्काल बाद विशाल-जुलूस के साथ अमृत-समवसरण से विहार किया। आज दो विरोधी दृश्य देखने को मिले। एक ओर हजारो-हजारो स्त्री-पुरुषो के अविरल अश्रुधारा बह रही थी। दूसरी ओर सतो के चेहरो पर सहज मुस्कान बिखर रही थी। लक्ष्मी बाजार होते हुए भव्य जुलूस के साथ आचार्यवर सुनीलवाल निकेतन पहुचे। वही रात्रिकालीन प्रवास किया। साध्वी प्रमुखाश्री समेत सभी साध्विया श्री देवीलाल कच्छारा के मकान "हैप्पी होम" मे ठहरी।

क ॅ मो एव उपलब्धियो का वर्षावास

आमेट के इस पचमासा वर्षावास को कार्यक्रमो का वर्षावास कहा जा सकता है। अनेक उपलब्धियो के लिए यह वर्षावास यादगार बन गया है। समय-समय पर यहा अनेकविध कायक्रम समायोजित हुए। उन कार्यक्रमो मे स्थानीय तथा बाहर के हजारो-हजारो लोगो ने प्रफुल्लमना भाग लिया। आमेट के श्रद्धालु लोगो ने अपनी पूरी जिम्मेदारी का परिचय दिया। तेरह हजार की आबादी वाले इस कस्बे मे चालीस हजार लोगो की आवास आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था करना बडा दुरूह था। आमेट के श्रावको ने यह सिद्ध कर दिया कि उत्साह एव निष्ठा के साथ लग जाने पर बडे से बडा कार्य सुगमता से किया जा सकता है। आचायश्री तुलसी चातुर्मास व्यवस्था समिति ने अपने दायित्व को खूब निभाया। साथ ही बाहर से समागत यात्रियो ने भी भरपूर सहयोग किया। वातानुकूलित बगलो मे रहने वाले तथा सागोपाग व्यवस्था से सपन्न सदनो मे निवास करने वाले लोग भी प्रसन्नता पूर्वक तबूओ मे ठहरे। बरसात ने उनकी परीक्षा ली, फिर भी उनके चेहरो पर मुस्कान थिरक रही थी।

राजीव-लोगोवाल के बीच हस्ताक्षरित समझौते मे आचार्यश्री तुलसी की भूमिका के लिए इस आमेट चातुर्मास की स्मृति चिरस्थायी बन गई है। अकाली दल के अध्यक्ष सत हरचदसिंह लोगोवाल पजाब समस्या के समाधान के लिए सरकार से बातचीत के लिए कतई तैयार नही थे। आचायश्री के प्रयास से ही सरकार से बातचीत करने के लिए राजी हुये और कुछ ही दिनो मे उनका सरकार से समझौता हो गया। समझौता होने के तुरन्त बाद गृह-

मत्री का आमेट आगमन एक नये इतिहास की सृष्टि कर गया है।

समस्त मानव जाति के हितो की रक्षा के लिए तेरापथ के जरिये आचार्यश्री ने कई आयाम प्रस्तुत किए है—अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान। अमृत-महोत्सव के सदर्भ मे इस वष आहूत अणुव्रत-अधिवेशन मे नई शिक्षा नीति पर काफी महत्वपूर्ण परिचर्चा चली। इस परिचर्चा मे देश के जाने-माने शिक्षाविदो ने भाग लिया। इस चातुर्मास मे दो प्रेक्षाध्यान शिविर लगे, जिसमे सैकडो लोग लाभान्वित हुए। श्रद्धेय युवाचार्यश्री का सतत सान्निध्य व मार्ग-दर्शन शिविरार्थियो को मिलता रहा। जीवन-विज्ञान की दृष्टि से शिक्षको का शिविर लगा, जिसमे उनको जीवन-विज्ञान की सैद्धातिक व प्रायोगिक पृष्ठ-भूमि से अवगत कराया। ७ नववर को ग्रामीण विकास एव पचायत राज मत्रालय द्वारा आयोजित जीवन-विज्ञान-शिक्षा सगोष्ठी मे पूरे राजस्थान के अनेक जिलो के शिक्षाधिकारी, शिक्षाविद्, तथा शिक्षा सचिव ने भाग लिया। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के सान्निध्य मे सपन्न इस सगोष्ठी का पूरा सचालन ग्रामीण विकास एव पचायत राज मत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने किया।

इस चातुर्मास मे आचार्यवर के दशनार्थ बोहरा मुसलमानो का आवागमन काफी रहा। वैसे तो आमेट मे सैकडो घर बोहरा मुसलमानो के है। आचार्यवर से भेट कर वे काफी प्रसन्न होकर लौटते। विशाल तेरापथ भवन व पण्डाल को विस्मय से निहारते। शोक विमोचन हेतु आने वाले यात्रियो की सख्या मे वृद्धि हुई है। एक समय था बारह-बारह महीने कोने मे महिलाये सिसकती रहती थी। न जाने कितनी रूढ परपराओ से समाज जकडा हुआ था, पर आचार्यश्री की वर्षो की मेहनत अब रग ला रही है। थली मे इन परम्पराओ मे परिवर्तन आ गया था, किंतु सबसे ज्यादा रूढ समझे जाने वाले मेवाड-मारवाड मे भी भारी अन्तर आया है। इस प्रकार एक स्वस्थ वातावरण का निर्माण हुआ है। आमेट चातुर्मास मे अनेको परिवार शोक विमुक्ति के लिए आये।

अमृत-महोत्सव के सदभ मे अनेक नूतन कार्य सपादित हुए। उनमे मुमुक्षु बहिनो का वैयक्तिक शिविर, साधु-साध्वियो का नवाह्निक प्रेक्षा-प्रयोग, पर्युपण पव के दिनो मे उपासक दीक्षा आदि मुख्य है। श्रावको के बारह व्रतो का पुन सपादन हुआ। अमृत-महोत्सव गीत, जीवन-विज्ञान गीत, अहिंसा-सावभौम-गीत आदि अनेक गीतिकाओ की रचना हुई। रात्रि मे निष्पादित उन कार्यो मे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री तथा कुछ चुने हुए सत मौजूद

रहते। भगवती सूत्र पर आधारित त्रिदिवसीय जैन विद्या परिषद् भी एक विशेष उपलब्धिपूर्ण कार्य था।

भगवान महावीर की पचीसवी निर्वाण शताब्दी पर जैन समन्वय की दृष्टि से कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य हुए। एक ग्रन्थ, एक ध्वज, एक प्रतीक उस समय के उपलब्धिपरक कार्य थे। एक मवत्सरी व एक मच के लिए भी जी तोड कोशिशे हुई, पर क्न्हीि अपरिहार्य कारणो से सफलता नही मिली। बाद मे इस कार्य मे शिथिलता आ गई। अमृत-महोत्सव वर्ष मे आचार्यश्री ने एक मवत्सरी व एक मच के लिए पुन प्रयास प्रारभ किया। इस दृष्टि से अमृत-महोत्मव राष्ट्रीय समिति के अन्तर्गत जैन समन्वय प्रकोष्ठ की स्थापना की गई। इस प्रकोष्ठ के सयोजक हैं—श्री कन्हैयालाल छाजेड, उपमयोजक श्री भीखमचद 'भ्रमर' तथा श्री चन्दनमल 'चाद'। इस दल ने तीन यात्राये की। पृथक्-पृथक् स्थानो मे, आचार्यो, प्रवतको, एव विशिष्ट मुनियो से यह दल मिला। उन्हे आचायश्री तुलसी का जैन समन्वय पर प्रदत्त विशेप सदेश भी दिया। वे जहा गए, वहा सवत्सरी एक करने की बात बहुत दिलचस्पी से सुनी। सभी सम्प्रदायो मे इसके लिए गहरी तडफ है। जैन समन्वय के इस माहौल को देखकर यह निणय लिया गया कि उदयपुर मर्यादा-महोत्सव के अवसर पर एक सम्मेलन बुलाया जाये, जिसमे सभी सप्रदायो के प्रतिनिधियो को आमन्त्रित किया जाये और उन्हे खुलकर अपने मन्तव्यो को प्रस्तुत करने का मौका दिया जाये। जैन समन्वय की प्राची दिशा मे इस प्रकार एक नया सूर्य उदित हुआ।

जिन स्थानो मे सभा-सस्थाए होती हैं, समूह होता है वहा विचारभेद हो सकता है, पर विचारभेद से मनभेद अपेक्षित नही है। इस चातुर्मास मे अनेक स्थानो पर चल रहे झगडो का शमन हुआ। नाथद्वारा मे मर्यादा-महोत्सव सानन्द सपन्न होने के तत्काल वहा का तेरापथी समाज दो गुटो मे विभक्त हो गया। दोनो पक्षो ने समय-समय पर अपने विचारो को आचार्यवर के सामने रखा। आखिर आमेट मे दोनो पक्षो के प्रतिनिधि आये और इस बात के लिए वचनबद्ध हो गये कि वे केन्द्र के निणय को सहप स्वीकार करेंगे। आचार्यश्री के विशेप निर्देश पर मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने दोनो पक्षो की बात सुनकर आचार्यवर को निवेदित की। आचार्यश्री ने जो इगित किया, उसे दोनो पक्षो ने सहर्ष स्वीकार कर लिया और परस्पर गले मिलकर पूर्व के मनो-मालिन्य को भुला दिया।

ईडवा मे एक सार्वजनिक उपाश्रय को लेकर तेरापथी समाज मे दो दल बन गये थे। एक का नेतृत्व सुराणा तथा दूसरे का नेतृत्व कोठारी लोगो के हाथ मे था। सामजस्य स्थापित न होने से दोनो गुट आचार्यश्री के उपपात मे पहुचे। आखिरकार आचार्यवर के इगित के अनुसार कोठारी परिवार ने अपना आग्रह छोडा, और ईडवा का विवाद समाप्त हो गया। इस तरह अनेक स्थानो के छोटे-बडे विवादो का अत इस चातुर्मास मे हुआ।

चातुर्मास मे प्रात, मध्याह्न व रात्रि तीनो समय प्रवचन का कायक्रम रहा। प्रात आचार्यवर का प्रवचन दूसरे अग सूत्र ठाण पर होता। आचार्यवर के मुखारविन्द से निसृत गूढ से गूढ विपय भी सामान्य जनता के लिए हृदयगम हो जाते है। आचार्यवर से पूर्व मुनिश्री उदितकुमार उपदेश देते। वैसे तो वे जोधपुर चातुर्मास के बाद प्रात उपदेश देते आ रहे है। चातुर्मास मे उन्होने उपदेश मे उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन किया। प्रति रविवार को एक निश्चित विपय पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री का महत्त्वपूर्ण भापण होता। मध्याह्न मे चातुर्मास के पूर्वार्द्ध मे मुनिश्री कमल कुमार तथा उत्तरार्द्ध मे मुनि विजयकुमार ने व्याख्यान दिया। गुरुकुलवास मे एक लम्बी अवधि के बाद रात्रि मे जैन रामायण पर व्याख्यान हुआ। व्याख्यान का प्रारम्भ आचार्यवर ने किया। उसके बाद मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने पूरे चातुर्मास मे जैन रामायण पर प्रवचन दिया। मुनिश्री विजयकुमार ने रामायण-गायन मे सहयोग किया। रात्रि मे लोगो की अच्छी उपस्थिति रहती। कभी-कभी रात्रि मे विपय विशेप को लेकर आचार्यश्री युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण उद्बोधन होते। साय प्रतिक्रमण के बाद प्रेक्षाध्यान की कक्षा चलती, जिसमे मुनिश्री किशनलाल के प्रशिक्षण मे ध्यान के इच्छुक भाई-बहिन भाग लेते।

चातुर्मास मे प्रति रविवार मध्याह्न एक तात्विक कक्षा चलती, जिसे 'जैन विद्या ८५' कहा गया। इस कक्षा मे सैकडो युवक-युवतिया भाग लेते। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पत्राचार पाठमाला के पत्रो को पढा जाता, समझाया जाता और उसमे पूछे गये प्रश्नो का उत्तर विद्यार्थी अगले रविवार को लिख कर लाते। उन पत्रो मे जैन सिद्धान्त, इतिहास आदि की अवगति दी जाती। इस कक्षा का सचालन मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' ने सुचारु रूप से किया। विद्यार्थियो की क्षमता को और पैनी बनाने के लिए मुनि सुमेरमल 'लाडनू' उनसे प्रश्न पूछते। पत्र-वाचन मुनिश्री लोकप्रकाश करते। इस कक्षा मे आचायवर युवाचाय श्री का निरन्तर सान्निध्य, मार्गदर्शन व प्रोत्साहन

रहते। भगवती सूत्र पर आधारित त्रिदिवसीय जैन विद्या परिषद् भी एक विशेष उपलब्धिपूर्ण कार्य था।

भगवान महावीर की पचीसवी निर्वाण शताब्दी पर जैन समन्वय की दृष्टि से कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य हुए। एक ग्रन्थ, एक ध्वज, एक प्रतीक उस समय के उपलब्धिपरक काय थे। एक सवत्सरी व एक मच के लिए भी जी तोड कोशिशे हुई, पर किन्ही अपरिहार्य कारणो से सफलता नही मिली। बाद मे इस कार्य मे शिथिलता आ गई। अमृत-महोत्सव वर्ष मे आचार्यश्री ने एक सवत्सरी व एक मच के लिए पुन प्रयास प्रारभ किया। इस दृष्टि से अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति के अन्तर्गत जैन समन्वय प्रकोष्ठ की स्थापना की गई। इस प्रकोष्ठ के सयोजक है—श्री कन्हैयालाल छाजेड, उपसयोजक श्री भीखमचद 'भ्रमर' तथा श्री चन्दनमल 'चाद'। इस दल ने तीन यात्राये की। पृथक्-पृथक् स्थानो मे, आचार्यो, प्रवत्तको, एव विशिष्ट मुनियो से यह दल मिला। उन्हे आचार्यश्री तुलसी का जैन समन्वय पर प्रदत्त विशेष सदेश भी दिया। वे जहा गए, वहा सवत्सरी एक करने की बात बहुत दिलचस्पी से सुनी। सभी सम्प्रदायो मे इसके लिए गहरी तडफ है। जैन समन्वय के इस माहौल को देखकर यह निणय लिया गया कि उदयपुर मर्यादा-महोत्सव के अवसर पर एक सम्मेलन बुलाया जाये, जिसमे सभी सप्रदायो के प्रतिनिधियो को आमन्त्रित किया जाये और उन्हे खुलकर अपने मन्तव्यो को प्रस्तुत करने का मौका दिया जाये। जैन समन्वय की प्राची दिशा मे इस प्रकार एक नया सूर्य उदित हुआ।

जिन स्थानो मे सभा-सस्थाए होती है, समूह होता है वहा विचारभेद हो सकता है, पर विचारभेद से मनभेद अपेक्षित नही है। इस चातुर्मास मे अनेक स्थानो पर चल रहे झगडो का शमन हुआ। नाथद्वारा मे मर्यादा-महोत्सव सानन्द सपन्न होने के तत्काल वहा का तेरापथी समाज दो गुटो मे विभक्त हो गया। दोनो पक्षो ने समय-समय पर अपने विचारो को आचार्यवर के सामने रखा। आखिर आमेट मे दोनो पक्षो के प्रतिनिधि आये और इस बात के लिए वचनबद्ध हो गये कि वे केन्द्र के निर्णय को सहप स्वीकार करेगे। आचार्यश्री के विशेष निर्देश पर मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने दोनो पक्षो की बात सुनकर आचार्यवर को निवेदित की। आचार्यश्री ने जो इगित किया, उसे दोनो पक्षो ने सहप स्वीकार कर लिया और परस्पर गले मिलकर पूव के मनो-मालिन्य को भुला दिया।

ईडवा मे एक सार्वजनिक उपाश्रय को लेकर तेरापथी समाज मे दो दल बन गये थे। एक का नेतृत्व सुराणा तथा दूसरे का नेतृत्व कोठारी लोगो के हाथ मे था। सामजस्य स्थापित न होने मे दोनो गुट आचार्यश्री के उपपात मे पहुचे। आखिरकार आचार्यवर के इगित के अनुसार कोठारी परिवार ने अपना आग्रह छोडा, और ईडवा का विवाद समाप्त हो गया। इस तरह अनेक स्थानो के छोटे-बडे विवादो का अत इस चातुर्मास मे हुआ।

चातुर्मास मे प्रात, मध्याह्न व रात्रि तीनो समय प्रवचन का कार्यक्रम रहा। प्रात आचार्यवर का प्रवचन दूसरे अग सूत्र ठाण पर होता। आचार्यवर के मुखारविन्द से निसृत गूढ से गूढ विषय भी सामान्य जनता के लिए हृदयगम हो जाते है। आचार्यवर से पूर्व मुनिश्री उदितकुमार उपदेश देते। वैसे तो वे जोधपुर चातुर्मास के बाद प्रात उपदेश देते आ रहे है। चातुर्मास मे उन्होने उपदेश मे उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन किया। प्रति रविवार को एक निश्चित विषय पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री का महत्त्वपूर्ण भाषण होता। मध्याह्न मे चातुर्मास के पूर्वार्द्ध मे मुनिश्री कमल कुमार तथा उत्तरार्द्ध मे मुनि विजयकुमार ने व्याख्यान दिया। गुरुकुलवास मे एक लम्बी अवधि के बाद रात्रि मे जैन रामायण पर व्याख्यान हुआ। व्याख्यान का प्रारम्भ आचार्यवर ने किया। उसके बाद मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने पूरे चातुर्मास मे जैन रामायण पर प्रवचन दिया। मुनिश्री विजयकुमार ने रामायण-गायन मे सहयोग किया। रात्रि मे लोगो की अच्छी उपस्थिति रहती। कभी-कभी रात्रि मे विषय विशेष को लेकर आचार्यश्री युवाचार्यश्री के महत्त्वपूण उद्बोधन होते। साय प्रतिक्रमण के बाद प्रेक्षाध्यान की कक्षा चलती, जिसमे मुनिश्री किशनलाल के प्रशिक्षण मे ध्यान के इच्छुक भाई-बहिन भाग लेते।

चातुर्मास मे प्रति रविवार मध्याह्न एक तात्विक कक्षा चलती, जिसे 'जैन विद्या ८५' कहा गया। इस कक्षा मे सैकडो युवक-युवतिया भाग लेते। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पत्राचार पाठमाला के पत्रो को पढा जाता, समझाया जाता और उसमे पूछे गये प्रश्नो का उत्तर विद्यार्थी अगले रविवार को लिख कर लाते। उन पत्रो मे जैन सिद्धान्त, इतिहास आदि की अवगति दी जाती। इस कक्षा का सचालन मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' ने सुचारू रूप से किया। विद्यार्थियो की क्षमता को और पैनी बनाने के लिए मुनि सुमेरमल 'लाडनू' उनसे प्रश्न पूछते। पत्र-वाचन मुनिश्री लोकप्रकाश करते। इस कक्षा मे आचार्यवर युवाचाय श्री का निरन्तर सान्निध्य, मार्गदर्शन व प्रोत्साहन

रहते। भगवती सूत्र पर आधारित त्रिदिवसीय जैन विद्या परिषद् भी एक विशेष उपलब्धिपूर्ण कार्य था।

भगवान महावीर की पचीसवी निर्वाण शताब्दी पर जैन समन्वय की दृष्टि से कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य हुए। एक ग्रन्थ, एक ध्वज, एक प्रतीक उस समय के उपलब्धिपरक कार्य थे। एक सवत्सरी व एक मच के लिए भी जी तोड कोशिशे हुई, पर किन्ही अपरिहार्य कारणो से सफलता नही मिली। बाद मे इस कार्य मे शिथिलता आ गई। अमृत-महोत्सव वर्ष मे आचार्यश्री ने एक सवत्सरी व एक मच के लिए पुन प्रयास प्रारभ किया। इस दृष्टि से अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति के अन्तर्गत जैन समन्वय प्रकोष्ठ की स्थापना की गई। इस प्रकोष्ठ के सयोजक हैं—श्री कन्हैयालाल छाजेड, उपसयोजक श्री भीखमचद 'भ्रमर' तथा श्री चन्दनमल 'चाद'। इस दल ने तीन यात्राये की। पृथक्-पृथक् स्थानो मे, आचार्यो, प्रवर्तको, एव विशिष्ट मुनियो से यह दल मिला। उन्हे आचार्यश्री तुलसी का जैन समन्वय पर प्रदत्त विशेष सदेश भी दिया। वे जहा गए, वहा सवत्सरी एक करने की बात बहुत दिलचस्पी से सुनी। सभी सम्प्रदायो मे इसके लिए गहरी तडफ है। जैन समन्वय के इस माहौल को देखकर यह निर्णय लिया गया कि उदयपुर मर्यादा-महोत्सव के अवसर पर एक सम्मेलन बुलाया जाये, जिसमे सभी सप्रदायो के प्रतिनिधियो को आमत्रित किया जाये और उन्हे खुलकर अपने मन्तव्यो को प्रस्तुत करने का मौका दिया जाये। जैन समन्वय की प्राची दिशा मे इस प्रकार एक नया सूर्य उदित हुआ।

जिन स्थानो मे सभा-सस्थाए होती हैं, समूह होता है वहा विचारभेद हो सकता है, पर विचारभेद से मनभेद अपेक्षित नही है। इस चातुर्मास मे अनेक स्थानो पर चल रहे झगडो का शमन हुआ। नाथद्वारा मे मर्यादा-महोत्सव सानन्द सपन्न होने के तत्काल वहा का तेरापथी समाज दो गुटो मे विभक्त हो गया। दोनो पक्षो ने समय-समय पर अपने विचारो को आचार्यवर के सामने रखा। आखिर आमेट मे दोनो पक्षो के प्रतिनिधि आये और इस बात के लिए वचनबद्ध हो गये कि वे केन्द्र के निर्णय को सहर्ष स्वीकार करेंगे। आचार्यश्री के विशेष निर्देश पर मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने दोनो पक्षो की बात सुनकर आचार्यवर को निवेदित की। आचार्यश्री ने जो इगित किया, उसे दोनो पक्षो ने सहर्ष स्वीकार कर लिया और परस्पर गले मिलकर पूर्व के मनो-मालिन्य को भुला दिया।

ईडवा मे एक सार्वजनिक उपाश्रय को लेकर तेरापथी समाज मे दो दल बन गये थे। एक का नेतृत्व सुराणा तथा दूसरे का नेतृत्व कोठारी लोगो के हाथ मे था। सामजस्य स्थापित न होने मे दोनो गुट आचार्यश्री के उपपात मे पहुचे। आखिरकार आचायवर के इगित के अनुसार कोठारी परिवार ने अपना आग्रह छोडा, और ईडवा का विवाद समाप्त हो गया। इस तरह अनेक स्थानो के छोटे-वडे विवादो का अत इस चातुर्मास मे हुआ।

चातुर्मास मे प्रात, मध्याह्न व रात्रि तीनो समय प्रवचन का कार्यक्रम रहा। प्रात आचार्यवर का प्रवचन दूसरे अग सूत्र ठाण पर होता। आचायवर के मुखारविन्द से निसृत गूढ से गूढ विपय भी सामान्य जनता के लिए हृदयगम हो जाते है। आचायवर से पूर्व मुनिश्री उदितकुमार उपदेश देते। वैसे तो वे जोधपुर चातुर्मास के बाद प्रात उपदेश देते आ रहे है। चातुर्मास मे उन्होने उपदेश मे उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन किया। प्रति रविवार को एक निश्चित विपय पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री का महत्त्वपूण भापण होता। मध्याह्न मे चातुर्मास के पूर्वार्द्ध मे मुनिश्री कमल कुमार तथा उत्तरार्द्ध मे मुनि विजयकुमार ने व्याख्यान दिया। गुरुकुलवास मे एक लम्वी अवधि के बाद रात्रि मे जैन रामायण पर व्याख्यान हुआ। व्याख्यान का प्रारम्भ आचार्यवर ने किया। उसके बाद मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने पूरे चातुर्मास मे जैन रामायण पर प्रवचन दिया। मुनिश्री विजयकुमार ने रामायण-गायन मे सहयोग किया। रात्रि मे लोगो की अच्छी उपस्थिति रहती। कभी-कभी रात्रि मे विपय विशेप को लेकर आचार्यश्री युवाचायश्री के महत्त्वपूण उद्वोधन होते। साय प्रतिक्रमण के बाद प्रेक्षाध्यान की कक्षा चलती, जिसमे मुनिश्री किशनलाल के प्रशिक्षण मे ध्यान के इच्छुक भाई-वहिन भाग लेते।

चातुर्मास मे प्रति रविवार मध्याह्न एक तात्त्विक कक्षा चलती, जिसे 'जैन विद्या ८४' कहा गया। इस कक्षा मे सैकडो युवक-युवतिया भाग लेते। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पत्राचार पाठमाला के पत्रो को पढा जाता, समझाया जाता और उसमे पूछे गये प्रश्नो का उत्तर विद्यार्थी अगले रविवार को लिख कर लाते। उन पत्रो मे जैन सिद्धान्त, इतिहास आदि की अवगति दी जाती। इस कक्षा का सचालन मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' ने सुचारु रूप से किया। विद्यार्थियो की क्षमता को और पैनी वनाने के लिए मुनि सुमेरमल 'लाडनू' उनसे प्रश्न पूछते। पत्र-वाचन मुनिश्री लोकप्रकाश करते। इस कक्षा मे आचायवर युवाचाय श्री का निरन्तर सान्निध्य, मार्गदर्शन व प्रोत्साहन

रहते। भगवती सूत्र पर आधारित त्रिदिवसीय जैन विद्या परिषद् भी एक विशेष उपलब्धिपूर्ण कार्य था।

भगवान महावीर की पचीसवी निर्वाण शताब्दी पर जैन समन्वय की दृष्टि से कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य हुए। एक ग्रन्थ, एक ध्वज, एक प्रतीक उस समय के उपलब्धिपरक काय थे। एक सवत्सरी व एक मच के लिए भी जी तोड कोशिशे हुई, पर क्निही अपरिहार्य कारणो से सफलता नही मिली। बाद मे इस कार्य मे शिथिलता आ गई। अमृत-महोत्सव वर्प मे आचार्यश्री ने एक मवत्सरी व एक मच के लिए पुन प्रयास प्रारभ किया। इस दृष्टि से अमृत-महोत्मव राष्ट्रीय समिति के अन्तर्गत जैन समन्वय प्रकोप्ठ की स्थापना की गई। इस प्रकोष्ठ के सयोजक है—श्री कन्हैयालाल छाजेड, उपसयोजक श्री भीखमचद 'भ्रमर' तथा श्री चन्दनमल 'चाद'। इस दल ने तीन यात्राये की। पृथक्-पृथक् स्थानो मे, आचार्यो, प्रवतको, एव विशिप्ट मुनियो से यह दल मिला। उन्हे आचार्यश्री तुलसी का जैन समन्वय पर प्रदत्त विशेप सदेश भी दिया। वे जहा गए, वहा सवत्सरी एक करने की बात बहुत दिलचस्पी से सुनी। सभी सम्प्रदायो मे इसके लिए गहरी तडफ है। जैन समन्वय के इस माहौल को देखकर यह निणय लिया गया कि उदयपुर मर्यादा-महोत्सव के अवसर पर एक सम्मेलन बुलाया जाये, जिसमे सभी सप्रदायो के प्रतिनिधियो को आमन्त्रित किया जाये और उन्हे खुलकर अपने मन्तव्यो को प्रस्तुत करने का मोका दिया जाये। जैन समन्वय की प्राची दिशा मे इस प्रकार एक नया सूर्य उदित हुआ।

जिन स्थानो मे सभा-मस्थाए होती हे, समूह होता है वहा विचारभेद हो सकता है, पर विचारभेद से मनभेद अपेक्षित नही है। इस चातुर्मास मे अनेक स्थानो पर चल रहे झगडो का शमन हुआ। नाथद्वारा मे मर्यादा-महोत्सव सानन्द सपन्न होने के तत्काल वहा का तेरापथी समाज दो गुटो मे विभक्त हो गया। दोनो पक्षो ने समय-समय पर अपने विचारो को आचायवर के सामने रखा। आखिर आमेट मे दोनो पक्षो के प्रतिनिधि आये और इस वात के लिए वचनवद्ध हो गये कि वे केन्द्र के निणय को सहर्ष स्वीकार करेगे। आचार्यश्री के विशेप निर्देश पर मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने दोनो पक्षो की वात सुनकर आचार्यवर को निवेदित की। आचार्यश्री ने जो इगित किया, उसे दोनो पक्षो ने सहर्प स्वीकार कर लिया और परस्पर गले मिलकर पूर्व के मनो-मालिन्य को भुला दिया।

वरिष्ठ श्रावक श्री नाथूलाल नवलखा ने अपने विचार रखे । समाज के साथ जमीन को लेकर चल रहे झझट के तहत मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने श्री सोहनलाल ओस्तवाल से वातचीत की । अन्त मे झझट को समाप्त करने हेतु एक तीन सदस्यीय आयोग का गठन हुआ और इस आयोग द्वारा प्रदत्त निणय को सवके लिए स्वीकार्य मान लिया गया । केलवा चातुर्मास करने वाली साध्वी श्री यशोमती ने आज आचार्यवर के दर्शन किये ।

३० नम्बवर/आज युवाचार्यश्री राजनगर की ओर प्रस्थित हो गये । वहा तुलसी साधना शिखर पर दो शिविरो का कार्यक्रम निर्धारित था । श्रद्धेय युवाचार्यश्री २ दिसम्बर को राजनगर पधार जायेगे । १६ दिसवर को दोनो शिविरो की समाप्ति के वाद सभवत युवाचार्यश्री रेलमगरा मे आचार्यवर के दर्शन कर लेगे ।

प्रात मुखारविन्द के लुचन के वाद आचार्यवर प्रवचन हेतु पधारे । सवप्रथम साध्वी प्रमुखा श्री का महत्त्वपूर्ण उद्‌बोधन हुआ । वाद मे आचायवर का प्रवचन हुआ । मध्यान्ह साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे महिला मण्डल का कार्यक्रम समायोजित हुआ । रात्रि विदाई समारोह मे ठाकुर मानसिह, श्री चादमल चौपड, श्री गिरवर जोशी ने अपने विचारो की प्रस्तुति दी । आचार्यश्री ने कम समय मे अधिक काय करने पर वल दिया । रात्रि कार्यक्रम के बाद तीन सदस्यीय आयोग द्वारा प्रदत्त फैसले पर मामूली विचार-विनिमय के वाद दोनो पक्षो मे एक लिखित समझौता हो गया । दोनो पक्षो ने आचार्यवर के सम्मुख खमण-खामना किया । इस झझट के सफल समाधान के अनन्तर लोगो ने आचार्यवर से आग्रह किया कि इन दोनो भाइयो (दोनों सामने बैठे थे) मे वीस वर्षो से अनवन है । एक दूसरे के घर आना, वोलना आदि सारे व्यवहार वन्द कर रखे है । आपकी केवल करुणा दृष्टि की अपेक्षा हे । आचायवर ने उनको समझाया, आखिर आमेट के श्री कन्हैयालाल कच्छारा को पच मानकर यह लिखित दे दिया कि इनके द्वारा दिया गया फैसला हमारे लिए स्वीकाय होगा । वीस वर्षो से चल रहे उलझाव का इस प्रकार मात्र चद मिनटो मे सुलझाव हो गया ।

दिसवर का पहला दिन आचायवर चालीस श्रद्धा के घरो वाले क्षेत्र मोखुन्दा पधारे गये । आज उदयपुर जिला छोडकर भीलवाडा जिला मे प्रवेश किया । मार्गवर्ती गाव माहीमपुर मे ग्रामवासियो के मध्य आचाय श्री का उद्‌बोधन हुआ । उपासना करने वाले भाइयो के मार्ग की पूरी जानकारी

के अभाव मे महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री को पाच कि० मी० का अतिरिक्त चक्कर पड गया। स्वागत कायक्रम मे प्रधानाध्यापक के भापण के वाद आचार्यवर ने अपने प्रवचन मे कहा—"सुख के इच्छुक व्यक्तियो को सुख का ही रास्ता अपनाना चाहिए।" मध्यान्ह मे भी आचार्यवर का प्रवचन हुआ। आज वोरियापुर से श्री भेरूलाल खाव्या का परिवार आचार्यवर के दशनार्थ पहुचा। उनकी पत्नी का ७५ वर्ष की आयु मे तिविहार अनशन मे स्वर्गवास हो गया था।

२ दिसवर/आज प्रात प्रवचन मे आचार्यवर ने मृगापुत्र प्रसग का सुन्दर विवेचन किया। टॉडगढ चातुर्मास करने वाली साध्वी श्री पिस्ताजी ने प्रवचन के समय दर्शन किये। मध्यान्ह मे महिलाओ ने साध्वी प्रमुखाश्री की उपासना की। भीलवाडा जिले के सहायक जिलाधीश आचार्यवर से मिले। उन्होने अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान पर वातचीत की। वर्षो से अटके पडे तेरापथ सभा के चुनाव भी सपन्न हो गये। श्री कजोडीमल अध्यक्ष तथा श्री लक्ष्मीलाल मत्री चुने गये। रात्रि प्रवचन मुनि सुमेरमल "लाडनू" ने दिया, जिसमे अनेक लोगो ने व्यसन मुक्त जीवन जीने का सकल्प लिया। मोखुन्दा मे अणुव्रत समिति का भी विधिवत् गठन हुआ। अध्यापक श्री पन्नालाल शर्मा अध्यक्ष व वकील हीरालाल मत्री बने।

३ दिसवर/ मोखुन्दा का द्विदिवसीय प्रवास सपन्न कर विहार करते हुए आचायवर नव निर्मित तेरापथ भवन पधारे। वहा से कोसीथल पधार गये। रावले के चौक मे स्वागत कार्यक्रम हुआ। स्थानकवासी वहुल इस कस्वे मे आचार्यवर ने कहा—"वर्तमान मे जैनो मे अहिंसा की साधना तो है, पर सत्य और अपरिग्रह से दूर हटते जा रहे है।" कोसीथल के ठाकुर व प्रधानाध्यापक ने स्वागत मे अपने विचार रखे। इस स्वागत समारोह मे वाहर के लोगो की महती उपस्थिति थी। आचायवर ने काफी श्रम करके एक तेरा-पथी परिवार की डगमगाती श्रद्धा को स्थिर किया। गगापुर चातुर्मास करने वाली साध्वी श्री कचनप्रभा ने आज दर्शन किये। रात्रि प्रतिक्रमण के वाद आचार्यवर के साथ जैन युवको का रोचक प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम चला। रात्रि मे मुनि सुमेरमल "लाडनू' ने प्रवचन दिया। आचार्यवर का प्रवास स्थल रावला था। दूसरे दिन ठाकुर साहव के निवेदन पर आचायवर ने उनके तथा ठुकरानीजी के हाथ से भिक्षा ग्रहण की।

४ दिसवर/कोसीथल से विहार कर आचार्यवर देवरिया पधारे।

स्वागत समारोह मे वर्धमान श्रमण सघ के श्री कोठारी ने अपने विचार रखे । श्री नानालाल कोठारी ने अभिनदन पत्र का वाचन किया । आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे कहा—"जातियो का गठन मात्र सुविधा के लिए हुआ, लडाई करने के लिए नही । जाति की वदौलत कोई ऊच-नीच नही है । प्रत्येक व्यक्ति एक दिन मे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शुद्र चारो वन जाता है ।" प्रवचन के वाद जोजावर चातुर्मास करने वाले मुनिश्री उगमराज ने आचार्यवर के दर्शन किये । मध्यान्ह मे साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे रूढि उन्मूलन की दृष्टि से एक विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ । रात्रि मे आचायवर के सान्निध्य मे किसान सम्मेलन का आयोजन हुआ । मुनि सुमेरमल "लाडनू" ने प्राग् वक्तव्य दिया । मुनि श्री उगमराज ने अभ्यर्थना मे दो शब्द कहे । आचार्यवर के प्रभावी प्रवचन से प्रभावित ५०० जनो ने शराब, मास आदि का परित्याग किया । २०० छात्रो ने धुम्रपान न करने का सकल्प लिया । उपस्थिति करीब दो हजार की थी ।

रायपुर मे कन्हैया लाल सुतरिया की मा का ८० वर्ष की अवस्था मे देहान्त हो गया । सात दिनो मे शोक की रस्म पूरी करके आज आचार्यवर के दर्शन किये । वाणी के असमय व परस्पर गलत फहमी से मीठालाल व शाती-लाल के पुत्र के बीच मनमुटाव चल रहा था । आचार्यश्री के प्रयत्न से उन्होने आपस मे खमण-खामना कर लिया ।

५ दिसबर/आज शोक विमोचन हेतु सूरतगढ से नौलखा परिवार आया । श्री गौरीशकर के पिता पिचासी वर्षीय श्री बनेचद नौलखा का निधन हो गया था । वे एक दृढधर्मी श्रावक थे । प्रतिवर्ष गुरु दर्शन किया करते थे । अत समय मे उनके भावो मे निर्मलता आ गई थी । ऐसा उनके व्यवहार से प्रतीत हुआ । उनको २५ घटे तिविहार व १ घटा चौविहार अनशन आया । प्रात प्रवचन के वाद आमीन्द चातुर्मास करने वाले मुनिश्री ताराचद ने दर्शन किये । आमीन्द के सैकडो व्यक्ति इस अवसर पर मौजूद थे । मध्यान्ह २ ४५ वजे देवरिया से विहार कर उललाई पधारे । रात्रि कार्यक्रम मे मुनि सुमेरमल "लाडनू" का प्रवचन हुआ । उपस्थिति १००० थी । रात्रि मे गगापुर से एक वस दर्शनार्थ आई । साध्वी प्रमुखाश्री का रात्रि कार्यक्रम देवरिया मे हुआ । देवरिया गाव मे कई माहेश्वरियो ने जैन धर्म की दीक्षा स्वीकार की । श्री मोहनलाल चपलोत ने शीलव्रत ग्रहण किया ।

६ दिसबर/प्रात मार्गवर्ती गाव गिडिया मे सक्षिप्त उद्बोधन देने के

वाद आचायवर भ्फोर पधारे । खचाखच भरे चौक मे आमेट पचायत समिति के प्रधान श्री गिरिवर जोशी, सरपच, उपसरपच आदि ने स्वागत-भापण किये । आचायश्री ने दृढ शव्दो मे कहा—"इसानियत के विना कोई भी व्यक्ति धार्मिक नही वन सकता । यदि कोई गैर इसानियत व्यक्ति अपने को धार्मिक कहने का दभ भरता हे, तो वह धम के साथ मखौल करता है ।" मध्यान्ह मे मुनिश्री विजयकुमार के वक्तव्य के वाद आचाय श्री का प्रवचन हुआ । पाश्ववर्त्ती गावो से लोगो का दिन भर ताता सा लगा रहा । रात्रि मे मुनि सुमेरमल "लाडनू" का प्रवचन हुआ । माढा (पाली) से दो मेटाडोर लेकर पीतल्या परिवार शोक मुक्ति के लिए भ्फोर पहुचा । उनके परिवार के वरिष्ट सदस्य श्री पन्नालाल पीतल्या का ८० वष की आयु मे निधन हो गया था । खिवाडा निवासी श्री वक्तावरमल काठेड अपनी पुत्री को लेकर आचायवर के दशनाथ पहुचे । उनके चालीस वर्षीय दामाद श्री हेमराज गादिया का चिकमगलूर (कर्नाटक) मे देहान्त हो गया ।

आम की होड आमली नही कर सकती

६ दिसबर/आचायवर भ्फोर से मात्र डेट कि० मी० का विहार कर नेगडिया का खेडा पधारे । आचायवर पहले यहा एक घटे ही ठहरना चाहते थे, पर कल भ्फार गाव मे सरपच समेत इस गाव के सैकडो व्यक्ति आये । आचायश्री ने उनको समझाया—कल हमे कई गावो मे जाना है । इसलिए तुम्हारे गाव मे घटा भर रहकर आगे गावो मे चले जाये, तो हमारे सुविधा रहेगी ।

लोग बोल उठे—यह कैसे सभव हो सकता हे । हम पच्चीस वर्षो से आपकी वाट निहार रहे है । कितने घर हे हमारे गाव मे । आप एक घटे मे कैसे जा सकते है ?

आचार्यश्री—पीछे सतो को छोड दूगा, उनका लाभ लेना, मुझे आगे जाने दो ।

इतने मे सरपच वोल पडे—साधु सती तो हर साल आवै ही हे, ओर आगे भी आसी, पर आम की होड आमली कदै नी कर सके । तकलीफ तो हवेसी किंतु पधारणो भी पडी और रहणो भी पडी ।"

गाववासियो की अतिशय भुक्ति को देख आचार्यवर रीझ गये । मध्यान्ह दो वजे तक वहा विराजे । श्री कजोडीमल कोठारी ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया । नेगडिया का खेडा से विहार कर छापरी, गोवल

खजूरिया होते हुए माय खाखला पधारे। इन गावो मे सैकडो लोगो ने व्यसन, धूम्रपान आदि छोडा। खाखला मे रात्रि मे आचार्यवर से पूर्व मुनि श्री मोहनलाल "आमेट" ने प्रवचन दिया। उसके बाद आचार्यवर का प्रवचन हुआ। अनेक लोगो ने विविध त्याग-प्रत्याख्यान किये। खाखला मे तेरापथ के ९ घर है। वणोल निवासी एक तेरापथी युवा सरकारी कर्मचारी है। अब तक उन्होने किसी प्रकार की रिश्वत नही ली। इस कारण उन्हे एक बार जेल की शिकचो मे बद कर दिया गया। उन्हे पुन फसाने की चेष्टा की गई पर उच्च न्यायालय से वे मुकदमा जीत गये। आज उन्होने आजीवन रिश्वत न लेने सकल्प ले लिया।

८ दिसबर/प्रात आचार्यवर सालेरा होते हुए कागनी पहुचे। सालेरा मे आचार्यवर ने कुछ भिक्षा ग्रहण की तथा प्रवचन दिया। ५० लोगो ने दारू छोडी। १० ३० बजे कागनी मे स्वागत गीत, भाषण के बाद आचार्यवर का प्रवचन हुआ। प्रवचनोपरान्त १५ व्यक्तियो ने धूम्रपान तथा ६५ जनो ने शराब न पीने का नियम लिया। मध्यान्ह मे राजस्थान के ग्रामीण विकास मत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने आचार्यवर के दर्शन किये। वे अभी चुरू लोक सभा उपचुनाव मे पार्टी के इचार्ज ह, फिर भी समय निकाल कर आये। मध्यान्ह २ बजे विहार कर गगापुर गाव बाहिर "देव रमण" पधारे। स्वागत का सक्षिप्त कायक्रम रहा। मेवाड के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री देवेन्द्रकुमार हिरण ने अपने घर पधारने पर आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। रात्रि मे पुन श्री रामपाल उपाध्याय आये और कुछ समय बातचीत की।

आचार्य तुलसी अमृत-महाविद्यालय का शिलान्यास

आचार्य श्री तुलसी अमृत महोत्सव वर्ष मे मेवाड मे रचनात्मक कार्यो का नया युग प्रारम्भ हुआ है। मेवाडव्यापी अमृत कलश पदयात्रा के रचनात्मक अभियान से अमृत महोत्सव का शुभारम्भ हुआ, वही दूसरी ओर रचनात्मक सस्थाओ की शृखला भी प्रारम्भ हुई। मेवाड के विभिन्न अचलो से शिक्षात्मक एव रचनात्मक सस्थाओ का उद्भव हुआ है।

९ दिसबर/गगापुर के लाखोला चौराहे पर आचायवर के सान्निध्य मे राजस्थान के राज्यपाल श्री वसन्तराव पाटिल ने आचार्यश्री तुलसी अमृत महाविद्यालय की आधारशिला रखी। समारोह मे पूर्व कार्यवाहक प्रधानमत्री श्री गुलजारीलाल नन्दा, पूर्व मुख्यमत्री श्री शिवचरण माथुर, पूव सिचाई मत्री श्री रामप्रसाद लड्ढा, राजस्थान के ग्रामीण विकास मत्री श्री रामपाल उपा-

ध्याय, श्री शुभकरण दसाणी, विशेष रूप से उपस्थित थे।

साध्वी परिवार के समूह गान "विद्या के प्रागण मे अब व्यापक जीवन विज्ञान हो, शिक्षा का नव अभियान हो" से समारोह का शुभारभ हुआ। श्री सुन्दरलाल मेहता, श्री देवेन्द्रकुमार हिरण एव श्री रामपाल उपाध्याय ने समागत अतिथिगणो का विनम्र अभिनन्दन किया तथा आगन्तुक अतिथियो को शिरोपाव व आचाय श्री तुलसी का वडा फोटो भेट किया। भीलवाडा कालेज के प्राचाय महावीर राज गेलडा, श्री शिवचरण माथुर, श्री रामप्रसाद लढ्ढा ने भी सभा को सबोधित किया।

स्वागताध्यक्ष श्री रामपाल उपाध्याय ने कहा—"प्रस्तावित महाविद्याय मे आध्यात्मिक नैतिक शिक्षा, जीवन-विज्ञान तथा प्रेक्षाध्यान के आयाम होगे। यह महाविद्यालय अपनी अलग पहचान का होगा।"

राज्यपाल महोदय ने अपने वक्तव्य मे कहा—"आध्यात्मिकता के आधार पर दी जाने वाली शिक्षा से एक आदर्श शैक्षणिक प्रवृत्ति का सचालन हो, जो लोगो म नैतिकता, मित्रता और आदश चरित्र की भावना भर कर उसे अच्छा नागरिक बनाने मे महत्त्वपूण भूमिका अदा करेगी।" उन्होने आचायश्री को महान् व्यक्तित्व का धनी बताया।

साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा, मुनिश्री सुखलाल ने भी सभा को सबोधित किया। मुनिश्री सुखलाल ने भीलवाडा चातुर्मास परिसपन्न कर गाव-गाव मे अणुव्रत की अलख जगाते हुए आज आचायवर के दर्शन किये। उन्होने स्वागत मे दो मुक्तक भी बोले। दस हजार की विशाल उपस्थिति मे आचार्य प्रवर ने अपने उद्बोधन मे कहा—"शिक्षा जीवन का अभिन्न अग है। जीवन-विज्ञान आज की शिक्षा मे व्याप्त विसगतियो को दूर करने मे सक्षम ह। प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान अणुव्रत के काय को प्रभावी बनाने मे सहयोगी हे। आज का आयोजन रचनात्मक एव प्रयोजनात्मक ह।"

आचायश्री तुलसी अमृत महाविद्यालय की योजना के क्रियान्वयन मे राज्य के मत्री श्री रामपाल उपाध्याय का अपूर्व योगदान प्राप्त हो रहा ह। शिलान्यास समाराह का सयोजन श्री देवेन्द्रकुमार हिरण ने प्रभावी ढग से किया।

आचार्य तुलसी अमृत-महाविद्यालय के लिए आज जो अनुदान घोपित हुआ, वह इस प्रकार है—

११ लाख ५० हजार—अ० भा० रा० स० द्वारा श्री शुभकरण

दसाणी

५ लाख—को-ओपरेटिव मिल, गगापुर

३ लाख—पचायत समिति, गगापुर

२ लाख—नगरपालिका, गगापुर

१ लाख—कृषि उपज मडी, गगापुर

२ लाख—रायपुर व साहडा विधानसभा क्षेत्र।

५१ हजार—श्री राजमल सिंघवी (आशाहोली)

इस प्रकार कुल २५ लाख रुपयो की राशि चद क्षणो मे ही हो गई। कार्यक्रम के वाद राजस्थान के पूर्व मुख्यमत्री श्री शिवचरण माथुर ने कालू कल्याण कुज मे आचार्यवर के साथ एकान्त मे वातचीत की। उन्होने २२ दिसवर को रेलमगरा मे दर्शन करने की बात कही। कार्यक्रम से कालू कल्याण कुज लौटते वक्त आचार्यवर गगाबाई के मदिर मे पधारे। वहा के न्यासियो ने आचार्यप्रवर का स्वागत किया। गगाबाई ग्वालियर की महारानी थी। वह यहा स्वर्गस्थ हो गई। उसी क नाम पर यह गगापुर नगर बसा। पूर्व मे इस गाव का नाम लालपुरा था।

सत्ता शाश्वत नहीं : इन्सानियत शाश्वत है

मध्यान्ह महामहिम राज्यपाल श्री बसन्तराव पाटिल आचार्यवर से मिलने आये। साथ मे उपाध्याय जी तथा अनेक कार्यकर्ता थे। आचार्यश्री ने राज्यपाल महोदय से कहा—राजस्थान मे सेवा का मौका पहली बार मिला है।

राज्यपाल—हा आचार्यश्री! पहली बार मिला है। यहा भी मैं महाराष्ट्र की भाति सेवा करता रहूगा।

आचायश्री—महाराष्ट्र की राजनीति कैसी है?

राज्यपाल—अच्छी नही है।

आचार्यश्री—आपको अब नैतिक कार्यो पर वल देना हे।

राज्यपाल—अव मेरी शक्ति इसी काम मे लगेगी।

आचार्यश्री—हमने एक विना मजहव का धर्म अणुव्रत चलाया है। हर कौम का व्यक्ति अणुव्रती वन सकता है। इसमे उपासना गौण है, आचरण मुख्य है। सत्ता शाश्वत नही है, इसानियत शाश्वत हे। सच्चा इन्सान वनने वाला महान् हे। हमने प्रेक्षाध्यान के जरिये व्यक्ति के भाव परिवर्तन, रसायन परिवर्तन का काय प्रारभ किया है।

राज्यपाल—मै अणुव्रत कार्यक्रम से सपर्क मे हू । आचार्यश्री! मै जहा जाता हू वहा आनन्द पाता हू । परिस्थितियो को भोग चुका हू और भोग रहा हू ।

आचायश्री—आज आपने जिस कालेज का शिलान्यास किया है । उस के साथ आप जुड गये है, अब आपको विशेष ध्यान रखना होगा ।

राज्यपाल—पूरा ख्याल रखूगा ।

आचायश्री—लाडनू मे जैन विश्व भारती नाम का एक विशाल सस्थान है । वहा शिक्षा, शोध, सेवा, साधना का अच्छा काय सपादित हो रहा हे । हम वहा चले जायेगे, तो आपको एक बार वहा याद करेगे ।

राज्यपाल—मै अवश्य वहा आऊगा ।

आचार्यश्री एव राज्यपाल के बीच करीब ४० मिनट की यह वार्ता आत्मीयपूण वातावरण मे सपन्न हुई ।

रात्रि मे बालक बालिकाओ की कव्वाली, स्वागत-गीत के बाद आचायश्री का प्रवचन हुआ । सयोजन श्री देवेन्द्रकुमार हिरण ने किया । रात्रि प्रवास रग-भवन मे हुआ । यह वही भवन है जहा पचास वर्ष पूव पूज्य कालूगणी का स्वगवास हुआ तथा मुनि तुलसी तेरापथ के भाग्य विधाता बने । उस समय के कुछ सस्मरण आचायवर के मुखारविन्द से निसृत होकर बडे ही रोचक प्रतीत हो रहे थे । मत्री श्री उपाध्याय ने आचायवर से एकान्त मे बातचीत की ।

१० दिसबर/प्रात आचार्यवर का लाखोला के लिए विहार हुआ । मार्ग मे रामद्वारा मे पधारे । वहा के सतरामजी ने आचार्यश्री से कुछ देर बातचीत की । ये सत राम स्नेही सप्रदाय के हे । इस सप्रदाय के प्रवतक रामचरणदास जी तथा तेरापथ के प्रवतक आचार्यश्री भिक्षु स्वामी दोनो मित्र थे । रामस्नेही सप्रदाय अमूर्तिपूजक है, उनमे आचार्य एक होते है । करीब १० बजे आचार्यवर लाखोला पधार गये । प्रधानाध्यापक, सरपच श्री बहेडिया ने स्वागत-भाषण किया । आचार्यवर ने अपने भाषण मे कहा—"गरीब वह हे जो आचारहीन है । आचारवान्-चरित्रवान् व्यक्ति सदैव समृद्ध होता है । ज्ञान अमृत है, रसायन है । ज्ञान को पाना अमृत को पाना है । ब्यावर चातुर्मास सपन्न कर साध्वी श्री सरोजकुमारी (बबई) ने आचार्यवर के दर्शन किये । आज रात्रि प्रवचन मुनि सुमेरमल "लाडनू" ने दिया ।

११ दिसबर/प्रात लाखोला से चलकर सोनियाणा पधारे । वहा के

'वैरवा' जाति के लोग विशेष श्रद्धा रखते है। एक घटे के प्रवास मे मुनिश्री कमलकुमार के प्राग् प्रवचन के बाद आचार्यवर का प्रवचन हुआ। सोनियागा से आचार्यवर रेवाडा पधारे गये। रेवाडा पधारते के साथ ही भीलवाडा जिला की सीमा समाप्त हो गई और चित्तौडगढ जिला की सीमा शुरू हो गई। रेवाडा मे अपने प्रवचन मे आचार्यवर ने ऊच और नीच का मापदड जाति नही, आचारण को बताया। साय आचार्यवर मानियास पधार गये। स्वागत मे ठाकुर श्री शिवराज सिंह तथा कुवर श्री राजेन्द्रसिंह ने अपने विचार रखे।

हिन्दू धर्म नही, समाज है

रात्रि मे कुवर श्री राजेन्द्रसिह आचार्यश्री की सन्निधि म पहुचे। कुवर काफी सुलझे हुए विचारो के व्यक्ति है। आचार्यश्री की अनुमति लेकर उन्होने कुछ प्रश्न पूछे और उन प्रश्नो को आचार्यश्री ने समाहित किया। प्रश्नोत्तर इस प्रकार है—

कुवर—धम की परिभापा क्या है ?

आचार्यश्री—आत्मा मे स्थिर रहने का नाम धम है। धर्म और मजहब पृथक्-पृथक् है।

कुवर—मै पहले नास्तिक था। विज्ञान का अध्ययन करते-करते मै धार्मिक बना।

आचायश्री—मजहव का धर्म से वैसे कोई लेन देन नही है। झगडा धर्म मे नही, मजहब मे है। ईसाई-ईसाई लड रहे है, बौद्ध-बौद्ध लड रहे है। मजहब परस्पर म लड रहे है।

कुवर—थाईलैड के बौद्ध भिक्षु सामाजिक सेवा मे लगे है। जैन मुनियो के लिए भी ऐसा कुछ होना चाहिये। उन्हे स्वास्थ्य का ज्ञान करवाया जाए। गाव-गाव मे घूम-घूम कर गरीबो का इलाज करना चाहिये।

आचार्यश्री—बौद्ध भिक्षु हर परिवार से बनते है। उनकी सख्या अधिक है। जैन मुनि विशेष विरक्ति से बनते है, अत उन्हे आतरिक शुद्धि मे ही लगने दीजिए। वैसे हम आतरिक बीमारियो को मिटाने का कार्य निरन्तर करते ही है।

कुवर—दीक्षा कब दी जाती है ?

आचायश्री—जब विरक्ति के भाव जागृत होते है, तभी दीक्षा दी जाती है। योग्यता की कसौटी पर खरा उतरने पर ही दीक्षा दी जाती है।

दीक्षा मे अवस्था का वधन नही है। जैनो मे तेरापथ की दीक्षा विशेष परीक्षा के वाद ही दी जाती है।

कुवर—अहिसा व्यक्तिगत हो सकती है, समाज गत नही ?

आचार्यश्री—अहिसा ही नही, धर्म मात्र व्यक्तिगत है, किन्तु धर्म करने वालो का समूह भी वन जाता है।

कुवर—पहले जैन लोग अपने को हिन्दु कहते थे, अव जैन लिखते है।

आचार्यश्री—हिन्दू धर्म नही, समाज है। समाज की दृष्टि से कहने मे हमे कोई कठिनाई नही है। धार्मिक दृष्टि से आप वैदिक है, मैं जैन हू। इस लिए हिन्दू शब्द समाज का सूचक है (प्रसग वदलते हुए) क्षत्रिय कौम ऊची कौम है। इस कौम मे शराव का आना अवनति का कारण वन गया है।

रात्रि मे मुनि सुमेरमल "लाडनू के वक्तव्य के वाद आचार्यवर का प्रवचन हुआ। अनेक व्यक्तियो ने विविध नियम ग्रहण किये।

१२ दिसवर/प्रात १० वजे आचार्यवर पहुना पधार गये। स्वागत मे गीतिकाओ के अनन्तर पहुना के सरपच श्री शातिलाल विराणी का वक्तव्य हुआ। स्वागत समारोह मे जिला प्रमुख श्री विक्रमसिंह, जिलाधीश श्री धर्मवीर सागर, ब्रिगेडियर श्री जसवतसिंह, खादी ग्रामोद्योग मत्री श्री रामस्वरूप अजमेरा आदि उपस्थित थे। उन्होने अपने मजे हुए विचार रखे। आचार्यश्री ने धर्म और धार्मिक की विस्तृत व्याख्या की।

पहुना के कार्यकर्ता व पत्रकार श्री गणेशकुमार कूकडा ने आभार प्रदर्शन किया। श्री नाथूलाल गावी ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। रात्रि मे मुनि सुमेरमल "लाडनू" का प्रवचन हुआ।

उद्घाटन एव शिलान्यास

१३ दिसवर / पहुना के इस प्रवास मे अणुव्रत विद्यापीठ, लोक कला भारती व तुलसी अमृतायन का उद्घाटन एव शिलान्यास हुआ। यह सब रचनात्मक कार्यो की शृखला मे महत्त्वपूण कदम था। मध्याह्न अणुव्रत विद्यापीठ का उद्घाटन श्री मागीलाल विनाकिया तथा लोक कला भारती का उद्घाटन श्री शकरलाल कोठारी तथा श्री देवीलाल कच्छारा ने किया। तीनो ने अपना आर्थिक सहयोग भी घोषित किया। श्री गणेशकुमार कूकडा ने दोनो सस्थाओ का परिचय दिया। साध्वी-समुदाय व लोक कला भारती के कलाकर श्री रामपाल शर्मा ने गीत प्रस्तुत किया। प्रमुख अतिथि के रूप मे स्थानीय ठाकुर तथा ब्रिगेडियर उपस्थित थे। वयाना वाले नानालालजी छाजेड ने

अणुव्रत प्रदर्शनी का उद्‌घाटन किया। श्री मोहनलाल हींगड ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया। मान्य भोजन व्यवस्था का उल्लघन करने पर आचार्यवर ने कल मध्याह्न का विहार फरमा दिया। पहले वे तीन दिन रात विराजने वाले थे।

१४ दिसबर / आज आचार्यप्रवर तुलसी अमृतायन स्थल पधारे। जहा एक ऐसे गाव की सरचना करने की योजना है, जो अणुव्रत आदर्शों के अनुरूप होगी। तुलसी अमृतायन की आधार शिला अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के मत्री श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट ने रखी। स्थानीय सरपच श्री शातिलाल चिराणी ने अपने विचार रखे। श्री कर्णावट ने कहा—"अमृत महोत्सव के इस कार्यक्रम के साथ रचनात्मक प्रवृत्तिया भी बहुत तेजी से जुडती जा रही हैं। मेवाड मे इस दृष्टि से अब तक तेरह सस्थाए सस्थापित हो चुकी हैं। आज पहुना क्षेत्र भी इसी श्रृखला मे जुड रहा है।" मुनिश्री सुखलाल तथा ब्रिगेडियर श्री जसवतसिंह ने भी अपने विचार रखे।

आचार्यवर ने अपने उद्‌बोधन मे कहा—"समाज के व्यक्तियो को महत्व देने का जो क्रम प्रारम्भ हुआ है, वह एक शुभ सकेत है। समाज के चरित्र-निष्ठ व्यक्तियो का महत्त्व आका जाना चाहिए। आज का आदमी जड होता जा रहा है। सवेदनशीलता समाप्त होती जा रही है, कुठा बढती जा रही है। इन परिस्थितियो मे प्राण का सचार अपेक्षित है। इस दृष्टि से हमने प्रेक्षाध्यान का उपक्रम चालू किया है।" आचार्यवर ने मेवाड क्षेत्र मे श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट, श्री मोहनलाल जैन, तथा श्री गणेश कूकडा के द्वारा किए जा रहे कार्यो की सराहना की।

मध्याह्न मे बनास नदी पार करने के बाद मरोली गाव पधारे। ठाकुर, तथा उनके परिवार ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। ठाकुर साहब व उनका परिवार एक श्रद्धालु परिवार है। रात्रि कार्यक्रम मे मुनि सुमेरमल "लाडनू" के प्राग् प्रवचन के बाद आचार्यवर का उद्‌बोधन हुआ। अनेक लोग इस अवसर पर व्यसन मुक्त बने।

तुम मेरे गुरु हो ?

प्रवचन के बाद आचार्यवर स्थान पर पधार गये। घडी १० बजे की सूचना दे रही थी। आचार्यश्री सोने ही वाले थे, इतने मे ही भीमगढ से पचासो व्यक्ति आ गए। उनमे प्रमुख श्री चादमल पीछोल्या मकान मे प्रवेश करते ही तेज आवाज मे बोले—अगर आचार्यश्री हमारे गाव भीमगट रात्रि

प्रवास नही करते है, तो मेरे तथा मेरे पूरे परिवार के चारो आहार का त्याग है ।

आचार्यश्री ने कडाई के साथ कहा—"तुम श्रावक कहलाते हो । वदना तो की ही नही और इधर त्याग करते हो । क्या तुम गुरु के गुरु बन कर आए हो ? तुम मेरे गुरु हो या चेले ?

श्री चादमल—है तो चेले ।

आचार्यश्री—चेले हो, तो त्यागकर तुम मुझे डराना चाहते हो ? धमकी देकर खरीदना चाहते हो ? यदि ऐसी मूर्खता की, तो हम भीमगढ नही जायेंगे । ७२ वर्ष की उम्र मे इन मेवाडी ऊवड-खावड रास्तो मे चलने से क्या मुझे मजा आता है ? वैसे भी भीमगढ हमारे रास्ते मे नही था, मैने जानबूझकर लिया है, फिर भी तुम मेरे पर हावी होते हो। गावो मे कितनी कठिनाइया होती हैं । थोडा बहुत भी तुम्हे विचार नही ।

श्री चादमल—लागच रात्रि प्रवास की वात सुनकर मेरा दिल हिल गया । सारी कौमो के आदमी आए है । आपको भीमगढ मे रात्रि प्रवास तो करना ही होगा ।

आचार्यश्री—फिर वही वात, तेरापथ की रीति-नीति और व्यवस्था को नहीं जानते । इतना सा भी विवेक नही है तुम्हारे मे । थोडा समझपूर्वक बोलो । तुम्हारे लडके सामने खडे है । उनमे क्या सस्कार आयेगा ।

श्री चादमल—गुरुदेव ! हमारी भावना है । हम एक ट्रेक्टर भर कर लाए हैं।

आचार्यश्री—एक नही, हजार ट्रेक्टर ले आओ तो भी भीमगढ जाने का भाव नही है ।

आखिर श्री चादमल ने मेवाडी पगडी को आचार्यवर के चरणो मे रखा । अपनी गलती के लिए पुन पुन क्षमा मागी । उनकी भक्ति व भावपूर्ण प्रार्थना पर आचार्यवर पसीजे और उन्होने कहा—चादमलजी ! तुम्हारी इतनी भावना है, तो कल दिन का प्रवास भीमगढ करेंगे । दूसरे दिन लागच से पुन लौटते वक्त भीमगट आयेंगे । वहा कुछ समय रुककर राशमी जायेंगे, ऐसा विचार ह ।

"आचार्यश्री तुलसी की जय हो" इस तरह जय-जयकार करते हुए लोग उठे और चले गये । पहले भीमगढ मे आचार्यवर का १५ दिनवर का पूरा प्रवास तय था ।

१५ दिसबर / मरोली से भीमगढ की दूरी मात्र ६ कि० मी० थी, पर आचार्यवर को १० कि० मी० पड गया। उसका निमित्त बना "लसाडिया" गाव। वहा केवल एक बहिन तेरापथी है। शादी के चद दिनो बाद ही उसका पति गुजर गया। उसके बाद उसने गुरु नाम पर अपने आपको समर्पित कर दिया। आचार्यवर को अपने आगन मे पाकर वह बहिन बासो खिल उठी। उसकी भावना को मद्देनजर रखते हुए ही आचायवर लसाडिया पधारे थे। करीब सात सौ की उपस्थिति मे आचार्यवर का प्रवचन हुआ। अनेको ने विविध सकल्प लिए। वहा से विहार कर आचायवर जाडाणा पधारे। वहा तेरापथ के आठ परिवार रहते है। वहा भी आचायश्री का प्रवचन हुआ। जाडाणा से आचायश्री भीमगढ पधार गये। लसाडिया के सरपच भीमगढ तक पैदल साथ थे। पहुना के सरपच श्री शातिलाल की अध्यक्षता मे आयोजित स्वागत समारोह मे अध्यापक श्री देवडा ने अपने विचार रखे। कन्या मडल एव महिला मडल के गीत हुए। आचायश्री ने अपने सारगर्भित प्रवचन मे कहा—"धर्म किसी की बपोती नही है। व्यक्ति आत्महित मे जो करता है, वही उसका धर्म ह।" मध्याह्न २ बजे विहार कर आचायवर खटावटी होते हुए लागच पधार गए।

अडिग आस्था

लागच मे आयोजित स्वागत समारोह मे आचायवर ने अपये लागच आगमन का निमित्त श्री मागीलाल खाव्या को माना। श्री मागीलाल पिछले कई दिनो से आचायवर को लागच पधारने की विनती कर रहे थे, किन्तु १४ कि० मी० का अतिरिक्त चक्कर पडने से पधारना सभव नही था। ३१ दिसवर तक का पूरा विहार-कायक्रम निर्णीत हो चुका था। फिर भी उसने अपनी कोशिश जारी रखी। मरोली गाव मे वह गाव के अन्य लोगो को साथ लेकर आया और लागच पधारने की भावभरी प्रार्थना की। आचार्यश्री ने लोगो को सबोधित करते हुए कहा—"तुम्हारे गाव मे झझट है, पहले उसे मिटाओ।" कुछ ही मिनटो मे पहुना के सरपच श्री शातिलाल बीराणी आए। उन्होने आचार्यवर से निवेदन किया कि मागीलाल जी ने अपने गाव के लोगो से कहा है—"मै गाव के सब घरो की जूतिया सिर पर धर लूगा, पर आप सब एक होकर गुरुदेव को पधारने की अज करे।" आचायश्री को यह अटपटा लगा। उन्होने लागच के लोगो को याद किया और मागीलालजी को अपमान-

जनक शर्त न रखने की शिक्षा दी और साथ मे यह भी कहा कि तुम्हारी इतनी तीव्र उत्कठा है, तो लागच जाने का भाव है। वातावरण मे एक विचित्र मोड आ गया। आज लागच पधारने पर श्री मागीलाल व उनका पूरा परिवार खुशी से फूला नही समा रहा था।

लागच गाव मे २५ घर स्थानकवासी आम्नाय के है। तेरापथका केवल श्री मागीलाल खाब्या का घर है। उसने ३२ वर्ष पूर्व तेरापथ की गुरु धारणा की। यह अन्य जैन भाइयो को अप्रिय लगा। उन्होने श्री मागीलाल से सारे सामाजिक व्यवहार बन्द कर दिये। फिर भी वह अपनी आस्था पर अचल रहा। रात्रि मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू' के प्राग् प्रवचन के बाद आचार्यवर ने बारह सौ की उपस्थिति मे कहा—'धर्म करने की आजादी सबको है। उसमे प्रलोभन एव जबर्दस्ती अनुपयुक्त है। कोई व्यक्ति किसी भी धर्म की मान्य उपासना करता है, उसे लेकर किसी की छीटाकशी करना पाप है।' इस अवसर पर कई व्यक्तियो ने धूम्रपान छोडा। रात्रि मे आचार्यवर की सन्निधि मे स्थानीय जैन लोग इकट्ठे हुए। श्री मागीलाल के साथ पुन सामान्य सामाजिक व्यवहार शुरु करने की चर्चा चली। कुछ लोगो के पूर्वाग्रह के कारण बातचीत का कोई नतीजा नही निकल सका।

१८ दिसम्बर/लागच से विहार कर आचार्यश्री चटावटी पधारे। सक्षिप्त उद्बोधन के बाद पुन भीमगढ पधारे। वहा भिक्षा की, प्रवचन किया। भीमगढ से चलकर १० ३० बजे तहसील क्षेत्र राशमी पधारे। तहसील मे आयोजित स्वागत समारोह मे तहसीलदार के भापण के पश्चात् जिला पुलिस अधीक्षक श्री ओ० पी० सक्सेना ने कहा—'आपके चित्तोड जिले मे पधारने पर हम आपके आभारी हैं। मैं आपके कई बार दर्शन कर चुका हू। मैंने देखा है आपके हृदय मे मानवजाति के प्रति पीडा है। यह मैं आपकी महानता मानता हू। यही वजह है कि आपकी परिषद मे सभी वर्गों के लोग समुपस्थित है।' पचायत प्रधान श्री शान्तिलाल तातेड ने कहा—आचार्यश्री की जो अमूल्य शिक्षाए है उन्हे अपने जीवन मे उतारने का सलक्ष्य प्रयास होना चाहिए। आपके राशमी पधारने पर मैं राशमी पचायत समिति की ओर से स्वागत करता हू।

आचार्यश्री ने स्वागत के प्रत्युत्तर मे कहा—हम न तो राजनैतिक है, न ही सत्ताधीश। हम तो अकिंचन भिक्षु है। हमारा स्वागत भी हमारे अनुरूप होना चाहिये। जो व्यक्ति दूसरो को पीडा देने मे पाप नही समझता उसका

सीखा हुआ ज्ञान-अज्ञान है, अर्थहीन है, भारभूत है ।'

मध्याह्न करीब १००० की उपस्थिति मे आचार्यवर की सन्निधि मे पुन कार्यक्रम चला, जिसमे जिला पुलिस अधीक्षक श्री ओ० पी० सक्सेना ने अपने विचार रखे । आचार्यश्री ने जन्मना जैनो की कम तथा कर्मणा जैनो की सख्या ज्यादा बताई । रात्रि मे मुनिश्री सुखलाल का वक्तव्य हुआ ।

१७ दिसबर/राशमी से विहार कर आचार्यप्रवर १ घटे के लिए मातृकुडिया रुके । राशमी से विहार करते वक्त आकाश मे बादल छाये हुए थे । बूदाबादी भी शुरू हो गई थी । चित्तौड जिले का अन्तिम गाव मातृकुडिया एक प्राचीन तीर्थ है । कहा जाता हे कि परशुरामजी यहा मातृहत्या के पाप से मुक्त हुए थे । पार्श्व मे बह रही नदी पर 'मेजा बाध' का निर्माण जोरो से हो रहा है । वहा आचार्यश्री का सक्षिप्त प्रवचन हुआ । वहा से आचार्यवर गिलूड पधारे । गिलूड उदयपुर जिले मे है । मध्याह्न आयोजित स्वागत-कार्यक्रम मे विकास अधिकारी श्री माधव लाल दाधीच, राजसमन्द-रेलमगरा क्षेत्र के विधायक श्री मदनलाल खटीक ने आचार्यश्री को विश्व विश्रुत सत बताया । आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे कहा—'मेरा प्रयास हमेशा आदमी को आदमी बनाने का रहा है और रहेगा । धर्म के पीछे विशेषण लगाकर हमने उसे सकीर्ण बना दिया, जबकि धर्म निर्विशेषण होना चाहिये ।' आचार्यश्री ने अणुबम के प्रतिकार के लिए अणुव्रत को उपयोगी माना । रात्रि मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू' के प्राग् वक्तव्य के बाद आचार्यश्री का प्रवचन हुआ । उपस्थिति करीब एक हजार थी । जैन विश्व भारती के कुलपति श्री श्रीचद रामपुरिया, सर्वोदयी विचारक श्री कृष्णराज मेहता कुछ अमरीकी जनो के साथ आचार्यवर के दर्शन किये । काफी बातचीत चली ।

१८ दिसबर/प्रात जूणदा के लिए आचार्यश्री ने विहार किया । मार्ग मे पनोतिया गाव आया । वहा के लोगो की बलवती प्रार्थना को देखते हुए आचार्यवर कुछ समय के लिए रुके । ११ १५ बजे जूणदा पधार गये । वहा सरपच श्री रूपचद चौधरी ने स्वागत मे दो शब्द कहे । आचार्यश्री का महत्त्व पूर्ण प्रवचन हुआ । आज साध्वीश्री रूपाजी (लाडनू) ने दर्शन किये ।

१९ दिसबर/आचार्यश्री १६ सतो के साथ कुवारिया पधारे । कुवारिया मे बस व रेल की सुविधा होने पर केलवा, दिवेर, आमेट, लावा-सरदारगढ, देवगढ आदि क्षेत्रो के सैकडो लोग पहुचे । स्कूल मे आयोजित स्वागत-कार्यक्रम मे स्थानीय सरपच व स्थानकवासी समाज के मत्री श्री

जनक शर्त न रखने की शिक्षा दी और साथ मे यह भी कहा कि तुम्हारी इतनी तीव्र उत्कठा है, तो लागच जाने का भाव है। वातावरण मे एक विचित्र मोड आ गया। आज लागच पधारने पर श्री मागीलाल व उनका पूरा परिवार खुशी से फूला नही समा रहा था।

लागच गाव मे २५ घर स्थानकवासी आम्नाय के है। तेरापथका केवल श्री मागीलाल खाव्या का घर हे। उसने ३२ वर्ष पूर्व तेरापथ की गुरु धारणा की। यह अन्य जैन भाइयो को अप्रिय लगा। उन्होने श्री मागीलाल से सार सामाजिक व्यवहार वन्द कर दिये। फिर भी वह अपनी आस्था पर अचल रहा। रात्रि मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू' के प्राग् प्रवचन के बाद आचार्यवर ने बारह सौ की उपस्थिति मे कहा—'धर्म करने की आजादी सबको है। उसमे प्रलोभन एव जबर्दस्ती अनुपयुक्त है। कोई व्यक्ति किसी भी धर्म की मान्य उपासना करता है, उसे लेकर किसी की छीटाकशी करना पाप हे।' इस अवसर पर कई व्यक्तियो ने धूम्रपान छोडा। रात्रि मे आचार्यवर की सन्निधि मे स्थानीय जैन लोग इकट्ठे हुए। श्री मागीलाल के साथ पुन सामान्य सामाजिक व्यवहार शुरु करने की चर्चा चली। कुछ लोगो के पूर्वाग्रह के कारण बातचीत का कोई नतीजा नही निकल सका।

१६ दिसम्बर/लागच से विहार कर आचार्यश्री चटावटी पधारे। सक्षिप्त उद्बोधन के बाद पुन भीमगढ पधारे। वहा भिक्षा की, प्रवचन किया। भीमगढ से चलकर १० ३० बजे तहसील क्षेत्र राशमी पधारे। तहसील में आयोजित स्वागत समारोह मे तहसीलदार के भाषण के पश्चात् जिला पुलिस अधीक्षक श्री ओ० पी० सक्सेना ने कहा—'आपके चित्तौड जिले मे पधारने पर हम आपके आभारी हैं। मे आपके कई बार दर्शन कर चुका हू। मैंने देखा ह आपके हृदय मे मानवजाति के प्रति पीडा है। यह मैं आपकी महानता मानता हू। यही वजह है कि आपकी परिषद मे सभी वर्गों के लोग समुपस्थित है।' पचायत प्रधान श्री शान्तिलाल तातेड ने कहा—आचार्यश्री की जो अमूल्य शिक्षाए हे उन्हे अपने जीवन मे उतारने का सलक्ष्य प्रयास होना चाहिए। आपके राशमी पधारने पर मैं राशमी पचायत समिति की ओर से स्वागत करता हू।

आचार्यश्री ने स्वागत के प्रत्युत्तर मे कहा—हम न तो राजनैतिक है, न ही सत्ताधीश। हम तो अकिंचन भिक्षु हे। हमारा स्वागत भी हमारे अनुरूप होना चाहिये। जो व्यक्ति दूसरो को पीडा देने मे पाप नही समझता उसका

सीखा हुआ ज्ञान-अज्ञान है, अर्थहीन है, भारभूत है।'

मध्याह्न करीब १००० की उपस्थिति मे आचार्यवर की सन्निधि मे पुन कार्यक्रम चला, जिसमे जिला पुलिस अधीक्षक श्री ओ० पी० सक्सेना ने अपने विचार रखे। आचार्यश्री ने जन्मना जैनो की कम तथा कर्मणा जैनो की सख्या ज्यादा बताई। रात्रि मे मुनिश्री सुखलाल का वक्तव्य हुआ।

१७ दिसबर/राशमी से विहार कर आचार्यप्रवर १ घटे के लिए मातृकुडिया रुके। राशमी से विहार करते वक्त आकाश मे बादल छाये हुए थे। बूदाबादी भी शुरु हो गई थी। चित्तौड जिले का अन्तिम गाव मातृकुडिया एक प्राचीन तीर्थ है। कहा जाता है कि परशुरामजी यहा मातृहत्या के पाप से मुक्त हुए थे। पार्श्व मे बह रही नदी पर 'मेजा बाध' का निर्माण जोरो से हो रहा है। वहा आचार्यश्री का सक्षिप्त प्रवचन हुआ। वहा से आचार्यवर गिलूड पधारे। गिलूड उदयपुर जिले मे है। मध्याह्न आयोजित स्वागत-कार्यक्रम मे विकास अधिकारी श्री माधव लाल दाधीच, राजसमन्द-रेलमगरा क्षेत्र के विधायक श्री मदनलाल खटीक ने आचार्यश्री को विश्व विश्रुत सत बताया। आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे कहा—'मेरा प्रयास हमेशा आदमी को आदमी बनाने का रहा है और रहेगा। धर्म के पीछे विशेपण लगाकर हमने उसे सकीर्ण बना दिया, जबकि धर्म निर्विशेपण होना चाहिये।' आचार्यश्री ने अणुबम के प्रतिकार के लिए अणुव्रत को उपयोगी माना। रात्रि मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू के प्राग् वक्तव्य के बाद आचार्यश्री का प्रवचन हुआ। उपस्थिति करीब एक हजार थी। जैन विश्व भारती के कुलपति श्री श्रीचद रामपुरिया, सर्वोदयी विचारक श्री कृष्णराज मेहता कुछ अमरीकी जनो के साथ आचार्यवर के दर्शन किये। काफी बातचीत चली।

१८ दिसबर/प्रात जूणदा के लिए आचार्यश्री ने विहार किया। मार्ग मे पनोतिया गाव आया। वहा के लोगो की बलवती प्रार्थना को देखते हुए आचार्यवर कुछ समय के लिए रुके। ११ १५ बजे जूणदा पधार गये। वहा सरपच श्री रूपचद चौधरी ने स्वागत मे दो शब्द कहे। आचार्यश्री का महत्त्व पूर्ण प्रवचन हुआ। आज साध्वीश्री रूपाजी (लाडनू) ने दर्शन किये।

१९ दिसबर/आचार्यश्री १६ सतो के साथ कुवारिया पधारे। कुवारिया मे बस व रेल की सुविधा होने पर केलवा, दिवेर, आमेट, लावा-सरदारगढ, देवगढ आदि क्षेत्रो के सैकडो लोग पहुचे। स्कूल मे आयोजित स्वागत-कार्यक्रम मे स्थानीय सरपच व स्थानकवासी समाज के मत्री श्री

शकरलाल चडालिया तथा प्रमुख अतिथि श्री भारतभूषण मूदडा ने अपने विचार रखे । श्री मोतीलाल ने आजीवन सपत्नीक शीलव्रत ग्रहण कर स्वागत किया । दीर्घ तपस्विनी साध्वीश्री पन्नाजी ने आचार्यश्री के दर्शन किये । इस अवसर पर आचार्यश्री का प्रभावी प्रवचन हुआ । मध्याह्न प्रात काल का अवशिष्ट कार्यक्रम चला । साय श्रद्धेय युवाचार्यश्री की सन्निधि व निदेशन मे सपन्न शिविर के शिविरार्थियो ने आचार्यश्री के दर्शन किये । रात्रि मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू' का व्याख्यान हुआ । गगापुर से काफी लोग रात्रि मे दर्शनार्थ आये ।

२० दिसबर/कुरज/साध्वी प्रमुखाश्री समेत सभी साध्विया तथा कुछ मुनिजन सीधे रास्ते कुरज पधार गये । आचार्यश्री प्रारम्भ मे सडक-सडक, फिर कच्चे रास्ते होते हुए पधारे । माग काफी ऊबड-खावड था । जागोटिया-भवन मे आयोजित स्वागत कार्यक्रम मे राजस्थान के पूव राज्यमत्री श्री नाना-लाल वीरवाल ने आचार्यश्री को महान् सत बताया । आचायश्री ने उपस्थित जनसमूह को प्रामाणिक जीवन जीने की प्रेरणा दी । रात्रि मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू' का प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद ग्रामीण विकास एव पचायत राज मत्री श्री रामपाल उपाध्याय ने आचार्यश्री के दशन किए । वे इन दिनो चूरू लोकसभा उपचुनाव मे पार्टी के पयवेक्षक थे । उन्होने वहा के सस्मरण सुनाये ।

२१ दिसम्बर/रेलमगरा/आचार्यवर का लबी अवधि के बाद पधारने पर गर्म जोशी के साथ स्वागत किया गया । जिला विकास अधिकारी श्री जगदीश प्रसाद, स्थानीय सभा के मत्री श्री गभीरमल सोनी ने स्वागत मे अपने विचार रखे । आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे इन्द्रियो को नियन्त्रित करने की बात कही । कानोड चातुर्मास परिसपन्न कर साध्वीश्री कमलप्रभा ने आज दर्शन किये ।

२२ दिसम्बर/रेलमगरा/आचार्यश्री प्रात तेरापथ सभा भवन पधारे । आचार्यश्री ने वहा उपस्थित जनसमूह को सबोधित करते हुए कहा—'तेरापथ भवन बन जाना ही पर्याप्त नही है, पदाधिकारी बन जाना ही पूणता नही है । नीव के पत्थर बनकर सगठन को मजबूत बनाने वाला अधिक महत्त्वपूर्ण है । मै चाहता हू प्रत्येक तेरापथी तेरापथ की मर्यादा एव व्यवस्था की समुचित जानकारी प्राप्त करे ।'

एक मनोहारी दृश्य

श्रद्धेय युवाचार्यश्री राजसमन्द तुलसी साधना शिखर पर दो शिविरो

की सफल समायोजना के वाद आज रेलमगरा पहुचे। प्राय सभी गत व सैकडो की सख्या मे भाई-वहिन युवाचार्यश्री की अगवानी मे पहुचे। गाव के मध्य 'देवली चबूतरे' पर दो महान् आत्माओ का मिलन बडा ही मनोहारी लग रहा था। सहस्रो-सहस्रो आखे यह दृश्य देखकर कृतार्थ हो गई। विशाल एव सयत जुलूस के साथ आचार्यश्री, युवाचार्यश्री विद्यालग प्रागण पहुचे।

मेवाड क्षेत्रीय तेरापंथ युवक परिषद् का अधिवेशन

रेलमगरा/आज आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री के सन्निधि मे मेवाड क्षेत्रीय तेरापथ युवक परिषद् का ११वा वार्षिक अधिवेशन आयोजित हुआ। इस अधिवेशन मे मेवाड के विभिन्न अचलो से समागत ३०० युवक-प्रतिनिधि सम्मिलित थे। प्रात सूर्योदय के वक्त परिषद् के अध्यक्ष श्री उत्तमचद सकलेचा (देवगढ) के झडारोहण से अधिवेशन प्रारभ हुआ। मुनिश्री मोहजीत कुमार ने योगासनो का अभ्यास करवाया।

प्रारम्भिक गीत के बाद श्री भगवती कोठारी ने स्वागत भाषण किया। आज की चर्चा का विषय था—'युवक ऊर्जा स्रोत कैसे वने' इस विषय पर उदयपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री सुरेश मेहता ने अपने महत्त्वपूण विचार रखे। श्री उत्तमचद के अध्यक्षीय भाषण के बाद मत्री श्री अरुण हिरण (गगापुर) ने परिषद् का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

युवाचार्यश्री ने आचायश्री को महान् ऊर्जा स्रोत बताते हुए कहा—'वे हमारे सामने है। मै आज प्रसन्न हू क्योकि पिछले कुछ दिनो से मैं इस ऊर्जा स्रोत से दूर था, आज वह भौगोलिक दूरी समाप्त हो चुकी हे। यदि युवको को ऊर्जा स्रोत वनना है, तो उनको समर्पण का गुर सीखना होगा। समपण मे स्वाथ स्वयमेव विलीन हो जाता है।'

आचार्यश्री ने युवको को सवोधित करते हुए कहा—'समाज की वास्तविक शक्ति युवा शक्ति होती है। तेरापथी युवक तेरापथ को पाकर गौरव की अनुभूति करे। एक अनुशासित धर्मसघ की प्राप्ति अपना प्राण होती है।' आचायश्री ने तेरापथ की दो विशेषताओ का विस्तृत विवेचन किया—गुरु व लक्ष्य के प्रति समर्पण। २ लौकिक व लोकोत्तर कार्य की भेदरेखा का निर्धारण। आचार्यश्री ने तेरापथ की समग्र अवगति हेतु युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा लिखित 'भिक्षु विचार दर्शन' मनन पूवक पढने की प्रेरणा दी। दोपहर मे मुनिश्री मधुकर के सान्निध्य मे युवक प्रतिनिधियो की महत्त्वपूर्ण गोष्ठी

हुई । मुनिश्री ने युवक प्रतिनिधियो को सगठित एव अनुशासित बने रहने की प्रेरणा दी ।

मध्याह्न राजस्थान के पूर्व मुख्यमत्री श्री शिवचरण माथुर ने आचार्यश्री, युवाचार्यश्री से एकात मे वातचीत की । उन्होने वार्तालाप मे लाडनू मे स्थापित जैन विश्व भारती व पारमार्थिक शिक्षण सस्था की प्रवृत्तियो की प्रशसा की । वे अभी-अभी चूरु लोकसभा उपचुनाव मे पार्टी का प्रचार कर लौटे है । उन्होने इस दौरान लाडनू मे इन मस्थाओ की गतिविधियो को बारीकी से झाका और उनसे अतिशय प्रभावित हुए । तासोल से बोहरा परिवार शोक विमोचन के लिए आचार्यवर के दर्शनार्थ पहुचा । चित्तौडगढ जिले की कपासन तहसील के तहसीलदार श्री शातिलाल जैन ने आचार्यवर के दर्शन किये, वातचीत की । रेलमगरा के निकट स्थित 'दडीबा माइस' मे कार्यरत कुछ जैन लोगो ने रात्रि मे आचार्यश्री के दर्शन किये । मुनि सुमेरमल 'लाडनू' के प्राग् वक्तव्य के वाद युवाचार्यश्री का 'जवानी की खोज' विपय पर सारगर्भित प्रवचन हुआ । आज साध्वीश्री भीखाजी तथा राजनगर चातुर्मास करने वाली साध्वीश्री सोमलता ने दर्शन किये ।

२३ दिसम्बर/रेलमगरा से आचार्यवर बनेडिया पधारे । स्वागत कार्यक्रम मे आचार्यवर ने लोगो को सौहार्दपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा दी । करीब ७०० की उपस्थिति मे रात्रि कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे हुआ। अनेक साध्वियो ने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये । अत मे साध्वी प्रमुखाश्री का प्रेरक प्रवचन हुआ । ठाकुर गणपत सिहजी तथा ठकुरानीजी ने आचार्यवर की उपासना की । ठाकुरजी ने मद्य का पीने के रूप मे त्याग किया ।

२४ दिसवर/खरताणा पधारने पर स्थानीय जनता द्वारा आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया गया । मध्याह्न आचार्यश्री के सान्निध्य मे साधु-साध्वियो की एक विशेप गोष्ठी हुई । रात्रि मे मुनिश्री मोहजीत कुमार के प्राग् वक्तव्य के वाद मुनि सुमेरमल 'लाडनू' का प्रवचन हुआ । वहा तेरापथ के १६ घर है । वहा तेरापथी सभा का विधिवत् गठन हुआ ।

२५ दिसवर/खरताणा से विहार कर सनवाड होते हुए फतहनगर पधारे । सनवाड मे स्थानकवासी समाज के सौ से भी अधिक घर है । गाववासियो के विशेप अनुरोध पर वहा कुछ समय के लिए रुकना तय हुआ था । आचार्यवर जहा प्रवचन करने वाले थे, वहा सघ से वहिर्भूत साध्वी फूलकुमारी ने प्रवचन देना प्रारभ किया । ऐसा करने के पीछे कुछ स्थानकवा

समाज के दूसरे लोगो का हाथ था, ऐसा विश्वस्त सूत्रो से ज्ञात हुआ। आचार्यश्री सीधे स्थानक मे पधारे। मुश्किल से दो मिनट रुके और फतहनगर के लिए विहार कर दिया। इस कार्यवाही की स्थानीय जनता मे मिश्रित प्रतिक्रिया हुई।

ठीक ६ ३० बजे आचार्यवर भव्य जुलूस के साथ फतहनगर पधारे। मण्डी के रूप मे प्रसिद्ध इस आठ हजार की आबादी वाले कस्बे मे आयोजित स्वागत समारोह मे राजस्थान के पूर्व सहकारिता मत्री वर्तमान मे मावली क्षेत्र के विधायक श्री हनुमान प्रसाद प्रभाकर ने कहा—राजस्थान की धरती का यह सौभाग्य है कि यहा कर्मवीर एव धर्मवीर दोनो ने जन्म लिया। उन महापुरुषो मे एक आप है। राजस्थान के इस लाडले सपूत पर न केवल राजस्थान को, बल्कि पूरे भारत को नाज है। आज समाज दिग्भ्रमित है, उसे आप दिशा प्रदान कर हमे कृतार्थ करें।' नगर पालिका अध्यक्ष श्री राम-राय बागड ने नगर की ओर से आचार्यवर को अभिनन्दन पत्र समर्पित किया। महाश्रमणी साध्वी-प्रमुखाश्री ने सक्षेप मे आचार्यश्री के जीवन चित्र को विभिन्न कोणो से खीचा।

आचार्यश्री ने उमास्वाति की एक पक्ति 'इहेव मुक्ति सुविहितानां' का उच्चारण करते हुए कहा—'काम, क्रोध, मद को जीतने वालो की यही मुक्ति होती है।' आचार्यश्री ने आगे कहा—आज भारत के वर्तमान हालात सतोष-जनक नही है। राजनेता पार्टियो मे बटे हुए है। समाज के लोग स्वार्थ के दलदल मे फसे हुए है। धार्मिक लोग सप्रदायो मे विभक्त है। इन पेचीदी परिस्थितियो मे व्यक्ति को सहनशील बनना अत्यन्त अपेक्षित है। आज हमारे सामने महात्मा गाधी, स्वामी विवेकानन्द, मार्टिन लूथर किंग, आचार्य भिक्षु सहिष्णुता के आदर्श रूप है।' चित्तोडगढ से समागत तेरापथ समाज ने आचार्यश्री के चित्तौड पधारने की पुरजोर प्रार्थना की। उपस्थिति करीब २५०० थी। कार्यक्रम के बाद निकाय व्यवस्था प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल ने आचार्यवर के दर्शन किये। उनका गतवर्ष चातुर्मास बालोतरा था।

मध्याह्न मे भीलवाडा तेरापथ समाज के दोनो पक्ष सुलह के लिए आचार्यवर की सन्निधि मे उपस्थित हुए। सबकी सहमति से श्री गणपतमल हिरण (गगापुर) तथा श्री चादमल दूगड (आसीन्द) को प्रेक्षक के रूप मे नियुक्त किये। साय 'गाव री खबरां' पाक्षिक पत्र के सपादक आचार्यश्री से मिले। रात्रि मे युवाचार्यश्री का 'धर्म की जरूरत है खुद को समझने के लिए'

विपय पर सारगर्भित प्रवचन हुआ। मुनिश्री सुखलाल ने विपय-प्रवेश किया। उपस्थिति करीव ३००० थी।

२६ दिमबर / आचायवर के आकोला पदापण पर स्थानीय जनता द्वारा भावभीना स्वागत किया गया। इस अभिनन्दन समारोह मे चित्तौडगढ जिले के जिलाधीश, उपजिलाधीश, पुलिस उपअधीक्षक, मजिस्ट्रेट, कपासन तहसील के तहसीलदार श्री शातिलाल जैन, पचायत प्रधान श्री नाथूलाल मेहता आदि विशिप्ट व्यक्ति मौजूद थे। कुमारी लता चपलोत के स्वागत गीत के बाद स्थानीय प्रमुख कार्यकर्ता श्री शातिलाल चपलोत ने युवादृप्टि का नूतन अक आचायवर को भेट किया। आचार्यवर ने अपने प्रवचन मे कहा—"आज हम आकोला पचीस वर्षो के लवे अतराल के बाद आए है। आकोला काफी कुछ बदल गया है, किंतु आदमी को जितना बदलाव चाहिए था, उतना नही बदला। यह शोचनीय बात है।" आचार्यवर ने ज्ञान का सार आचार बताया। कायक्रम का सयोजन श्री राजकुमार चपलोत ने किया।

रात्रि मे करीव २००० की उपस्थिति मे साध्वीश्री कनकश्री की निश्रा मे साध्वियो का रोचक कायक्रम रहा। उधर आचार्यवर एव युवाचायश्री के सान्निध्य मे कुछ चुने हुए मुनियो की एक लघु गोप्ठी हुई, जिसमे कानोड श्रावक-सम्मेलन के चितनीय बिदुओ पर विचार विमश चला।

एक महान् तपस्या

उदासर निवासी श्री रूपचद मोहनोत की पुत्री उन्नीस वर्षीया कुमारी किरण मोहनोत ने आज ५१ दिनो की लम्बी तपस्या आचायवर के सान्निध्य मे परिसपन्न की। कुमारी किरण दो वप पूर्व पारमार्थिक शिक्षण सस्था मे उपासिका के रूप मे दाखिल हुई। तव से वह साधनामय जीवन जी रही है। उसे कुछ ऐसा आभास हुआ कि पोप कृष्णा १३ को उसकी इहलीला समाप्त हो जायेगी। दो-तीन वार ऐसे सकेत मिलने पर किरण ने तपस्या प्रारम्भ कर दी। तीस दिन की तपस्या मे उसे विविध उपसर्ग हुए। इकतीसवे दिन उसे फिर सकेत मिला कि उसे पूव मे जो कुछ कहा था, वह उसकी परीक्षा मात्र था। वह इस परीक्षा मे शत-प्रतिशत सफल रही ह। अव वह जव चाहे, अपनी तपस्या पूरी कर ले। आयुष्य समाप्ति की वात केवल उसकी कसाटी करने के लिए कही गई थी। अव वह सभी प्रकार के उप-सर्गो से मुक्त थी। परिवार के लोगो का आग्रह रहा कि वह पारणा कर ले, किन्तु वहिन किरण ने कहा—परमाराध्य आचायवर का अमृत-महोत्सव

मनाया जा रहा है । इसलिए ५१ दिन की तपस्या कर गुरुदेव के चरणो मे अपना अर्घ्य चढाना चाहती हू ।

उसकी उत्कृष्ट भावना व दृढ इच्छा शक्ति देखकर परिवार वाले मौन हो गये । उसने अपनी भावना के अनुरूप तपस्या सपन्न की और उदासर (बीकानेर) से चलकर २५ दिसबर को फतहनगर मे अपने पारिवारिक जनो के साथ आचार्यश्री के दर्शन किए । आज आचार्यश्री के आकोला पधारने पर बहिन किरण ने प्रसन्नतापूर्वक अपनी तपस्या सपन्न की । आचार्यश्री ने इस तपस्या की भूरि-भूरि प्रशसा की ।

२७ दिसबर / आकोला/पश्चिम रात्रि मे आचार्यवर के सान्निध्य मे सभी साधुओ की उपस्थिति मे जैन समन्वय प्रकोष्ठ के उपसयोजक श्री भीखमचद कोठारी "भ्रमर" ने विभिन्न जैन आचार्यो, विशिष्ट मुनियो के सस्मरण सुनाये । एक सवत्सरी व एक मच के उद्देश्य के लिए यात्रा पर निकले श्री भ्रमर विभिन्न आचार्यो एव मुनियो से मिले थे ।

प्रात मुनिश्री उदितकुमार के प्राग् प्रवचन के पश्चात् आचार्यवर का प्रवचन हुआ । आचार्यश्री ने कहा—"लक्ष्य के लिए तपने वाले व्यक्ति ही अपने लक्ष्य को पा सकते है ।" रात्रि मे 'त्याग और भोग' विषय पर युवाचार्य श्री का विशेष वक्तव्य हुआ । मुनि श्री सुखलाल ने विषय की भूमिका पर प्रकाश डाला । प्रवचनोपरान्त सरपच श्री मोहनलाल शर्मा आदि कुछ व्यक्ति आचार्यवर की सन्निधि मे पहुचे । आचार्यश्री की विशेष प्रेरणा से सरपच ने खडे होकर धूम्रपान न करने का त्याग कर दिया । गुरु प्रेरणा से उन्होने गाव के झगडे-फसाद कोर्ट मे ले जाने के त्याग कर दिए ।

२८ दिसबर को लोठियाना व २६ दिसबर को मगलवाड चौराहा पधारे । वहा से मगलवाड गाव २ कि० मी० दूर है, जहा जैनो के चालीस घर है । आज बाडमेर चातुर्मास परिसपन्न करने वाले मुनिश्री रोशनलाल ने दर्शन किए । आज पार्श्ववर्ती गावो से आचार्यवर के दर्शनार्थ जैन भाइयो का ताता लगा रहा । रात्रि मे मुनिश्री कमलकुमार के प्राग् वक्तव्य के बाद मुनिश्री किशनलाल का प्रवचन हुआ ।

चरस आदि से मस्ती

मगेसरा अखाडा के बाबा चन्द्रमलेश्वर स्वामी रात्रि मे आचार्यश्री से मिलने आये । उन्होने कुछ देर बातचीत भी की । उन्होने कहा—"स्वामी

जी ! आज साम्प्रदायिकता इतनी घर कर चुकी है कि उससे ऊपर उठकर चितन करना हेय मान लिया गया है । आज का धार्मिक अपने-अपने कठघरे मे वद है । आपका उदार दृष्टिकोण व व्यवहार देखकर मुझे अतिशत प्रसन्नता हुई, तभी मे सगेसरा से चलकर आपके पास पहुचा हू ।

आचार्यश्री—आप ठीक कह रहे हैं । आज साम्प्रदायिकता का जहर धर्म को लील रहा है । धार्मिको को उदार एव आचरणशील बनना चाहिए । आज के सन्यासी धूम्रपान करते है, चरस, गाजा, सुलफा आदि पीते है । यह उचित नही है ।

बावाजी—(मुस्कराते हुए) यह तो सब धडल्ले से चलता हे । हमारे मे एक कहावत है—

यह जूना अखाडा, इसमे उठता खूब धूमाडा ।
रोटी की बचत करो, नोटो का होता यहा कबाडा ॥

स्वामीजी ! साठ रुपये तोला चरस बिकती ह । एक तोले चरस की चार चीलम होती है । चरस पीने वाले की भूख मर जाती हे और रुपयो का धुआ उठता रहता हे ।

आचार्यश्री—ऐसा क्यो करते हे सन्यासी लोग ?

बावाजी—मस्ती मे रहने के लिए ऐसा करते है । चरस, गाजा, सुलफा आदि पीने से एक ऐसी मस्ती छाई रहती हे, जिसके आलम मे वे दुनियादारी की चिता से मुक्त बन जाते हे ।

युवाचार्यश्री—आज सर्वत्र मस्ती के लिए नशा किया जाता हे । यही काम प्रेक्षा-ध्यान से किया जा सकता है । आदमी हर परिस्थिति मे शात, निश्चित बने रह सकता हे ।

बावाजी ने अखाडा की गतिविधि की जानकारी दी ।

३० दिसबर / आचायवर तहसील क्षेत्र डूगला पधारे । वहा स्कूल मे आचायवर का हार्दिक अभिनन्दन किया गया । वहा स्थानकवासी समाज के १८४ घर है । विशाल जनमेदिनी को सबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा—"जैन धम बहुत ही व्यावहारिक व वैज्ञानिक है । हम ऐसे धम को पाकर गोरवान्वित ह । जैन धर्म मे साधुओ व श्रावको के बीच एक निश्चित सीमाकन ह, जो जरूरी भी ह ।" मध्याह्न मे मुनिश्री विजयकुमार के प्राग् प्रवचन के बाद आचार्यवर का प्रवचन हुआ । रात्रि मे युवाचार्यश्री का प्रवचन हुआ । प्राग् प्रवचन मुनि सुमेरमल "लाडनू" तथा प्रेक्षा अभ्यास मुनिश्री

किशनलाल ने करवाया। रात्रि मे बैंगलूर तेरापथ समाज के एक घटक ने आचार्यश्री के सम्मुख अपना पक्ष रखा। आचार्यश्री ने उनकी बातो को धैर्य से सुना।

कानोड मे भव्य स्वागत

सन् १९८५ का अतिम दिन ३१ दिसबर/आचार्यवर के कानोड पदार्पण पर स्थानीय जनता द्वारा भव्य स्वागत किया गया। रावले मे आयोजित स्वागत-समारोह मे राजस्थान के सिचाई व अकाल राहत मत्री श्री गुलाबसिह शक्तावत ने कहा—"देश मे चारित्रिक मूल्यो की स्थापना के लिए आचार्यश्री ने जो कार्य किया है, वह अभिनन्दनीय है। आज देश एव समाज को सतो के सही मार्ग दर्शन की आवश्यकता है।" साध्वी प्रमुखाश्री तथा प्रदेश काग्रेस महामत्री व विधायक श्री सी० पी० जोशी ने भी सभा को सबोधित किया।

आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे कहा—"आज धार्मिक आदमी के जीवन मे जो परिवर्तन आना चाहिये, वह दृष्टिगोचर नही हो रहा है। इसका कारण स्पष्ट है—धर्म अनुभूति शून्य बन गया है। केवल ग्रन्थो पर भरोसा रह गया है। इसलिए हर क्रिया के पीछे प्रयोग जरूरी है।" उपस्थिति करीब २५०० थी।

मध्याह्न स्वागत का अवशिष्ट कार्यक्रम चला। आचार्यवर का महत्त्वपूर्ण वक्तव्य हुआ। रात्रि मे करीब ५००० की उपस्थिति मे युवाचार्यश्री का महत्त्वपूण वक्तव्य हुआ। विषय था—नया सवेरा दस्तक दे रहा है। विषय की भूमिका पर प्रकाश डाला मुनिश्री सुखलाल, मुनिश्री किशनलाल ने। कल से प्रारम्भ हो रहे श्रावक सम्मेलन की रूपरेखा के लिए कुछ चुने हुए साधुओ एव श्रावको की महत्त्वपूर्ण बैठक हुई।

पच दिवसीय श्रावक सम्मेलन

१ जनवरी / सन् १९८६ की सुरम्य मगलवेला मे विराट अखिल भारतीय श्रावक सम्मेलन का प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन का निर्णय आमेट चातुर्मास मे ही ले लिया गया था। भौगोलिक दृष्टि से कानोड एक तरफ होते हुए भी आहूत लोग समय पर पहुच गये। आचार्यश्री की दृष्टि को ध्यान मे रखकर नेपाल असम, बगाल आदि उत्तरी पूर्वी राज्यो, उत्तर प्रदेश, बिहार तथा दक्षिणी भारत आदि सुदूरवर्ती क्षेत्रो के आमन्त्रित श्रावको ने बडे ही उत्साह के साथ इस सम्मेलन मे भाग लिया। सौभाग्य से आज आचार्यवर का ६१ वा

दीक्षा दिवस था, जो प्रतिवर्ष "युवा दिवस" के रूप मे मनाया जाता है। षष्टीपूर्ति दीक्षा-दिवस के कार्यक्रम का प्रारम्भ मुनिश्री विजयकुमार की सुमधुर गीतिका से हुआ। साध्वीश्री कनकश्री ने आचार्यश्री के व्यक्तित्व को बहु आयामी बताया। मुनिश्री मोहनलाल "शार्दूल" जिनका इस वर्ष चातुर्मास बारडोली था, आचार्यवर के दर्शन किए। उन्होने अपनी दक्षिण-यात्रा के सस्मरण सुनाते हुए "युवा दिवस" पर आचार्यवर का अभिनन्दन किया।

साध्वी प्रमुखाश्री जी ने इस अवसर पर कहा—"हिंसा, अराजकता ओर आतक के माहोल मे आज अहिंसा, मैत्री और प्रेम की अपेक्षा है। इस परिस्थिति मे आचार्यवर का लक्ष्य हे शाति और अहिंसा के नए-नए स्रोतो की खोज करना, उन्हे प्राप्त करना ओर जनता को बाटना। इस ढलती उम्र मे जो उत्साह, क्षमता, सृजनशीलता और नित नए स्वप्न लेने की वृत्ति है वह हम सबके लिए अनुकरणीय हे।"

शक्ति, भक्ति और अभिव्यक्ति-इन तीन प्रमुख तत्त्वो का उल्लेख करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"कौन कैसा है, इसकी कसौटी व्यक्ति की शक्ति ह। शक्तिहीन व्यक्ति को जीने का कोई अधिकार नही ह जीने का मूल स्रोत है शक्ति। शक्ति को सही दिशा मे नियोजित करना भक्ति है। भक्ति के अभाव मे शक्ति सपन्न आदमी खूखार साबित हो सकता है। शक्ति और भक्ति का योग ही अभिव्यक्ति ह। आज आचार्यवर का दीक्षा दिवस हे। मे मानता हू कि शक्ति, भक्ति और अभिव्यक्ति का माध्यम दीक्षा है।"

युवाचार्यश्री ने आगे कहा—"आचार्यश्री ने हर स्थिति मे शक्ति का जीवन जीया। आप हर स्थिति मे आशावान बन सपने सजोते रहते ह, कल्पना के लोक मे विचरण करते रहते हे, श्रम के माहात्म्य को समझते हैं, आप जिस अदम्य उत्साह व प्रसन्नता के साथ श्रम को आह्वान करते हे, युवा कहलाने वाले भी उस श्रम से कतराते हे।"

आचार्यवर ने अपने मगल उद्बोधन मे कहा—"मे बहत्तर वर्ष का होने के बावजूद भी अपने आपको बूढा नही मानता। अवस्थावान बन जाना ही बुढापा नही हे। जहा उत्साह हे, श्रम हे, कल्पना हे वहा बुढापा कहा? मेरे साथ कुछ विसगतिया भी पल रही ह। प्रशसा और निंदा दोनो मे सम रहने का अभ्यास किया हे और आगे भी समत्वशील बनने का प्रयास करता रहूगा।"

पिछले कुछ अर्से से यह महसूस किया जा रहा था कि कुछ काय ऐसे

हो रहे हैं जो दर्शाते हैं कि हमारे धार्मिक आयोजनों में प्रदर्शन एवं फिजूल खर्ची बढ़ती जा रही है। हमारी भावी पीढी तेरापथ के मौलिक सिद्धांतों से परे हटती जा रही है। प्रचलित रूढिया हमारे सामाजिक जीवन को घुण की तरह खाये जा रही है। धर्मसघ से सबधित श्रावकीय व्यवस्थाओं को आज स्वय बोझिल बना दिया है। इन परिस्थितियों में सुधार, परिष्कार, परिवर्तन हेतु इस सम्मेलन का समायोजन हुआ।

जिस तरह हजारों मीलों की यात्रा की शुरुआत एक छोटे से कदम उठाने से होती है, उसी तरह इस सम्मेलन ने भी अपनी परपराओं को अपने वर्तमान मे सन्तुलित रखते हुए एक नन्हा सा कदम उठाया है। यह पहला मौका है, जब समाज के सामूहिक निर्णयों को सघीय-सभा सस्थाओं ने अपना परम कर्तव्य समझकर क्रियान्वित करने का दायित्व स्वीकार किया है।

इस सम्मेलन मे देश के कोने-कोने से समागत ३३१ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन मे कुल १२ गोष्ठिया हुई, जिसमे कुल समय २१ घटे लगा। इन १२ गोष्ठियों मे पृथक्-पृथक् विषय रखे गये थे। उन निर्धारित विषयों के मानक बिंदुओं पर सतों और साध्वियों का महत्त्वपूर्ण वक्तव्य होता। उस पर उपस्थित प्रतिनिधि अपने बहुमूल्य सुझाव देते। उन सुझावों एव मानक बिंदुओं के आधार पर एक मसौदा तैयार करने हेतु एक उपसमिति का गठन होता और वह अगली गोष्ठी होने तक अपनी पूरी रिपोर्ट सम्मेलन मे रखती। उस रिपोर्ट को पुन पढा जाता और मामूली सशोधनों के साथ उस पर मोहर छाप लग जाती। इस सम्मेलन की आयोजक सस्थाए थी—जैन विश्व भारती, जैन श्वेताम्बर तेरापथी महासभा, नियोजन मण्डल, जैन श्वेताम्बर तेरापथी सभा (कानोड), तेरापथ भवन मे आयोजित पच दिवसीय इस सम्मेलन मे सम्पन्न विभिन्न गोष्ठियों के मुख्य विषय इस प्रकार है—

१ भावी पीढी और सस्कार निर्माण, २ भावी पीढी और तत्त्व ज्ञान, ३ धार्मिक आयोजन और व्यवस्थाओं का सरलीकरण, ४ हमारा सगठन। ५ अमृत महोत्सव पर सपादित होने वाले कार्य, ६ जैन समन्वय, ७ सामाजिक रूढियों का परिष्कार, ८ सांस्कृतिक व शैक्षणिक विकास आदि। श्रावक सम्मेलन द्वारा इन विषयों पर पारित प्रस्ताव[1] समाज पर प्रभावी हो गये।

---

[1] नियोजन मण्डल द्वारा प्रकाशित विज्ञप्ति "कानोड-प्रस्ताव" शीर्षक से विस्तृत विवरण देखें।

इन प्रस्तावो को लागू करने हेतु अलग-अलग धाराओ की क्रियान्विति की जिम्मेवारी विभिन्न सस्थाओ की होगी ।

इस अखिल भारतीय श्रावक-सम्मेलन का भविष्य मे क्या नाम होगा ? क्या स्वरूप होगा ? इस पर यह निर्णय लिया गया कि इस सम्मेलन का नाम "तेरापथ अमृत ससद" रहेगा । इसका गठन व सचालन नियोजन मन्डल करेगा । नियोजन मडल के सयोजक श्री धरमचद चौपडा है ।

अणुव्रत के कार्य को गतिशील बनाने की दृष्टि से एक समिति श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट के सयोजन मे बनी । वृहत् आयोजनो मे प्रवन्ध एव व्यवस्था को सुव्यवस्थित बनाने की दृष्टि से "वृहत् आयोजन परामर्श समिति" बनी । इसके सयोजक श्री खेमचद सेठिया होगे । दोनो समितियो मे अन्य अनेक सदस्यो को भी नामजद किया गया ।

पाच दिवसीय यह अखिल भारतीय श्रावक सम्मेलन वडे ही हर्ष एव उत्साहपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ । श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट, श्री पन्नालाल बाठिया, श्री माणकचद बाठिया, मुनिश्री किशनलाल ने समापन के अवसर पर अपने विचार रखे । युवाचार्यश्री ने अपने उद्‌बोधन मे श्रावको को दिशादर्शन दिया । आचार्यश्री ने सम्मेलन को अभूतपूर्व बताते हुए कहा—'सभी गोष्ठियो मे महत्त्वपूर्ण विषयो पर गहन चर्चाए हुई । कानोड आगमन के बाद समय पर सो भी नही सके । वहुत व्यस्त कायक्रम रहा, फिर भी हमे प्रसन्नता का अनुभव हुआ क्योकि हमने यह समय जन-जागरण के लिए लगाया । भौतिक विकास के सभी ससाधनो से अध्यात्म उत्कृष्ट होता हे । इसे मुख्य मानकर चलने वाला आदमी सदा आनन्द को हस्तगत कर सकता है ।'

मध्याह्न मे राजस्थान के मत्री श्री रामपाल उपाध्याय, विधायक सुश्री गिरिजा व्यास भी उपस्थित थी । जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचदजी सेठिया ने सुन्दर व्यवस्था के लिए कानोड के श्रावको को वधाई दी । श्रावक सम्मेलन को सफल बनाने मे श्री सेठिया का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा । श्रावक सम्मेलन मे समागत प्रतिनिधियो को यह सूचना दी गई कि काठमाडु, नेपाल सरकार ने श्री हसराज गोलछा को नेपाल का सर्वोच्च अलकरण प्रदान किया है ।

६ जनवरी/प्रात प्रवचन मे पडित गिरजाशकर व्यास ने सस्कृत पद्यों के माध्यम मे आचायवर का गुणगान किया । आचार्यवर के उद्‌गार—'आजकल 'जीओ और जीने दो' का नारा बुलन्द हे, पर इसमे गाभीय नही है ।

जीना और मरना महत्त्वपूर्ण नही है। महत्त्वपूर्ण है गिरते हुए व्यक्ति को ऊचा उठाना। महत्त्वपूर्ण है जीने का सही तौर-तरीका। वर्तमान का यही ज्वलन्त प्रश्न है कि कैसे जीया जाए।" जीने का यथार्थ ढग कोई भी हमारे से सीख सकता है। हमारे पास ऐसे साधन विकसित है।"

दोपहर युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ कॉलेज मे पधारे। विद्यार्थियो के बीच युवाचार्यश्री का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। मध्याह्न एक अमरीकी पार्टी आई, जो पूरे विश्व का दौरा कर रही है। उसका उद्देश्य एक ऐसी फिलम का निर्माण करना है जिसमे अहिंसा के लिए काम करने वाले व्यक्तियो, सस्थाओ का अतरग चित्रण हो। अणु अस्त्रो की विभीषिका से त्रस्त इस जगत् को अहिसा की बात कहना इस अमरीकी पार्टी का मुख्य ध्येय है। इस पार्टी ने आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के इन्टरव्यू लिए। साय आचार्यवर कानोड नगर बाहिर जवाहिर विद्यापीठ पधारे। कानोड नगर की ओर से आचार्यवर को विदाई दी गई।

५ जनवरी को प्रात प्रवचन के मध्य मुनिश्री सुमनकुमार आचार्यवर को अपना "मुक्ति-पत्र" देकर चला गया और सघ से अपना सबध तोड लिया। काफी समय से उसकी प्रकृति का सघीय व्यवस्थाओ के साथ तालमेल नही हो पा रहा था। उसकी प्रकृति को रूपान्तरित करने का प्रयास किया गया, पर वह असफल रहा। आखिर उसकी परिणति सघ से बहिर्गमन के रूप मे हुई।

कानोड-प्रवास के दौरान शोक विमुक्ति हेतु एक परिवार आया। श्री दुलीचद बाठिया (सगरिया मडी) का जीप दुर्घटना मे देहान्त होने पर उनके पारिवारिक लोग दर्शनार्थ पहुचे। कई स्थानो के अर्वाचीन व प्राचीन झझट समाप्ति की दिशा मे कुछ उपयोगी काय सपादित हुए। बैंगलूर का झझट जो काफी पुराना था, समाप्त हो गया। इसी तरह विराटनगर (नेपाल) तथा जयपुर निवासी श्री चन्दनमल दूगड की पत्नी की सपत्ति लेकर चल रहा तयालीस वर्ष पुराना झझट दूर हो गया। यह शमन आचार्यवर के सान्निध्य मे तथा वरिष्ट श्रावक श्री खेमचद सेठिया की मध्यस्थता मे हुआ।

६ जनवरी/आचार्यवर का कानोड से विहार। २५ सतो के साथ विलोदा आगमन। श्रद्धेय युवाचार्यश्री ने आचार्यश्री से पृथक् सीधे कानोड से भीण्डर, वल्लभनगर होते हुए थामला की ओर विहार किया। आचायवर के चित्तौडगढ यात्रा के आकस्मिक निर्णय से सारे यात्रा कार्यक्रम मे फेरबदल हो

गया। जो मार्ग पूर्व मे आचार्यवर के लिए निर्णीत था, उसी रास्ते से युवाचार्यश्री ठाणा १६ से प्रस्थित हो गये। प्रात व रात्रि बिलोदा मे आचार्यवर का प्रवचन हुआ।

८ जनवरी/बीलोदा से आचार्यवर भादसोड पधारे। आज मार्ग लबा, ऊबड-खाबड व कष्टप्रद था। आचार्यवर के कमर मे दर्द होने से रास्ते मे कई जगह विश्राम लेना पडा। रास्ते मे मोखण गाव आया। पैंतीस जैन घरो वाले इस गाव मे आचार्यवर कुछ देर रुके, प्रवचन दिया। भादसोड मे करीब ७०० की उपस्थिति मे आचार्यवर का प्रवचन हुआ। रात्रि मे मुनिश्री मुनि सुव्रत के सक्षिप्त वक्तव्य के बाद मुनिश्री रोशनलाल का प्रवचन हुआ।

९ जनवरी/प्रात बानसेन, साय हाज्याखेडी तथा १० जनवरी को प्रात देवारी साय बोजूदा प्रजनन केन्द्र के मुख्यालय मे विराजे। वहा देश-विदेश की विभिन्न किस्मो की भेडे है। रात्रि मे वहा के अधिकारियो ने आचार्यवर से बातचीत की।

देश मे चारित्रिक सकट गहराया

बोजून्दा/आचार्यवर कल चित्तौडगढ पधार रहे है, इसलिए रात्रि मे राजस्थान प्रदेश के कुछ पत्रो के सवाददाता आचार्यवर से मिले और उन्होने कुछ प्रश्न पूछे। दूसरे दिन कई प्रमुख पत्रो मे इस वार्ता की अच्छी चर्चा रही। आचार्यवर ने सवाददाताओ के प्रश्नो का उत्तर देते हुए कहा—"देश मे आजादी के बाद लोगो मे स्वाभिमान जागा है और स्वतत्रता की भावना पैदा हुई हे। नैतिक पतन के कारण चारित्रिक सकट गहराया है। मैने पिछले साठ वर्षों मे लगभग ६० हजार कि० मी० से भी ज्यादा पैदल यात्रा कर आजादी के पहले और उसके बाद लगभग सारे भारत को नजदीकी से देखा हे और पाया हे कि आजादी के बाद भौतिकवाद के प्रवाह मे इतने अधिक बह गये ह कि नैतिकता, प्रामाणिकता और धर्म को भूल गये। चारित्रिक सकट का यह माहोल समाज के सभी वर्गो मे व्याप्त है, पर ऐसे सकट के समय मे धर्माचाय भी अपना कर्त्तव्य भूल गए और चरित्र के स्थान पर उपासना पद्धति को ही प्रमुख मान लिया। जबकि उपासना भी उसी व्यक्ति को करने का अधिकार है जो चरित्रवान् हो। पर आज हो यह रहा हे कि चरित्रहीन लोग उपासना कर रहे हे।

आचार्यश्री ने कहा कि देश मे कई एक योजनाओ के माध्यम मे विकास की गति को तेज करने का प्रयास किया जा रहा हे पर उसका प्रतिफल उस-

लिए पूरा नही मिल पा रहा है कि सर्वत्र चारित्रिक मकट विद्यमान है। जब तक हम मानवीय आचार-सहिता को जीवन और व्यवहार मे स्वीकार नही करते है तब तक न तो योजनाओ का लाभ मिलेगा, न हम गरीवी से मुक्ति पा सकते है।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि इसी भावना को लेकर देश मे अणुव्रत आदोलन प्रारम्भ किया है जिसमे उपासना को गौण और चरित्र को प्रमुख, मजहब और सम्प्रदाय को गौण और मानव धम को मुख्य माना है तथा परलोक की चिता न कर इस लोक को सुधारने पर वल दिया है। अणुव्रत आदोलन मानवीय आचार-सहिता के रूप मे आज काफी लोकप्रिय हो रहा है और एक नया वातावरण वना है।

राजनीति और शिक्षा पर पूछे गये प्रश्न के उत्तर मे उन्होने कहा कि कोई भी नीति हो, वह अध्यात्म के विना अधूरी है। ऐसी राजनीति देश के लिए घातक होगी जो इन्सान को इन्सानियत के रास्ते से ही हटा दे और वह शिक्षा नीति वेकार होगी जो जीवन को जीने का ज्ञान नहीं दे सके। उन्होने कहा कि एक जीवन-विज्ञान कार्यक्रम प्रारम्भ किया है जिसमे जीवन के मर्वागीण विकास की पद्धति के प्रशिक्षण की व्यवस्था है। उसके अनुकूल साहित्य तैयार कर सरकार को दिया जायेगा। ताकि वह शिक्षण सस्थाओ मे इसे भेज सके। राजस्थान विद्यापीठ के तत्वावधान मे अगले माह उदयपुर मे इसी विपय पर एक कायक्रम आयोजित किया गया है।

विदेशो मे जैन धर्म और मानवता का सदेश देने के लिए साधु और श्रावक के वीच की श्रेणी तैयार की गई है, जो विदेशो मे जाकर मानव धर्म का प्रचार कर रही है। इसके उत्साह जनक परिणाम सामने आये है। कई देशो से वरावर माग आ रही है कि समणियो को प्रचार कार्य हेतु भेजा जाए। आचार्यश्री ने कहा कि साधु की अपनी मर्यादाए है और श्रावक से इतनी अपेक्षा नही की जा सकती, इसीलिए यह नया वर्ग तैयार किया है जिसका आम स्वागत किया गया है।

जैन समाज के विभिन्न घटको मे एकता के वारे मे पूछे गये प्रश्न के उत्तर मे आचार्यश्री ने कहा कि इन्ही दिनो जैन समन्वय प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है, जो इस दिशा मे प्रयास कर रहा है। इसकी एक वैठक अगले माह उदयपुर मे रखी गयी है जिसमे मभी घटको के प्रतिनिधि भाग लेगे।

उन्होने आगे कहा कि जैन समाज को एक मच पर लाने और सवत्सरी

पर्व एक मनाने की दिशा मे जो प्रयास इन दिनो हो रहे है, उससे उनको आशा है कि निकट भविष्य मे जल्दी ही सफलता मिल जायेगी। जैन धर्म के सभी सम्प्रदायो के धर्माचार्य भी अब इसकी आवश्यकता महसूस करने लगे है और इस प्रकार से एक मच के पक्ष मे है।

देश मे अलगाववादी प्रवृत्तियो के सिर उठाने के बारे मे पूछे गये एक प्रश्न के उत्तर मे उन्होने कहा कि एक तो देश मे गरीबी के कारण यहा का इन्सान भूख के मारे जल्दी आक्रोश मे आ आता है फिर विदेशी ताकते इसका लाभ उठाती हैं और इस देश मे अलगाववादी ताकतो को पैसा व प्रोत्साहन देती है जिससे यह समस्या उत्पन्न हुई है। उन्होने कहा कि पिछले दिनो स्व-हरचदसिंह लोगोवाल की उनसे जो मुलाकात हुई उस दौरान बात-चीत मे स्व० लोगोवाल ने यह स्वीकार किया था कि वह सविधान को मानते हैं और भारत की अखडता के पक्ष मे हैं।

ऐतिहासिक चित्तौड़गढ मे

११ जनवरी/आचार्यवर का चित्तौड प्रवेश। सेथी से विशाल जुलूस के साथ आचार्यवर मीरा मार्केट पहुचे। इस विशाल और भव्य जुलूस को देखने के लिए सडक के दोनो ओर हजारो-हजारो लोग खडे थे। ज्योही आचार्यश्री पास से गुजरते, लोगो के हाथ जुड जाते। आचार्यश्री का प्रवास-स्थल बना नवनिर्मित विशाल जैन स्थानक। मीरा मार्केट मे आयोजित स्वागत कार्यक्रम का प्रारम्भ कन्या मडल के गीत से हुआ।

लगभग ५००० की महती उपस्थिति मे आयोजित इस स्वागत कार्य-क्रम मे सभी धर्मों की ओर से आचार्यश्री का स्वागत किया गया। अजुमन कमेटी के अध्यक्ष सैयद बरकत अली, गुरुसिंह सभा की ओर से श्री सतपाल सिंह, माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण इनाणी, ब्राह्मण समाज की ओर से श्री शिवशकर व्यास, महावीर जैन सघ की ओर से श्री बसतीलाल पोखरना, तेरापथी समाज की ओर से श्री शभूसिह सुराणा ने स्वागत किया और उन्होने चित्तौडगढ के लिए इसे शुभ दिन माना। जिला कलेक्टर श्री धर्मसिह सागर ने आचार्यवर को अभिनन्दन पत्र समर्पित किया, जिसका वाचन श्री बी० एल० खाव्या ने किया। इस अवसर पर मुनिश्री बुद्धमल तथा साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा के भाषण हुए। आर्य कन्या गुरुकुल के सचालक विजयानद सरस्वती ने स्वरचित कविता भेट की।

आचार्यश्री ने अपने मगल सदेश मे कहा—"आज हम धर्म को गौण

मानकर मजहब को प्रमुख मानने लग गये है जिसका ही परिणाम है कि आज मजहब धर्मविहीन होता जा रहा है।"

उन्होने आगे कहा—"भारत की माटी से अध्यात्मवाद मरा नही, अपितु मूर्च्छित हुआ है। जिसे पुन सचेतन करने की आवश्यकता है और वह तभी सचेतन होगा जब हम मजहब के स्थान पर धर्म को अर्हता देगे। अणुव्रत नैतिक जीवन की आचार-सहिता है। उसका सबध किसी मजहब से नही, जीवन से है। मानवता का सदेश लेकर घूमता-घूमता आज आपके ऐतिहासिक नगर मे आया हू।"

सत्ताधीशो का सतो से सम्पर्क जरूरी

मध्याह्न दैनिक भास्कर के विशेष सवाददाता श्री सुभाष ओझा आचार्यवर से मिले। उन्होने आचार्यवर से विभिन्न विषय सबधी प्रश्न पूछे। यह भेट वार्ता १६ फरवरी के दैनिक भास्कर मे प्रकाशित हुई। करीब तीस मिनट तक धर्म, सेक्स, अध्यात्म, राजनीति, धार्मिक आडम्बर आदि विभिन्न मुद्दो से जुडे सवालो का आचार्यश्री ने जबाब दिया। वार्ता का सार सक्षेप इस प्रकार है—

प्रश्न—भारत जैसे नैतिकता प्रधान व सतो की परपरा वाले देश मे ही सर्वाधिक नैतिक पतन दिखाई देता है। इस विसगति के लिए आप किसे दोषी ठहराते है?

उत्तर—देखिए, कोई भी देश न मात्र नैतिक होता है और न मात्र अनैतिक। देश, काल व परिस्थितियो के बदलाव से उतार-चढाव आते रहते है।

भारत भी कभी अनैतिकता प्रधान देश था। भारत मे कब क्या नही हुआ? आप देखिए रावण जैसा राजा सीता का अपहरण कर ले गया। आगे देखिए द्रोपदी को उसके पति ने ही जुए मे दाव पर लगाया। उसके नातेदारो ने भरी सभा मे उसको निर्वसन करने की कुचेष्टा की। ऐसा तो आज भी नही होता। कहा जाता है कि भारत अच्छा था। ठीक है। पर देश काल के कारण उतार-चढाव आते रहते है।

यह कहा जाता है कि आज पूर्व की तुलना मे अधिक पतन है। इसका सबसे बडा कारण यह है कि आज मनुष्य अच्छे के लिए कोशिश नही करता, केवल चर्चा करते है, सोचते है, करते नही। भारत मे यदि लोगो के सोच, कथनी व करनी मे एकरूपता कायम हो जाए तो आज देश का नैतिक उत्थान हो सकता है।

दूसरी सबसे बडी बात यह हुई है कि भारतीय लोगो की आस्था बडी क्षीण हुई है। एक समय था जब यह माना जाता था कि सत्य और नीति से काम चल सकता है। आज यह धारणा बन गई है कि सत्य से काम चल नही सकता। नीति से काम चल नही सकता क्योकि आस्था नही रह गई है। इस आस्था का निर्माण किया जाए तो भारत मे नैतिकता फिर आ सकती है।

प्रश्न—आचार्य रजनीश के इस आरोप मे कितनी सच्चाई है कि भारत के धार्मिक पतन के लिए धर्मगुरुओ का समूह ही सबसे ज्यादा दोषी है ?

उत्तर—दोष देना सहज है। ऐसे कोई भी किसी को दोष दे सकता है। रजनीशजी ने जो बात कही है, हो सकता है खुद के जीवन को उदाहरण के रूप मे सामने रख कर कही हो। वो खुद शायद धर्म मे अनैतिकता पैदा करने वाला बर्ताव करते हो, मुझे मालूम नही। मेरी राय मे नैतिक पतन के लिए धर्म गुरु भी दोषी हो सकते है। इसलिए कि कुछ धर्म गुरुओ ने नैतिकता की रक्षा करने का फर्ज पूरा न किया हो।

प्रश्न—सेक्स और अध्यात्म-समन्वय के रजनीशी नजरिए के बारे मे आपका मत क्या है ? क्या सभोग से समाधि का जन्म सभव है ?

उत्तर—सेक्स और अध्यात्म को एक रूप देने की कल्पना निरी मूर्खता-पूर्ण है। सेक्स पर धर्म का, अध्यात्म का अकुश रहना चाहिए, ऐसा हम मानते है पर दोनो मे समन्वय का कोई प्रश्न नही है।

दूसरी बात सेक्स से समाधि का सवाल ही नही। ऐसा प्रचार करना सिरफिरे लोगो का काम है। जो प्रलोभनकारी बाते कर जनता को भुलावा देते रहते है।

प्रश्न—समय और मानवता की माग के अनुसार क्या धर्म गुरुओ को बाबा आमटे व मदर टेरेसा जैसे सेवा कार्यो का दौर नही अपनाना चाहिए ?

उत्तर—निःसकोच और अवश्य ऐसे कार्य करना चाहिए। मै तो मानता हू कि सभी धर्माचार्यों को अपनी सीमा मे रहते हुए ऐसे काम अक्सर करने चाहिए जिससे राष्ट्र की, ससार की एव मानवता की हर समस्या का समाधान हो।

प्रश्न—आचार्य के रूप मे आपने पचास वर्ष पूरे कर लिए। इन पचास वर्षो मे आम भारतीय नागरिक के सोच मे क्या महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आपने महसूस किया ?

उत्तर—पचास वर्षो मे मैने देखा कि भारतीयो मे नैतिक व चरित्र

पतन का दौर गहराया है। राष्ट्रीय एव चारित्रिक मूल्यो मे आस्था भी कमजोर हुई है। फिर भी मेरा विश्वास है कि भारतवासियो की चेतना मरी नही है, मूर्च्छित है। आज उसको जागृत किया जा सकता है अगर सब धर्मगुरु, धार्मिक लोग व राजनीतिक मिलजुल कर ईमानदारी से प्रयत्न करे तो भारत का बडा भला हो सकता है।

प्रश्न—प्रयत्नो का स्वरूप कैसा होना चाहिए ?

उत्तर—प्रयत्न का स्वरूप यही हो सकता है कि स्वय मर्यादाओ मे रहे और अपने-अपने अनुयाइयो को मर्यादा मे रखने का तीव्र प्रयत्न करे। स्पष्टत कहे कि अगर तुम मेरे अनुयायी हो, तो भ्रष्टाचार व अनैतिकता नही कर सकते। बुरा काम नही कर सकते। अगर सभी यह बात बल देकर कहे तो मेरा विश्वास है कि अनुयायीगण अवश्य मानेगे और भारत का नक्शा बदल सकता है। पर ऐसा तभी सभव है जब प्रत्येक जन खुद नैतिक, चारित्रिक राष्ट्रीय व धार्मिक मर्यादाओ मे रहे।

प्रश्न—देश के बडे सतो मे सत्ता से रिश्ते जोडने की परपरा विकसित हुई है। आपके आयोजनो मे भी नेता व मत्री प्राय दिखाई देते है। इससे सतो की तटस्थता प्रभावित नही होती ?

उत्तर—सतो को सत्ता से रिश्ता जोडने की जरूरत नही है। घबराना नही चाहिए। सत्ता के लोगो से सपर्क जरूर रखना चाहिए। रिश्ते और सपर्क जरूर रखना चाहिए। रिश्ते और सपर्क मे बहुत फर्क है। जब हम अन्यान्य लोगो से सपर्क रख सकते है तो सत्ता के लोगो से सपर्क रखने मे क्या आपत्ति है ?

फिर सत्ता के लोगो से क्या एलर्जी है ? सतो के पास तो कोई भी आए, स्वागत है। हमारे पास आएगे तो हमको देने के बजाए कुछ लेकर ही जाएगे। हमारा तो कहना है कि राजनीतिज्ञो को भी सतो के पास आना चाहिए। इसीलिए कि यहा आकर कुछ सीखे, वे कुछ ग्रहण करे, अन्यथा उनको सतो के सिवाए कौन सीख दे सकता है।

एक उदाहरण है—मोरारजी भाई ने एक बार मुझसे कहा,—पडित नेहरू आपके पास आते है। आप उनमे आध्यात्मिक चेतना जगा दीजिए। बडा कल्याण होगा। हम नही कह सकते। आप कह सकते है।

उसके कुछ रोज बाद मोरारजी भाई मिले। बोले—आपसे मैने जो कुछ कहा था वह काम हो गया। आजकल हर भाषण मे पण्डितजी अध्यात्म

दूसरी सबसे बडी बात यह हुई हे कि भारतीय लोगो की आस्था बडी क्षीण हुई है। एक समय था जब यह माना जाता था कि सत्य और नीति से काम चल सकता है। आज यह धारणा बन गई हे कि सत्य से काम चल नही सकता। नीति से काम चल नही सकता क्योकि आस्था नही रह गई हे। इस आस्था का निर्माण किया जाए तो भारत मे नैतिकता फिर आ सकती है।

प्रश्न—आचार्य रजनीश के इस आरोप मे कितनी सच्चाई हे कि भारत मे धार्मिक पतन के लिए धर्मगुरुओ का समूह ही सबसे ज्यादा दोषी है ?

उत्तर—दोष देना सहज है। ऐसे कोई भी किसी को दोप दे सकता है। रजनीशजी ने जो बात कही है, हो सकता हे खुद के जीवन को उदाहरण के रूप मे सामने रख कर कही हो। वो खुद शायद धर्म मे अनैतिकता पैदा करने वाला वर्ताव करते हो, मुझे मालूम नही। मेरी राय मे नैतिक पतन के लिए धर्म गुरु भी दोषी हो सकते हें। इसलिए कि कुछ धर्म गुरुओ ने नैतिकता की रक्षा करने का फर्ज पूरा न किया हो।

प्रश्न—सेक्स और अध्यात्म-समन्वय के रजनीशी नजरिए के बारे मे आपका मत क्या है ? क्या सभोग से समाधि का जन्म सभव हे ?

उत्तर—सेक्स और अध्यात्म को एक रूप देने की कल्पना निरी मूर्खता-पूर्ण है। सेक्स पर धर्म का, अध्यात्म का अकुश रहना चाहिए, ऐसा हम मानते हे पर दोनो मे समन्वय का कोई प्रश्न नही हे।

दूसरी बात सेक्स से समाधि का सवाल ही नही। ऐसा प्रचार करना सिरफिरे लोगो का काम हे। जो प्रलोभनकारी बाते कर जनता को भुलावा देते रहते हें।

प्रश्न—समय और मानवता की माग के अनुसार क्या धर्म गुरुओ को बाबा आमटे व मदर टेरेसा जैसे सेवा कार्यो का दौर नही अपनाना चाहिए ?

उत्तर—नि सकोच और अवश्य ऐसे कार्य करना चाहिए। मैं तो मानता हू कि सभी धर्माचार्यो को अपनी सीमा मे रहते हुए ऐसे काम अक्सर करने चाहिए जिससे राष्ट्र की, समाज की एव मानवता की हर समस्या का समाधान हो।

प्रश्न—आचार्य के रूप मे आपने पचास वर्ष पूरे कर लिए। इन पचास वर्षो मे आम भारतीय नागरिक के सोच मे क्या महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आपने महसूस किया ?

उत्तर—पचास वर्षो मे मैंने देखा कि भारतीयो मे नैतिक व चरित्र

पतन का दौर गहराया है। राष्ट्रीय एव चारित्रिक मूल्यो मे आस्था भी कमजोर हुई है। फिर भी मेरा विश्वास है कि भारतवासियो की चेतना मरी नही है, मूच्छित है। आज उसको जागृत किया जा सकता है अगर सब धर्मगुरु, धार्मिक लोग व राजनीतिक मिलजुल कर ईमानदारी से प्रयत्न करे तो भारत का बडा भला हो सकता है।

प्रश्न—प्रयत्नो का स्वरूप कैसा होना चाहिए ?

उत्तर—प्रयत्न का स्वरूप यही हो सकता है कि स्वय मर्यादाओ मे रहे और अपने-अपने अनुयाइयो को मर्यादा मे रखने का तीव्र प्रयत्न करे। स्पष्टत कहे कि अगर तुम मेरे अनुयायी हो, तो भ्रष्टाचार व अनैतिकता नही कर सकते। बुरा काम नही कर सकते। अगर सभी यह बात बल देकर कहे तो मेरा विश्वास है कि अनुयायीगण अवश्य मानेगे और भारत का नक्शा बदल सकता है। पर ऐसा तभी सभव है जब प्रत्येक जन खुद नैतिक, चारित्रिक राष्ट्रीय व धार्मिक मर्यादाओ मे रहे।

प्रश्न—देश के बडे सतो मे सत्ता से रिश्ते जोडने की परपरा विकसित हुई है। आपके आयोजनो मे भी नेता व मत्री प्राय दिखाई देते है। इससे सतो की तटस्थता प्रभावित नही होती ?

उत्तर—सतो को सत्ता से रिश्ता जोडने की जरूरत नही है। घबराना नही चाहिए। सत्ता के लोगो से सपर्क जरूर रखना चाहिए। रिश्ते और सपर्क जरूर रखना चाहिए। रिश्ते और सपर्क मे बहुत फर्क है। जब हम अन्यान्य लोगो से सपर्क रख सकते है तो सत्ता के लोगो से सपर्क रखने मे क्या आपत्ति है ?

फिर सत्ता के लोगो से क्या एलर्जी है ? सतो के पास तो कोई भी आए, स्वागत है। हमारे पास आएगे तो हमको देने के बजाए कुछ लेकर ही जाएगे। हमारा तो कहना है कि राजनीतिज्ञो को भी सतो के पास आना चाहिए। इसीलिए कि यहा आकर कुछ सीखे, वे कुछ ग्रहण करे, अन्यथा उनको सतो के सिवाए कौन सीख दे सकता है।

एक उदाहरण है—मोरारजी भाई ने एक बार मुझसे कहा,—पडित नेहरू आपके पास आते है। आप उनमे आध्यात्मिक चेतना जगा दीजिए। बडा कल्याण होगा। हम नही कह सकते। आप कह सकते है।

उसके कुछ रोज बाद मोरारजी भाई मिले। बोले—आपसे मैने जो कुछ कहा था वह काम हो गया। आजकल हर भाषण मे पण्डितजी अध्यात्म

की चर्चा करते है। इस प्रकार सतो के पास आने का फायदा हुआ न ?

प्रश्न—लोकतत्र की वर्तमान स्वरूप से क्या आप सतुष्ट है ?

उत्तर—लोकतत्र की प्रणाली तो निर्विवाद रूप से अच्छी हे, किंतु लोकतत्र को चलाने वाले राजनीतिज्ञ अच्छे नही है। प्रणाली क्या करे ? धर्म अच्छा हे पर व्यक्ति की नियत साफ न हो तो धर्म क्या करे ? राजनेता अच्छे होगे तब ही देश मे लोकतत्र का स्वरूप अच्छा होगा। वर्तमान मे राज-नीतिज्ञ सही नही है इसलिए लोकतत्र का मौजूद ढाचा सतोपप्रद नही है।

प्रश्न—क्या भारत मे समाजवाद का स्वप्न साकार होगा ?

उत्तर—राजनीति जिस प्रकार स्वार्थनीति बन रही है उमसे तो समाजवाद सभव नही है। आज राष्ट्र की किसी को चिंता नही है। समाज की किसी को चिंता नही है। चिता अपनी पार्टी की है, अपने घर की है, कुर्सी की है। इन हालातो मे समाजवाद कैसे आएगा ? समाजवाद के लिए राष्ट्र व समाज हित को प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति अपनानी होगी। ऐसा नही किया गया तो समाजवाद केवल स्वप्न बन कर ही रह जाएगा।

प्रश्न—देश की गरीबी कैसे दूर की जा सकती है ?

उत्तर—ऐसा है कि देश की गरीबी भी सापेक्ष हे। गरीबी किसे कहे हम लोग ? आदमी शराब पीता है। भाग पीता है। तबाखू खाता-पीता हे। नशा करता है। अफीम खाता है। सिनेमा देखत। है। जूआ सट्टा खेलता है। इन कामो मे लाखो रुपयो का अपव्यय करता हे। गरीब कहा हे ?

दूसरी बात गरीब देश मे क्या कोई आदमी निठल्ला रह सकता हे ? भारत मे लाखो आदमी निठल्ले बैठे रहते हैं। काम नही करते वो आवारा लोग। उनको भान भी नही कि हम गरीब ह। अजीब विरोधाभास हे यह। अगर देश मे गरीबी का भान कराया जाए। नशा व निठल्लापन छुडाया जाए। मुफ्तखोरी छुडाकर परिश्रम करने का महत्त्व समझाया जाए तो देश की गरीबी समाप्त हो सकती है।

प्रश्न—युवा पीढी मे बढती हिंसा, नैतिक पतन व अनुशासनहीनता को कैसे दूर किया जा सकता हे ?

उत्तर— युवा पीढी को सही मार्गदर्शन प्राप्त नही है। सही मार्ग-दर्शन युवा पीढी का हो तो मेरा विश्वास है कि युवा लोग सच्चे नागरिक सिद्ध हो सकते हे। उनके सामने सच्चा लक्ष्य हो तो वह निश्चय ही उनको पाने की क्षमता रखते हैं।

इसके अलावा देश मे विलासिता व परामुखता की भावना बढ रही है। यह आत्मघाती है। भारत जैसे देश मे विलासिता के जितने भी साधन हैं। उनको कम करना चाहिए। इससे युवा पीढी मे भटकाव कम होगा।

प्रश्न—१९८६ शाति वर्ष के रूप मे मनाया जा रहा है। ऐसे क्या प्रयास होने चाहिए जिससे यह वर्ष महज औपचारिकता सिद्ध न हो ?

उत्तर— हमारी राय मे जन-जन को अणुव्रती बनाया जाए और आदते बदलने के लिए प्रेक्षाध्यान का प्रयोग कराया जाए। अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान—दो चीजे ऐसी है जिनमे विश्व शाति स्थापित की जा सकती है।

चितौडगढ किले मे

१२ जनवरी/आज १६ सत व २३ साध्विया ऐतिहासिक चित्तौडगढ किला देखने गये। पूर्व मे इस नगर का नाम चित्रकूट था, जो अपभ्रश होते-होते चित्तोड हो गया। जैन परम्परा के विख्यात आचार्य श्री हरिभद्र सूरि की यह जन्मभूमि है। जैन-शासन की विभिन्न घटनाओ से यह क्षेत्र जुडा हुआ है। धवलाकार श्री वीरसेन की शिक्षा भूमि, सिद्धात चक्रवर्ती नेमिचन्द की तपोभूमि होने का गौरव इस क्षेत्र को प्राप्त है।

किले के सात अभेद्य द्वारो को पार करने के बाद किले के मूल क्षेत्र मे प्रवेश होता है। प्रथम रामद्वार के बाहर एक शिलालेख उल्लिखित है, जिसमे यह लिखा था कि चार सौ वर्ष पूर्व चित्रकूट (चित्तौड) पराधीन हो गया। उस समय वहा के योद्धाओ ने पाच प्रतिज्ञा ली—(१) हम दुर्ग पर नही चढेंगे (२) घर बनाकर नही रहेगे (३) खाट पर शयन नही करेंगे। (४) दीपक प्रज्ज्वलित नही करेगे (५) कुएँ मे पीने का पानी निकालने के लिए रस्से का उपयोग नही करेंगे। देश आजाद होने के बाद चार सौ वर्ष पुरानी प्रतिज्ञा पूरी हुई ६ अप्रैल १९५५ को। उस समय तत्कालीन प्रधान-मत्री श्री जवाहरलाल नेहरू, बबई, मध्यप्रदेश, मध्यभारत, पजाब, हिमाचल प्रदेश, अजमेर, भोपाल, राजस्थान के मुख्यमत्री आये और उन्होने उन योद्धाओ के वशजो को किले मे प्रवेश करवाया।

सात दरवाजे पार करने के बाद एक छोटी सी बस्ती आ जाती है। जिसमे जैनो के ५५ घर रहते हैं। उस जमाने के महाराणा कुभा, वीर योद्धा जयमल पत्ता, दानवीर भामाशह, रानी पदमिनी आदि के महल हैं। इनमे कई खडहर प्राय हैं। पुराना तोपखाना, नौलखा भडार, गोमख झरना

मीरा मदिर, ऋषभदेव मदिर, विजय स्तभ, कीर्ति स्तभ, हिरणो का अभयारण्य आदि किले के आकषक बिंदु ह ।

विजय स्तभ ६०० वष पुराना हे, राणा कुभा ने विजय-प्राप्ति की यादगार मे इस स्तभ का निर्माण करवाया । कीर्ति स्तभ जो १२ वी शताब्दी मे निर्मित ह, उस समय की जनो की सक्रियता, कीर्ति व प्रभाव का प्रतीक ह । ७५ फीट ऊचे इस स्तभ के पास प्राचीन दिगबर जैन मदिर है । विजय स्तभ व कीर्ति स्तभ से दूर-दूर तक हरा-भरा मनोहारी व लुभावना दृश्य स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है ।

चित्तौडगढ किले के साथ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण यह इतिहास जुडा हुआ है कि जब अरब बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने किले पर हमला बोला, उस समय राणा पराजित हो गये । पहले दो बार खिलजी को राणा ने हराया पर तीसरी बार मात खा गये ।

इस लडाई मे वीर योद्धा पत्ता काम आया । जिसकी समाधि दूसरे व तीसरे द्वार के बीच बनी हुई हे । उस समय महारानी पद्मिनी शीलरक्षा के लिए सैंकडो सहेलियो के साथ चिता मे कूद पडी । रानी पद्मिनी की यह जोहर प्रसिद्ध भूमि चितौड मेवाड की ६०० वर्ष तक राजधानी रही । उसके बाद चारो ओर उत्तुग पवतमालाओ के बीच महाराणा उदयसिह जी ने उदयपुर बसाया, तब से चित्तौड से उदयपुर राजधानी स्थानान्तरित हो गई । साधु-साध्विया प्रात ८ ३० बजे मीरा मार्केट से चले और दोपहर १ ३० बजे पुन स्थान पर पहुचे । किले की इस परिक्रमा मे १८ कि० मी० का विहार हो गया । किले की ऐतिहासिक प्रामाणिक अवगति देने हेतु जैन श्रावक श्री मागीलाल पोखरना निरन्तर साथ रहे ।

उधर प्रात कालीन कायक्रम मे मुनिश्री रोशनलाल, निकायव्यवस्था, प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल के प्राग् अभिभाषण के बाद करीब ५००० की उपस्थिति मे आचायवर का प्रेरक प्रवच हुआ ।

रोटरी कल्ब मे व लायन्स कल्ब मे

मध्याह्न २ बजे मीरा मार्केट के विशाल मीरा हाल मे आचायवर की सन्निधि म रोटरी कल्ब की ओर से भव्य कायक्रम समायोजित हुआ । सवप्रथम कल्ब के उपाध्यक्ष श्री रामचन्द्र पचोली ने कल्ब की ओर से स्वागत किया । मुनिश्री बुद्धमल ने आचायवर का परिचय प्रस्तुत करते हुए काय व

उत्साह को यौवन व निठल्लापन को बुढापा बताया।

आचार्यश्री ने खचाखच भरे मीरा हॉल मे अपने उद्बोधन मे कहा—"आज सर्वत्र मानवता गहरी नींद मे है। ऐसे विषम समय मे मानवता को जगाने के लिए शक्ति के विनियोजन की बडी अपेक्षा है, मानवीय मूल्यो की स्थापना जरूरी है, धर्म की मौलिक अवगति अपेक्षित है।"

आचार्यवर ने मानव मूल्यो के उन्नयन के लिए श्रम के मूल्याकन को आवश्यक तथा सुविधावाद को त्याज्य माना। उन्होने इस विचार धारा को परिवर्तित करने की बात कही कि शराब या अन्य नशीली वस्तुओ का सेवन सभ्यता का प्रतीक है। श्रोताओ द्वारा पूछे गये प्रश्नो को मुनि श्री बुद्धमल ने समाहित किया।

इस कार्यक्रम के तत्काल बाद आचार्यवर लायन्स क्लब द्वारा आयोजित नेत्र-चिकित्सा शिविर के समापन समारोह मे पधारे। लायन्स क्लब के मत्री श्री आर० सी० डाड ने आचार्यश्री का स्वागत किया तथा क्लब की गति-विधियो से लोगो को अवगत कराया। रवीन्द्रनाथ टैगोर आयुविज्ञान महा-विद्यालय उदयपुर के सुप्रसिद्धनेत्र विशेषज्ञ श्री एस० पी० माथुर, वेगु के विधायक श्री पकज पचोली ने अपने विचार व्यक्त किये। मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने आचार्यश्री का परिचय दिया।

आचार्यवर ने इस अवसर पर कहा—'डाक्टर लोगो को जहा नेत्र-दृष्टि प्रदान करते है वहा हम भी लोगो को ज्ञान-दृष्टि देने मे अहर्निश प्रयत्नशील रहते ह। शरीर के समस्त अगो मे आख का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज आदमी सम्पत्ति और सत्ता को महत्त्व दे रहा है, तभी चारो ओर अव्यवस्था, तनाव, आतक पनप रहा है। अगर राष्ट्र का, स्वय का उत्थान करना है तो अन्तर्दृष्टि को खोलना होगा, इन्सानियत को महत्त्व देना होगा।'

रात्रि मे करीब ५००० की उपस्थिति मे महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे साध्वियो का मनभावना कार्यक्रम रहा। साध्वियो ने भाषण गीतिका, मुक्तको आदि के माध्यम से अपने विचार रखे। साध्वी प्रमुखाश्री ने शाति, सतुष्टि, पवित्रता और आनन्द को सफल जीवन के चार बिन्दु बताते हुए कहा—'इन चारो की जिस व्यक्ति के जीवन मे अनुभूति की विद्यमानता है, तो वह निश्चित ही सुखी है। स्वय की पहचान के अभाव मे ही आदमी दु खी बनता ह, अशान्त होता है।'

आज भीलवाडा, पुर, राजनगर, नाथद्वारा आदि अनेक क्षेत्रो से सैकडो

मीरा मदिर, ऋषभदेव मदिर, विजय स्तभ, कीर्ति स्तभ, हिरणो का अभयारण्य आदि किले के आकर्षक बिदु ह ।

विजय स्तभ ६०० वष पुराना ह, राणा कुभा ने विजय-प्राप्ति की यादगार मे इस स्तभ का निर्माण करवाया । कीर्ति स्तभ जो १२ वी शताब्दी मे निर्मित ह, उस समय की जनो की सक्रियता, कीर्ति व प्रभाव का प्रतीक ह । ७५ फीट ऊचे इस स्तभ के पास प्राचीन दिगबर जैन मदिर हे । विजय स्तभ व कीर्ति स्तभ से दूर-दूर तक हरा-भरा मनोहारी व लुभावना दृश्य स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है ।

चित्तौडगढ किले के साथ सर्वाधिक महत्त्वपूण यह इतिहास जुडा हुआ हे कि जब अरब बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने किले पर हमला बोला, उस समय राणा पराजित हो गये । पहले दो बार खिलजी को राणा ने हराया पर तीसरी बार मात खा गये ।

इस लडाई मे वीर योद्धा पत्ता काम आया । जिसकी समाधि दूसरे व तीसरे द्वार के बीच बनी हुई है । उस समय महारानी पद्मिनी शीलरक्षा के लिए सैकडो सहेलियो के साथ चिता मे कूद पडी । रानी पद्मिनी की यह जोहर प्रसिद्ध भूमि चितोड मेवाड की ६०० वर्ष तक राजधानी रही । उसके बाद चारो ओर उत्तुग पवतमालाओ के बीच महाराणा उदयसिंह जी ने उदयपुर बसाया, तब से चित्तौड से उदयपुर राजधानी स्थानान्तरित हो गई । साधु-साध्विया प्रात ८ ३० बजे मीरा मार्केट से चले और दोपहर १ ३० बजे पुन स्थान पर पहुचे । किले की इस परिक्रमा मे १८ मि० मी० का विहार हो गया । किले की ऐतिहासिक प्रामाणिक अवगति देने हेतु जैन श्रावक श्री मागीलाल पोखरना निरन्तर साथ रहे ।

उधर प्रात कालीन कायक्रम मे मुनिश्री रोशनलाल, निकायव्यवस्था, प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल के प्राग् अभिभाषण के बाद करीब ५००० की उपस्थिति मे आचायवर का प्रेरक प्रवच हुआ ।

रोटरी कलब मे व लायन्स कलब मे

मध्याह्न २ बज मीरा मार्केट के विशाल मीरा हाल मे आचायवर की सन्निधि म रोटरी क्लब की ओर से भव्य कार्यक्रम समायाजित हुआ । सवप्रथम कलब के उपाध्यक्ष श्री रामचन्द्र पचोली ने कलब की ओर से स्वागत किया । मुनिश्री बुद्धमल ने आचायवर का परिचय प्रस्तुत करते हुए काय व

उत्साह को यौवन व निठल्लापन को बुढापा बताया ।

आचार्यश्री ने खचाखच भरे मीरा हॉल मे अपने उद्बोधन मे कहा—"आज सर्वत्र मानवता गहरी नीद मे है । ऐसे विषम समय मे मानवता को जगाने के लिए शक्ति के विनियोजन की वडी अपेक्षा है, मानवीय मूल्यो की स्थापना जरूरी है, धर्म की मौलिक अवगति अपेक्षित है ।"

आचार्यवर ने मानव मूल्यो के उन्नयन के लिए श्रम के मूल्याकन को आवश्यक तथा सुविधावाद को त्याज्य माना । उन्होने इस विचार धारा को परिवर्तित करने की बात कही कि शराब या अन्य नशीली वस्तुओ का सेवन सभ्यता का प्रतीक है । श्रोताओ द्वारा पूछे गये प्रश्नो को मुनि श्री बुद्धमल ने समाहित किया ।

इस कार्यक्रम के तत्काल वाद आचार्यवर लायन्स कलब द्वारा आयोजित नेत्र-चिकित्सा शिविर के समापन समारोह मे पधारे । लायन्स क्लब के मंत्री श्री आर० सी० डाड ने आचार्यश्री का स्वागत किया तथा कलब की गति-विधियो से लोगो को अवगत कराया । रवीन्द्रनाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महा-विद्यालय उदयपुर के सुप्रसिद्धनेत्र विशेषज्ञ श्री एस० पी० माथुर, वेगु के विधायक श्री पकज पचोली ने अपने विचार व्यक्त किये । मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने आचार्यश्री का परिचय दिया ।

आचार्यवर ने इस अवसर पर कहा—'डाक्टर लोगो को जहा नेत्र-दृष्टि प्रदान करते है वहा हम भी लोगो को ज्ञान-दृष्टि देने मे अहर्निश प्रयत्नशील रहते है । शरीर के समस्त अगो मे आख का महत्त्वपूर्ण स्थान है । आज आदमी सम्पत्ति और सत्ता को महत्त्व दे रहा है, तभी चारो ओर अव्यवस्था, तनाव, आतक पनप रहा है । अगर राष्ट्र का, स्वय का उत्थान करना है तो अन्तर्दृष्टि को खोलना होगा, इन्सानियत को महत्त्व देना होगा ।'

रात्रि मे करीव ५००० की उपस्थिति मे महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे साध्वियो का मनभावना कार्यक्रम रहा । साध्वियो ने भाषण गीतिका, मुक्तको आदि के माध्यम से अपने विचार रखे । साध्वी प्रमुखाश्री ने शाति, सतुष्टि, पवित्रता और आनन्द को सफल जीवन के चार बिन्दु बताते हुए कहा—'इन चारो की जिस व्यक्ति के जीवन मे अनुभूति की विद्यमानता है, तो वह निश्चित्त ही सुखी है । स्वय की पहचान के अभाव मे ही आदमी दुखी बनता है, अशात होता है ।'

आज भीलवाडा, पुर, राजनगर, नाथद्वारा आदि अनेक क्षेत्रो से सैकडो

लोग दर्शनार्थ आये । आज दिनभर लोगो का मेला-सा लगा रहा । रात्रि मे स्थानीय कायकर्ताओ ने आचायवर की नजदीकी से उपासना की ।

१३ जनवरी / प्रात चित्तौडगढ के अन्य उपनगर कुभानगर, शास्त्री-नगर, प्रतापनगर पधारे । प्रवचन मे आचायवर ने अणुव्रत के नियमो के बारे मे विस्तार से प्रकाश डाला, फलत अणुव्रत समिति का गठन हुआ । दादा हनुमत सिंह भण्डारी को समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया गया । प्रवचनोपरात दादा की स्कूल मे आचायवर ने छात्र-छात्राओ को सम्बोधित किया । दादा ने इस मौके पर शीलव्रत ग्रहण किया । माण्डल क्षेत्र के विधायक श्री बिहारीलाल पारिख आचायवर से मिले, बातचीत की ।

सैनिक स्कूल मे

मध्याह्न १ ३० बजे आचायवर न जैन स्थानक मीरा मार्केट से विहार किया । ठीक २ बजे सैनिक स्कूल पधार गये । सैनिक स्कूल के प्रिसिपल श्री के०पी० सिह न अपने पूरे स्टाफ के साथ मुख्य गेट पर आचायवर की अगवानी की । स्कूल क विशाल हाल मे प्रवेश करते ही अपने गणवेश मे अनुशासित लडको न एक सुमधुर गीत शुरु किया । प्राचाय श्री के०पी० सिह ने आचाय-वर को मानवता का पुजारी बताते हुए विद्यालय मे पधारने पर भावभरा स्वागत किया । प्राचाय महोदय एव उनकी पत्नी ने आचायवर का दो बार प्रवचन सुना । आचायश्री के मानवतावादी दृष्टिकोण से दोनो प्रभावित हुए । उनके विशेष आग्रह पर ही आचार्यश्री स्कूल मे पधारे । यह स्कूल सेवानिवृत्त सैनिको द्वारा सचालित है । मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने आचायवर का परिचय दिया । मुनिश्री श्रेयासकुमार ने अनुशासन गीत प्रस्तुत किया । निकाय व्यवस्था प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल ने विद्यार्थियो को सम्बोधित किया ।

शात एव अनुशासित ढग से बैठे विद्यार्थियो को सम्बोधित करते हुए आचायवर ने कहा—'मै अनेक बार विद्यालयो, महाविद्यालयो, विश्वविद्यालयो मे गया हू, किन्तु एक सैनिक स्कूल मे जाने का यह पहला अवसर ह । हमारे सैनिक बच्चो को न केवल किताबी ज्ञान देते ह, अपितु अपन जीवन एव व्यवहार से प्रशिक्षण देने का यत्न करते ह । इसका स्पष्ट उदाहरण ह बच्चो का अनुशासन ।'

आचायवर ने आगे कहा—'डडे या कानून के बल पर किया जाने वाला अनुशासन लबे समय तक नही टिकता । आत्मा से स्वीकृत अनुशासन

ही व्यक्ति के जीवन मे कारगर बन सकता है। अनुशासित व्यक्ति ही राष्ट्र के बहुमुखी विकास मे सहायक सिद्ध हो सकता है। मै चाहता हू कि सैनिक स्कूल के विद्यार्थी अणुव्रत-आचार-संहिता को समझे और उन्हे स्वीकार कर चरित्रनिष्ठ नागरिक बने।'

तुलसी की बदौलत

सैनिक स्कूल से विहार कर आचार्यवर पाडोली (शीतला माताजी की) पधारे। रात्रि प्रवास वही हुआ। चित्तौडगढ का तीन दिनो का प्रवास बहुत प्रभावशाली रहा। इस प्रवास मे जहा डाक्टर, वकील, अध्यापक तथा बुद्धिजीवी लोग सम्पर्क मे आए, वहा नगर के विभिन्न वर्गो के लोग आचार्य वर की वाणी सुनने आए। प्रात -साय की प्रवचन सभाओ मे हजारो व्यक्तियो की उपस्थिति होती। आचार्यवर के पदार्पण से नगर मे अजीब-सा माहौल पैदा हो गया। राजस्थान के कई पत्रो मे यह समाचार प्रकाशित हुआ कि पिछले कई महीनो से मीरा मार्केट मे कचरे व गन्दगी का साम्राज्य था, पर आचार्य तुलसी के चित्तोड आगमन एव मीरा मार्केट मे प्रवास करने से सारी गन्दगी हट गई। पूरी सफाई हो गई। इस बावत कई पत्रकारो ने मार्केट के अनेक दुकानदारो से इस अनायोजित सफाई के बारे मे पूछा, तो दुकानदारो ने कहा—यह सब आचार्य तुलसी की कृपा है। महीनो से नगरपालिका अधिकारियो के समक्ष शिकायते भेजी, पर उनके सिर पर जू तक नही रेगी। आचार्य तुलसीजी के आगमन से दो-तीन दिन पूर्व नगरपालिका के कर्मचारियो का पूरा दल आया और पूरी मुस्तैदी के साथ मार्केट की सफाई कर दी। इसलिए हम इसके लिए आचार्य तुलसीजी के शुक्रगुजार है।

१४ जनवरी / प्रात आचार्यवर सिहपुर पधारे। पदार्पण के तत्काल बाद प्रवचन हुआ। मध्याह्न मुनिश्री विजयकुमार तथा रात्रि मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने प्रवचन किया। रात्रि मे आचार्यवर भी पधारे। प्रवचन से प्रभावित होकर अनेको ने धूम्रपान त्याग दिया। गाव के सरपच ने तम्बाकू का डिब्बा फेकते हुए तम्बाकू को सदा के लिए अलविदा कह दिया।

१५ जनवरी / पाण्डोली स्टेशन आगमन। प्रधानाध्यापक ने आचार्यवर का स्वागत किया। मध्याह्न कपासन के तहसीलदार श्री शातिलाल जैन तथा चित्तौडगढ के डिप्टीकलेक्टर तथा विकास अधिकारी आचार्यवर से मिले। पाडोली के मादरेचा परिवार की आस्था मे शिथिलता आ गई थी।

लोग दर्शनार्थ आये। आज दिनभर लोगो का मेला-सा लगा रहा। रात्रि मे स्थानीय कार्यकर्ताओ ने आचायवर की नजदीकी से उपासना की।

१३ जनवरी / प्रात चित्तौडगढ के अन्य उपनगर कुभानगर, शास्त्री-नगर, प्रतापनगर पधारे। प्रवचन मे आचायवर ने अणुव्रत के नियमो के बारे मे विस्तार से प्रकाश डाला, फलत अणुव्रत समिति का गठन हुआ। दादा हनुमत सिंह भण्डारी का समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। प्रवचनोपरात दादा की स्कूल मे आचायवर ने छात्र-छात्राओ को सम्वोधित किया। दादा ने इस मौके पर शीलव्रत ग्रहण किया। माण्डल क्षेत्र के विधायक श्री विहारीलाल पारिख आचायवर से मिले, वातचीत की।

सनिक स्कूल मे

मध्याह्न १ ३० वजे आचार्यवर ने जैन स्थानक मीरा मार्केट से विहार किया। ठीक २ वजे सैनिक स्कूल पधार गये। सैनिक स्कूल के प्रिंसिपल श्री के०पी० सिह न अपने पूरे स्टाफ के साथ मुख्य गेट पर आचायवर की अगवानी की। स्कूल क विशाल हाल मे प्रवेश करते ही अपने गणवेश मे अनुशासित लडको न एक सुमधुर गीत शुरु किया। प्राचाय श्री के०पी० सिह ने आचाय-वर को मानवता का पुजारी वताते हुए विद्यालय मे पधारने पर भावभरा स्वागत किया। प्राचाय महोदय एव उनकी पत्नी ने आचायवर का दो वार प्रवचन सुना। आचायश्री के मानवतावादी दृष्टिकोण से दोनो प्रभावित हुए। उनके विशेप आग्रह पर ही आचार्यश्री स्कूल मे पधारे। यह स्कूल सेवानिवृत्त सैनिको द्वारा सचालित है। मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने आचार्यवर का परिचय दिया। मुनिश्री श्रेयासकुमार ने अनुशासन गीत प्रस्तुत किया। निकाय व्यवस्था प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल ने विद्यार्थियो को सम्वोधित किया।

शात एव अनुशासित ढग से वैठे विद्यार्थियो को सम्वोधित करते हुए आचायवर ने कहा—'मै अनेक वार विद्यालयो, महाविद्यालयो, विश्वविद्यालयो मे गया हू, किन्तु एक सैनिक स्कूल मे जाने का यह पहला अवसर है। हमारे सैनिक वच्चो को न केवल किताबी ज्ञान देते ह, अपितु अपन जीवन एव व्यवहार से प्रशिक्षण देने का यत्न करते ह। इसका स्पप्ट उदाहरण ह वच्चो का अनुशासन।'

आचायवर ने आगे कहा—'डडे या कानून के वल पर किया जाने वाला अनुशासन लवे समय तक नही टिकता। आत्मा से स्वीकृत अनुशासन

ही व्यक्ति के जीवन मे कारगर बन सकता है। अनुशासित व्यक्ति ही राष्ट्र के बहुमुखी विकास मे सहायक सिद्ध हो सकता है। मै चाहता हू कि सैनिक स्कूल के विद्यार्थी अणुव्रत-आचार-सहिता को समझे और उन्हे स्वीकार कर चरित्रनिष्ठ नागरिक बने।'

तुलसी की बदौलत

सैनिक स्कूल से विहार कर आचार्यवर पाडोली (शीतला माताजी की) पधारे। रात्रि प्रवास वही हुआ। चित्तौडगढ का तीन दिनो का प्रवास बहुत प्रभावशाली रहा। इस प्रवास मे जहा डाक्टर, वकील, अध्यापक तथा बुद्धिजीवी लोग सम्पर्क मे आए, वहा नगर के विभिन्न वर्गो के लोग आचार्य वर की वाणी सुनने आए। प्रात-साय की प्रवचन सभाओ मे हजारो व्यक्तियो की उपस्थिति होती। आचार्यवर के पदार्पण से नगर मे अजीब-सा माहौल पैदा हो गया। राजस्थान के कई पत्रो मे यह समाचार प्रकाशित हुआ कि पिछले कई महीनो मे मीरा मार्केट मे कचरे व गन्दगी का साम्राज्य था, पर आचार्य तुलसी के चित्तौड आगमन एव मीरा मार्केट मे प्रवास करने से सारी गन्दगी हट गई। पूरी सफाई हो गई। इस बाबत कई पत्रकारो ने मार्केट के अनेक दुकानदारो से इस अनायोजित सफाई के बारे मे पूछा, तो दुकानदारो ने कहा—यह सब आचार्य तुलसी की कृपा है। महीनो से नगरपालिका अधिकारियो के समक्ष शिकायते भेजी, पर उनके सिर पर जू तक नही रेगी। आचार्य तुलसीजी के आगमन से दो-तीन दिन पूर्व नगरपालिका के कर्मचारियो का पूरा दल आया और पूरी मुस्तैदी के साथ मार्केट की सफाई कर दी। इसलिए हम इसके लिए आचार्य तुलसीजी के शुक्रगुजार है।

१४ जनवरी / प्रात आचार्यवर सिहपुर पधारे। पदार्पण के तत्काल बाद प्रवचन हुआ। मध्याह्न मुनिश्री विजयकुमार तथा रात्रि मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने प्रवचन किया। रात्रि मे आचार्यवर भी पधारे। प्रवचन से प्रभावित होकर अनेको ने धूम्रपान त्याग दिया। गाव के सरपच ने तम्बाकू का डिब्बा फैकते हुए तम्बाकू को सदा के लिए अलविदा कह दिया।

१५ जनवरी / पाण्डोली स्टेशन आगमन। प्रधानाध्यापक ने आचायवर का स्वागत किया। मध्याह्न कपासन के तहसीलदार श्री शातिलाल जैन तथा चित्तौडगढ के डिप्टीकलेक्टर तथा विकास अधिकारी आचायवर से मिले। पाडोली के मादरेचा परिवार की आस्था मे शिथिलता आ गई थी।

आचार्यवर ने पुन प्रयास कर उसे स्थिर किया और गुरु धारणा करवाई। रात्रि मे लगभग ८०० की उपस्थिति मे आचार्यवर का प्रेरक उद्बोधन हुआ।

कपासन मे ऐतिहासिक स्वागत

१६ जनवरी / कपासन पधारने पर आचार्यवर का हार्दिक स्वागत। स्थानकवासी समाज के १२५ घरो वाले इस क्षेत्र के सैकडो-सैकडो जैन-जैनेतर काफी दूर तक आचार्यवर की अगवानी करने पहुचे। एक भव्य जुलूस के साथ आचार्यवर ने नगर मे प्रवेश किया। स्वागत-समारोह मे ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष श्री विष्णुशकर व्यास, माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री लड्ढा, मुस्लिम समाज के श्री वली मोहम्मद, नगरपालिका उपाध्यक्ष श्री भैरूलाल, उपजिलाधीश श्री नाथूलाल वर्मा, तहसीलदार श्री शातिलाल जैन, पूर्व जिला प्रमुख श्री भवर की प्रेरणास्पद उपस्थिति थी। स्वागताध्यक्ष श्री घीसूलाल कोठारी ने अभिनन्दन पत्र अर्पित किया। इस अवसर पर आचार्यवर का महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुआ। उपस्थिति करीब ४००० की थी। कार्यक्रम का सयोजन श्री नाथूलाल चडालिया ने किया। दोपहर मे मुनिश्री किशनलाल कन्या पाठशाला गये। वहा अध्यापको एव छात्रो को जीवन-विज्ञान-पाठ्यक्रम से अवगत कराया। मध्याह्न म साध्वी प्रमुखाश्री का कार्यक्रम रहा। शाम को अध्यापको की एक महत्त्वपूर्ण सगोष्ठी हुई। इस सगोष्ठी मे अध्यापको द्वारा उठाये गये सवालो का आचायवर ने सटीक जवाव दिया।

रात्रि ७ ४५ वजे मुनिश्री उदितकुमार के वक्तव्य के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। राशमी क्षेत्र के विधायक श्री अमरचद्र वीरवाल के भाषण के वाद मुनिश्री बुद्धमल का ओजस्वी वक्तव्य हुआ। करीव ८००० की विशाल जनसभा को सबोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा—"मेरी सभा मे सभी जाति एव कौम की उपस्थिति रहती हे। मैं ऐसा ही चाहता हू। एक वर्ग विशेष की उपस्थिति मुझे रुचती नही है। वर्तमान उलझाव के सुलझाव के लिए धर्म ही एकमेव रास्ता है। वह धर्म है समता का।" इस यात्रा मे गावो या कस्वो मे इतना विशाल जनसमूह पहली बार देखने को मिला। प्रवचन के वाद स्थानीय जैन-जैनतर लोगो ने कल का प्रात प्रवचन कपासन मे करने का भाव-भरा निवेदन किया। उनके विशेष आग्रह एव भावना को मद्देनजर रखते हुए आचार्यवर ने कल के प्रात प्रवचन का कार्यक्रम कपासन मे ही करने का निर्णय लिया।

१७ जनवरी/कपासन/प्रात नौ बजे कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। मुनि सुमेरमल "लाडनू" के प्राग् प्रवचन के वाद आचार्यवर का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ। १० २० बजे एक विशाल जन समूह के साथ कपासन से विहार कर १ बजे भोपाल सागर पधारे। ऐतिहासिक एव प्राचीन जैन मदिर के पार्श्व स्थित धर्मशाला मे आचार्यवर का प्रवास हुआ। आचार्यवर इस मदिर का निरीक्षण करने पधारे। मदिर के ट्रस्टी ने मदिर की ऐतिहासिक अवगति दी।

साय आचार्यवर ६ मुनियो के साथ वूल ग्राम मे पधारे। मुनिश्री वुद्ध-मल सहित १७ मुनि तथा साध्वी प्रमुखाश्री ने भोपाल सागर मे रात्रि प्रवास किया। वूल गाव विधायक श्री अमरचद वीरवाल की जन्मभूमि थी। आचार्यवर उनकी विशेष विनती पर अतिरिक्त चक्कर लेकर पधारे। आचार्यश्री के स्वा-गत मे पूरे गाव ने व्यसन मुक्ति का सकल्प लिया और गाव के नाम को परि-वर्तित कर "तुलसी पुरम्" कर दिया। श्री अमरचद स्थानकवासी समीर मुनिजी से तत्त्व समझ जैन वीरवाल बने थे। वैसे मेघवाल, खटीक है। आचार्य श्री के प्रति वे विशेष आस्था रखते है। पिछले पचीस वर्षों से रात्रि चौविहार तथा नियमित सामायक करते है।

१८ जनवरी/आचार्यवर करवा होते हुए फतेहनगर पधार गये। एक माह के भीतर फतेहनगर दूसरी बार पदार्पण हुआ। फतेहनगर पधारने के साथ ही चित्तौडगढ जिला समाप्त, उदयपुर जिले की सीमा प्रारम्भ हो गई। वहा आयोजित स्वागत कार्यक्रम के वाद उदयपुर क्षेत्र की सासद श्रीमती इन्दुवाला सुखाडिया ने आचार्यवर के दर्शन किए। मध्याह्न का कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे चला।

दो आचार्यो का सुखद मिलन

आचार्यवर के सान्निध्य मे आयोजित रात्रि कार्यक्रम मे रामस्नेही सप्रदाय के आचार्यश्री रामकिशोर महाराज विशेष रूप से उपस्थित थे। निकाय व्यवस्था प्रमुख मुनिश्री वुद्धमल ने इस अवसर पर कहा—रामस्नेही सप्रदाय और तेरापथ का सबध आज का नही, वल्कि दोनो सप्रदायो के उदय से पहले का है। आचार्य भिक्षु एव सत रामचरणदास जी गृहस्थ अवस्था मे घनिष्ठ मित्र थे। दोनो ही आगे जाकर सत बने और नये सप्रदाय का प्रवर्तन किया। सत रामचरणदासजी ने रामस्नेही सप्रदाय व आचार्य भिक्षु ने तेरापथ सप्रदाय का सूत्रपात किया। तब से आज तक दोनो सप्रदायो का सात्विक सबध चला आ रहा है।" सनातन और जैन होते हुये भी मूर्ति पूजा आदि विषयो अद्‌भूत

साम्य है।

आचार्य रामकिशोर जी महाराज ने कहा—"मत मिलन हमेशा सुख-दायी होता है। आज आचार्य तुलसी से मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हू। यहा आकर मैंने कोई नया कार्य नही किया। मात्र अपने पूर्वाचार्यों की जो परपरा रही है उसका निर्वाह किया है। आचार्य तुलसी जी और हम सब विश्व शाति के लिए काम कर रहे है, प्राणी मात्र के कल्याण मे यत्किचित् योगभूत बन रहे है।"

आचार्यवर ने कहा—"हम दोनो का मिलन आज पहली बार हुआ है। वैसे हमारा सबध बहुत पुराना है। दोनो सम्प्रदायो के प्रवतक, जो घनिष्ट मित्र थे, अपने उपदेशो से जन मानस को प्रभावित किया है।" आचायश्री ने आगे कहा—"अहिसा, सयम व तप की त्रिवेणी मे स्नान करने वाला व्यक्ति पवित्र बन जाता है। अपने द्वारा अपना कल्याण करो। स्वय सत्य का मधान करे। कथनी-करनी की समानता रखो।"

१६ जनवरी/आचायवर मावली गाव एक घण्टा विराजकर मावली स्टेशन पधारे। विद्यालय मे आयोजित स्वागत कार्यक्रम मे सासद इदुबाला सुखाडिया, मावली क्षेत्र के विधायक व पूव मत्री श्री हनुमान प्रसाद प्रभाकर उपस्थित थे। श्रीमती सुखाडिया ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए कहा—"श्रद्धेय आचार्यश्री तथा सुखाडियाजी के बीच बहुत ही घनिष्ट सवध रहे है। आचायश्री के प्रति सुखाडिया जी के मन मे बहुत श्रद्धा थी। जब भी उन्हे अवसर मिलता, वे आपके दर्शनो के लिए पहुच जाते थे। मेरे मन मे भी आपके प्रति असीम श्रद्धा है। मैं समय-समय पर आपके श्रीचरणो मे उपस्थित होती रहूगी।" इस मौके पर श्री प्रभाकर भी बोले। करीब २००० की उपस्थिति मे आचार्यवर का प्रेरक प्रवचन हुआ। बीकानेर सभाग से समागत साध्वीश्री राजीमती, साध्वीश्री कानकुमारी आदि कई साध्वी सघाटको ने आचार्यवर के दशन किए। रात्रि कायक्रम साध्वियो का हुआ। आचार्यवर का रात्रि प्रवास पूर्व पचायत प्रधान श्री हीरालाल सोनी के मकान मे हुआ।

आस्था की विजय

आज मावली मे बम्बई से श्री दिनेश मेहता (बाव वाल) आचायवर के दर्शनार्थ आया। बाव के प्रसिद्ध श्रावक भोगी भाई का वह पौत्र है। बम्बई मे उसके हीरो का व्यापार है। २ जनवरी को एक लाख मूल्य हीरो के पाच पैकेट उनके एक थैले मे से गुम हो गये। अपनी लडकी के जन्म दिन के

उत्सव मे लगा रहने से ध्यान नही गया। रात्रि को जब ध्यान गया तो हीरे मिले नही। खूब दौड धूप की, पर सब कुछ व्यर्थ रहा। तब उसने यह सकल्प किया—यदि हीरे मिल जायेगे तो उसी दिन गुरु-दर्शन के लिये रवाना हो जाऊ। दूसरे दिन प्रात मार्केट हॉल मे बोर्ड पर सूचना भी लिखा दी, पर उसकी पुन मिलने की आशा टूट चुकी थी। उन हीरो के पाच पैकेटो का थैला एक व्यक्ति को मिला उसने उस थैले को एसोशियेसन मे जमा करा दिया। पूछताछ के अनन्तर वह थैला दिनेश को यथावत् मिल गया। आज वह सकल्प की सपूर्ति पर गुरु-दर्शन करने के लिए आया। पूव मत्री श्री नानालाल बीरवाल आचार्यवर के दर्शनार्थ आए। अपनी पत्नी के निधन के सदमे को झेलने के लिए वे यहा आए। वे जैन श्रावक है। उन्होने आचार्यवर से जैन तत्त्वो पर चर्चा भी की। श्री उदयचद चपलोत ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया। भारत जैन महामडल के महामत्री समन्वय प्रकोष्ठ के सदस्य श्री चदनमल चाद ने दर्शन किये। उदयपुर मे होने वाले जैन सम्मेलन के बारे मे चर्चा चली।

थामला मे

२० जनवरी/मावली स्टेशन से विहार कर आचार्यवर थामला पधारे। श्रद्धेय युवाचार्यश्री ने २ कि० मी० आगे पधार कर आचार्यश्री की अगवानी की। आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री के इस भव्य मिलन को सैकडो लोगो ने देखा। स्कूल मे आयोजित स्वागत-समारोह मे युवाचार्यश्री ने अपने बहुमूल्य विचार रखे। स्थानीय सस्थाओ की अभिवदना के बाद आचार्यवर का उद्बोधन हुआ। रात्रि मे मुनिश्री श्रेयास कुमार, मुनि सुमेरमल "लाडनू" के प्रवचन के बाद आचार्यश्री ने लोगो को सबोधित किया। अनेको ने इस अवसर पर व्यसन मुक्त जीवन जीने का सकल्प लिया।

२१ जनवरी/प्रात पलाणाकला, साय घासा पधारे। वहा श्रद्धा का एक मात्र घर श्री गेहरीलाल का है। अनेक सामाजिक कठिनाइयो व दिक्कतो के बावजूद तेरापथ की आस्था पर वे अडिग रहे। आचार्यवर ने ग्राम प्रवेश करने से पूव उनके घर पर अपने चरण रखे, भिक्षा ली। श्री गेहरीलाल की वर्षो की सजोई भावना साकार हो गई। रात्रि मे हजारो की उपस्थिति मे शानदार कार्यक्रम रहा। प्राग् वक्तव्य मुनिश्री सुखलाल ने दिया। आज पलाणाकला मे लाडनू का बैगानी परिवार शोक विमोचन हेतु आया। उनके पारिवारिक सदस्य श्री भवरलाल बैगानी का हैदराबाद मे निधन हो गया।

वे एक श्रद्धालु श्रावक थे। रात्रि मे जैन समन्वय प्रकोष्ठ के सहसयोजक श्री भीखमचद 'भ्रमर' ने दर्शन किये। उन्होने अपनी इन्दौर यात्रा के सस्मरण सुनाये।

२२ जनवरी / चदेसरा गाववासियो द्वारा आचार्यवर का भावासिक्त अभिनन्दन। उदयपुर से साध्वीश्री सोहनाजी (छापर), जयपुर से साध्वीश्री मोहनाजी ने आचार्यवर के दशन किये। अध्यापक श्री श्रेणीदान ने कविता पाठ किया। रात्रि मे मुनिश्री किशनलाल के वाद युवाचार्यश्री का प्रवचन हुआ। उदयपुर के दुर्गभक्त, कम बोलने वाले आध्यात्मिक व्यक्ति श्री लालसिंह ने आचार्यवर के दर्शन किए, वातचीत की।

२३ जनवरी / आचार्यवर प्रात गुडली, देवारी होते हुए धाऊजी की वावडी स्थित "पुष्प वाटिका" पधारे। अपनी भव्य एव हरी-भरी पुष्प वाटिका मे पधारने पर श्री यशवत कोठारी तथा श्रीमती पुष्पा कोठारी ने आचार्यवर का स्वागत किया।

इसी वाटिका मे गगाशहर से मुनिश्री राजकरण तथा सूरत से साध्वी श्री फूलकुमारी "लाडनू" ने आचार्यवर के दर्शन किये। दोपहर विहार कर फैक्टरी एरिया मे कई जगह पधार कर अरविंद नगर पधारे। यह उदयपुर का ही साफ-सुथरा, शात उपनगर है। दूसरे दिन २४ जनवरी को दर्शनपुरा स्थित उदयपुर तेरापथी सभा के अध्यक्ष प्रोफेसर श्री कुन्दन लाल कोठारी के घर पधारे। वहा से राजस्थान पत्रिका कार्यालय पधारे। जहा पत्रकारो, अधिकारियो को सवोधित किया। वहा से विहार कर आचार्यवर आयड पधारे। रात्रि मे मुनिश्री मोहनलाल "आमेट" के वाद युवाचार्यश्री का प्रवचन हुआ। २५ को श्री निकेतन होते हुए अशोक नगर स्थित श्री लक्ष्मीलाल डागलिया के नये मकान मे विराजे। इन तीन-चार दिनो मे साधु-साध्वियो के वीस-पचीस सघाटको ने आचार्यवर के दर्शन किए।

उदयपुर मे उत्साह

२५ जनवरी / दिन के ठीक ११ वजे आचायवर ने साधु-साध्वी श्रावक-श्राविकाओ के विशाल एव भव्य जुलूस के साथ अशोक नगर से प्रस्थान किया। ६ कि० मी० की यह मौन अमृत-यात्रा नगर के मुख्य मार्गो शास्त्री-सर्कल, देहली गेट, मोती चोहट्टा, हाथीपोल होते हुए मीरा गर्ल्स कॉलेज के विशाल प्रागण मे विशाल सभा के रूप मे परिणत हो गयी। उदयपुर के जैन इतिहास मे इस तरह के मौन जुलूस पहला अवसर था। सडक के दोनो किनारो

पर खडे हजारो-हजारो लोग इस जुलूस को निहार रहे थे, आचार्यवर का अभिवन्दन कर रहे थे ।

मेवाड की ४०० वर्ष तक राजधानी रहा यह उदयपु नगर भीलो की नगरी के रूप मे विश्व विख्यात हे । विदेशी विशिष्ट अतिथियो एव हजारो-हजारो पर्यटको के लिए यह स्वर्ग तूल्य हे । चारो ओर उत्तुग पवतमालाओ से घिरे इस शहर मे गुलाव बाग, पीछोला भील, स्वरूप सागर, उदयसागर, मोती मगरी, भारतीय लोक कला मदिर, आयड पुरातत्त्व केन्द्र, सहेलियो की वाडी, आदि प्रमुख दर्शनीय स्थल हे । इस नगर मे से सब सुविधा सम्पन्न होटले है । रेल्वे स्टेशन व हवाई अड्डा हे । रेलवे ट्रेनिंग सेन्टर, टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, राजस्थान राज्य शैक्षिक व अनुसधान परिषद् आदि अनेक महत्त्वपूर्ण शैक्षिक गतिविधियो का केन्द्र है । पूर्व मुख्यमत्री स्व० श्री मोहनलाल सुखाडिया ने उदयपुर को सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने के लिए कोई कसर नही छोडी ।

ऐतिहासिक, रमणीय व पर्यटक केन्द्र मे आचार्यवर के स्वागत मे हजारो लोगो ने पलक पावडे बिछा दिये । मीरा गर्ल्स कॉलेज मे आयोजित स्वागत समारोह मे जैन श्वेताम्बर तेरापथी सभा के अध्यक्ष श्री के० एल० कोठारी, साध्वी श्री कचनकुमारी (उदयपुर) मर्यादा एव अमृत-महोत्सव समिति के स्वागताध्यक्ष श्री भवरलाल डागलिया, साध्वीश्री सोहनाजी (छापर) ने अपने विचार रखे ।

महन्त श्री मुरली मनोहर शरण ने आचायश्री के उद्‌बोधन को महत्त्व-पूण बताया । महन्तजी ने अमृत पुरुष की व्याख्या करते हुए इसे बुद्धि और हृदय का नगर मे एक साथ प्रवेश माना । उन्होने आचायश्री को हृदय व युवाचायश्री को बुद्धि से सबोधित करते हुए बुद्धि और हृदय का समन्वय बताया ।

साध्वी प्रमुखाश्री ने मौन अमृत-यात्रा को आकर्षण का बिदु मानते हुए आचार्यवर के प्रवास का पूण उपयोग करने का आव्हान किया । उदयपुर की विधायक डा० गिरिजा व्यास ने आचार्यवर के पदापण को महत्त्वपूर्ण माना । कायक्रम के अध्यक्ष सुखाडिया विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० के० एल० नाग ने आचायश्री के आगमन को इसलिए महत्त्वपूण माना कि आपके सान्निध्य मे नई शिक्षा नीति पर हमे एक दिशा मिलेगी ।

युवाचार्यश्री ने उदयपुर के आर्थिक, सामाजिक व बौद्धिक विकास को तब तक अधूरा माना, जब तक अनुशासन का विकास नही होता, मर्यादा का

विकास नही होता। युवाचार्यश्री ने आचार्यवर के आगमन को प्रकाश का आगमन माना। आचार्यवर ने अपने आगमन को एक अकिंचन सत का आगमन वताया। आचार्यश्री ने इस वात पर दु ख व्यक्त किया कि हम दूसरो को देखते ह। अपने अन्त करण को नही देखते। हमे सबसे पहले अपनी ओर देखना चाहिए।" स्वागत-समारोह मे स्थानीय जनता के अतिरिक्त वाहर से भी हजारो लोग आये। आज की मौन अमृत-यात्रा की राजस्थान के प्रमुख पत्रो मे अच्छी चर्चा रही।

समारोह के बाद आचार्यवर मयुर काम्पलेक्स पधार गये। उदयपुर प्रवास के दौरान आचार्यवर का आवास स्थल यही काम्पलेक्स वना। हजारेश्वर महोदव कालोनी मे स्थित विशाल मयुर काम्पलेक्स पूर्व मे मेवाड शूगर मिल का गेस्ट हाऊस था। विशाल एव भव्य गेस्ट हाऊस को कुछ श्रद्धालु व्यक्तियो ने खरीद कर इसका नाम मयुर काम्पलेक्स रख दिया। साध्वी प्रमुखाश्री समेत सैकडो साध्विया कच्छारा-भवन तथा महिला छात्रावास मे ठहरी। रात्रि मे स्वागत का अवशिष्ट कार्यक्रम चला।

धार्मिक विविधता मे राष्ट्रीय एकता—सम्मेलन :

२६ जनवरी/राष्ट्रीय सविधान की क्रियान्विति का यह प्रथमदिन २६ जनवरी को गणतत्र दिवस के रूप मे प्रतिवर्प हमारे सामने आता हे। इस वर्ष भी यह ऐतिहासिक दिन आचार्यवर की सन्निधि मे मनाया गया। प्रात प्रवचन नही हुआ। मध्याह्न १ वजे आचार्यवर की पावन निश्रा मे "धार्मिक विविधता मे राष्ट्रीय एकता" विपय पर मगोष्ठी आयोजित हुई। इस सगोष्ठी मे जैन, सिख, वैदिक, मुस्लिम, ईमाई आदि धर्मो के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

महन्त श्री मुरली मनोहरशरण ने कहा—"विविवता भी रहेगी और एकता भी रहेगी। मनुष्य की आकृति व प्रकृति मे भेद रहेगा ही, लेकिन सवका आवार सत्य होना चाहिए, यही वर्म है।" पादरी ए० वी० ए० मसीह ने प्रेम, सेवा और सादगी को मानव का सवसे वडा गुण वताया व आचायश्री के सान्निध्य मे होने वाले ऐसे कार्यो की प्रशसा की। सुखाडिया विश्व विद्यालय के प्रोफेसर डा० के० सी० सोगानी ने अहिंसा को जैन वम का मूल तत्व वताया। सिख समाज के प्रतिनिधि श्री नरेन्द्र लासेरी ने त्याग, सेवा और ज्ञान को गुरु वाणी के तीन महत्त्वपूर्ण तत्त्व वताये तथा पजाव ममस्या के समाधान मे आचार्यश्री की महत्त्वपूर्ण भूमिका की मराहना की। इस अवसर

पर निकाय व्यवस्था प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल, साध्वीश्री कनकश्री, थियोसोफिकल सोसायटी के प्रमुखश्री अहमद अख्तर, वोहरा-मुस्लिम समाज के श्री मोहम्मद हैदरी ने अपने महत्त्वपूर्ण चिन्तन से जनता को अवगत कराया।

युवाचार्यश्री ने कहा—"धर्म एक अनुभूति है। अनुभूति शून्य धर्म भी केवल सप्रदाय रह जाता है। और सप्रदाय भी अनुभूति के साथ धर्म बन जाता है। आज सर्वत्र केवल सप्रदाय की चर्चा की जा रही है। धर्म के साथ अहकार व ममकार जुडने से वह समस्या बन गया है।" आचार्यश्री ने अपने आशीर्वचन मे कहा—"राष्ट्रीयता व सामाजिकता के बिना राष्ट्र व समाज निरर्थक है, उसी प्रकार धार्मिकता के बिना धर्म निरर्थक है।" कार्यक्रम का सयोजन श्री वी० पी० जोशी ने किया। रात्रि मे मुनिश्री मोहनलाल "आमेट" ने जनता को सबोधित किया।

रेलवे ट्रेनिग स्कूल मे

२६ जनवरी/मध्याह्न आचार्यश्री, युवाचार्यश्री रेलवे ट्रेनिग स्कूल पधारे। "अध्यात्म और जीवन यात्रा" विषय पर प्रवचन देते हुए आचार्यवर ने कहा—"इसान वास्तव मे इन्सान बन जाये, तो सारी सामाजिक बुराइयो का अत हो जायेगा। मै भगवान् बनना नही चाहता, इन्सान बनकर रहना चाहता हू। सच्चा इन्सान कभी भी धोखाधडी, मिलावट, व हिंसा नही करता।"

स्कूल के खचाखच भरे सभागार मे प्रशिक्षणार्थियो व अध्यापको को सबोधित करते हुए आचार्यश्री ने आगे कहा—"जीवन एक बहुत बडी यात्रा है। इसे धर्म के सहारे ही तय करना उत्तम है। अपनी वृत्तियो पर नियन्त्रण करना ही धर्म है।" उन्होने सभी से आग्रह किया कि वे जैन बने या न बने, गुडमैन अवश्य बने।"

इससे पूर्व युवाचार्यश्री ने कहा—"अज्ञानी सदा सोता रहता है और ज्ञानी नीद मे भी जागता रहता है। जिस दिन आदमी को अपने अज्ञात का पता चल जाता है, वह सबसे बडा आदमी होता है।" युवाचार्यश्री ने आगे कहा—"आज समस्या भीतर है, समाधान बाहर खोजा जा रहा है। आज सहिष्णुता का अभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। वर्तमान की यह अपेक्षा है कि उपासना प्रधान धर्म के बजाय आचरण प्रधान धर्म की महत्ता बढे।"

कार्यक्रम के प्रारभ मे रेलवे ट्रेनिग स्कूल के प्राचार्य श्री के० सी० सिंह ने आचार्यश्री का स्वागत किया। श्री चन्द्रप्रकाश आर्य ने आभार ज्ञापन की

रस्म अदा की। कार्यक्रम के बाद रेलवे प्रशिक्षण की प्रक्रिया को स्वय आचार्यवर ने देखा। ऐसा स्कूल पूरे राजस्थान मे अपने ढग का पहला है।

रात्रि मे मुनिश्री ताराचद ने वक्तव्य दिया। प्रात छापली गाव से श्री उदयचद जैन का देहात होने पर उनके पारिवारिक जनो ने आचार्यवर के दर्शन किये।

बुढापा: कारण और निवारण

२८ जनवरी/जैन विश्व भारती लाडनू के सेवाभावी कल्याण केन्द्र द्वारा "बुढापा कारण और निवारण"—विषय पर द्विदिवसीय सगोष्ठी का आयोजन किया गया। आज सगोष्ठी के उद्घाटन समारोह मे वैद्य प० सोहनलाल दाधीच ने सयोजकीय वक्तव्य दिया। सेवाभावी कल्याण केन्द्र के निदेशक श्री झुमर मल वैगानी ने समागत वैद्यो का स्वागत किया। वैद्य प्रभुदत्तजी (जयपुर) ने कहा—"प्रकृति मे जीने वाला आदमी दीर्घायुषी होता हे। समभाव का विकास ही रोगशमन का उपाय हे।" उन्होंने आगे कहा—"काल-कन्या के पाच भाई है रोग, शोक, ईर्ष्या भय और चिता। इनमे एक भाई के आते ही वहिन आ जाती हे।" श्री भागीरथ जी जोशी (उदयपुर) न कहा—"सदाचार के अभाव मे रोग वढता हे। इस अवसर पर मेवाड मडलेश्वर महत श्री मुरली मनोहरशरण, पडित हरिशकर जी (जामनगर), डा० शूरवीरसिह ने अपने विचार रखे।

युवाचार्यश्री ने आयुर्वेद को एक समृद्ध चिकित्सा पद्धति बताते हुए कहा—"वुढापा सबसे पहले आदमी के दिमाग पर उतरता है। जिन व्यक्तियो का मयत आहार-विहार होता है, उनपर वुढापा अपना प्रभाव नही जमा सकता। आज हमारे वैद्य पचकल्प, पच प्राण तथा पचेन्द्रिय सयम से परिचित नही हे। यही कारण है, आयुर्वेद वहुत सफल नही हो पा रहा हे।" युवाचाय-श्री ने आगे कहा—"जिसवा मस्तिप्क युवा ह, वह शतायु भी युवा हे। आचार्य-श्री आज ७२ वप मे भी युवा है। उनकी चिन्तन शक्ति पहले से वढी हे।"

आचायश्री ने अपने उद्वोधन मे कहा—"जो आदमी प्राकृतिक जीवन जीता है, वह वुढापे से कभी नही घवराता, अपितु वह वुढापे का स्वागत करता ह। प्राकृतिक जीवन जीने वाले को भी वुढापा आता ह, पर उसे सतायेगा नही।"

मध्याह्न १ ३० वजे स्थानक वासी गोंडल मप्रदाय की ललिता वाई

स्वामी की शिष्या वसुमति बाई स्वामी आदि तीन साध्वियां तथा उपाध्याय-श्री पुष्कर मुनि की शिष्याए आई। काफी बातचीत चली। उनके द्वारा पूछे गये प्रश्नो का आचार्यवर ने सुदर समाधान दिया। २ ३० बजे साध्वियो के स्थान पर आचार्यवर की सन्निधि मे साधु-साध्वियो की अतरग गोष्ठी का प्रारभ हुआ। आचार्यवर की शिक्षाओ के बाद युवाचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान के बारे मे बताया। साधु-साध्वियो द्वारा उठाये गये प्रश्नो को युवाचार्यश्री ने समाहित किया।

रात्रि मे साप्ताहिक बोध सत्र प्रारभ हुआ। इस बोध सत्र के प्रबोधक युवाचार्य श्री थे। बोध सत्र का प्रथम दिन। विषय-ज्ञान बडा या आचार। विषय प्रवेश मुनि श्रीसुखलाल ने किया। आचार्यश्री ने बोध सत्र को महत्त्व-पूर्ण बताते हुए सबको इससे लाभ लेने की बात कही। युवाचार्य श्री ने इस विषय पर अपने महत्त्वपूर्ण विचारो मे कहा—"हर मूल्य सापेक्ष होता है। अपने-अपने स्थान पर हर चीज का मूल्य है इसलिए ज्ञान और आचार का अपना-अपना मूल्य है। जब भी ज्ञान आचार से निरपेक्ष या आचार ज्ञान से निरपेक्ष हो जाता है तो वह समस्या बन जाता है। आज भी हमारी समस्या यह है कि ज्ञान बढ रहा है, पर आचार खडित हो रहा है। आज आवश्यकता इन दोनो मे सतुलन बनाने की है।" उपस्थिति करीब १००० की थी।

नादेशमा (मेवाड) से श्री उदयराज का देहान्त होने पर उनके पारि-वारिक जन दर्शनार्थ आये।

२९ जनवरी/पश्चिम रात्रि मे साधुओ की अतरग गोष्ठी मे आचार्यवर ने आत्मार्थीपन एव सघनिष्ठा पर विशेष शिक्षा दी। प्रात ८ बजे द्विदिवसीय आयुर्विज्ञानसगोष्ठी मे समागत वैद्यो को युवाचार्य श्री ने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। मुनिश्री उदितकुमार के प्राग् प्रवचन के बाद आचार्यवर पधारे। विषय विशेष पर चलरही प्रातकालीन प्रवचनमाला मे आज का विषय था—मगलसूत्र। साध्वीश्री राजीमती ने अपने विषय प्रवेश मे पवित्रता, मैत्री और उत्साह से भरे मन को वास्तविक मगल बताया।

आचार्यश्री ने कहा—"मगल के दो प्रकार है—द्रव्य और भाव। चार मगल का कथन भाव मगल का प्रतिपादन है। अर्हत, सिद्ध के बाद साधु को भाव मगल मे तीसरा स्थान प्राप्त है। यह उच्चता हम सबके लिए चिन्तनीय है। यदि हम मगलमय है, प्रशस्त लेश्याओ से युक्त है, तो हम दूसरो की मागलिकता मे भी हेतुभूत बन सकते हैं।" इससे पूर्व युवाचार्यश्री ने कहा—

"प्रत्येक व्यक्ति मगल चाहता है। मगल वाहर से नही, व्यक्ति के भीतर से प्रकट होता है। मगल के लिए मगलसूत्रो का लयबद्ध उच्चारण जरूरी है। किसी महान् व्यक्ति की शरण मे जाने वाला सदा सुरक्षित रहता है।"

मध्याह्न १ बजे कानोड के राव श्री प्रतापसिंह ने सपरिवार आचार्यवर के दर्शन किये, बातचीत की। २ बजे चलने वाली साधु-साध्वियो की अतरग गोष्ठी का विषय था—व्याधि, आधि उपाधि से समाधि की ओर। गोष्ठी मे युवाचार्य का महत्वपूर्ण वक्तव्य हुआ। साय ५ ३० बजे राजस्थान पत्रिका के सपादक श्री कपूरचद कुलिश आचार्यवर से मिले। भारतीय सस्कृति आर्य सस्कृति, प्रेक्षाध्यान आदि के बारे मे विस्तृत चर्चा चली। रात्रि मे सर्व प्रथम मुनिश्री राजकरण का भाषण हुआ।

युरोप मे पागलो की सख्या मे वृद्धि

रात्रिकालीन बोध सत्र के दूसरे दिन "भोग बडा या त्याग" विषय पर अपना प्रवचन देते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"भोग इन्द्रियो की माग है। त्याग आत्मा की माग है। इन्द्रिय चेतना मे जीने वाले लोग त्याग की भाषा नही समझ सकते। वे तो ज्यादा से ज्यादा पदार्थ मे ही जीना चाहेगे। भोग से युरोप मे ऐसी स्थिति पैदा हो गई है कि वहा आदमी तनावग्रस्त है, इस लिए वहा पागलो की सख्या मे भी बहुत तीव्रता से वृद्धि होती जा रही है। इन परिणामो को देखकर लोगो की फिर से त्याग के प्रति भावना बढ रही है।"

आचार्यश्री ने करीब २५०० की उपस्थिति मे अपने उद्बोधन सदेश मे कहा—"जीवन के दो विकल्प है एक महारभ और दूसरा अनारभ। अनारभ मार्ग पर तो कुछ ही लोग चल सकते है। अधिक लोगो के लिए तो अल्पारभ ही एक मात्र विकल्प है।" प्रारभ मे मुनिश्री किशनलाल ने विपय प्रवेश के रूप मे अपने विचार प्रकट किये।

३० जनवरी/प्रात प्रवचन का विपय था—स्तव और स्तुति। साध्वी श्री कनकश्री ने विपय प्रवेश किया। आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री के प्रेरणादायी प्रवचन हुए। मैसूर चातुर्मास परिसपन्न कर आज साध्वी श्री जयश्री ने आचार्यवर के दर्शन किये। मात्र ६४ दिनो मे १८०० कि० मी० लवा मार्ग तय करना स्वय मे कीर्तिमान है। पाच वर्षो के वाद गुरु दर्शन करने वाली साध्वी श्री जयश्री समेत पाचो साध्वियो ने सुमधुर गीतिका के द्वारा आचार्यवर की अभ्यर्थना की। आचायश्री ने उनकी दक्षिणयात्रा को प्रभावशाली वताया और उनके कार्यो की सराहना की। दौलतगढ चातुर्मास करने वाले मुनिश्री वालचद

"आसीन्द" ने भी आज दर्शन किये। गोगुन्दावासियो की विशेष प्रार्थना पर आचार्यवर ने वहा दीक्षा महोत्सव की स्वीकृति प्रदान की।

मध्याह्न साधु-साध्वियो की गोष्ठी मे "शात सहवास कैसे हो ?" विषय पर चर्चा चली। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री ने साधु की तीन भूमिका—परानुशासन, स्वानुशासन व मबर भूमिका पर विवेचन किया। साय सुखाडिया विश्व विद्यालय के रजिस्ट्रार, डीन, प्रोफेसर युवाचार्यश्री, आचार्यश्री से मिले। बातचीत की।

जीवन-सूत्र—कम खाना, गम खाना

बोध सूत्र के तीसरे दिन विषय था—"कैसे जीए"। विषय को स्पष्ट करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"यो तो जीवन के दरवाजे पर मृत्यु दस्तक देती ही है, पर जो आदमी जीने की कला सीख [illegible] है वह अकाल मृत्यु को प्राप्त नही होता। गलत तरीके से खाना, सास लेना और गलत रहन-सहन असमय मे मौत को बुलाना है। धर्म हमे सही जीना सीखाता है। जो धर्म सही जीना नही सीखाता, वह परम्परा मात्र है।

आचार्यवर ने अपने उद्‌बोधन मे कहा—"कम खाना और गम खाना "कैसे जीए" का सूत्र रूप मे तरीका है। प्राकृतिक जीवन जीने वाला अकाल मृत्यु वरण नही करता।"

३१ जनवरी/प्रात कार्यक्रम विशेष रूप से साध्वियो के लिए आरक्षित था। इस कार्यक्रम का आकर्षण था—साध्वियो द्वारा उपहार-समर्पण। बहिर्विहारी साध्वियो ने अमृत-महोत्सव के सदर्भ मे कुछ विशेष कलाकृतिया आचार्यवर को समर्पित की। ४२ सघाटको द्वारा समर्पित उपहारो मे नूतन रजोहरण, प्रमार्जनी, पात्र, कल्प, अमृत-कलश तथा अन्य मनोहारी वस्तुए अर्पित की। साध्वीप्रमुखाश्री ने इस अवसर पर हर सघाटक (ग्रुप) को एक लघु गृह उद्योग केन्द्र की सज्ञा दी। आचार्यवर ने साध्वियो की कला की प्रशसा की तथा साध्वी श्री कमलूजी (जयपुर) जो गुरुकुलवास की साध्वी है, की कला की विशेष रूप से सराहना की। उन्होने कहा-कला केवल कला के लिये नही, एकाग्रता, उपयोगिता युक्त तथा यश कामना मुक्त हो।

मध्याह्न दन्त विशेषज्ञ डॉ० भार्गव ने आचार्यवर की दाढ निकाली जो खज चुकी थी। काकरोली मे श्री रोशनलाल पगारिया का निधन हो गया, इसलिए उनके सगे-सबधी आज दर्शनार्थ पहुचे। प्रतिक्रमण के बाद परम्परा

की जोड" का वाचन शुरु हुआ। मुनिसुमेरमल "लाडनू" के निदेशन मे प्रारम्भ इस वाचना मे मुनिश्री विजयकुमार से कनिष्ठ मुनि सम्मिलित हुए।

रात्रिकालीन बाव सत्र क चोथ दिन का विपय था—अतीन्द्रिय चेतना कैसे जागे। मुनिश्री सुखलाल के विषय की भूमिका पर प्रकाश डालने के बाद युवाचायश्री न कहा—"बुद्धि खतरनाक होती है, वह उलझाव की जनक है। सुलझाव के लिए अन्तर्दृष्टि का जागरण अपेक्षित हे। आचाय भिक्षु की अन्तर् दृष्टि यानि अतीन्द्रिय चेतना जागृत थी। तक से कभी अन्तर्चेतना नही जागती, क्याकि तक स्वय लगडा ह। तक सत्य उपलब्धि का अतिम साधन नही ह।" इस अवसर पर करीव २००० की उपस्थिति मे आचार्यवर का प्रेरक प्रवचन हुआ।

१ फरवरी/प्रात प्रवचन के समय "स्थूल से सूक्ष्म की ओर" विषय पर एक परिचर्चा प्रारभ हुई। विषय पर वोलते हुए राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री पानाचद जैन ने कहा—"आपके दर्शनो का अवसर मुझे पहली वार मिला हे, इसलिए अब मैंने स्थूल से सूक्ष्म की ओर प्रस्थान कर दिया हे। श्रमण सस्कृति का अथ हे—श्रम करो। श्रम से ही व्यक्ति सूक्ष्म जगत् की ओर प्रयाण कर सकता है। यदि हमे आत्मा की सूक्ष्मता का दर्शन करना हे, तो अध्यात्म को अपनाना होगा।" न्यायाधीश श्री दिनकरलाल मेहता ने कहा—"सुख-दु ख का वटवारा ही विश्व वधुत्व हे। जो लोग सूक्ष्म की खोज मे चल पडत है। वे स्वाथ से लिप्त नही रह सकते।"

युवाचायश्री ने इस विपय पर अपने महत्त्वपूण उद्गार व्यक्त करते हुए कहा—"हमारी दुनिया मे ऐसे वहुत कम लोग है, जो परिपूर्ण हे। हर आदमी के अन्दर शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष दोनो रहते है। आवश्यकता यही हे कि हम अपने अदर बैठे देवत्व को जगाये। यह तभी हो सकता हे जव हम सूक्ष्म की ओर वढे। आगम की भाषा मे औदयिक भाव से क्षायोपशमिक भाव की ओर जाना स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाना है।" अपने आशीवचन मे आचायवर ने कहा—"आदमी ज्यो-ज्यो सूक्ष्म मे उतरता है त्यो-त्यो अधिक तेजस्वी वनता जाता ह। अणुव्रत इसलिए तेजस्वी है कि वह सूक्ष्म हे। अकुश छोटा होता हे, पर स्थूलकाय हाथी को वश मे रखता हे।"

मध्याह्न १ ३० वजे स्थानीय तेरापथ युवक परिपद द्वारा एक वाद-विवाद प्रतियोगिता रखी गई जिसका विपय था—२१ वी सदी मे विश्व शाति का विकल्प-विज्ञान या अध्यात्म। उदयपुर की अनेक शिक्षण सस्थाओ के

छात्र-छात्रओ ने भाग लिया। छात्रा नवनीत एव कीर्ति ने कमश प्रथम व द्वितीय, छात्र राजेश कोठारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अत मे आचार्यवर ने आशीर्वचन मे दो शब्द कहे। विशेप स्थान प्राप्त छात्र-छात्राओ को पुरस्कृत किया गया।

रात्रिकालीन बोध सत्र के पाचवे दिन—"भारतीय सस्कृति मे राम" विषय पर बोलते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—सभी धर्मो मे मान्य श्री राम की पूज्यता का कारण है—निर्भोलता। राम सत्य के प्रतीक थे, समता के प्रतीक थे। उनके असाधारण त्याग के कारण ही हजारो वर्षो के बाद भी उनका "रामराज्य" एक आदर्श बना हुआ है।" आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे कहा—"राम व्यक्ति ही नही, पूरी सस्कृति है। उन्होने हमारे भारतीय परिवेश को विविध रूपो मे प्रभावित किया था। उनका जीवन-चरित्र पढना ही पर्याप्त नही, अपितु उसे जीवन मे उतारने की आवश्यकता है।"

धर्म और विज्ञान मे समन्वय आवश्यक

२ फरवरी/प्रात कार्यक्रम मे "विज्ञान के बढते चरण" विषय पर बोलते हुए सुखाडिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्रीजे० वर्मा ने विज्ञान की प्रगति पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा—"विज्ञान बहुत सारे क्षेत्रो मे विकास कर रहा है, उससे पूरी मानव जाति को लाभ मिल रहा है। इसका सदुपयोग न करने पर दुनिया पूरी तरह नष्ट हो सकती है। ऐसी स्थिति मे धर्म ही इसे बचा सकता है।"

युवाचार्यश्री ने कहा—'वैज्ञानिक बिना देखे नही मानता, धार्मिक कभी बिना अनुभूति के नही मानता, किंतु आज का धार्मिक बिना अनुभव के मान रहा है और लोग बिना स्वय देखे विज्ञान की बाते मान रहे है। आज हम वैज्ञानिक उपकरणो को प्रयोग मे तो लाते है, किन्तु यथार्थ की जानकारी नही रखते। विज्ञान ने अपने आविष्कारो से आध्यात्मिक तथ्यो को प्रकट करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।' आचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे धार्मिको के लिए विज्ञान की जानकारी आवश्यक बताते हुए धर्म को परम विज्ञान बताया। उन्होने धर्म और विज्ञान को परस्पर विरोधी न बताकर एक दूसरे का पूरक बताया। प्राध्यापक श्री सुरेश मेहता ने कार्यक्रम का सयोजन किया।

प्रवचन के वक्त मुनिश्री सागरमल 'श्रमण', मुनिश्री हसराज, मुनिश्री राकेशकुमार, मुनिश्री विनयकुमार ने आचार्यवर के दर्शन किये। मुनिश्री

राकेशकुमार एव मुनिश्री प्रमोद कुमार ने इस मौके पर अपने भावपूर्ण विचार रखे। मध्याह्न साध्वियो की विशेष गोष्ठी मे आचार्यवर ने शिक्षा फरमाई। रात्रि बोध सत्र के छठे दिन 'निष्काम कम' विषय पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के प्रेरक प्रवचन हुए।

३ फरवरी/प्रात व्याख्यान मे वदना विषय पर साध्वीश्री सुव्रता की प्रारभिक प्रस्तुति के बाद आचायश्री, युवाचायश्री के सारपूर्ण वक्तव्य हुए। मध्याह्न १ ३० बजे अग्रणी (ग्रुप लीडर) मुनियो की एक गोष्ठी आचायवर के सान्निध्य मे चली जिसमे आन्तरिक अनुशासन पर चिन्तन चला। २ ३० बजे साधु-साध्वियो की सयुक्त परिषद मे अनुशासन और सहिष्णुता पर चर्चा चली। साध्वीश्री पानकुमारी ने जोधपुर चातुर्मास पूण कर आज दर्शन किये। साय अधिकार पत्र के सपादक आचायश्री से मिले, वार्तालाप किया।

रात्रि बोध सत्र के सातवे व अन्तिम दिन का विषय था—भगवान महावीर जीवन दशन। मुनिश्री राकेशकुमार के प्राग् प्रवचन के बाद आचायश्री, युवाचायश्री के उद्बोधन हुए।

अतिक्रमण का प्रतिक्रमण

४ फरवरी/प्रात प्रवचन का विषय था—प्रतिक्रमण। साध्वीश्री यशोमति के वक्तव्य के बाद युवाचायश्री ने कहा—भूल किसी से हो सकती है। अन्तर इतना ही ह कि साधु-प्रतिक्रमण कर जागरूक बन जाता हे, प्रतिक्रमण से व्रत छिद्र रूकते हे, सफाई होती ह।'

आचायश्री ने कहा—छद्मस्थ साधक के अतिक्रमण होता रहता हे, अत प्रतिक्रमण निरन्तर करना होगा। हमे अधिक से अधिक सातवे गुणस्थान मे रहने की कोशिश करनी चाहिए।' आचार्यवर ने समन्वय का अर्थ अश्लथता करते हुए कहा—'अपनी मान्यता व परम्परा के प्रति पूण दृढ रहना चाहिए। शिथिलाचार के साथ समन्वय कंसे हो सकता हे? समन्वय का भी एक निश्चित सीमाकन होता हे। यह उचित ह कि हम किसी की निन्दा न करे, छीटाकशी से वचे।'

मध्याह्नकालीन साधु-साध्वियो की अतरग गोष्ठी मे तपस्या, तत्त्वज्ञान स्वास्थ्य विवेक आदि विंदु चर्चित रहे। रात्रि मे 'इक्कीसवी सदी मे कैसे प्रवेश हो' विषय पर युवाचायश्री, आचायश्री के प्रभावोत्पादक भाषण हुए। मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने विषय की प्राग् प्रस्तुति दी। उपस्थिति करीव २५०० थी।

कृषि महाविद्यालय मे

५ फरवरी/उदयपुर प्रवास के इतने दिनो मे सभी काय प्रवास-स्थल मयुर काम्पलेक्स के सटे मर्यादा-समवसरण मे सपादित हुए, किन्तु कुछ कार्यक्रम मर्यादा समवसरण से बाहर भी आयोजित हुए, जिनकी अपने क्षेत्र मे महत्त्वपूर्ण अर्हता थी। उसी शृखला मे प्रात कालीन कार्यक्रम राजस्थान कृपि महाविद्यालय मे आचार्यश्री, युवाचायश्री की युगपत् सन्निधि मे सपन्न हुआ।

'नैतिकता की समस्या और अध्यात्म' विपय पर महाविद्यालय के शिक्षको, छात्रो और कर्मचारियो को सबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा—'हमारे शिक्षक इस वात को समझे कि वे पहले अपने जीवन म एक सूत्र आत्मसात् करे—निज पर शासन, फिर अनुशासन। अनुशासन की वात तब तक समाज मे नही आ सकती, जब तक हम स्वय उस दिशा मे कदम न उठाये। अध्यापको की वाणी नही, जीवन बोलना चाहिए।' इससे पूर्व युवाचार्यश्री ने कहा—'आज व्यक्ति धार्मिक वन रहा है पर नैतिक नही। क्या नैतिकता के बिना धर्म का कोई अस्तित्व हो सकता है। नैतिक चेतना को विकसित करने के लिए हम अपने ग्रन्थितत्र और नाडीतत्र को विकसित करे।' युवाचार्यश्री ने कृपि के साथ ऋपि परम्परा का होना जरूरी बताया। मुनिश्री किशनलाल ने सभी को प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया।

उधर मर्यादा-समवसरण मे साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे साध्वियो का कार्यक्रम रहा। प्रारम्भ मे साध्वीश्री मधुरेखा, साध्वीश्री कनकश्री, साध्वीश्री रतनश्री (डूगरगढ) के भाषण हुए। साध्वी प्रमुखाश्री का 'समाज के निर्माण मे महिलाओ का योगदान' विपय पर सारगर्भित वक्तव्य हुआ।

मेडिकल कॉलेज मे समता-सगोष्ठी

मध्याह्न २ बजे रवीन्द्रनाथ टैगोर मेडिकल कॉलेज मे आचार्यवर की सन्निधि मे समता सगोष्ठी समायोजित हुई। इस सगोष्ठी मे विविध पहलुओ पर विचार चला। इस विपय पर आर्थिक दृष्टि से डा० बी० सी० मेहता तथा राजनैतिक दृष्टि से डा० सी० एम० जैन ने विवेचना प्रस्तुति की। दोनो विपयो का स्पर्श करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'हम आर्थिक और राजनैतिक सदर्भो मे जिस समता शब्द को प्रयुक्त करते है। उसके भावो का ठीक प्रतिनिधित्व करने वाला शब्द है—नियत्रण। समानता निश्चय के स्तर पर हो

सकती है, किन्तु व्यवहार के स्तर पर हो, यह जरूरी नही है।' आचार्यश्री ने तेरापथ को समानता का उत्कृष्ट प्रतीक बताया। उन्होने समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण के साथ हुई अपनी मुलाकात का जिक्र करते हुए कहा—तेरापथ के समाजवाद को समाज व राष्ट्र मे सक्रान्त किये जाने की बात कही। समाजवाद को व्यावहारिक बनाने का एक पक्ष जहा अर्थतत्र और राजतत्र है वहा अध्यात्म पक्ष कम मूल्यवान नही है।' प्रो० के० सी० सोगानी ने कार्यक्रम का सयोजन किया।

रात्रि मे 'अतरिक्ष यात्रा और अध्यात्म' विषय पर युवाचार्यश्री, आचार्यश्री के प्रभावी प्रवचन हुए। मुनिश्री सुखलाल ने विषय की भूमिका पर विवेचन प्रस्तुत किया।

६ फरवरी/पश्चिम रात्रि मे आचार्यवर की सन्निधि मे अग्रगण्य साधुओ की गोष्ठी सपन्न हुई। इस गोष्ठी मे कुछ चिंतनीय विन्दुओ पर चिन्तन चला। प्रात कालीन प्रवचन मे आचार्यवर ने साधु-साध्वियो के लिए विशेष शिक्षा फरमाई। पडासलीवासी श्री हर्षलाल बडाला एक दुर्घटना मे काल कवलित हो गये। उनका परिवार आचार्यश्री के दर्शनार्थ पहुचा व आध्यात्मिक सबल प्राप्त किया।

मध्याह्न २ बजे मेडिकल कॉलेज मे युवाचार्यश्री के सन्निधि मे समता सगोष्ठी का द्वितीय चरण परिसपन्न हुआ। इस सगोष्ठी मे प्रोफेसर डी० वी० शर्मा, श्री के० सी० सोगानी ने भाग लिया। हृदय विशेषज्ञ डा० अरूण बोर्दिया ने अध्यक्षीय भाषण दिया। युवाचार्यश्री का प्रभावी उद्बोधन हुआ। रात्रि मे 'ध्यान और चिकित्सा' विषय पर युवाचार्यश्री का विशेष प्रवचन हुआ।

प्रात प्रवचन के समय साध्वी श्री यशोधरा ने सुदूर बगाल, विहार की यात्रा परिसपन्न कर दर्शन किए। उनका पिछला चातुर्मास भागलपुर था। साध्वीश्री ने बगला भाषा मे अभिनन्दन करने के पश्चात् सामूहिक रूप मे एक गीतिका के द्वारा आचार्यवर की अभ्यर्थना की। आचार्यवर ने साध्वियो की निर्भयता के साथ सुदूर प्रातो की यात्राओ को विशेष आत्मबल का प्रतीक बतायी। उन्होने साध्वीश्री की बगला भाषा मे अस्खलित वक्तव्य व लेखन शैली की अर्हता प्राप्त करने को महत्त्वपूण बताया। मुनिश्री जवरीमल ने भी आज दर्शन किए। शरीर से दुर्बल और अवस्था से प्रौढ होते हुए भी वे जवानो की भाति त्वरित गति से चलकर आये।

जीवन-विज्ञान द्वारा सर्वाङ्गीण विकास सभव

६ फरवरी/दोपहर ११ ३० वजे देश के विभिन्न भागो से आये माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्षो एव सचिवो की एक विचार गोष्ठी मर्यादा समवसरण मे आयोजित हुई। गोष्ठी को सबोधित करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"हमारी शिक्षा नीति से बौद्धिक विकास जरूर हुआ, मगर चारित्रिक विकास नही हुआ। हमारी शिक्षा नीति अच्छी है तभी देश मे इन्जीनियर, डाक्टर, वैज्ञानिक हुए है, पर इसमे जो चारित्रिक कमी है, उसे जीवन-विज्ञान द्वारा दूर किया जा सकता है।" उन्होंने आगे कहा—"समाज बौद्धिक होने के साथ सवेदनशील बने, मस्तिष्क एव हृदय के दोनो भाग समता वाले हो, जो हमारी भावना का आधारभूत है।"

आचार्यश्री ने कहा—"आज आदमी मे चितन की कमी है। चितन के समय राष्ट्र, समाज ओझल हो जाता है। वहा पार्टी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। इसके लिए निश्चित नीति व स्पष्ट चितन होना चाहिये। मजहब धर्म की रक्षा के लिए है, किन्तु धर्म पर मजहब छा गया है।" इस अवसर पर राज० रा० शै० एव अनुसधान परिषद् के निदेशक श्री भवरलाल शर्मा ने बताया कि जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान के प्रयोग हेतु २७ विद्यालयो का चयन कर प्रयोग भी चालू कर दिया है।

मेवाड स्तरीय महिला मडल द्वारा आयोजित निवध प्रतियोगिता "नारी कल, आज और कल" मे सुश्री मजु बाफना (काकरोली) प्रथम, श्रीमती मजु चौधरी (उदयपुर) द्वितीय तथा सुश्री मजु भण्डारी तृतीय स्थान पर रही। यह घोषणा मडल की अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा कोठारी ने की।

रात्रि मे मुनिश्री राकेशकुमार के सान्निध्य मे काव्य सध्या चली, जिसमे १३ युवा सतो ने मुक्तक, कविता, व गीतिकाओ से जनता-जनार्दन को सराबोर कर दिया। कार्यक्रम का सयोजन मुनिश्री लोकप्रकाश ने कुशलता पूर्वक किया। इस अवसर पर मुनिश्री राकेशकुमार ने भी अपनी कविताए पेश की।

८ फरवरी / आज चतुर्दशी होने से हाजरी का वाचन हुआ। साधु-साध्वियो ने इस अवसर पर मर्यादा-शपथ को दुहराया।

जीवन-विज्ञान परिचर्चा

मध्याह्न जीवन-विज्ञान परिचर्चा चली, परिचर्चा मे राजस्थान के मुख्य-

मत्री श्री हरिदेव जोशी, शिक्षामत्री श्री हीरालाल देवपुरा, ग्रामीण विकास मत्रीश्री रामपाल उपाध्याय, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशश्री रगनाथ मिश्र, राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री गुमानमल लोढा, न्यायाधीश श्री दिनकर लाल मेहता उपस्थित थे। परिचर्चा से पूर्व मुख्यमत्री ने आचार्यवर से वातचीत की।

परिचर्चा मे वोलते हुए मुख्यमत्री ने कहा—"आचायश्री तुलसी आदमी को आदमी वनाने का काम कर रहे है। यह महत्वपूण हे। इनके साहित्य मे उपासना-आराधना की वात से अधिक आचरण की बात है। मै इनके पास समय-समय पर आता रहता हू। ये साप्रदायिकता मुक्त सोच वाले आचार्य है।" इस अवसर पर श्री मिश्र, श्री लोढा तथा युवाचायश्री के वक्तव्य हुए। आचार्यश्री ने अपने सबोधन मे कहा—अज्ञान के तमस् को मिटाना जरूरी है उसे केवल पुस्तको से नही, आतरिक प्रयोगो से ही मिटाया जा सकता हे।

साय ४ वजे प्रेस-कान्फ्रेस हुई, जिसमे विभिन्न पत्रो एव सवाद एजेसियो के करीव २० सवाददाता उपस्थित हुए। सवाददाताओ द्वारा पूछे गये प्रश्नो का आचायवर ने सुन्दर समाधान दिया। उसके वाद लॉ कॉलेज के डीन आये। अध्यात्म के वारे मे आचार्यवर से वातचीत की। वातचीत से वे काफी सतुष्ट नजर आये। रात्रि मे महावीर इन्टरनेशनल के कायकर्ताओ की एक गोष्ठी हुई। गोष्ठी मे आचार्यश्री ने महावीर के सिद्धान्तो के वारे मे वताया। १० फरवरी को प्रारम्भ हो रहे जैन समन्वय सम्मेलन के लिए कुछ लोग आज वम्वई से आये। जिसमे आचलगच्छ व तीन थुई (मूर्तिपूजक) के अध्यक्ष श्री किशोरचद वधन, टोकरसी भाई, खीमजी भाई ने आचायवर से बात की और कहा—"हजार मदिर वनाने के पुण्य से जैन एकता का कार्य करना अधिक पुण्यपरक है।"

६ फरवरी/आज कला प्रदशनी का उद्घाटन हुआ। इसमे आचायश्री के पचास वर्षीय शासन की एक-एक वप महत्त्वपूण उपलव्धियो के प्रतीक चित्र थे। साधु-साध्वियो द्वारा निर्मित कलात्मक वस्तुए इस प्रदशनी की आकर्पण विन्दु थी। मध्याह्न सुखाडिया विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्षो, प्रोफेसरो की नई शिक्षा नीति पर एक महत्त्वपूर्ण गोष्ठी हुई। इस गोष्ठी मे अन्य वुद्धिजीवी लोग भी उपस्थित थे। आचायश्री, युवाचायश्री के इस अवसर पर प्रभावोत्पादक वक्तव्य हुए। रात्रि मे मुनि सुमेरमल "लाडनू" का प्रवचन हुआ।

जैन समन्वय सम्मेलन

भगवान् महावीर का सिद्धात स्याद्वाद भेद की दुनिया मे अभेद की ओर बढने का सदेश देता है। कठिनाई यह है कि उन्ही का अनुयायी जैन समाज स्वय ही अनेक भेद-प्रभेदो मे बटा हुआ है। प्रसन्नता की बात यह है कि पिछले कुछ वर्षो मे समाज का चितन फिर भेद से अभेद की ओर मुडने लगा है। महावीर निर्वाण शताब्दी का पुण्य अवसर इसका कारण बना और प्रबुद्ध नेतृत्व कुछ बिन्दुओ पर एक मत हुआ। एक ध्वज, एक प्रतीक और एक ग्रन्थ निर्णीत हुए। फिर भी कुछ विषय ऐसे रह गए कि जिनकी असहमति आज भी हर समझदार जैन की आख की किरकिरी बनी हुई है।

उपरोक्त दोनो महत्त्वपूण मुद्दो को सामने रखते हुए ही आचार्यश्री तुलसी अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति ने जैन समाज के प्रमुखो का यह सम्मेलन आयोजित किया है। प्रश्न यह भी आ सकता है कि इस आयोजन को किसी वैयक्तिक उत्सव के साथ क्यो जोडा गया है ? सचाई यह है कि व्यक्ति-व्यक्ति की पीडा ही कही जाकर सामूहिक पीडा बनती है। अभी पिछले दिनो हैदराबाद से भी इस पीडा को लेकर एक प्रतिनिधिमण्डल आमेट मे आचार्य श्री तुलसी के सामने पहुचा था। आचार्यश्री ने उन्हे इस पुण्य कार्य मे पूर्ण समर्थन दिया था और और भी जहा-जहा से आवाज आई है, सबको सबका समर्थन मिला है। कार्यकर्ताओ ने हजारो किलोमीटर यात्रा करके अनेक धर्माचार्यो, मुनिजनो और समाज प्रमुखो से सपर्क किया है। बहुतो से हार्दिक सहयोग मिला है। अमृत महोत्सव का भी यह एक सयोग बना और उदयपुर मे यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

"हम एक है, हमे एक रहने दो" इस भावनात्मक वातावरण मे आचार्य श्री तुलसी अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के अन्तर्गत जैन समन्वय प्रकोष्ठ द्वारा उदयपुर मे दिनाक १०,११ फरवरी को आयोजित जैन समन्वय सम्मेलन एक बहुत ही उज्ज्वल वातावरण मे सम्पन्न हुआ। जैन समाज के चारो सम्प्रदायो के गणमान्य प्रतिनिधियो की भव्य उपस्थिति मे मर्यादा समवसरण मे अमृत पुरुष आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य मे आयोजित यह आयोजन चार चरणो मे चला।

१० फरवरी को प्रात ६.३० पर उद्घाटन भारत जैन महामण्डल के अध्यक्ष श्री दीपचन्द गार्डी की अध्यक्षता मे बबई से समागत स्था० कान्फ्रेस के मत्री श्री पुखराज लूकड द्वारा किया गया।

जैन समन्वय सम्मेलन

भगवान् महावीर का सिद्धात स्याद्‌वाद भेद की दुनिया मे अभेद की ओर बढने का सदेश देता है। कठिनाई यह है कि उन्ही का अनुयायी जैन समाज स्वय ही अनेक भेद-प्रभेदो मे बटा हुआ है। प्रसन्नता की बात यह है कि पिछले कुछ वर्षो मे समाज का चिंतन फिर भेद से अभेद की ओर मुडने लगा है। महावीर निर्वाण शताब्दी का पुण्य अवसर इसका कारण बना और प्रबुद्ध नेतृत्व कुछ बिन्दुओ पर एक मत हुआ। एक ध्वज, एक प्रतीक और एक ग्रन्थ निर्णीत हुए। फिर भी कुछ विषय ऐसे रह गए कि जिनकी असहमति आज भी हर समझदार जैन की आख की किरकिरी बनी हुई है।

उपरोक्त दोनो महत्त्वपूर्ण मुद्दो को सामने रखते हुए ही आचार्यश्री तुलसी अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति ने जैन समाज के प्रमुखो का यह सम्मेलन आयोजित किया है। प्रश्न यह भी आ सकता है कि इस आयोजन को किसी वैयक्तिक उत्सव के साथ क्यो जोडा गया है ? सचाई यह है कि व्यक्ति-व्यक्ति की पीडा ही कही जाकर सामूहिक पीडा बनती है। अभी पिछले दिनो हैदराबाद से भी इस पीडा को लेकर एक प्रतिनिधिमण्डल आमेट मे आचार्य श्री तुलसी के सामने पहुचा था। आचार्यश्री ने उन्हे इस पुण्य कार्य मे पूर्ण समर्थन दिया था और और भी जहा-जहा से आवाज आई है, सबको सबका समर्थन मिला है। कार्यकर्ताओ ने हजारो किलोमीटर यात्रा करके अनेक धर्माचार्यो, मुनिजनो और समाज प्रमुखो से सपर्क किया है। बहुतो से हार्दिक सहयोग मिला है। अमृत महोत्सव का भी यह एक सयोग बना और उदयपुर मे यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

"हम एक है, हमे एक रहने दो" इस भावनात्मक वातावरण मे आचार्य श्री तुलसी अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के अन्तर्गत जैन समन्वय प्रकोष्ठ द्वारा उदयपुर मे दिनाक १०,११ फरवरी को आयोजित जैन समन्वय सम्मेलन एक बहुत ही उज्ज्वल वातावरण मे सम्पन्न हुआ। जैन समाज के चारो सप्रदायो के गणमान्य प्रतिनिधियो की भव्य उपस्थिति मे मर्यादा समवसरण मे अमृत पुरुष आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य मे आयोजित यह आयोजन चार चरणो मे चला।

१० फरवरी को प्रात ६ ३० पर उद्घाटन भारत जैन महामण्डल के अध्यक्ष श्री दीपचन्द गार्डी की अध्यक्षता मे बबई से समागत स्था० कान्फ्रेंस के मत्री श्री पुखराज लूकड द्वारा किया गया।

प्रथमत मगलाचरण के पश्चात् मुनिश्री मधुकर द्वारा समन्वय गीत प्रस्तुत किया गया। आचार्य तुलसी अमृत-महोत्सव समिति उदयपुर के स्वागत अध्यक्ष श्री भवरलाल डागलिया ने स्वागत-भाषण किया। भारत जैन महामडल के मत्री श्री चन्दनमल "चाद" ने सयोजकीय वक्तव्य दिया। श्री भीखमचद कोठारी "भ्रमर" ने जैनाचार्यों, सतो के दर्शन कर समन्वय हेतु जो यात्राए की, उसका विवरण प्रस्तुत किया। श्री कन्हैयालाल छाजेड ने इस अवसर पर प्राप्त आचार्यो, सन्तो, विद्वानो व सुश्रावको के सदेश व सुझावो का सक्षेप मे वाचन किया।

श्री पुखराज लूकड द्वारा सम्मेलन के उद्घाटन के बाद युवाचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा– "आज जैन धम को पुन महावीर की अपेक्षा है। हमे तनाव को दूर करना होगा। महावीर की दृष्टियो के पालन का यह स्वर्णिम युग हे। उन्होने आगे कहा—"शाखाओ का होना विकास का चिह्न है। विचारो के विकास को रोका नही जाना चाहिए। आज सामूहिक प्रयोग की आवश्यकता हे।"

भारत जैन महामडल के उपाध्यक्ष श्री नृपराज जैन, अचलगच्छ के अध्यक्ष बम्बई से समागत श्री किशोरचन्द्र वधन के वक्तव्यो के उपरान्त साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा ने दिशा निर्देश दिया। सरल गुजराती भाषा मे प्रस्तुत श्री दीपचन्दजी गार्डी के अध्यक्षीय वक्तव्य ने सबका मन मोह लिया। उन्होने उदघोष किया—हम एक है, हमे एक रहने दो हमे किसी भी तरह से जैन समन्वय के कार्य मे समपण भाव से जुट जाना है।"

आचार्यश्री तुलसी ने अपने मगल प्रवचन मे अनेक जैनाचार्यो के उदारतापूण रुख का वर्णन करते हुए सब लोगो से इस शुभ काय मे योगदान देने की बात कही। उन्होने कहा—"जैन एकता आज प्रासगिक हे। हमे अनेकता मे एकता स्थापित करनी हे।"

द्वितीय चरण रवीन्द्रनाथ टैगोर मेडिकल हॉल मे एक गोष्ठी के रूप मे दोपहर २ ३० बजे प्रारम्भ हुआ। इसका सयोजन श्री चन्दनमल 'चाद' ने बडी ही कुशलता पूवक किया। जोधपुर के श्री रिखबराज कर्णावट, ब्यावर के श्री लालचन्द सिंधी, उदयपुर के डा० प्रेमसुमन जैन, हैदराबाद के श्री उगमचद सुराणा, बम्बई के श्री टोकरसी भाई, सिकन्दराबाद के श्री हस्ती-मल मुणोत, लाडनू के श्री श्रीचन्द रामपुरिया, बोलारम-हैदराबाद के श्री पारस भाई जैन, दिगम्बर सम्प्रदाय के प्रमुख साहू श्रेयासप्रसाद जी जैन,

इन्दौर के श्री फकीरचन्दजी मेहता, आदि ने जैन समन्वय के सदर्भ मे सार-गर्भित सुझाव रखे ।

आचार्यश्री तुलसी ने अपने उद्बोधन मे वातावरण की गौरवमयता का उल्लेख किया । पश्चात् कई महानुभावो ने अपने वक्तव्य प्रकट किये जो सहज वार्तालाप के रूप मे चले ।

तृतीय चरण मे आचार्यश्री के सान्निध्य मे जैन समन्वय के प्रतिनिधियो की एक अन्तरग गोष्ठी दिनाक १०, रात्रि को हुई जिसमे विचारो का खुलकर आदान-प्रदान हुआ । गरिमामय शब्दो मे अत्यन्त विनम्रता पूवक सशय भी उठाये गये । किये गये कार्यों का ब्योरा भी प्रस्तुत किया गया और क्या किया जा सकता है, क्या किया जाना चाहिए, इस पर खूब खुलकर चर्चा हुई । निष्कर्ष रूप मे तब एक समिति का निर्माण किया गया और समग्र जैन समाज की मान्य सस्था भारत जैन महामण्डल के अन्तर्गत इस समिति को कार्य करने का निर्देश सर्वसम्मति से दिया गया । जैन समन्वय सम्मेलन ने पाच प्रस्ताव पारित किए । स्थापित समिति के जिम्मे विभिन्न आचार्यों से मिल-कर व उनको अपनी ओर से एक प्रतिनिधि इस समिति मे देने का निवेदन करने का काय दिया गया ।

११ फरवरी / ६ ३० बजे आयोजित चतुर्थ चरण समारोह का प्रारभ मुनिश्री श्रेयासकुमार के गीत से हुआ । मुनि श्री राकेशकुमार के वक्तव्य के बाद मुनिश्री बुद्धमल ने कहा—"धर्म मे असतोष रहना भी काम का है । जो हमे आगे बढने की प्रेरणा देता है । नदी का रुख चाहे किधर भी हो मगर लक्ष्य तो समुद्र ही है । कागजो पर प्रस्ताव लेने से उस पर अमल नही होता । उसकी क्रियान्विति मन के द्वारा होनी चाहिए ।" इस अवसर पर राजस्थान के पूर्व मत्री श्री चन्दनमल बैद, श्री नाथूलाल चडालिया (कपासन) श्री विजयेन्द्र कर्णावट (हैदराबाद), श्री जौहरीलाल पारिख (जोधपुर), श्री शातिलाल पोखरना (भीलवाडा), श्री हस्तीमल मुणोत (हैदराबाद) आदि के वक्तव्य हुए ।

आचार्यश्री ने समापन-चरण मे कहा—"आदमी का दिमाग स्वतन्त्र एव चिंतनशील होना चाहिए ।" उन्होने कहा—"बिना त्याग किए किसी चीज को पाना बहुत कठिन है । उसके लिए जब तक जैन एकता यानि सम्वत्सरी एक न हो तब तक प्रतिदिन आधा घण्टे खडे रह कर ध्यान जप करने के साथ चीनी तथा चीनी की बनी चीजो को प्रयोग मे न लेने का मैंने सकल्प लिया

है। युवाचार्यश्री को प्रतिदिन एक घटा खडे-खडे ध्यान करने का निर्देश दिया।

कार्यक्रम के सयोजक श्री चन्दनमल "चाद" ने रात्रि को सपन्न गोष्ठी मे पारित प्रस्ताव का पाठ किया। प्रस्ताव को उपस्थित जनमेदिनी ने हाथ उठाकर सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की। श्री कन्हैयालाल छाजेड ने जैन समन्वय प्रकोष्ठ की ओर से व श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट ने अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति की ओर से आभार ज्ञापन किया।

सम्मेलन की सफलता के लिए जिनके महत्त्वपूर्ण सदेश प्राप्त हुए उनके नाम इस प्रकार हे—आचार्य आनन्द ऋषिजी, आचार्य नानालालजी, आचार्य हस्तीमलजी, आचार्य विजयेन्द्र सूरिजी, आचार्य विजयप्रेम सूरीश्वरजी, आचार्य विजय प्रसन्नचन्द्र सूरिजी, आचार्य उदयसागर सूरिजी, आचार्य दुर्लभ-सागर सूरिजी, एलाचार्य विद्यानन्दजी, आचार्य आनन्द सूरिजी, आचार्य हेमचन्द्र सूरिजी, मेवाड प्रवर्तक अबालालजी, पडित रत्न, मुनि कन्हैया-लाल जी "कमल" श्री महेन्द्र मुनिजी, वात्सल्यदीपजी, पदमचन्दजी महाराज, रूपचन्दजी महाराज, रमेश मुनि जी, धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्रजी हेगडे, भट्टा-रक चारुकीर्तिजी महाराज, श्री मानव मुनिजी, उद्योगपति श्री अरविन्द भाई सिंघवी आदि।

सम्मेलन मे पारित प्रस्ताव

(१) सम्मेलन के लिए प्राप्त २७ आचार्यो एव मुनियो तथा सैकडो जैन नेताओ के सदेशो मे सवत्सरी पर्व भिन्न-भिन्न तिथियो के लिए चिंता व्यक्त करते हुए एक तिथि की आवश्यकता महसूस की गई। इसके लिए अनेक आचार्यो ने उदारता के साथ अपने समथन का आश्वासन भी दिया है। सन्देशो की इस भावना एव मम्मेलन की तीन वैठको मे प्रतिनिधियो के विचार मथन के बाद यह सम्मेलन सर्वसम्मति से निणय करता है कि महापर्व सवत्सरी एव महावीर जयन्ती की पूरे जैन समाज मे सर्वमान्य एक ही तिथि हो। इस एक तिथि के लिए हम पूज्य जैन आचार्यो, साधु-साध्वियो से विनम्र अपील करते हैं कि वे इसमे पूर्ण ममथन और आशीर्वाद दे।

(२) सवत्सरी एव महावीर जयन्ति की एक ही तिथि निर्धारण के काय को सुव्यवस्थित आगे बढाने के लिए यह सम्मेलन ममग्र जैन समाज की

अखिल भारतीय सस्था भारत जैन महामडल से निवेदन करता है कि मडल के अन्तर्गत जैन समन्वय समिति गठित की जाय, जिसके सयोजक ववई के किशोरचद एम० वधन रहे और मडल के अध्यक्ष तथा मन्त्री इसके पदेन सदस्य रहे। समिति मे निम्नलिखित सदस्य रहे—

१	श्री दीपचद एस० गार्डी	ववई
२	श्री किशोरचद एम० वधन	ववई
३	श्री हस्तीमल मुणोत	
४	श्री उगमचन्द सुराणा	
५	श्री पारसभाई जैन	वोलारम
६	श्री पुखराज एस० लूकड	
७	श्री चन्दनमल 'चाद'	ववई
८	श्री कन्हैयालाल छाजेड	कटक श्रीडूगरगढ
९	श्री भीखमचन्द कोठारी 'भ्रमर'	टॉटगढ
१०	श्री सचियालाल वाफना	ओरगावाद
११	श्री रवजी भाई छेडा	
१२	श्री चन्दूलाल गागजी प्रेमवाला	ववई
१३	श्री टोकरसी मूला भाई वीरा	

इसके अनिरिक्त जैन समन्वय समिति आवश्यकतानुसार अतिरिक्त सदस्यो को मनोनीत कर सकती है।

(३) अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी के अमृत-महोत्सव वर्प के अवसर पर यह सम्मेलन उनकी जैन शासन एव मानवता के क्षेत्र मे की गई सेवाओ के सन्दर्भ मे उनका श्रद्धा भरा अभिनन्दन करता है और जैन समन्वय सम्मेलन मे आपके सान्निध्य एव मार्गदर्शन के लिए विनम्र आभार व्यक्त करता है।

(४) यह सम्मेलन उन पूज्य आचार्यो और साधु-साध्वियो के प्रति भावभरी कृतज्ञता व्यक्त करता है जिन्होने अपने सदेशो द्वारा समन्वय सम्मेलन को वल दिया और सवत्सरी की एक तिथि तथा जैन समन्वय के कार्य मे पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया है।

(५) आचार्यश्री तुलसी अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति एव आचार्य तुलसी मर्यादा एव अमृत-महोत्सव समिति, उदयपुर द्वारा सुन्दर, सुखद आतिथ्य और व्यवस्था के लिए यह सम्मेलन हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित

करता है ।

राजस्थान प्रदेश जीवन-विज्ञान शिक्षा सम्मेलन

आचार्यश्री तुलसी अमृत-महोत्सव के तृतीय चरण पर १२-१३ फरवरी को उदयपुर मे अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति एव राजस्थान विद्यापीठ के सयुक्त तत्वावधान मे 'राजस्थान प्रदेश जीवन-विज्ञान शिक्षा सम्मेलन' का आयोजन हुआ । आचार्यश्री तुलसी अमृत-महोत्सव को जीवन-विज्ञान वर्ष (मूल्य परक शिक्षा) के रूप मे मनाया जा रहा है । इसी परिप्रेक्ष्य मे इस सम्मेलन का आयोजन हुआ ।

सम्मेलन की विविध गोष्ठियो की अध्यक्षता श्री श्रीचन्द रामपुरिया, श्री मोतीलाल एच० राका, श्री डॉ० एम० वी० माथुर, प्रो० एल० के० ओड ने की ।

शिक्षामत्री श्री हीरालाल देवपुरा, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के भू० पू० सदस्य डॉ० एम० वी० माथुर एव राजस्थान महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० आर० पी० भटनागर सम्मेलन के प्रमुख अतिथि एव प्रमुख वक्ता थे ।

श्री सोहनलाल गाधी, डॉ० देव कोठारी, डॉ० (श्रीमती) प्रभा वाजपेयी ने विविध गोष्ठियो का सुगठित सयोजन किया ।

सम्मेलन मे समागत शिक्षाविदो का स्वागत करते हुए स्वागत प्रमुख राजस्थान विद्यापीठ के उपकुलपति प० जनार्दनराय नागर ने कहा—'हमे शिक्षा मे क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिये जीवन-विज्ञान के प्रयोग पर ही भारतीय शिक्षा का चेतनशील, गत्यात्मक, ज्ञान प्रेरणा से भरा तथा विज्ञान प्रतिपादित प्रारूप आविष्कृत करना ही होगा । भारतीय जन के चरित्र-निर्माण और विकास तथा समष्टि के जीवन मूल्यो की समुचित प्रतिष्ठा के लिए मनोविश्लेषणात्मक एव प्रेक्षाध्यान से सप्रेरित जीवन-विज्ञान योग्य तथा यथेष्ठ है ।'

उद्घाटन समारोह मे मुनिश्री बुधमल, समणी श्री स्मितप्रज्ञा, साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा के वक्तव्य के बाद युवाचार्यश्री तथा आचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण दिशादर्शक वक्तव्य हुए ।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री श्रीचद रामपुरिया ने की । श्री रामपुरिया ने अध्यक्षीय वक्तव्य मे कहा—'जीवन-विज्ञान जीवन को जीने की कला का क्रमानुसार अध्ययन है । विद्यार्थियो मे नैतिक एव आध्यात्मिक मूल्यो की स्थापना ही इसका मुख्य उद्देश्य है ।

प्रथम गोष्ठी के प्रमुख अतिथि राजस्थान के शिक्षामंत्री श्री हीरालाल देवपुरा थे। श्री देवपुरा ने कहा—'आज शिक्षा मे व्यापक परिवर्तन की बात चल रही है। शिक्षा क्षेत्र मे अनेको प्रयोग चल रहे है। जीवन-विज्ञान भी एक प्रयोग है। मुझे विश्वास है जीवन-विज्ञान के द्वारा छात्रो मे नैतिक मूल्यो की स्थापना हो सकेगी।'

सम्मेलन मे आयोजित विविध गोष्ठियो मे मुनिश्री किशनलाल, मुनिश्री सुखलाल, साध्वीश्री राजीमती, साध्वीश्री कनकश्री एव समणी श्री कुसुमप्रज्ञा ने 'जीवन-विज्ञान' विषय पर विशेष प्रकाश डालते हुए शिक्षा मे इसकी उपयोगिता प्रतिपादित की।

डॉ० सी० एल० तलेसरा एव श्री सोहनलाल गाधी ने 'शिक्षा और जीवन-विज्ञान' विषय पर विशेष प्रकाश डाला।

सम्मेलन मे निम्न शिक्षाविदो ने पत्र वाचन किया—

१ प्रो० के० के० वशिष्ठ
वर्तमान मे भारतीय शिक्षा आयोजन की भूमिका और समस्याए
२ डॉ० के० के जेकब
एज्यूकेशन फोर सोशियल डेवलेपमेट
३ प्रो० एल० के० ओड
जीवन-विज्ञान शिक्षा का तात्त्विक परिप्रेक्ष्य तथा कुछ प्रश्न
४ डॉ० जे० पी० वर्मा
जीवन-विज्ञान आधारित शिक्षा दर्शन
५ प्रो० श्यामसुन्दर जैन
शिक्षा का प्रायोगिक आयाम जीवन-विज्ञान

सम्मेलन मे ८० शिक्षाविदो ने भाग लिया एव जीवन-विज्ञान आधारित शिक्षा के सदर्भ मे अपनी जिज्ञासा का समाधान प्राप्त किया।

१३ को मध्याह्न मे जीवन-विज्ञान सगोष्ठी के साथ ही राजस्थान विद्यापीठ की ओर से आचार्यवर को 'भारत ज्योति' अलकरण कार्यक्रम का प्रथम चरण मनाया गया। विद्यापीठ के उपकुलपति श्री नागर ने कहा—'विद्यापीठ के इतिहास मे आज का दिन स्वर्णाक्षरो अकित किया जायेगा, क्योकि उसके द्वारा आज एक ज्योति पुरुष को अभिनन्दन समर्पित किया जा रहा है। विद्यापीठ के कुल प्रमुख श्री भवानी शकर गर्ग ने सस्था का परिचय दिया। आचार्यवर का इस अवसर पर महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुआ।

आज राजस्थान की उपमत्री वीना काक ने आचार्यवर के दशन किये, बातचीत की। कम उम्र मे वे मत्रिमडल मे शौमिल हुई है। आचार्यश्री के प्रति उनके मन मे विशेप आस्था का भाव है। पूर्व विधायक श्रीमती लक्ष्मी-देवी चूडावत ने भी आचार्यवर के दर्शन किये। मध्याह्न आचार्यवर अकस्मात् अस्वस्थ हो गये। रात्रि मे पूर्ण विश्राम किया। रात्रि मे युवाचायश्री का विशेष वक्तव्य हुआ। इससे पूर्व मुनिश्री राकेशकुमार ने विपय प्रवेश किया। आज बाहर से हजारो-हजारो व्यक्ति मर्यादा एव अमृत-महोत्सव मे शामिल हाने के लिए पहुच गये।

र्यश्री तुलसी 'भारत ज्योति से अलकृत

१४ जनवरी/आज आचायश्री के सान्निध्य मे तीन महत्त्वपूर्ण कायक्रम आयोजित हुए—१२२ वे मर्यादा महोत्सव एव अमृत-महोत्सव के तृतीय चरण का उद्‌घाटन, भारत ज्योति अलकरण एव अणुव्रत पुरस्कार समर्पण। समारोह के विशिष्ट अतिथि थे—राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैलसिह। इनके अतिरिक्त पूर्व कार्यवाहक प्रधानमत्री श्री गुलजारीलाल नदा, शिक्षामत्री श्री हीरालाल देवपुरा, ग्रामीण विकास मत्री श्री रामपाल उपाध्याय, सासद श्रीमती इन्दु-बाला सुखाडिया, सासद श्री रामचन्द्र विकल, अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के महामत्री श्री रघुनन्दन लाल भाटिया, पूर्व वित्तमत्री श्री चन्दनमल वैद आदि की महत्त्वपूर्ण उपस्थिति थी।

राजस्थान के प्रमुख सार्वजनिक सस्थान राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर द्वारा आचार्यश्री तुलसी को सस्था के सर्वोच्च सम्मान भारत ज्योति से सबोधित किया गया। अलकरण की प्रस्तुति सस्था के सस्थापक प० जनार्दन-राय नागर ने करते हुए कहा—'पिछले पचास वर्षो मे आचार्यश्री तुलसी ने समग्र देश मे पाव-पाव चलकर मानव जाति के अभ्युदय के लिए जो काय किया है वह ऐतिहासिक उपलब्धि है। पग-पग पर सघर्षो को झेल कर अपने आचार्यत्व के पचास वर्षो मे भारतीय मानवता की अन्तरात्मा को शुद्ध करने का सग्राम आपने किया है। आपने भारत राष्ट्र की राजनैतिक, सास्कृतिक, शैक्षिक तथा आध्यात्मिक दृष्टियो को नव उद्‌बोधन देकर समूचे भारत ही नही, विश्व मे भारत ज्योति का अपने दिव्य जीवन का दीप जलाकर प्रकाश किया है।"

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह ने भारत ज्योति "अलकरण और अभिनदन पत्र" विद्यापीठ परिवार की ओर से आचायश्री को समर्पित किया।

सन् ८५ के अणुव्रत पुरस्कार की प्रस्तुति जय तुलसी फाउन्डेशन के अध्यक्ष श्री ग्रमचन्द चौपडा ने की। राष्ट्रपति ने श्री गुलजारीलाल नदा को अणुव्रत पुरस्कार प्रदान किया। निष्काम सेवी श्री नदा को यह पुरस्कार-मानवीय एकता मे विश्वास, चारित्रिक मूल्यो की प्रतिष्ठा एव अणुव्रत आदर्शो के निर्वहन के सदर्भ मे दिया गया।

राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिह ने कहा—"आज विभिन्न मत-सम्प्रदायो मे तथाकथित मुखिया एव अन्य लोग धर्म की आड मे अपना उल्लू सीधा कर रहे है। वे धर्म की गलत व्याख्या कर जहा धन कमा रहे है वही सामाजिक कटुता के बीज भी बो रहे है। धर्म के साथ खिलवाड करने वाले ये लोग धर्म परायण होने का स्वाग करते है। हमे इनसे सावधान रहना होगा। भारत धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। यहा सभी अपने धर्म के प्रचार व प्रार्थना करने को स्वतत्र है। लेकिन देश की अखण्डता बरकरार रखने के लिए आज जरूरत इस बात की है कि विभिन्न धर्माचार्य, सत एक मच पर बैठकर विचार करे, वे कहे कि हम एक है, भारत एक है। इस दिशा मे उन्होने आचार्यश्री तुलसी से पहल करने का आग्रह किया।

भडारी दर्शक मण्डप मे उपस्थित करीब पचीस हजार जनता को अपनी सरल एव उन्मुक्त भाषा शैली से मत्रमुग्ध रखते हुए राष्टपति ने कहा—"आचार्य तुलसी मानवता की सेवा से जुडे है। आपने अणुव्रत के जरिये देश को अनुशासन के धागे मे पिरो कर एक नई जागृति पैदा की है। राजस्थान विद्यापीठ द्वारा "भारतज्योति" अलकरण से सम्मानित करना उसे उनके प्रति हमारी श्रद्धा एव भावना को अभिव्यक्त करना है।"

राष्ट्रपति ने आचार्यश्री की ओर उन्मुख होते हुए कहा "वे बता दे कि जो काम सरकार नही कर सकती, उसे हमारे देश के ऋषि-मुनि अच्छी तरह से कर सकते है। क्योकि वे मार्ग दर्शक है तपस्वी है। मै चाहता हू कि सत्य, अहिसा और विश्व बन्धुत्व का मत्र दोहराते हुये वे हमे प्रगति पथ पर ले जाए। जैन मुनियो का जीवन बहुत सयमी और सादा होता है। परन्तु उनके अनुयायियो से यह कहना चाहता हू कि वे अपने आपको दौलत का टस्टी समझे, उसका सग्रह करने के साथ-साथ वितरण भी करे। जनता के बीच ही उन्हे भगवान के दर्शन होगे उन्होने एक शेर सुनाते हुए कहा—"जुल्म दिखा तो शहशाहो की बस्ती मे, खुदा देखा तो गरीबो की बस्ती मे।" राष्ट्रपति ने श्री नदा को अणुव्रत के सिद्धान्त पर चलने वाला बताते हुए कहा कि श्री नदाजी

की ईमानदारी हम सवके लिए एक मिसाल है। उनका समूचा राजनीतिक जीवन निष्कलक रहा है। उन्हे पुरस्कृत करने के जय तुलसी फाउण्डेशन के निणय की राष्ट्रपति ने सराहना की। चारित्रिक महत्ता के अकन के इस उपक्रम से राष्ट्रपति प्रभावित हुए। राष्ट्रपति ने आगे कहा—"आचायश्री तुलसी का काम अभी समाप्त नही हुआ हे उन्हे अव समाज मे आए विभिन्न मतभेदो एव दुराव को खत्म करने के लिए अपने प्रयास जारी रखने होगे।"

अणुव्रत पुरस्कार विजेता श्री गुलजारीलाल नदा ने अपने सबोधन मे कहा—"आचायश्री तुलसी एव उनके धर्मसघ ने मुझे जिस उच्च सम्मान के योग्य समझा है, उसे मै अपना सौभाग्य मानता हू। मैं अपनी कमियो पर विजय प्राप्त करने का सघर्ष कर रहा हू। मैने जो कुछ हस्तगत किया हे, वह मेरी आकाक्षाओ से कम है। फिर भी मे इस पुरस्कार को स्वीकार करता हू। ऐसा प्रतीत होता है कि आप जिस नैतिक श्रेष्ठता का प्रसार करना चाहते हे, मेरे नम्र प्रयास को उसका प्रयास मान लिया है। इससे मुझे उस स्तर पर पहुचने के लिये प्रयास करने की प्रेरणा मिलेगी, जिसकी आप मुझसे अपेक्षा करते हे।"

साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभा ने कहा—"आचार्यश्री के पचास वर्षो का यह सफर लोक चेतना को जागृत करने की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा हे। उनमे लोकतान्त्रिक जीवन शैली के साथ नैतिक मूल्यो को ढालने की गहरी तडफ हे। समूचे साध्वी समाज के द्वारा इस महान् अलकरण के समय उनका अभिनन्दन करती हुई मे कामना करती हू कि आचार्यश्री भारत ज्योति के रूप मे ही नही, विश्व ज्योति के रूप मे प्रतिष्ठित हो।"

युवाचार्यश्री ने अपने उद्‌वोधन मे कहा—"आचायश्री को "भारत ज्योनि" का अलकरण श्रद्धा का एक पुष्प के रूप मे समर्पित है। श्रद्धा का पुष्प कोई छाटा नही होता हे, अपने आप मे महान् होता है। आज इस योग को देख कर मेरा स्वप्न साकार हो रहा ह। राज सत्ता और धमसत्ता का यह सतुलित योग हमे नई गति देने वाला ह। इस सतुलन के साथ हमने कदम वढाया तो निश्चित रुप ने देश का नया नक्शा सामने उभरेगा।"

आचायश्री तुलसी ने अपने सदेश मे कहा—"आज मनुष्य अपनी पहचान खो चुका हे। उसे उसकी पहचान देने की जरूरत है। देश मे धार्मिक लोग वहुत ह, मगर नैतिक व्यक्तियो की कमी है। आज धर्म और धोखा एक-साथ चल रहे हैं।"

उन्होने राष्ट्रपति को वास्तव मे ज्ञानी की सज्ञा देते हुए कहा कि सभी धर्म के सतो को एक मच पर लाने के लिए उनके सुझाव की दिशा मे पूरे प्रयास करने का आश्वासन दिया। आचार्यश्री ने आगे कहा—"नैतिकता की प्रतिष्ठा के लिए सभी को अपरिग्रह का जीवन जीना सीखना होगा। श्री नदाजी इसके उदाहरण है। इनका जीवन श्रेष्ठ चारित्रिक मूल्यो का परिचायक है। इस सम्मान द्वारा अणुव्रत पुरस्कार स्वय सम्मानित हुआ है।"

आचार्यश्री ने कहा—"राजस्थान विद्यापीठ ने मुझे "भारत ज्योति" अलकरण से सम्मानित किया है। पर मै चाहता हू कि मे आत्म-ज्योति बनू और यही मेरा लक्ष्य है। इस अवसर पर श्री देवपुरा, श्री भाटिया, श्री विकल, श्री धर्मचद चौपडा ने अपने विचार रखे। श्री भवरलाल डागलिया ने मर्यादा महोत्सव समिति की ओर से एक एल्यूमीनियम की कृति स्मृति स्वरूप भेट की। कार्यक्रम का सयोजन श्री गणेश डागलिया ने किया।

मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के उद्घाटन प्रसग पर आचार्यवर ने तेरापथ धर्मसघ मे चल रहे सभी केन्द्रो मे नए सघाटको की नियुक्ति की। कायक्रम के बाद राष्ट्रपति के साथ आचार्यश्री, युवाचार्यश्री की सौहार्दपूर्ण वातावरण मे बातचीत हुई। बातचीत करीब आधा घटा चली।

इसी कायक्रम का द्वितीय चरण आचार्यवर के अभिनदन के रूप मे २ ३० बजे साध्वियो एव समणियो द्वारा मनाया गया। साध्वी श्री राजीमती साध्वी श्री प्रेमलता, श्रीमती तारादेवी सुराणा ने आचार्यवर के सबध मे अपने विचार प्रकट किये। साध्वी श्री जयश्री ने आचार्यवर की अभ्यथना मे अपनी कविता प्रस्तुत की। सरदारशहर की साध्वियो, गुजरात प्रान्त की साध्वियो, हरियाणा प्रान्त की साध्वियो तथा समणीवृन्दने इस अवसर पर अपने समूह-गीत प्रस्तुत किये।

सार्वजनिक सस्थाओ द्वारा आचार्यश्री का अभिनदन

आज रात्रि मे उदयपुर की कई सार्वजनिक सस्थाओ मे सेवा मदिर विद्यापीठ, सगीत नाट्य निकेतन, साहित्य अकादमी, आलोक विद्यालय के साथ नेपाल तथा बिहार एव कई सस्थाओ ने भारत ज्योति आचार्यश्री का मानव क्षेत्र मे किए गए कार्यो की प्रशसा करते हुए अभिनदन किया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए भारत सरकार के भूतपूर्व विदेश सचिव श्री जगत मेहता ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आज धार्मिको मे

आचार्यश्री तुलसी ही ऐसे सक्षम व्यक्ति है जो राजनैतिको को मोड दे सकते है। श्री मेहता ने कहा कि आज हमने जो सभा देखी, ऐसी विशाल एव शालीन सभा अपने जीवन ने कभी नही देखी।

१५ फरवरी/प्रात ६ ४५ साध्वियो के समूहगीत से कायक्रम का प्रारभ हुआ। यह कायक्रम आचायवर के आगामी चातुर्मास की प्राथना के लिए आरक्षित था। प्रार्थना करने वाले क्षेत्र थे—पाली, पचपदरा, वगडी, अहमदाबाद, राजसमन्द, लाडनू, श्री डूगरगढ।

ऐतिहासिक शाति यात्रा

भण्डारी दशक मण्डप मे आज एक विशाल शाति यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमे करीबन २५-३० हजार नर-नारी एव बच्चो ने हाथो मे बेनर ले रखे थे जिन पर लिखा था तनाव, हिसा एव युद्ध बन्द हो, विश्व मे शाति हो तथा शस्त्रो की होड बन्द हो। यह पैदल रैली करीबन ३ किमी० लबी थी जो नगर के प्रमुख मार्गो से होती हुई पुन भण्डारी दर्शक मण्डप जाकर सभा के रूप मे परिवर्तित हो गई।

इस शाति यात्रा मे आगे जैन ध्वज, शाति यात्रा का बैनर, सबसे आगे नेपाल, बिहार, पूर्वाञ्चल मे आसाम, उडीसा, तथा बगाल, पश्चिम भारत मे गुजरात, महाराष्ट्र, तथा सौराष्ट्र मध्य भारत मे रतलाम, उज्जैन, इन्दौर उत्तरी भारत मे उत्तरप्रदेश, दिल्ली, पजाब, हरियाणा, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, मैसूर, तामिलनाडु, मद्रास, मारवाड, थली तथा मेवाड के हजारो नर नारियो, बच्चो के साथ मुमुक्षु बहिने, समणिया, साध्वीप्रमुखाश्री आदि साध्विया तथा साधु भी चल रहे थे। जुलूस के प्रारभ मे युवाचार्यश्री ने नेतृत्व किया।

इस शाति यात्रा मे राजस्थान महिला विद्यालय, महावीर विद्या मदिर, महिला मडल, आलोक ब्रह्मपुरी आश्रम सस्थाओ ने भाग लिया।

शान्ति यात्रा समाप्ति पर हुई आमसभा मे एक प्रस्ताव पारित किया गया। आचायश्री के सान्निध्य मे राजस्थान खेल परिषद् के अध्यक्ष श्री नन्दलाल कच्छारा ने शाति प्रस्ताव रखा जिसका पूव मत्री श्रीचन्दनमल वैद ने समथन करते हुए सपूण समाज से विश्व मे शाति के लिए सभी को सजग रहने एव प्रयास करन का आह्वान किया। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित कर भारत सरकार, सयुक्त राष्ट्र सघ एव राष्ट्राध्यक्षो को भेजने का निणय लिया गया। प्रस्ताव के पक्ष मे बोलते हुए युवाचायश्री महाप्रज्ञ ने इस शाति यात्रा को एक

ऐतिहासिक यात्रा बताते हुए कहा "विश्व शाति के लिए यह एक बेजोड कदम है इससे अधिक कोई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम नही हो सकता। अमरीका तथा रूस मे शस्त्रो की होड चल रही है जो विश्व शाति के लिए एक खतरा है जिसे रोका जाना चाहिए। सवप्रथम इसी समाज ने इस प्रकार का प्रस्ताव लेकर विश्व शाति प्रयास करने का कदम बढाया है।" शाति यात्रा समिति के अध्यक्ष श्री नदलाल कच्छारा एव सयोजक डॉ० करण तोतावत थे। तेरापथ युवक परिषद् के सदस्यो ने इस यात्रा का सचालन किया।

रात्रिकालीन कार्यक्रम मे विविध कार्यक्रमों के अन्तगत "कानोड प्रस्तावो" की पूरी जानकारी दी गई। इसी सदर्भ मे युवाचार्यश्री का उद्बोधन भाषण हुआ जिसमे उन्होने प्रस्तावो की क्रियान्विति और सफल परिणति के लिए प्रेरणा दी। उसके बाद महिला मडल, उदयपुर द्वारा महिला मडलो के समूह गान हुए। प्रथम द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त मडलो को पुरस्कृत किया गया।

वृहद् मर्यादा महोत्सव सपन्न

१६ फरवरी/उदयपुर की धरती पर १२२ वे मर्यादा महोत्सव का शुभारभ मध्याह्न १२ ४५ बजे हुआ। सर्व प्रथम आचायप्रवर एव युवाचार्यश्री ने नमस्कार महामत्र का उच्चारण किया। मुनिश्री सुव्रतकुमार, मुनिश्री मोहजीत कुमार ने मगलाचरण प्रस्तुत किया। श्री बी० एल० वाकड ने सयोजकीय वक्तव्य दिया। मुनि सुमेरमल "लाडनूं" ने त्रिपदी वदना कराई। पारमार्थिक शिक्षण सस्था की मुमुक्षु बहिनो ने एक सुन्दर गीतिका प्रस्तुत की। दिल्ली तेरापथी सभा के मत्री श्री रमेशचद जैन ने आगामी चातुर्मास दिल्ली मे करने की प्राथना की। श्रीमती तारादेवी दूगड (कलकत्ता) ने अपने महत्त्वपूण वक्तव्य मे नारी-जाति का समुचित मार्गदर्शन के लिए आचार्यवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की। समणीवृन्द तथा साविका बहिनो ने सामूहिक रूप मे एक भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की।

इस अवसर पर व्यक्तिगत एव सभा सस्थाओ द्वारा प्रकाशित व अप्रकाशित कृतिया आचार्यवर को भेंट दी गई। अ० भा० ते० महिला मडल की अध्यक्ष श्रीमती सज्जन देवी चोपडा ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। नारी रत्न श्रीमती सूरज देवी बैगानी ने आजीवन प्रतिवर्ष पन्द्रह हजार रूपये महिला मण्डल के माध्यम से सेवा काय मे लगाने की घोषणा की।

मुनिश्री मोहनलाल "आमेट" के नेतृत्व मे बाल साधुओ ने एक शानदार राजस्थानी गीत प्रस्तुत किया। आचार्यवर गीत से प्रभावित होकर उसके लेखक मुनिश्री मोहनलाल को इक्कीस कल्याणक तथा साथ मे गाने वाले सभी सतो को पाच-पाच कल्याणक से पुरस्कृत किया।

मैसूर के लोकप्रिय कार्यकर्ता श्री भवरलाल मेहरा ने ६३२१ प्रतिज्ञा पत्र अमृत कलश मे डाले तथा जयसिहपुर की वरिष्ठ श्राविका श्रीमती पारसी बाई रूणवाल ने ५००० पाच हजार प्रतिज्ञा पत्र अमृत कलश मे डाले। इस कार्यक्रम का सयोजन मुनिश्री सुखलाल ने किया।

साध्वियो ने सामूहिक रूप मे शानदार गीतिका प्रस्तुत की। मुनिश्री बुद्धमलजी ने इस अवसर पर अपने महत्त्वपूर्ण उद्गार व्यक्त किये।

देश के कोने-कोने से आये करीब ३५ हजार व्यक्तियो की मर्यादित सभा को सबोधित करते हुए परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कहा—"आज मदिर, मस्जिद, गिरजाघर और गुरुद्वारे धर्म का केन्द्र बन रहे है पर वस्तुत धर्म की धुरी व्यक्ति का जीवन है। हमारे तीर्थकरो ने तीर्थ की स्थापना कर इस क्रम को प्रस्तुत किया। हम गणाधिपति आचार्य भिक्षु के अनन्त-अनन्त आभारी है, जिनकी दीघ दृष्टि से हमे यह अनुशासित व्यवस्थित, मर्यादित और सगठित धमसघ मिला। वि० स० १८१७ मे क्रान्ति का सिंहनाद करने वाले आचार्य भिक्षु ने न जाने कितने विरोधी प्रलय प्रभजनो को चीरकर भी ज्योतिर्वलय की तरह चमकते रहे। अभिनिष्क्रमण के समय श्मशान की छतरियो मे अपना पहला प्रवास कर वे सदा-सदा के लए अमर हो गए। हमारा सघ और अधिक तेजस्वी, वर्चस्वी और यशस्वी हो, इसके लिए मै कुछ महत्त्वपूर्ण घोषणाए आज करना चाहता हू।

महत्त्वपूर्ण घोषणाए

परमाराध्य आचायप्रवर ने आगे कहा—"आज हमारे धर्मसघ के सामने वहुमुखी प्रवृत्तिया हे। उनकी व्यापकता को दृष्टि मे रखते हुए समयोचित निर्णय लेना चाहता हू। मैंने कनकप्रभा को जब से साध्वीप्रमुखा के पद पर नियुक्त किया तब से ये बराबर आशा और कल्पना से अधिक मेरी दृष्टि की आराधना करती रही है। इनकी काय कुशलता मे मैंने सदैव प्रसन्नता की अनुभूति की है। ये भविष्य मे भी साध्वीप्रमुखा के स्थान पर कुशलतापूवक कार्य करती रहेगी। इनके सामने सस्कार-निर्माण और साहित्य सृजन के गुरुतर काय हैं। अत इनके काय भार को हल्का करने की दृष्टि से साध्वी

समाज की व्यवस्था के लिए साध्वी यशोधरा को नियोजिका के रूप मे नियुक्त कर रहा हू। मेरे दूसरे निर्देश तक यह नियोजिका का कार्य करती रहेगी।

युवाचार्य महाप्रज्ञ के आन्तरिक कार्य मे योग देने के लिए मुनि मुदित कुमार को उनके व्यक्तिगत सहयोगी के रूप मे नियुक्त करता हू।"

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आगे कहा—"सेवाकेन्द्र मे सेवारत साध्विया हमारी परपरा के अनुसार फाल्गुन कृष्णा पचमी को सेवा निवृत्त हो जाती है और नया सिघाडा (ग्रुप) अपने दायित्व मे जुड जाता है। इससे एक कठिनाई होती है कि दोनो ही ओर की साध्विया मर्यादा महोत्सव के भव्य समारोह से वचित रह जाती है। मै इस क्रम मे कुछ परिवर्तन करना चाहता हू। सेवा की अवधि फाल्गुन शुक्ला पचमी को परिसपन्न होगी।"

श्रद्धास्पद आचार्यवर की नई घोषणाओ का मुनि सुमेरमल "लाडनू" ने चतुर्विध धर्मसघ की ओर से अभिनदन किया।

युवाचार्यश्री ने अपने सारगर्भित वक्तव्य मे कहा—"हमारे धर्मसघ की प्रगति को मै चार स्तम्भ मे देख रहा हू। प्रकाश, नियत्रण अमृत और पुरुषार्थ।" युवाचार्यश्री ने इन चार बिन्दुओ का विस्तृत विवेचन किया। युवाचार्यश्री ने सभी साधु-साध्वियो को जीवन के हर क्षेत्र मे अनुशासित एव मर्यादित रहने के साथ मानव-मानव के साथ अच्छे व्यवहार पर जोर दिया। उन्होने कहा—जो समाज सगठित तथा जिस धर्मसघ के साधु-साध्विया हुशियार एव सगठित है उस धर्मसघ का समाज मजबूत होगा, उसका आचार्य तेजस्वी होगा। युवाचार्यश्री ने साध्वी प्रमुखाश्री की निस्पृहता की सराहना करते हुए आस्था का केन्द्र एक होने की बात कही।

महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने आचार्यवर के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए कहा—"आचार्यवर की नई घोषणा को सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई है पर पूरी नही, क्योकि मुझे सर्वथा दायित्व से मुक्त कर देते तो मै और सतोष का अनुभव करती। फिर भी जो अनुग्रह आचार्यवर ने किया है, उसकी अभिव्यक्ति के लिए मेरे पास कोई शब्द नही है। हमारी साध्वियो से मुझे जो आत्मीयता मिली है, वह भविष्य मे भी उससे अधिक मिलती रहेगी, आचार्यवर के सपनो को पूरा करने मे हमारा समय और शक्ति लगे, इसी आह्वान के साथ मै अपनी बात को विराम देती हू।"

इस अवसर पर साधु-साध्वियो ने दीक्षा-क्रमानुसार खडे होकर लेख-पत्र व मर्यादाओ को दुहराया। आचार्य भिक्षु के हाथ से लिखे हुए मर्यादा

पत्र की साक्षी से अपने सकल्पो को दोहराते हुए सबको गौरव की अनुभूति हो रही थी। वाहर से आए हुए भाई-वहिनो का स्वागत डा० के० एल० कोठारी ने किया। इस प्रकार मर्यादा-महोत्सव का कार्यक्रम सानन्द सपन्न होने पर उदयपुर के लोगो ने प्रसन्नता की अनुभूति की। उन्हे काय करने का एक मौका मिला था। पूरी जिम्मेदारी और निष्ठा के साथ लोगो ने अपने दायित्व का निर्वाह किया।

आचायवर ने आज अपना आगामी चातुर्मास जैन विश्व भारती लाडनू घोषित किया। इसके साथ ही उन्होने अनेक साधु-साध्वी-सघाटको के चातुर्मासो की नियुक्तिया की। अक्षय तृतीया व्यावर घोषित हुई।

१७ फरवरी/मर्यादा महोत्सव के अवशिष्ट कार्यक्रम का प्रारम्भ गगा-शहर क्षेत्र की साध्वियो के गीत से हुआ। साध्वीश्री काव्यलता ने तमिल भाषा मे अपने विचार रखे। महासभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल छाजेड तथा अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री मोतीलाल राका ने अपने विचार व्यक्त किये। पेटलावद महिला मडल की मत्रिणी ने ५० बारह व्रतधा-रियो की सूचि आचायवर को भेट की। करीव आठ हजार की उपस्थिति मे आचायवर का प्रभावी प्रवचन हुआ। कार्यक्रम के अनन्तर आचार्यवर मूल-स्थान मयूर काम्पलेक्स पधार गये। मर्यादा-महोत्सव का त्रिदिवसीय कायक्रम भडारी दर्शक मण्डप मे समायोजित हुआ था।

रात्रि मे भारतीय लोक कला मडल का कायक्रम तय था। यह सस्थान विविध रूपो मे भारतीय सस्कृतिजन्य लोकनृत्य तथा कठपुतली के खेलो का निदशन कराता है। आज मानवीय गुणो को उजागर करने वाला कठपुतली कार्यक्रम पूव से तय था, पर आपसी समझ के अभाव एव गलतफहमी से इस सस्थान ने कुछ ऐसे कायक्रम प्रस्तुत किए, जो हमारी परपरा एव सस्कृति के विरुद्ध पडते थ। तत्काल आचायश्री कायक्रम के मध्य पधारे और यह कार्यक्रम वीच मे ही वद कर दिया। आचार्यश्री ने इस कायक्रम को ऐसे धार्मिक मचो से प्रस्तुति करने को गलत वताया। कठपुतली कार्यक्रम देखने आये कुछ मुनिजनो ने भी यह लाकनृत्य का कायक्रम देखा। आचायश्री ने उन मुनिजनो को प्रायश्चित्त स्वरूप एक-एक उपवास दिया। इस अधूरे कायक्रम के वाद कवि सम्मेलन चला। उत्साही युवक श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट के सचालन मे अनेक कवियो ने अपनी रचनाए पेश की।

उदयपुर प्रवास के दौरान कई परिवार शोक विमुक्ति हेतु आचार्यवर

की पावन सन्निधि मे पहुचे । सूरत के वरिष्ठ श्रावक 'शासन प्रभावक' श्री कुसुमचद भाई जवेरी का पक्षाघात की बीमारी मे स्वर्गवास होने पर उनका परिवार दर्शनार्थ आया। आचार्यश्री के उद्‌गार—"कुसुमचद भाई सूरत के ही नही, पूरे गुजरात तेरापथी समाज के स्तभ थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। सघ प्रभावना के विषय मे उनकी अनूठी सूझबूझ थी। सूरत जाने वाले हर तेरापथी भाई बहिनो ने सदा उनके जीवन व्यवहार मे सार्धमिक वात्सल्य का अनुभव किया। सघ एव सघपति के प्रति उनकी प्रगाढ आस्था थी। सघ-प्रभावक कुसुम भाई ने हमारे सघीय साहित्य को गुजराती विद्वानो तक पहुचाने मे भी श्लाघनीय श्रम किया। अतिम समय मे उनकी धर्मपत्नी श्रीमती बच्चू बहिन और पुत्र शैलेश ने उन्हे अच्छा आध्यात्मिक सहयोग प्रदान किया।"

भगवतगढ निवासी श्री मिश्रीलाल परम भक्त और तपस्वी श्रावक थे। वे वर्षो से एकान्तर तप कर रहे थे। उनके स्वर्गवासी होने से उस क्षेत्र मे एक निष्ठाशील श्रावक की कमी हो गई।

श्रीमती कुन्दनमलजी सेठिया का दिल्ली मे स्वर्गवास हो गया। वह श्री मागीलाल की माता थी। आचार्यवर ने श्रीमती सेठिया को 'दृढ धर्मिणी' के रूप मे सबोधित करते हुए कहा - श्रीमती सेठिया ८५ वर्ष की उम्र मे भी अपने स्वीकृत नियमो मे अत्यन्त दृढ थी। गुरु-दर्शन के लिए वह हर समय लालायित रहती थी। अन्त मे उसने हाथ मे माला लिए जप करती हुई समाधिमृत्यु को प्राप्त किया।

भगवतगढ निवासी श्री नाथूलाल जैन 'जिज्ञासु' का रक्त कैसर मे स्वर्गवास हो गया। आचार्यश्री के उद्‌गार—'नाथूलालजी एक तत्वज्ञ श्रावक थे। स्वामीजी की कृतियो एव जैन दर्शन का उन्होने अच्छा अध्ययन किया था। पारमार्थिक शिक्षण सस्था मे उन्होने जीवन के आखिरी समय तक अध्यापन का कार्य किया। उनके पुत्र श्री महेन्द्र जैन आदि ने उनको अच्छा आध्यात्मिक सहयोग प्रदान किया।'

जसोल निवासी श्री हरखचद बोहरा का हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। वे धार्मिक और आर्थिक दोनो ही दृष्टि से सपन्न व्यक्ति थे। उनके उनके पारिवारिक जनो ने आचार्यवर के दर्शन कर आध्यात्मिक सबल प्राप्त किया।

उदयपुर मे एक प्रवचन सभा मे श्री विष्णुदयाल गोयल तथा श्री

रामकुमार सरावगी को उनकी सेवाओ का उल्लेख करते हुए उन्हे 'सघ सेवी' अलकरण से अलकृत किया ।

तेरापथ महिला मडल, बबई ने अमृत-महोत्सव के सदर्भ मे जनसेवा का एक महान् कार्य मपादित किया । उनके सहयोग से विकलाग व्यक्तियो को नया जीवन मिला है । मडल की पदाधिकारिणी श्रीमती जयश्री बाठिया तथा श्रीमती मीनादेवी सुराणा के साथ कुछ विकलाग व्यक्ति आचायवर के दर्शनार्थ पहुचे ।

आमेट चातुर्मास के बाद उदयपुर मर्यादा महोत्सव तक आचार्यवर, युवाचार्यश्री तथा मुनियो के प्रवचन से पूर्व कुछ चुने हुए गायक मुनियो की स्वर लहरिया जन-जन के मानस को झकझोरने वाली होती थी । मधुर एव सामयिक गीतिकाओ के मुख्य गायक थे—मुनिश्री विजयकुमार, मुनिश्री श्रेयासकुमार, मुनिश्री मोहजीत कुमार, मुनिश्री सुव्रतकुमार, मुनिश्री दिनेश-कुमार आदि । प्रात उपदेश मुनिश्री उदितकुमार, मध्याह्न प्रवचन मुनिश्री विजयकुमार, मुनिश्री कमलकुमार देते थे ।

तेरापथ दिग्दशन वर्ष जोधपुर चातुर्मास की परिसमाप्ति के बाद ८ नवम्बर १९८४ को प्रारभ हुआ था, जो १७ फरवरी १९८६ को समाप्त हो गया । पूव चिंतन के अनुसार आमेट चातुर्मास की समाप्ति के साथ दिग्दर्शन वर्ष समाप्त होना था, पर बाद के निर्णय से मर्यादा-महोत्सव से मर्यादा-महोत्सव का समय दिग्दर्शन के लिए निश्चित हुआ ।

८ नववर १९८४ से १७ फरवरी, १९८६ के मध्य चार सौ सिडसठ दिनो मे विविध महत्त्वपूर्ण कार्य सपन्न हुए । वे कार्य जहा सघीय महत्त्व के थे, वहा सामाजिक व राष्ट्रीय महत्त्व के कार्य भी सफलता के साथ निष्पादित हुए । यह वर्ष अमृत-महोत्सव वष हे । पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व एव कर्तृत्व को यत्किन्चित प्रस्तुति देने हेतु इस समारोह की सकल्पना की गई । आचायवर के पचास वर्षीय सफल एव प्रभावी धम शासना के चद स्फुलिंग जन-जन के लिए प्रेरणादायी बने, इस दृष्टि से युवाचायश्री के निदेशन मे अमृत-महोत्सव को चार चरणो मे मनाने का निणय हुआ । जिसमे तीन चरण सपन्न हो गये । प्रथम चरण गगापुर, द्वितीय आमेट, तृतीय उदयपुर मे मपन्न हुए, तथा चतुर्थ चरण राजसमन्द मे होना हे । इम वप को युवाचार्यश्री ने जीवन-विज्ञान वप घोपित किया है । वहोत्तर वसन्त पार करने के बाद भी आचायश्री मे जो तारुण्य व स्फूर्ति है वह हम मवके लिए अनुकरणीय हे । हमेशा दस-पन्द्रह किलोमीटर

चलना, प्रतिदिन दो-तीन भाषाओ को सबोधित करना स्थानीय जैन, जैनेतर लोगो को बुराइयो से मुक्त करना, श्रद्धालु श्रावको की श्रद्धा मे नया सचार करना आदि इतने काय है, जिन्हे उन्हे हमेशा करना होता है। उनकी दिनचर्या का अधिकाश समय व्यक्ति-व्यक्ति के आत्मिक उत्थान मे लगा रहता है। ऐसे महान् आचाय के महान् कार्यो के प्रति पूरा मानव समाज प्रणत है।

अमृत-कलश पद यात्रा

अमृत-कलश पदयात्रा एक रचनात्मक अभियान है। इससे वर्तमान की बुराइयो को मिटाने का एक नया सकल्प जगा है। आचायश्री तुलसी ने वर्तमान की समस्याओ को समभा है और उन्हे सुलभाने का प्रयत्न किया है। आजकल अधिकतम आयोजनो मे अथ की दृष्टि मुख्य होती है, अमृत कलश की योजना इससे सवथा भिन्न है। 'अमृत कलश' दूसरे शब्दो मे समपण की भावना से प्रेरित 'सकल्प-कलश है। मद्य निपेध, मिलावट-निरोध, दहेज-उन्मूलन, अस्पृश्यता निवारण एव भावात्मक एकता—इन सकल्पो से प्रेरित इस अमृत-कलश पदयात्रा का प्रारभ गगापुर से हुआ। अमृत-महोत्सव के प्रथम चरण पर प्रारभ अमृत-कलश अभियान कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि राजस्थान के मुख्यमत्री श्री हरिदेव जोशी थे।

२९ अप्रैल १९८५ की प्रात कालीन वेला। हाईस्कूल के विशाल अमृत पडाल मे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के सान्निध्य मे अमृत-कलश पदयात्रा अभियान का प्रारभ हुआ। पदयात्रा अभियान की अध्यक्षता श्री मानव मुनि ने की। एक खुली जीप मे अमृत-कलश रखा हुआ था। अमृत-कलश पदयात्रा उद्घाटन मे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री एव साध्वी प्रमुखाश्री पदयात्रियो के साथ करीव सौ कदम से भी अधिक चले।

'अणुव्रत आन्दोलन' के माध्यम से आचार्यश्री ने जीवन भर नैतिक मूल्यो को राष्ट्रव्यापी स्तर पर सुप्रतिष्ठित करने का काय एक अभियान की तरह किया है। अमृत-महोत्सव के महान्तम अवसर पर उसी कार्य को अग्रसर करने के लिए यह यात्रा आयोजित हुई।

युवाचायश्री के दिशादर्शन एव श्री पूर्णचद वडाला के सयोजन मे प्रारम्भ इस पचास दिवसीय पदयात्रा का समापन १७ जून १९८५ को हुआ। सात चरणो मे सपन्न व ५९० कि० मी० की इस यात्रा मे ११९ पदयात्री शामिल हुए, जिनमे १६ समणिया ३२ पदयात्री तथा ७१ सहयात्री थे।

पद-यात्रा का सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

चरण	क्षेत्र	दल सयोजक	सकल्प पत्र
प्रथम	गगापुर से भीलवाडा	श्री पूणचद बडाला	३३५६
द्वितीय	भीलवाडा से आसीन्द	श्री मोहनलाल जैन	४४१८
तृतीय	आसीन्द से देवगढ	श्री पारसमल मेहता	५६१३
चतुर्थ	देवगढ से रीछेड	श्री उग्रसिह मेहता	३२४२
पचम	रीछेड से गोगुन्दा	श्री नरेन्द्रकुमार जैन	१७११
षष्टम	गोगुन्दा से राजसमन्द	श्री मानमल आचलिया	४०९३
सप्तम	राजसमन्द से आमेट	श्री देवेन्द्रकुमार हिरण	२६३४
	अमृत कलश समपण समारोह, आमेट मे समर्पित		१००९३
	सकल्प-पत्रो का योग		३५४६०

इस पदयात्रा मे चार समणियो के दल शामिल थे, जिनका नेतृत्व कर रही थी—समणी कुसुमप्रज्ञा, समणी मधुरप्रज्ञा, समणी परमप्रज्ञा, समणी सुप्रज्ञा। श्री मानमल आचलिया (सरदारशहर) ने, जो वर्षीतप कर रहे हैं, सर्वाधिक छत्तीस दिन इस यात्रा मे साथ रहे। पदयात्रा सयोजक श्री पूणचद बडाला इकतीस दिन, श्री जीतमल जैन (सायरा) इक्कीस दिन तथा श्री चदनमल सिंघवी (पुर) चौदह दिन साथ रहे। अमृत कलश पदयात्रा का स्थान-स्थान पर स्वागत हुआ। कई जगहो पर तोरण द्वार बाधे गये। हजारो लोगो ने अपनी-अपनी बुराइयो को छोडा।

अमृत-कलश समपण समारोह २४ जून को आमेट मे मध्याह्न २ ३० बजे आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री शुभकरण दसाणी ने की तथा प्रमुख अतिथि राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष श्री हीरालाल देवपुरा थे। समारोह के पूव बोइग विमान दुघटना पर हार्दिक सवेदना एव दुख व्यक्त करते हुए सभा ने दिवगत आत्माओ के सम्मान मे दो मिनट मौन रखा। मच पर पदयात्रा के सयोजक, नेता प्रमुख के साथ साधक श्री मानमल आचलिया भी उपस्थित थे। पदयात्रा के सयोजक श्री पूणचद बडाला की अस्वस्थता के कारण उप सयोजक श्री राजेन्द्रकुमार कावडिया ने पदयात्रा का सक्षिप्त विव-रण प्रस्तुत किया। श्री सीताशरण शर्मा एव समणी कुसुमप्रज्ञा ने पदयात्रा के अनुभवो के साथ सभा को सबोधित किया।

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने प्रभावशाली उद्बोधन के साथ

पद-यात्रियो को साधुवाद दिया। आचार्यप्रवर को आठो सयोजको द्वारा ३५,४६० सकल्प-पत्र समर्पित किये गये, जिन्हे स्वीकार करते हुए आचार्यप्रवर ने अमृत-कलश पदयात्रा को रचनात्मक अभियान की सज्ञा दी। पदयात्रा के सभी सयोजको को श्री देवपुरा ने सम्मानपत्र भेंट किये।

अमृत-कलश समर्पण के बाद भी पूरे देश से सकल्प पत्रो का भरना जारी रहा। १७ फरवरी १९८६ तक करीब ८० हजार सकल्प-पत्र भरे जा चुके थे।

अमृत-महोत्सव के सन्दर्भ मे अन्य कई रचनात्मक प्रवृत्तिया प्रारभ हुई। उनका विवरण निम्नोक्त है।

आमेट-तुलसी अमृत विद्यापीठ, अमृत स्तम्भ
राजसमन्द—तुलसी साधना शिखर, अणुव्रत विश्व भारती
गगापुर—कालू कल्याण कुज तुलसी अमृत महाविद्यालय
केलवा—भिक्षु चिकित्सालय
पहुना—अणुव्रत विद्यापीठ, अणुव्रत लोक कला भारती, तुलसी अमृतायन

घर-घर तपः घर-घर जप

आमेट मे अमत-महोत्सव के द्वितीय चरण पर भारत के अनेक छोट-बडे पत्र-पत्रिकाओ मे आचायश्री के व्यक्तित्व एव कर्तृत्व को उजागर करने वाने लेख प्रकाशित हुए वे लोग युवाचार्यश्री, साध्वी प्रमुखाश्री, साधु-साध्वियो, लेखको, साहित्यकारो, पत्रकारो द्वारा लिखे गये।[1] अमृत-महोत्सव प्रसग पर 'घर-घर तप घर-घर जप' की योजना प्रारभ हुई। तप मे आयविल तथा जप मे 'अभीराशिको नम' मत्र निर्णीत था। सतरह महीने चलने वाले इस अमृत-महोत्सव मे हजारो-हजारो लोगो ने आयविल व जप का क्रम प्रारम्भ किया। बहिर्विहारी साधु-साध्वियो के विशेष प्रयत्नो से इस कार्यक्रम को गति मिली। उसका विवरण खण्ड-२ मे यत्र-तत्र मिल सकेगा। गुरुकुलवास मे इस कायक्रम को बढावा देने हेतु मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' तथा मुनिश्री कमलकुमार ने सश्रम प्रयास किया, तभी हजारो श्रावक-श्राविकाओ मे इस अनुष्ठान का व्यवस्थित रूप बन सका। आचाय-अचना मे यह एक महत्त्वपूण कार्यक्रम सावित हुआ ह।

---

१ देखे परिशिष्ट—९

पद-यात्रा का सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

चरण	क्षेत्र	दल सयोजक	सकल्प पत्र
प्रथम	गगापुर से भीलवाडा	श्री पूणचद बडाला	३३५६
द्वितीय	भीलवाडा से आसीन्द	श्री मोहनलाल जैन	४४१८
तृतीय	आसीन्द से देवगढ	श्री पारसमल मेहता	५९१३
चतुर्थ	देवगढ से रीछेड	श्री उग्रसिंह मेहता	३२४२
पचम	रीछेड से गोगुन्दा	श्री नरेन्द्रकुमार जैन	१७११
षष्टम	गोगुन्दा से राजसमन्द	श्री मानमल आचलिया	४०९३
सप्तम	राजसमन्द से आमेट	श्री देवेन्द्रकुमार हिरण	२६३४
	अमृत कलश समर्पण समारोह, आमेट मे समर्पित		१००९३
	सकल्प-पत्रो का योग		३५४६०

इस पदयात्रा मे चार समणियो के दल शामिल थे, जिनका नेतृत्व कर रही थी—समणी कुसुमप्रज्ञा, समणी मधुरप्रज्ञा, समणी परमप्रज्ञा, समणी सुप्रज्ञा। श्री मानमल आचलिया (सरदारशहर) ने, जो वर्षीतप कर रहे है, सर्वाधिक छत्तीस दिन इस यात्रा मे साथ रहे। पदयात्रा सयोजक श्री पूर्णचद बडाला इकतीस दिन, श्री जीतमल जैन(सायरा) इक्कीस दिन तथा श्री चदनमल सिंघवी (पुर) चौदह दिन साथ रहे। अमृत कलश पदयात्रा का स्थान-स्थान पर स्वागत हुआ। कई जगहो पर तोरण द्वार बाधे गये। हजारो लोगो ने अपनी-अपनी बुराइयो को छोडा।

अमृत-कलश समर्पण समारोह २४ जून को आमेट मे मध्याह्न २ ३० बजे आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री शुभकरण दसाणी ने की तथा प्रमुख अतिथि राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष श्री हीरालाल देवपुरा थे। समारोह के पूर्व बोइग विमान दुघटना पर हार्दिक सवेदना एव दुख व्यक्त करते हुए सभा ने दिवगत आत्माओ के सम्मान मे दो मिनट मौन रखा। मच पर पदयात्रा के सयोजक, नेता प्रमुख के साथ साधक श्री मानमल आचलिया भी उपस्थित थे। पदयात्रा के सयोजक श्री पूणचद बडाला की अस्वस्थता के कारण उप सयोजक श्री राजेन्द्रकुमार कावडिया ने पदयात्रा का सक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। श्री सीताशरण शर्मा एव समणी कुसुमप्रज्ञा ने पदयात्रा के अनुभवो के साथ सभा को सबोधित किया।

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने प्रभावशाली उद्बोधन के साथ

पद-यात्रियो को साधुवाद दिया । आचार्यप्रवर को आठो सयोजको द्वारा ३५,४६० सकल्प-पत्र समर्पित किये गये, जिन्हे स्वीकार करते हुए आचार्यप्रवर ने अमृत-कलश पदयात्रा को रचनात्मक अभियान की सज्ञा दी । पदयात्रा के सभी सयोजको को श्री देवपुरा ने सम्मानपत्र भेट किये ।

अमृत-कलश समपण के बाद भी पूरे देश से मकल्प पत्रो का भरना जारी रहा । १७ फरवरी १९८६ तक करीव ८० हजार मकल्प-पत्र भरे जा चुके थे ।

अमृत-महोत्सव के सन्दर्भ मे अन्य कई रचनात्मक प्रवृत्तिया प्रारभ हुई । उनका विवरण निम्नोक्त हे ।

आमेट-तुलसी अमृत विद्यापीठ, अमृत स्तम्भ

राजसमन्द—तुलसी साधना शिखर, अणुव्रत विश्व भारती

गगापुर—कालू कल्याण कुज तुलसी अमृत महाविद्यालय

केलवा—भिक्षु चिकित्सालय

पहुना—अणुव्रत विद्यापीठ, अणुव्रत लोक कला भारती, तुलसी अमृतायन

घर-घर तप: घर-घर जप

आमेट मे अमृत-महोत्सव के द्वितीय चरण पर भारत के अनेक छोटे-बडे पत्र-पत्रिकाओ मे आचायश्री के व्यक्तित्व एव कर्तृत्व को उजागर करने वाले लेख प्रकाशित हुए वे लोग युवाचार्यश्री, साध्वी प्रमुखाश्री, साधु-साध्वियो, लेखको, साहित्यकारो, पत्रकारो द्वारा लिखे गये ।[1] अमृत-महोत्सव प्रसग पर 'घर-घर तप घर-घर जप' की योजना प्रारभ हुई । तप मे आयविल तथा जप मे 'अभीराशिको नम' मत्र निर्णीत था । सतरह महीने चलने वाले इस अमृत-महोत्सव मे हजारो-हजारो लोगो ने आयविल व जप का क्रम प्रारम्भ किया । बहिर्विहारी साधु-साध्वियो के विशेप प्रयत्नो से इस कार्यक्रम को गति मिली । उसका विवरण खण्ड-२ मे यत्र-तत्र मिल सकेगा । गुरुकुलवास मे इस कायक्रम को बढावा देने हेतु मुनिश्री मोहनलाल 'आमेट' तथा मुनिश्री कमलकुमार ने सश्रम प्रयास किया, तभी हजारो श्रावक-श्राविकाओ मे इस अनुष्ठान का व्यवस्थित रूप बन सका । आचाय-अचना मे यह एक महत्त्वपूण कार्यक्रम सावित हुआ है ।

---

१ देखें परिशिष्ट—९

तत्त्वज्ञान

अमृत-महोत्सव वर्ष मे यह चितन चला कि चतुर्विध धर्म-सघ मे तात्विक ज्ञान के प्रति अभिरुचि कैसे जागृत हो, कैसे विकास हो ? इस दृष्टि से पाच थोकडे कण्ठस्थ करने का एक उपक्रम प्रारभ हुआ। आमेट चातुर्मास मे केन्द्र से साधु-साध्वियो को नामोल्लेख पूवक इगित किया गया था। उस इगित के अनुरूप अनेक साधु-साध्वियो ने सोत्साह, सलक्ष्य उन थोकडो को याद किया और आचाय-अभिवन्दना मे अपने श्रद्धा सुमन चढाये। इसी तरह श्रावक-श्राविकओ मे भी इस उपक्रम को प्रचारित किया गया। साधु-साध्वियो के विशेष प्रयास से अनेक स्थानो पर इस दिशा मे महत्त्वपूर्ण कार्य सपादित हुआ। तेरापथ की जनसख्या के आधार पर अधिक थोकडे कण्ठस्थ करने वाले प्रथम, द्वितीय, तृतीय, क्षेत्र को पुरस्कृत करने का आमेट चातुर्मास व्यवस्था समिति ने निर्णय लिया। जिसमे प्रथम बोरावड, द्वितीय बाव तथा तृतीय मोमासर रहा। सैकडो-सैकडो छात्र-छात्राओ तथा युवक-युवतियो ने परिश्रम कर थोकडो को कण्ठस्थ करने का स्तुत्य प्रयास किया हे व कर रहे है।

अमृत-महोत्सव वर्ष मे आचार्यश्री दो महत्त्वपूण पुरस्कारो से सम्मानित हुए। पहला 'भारत-ज्योति' अलकरण, जो राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर द्वारा १४ फरवरी, १९८६ उदयपुर मे महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के हाथो प्रदान किया गया। दूसरा राजाजी मच, जयपुर द्वारा 'राजाजी रत्न' अलकरण दिया गया। प्रतिवर्ष यह मच कला, पत्रकारिता, सगीत, नैतिकता आदि विभिन्न ग्यारह क्षेत्रो मे विशिष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियो को इस अलकरण से अलकृत करता है। पजाब-समस्या के शान्तिपूर्ण समाधान मे आचार्यवर की महत्त्वपूण भूमिका के लिए यह अलकरण दिया गया।

अमृत-महोत्सव की समायोजना, आचायश्री के कायक्रमो की अवगति, विविध मुखी प्रवृत्तियो से परिचित कराने हेतु आचायश्री तुलसी अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति का गठन हुआ। श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट डॉ० महेन्द्रकुमार कर्णावट इस सस्था के जन्म के साथ जुडे हुए है। उनकी सूझबूझ एव सक्रियता से आचायश्री के जीवन एव उनकी प्रवृत्तियो से सबधित अनेको फोल्डर तथा छोटी-छोटी पुस्तिकाए प्रकाशित हुई।[1]

---

१ देखे परिशिष्ट—१०

अमृत-महोत्सव वर्ष के चुनिन्दा महत्त्वपूर्ण पत्र

पूज्यपाद श्रद्धेय आचार्यप्रवर,

सादर साष्टाग प्रणाम ।

मेरे शरीर की हालत ठीक नही है । अत इस पत्र द्वारा मन से ही श्री चरणो मे उपस्थित हो रहा हू । डॉ० देव कोठारी विगत अज करेंगे ।

आपके अमृत-महोत्सव पर राजस्थान विद्यापीठ कुल, उदयपुर आप श्रीमद् को 'भारत ज्योति' सबोधन से पुकारना चाहता है । नवीन भारत के आध्यात्मिक तथा सामाजिक नव-नवोन्मेप तथा उत्थान के लिये 'अणुव्रत' सुदर्शन ही नहीं, शक्ति, सयम तथा सौन्दर्य प्रदान करवाने वाला शिक्षात्मक आन्दोलन और प्रवृत्ति है । महात्मा गाधीजी और महर्षि दयानन्दजी के पश्चात् आप श्रीमद् ने ही अणुव्रत द्वारा भारत ही नही, विश्व मानव को शान्ति, सयम तथा आत्म-ज्योति प्राप्त करने का मत्र दिया है ।

सौभाग्य से आप श्रीमद् का अमृत-महोत्सव राजस्थान विद्यापीठ कुल की स्वर्ण-जयन्ति के ही वर्ष मे पडा है । अत सोना और सुगन्ध स्वरूप इस ऐतिहासिक अवसर पर हम सब आपको 'भारत-ज्योति' के सर्वोच्च सबोधन से पुकारेगे । 'भारत-ज्योति' सबोधन से हमने श्रीमान् डॉ० दौलतसिंहजी कोठारी तथा श्रीमती इन्दिराजी को (मरणोपरान्त) पुकारा है ।

कृपया आशीर्वाद सहित स्वीकृति प्रदान करे ताकि हम उसकी तैयारी मे अभी से लगे । प्रभावशाली 'आचार्य तुलसी भारत-ज्योति सबोधन समिति' आपश्री की स्वीकृति प्राप्त होते ही गठित कर अखिल भारतीय स्तर पर कार्य आरम्भ किया जायेगा । श्रीमान् देवेन्द्र कर्णावटजी को हमारा योग करने के लिये आज्ञा प्रदान करे ।

श्रीचरणो का विनीत
(जनार्दन राय नागर)
सस्थापक उपकुलपति
राजस्थान विद्यापीठ
उदयपुर

पूज्य आचार्यश्रीजी,

सादर वन्दन ।

आशा एवम् पूर्ण विश्वास है कि आप धर्म परिवार सहित सुखसाता

मानता हू।

आपकी षष्टिपूर्ति मनाई जा रही है, यह समाज के लिए प्रेरणा बनेगी। इस वर्ष आचार्यश्री तुलसी आचार्यत्व काल के ५० वर्ष सपन्न कर रहे है। पूरी जैन परपरा मे इतने दीर्घकाल तक आचाय पद पर आसीन आचार्य विरल ही हुए है।

आचार्यप्रवर ने अध्यात्म के क्षेत्र मे अनेक नए आयाम उद्घाटित किए है। आध्यात्मिक अनुशासन के ५० वर्ष की सपन्नता के अवसर पर अध्यात्म के अग्रणी पुरुषो द्वारा आचायश्री का अभिनन्दन किया जाए, ऐसी योजना बनी है। इस काय मे मैं आपका योगदान चाहता हू। परोक्षत समर्थन तो प्राप्त है ही, माघ शुक्ला सप्तमी के आस-पास (फरवरी ८६) उदयपुर मे मैं आपकी साक्षात् उपस्थिति चाहता हू। मै आपको स्मरण दिलाना चाहता हू—मर्यादा महोत्सव के अवसर पर एक बार आपका मिलन चाहिए, यह चर्चा चली थी और आपने ऐसा चाहा भी था, इससे बढिया अवसर और कब मिलेगा ?

मेरा विश्वास है आप अपना भावी कायक्रम इस स्थिति को ध्यान मे रखकर बनाएगे। हम प्रतीक्षा करेंगे उदयपुर मे फिर एक बार सौहार्दपूर्ण सम्मिलन की।

समदडी —**युवाचार्य महाप्रज्ञ**

८ फरवरी, ८५

युवाचार्य महाप्रज्ञजी,

आपका समदडी से प्रेषित ८ फरवरी ८६ का पत्र यथासमय मिल गया था, किंतु विहार मे होने के कारण तुरन्त ऐसा कोई सुयोग नही बना कि आपके इस महत्वपूर्ण पत्र का उत्तर दे पाता।

मैंने देखा कि विगत आधी शताब्दी मे तेरापथ ने अपने साधु-साध्वियो के माध्यम से एक काफी सशक्त/स्वस्थ/सुखद भूमिका सरचित की है। सस्कृति, राष्ट्र, सदाचार, चिन्तन मे गतिशीलता ध्यान और योग के क्षेत्र मे नये क्षितिजो का उद्घाटन आदि कुछ ऐसी जीवन्त उपलब्धिया है, जिनके लिए आचार्यश्री तुलसीजी को भुलाया नही जा सकेगा। सामाजिक और नैतिक क्रान्ति का जो बीजारोपण उन्होने किया है, यदि उसे पूरी अप्रमत्तता के साथ सीचा-पोसा गया तो समाज, राष्ट्र का अपूर्व कायाकल्प सभव है। साहित्य-प्रकाशन के क्षेत्र मे भी आचायश्री तुलसीजी के साधु परिकर ने कुछ नये

आयाम उन्मुक्त किये है। आगम-प्रकाशन तथा कोश-सपादन-जैसे दु साध्य कार्यों को, अपनी दैनदिन आध्यात्मिक साधना पर अविचल रहकर करना, कराना सचमुच एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। मुझे विश्वास है स्वाध्याय और प्रकाशन की यह अनुकरणीय/प्रशस्त परपरा तेरापथ मे अविच्छिन्न बनी रहेगी।

यह गौरव-गरिमा का विषय है कि आचार्यश्री तुलसीजी अपने जयवत आचार्यत्व की अर्द्धशती सपन्न कर रहे है। मैने उन्हे सदैव एक पराक्रमी, साहसी, तेजोमय, उदारचेता, असकीर्ण साधु मनीषी के रूप मे देखा है। वस्तुत जो परपराए उन्होने प्रवर्तित की है तथा उनके इस प्रवर्तन मे से जो नव नूतन सदर्भ प्रकट हुए है, वे निखिल मानवता के लिए हितकारी है। मै महत्व के इन क्षणो मे उनका अभिनन्दन करता हू और साधुवाद देता हू।

इन्दौर मे गोम्मटगिरि जैन तीर्थ जिस तरह विकसित हो रहा है वह हम सबके लिए/जैनमात्र के लिए गौरव का विषय है। मै इसे विश्वधर्म के वैश्विक केन्द्र के रूप मे परमोत्कर्ष देना चाहता हू। इन्दौर और उदयपुर की दूरी काफी है अत आचार्यश्री तुलसी जी के इस अध्यात्म पर्व के महत्क्षणो मे मेरा वहा पहुच पाना सभव नही है तथापि मुझे आशा है कि ये क्षण सबके लिए मगलमय सिद्ध होगे और उनका आचार्यत्व दिनो-दिन यशस्वी होगा। और इस समारोह मे से अहिंसा एव व्यसनमुक्त जीवन के लिए एक ऐसी उद्दीप्त/रचनात्मक ज्योति जन्म लेगी, जिसके फलस्वरूप प्राणीमात्र के कल्याण के लिए आशा की कोई उज्ज्वल किरण सामने आयेगी। वैसे उन-जैसे साधुओ के जीवन का तो एक-एक पल ही महोत्सव है, क्योकि वे पल-पल पग-पग प्राणिमात्र के कल्याण के निमित्त कटिबद्ध है और कामना कर रहे है कि सब सुखी हो, निरापद, निर्विघ्न और मगलमय हो।

—ऐलाचार्य विद्यानन्द मुनि
गोम्मटगिरि, इन्दौर (म० प्र०)

आलोच्य वर्ष मे महाप्रज्ञ

सघ का विकास तब ही अबाध रूप से चल सकता है, जब युवा साधु-साध्विया हर क्षेत्र मे निष्णात बने। जब तक विद्या, कला, साधना आदि मे साधु-साध्विया रुचि नही लेते, उन आयामो को अपनी प्रगति का आधार नही मानते, उन क्षेत्रो मे विशिष्टता प्राप्त करने के लिए अपनी सपूर्ण शक्ति का नियोजन नही कर पाते तब तक हमे धर्म सघ के उज्ज्वल भविष्य का स्पष्ट आश्वासन नही मिलता। युवा साधु-साध्विया धर्मसघ की रीढ है। उन्हे तैयार करना धर्मसघ के निश्चिन्त और देदीप्यमान भविष्य का निर्माण करना है। यह दायित्व सहज रूप से युवाचार्यश्री के कधो पर आ जाता है। उन्होने इस महान् कार्य को प्राथमिकता दी। युवाचार्यश्री ने सघीय सपदा को निरन्तर बढाते रहने के अपने इस दायित्व को बखूबी निभाया है।

अध्यापन

आलोच्य वर्ष मे युवाचार्यश्री ने साधु-साध्वी समाज के बौद्धिक विकास के लिए कुछ सार्थक प्रयत्न किए है। मर्यादा महोत्सव जसोल से युवाचार्यश्री ने अपनी पाठशाला के विद्यार्थियो को तर्क और न्याय के प्राचीनतम ग्रथ सन्मतितर्क को प्राचीन और अद्यतन सदर्भो मे पढाया। जैन-योग और पातजल योग दर्शन का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन भी उसके साथ कुछ महीनो तक व्यवस्थित रूप-से चला।

भगवती सूत्र

अक्षय तृतीया के पावन प्रसग पर प्रस्तुत अध्यनन क्रम मे एक नया मोड आया। आचार्यश्री के सान्निध्य मे जैन परपरा के प्रसिद्ध आगम भगवती का वाचन शुरु हुआ। वाचन के साथ-साथ पाठसशोधन, अनुवाद, टिप्पण लेखन कार्य भी अपनी गति से चलता रहा। इस विशाल आगम के गहनतम रहस्य सवादशैली मे गुथे हुए है। स्पष्टीकरण, समीक्षा, जिज्ञासा-समाधान तथा आधुनिक वैज्ञानिक सदर्भ आदि अनेक प्रकार से उन रहस्यो का प्रतिदिन स्पर्श, उन्हे सुलझाने, परत-दर-परत अनावृत करने मे सफल सिद्ध हुआ। गूढतम तात्विक और दार्शनिक तथ्यो की सरस, सरल और युगीन शैली मे प्रस्तुति महाप्रज्ञ की प्रज्ञा का अकथ्य अवदान कहा जा सकता है।

साध्वियो की सुप्त प्रतिभा को झकझोरा। उन्होने जैसे-तैसे अपनी समग्र शक्ति जुटाकर इस कार्यक्रम मे भाग लिया। युवाचार्यश्री द्वारा प्रदत्त विषय, सुझाव और मार्ग-दर्शन के आधार पर साधु-साध्विया अपने-अपने शोध पत्र को पूरा करने के लिए जुट पडे। पन्द्रह-बीस दिन तक अनवरत श्रम और शक्ति को नियोजित कर साधु-साध्वियो ने अपने-अपने शोध पत्रो को एक कच्चा रूप दे दिया। युवाचार्यश्री ने अपने अत्यन्त व्यस्त क्षण उन्हे अतिम रूप देने मे लगाए। परिणामस्वरूप साधु-साध्वियो ने जैन विद्या परिषद् मे अपने-अपने शोध पत्रो को अच्छे ढग से प्रस्तुत किया। जैन विद्या परिषद् या किसी भी शोध सगोष्ठी मे इतने युवा साधु-साध्वियो के शरीक होने और शोध पत्र पढने का यह प्रथम अवसर कहा जा सकता है और इसका सारा श्रेय आचार्यश्री के आशीर्वाद तथा युवाचार्यश्री की आतरिक प्रेरणा और सकल्प को जाता है।

अध्ययन के इस समग्र क्रम मे युवा साधु-साध्वियो को शरीक होने का अवसर मिला। यह उनके भावी विकास मे, उनकी दृष्टि को पैनी और सर्वतोमुखी बनाने मे सक्षम कदम सिद्ध हुआ है। मुनिश्री राजेन्द्र कुमार, मुनिश्री उदितकुमार, मुनिश्री मुदितकुमार, मुनिश्री धनजयकुमार, मुनिश्री प्रशातकुमार, साध्वीश्री जिनप्रभा, साध्वी कल्पलता, साध्वीश्री अशोकश्री, साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञा, साध्वीश्री विमलप्रज्ञा, साध्वीश्री निर्वाणश्री, साध्वीश्री वर्धमानश्री, साध्वीश्री मधुस्मिता, समणी नियोजिका स्मितप्रज्ञा आदि साधु-साध्वियो, समणियो को अध्ययन के इस कल्याणकारी-क्रम से लाभान्वित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

स सपादन

आचायश्री तुलसी ने आगम-सपादन का जो गुरुतर कार्य अपने समर्पित एव प्रबुद्ध साधु-साध्वियो के बलबूते पर झेला था, उसे मूर्तरूप देने मे युवाचार्य श्री की अह भूमिका सदा रही है। इस वर्ष भी वह महत्त्वपूर्ण कार्य अपनी गति से चला है। युवाचार्यश्री ने सूत्रकृताग सूत्र के द्वितीय खड के सपादन, अनुवाद, प्राक्कथन, टिप्पण लेखन, आमुख आदि कार्य को प्राथमिकता देकर उन्हे अतिम रूप दिया। मुनिश्री दुलहराज का इस काय मे अनवरत सपूण सहयोग युवाचार्यश्री को सहज रूप से प्राप्त रहा है जिसे पा यह सूत्र प्रकाशन के योग्य बन पाया है।

आगम साहित्य की अनवरत साधना, आराधना मे आचाराग भाष्य का लेखन भी आलोच्य वर्ष की एक महत्त्वपूण उपलब्धि है। आयारो के पाच

भगवती की इस वाचना मे आचार्य तुलसी की प्रासगिक टिप्पणियो, भगवती जोड का सराग-सगान एव साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा की उपस्थिति का भी स्वयभू मूल्य रहा है।

अध्ययन की इस शृखला मे युवाचायश्री ने उत्तराध्ययन के उनतीसवे अध्ययन को भी सम्मिलित किया। यह अध्ययन साधना की दृष्टि से कितना महत्वपूण है, कितने गहन तत्त्व इसमे समाए हुए है इस दृष्टि से यदि इस अध्ययन का विस्तृत और समग्र रूप से विवेचन किया जाए तो एक स्वतत्र ग्रथ बन सकता है। वैज्ञानिक दृष्टि से आज के सदर्भो मे इस अध्ययन की मूल्यवत्ता का बोध पा साधु-साध्वी समाज एक नई दृष्टि और आलोक से सपन्न बन गया।

शोध पत्र

अध्यापक का काम केवल इतना ही नही होता कि वह विद्यार्थियो को पाठ पढा दे, उसका अर्थ समझा दे उसका काय तव पूर्ण कहलाता है, जब विद्यार्थी उस पाठ के भीतर आवद्ध रहस्यो को समझ पाए। अध्यापक का यह दायित्व उसके अध्यापन की महत्वपूण कसौटी होती है। युवाचार्यश्री ने अपने विद्यार्थियो की ग्रहण-क्षमता को वढाने, परखने के लिए भी कुछ उपक्रम किए।

अध्ययन का एक चेप्टर (विभाग) पूर्ण होने पर अध्ययनरत सभी साधु-साध्वियो को युवाचायश्री एक निश्चित विपय देते। साधु-साध्विया उस विपय पर आचार्यश्री के सान्निध्य मे भापण देत। कौन विषय को कितना छू पाया है? किसने विपय का समग्रता से विवेचन किया हे? आदि-आदि मानदडो से प्रत्येक विद्यार्थी के भापण की समीक्षा की जाती हे। वह विपय का कैसे प्रतिपादन करता तो ज्यादा अच्छा रहता। उसने कहा, क्या त्रुटि की या नही की? आदि से उसके गृहीत ज्ञान को परिभापित और परिष्कृत करते। युवाचार्यश्री कभी-कभी मौखिक परीक्षा से भी विद्यार्थियो की बुद्धि और ग्रहण क्षमता को पैनी वनाते।

अध्ययन के इस क्रम को प्रभावी वनाने और विद्यार्थी साधु-साध्वियो के भीतरविद्यमान साहस, क्षमता और शक्ति को जगाने का एक और सशक्त कदम था भगवती सूत्र के आधार पर शोध-पत्र का लेखन। जैन विद्या परिपद् द्वारा आयोजित विद्वत् परिपद् मे प्रवुद्ध जैन विद्वानो ने अपने-अपने शोध पत्र पढे। आचायश्री की प्रेरणा और युवाचार्यश्री के निदेशन से विद्यार्थी साधु-

साध्वियो की सुप्त प्रतिभा को झकझोरा। उन्होने जैसे-तैसे अपनी समग्र शक्ति जुटाकर इस कार्यक्रम मे भाग लिया। युवाचार्यश्री द्वारा प्रदत्त विषय, सुझाव और मार्ग-दर्शन के आधार पर साधु-साध्विया अपने-अपने शोध पत्र को पूरा करने के लिए जुट पडे। पन्द्रह-बीस दिन तक अनवरत श्रम और शक्ति को नियोजित कर साधु-साध्वियो ने अपने-अपने शोध पत्रो को एक कच्चा रूप दे दिया। युवाचार्यश्री ने अपने अत्यन्त व्यस्त क्षण उन्हे अतिम रूप देने मे लगाए। परिणामस्वरूप साधु-साध्वियो ने जैन विद्या परिषद् मे अपने-अपने शोध पत्रो को अच्छे ढग से प्रस्तुत किया। जैन विद्या परिषद् या किसी भी शोध सगोष्ठी मे इतने युवा साधु-साध्वियो के शरीक होने और शोध पत्र पढने का यह प्रथम अवसर कहा जा सकता है और इसका सारा श्रेय आचार्यश्री के आशीर्वाद तथा युवाचार्यश्री की आतरिक प्रेरणा और सकल्प को जाता है।

अध्ययन के इस समग्र क्रम मे युवा साधु-साध्वियो को शरीक होने का अवसर मिला। यह उनके भावी विकास मे, उनकी दृष्टि को पैनी और सर्वतोमुखी बनाने मे सक्षम कदम सिद्ध हुआ है। मुनिश्री राजेन्द्र कुमार, मुनिश्री उदितकुमार, मुनिश्री मुदितकुमार, मुनिश्री धनजयकुमार, मुनिश्री प्रशातकुमार, साध्वीश्री जिनप्रभा, साध्वी कल्पलता, साध्वीश्री अशोकश्री, साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञा, साध्वीश्री विमलप्रज्ञा, साध्वीश्री निर्वाणश्री, साध्वीश्री वधमानश्री, साध्वीश्री मधुस्मिता, समणी नियोजिका स्मितप्रज्ञा आदि साधु-साध्वियो, समणियो को अध्ययन के इस कल्याणकारी-क्रम से लाभान्वित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आगम सपादन

आचार्यश्री तुलसी ने आगम-सपादन का जो गुरुतर कार्य अपने समर्पित एव प्रबुद्ध साधु-साध्वियो के बलबूते पर झेला था, उसे मूतरूप देने मे युवाचार्य श्री की अह भूमिका सदा रही है। इस वर्ष भी वह महत्त्वपूण कार्य अपनी गति मे चला है। युवाचार्यश्री ने सूत्रकृताग सूत्र के द्वितीय खड के सपादन, अनुवाद, प्राक्कथन, टिप्पण लेखन, आमुख आदि कार्य को प्राथमिकता देकर उन्हे अतिम रूप दिया। मुनिश्री दुलहराज का इस कार्य मे अनवरत सपूण सहयोग युवाचार्यश्री को सहज रूप से प्राप्त रहा है जिसे पा यह सूत्र प्रकाशन के योग्य बन पाया है।

आगम साहित्य की अनवरत साधना, आराधना मे आचाराग भाष्य का लेखन भी आलोच्य वर्ष की एक महत्त्वपूण उपलब्धि है। आयारो के पाञ्च

न कोई आधार होता है, न भविष्य होता है। तेरापन्थ के साहित्य से उसका आधार और भविष्य सुदृढ बना है, आलोकित बना है। युवाचार्य महाप्रज्ञ की साहित्यिक साधना ने तेरापथ साहित्य के क्षेत्र मे कुछ कीर्तिमान गढे है। मौलिक एव युगीन साहित्य का सर्जन उनकी अप्रतिम मेधा से सभव हुआ है।

आलोच्य वर्ष मे कुछ नयी साहित्यिक कृतिया—अर्हम्, कर्मवाद, उत्तरदायी कौन, प्रेक्षा-ध्यान कायोत्सर्ग, प्रेक्षा-ध्यान चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा आदि जनता के हाथो मे पहुची है। मैं हू अपने भाग्य का निर्माता, आभामडल, मैं कुछ होना चाहता हू, भिक्षु-विचार दर्शन, जीवन-विज्ञान, कैसे सोचे, एकला चलो रे, एसो पचणमुक्कारो, महावीर की साधना का रहस्य, मैं मेरा मन मेरी शान्ति आदि अनेक पुस्तको के नवीन सस्करण भी प्रकाश मे आए है।

प्रस्तुत वर्ष मे युवाचार्यश्री के साहित्य पर अनेक विद्वानो ने अपनी सम्मतिया भेजी है। अनेक पत्र-पत्रिकाओ ने उनके साहित्य का मूल्याकन किया है। उदाहरण के रूप मे हम यहा दैनिक नवभारत के इन्दौर सस्करण मे छपी एक पुस्तक की समीक्षा उद्धृत करना चाहते है।

समीक्ष्य पुस्तक है—मेरी दृष्टि मेरी सृष्टि

समीक्षक है—रत्नेश 'कुसुमाकर'

आत्मार्थियो का दीपक—मेरी दृष्टि : मेरी सृष्टि

जैन जगत् मे युवाचार्य महाप्रज्ञ का नाम बहुश्रुत है। उस बहुश्रुतता के पीछे उनकी साधना का तेजोवलय, उनके तप की चन्द्रिका, उनका क्रान्त और विज्ञानपरक चिन्तन तथा उनकी दार्शनिकता की बुलन्दगी प्रमुख है। जैनियो की तेरापथ शाखा के वह एक अलौकिक पुष्प है, जिनके सौरभ ससार मे मनुष्य को देवत्व की ओर आगे बढाने और उसका आमूल रूपान्तरण कर देने की ऊर्जा छिपी हुई है। तेरापथ के वर्तमान आचार्य और अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी ने उन्हे अपने उत्तराधिकारी के रूप मे मनोनीत किया है। उन्होने युवाचार्य महाप्रज्ञ की गुणवत्ता और प्रभामडल को एक रत्नपारखी की दृष्टि से देखा-परखा है। यही कारण है कि आज जैन श्वेताम्बर को आत्मोदय की एक ओर उन्मुख और अनुप्रेरित करने का एक गहन गभीर दायित्व महाप्रज्ञ के ज्योतिर्मय कन्धो पर है। इस दृष्टि से युवाचार्य महाप्रज्ञ की प्रत्येक कृति आत्मदेव के साक्षात्कार को सुलभ बनाने का एक ऐसा माध्यम है, जिसके बिना जीवन की मगल यात्रा कभी पूर्ण नही हो सकती।

मेरे समक्ष उनकी अमूल्य कृति 'मेरी दृष्टि मेरी मृष्टि' उपस्थित हे, जिसके अन्तराल मे बैठने का मुझे अलभ्य अवसर प्राप्त हुआ। लेकिन इसके लिए एक शर्त है, पाठक को, जिज्ञासु या अभिप्सु को सवप्रथम पूर्वाग्रहो से मुक्त होना होगा। इसके विना वे इस कृति को न आत्मसात् कर पाएगे और न ही इसके अन्तर्निहित तथ्यो, प्रभावो और इसकी वैज्ञानिक, आध्यात्मिक सपदा से अवगत हो सकेगे।

युवाचाय ने अपनी इस कृति के महद् उद्देश्य का उद्घाटन करते हुए कहा—'मेरी दृष्टि है—हम अपने निर्मल चैतन्य को देखने का प्रयत्न करे, उसमे जो प्रतिविंव होगा, वह वास्तविक होगा। लेकिन साथ ही वह यह भी कहते है कि जिसे देखना चाहिए, वहा दृष्टि नही जाती। जिसे देखना चाहिए, वहा देखने का प्रयत्न होता है। यह कैसा विपर्यय ! काच मे मनुष्य अपने-आपको ही देखता हे। कव किसने काच की निमलता को देखा ? इस लिहाज से जिसे वास्तव मे हमे देखना है, वहा तक दृष्टि-प्रसार कैसे हो, हम वही देखना चाहते है, जो कि हमारा अभीष्ट है। लेकिन उस तक नजर नही जाती, यह भौतिक धरातल पर एक ऐसी विवशता है, जो कि आत्म-साक्षात्कार के माग मे एक वडी वाधा वन जाती हे। निमल चैतन्य को देखना है, किंतु दृष्टि धूमिल या कहरिल हे तो वास्तविक देखना कैसे सभव होगा—एक कठिन पहेली ह। इसके लिए 'महाभारत' के मजय की दृष्टि चाहिए या अर्जुन की दृष्टि, जिसने जगदीश्वर के विराट स्वरूप को देखा था। युवाचाय ने जीवन और जगत् से साक्षात्कार करने के लिए उसी दिव्य दृष्टि का एक अमोघ फार्मूला प्रस्तुत किया ह। यह वह फार्मूला हे जो व्यक्ति, साधक, जिज्ञासु या अभीप्सा करने वाले तथ्यान्वेपी की सहायता करता ह।

जहा तक सजन या दृष्टि का मवध है, वतौर युवाचाय, सर्जन का मूलमत्र है—मतत जलते रहना, कभी नही वुझना। यह ह—अप्रमाद का सूत्र तुम कभी मत वूझो, निरन्तर जलते रहे वही सृष्टि प्रिय हो सकती है जो नए-नए उन्मेप पैदा कर सके, उन्हे मभाल सके, उनका सरक्षण और पोपण कर सके। इसके अलावा महाप्रज्ञ ने सृष्टि का आदि और चरमविन्दु आत्मा माना है। उन्होने आत्मोपलब्धि होने तक पुरुपार्थ करते रहने पर पूरा वल दिया है। पुरुपार्थ विरहित होने का अर्थ उन्होने मर्जन का चुक जाना माना है—इसी निकप पर इस कृति का मूल्याकन मम्भव हुआ है।

महाप्रज्ञ की यह कृति वहुआयामी है। सैतीस शीर्पको मे इसका

निवन्धन हुआ हे। जिनमे युवाचाय ने समुद्र-मथन का देवोपम पुरुपाथ किया है। परपरित तरीको से हटकर दार्शनिक और आध्यात्मिक पीठिका पर महाप्रज्ञ का जो नवोन्मेप हुआ है, वह एक अनूठी उपलव्धि हे।

समीक्ष्य पुस्तक एक गभीर ग्रथ है। इसमे दर-पर्त-दर उघाड कर उन्होने जिन तत्त्वो/तथ्यो का साक्षात्कार किया हे, वह सब पाठको के लिए ज्यो का त्यो परोस दिया गया है। अतल स्पर्शी है। विज्ञानसम्मत हे। उनमे रूढि, आग्रह और आडम्बर नही—यह सब चिन्तन उनकी इस कृति मे प्रतिफलित हुआ है। पुस्तक आत्मार्थियो के लिए एक ऐसा दीपक ह, जिसकी वाती पूर्वाग्रहो, तर्को-कुतर्को और मत-वैभिन्य की आधियो मे भी निष्कप वने रहने की क्षमता से सपन्न/समृद्ध है।

प्रेक्षा-ध्यान

प्रत्येक व्यक्ति धर्मसघ मे आत्म कल्याण के उद्देश्य से दीक्षित होता है। दीक्षा के माध्यम से वह अपने इस लक्ष्य को शीघ्र पा सकता हे। दीक्षा यानि साधना। साधना के क्षेत्र मे बिना मार्गदर्शन गति हो पाना कठिन हे। साधना शून्य जीवन मात्र वेशधारी साधुत्व को बढावा देता हे। साधु के भीतर सावुता जगाने मे उसे अपनी आन्तरिक शक्तियो का अहसास कराना होता है, उसके लिए सावना के क्षेत्र मे गति आवश्यक होती हे। युवाचार्यश्री ने प्रेक्षा-ध्यान को सघ के प्रत्येक साधु-साध्वी तक पहुचाने का अनथक प्रयत्न किया है। साधुता का पेरामीटर हे चरित्र। साधना का यह उपक्रम चारित्रिक निष्ठा को बनाये रखने एव वढाने से महत्त्वपूर्ण साबित हुआ है।

बीता हुआ यह वप इस दृष्टि से भी कुछ अमिट रेखाए खीचने मे सफल रहा हे। तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा आयोजित होने वाले सार्वजनिक शिविरो के अतिरिक्त मुमुक्षु वहिनो, अध्यापको, प्रशिक्षको तथा साधु-साध्वियो के शिविरो ने कुछ नई आशाओ को जन्म दिया है। पारमार्थिक शिक्षण सस्था के शिविर से मुमुक्षु वहिनो को एक नई दिशा मिली है, वोध मिला हे, अपने भविष्य को सुखद और जागृत वनाने का मार्ग मिला है। साधु-साध्वियो के एकातवास शिविर का अभिनव प्रयोग भी उनकी तेजस्विता और अध्यात्म निष्ठा को वढाने मे उपयोगी बना है।

जसोल मर्यादा महोत्सव से लेकर उदयपुर तक युवाचार्यश्री से अनेक साधु-साध्वियो ने सम्पर्क किया है, अपनी कठिनाइयो, उलझनो का जिक्र किया

है, शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक समस्याओ को एक बच्चे की भाति सरलता से रखा है। युवाचार्यश्री ने उन साधु-साध्वियो को प्रेक्षा-अनुप्रेक्षा के अनेक प्रयोग बतलाए है, उनकी समस्याओ के समाधान के मार्ग सुझाये है, एकातवास के विशिष्ट प्रयोग के दौरान भी अनेक साधु-साध्वियो ने अपनी जटिल आदतो को मिटाने के लिए युवाचार्यश्री का मार्गदर्शन प्राप्त किया। साधु-साध्वियो ने श्रद्धा के साथ उन प्रयोगो को अपना कर अपनी समस्याओ, उलझनो को काफी अशो मे सुलझाया है।

जीवन-विज्ञान

प्रेक्षाध्यान से सबद्ध एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है जीवन-विज्ञान। अमृत-महोत्सव के इस वर्ष को जीवन-विज्ञान वर्ष घोषित किया गया। शिक्षा के क्षेत्र मे क्रातिकारी कदम के रूप मे जीवन-विज्ञान चर्चित हुआ है। अनेक सम्मेलन और सगोष्ठियो के माध्यम से जीवन-विज्ञान ने जन चेतना और राजस्थान सरकार को प्रभावित किया। इस वर्ष के अन्त तक यह उपक्रम व्यापक रूप से चर्चित हुआ है। इसकी उपयोगिता मूल्यवत्ता और प्रयोग-धर्मिता पद्धति ने भारतीय समाज का ध्यान अपनी ओर खीचा है। जीवन-विज्ञान से प्राप्त परिणामो से सम्पूर्ण शिक्षा जगत् मे तहलका-सा मचा दिया है। शिक्षा के सन्दर्भ मे आज उस कार्यक्रम को उपयोगी और ग्राह्य माना जाता है जिससे ३३ प्रतिशत सफलता हासिल हो जाए। जीवन-विज्ञान ने ५० से ६० प्रतिशत पोजिटिव (विधायक) परिणाम को प्राप्त कर शिक्षा क्षेत्र के नियताओ को हतप्रभ-सा कर दिया है। शिक्षा-मत्रालय, शैक्षिक सगठनो आदि से सम्बन्ध विद्वानो को जीवन-विज्ञान मे एक नये दर्शन, सत्य का आभास हुआ है। वे जीवन-विज्ञान प्रणाली को शिक्षा के क्षेत्र मे लागू कराने के लिए कृतसकल्प बने है। अनेक शिक्षा शास्त्रियो, उद्भट्ट मनीपियो, शिक्षको का जीवन-विज्ञान के साथ जुडना उसे प्रभावी और सफल बनाने मे योग भूत बनना आलोच्य वर्ष की उल्लेखनीय उपलब्धि बन गई है।

महत्त्वपूर्ण घटना

जीवन-विज्ञान का महान् वातावरण निर्मित करने के लिए आलोच्य वर्ष मे कुछ सार्थक प्रयत्न हुए हैं। अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के अधि-वेशन पर नई शिक्षा नीति और जीवन-विज्ञान पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य और युवाचार्यश्री के निदेशन मे

हुए इस कार्यक्रम मे गुजरात युनिवर्सिटी के उपकुलपति श्री चिनुभाई नाईक, श्री यशवत भाई शुक्ल, जोधपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष दयानन्द भार्गव आदि ने विशेष रूप से हिस्सा लिया। उस परिचर्चा के सयोजक भागलपुर युनिवर्सिटी के प्रोफेसर, गाधीवादी विचारक डा० रामजीसिंह ने चर्चा के निष्कर्षो से एक अनुशसा तैयार की। जिसे भारत सरकार, राजस्थान सरकार तथा अनेक शिक्षा शास्त्रियो के विचारार्थ प्रेषित किया गया।

६ नवबर को पचायती राज विभाग राजस्थान सरकार द्वारा 'अनौपचारिक शिक्षा और जीवन-विज्ञान' पर आयोजित सेमिनार का आशातीत सफल होना भी आलोच्य वर्ष की एक महत्त्वपूर्ण घटना है, इस सेमिनार मे पचायत राज मत्री श्री रामपाल उपाध्याय राज्यमत्री महेन्द्र परमार, प्रमुख शिक्षाविद् कालूलाल श्रीमाली, शिक्षा उपसचिव श्री तेजकरण, विधायिका गिरिजा व्यास, मेवाड मडलेश्वर महत श्री मुरली मनोहरशरण आदि अनेक विशिष्ट व्यक्तियो ने आचार्यश्री तुलसी, युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रस्तुत जीवन-विज्ञान को एक सशक्त, रचनात्मक और अपूर्व अभिक्रम के रूप मे स्वीकार किया।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का पन्द्रहवा राष्ट्रीय सम्मेलन, उदयपुर (राजस्थान) मे आयोजित हुआ। इस त्रिदिवसीय सगोष्ठी मे दूसरा दिन जीवन-विज्ञान की परिचर्चा के लिए निर्धारित था। ७ फरवरी को पूरे देश से आए हुए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के चेयरमेनो एव सचिवो की मीटिंग मे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री का वक्तव्य हुआ। नई शिक्षा नीति के सदर्भ मे जीवन-विज्ञान की उपयोगिता पर युवाचार्यश्री के विचार सुनने के बाद अनेक प्रान्तो के शिक्षा बोर्डो के अध्यक्षो, सचिवो ने जीवन-विज्ञान से सबधित सामग्री की माग की। उन्होने कहा—'शिक्षा नीति पर ऐसे प्रभावी और इस प्रकार के विचार सर्वप्रथम सुनने को मिले है।'

१२-१३ फरवरी उदयपुर मे ही राजस्थान विद्यापीठ एव अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति द्वारा जीवन-विज्ञान शिक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया। शिक्षा मत्री हीरालाल देवपुरा द्वारा उद्घाटित इस सम्मेलन के पाच सत्रो मे अनेक विद्वानो द्वारा जीवन-विज्ञान पर शोध पत्र पढे गए। जीवन-विज्ञान के उद्देश्य, कार्यक्रम आदि समस्त पक्षो पर युवाचार्यश्री के विचार मुख्य रूप से सामने आए।

जीवन-विज्ञान वर्तमान स्थिति

राजस्थान सरकार द्वारा चयनित २७ स्कूलो मे सम्प्रति जीवन-विज्ञान

है, शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक समस्याओ को एक बच्चे की भाति सरलता से रखा है। युवाचार्यश्री ने उन साधु-साध्वियो को प्रेक्षा-अनुप्रेक्षा के अनेक प्रयोग बतलाए है, उनकी समस्याओ के समाधान के मार्ग सुझाये हैं, एकातवास के विशिष्ट प्रयोग के दौरान भी अनेक साधु-साध्वियो ने अपनी जटिल आदतो को मिटाने के लिए युवाचार्यश्री का मार्गदर्शन प्राप्त किया। साधु-साध्वियो ने श्रद्धा के साथ उन प्रयोगो को अपना कर अपनी समस्याओ, उलझनो को काफी अशो मे सुलझाया है।

जीवन-विज्ञान

प्रेक्षाध्यान से सबद्ध एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है जीवन-विज्ञान। अमृत-महोत्सव के इस वर्ष को जीवन-विज्ञान वर्ष घोषित किया गया। शिक्षा के क्षेत्र मे क्रातिकारी कदम के रूप मे जीवन-विज्ञान चर्चित हुआ है। अनेक सम्मेलन और सगोष्ठियो के माध्यम से जीवन-विज्ञान ने जन चेतना और राजस्थान सरकार को प्रभावित किया। इस वर्ष के अन्त तक यह उपक्रम व्यापक रूप से चर्चित हुआ है। इसकी उपयोगिता मूल्यवत्ता और प्रयोग-धर्मिता पद्धति ने भारतीय समाज का ध्यान अपनी ओर खीचा है। जीवन-विज्ञान से प्राप्त परिणामो से सम्पूर्ण शिक्षा जगत् मे तहलका-सा मचा दिया है। शिक्षा के सन्दर्भ मे आज उस कार्यक्रम को उपयोगी और ग्राह्य माना जाता है जिससे ३३ प्रतिशत सफलता हासिल हो जाए। जीवन-विज्ञान ने ५० से ६० प्रतिशत पोजिटिव (विधायक) परिणाम को प्राप्त कर शिक्षा क्षेत्र के नियताओ को हतप्रभ-सा कर दिया है। शिक्षा-मत्रालय, शैक्षिक सगठनो आदि से सम्बन्ध विद्वानो को जीवन-विज्ञान मे एक नये दर्शन, सत्य का आभास हुआ है। वे जीवन-विज्ञान प्रणाली को शिक्षा के क्षेत्र मे लागू कराने के लिए कृतसकल्प बने ह। अनेक शिक्षा शास्त्रियो, उद्भट्ट मनीषियो, शिक्षको का जीवन-विज्ञान के साथ जुडना उसे प्रभावी और सफल बनाने मे योग भूत बनना आलोच्य वर्ष की उल्लेखनीय उपलब्धि बन गई ह।

महत्त्वपूर्ण घटना

जीवन-विज्ञान का महान् वातावरण निर्मित करने के लिए आलोच्य वर्ष मे कुछ सार्थक प्रयत्न हुए हैं। अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के अधि-वेशन पर नई शिक्षा नीति और जीवन-विज्ञान पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य और युवाचार्यश्री के निदेशन मे

हुए इस कार्यक्रम मे गुजरात युनिवर्सिटी के उपकुलपति श्री चिनुभाई नाईक, श्री यशवत भाई शुक्ल, जोधपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष दयानन्द भार्गव आदि ने विशेष रूप से हिस्सा लिया। उस परिचर्चा के सयोजक भागलपुर युनिवर्सिटी के प्रोफेसर, गाधीवादी विचारक डा० रामजीसिह ने चर्चा के निष्कर्षों से एक अनुशसा तैयार की। जिसे भारत सरकार, राजस्थान सरकार तथा अनेक शिक्षा शास्त्रियो के विचारार्थ प्रेषित किया गया।

६ नवबर को पचायती राज विभाग राजस्थान सरकार द्वारा 'अनौपचारिक शिक्षा और जीवन-विज्ञान' पर आयोजित सेमिनार का आशातीत सफल होना भी आलोच्य वर्ष की एक महत्त्वपूर्ण घटना है, इस सेमिनार मे पचायत राज मत्री श्री रामपाल उपाध्याय राज्यमत्री महेन्द्र परमार, प्रमुख शिक्षाविद् कालूलाल श्रीमाली, शिक्षा उपसचिव श्री तेजकरण, विधायिका गिरिजा व्यास, मेवाड मडलेश्वर महत श्री मुरली मनोहरशरण आदि अनेक विशिष्ट व्यक्तियो ने आचार्यश्री तुलसी, युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रस्तुत जीवन-विज्ञान को एक सशक्त, रचनात्मक और अपूर्व अभिक्रम के रूप मे स्वीकार किया।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का पन्द्रहवा राष्ट्रीय सम्मेलन, उदयपुर (राजस्थान) मे आयोजित हुआ। इस त्रिदिवसीय सगोष्ठी मे दूसरा दिन जीवन-विज्ञान की परिचर्चा के लिए निर्धारित था। ७ फरवरी को पूरे देश से आए हुए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के चेयरमेनो एव सचिवो की मीटिंग मे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री का वक्तव्य हुआ। नई शिक्षा नीति के सदर्भ मे जीवन-विज्ञान की उपयोगिता पर युवाचार्यश्री के विचार सुनने के बाद अनेक प्रान्तो के शिक्षा बोर्डों के अध्यक्षो, सचिवो ने जीवन-विज्ञान से सबधित सामग्री की माग की। उन्होने कहा—'शिक्षा नीति पर ऐसे प्रभावी और इस प्रकार के विचार सर्वप्रथम सुनने को मिले है।'

१२-१३ फरवरी उदयपुर मे ही राजस्थान विद्यापीठ एव अमृत-महोत्सव राष्ट्रीय समिति द्वारा जीवन-विज्ञान शिक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया। शिक्षा मत्री हीरालाल देवपुरा द्वारा उद्घाटित इस सम्मेलन के पाच सत्रो मे अनेक विद्वानो द्वारा जीवन-विज्ञान पर शोध पत्र पढे गए। जीवन-विज्ञान के उद्देश्य, कार्यक्रम आदि समस्त पक्षो पर युवाचार्यश्री के विचार सुन्दर रूप से सामने आए।

जीवन-विज्ञान : वर्तमान स्थिति

राजस्थान सरकार द्वारा चयनित २७ स्कूलो मे [illegible] जीवन-विज्ञान

का क्रम चल रहा है। राजस्थान शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण सस्थान उदयपुर एव तुलसी अध्यात्म नीडम् जैन विश्व भारती के सयुक्त तत्वावधान मे इस कार्य की व्यवस्था तथा गति-प्रगति का जायजा निरतर लिया जा रहा है। इन दोनो सस्थाओ द्वारा इस कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए अध्यापको के दो शिविरो का आयोजन भी किया। आचायश्री के सान्निध्य तथा युवाचार्यश्री के निदेशन मे लगे इन शिविरो मे प्रत्येक विद्यालय से दो-दो अध्यापको ने भाग लिया। इन शिविरो मे प्रशिक्षित अध्यापक अपनी-अपनी स्कूल मे चुने गए विद्यार्थियो मे जीवन-विज्ञान के प्रयोग चला रहे ह। विद्यार्थी मे होने वाले प्रभावो, परिणामो की रिपोट भी प्रतिमास दे रहे हैं। इन स्कूलो मे जीवन-विज्ञान कार्यक्रम लगभग आठ महीनो से चल रहा है। इन आठ महीनो के दरम्यान युवाचार्यश्री का कुछेक विद्यालयो मे सहज रूप से पदापण हुआ। उदयपुर, भीण्डर, वल्लभनगर राजसमद आदि क्षेत्रो के बच्चो ने जीवन-विज्ञान के प्रयोगो से होने वाले अनुभवो का जिक्र किया।

जीवन-विज्ञान का प्रभाव

युवाचायश्री से वार्तालाप के अनन्तर विद्यार्थियो ने कहा—हमे यह कायक्रम थोपा हुआ जैसा नही लग रहा है। जीवन-विज्ञान के प्रयोग हमे बहुत ही अच्छे लगते हे।' कुछ विद्यार्थियो ने कहा—'हमारी विस्मृति की आदत कम हुई है। हमारा क्रोध कम हुआ है तनाव नही रहता ह पटने मे मन पहले से ज्यादा लगता है, एकाग्रता पहले से ज्यादा बटी है।' आदि-आदि।

कुछ उग्र प्रकृति के विद्यार्थियो के अभिभावको ने अध्यापको से कहा—मास्टर साहब ! क्या बात है ? पहले हमारे बच्चे घर आते थे उससे पूर्व पाच-सात शिकायते पहुच जाती थी, आजकल एक भी नही आती, आपने उन पर क्या जादू कर दिया है?' अध्यापको का सविस्मय उत्तर था—यह सब जीवन-विज्ञान का प्रभाव है।

विद्यार्थी अभिभावक के बाद अध्यापको की प्रतिक्रिया कुछ इस प्रकार रही। उन्होने कहा—'जीवन-विज्ञान के प्रयोग मे बच्चे कितना क्या भला कर पाएगे ? हम नही कह सकते किंतु इन प्रयोगो से हमे जो राहत मिली ह शान्ति का अनुभव हुआ है वह रोमाचक ह। इन प्रयोगो से गुजरने के बाद हमे हमारा परिवार, हमारा स्वास्थ्य, हमारी आदते सब कुछ बदला-बदला सा नजर आ रहा ह, हमे विश्वास है कि हमारा भविष्य निश्चित ही शान्ति और आनन्द

से भरा-पूरा होगा ।'

महाप्रज्ञ का अवदान

विद्यार्थी, अध्यापक, अभिभावक इस त्रिकोण को सतुष्ट एव प्रभावित कराने वाला यह उपक्रम युवाचार्यश्री की एक महत्त्वपूर्ण देन बनकर उभरा है। आचार्यश्री तुलसी के शासनकाल के पचासवे वर्ष की इस अनुपम उपलब्धि का मूल्याकन अभी शेष है। बुद्धिजीवियो, वकीलो, डॉक्टरो, वैज्ञानिको एव नास्तिको की आस्था को प्राप्त करने वाला यह उपक्रम युग के लिए वरदान बना है। अनेक असहाय, दु खी, तनावग्रस्त व्यक्तियो को सुखद नियति का सृजन करने वाला यह सजीवन तेरापथ की धरोहर-थाती बन गया है। महाप्रज्ञ का यह अवदान महाप्रज्ञ का नही समूचे सघ का है। महाप्रज्ञ की प्रज्ञा से नि सृत यह अमृत न केवल सघ के लिए अपितु सपूर्ण मानवजाति के लिए है। इसकी रक्षा, वृद्धि एव विकास मे अपने कर्तृत्व को समर्पित करना अपने ही भविष्य को सुरक्षित, विकासी और आनन्ददायी बनाना है।

अमृत-महोत्सव

आचार्यश्री तुलसी ने अपने शासनकाल के पचासवे वर्ष को अमृत-महोत्सव के रूप मे मनाने की स्वीकृति इस शर्त पर प्रदान की थी कि मुझे निमित्त बनाकर मनाया जाने वाला उत्सव आयोजन प्रधान नही होकर, रचनात्मक होगा। युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के नेतृत्व मे चतुर्विध धर्मसघ अपने आचार्य के इगित को पूरा करने के लिए तत्पर बना। अमृत महोत्सव कहा मनाया जाए ? कैसे मनाया जाए, उसमे क्या-क्या कार्यक्रम होने चाहिए ? आदि का सारा भार युवाचार्यश्री के कन्धो पर था, जिसका उन्होने कुशलता-पूर्वक निवहन किया है।

आचार्यश्री तुलसी की तिलकभूमि गगापुर मे मुख्यमत्री हरिदेव जोशी की उपस्थिति मे उद्घाटित अमृत महोत्सव का प्रारभ अमृत कलश पद यात्रा से हुआ। इस रचनात्मक अभिक्रम के तहत हजारो सकल्प पत्र भरे गए। दहेज, मिलावट, अस्पृश्यता, मद्यपान आदि के खिलाफ जन-चेतना जागृत हुई है। साम्प्रदायिक सौहार्द का सशक्त वातावरण बना है। स्वस्थ समाज रचना की दृष्टि से इसे महत्त्वपूर्ण उपक्रम कहा जा सकता है।

रचनात्मक अभिक्रम

आचार्यश्री तुलसी के सार्वजनिक, सघीय अभिनन्दन समारोह का

पृथक् रहना पडा है। युवाचार्यश्री की आचार्यश्री से पृथक् यात्राओ का सक्षिप्त लेखा-जोखा यहा प्रस्तुत किया जा रहा है—

देवगढ—आसीद

अमृत-महोत्सव का ऐतिहासिक अवसर उपलब्ध हुआ है मेवाड की पावन भूमि को। तिलकभूमि के नाते निश्चय ही इसका उसे अधिकार भी है। आचार्यवर अपने गौरवशाली शासनकाल के पचासवे वर्ष मे प्रवेश करने जा रहे है। ज्यो-ज्यो महोत्सव की समीपता आ रही थी, सभी मे कार्य की सक्रियता और उत्कण्ठा बढती जा रही थी, इसलिए युवाचार्यवर कुछ विशेष कार्यों को सम्पादित करने हेतु कुछ समय के लिए देवगढ रहे। साहित्य का काम जितनी सुगमता से एक स्थान पर हो सकता है, उतना यात्रा मे नही होता। युवाचार्यश्री ने मुख्य रूप से आचार्यवर की जीवनी लिखने का काय अपने हाथो मे लिया है। इस जीवनी के दो रूप है—एक सक्षिप्त तो दूसरा विस्तृत। इस प्रवास मे उनकी लेखनी द्वारा सक्षिप्त रूप ही लिखा गया है।

इस प्रवास काल मे युवाचायश्री का प्रात कालीन समय ज्ञान की आराधना मे बीतता, दोपहर का पठन-पाठन तथा जिज्ञासाओ के समाधान मे तथा रात्रि का जनता के लिए नए-नए विषय तथा आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत प्रवचन देवगढ की जनता, विशेषकर बौद्धिक वग के लिए आकर्षण के केन्द्र थे। इस प्रवास के दौरान प्रात कालीन प्रवचन मुनिश्री सुमेरमल 'सुदशन', प्रेक्षा अभ्यास मुनिश्री किशनलाल तथा ज्ञानशाला का कार्य मुनिश्री धर्मेन्द्रकुमार ने सभाला। २० माच को मुनिश्री श्रीचद द्वारा प्रस्तुत अवधान विद्या के प्रयोग बडे ही प्रभावोत्पादक रहे। स्वय देवगढ के राव साहव श्री नाहरसिंह ने इसमे विशेष दिलचस्पी ली। प्रतिदिन युवाचायश्री के रात्रि मे निम्न विषयो पर सावजनिक प्रवचन हुए।

दिनाक	विषय	विषय प्रवेश
१५ माच	हम क्या जीते है ?	मुनि सुखलालजी
१६ माच	मानसिक तनाव कारण और निवारण	मुनि लोकप्रकाशजी
१७ माच	भारतीय सस्कृति के मूल तत्त्व	मुनि धनजयजी
१८ माच	वतमान युग मे शिक्षा	मुनि सुखलालजी
		मुनि किशनलालजी
१९ माच	गीता और जैन धम	मुनि किशनलालजी

पृथक् रहना पडा है। युवाचार्यश्री की आचार्यश्री से पृथक् यात्राओ का सक्षिप्त लेखा-जोखा यहा प्रस्तुत किया जा रहा है—

देवगढ—आसींद

अमृत-महोत्सव का ऐतिहासिक अवसर उपलब्ध हुआ है मेवाड की पावन भूमि को। तिलकभूमि के नाते निश्चय ही इसका उसे अधिकार भी है। आचार्यवर अपने गौरवशाली शासनकाल के पचासवे वर्ष मे प्रवेश करने जा रहे है। ज्यो-ज्यो महोत्सव की समीपता आ रही थी, सभी मे कार्य की सक्रियता और उत्कण्ठा वढती जा रही थी, इसलिए युवाचायवर कुछ विशेष कार्यो को सम्पादित करने हेतु कुछ समय के लिए देवगढ रहे। साहित्य का काम जितनी सुगमता से एक स्थान पर हो सकता है, उतना यात्रा मे नही होता। युवाचार्यश्री ने मुख्य रूप से आचायवर की जीवनी लिखने का कार्य अपने हाथो मे लिया है। इस जीवनी के दो रूप है—एक सक्षिप्त तो दूसरा विस्तृत। इस प्रवास मे उनकी लेखनी द्वारा सक्षिप्त रूप ही लिखा गया है।

इस प्रवास काल मे युवाचायश्री का प्रातकालीन समय ज्ञान की आराधना मे बीतता, दोपहर का पठन-पाठन तथा जिज्ञासाओ के समाधान मे तथा रात्रि का जनता के लिए नए-नए विषय तथा आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत प्रवचन देवगढ की जनता, विशेषकर बौद्धिक वग के लिए आकषण के केन्द्र थे। इस प्रवास के दौरान प्रातकालीन प्रवचन मुनिश्री सुमेरमल 'सुदर्शन', प्रेक्षा अभ्यास मुनिश्री किशनलाल तथा ज्ञानशाला का काय मुनिश्री धर्मेन्द्रकुमार ने सभाला। २० मार्च को मुनिश्री श्रीचद द्वारा प्रस्तुत अवधान विद्या के प्रयोग वडे ही प्रभावोत्पादक रहे। स्वय देवगढ के राव साहब श्री नाहरसिंह ने इसमे विशेष दिलचस्पी ली। प्रतिदिन युवाचायश्री के रात्रि मे निम्न विषयो पर सावजनिक प्रवचन हुए।

दिनाक	विषय	विषय प्रवेश
१५ माच	हम क्या जीते हैं ?	मुनि सुखलालजी
१६ माच	मानसिक तनाव कारण और निवारण	मुनि लोकप्रकाशजी
१७ माच	भारतीय सस्कृति के मूल तत्व	मुनि धनजयजी
१८ मार्च	वतमान युग मे शिक्षा	मुनि सुखलालजी मुनि किशनलालजी
१६ मार्च	गीता और जैन धर्म	मुनि किशनलालजी

आयोजन भी प्रशस्तिपूर्ण नहीं था किन्तु उससे भी कुछ रचनात्मक अभिक्रमों ने जन्म लिया। तप आराधना की दृष्टि से तपस्याएं, आयंबिल आदि का व्यवस्थित एव दीर्घकालीन उपक्रम, श्रुत आराधना की दृष्टि से जैन विद्या परिषद् की समायोजना, तत्वज्ञान के विकास का प्रयत्न, चारित्राराधना की दृष्टि से साधु-साध्वियों का नवाह्निक शिविर, आदत परिवर्तन की दृष्टि से प्रेक्षाध्यान के प्रति सघन आस्था को जन्म देना ये सारे उपक्रम अमृत-महोत्सव की रचनात्मक उपलब्धियां बन पाई है।

संघीय दृष्टि से श्रावक सम्मेलन का आयोजन भी एक क्रांतिकारी कदम सिद्ध हुआ है। जैन धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों में सौहार्द, सांवत्सरिक एकता एव एक मंच के निर्माण की प्राग्-भूमिका बनाने में जैन समन्वय सम्मेलन का महत्त्व भी असंदिग्ध है। विश्वशान्ति की दृष्टि से शान्ति यात्रा, अहिंसा सार्वभौम, अणुशस्त्रों के विरुद्ध हस्ताक्षर अभियान भी अमृत-महोत्सव के रचनात्मक रूप को उभारने में बहुत उपयोगी सिद्ध हुए है।

आचार्य तुलसी के बहुमुखी व्यक्तित्व को निखारने में आचार्य तुलसी जीवन दर्शन प्रदर्शनी एव उनके कर्तृत्व को अभिव्यक्ति देने में राष्ट्रपति जैलसिंह द्वारा भारत ज्योति का अलंकरण भी उनके प्रति मानव समाज की मात्र श्रद्धाभिव्यंजना है।

आचार्यश्री तुलसी अमृत-महोत्सव के प्रथम, द्वितीय, एव तृतीय चरण का प्रभावी ढंग से संपन्न हो जाना युवाचार्यश्री की सूझबूझ का निदर्शन है, आचार्य तुलसी की मानवीय, संघीय सेवाओं का सामयिक मूल्यांकन है।

पृथक् यात्राएं

आचार्यश्री महान् परिव्राजक है। उन्होंने यात्रा के संदर्भ में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। यात्रा का मुख्य उद्देश्य होता है स्वीकृत व्रत का सम्यक् पालन। स्व-कल्याण और जन-कल्याण दोनों ही दृष्टियों से प्रत्येक साधु परिव्रजन करता है। आचार्यश्री की प्रस्तुत यात्रा का मुख्य उद्देश्य मेवाड़ में व्याप्त बुराइयों के प्रति जन-चेतना जागृत करना और मेवाड़ में रहने वाले जैन परिवारों का सम्यक् मार्गदर्शन करना रहा है। मेवाड़ के २०० ग्रामों में तेरापथ को मानने वाले परिवार रहते है। उन्हें इतने स्वल्प समय में संभालना एक दुष्कर कार्य था। इस कार्य को सहज बनाने के लिए आचार्यश्री ने अनेक ऐसे क्षेत्रों में युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ को भेजा, जहां उनका जाना संभव नहीं हो पाया। युवाचार्यश्री को साहित्य एव साधना की दृष्टि से भी आचार्यवर से

पृथक् रहना पडा है। युवाचार्यश्री की आचार्यश्री से पृथक् यात्राओ का सक्षिप्त लेखा-जोखा यहा प्रस्तुत किया जा रहा है—

देवगढ—आसीद

अमृत-महोत्सव का ऐतिहासिक अवमर उपलब्ध हुआ है मेवाड की पावन भूमि को। तिलकभूमि के नाते निश्चय ही इसका उसे अधिकार भी है। आचार्यवर अपने गौरवशाली शासनकाल के पचासवे वप मे प्रवेश करने जा रहे है। ज्यो-ज्यो महोत्सव की समीपता आ रही थी, सभी मे कार्य की सक्रियता और उत्कण्ठा वढती जा रही थी, इसलिए युवाचार्यवर कुछ विशेष कार्यो को सम्पादित करने हेतु कुछ समय के लिए देवगढ रहे। साहित्य का काम जितनी सुगमता से एक स्थान पर हो सकता है, उतना यात्रा मे नही होता। युवाचार्यश्री ने मुख्य रूप से आचार्यवर की जीवनी लिखने का काय अपने हाथो मे लिया है। इस जीवनी के दो रूप है—एक सक्षिप्त तो दूसरा विस्तृत। इस प्रवास मे उनकी लेखनी द्वारा सक्षिप्त रूप ही लिखा गया है।

इस प्रवास काल मे युवाचायश्री का प्रात कालीन समय ज्ञान की आराधना मे बीतता, दोपहर का पठन-पाठन तथा जिज्ञासाओ के समाधान मे तथा रात्रि का जनता के लिए नए-नए विषय तथा आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत प्रवचन देवगढ की जनता, विशेपकर बौद्धिक वग के लिए आकषण के केन्द्र थे। इस प्रवास के दौरान प्रात कालीन प्रवचन मुनिश्री सुमेरमल 'सुदर्शन', प्रेक्षा अभ्यास मुनिश्री किशनलाल तथा ज्ञानशाला का काय मुनिश्री धर्मेन्द्रकुमार ने सभाला। २० माच को मुनिश्री श्रीचद द्वारा प्रस्तुत अवधान विद्या के प्रयोग वडे ही प्रभावोत्पादक रहे। स्वय देवगढ के राव साहव श्री नाहरसिह ने इसमे विशेप दिलचस्पी ली। प्रतिदिन युवाचायश्री के रात्रि मे निम्न विपयो पर सावजनिक प्रवचन हुए।

दिनाक	विषय	विषय प्रवेश
१५ माच	हम क्या जीते है ?	मुनि सुखलालजी
१६ माच	मानसिक तनाव कारण और निवारण	मुनि लोकप्रकाशजी
१७ माच	भारतीय सस्कृति के मूल तत्त्व	मुनि धनजयजी
१८ माच	वर्तमान युग मे शिक्षा	मुनि सुखलालजी
		मुनि किशनलालजी
१६ मार्च	गीता और जैन धम	मुनि किशनलालजी

२० माच धम और विज्ञान मुनि लोकप्रकाशजी
२१ मार्च वतमान समाज और राष्ट्रीय चरित्र मुनि राजेन्द्रकुमारजी

देवगढ के नवदिवसीय लाभकारी प्रवास पूर्ण कर २३ को युवाचार्यश्री ने भीम के लिए प्रस्थान किया। नाल, कूकरखेडा आदि का स्पर्श करते हुए २६ मार्च को भीम पधार गये। भीम मे दो दिन रुकने का कार्यक्रम था, पर आचार्यवर की अस्वस्थता (घुटनो मे दर्द) और विशेप निर्देश के कारण वैसा सभव न हो सका। जो पथ, आचायवर का पहले से निर्धारित था, उस पथ से युवाचाय की यात्रा का कार्यक्रम वन गया। जो पथ, युवाचायश्री के लिए निर्धारित था, उस पथ से आचायश्री प्रस्थित हो गये। युवाचार्यश्री के पूर्व मार्ग के वदले जाने तथा परिवर्तित माग से जाने से पचास किलोमीटर का अतिरिक्त चक्कर पडा। भीम से मागवर्ती ग्रामो मे विहार करते हुए २८ को वदनोर पधार गये।

प्राचीन एव ऐतिहासिक वदनोर क्षेत्र मे युवाचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया गया। स्वागत कायक्रम का सयोजन श्री पारसमल राका ने किया। युवाचार्यश्री का दिनभर का प्रवास उच्च माध्यमिक कन्या पाठशाला मे रहा। दिनभर लोगो का ताता सा लगा रहा। मध्याह्न मे अध्यापक-अध्यापिकाओ के वीच जीवन-विज्ञान के सवध मे चर्चा चली। सभी ने इस विषय मे समुचित जानकारी प्राप्त की। रात्रि मे जीवन-विज्ञान के प्रयोग और उसके सैद्धान्तिक पक्ष पर विस्तार से चर्चा की गई। २९ मार्च को युवाचार्य-वर का विहार शभुगढ की ओर हो गया। माग मे कुछ समय के लिए जेतगढ और दुलहपुरा रुकते हुए लगभग ग्यारह वजे शभूगढ पधार गये। रात्रि मे युवाचायश्री का विशेप प्रवचन हुआ, जिसमे धम के विविध आयामो पर विस्तृत चर्चा की गई। ३० माच को जयनगर और जगपुरा का स्पर्श करते हुए युवाचायश्री पडासली पधार गये। स्थानीय जनता ने उपासना और धर्म प्रवचनो का पूरा-पूरा लाभ लिया।

३१ मार्च का दिन ऐतिहासिक दिन था। वाईस वर्प पूव आचायश्री आसीन्द पधारे थे, किन्तु उस समय मुनि नथमल युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ नही थे। आज आचार्यश्री के साथ युवाचार्यश्री को पाकर आसीद की धरती पुन एक नए इतिहास का सजन कर रही थी। आज युवाचार्यश्री छह किलोमीटर का विहार कर ज्यो ही मजिल के समीप आए, तो देखा आचार्यश्री, युवा-चार्यश्री के सामने आ रहे हैं। कितना मनमोहक था वह दृश्य गुरु और शिष्य

के सम्मिलन का। दोनो महापुरुषो के इस भरत-मिलाप को हजारो नर-नारियो ने देखा। आचार्यश्री ने युवाचार्यश्री की पीठ थपथपाते हुए उन्हे अपनी छाती से लगा लिया और एक मधुर मुस्कान भरते हुए आने वाले सभी को तरोताजा बना दिया। अपने वात्सल्य को उडेलते हुए आचार्यवर ने कहा—महाप्रज्ञ! तुम महा यात्रा कर आए। युवाचार्यश्री की इस अघोषित प्रभावी, सक्षिप्त यात्रा से मार्गवर्ती लोगो को प्रेक्षा-ध्यान, अणुव्रत के बारे मे सम्यक् अवगति मिली। युवाचार्यश्री के सारगर्भित प्रवचनो से मार्गवर्ती गावो के लोग केवल प्रभावित ही नही हुए अपितु उनके भीतर श्रद्धा एव आस्था का भाव भी अकुरित हुआ।

लावासरदारगढ—रेलमगरा

युवाचार्यश्री, आचार्यश्री से पृथक् विहार कर दिनाक ३० ११ ८५ को बणोल पहुचे। वहा पर तेरापथी समाज के अतिरिक्त स्थानीय सरपच आदि सभ्रान्त नागरिको ने युवाचार्यश्री का स्वागत किया। रात्रि मे 'कैसे बदले' विषय पर युवाचार्यश्री प्रवचन हुआ।

१ दिसम्बर/युवाचार्यश्री सुबह तासोल और शाम को भाणा पहुचे। दोनो ही ग्राम के नागरिक युवाचार्यश्री के अल्प प्रवास से लाभान्वित हुए।

२ दिसबर को युवाचार्यश्री आचार्य भिक्षु बोधि-स्थल मे पधारे। श्री धर्मेश मादरेचा ने सपत्नीक ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार कर युवाचार्यश्री का स्वागत किया। राजनगर के नागरिको की ओर से डा० मधुसुदन पाण्ड्या ने युवाचार्य श्री का स्वागत किया। कन्या मण्डल, महिला मण्डल, युवक परिषद् आदि सस्थाओ ने भी कार्यक्रम मे अपने विचार व्यक्त किए। रात्रि को युवाचार्यश्री का प्रेक्षाध्यान पर विशेष प्रवचन हुआ। कार्यक्रम का सयोजन श्री सागरमल कावडिया ने किया।

युवाचार्यश्री स्थानीय जनता के आग्रह पर अगले दिन भी राजनगर मे ही विराजे। रात्रि मे कार्यक्रम से पूर्व बाल-साधुओ की एक गोष्ठी आयोजित की। बाल साधु अपने जीवन-स्तर को किस प्रकार प्रभावी और उन्नत बनाए। इनके लिए युवाचार्यश्री ने कुछ महत्त्वपूर्ण शिक्षाए दी। उसी समय वक्तृत्व कला के विकास के लिए बाल-साधुओ को प्रेरित करते हुए युवाचार्यश्री ने कुछ साधुओ को वक्तव्य, सगीत आदि मे गति करने का निर्देश दिया। रात्रि मे मुनि श्री किशनलाल, मुनिश्री राजेन्द्र कुमार, मुनिश्री धर्मेन्द्र कुमार,

मुनिश्री धनजयकुमार, मुनिश्री लोकप्रकाश, ने युवाचार्यश्री द्वारा प्रदत्त विषय पर अपने-अपने विचार रखे। मुनिश्री विनाद कुमार, मुनिश्री ऋषभकुमार ने मगीत प्रस्तुत किया। सप्तर्षि के कायक्रम के पश्चात् युवाचार्यश्री का "धर्म क्यो जरूरी" विषय पर प्रवचन हुआ।

४ दिसबर को प्रात राजनगर से विहार कर युवाचार्य ने अणुव्रत प्रवक्ता देवेन्द्रकुमार कर्णावट के निवास स्थान पर कुछ देर प्रवास किया। वहा से प्रात ८ ३० वजे युवाचायश्री ने तुलसी सावना शिखर के लिए प्रस्थान किया। राजनगर, काकरोली के मध्य राजसमद झील के किनारे पहाडी पर स्थित यह सुरम्य स्थान एक अध्यात्म योगी को अपने बीच पा पुलकित, प्रसन्न हो उठा। इस स्थान की रमणीयता, पवित्रता, सुन्दरता और चित्ताकर्षक हवा प्रत्येक व्यक्ति को सहज रूप से आकृष्ट कर रही थी। आस-पास के ग्रामो से आए हुए सैकडो व्यक्तियो के प्रसन्न चेहरे इसके स्वयभू साक्ष्य थे। एक ओर आदिनाथ भगवान ऋषभ का मदिर, और आचाय भिक्षु बोधिस्थल तथा दूसरी ओर काकरोली मे द्वारिकाधीश का पवित्र धाम मध्य मे अवस्थित यह साधना शिखर आज युवाचार्य महाप्रज्ञ के आगमन से तपोभूमि जसा लग रहा था।

स्वागत समारोह कार्यक्रम मे तुलसी साधना शिखर पर लम्बे समय से सावनारत मुनिश्री शुभकरण ने कहा—"युवाचार्यश्री इससे पहले दो वप पूव भी आचायश्री के साथ यहा पधारे थे। लेकिन उस समय इस साधना शिखर का रूप एक नवजात शिशु जैसा था। और आज वह किशोरावस्था मे पादन्यास कर चुका हे। उसका शारीरिक कलेवर विशाल और सुन्दर लग रहा है लेकिन उसमे प्राण सचार होना अभी शेप हे। मेरा विश्वास ह कि युवाचायश्री का सान्निध्य उसमे आध्यात्मिक प्राण भरने मे सफल होगा।"

युवाचार्यश्री ने कहा—"साधना शिखर पर हम एक विशेप प्रयोजन से आए है और वह प्रयोजन ह समाज मे व्याप्त विसगतियो को दूर करना। आज समाज का प्रत्येक घटक विकृत वन गया हे। लोग भविष्य की कल्पना मात्र से काप रहे हे। आज के विद्यार्थी का चरित्रनिष्ठ न होना इसका मुख्य कारण है। यदि तुलसी साधना शिखर पर एक उपक्रम प्रारम्भ किया जाए, तो विद्यार्थी के चरित्र को उन्नत आर प्रभावी वनाया जा सकता हे, मेवाड का प्रत्येक परिवार यह सोचे कि विद्यार्थी को शिक्षा के साथ अध्यात्म का ज्ञान भी मिले और इसके लिए तुलसी साधना शिखर पर प्रत्येक विद्यार्थी साल मे पन्द्रह दिन साधना मे विताए। इस कल्याणकारी क्रम से विद्यार्थी, अभिभावक,

शिक्षक और समाज निश्चित और भयमुक्त भविष्य का आश्वासन पा सकेगा।"

मुख्य अतिथि मेवाड मडलेश्वर महत मुरली मनोहरशरण ने कहा—"युवाचार्यश्री का साहित्य आधुनिक युग के लिए वरदान साबित हुआ है। आज के समस्याग्रस्त मनुष्य को उनके साहित्य से दिशा मिली है, समाधान मिला है। मैने उनके साहित्य को पढा है। युवाचार्यश्री का साहित्य धर्म और विज्ञान की परस्परता को सिद्ध करने मे समर्थ हुआ है। सपूर्ण धार्मिक जगत को उनके साहित्य से दृष्टि, आलोक और मार्ग मिला है।

स्वागत के इस समारोह मे मुनिश्री विनोदकुमार, तुलसी साधना शिखर के कार्यकारी अध्यक्ष श्री भवरलाल कर्णावट, मत्रीश्री गणेश डागलिया, अणुव्रत विश्व भारती के सस्थापक मत्री श्री मोहनलाल जैन, श्री धर्मेश डागी, कन्या मण्डल काकरोली, लावासरदारगढ के ठाकुर श्री मानसिंह आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का सयोजन श्री शातिलाल बाफणा ने किया।

५ दिसबर/राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण सस्थान उदयपुर तथा तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती, लाडनू के तत्वावधान मे जीवन-विज्ञान-शिक्षक प्रशिक्षण शिविर प्रारभ हुआ। पचदिवसीय शिविर का उद्घाटन करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'आज व्यक्ति स्वय को बहुत तनाव और कुण्ठा से घिरा हुआ पा रहा है। कभी-कभी इन परिस्थितियो के कारण वह आत्महत्या तक कर लेता है प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान तनाव मुक्ति के अचूक उपाय सिद्ध हुए है।"

इस कायक्रम मे मुनिश्री किशनलाल, मुनिश्री विनोदकुमार, मुनिश्री लोकप्रकाश, नीडम् निदेशक श्री शकरलाल मेहता आदि ने अपने विचार रखे। सयोजन श्री रसिक मेहता ने किया। जीवन-विज्ञान शिविर मे युवाचार्यश्री ने निम्न विषयो पर प्रवचन दिए।

५ दिसम्बर/स्वस्थ समाज रचना का सकल्प।
६ ,, स्वस्थ समाज की रचना आवश्यक है।
७ ,, समाज के आधारभूत तत्व।
८ ,, सत्य।
९ ,, शिविर समापन के अवसर पर शिक्षको को सबोधित करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"आज असतुलन सबसे बडी समस्या है। बौद्धिक विकास बढ रहा है, लेकिन भावात्मक विकास नही हो रहा है।

मुनिश्री धनजयकुमार, मुनिश्री लोकप्रकाश, ने युवाचार्यश्री द्वारा प्रदत्त विषय पर अपने-अपने विचार रखे। मुनिश्री विनाद कुमार, मुनिश्री ऋषभकुमार ने सगीत प्रस्तुत किया। सप्तर्षि के कायक्रम के पश्चात् युवाचायश्री का "धर्म क्यो जरूरी" विपय पर प्रवचन हुआ।

४ दिसबर को प्रात राजनगर से विहार कर युवाचार्य ने अणुव्रत प्रवक्ता देवेन्द्रकुमार कर्णावट के निवास स्थान पर कुछ देर प्रवास किया। वहा से प्रात ८ ३० बजे युवाचायश्री ने तुलसी सावना शिखर के लिए प्रस्थान किया। राजनगर, काकरोली के मध्य राजसमद झील के किनारे पहाडी पर स्थित यह सुरम्य स्थान एक अध्यात्म योगी को अपने बीच पा पुलकित, प्रसन्न हो उठा। इस स्थान की रमणीयता, पवित्रता, सुन्दरता और चित्ताकर्षक हवा प्रत्येक व्यक्ति को सहज रूप से आकृष्ट कर रही थी। आस-पास के ग्रामो से आए हुए सैकडो व्यक्तियो के प्रसन्न चेहरे इसके स्वयभू साक्ष्य थे। एक ओर आदिनाथ भगवान ऋपभ का मदिर, और आचाय भिक्षु बोधिस्थल तथा दूसरी ओर काकरोली मे द्वारिकाधीश का पवित्र धाम मध्य मे अवस्थित यह साधना शिखर आज युवाचाय महाप्रज्ञ के आगमन से तपोभूमि जसा लग रहा था।

स्वागत समारोह कायक्रम मे तुलसी साधना शिखर पर लम्बे समय से सावनारत मुनिश्री शुभकरण ने कहा—"युवाचार्यश्री इससे पहले दो वप पूव भी आचायश्री के साथ यहा पधारे थे। लेकिन उस समय इस साधना शिखर का रूप एक नवजात शिशु जैसा था। और आज वह किशोरावस्था मे पादन्यास कर चुका है। उसका शारीरिक कलेवर विशाल और सुन्दर लग रहा है लेकिन उसमे प्राण सचार होना अभी शेप है। मेरा विश्वास है कि युवाचायश्री का सान्निध्य उसमे आध्यात्मिक प्राण भरने मे सफल होगा।"

युवाचायश्री ने कहा—"सावना शिखर पर हम एक विशेप प्रयोजन से आए है और वह प्रयोजन है समाज मे व्याप्त विसगतियो को दूर करना। आज समाज का प्रत्येक घटक विकृत वन गया है। लोग भविष्य की कल्पना मात्र से काप रहे है। आज के विद्यार्थी का चरित्रनिष्ठ न होना इसका मुख्य कारण है। यदि तुलसी सावना शिखर पर एक उपक्रम प्रारम्भ किया जाए, तो विद्यार्थी के चरित्र का उन्नत और प्रभावी वनाया जा सकता है, मेवाड का प्रत्येक परिवार यह सोचे कि विद्यार्थी का शिक्षा के साथ अध्यात्म का ज्ञान भी मिले और इसके लिए तुलसी साधना शिखर पर प्रत्येक विद्यार्थी साल मे पन्द्रह दिन साधना मे विताए। इस कल्याणकारी क्रम ने विद्यार्थी, अभिभावक,

शिक्षक और समाज निश्चित और भयमुक्त भविष्य का आश्वासन पा सकेगा।"

मुख्य अतिथि मेवाड मडलेश्वर महत मुरली मनोहरशरण ने कहा—"युवाचार्यश्री का साहित्य आधुनिक युग के लिए वरदान साबित हुआ है। आज के समस्याग्रस्त मनुष्य को उनके साहित्य से दिशा मिली है, समाधान मिला है। मैने उनके साहित्य को पढा है। युवाचार्यश्री का साहित्य धर्म और विज्ञान की परस्परता को सिद्ध करने मे समर्थ हुआ है। सपूर्ण धार्मिक जगत को उनके साहित्य से दृष्टि, आलोक और मार्ग मिला है।

स्वागत के इस समारोह मे मुनिश्री विनोदकुमार, तुलसी साधना शिखर के कार्यकारी अध्यक्ष श्री भवरलाल कर्णावट, मत्रीश्री गणेश डागलिया, अणुव्रत विश्व भारती के सस्थापक मत्री श्री मोहनलाल जैन, श्री धर्मेश डागी, कन्या मण्डल काकरोली, लावासरदारगढ के ठाकुर श्री मानसिह आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का सयोजन श्री शातिलाल बाफणा ने किया।

५ दिसबर/राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण सस्थान उदयपुर तथा तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती, लाडनू के तत्वावधान मे जीवन-विज्ञान-शिक्षक प्रशिक्षण शिविर प्रारभ हुआ। पचदिवसीय शिविर का उद्घाटन करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'आज व्यक्ति स्वय को बहुत तनाव और कुण्ठा से घिरा हुआ पा रहा है। कभी-कभी इन परिस्थितियो के कारण वह आत्महत्या तक कर लेता है प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान तनाव मुक्ति के अचूक उपाय सिद्ध हुए है।"

इस कायक्रम मे मुनिश्री किशनलाल, मुनिश्री विनोदकुमार, मुनिश्री लोकप्रकाश, नीडम् निदेशक श्री शकरलाल मेहता आदि ने अपने विचार रखे। सयोजन श्री रसिक मेहता ने किया। जीवन-विज्ञान शिविर मे युवाचार्यश्री ने निम्न विपयो पर प्रवचन दिए।

५ दिसम्वर/स्वस्थ समाज रचना का सकल्प।

६ ,, स्वस्थ समाज की रचना आवश्यक है।

७ ,, समाज के आधारभूत तत्व।

८ ,, सत्य।

९ ,, शिविर समापन के अवसर पर शिक्षको को सबोधित करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"आज असतुलन सबसे बडी समस्या है। बौद्धिक विकास बढ रहा है, लेकिन भावात्मक विकास नही हो रहा है।

मुनिश्री धनजयकुमार, मुनिश्री लोकप्रकाश, ने युवाचार्यश्री द्वारा प्रदत्त विषय पर अपने-अपने विचार रखे । मुनिश्री विनाद कुमार, मुनिश्री ऋषभकुमार ने सगीत प्रस्तुत किया । सप्तर्षि के कायक्रम के पश्चात् युवाचार्यश्री का "धर्म क्यो जरूरी" विपय पर प्रवचन हुआ ।

४ दिसबर को प्रात राजनगर से विहार कर युवाचार्य ने अणुव्रत प्रवक्ता देवेन्द्रकुमार कर्णावट के निवास स्थान पर कुछ देर प्रवास किया । वहा से प्रात ८ ३० बजे युवाचायश्री ने तुलसी साधना शिखर के लिए प्रस्थान किया । राजनगर, काकरोली के मध्य राजसमद झील के किनारे पहाडी पर स्थित यह सुरम्य स्थान एक अध्यात्म योगी को अपने बीच पा पुलकित, प्रसन्न हो उठा । इस स्थान की रमणीयता, पवित्रता, सुन्दरता और चित्ताकर्षक हवा प्रत्येक व्यक्ति को सहज रूप से आकृष्ट कर रही थी । आस-पास के ग्रामो से आए हुए सैकडो व्यक्तियो के प्रसन्न चेहरे इसके स्वयभू साक्ष्य थे । एक ओर आदिनाथ भगवान ऋपभ का मदिर, और आचाय भिक्षु बोधिस्थल तथा दूसरी ओर काकरोली मे द्वारिकाधीश का पवित्र धाम मध्य मे अवस्थित यह साधना शिखर आज युवाचाय महाप्रज्ञ के आगमन से तपोभूमि जसा लग रहा था ।

स्वागत समारोह कायक्रम मे तुलसी साधना शिखर पर लम्बे समय से साधनारत मुनिश्री शुभकरण ने कहा—"युवाचार्यश्री इससे पहले दो वप पूर्व भी आचायश्री के साथ यहा पधारे थे । लेकिन उस समय इस साधना शिखर का रूप एक नवजात शिशु जैसा था । और आज वह किशोरावस्था मे पादन्यास कर चुका है । उसका शारीरिक कलेवर विशाल और सुन्दर लग रहा हे लकिन उसमे प्राण सचार होना अभी शेप है । मेरा विश्वास ह कि युवाचार्यश्री का सान्निध्य उसमे आध्यात्मिक प्राण भरने मे सफल होगा ।"

युवाचायश्री ने कहा—"साधना शिखर पर हम एक विशेप प्रयोजन से आए ह और वह प्रयोजन हे समाज मे व्याप्त विसगतियो को दूर करना । आज समाज का प्रत्येक घटक विकृत वन गया हे । लोग भविष्य की कल्पना मात्र से काप रहे ह । आज के विद्यार्थी का चरित्रनिष्ठ न होना इसका मुख्य कारण है । यदि तुलसी साधना शिखर पर एक उपक्रम प्रारम्भ किया जाए, तो विद्यार्थी के चरित्र को उन्नत और प्रभावी बनाया जा सकता ह, मेवाड का प्रत्येक परिवार यह सोचे कि विद्यार्थी का शिक्षा के साथ अध्यात्म का ज्ञान भी मिले और इसके लिए तुलसी साधना शिखर पर प्रत्येक विद्यार्थी साल मे पन्द्रह दिन साधना मे विताए । इस कल्याणकारी क्रम स विद्यार्थी, अभिभावक,

शिक्षक और समाज निश्चित और भयमुक्त भविष्य का आश्वासन पा सकेगा।"

मुख्य अतिथि मेवाड मडलेश्वर महत मुरली मनोहरशरण ने कहा—"युवाचार्यश्री का साहित्य आधुनिक युग के लिए वरदान सावित हुआ है। आज के समस्याग्रस्त मनुष्य को उनके साहित्य से दिशा मिली है, समाधान मिला है। मैने उनके साहित्य को पढा है। युवाचार्यश्री का साहित्य धर्म और विज्ञान की परस्परता को सिद्ध करने मे समर्थ हुआ है। सपूर्ण धार्मिक जगत को उनके साहित्य से दृष्टि, आलोक और मार्ग मिला है।

स्वागत के इस समारोह मे मुनिश्री विनोदकुमार, तुलसी साधना शिखर के कार्यकारी अध्यक्ष श्री भवरलाल कर्णावट, मत्रीश्री गणेश डागलिया, अणुव्रत विश्व भारती के सस्थापक मत्री श्री मोहनलाल जैन, श्री धर्मेश डागी, कन्या मण्डल काकरोली, लावासरदारगढ के ठाकुर श्री मानसिंह आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का सयोजन श्री शातिलाल वाफणा ने किया।

५ दिसबर/राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण सस्थान उदयपुर तथा तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती, लाडनू के तत्वावधान मे जीवन-विज्ञान-शिक्षक प्रशिक्षण शिविर प्रारभ हुआ। पचदिवसीय शिविर का उद्घाटन करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'आज व्यक्ति स्वय को बहुत तनाव और कुण्ठा से घिरा हुआ पा रहा है। कभी-कभी इन परिस्थितियो के कारण वह आत्महत्या तक कर लेता है प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान तनाव मुक्ति के अचूक उपाय सिद्ध हुए है।"

इस कार्यक्रम मे मुनिश्री किशनलाल, मुनिश्री विनोदकुमार, मुनिश्री लोकप्रकाश, नीडम् निदेशक श्री शकरलाल मेहता आदि ने अपने विचार रखे। सयोजन श्री रसिक मेहता ने किया। जीवन-विज्ञान शिविर मे युवाचार्यश्री ने निम्न विषयो पर प्रवचन दिए।

५ दिसम्वर/स्वस्थ समाज रचना का सकल्प।

६ ,, स्वस्थ समाज की रचना आवश्यक है।

७ ,, समाज के आधारभूत तत्व।

८ ,, सत्य।

९ ,, शिविर समापन के अवसर पर शिक्षको को सबोधित करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—"आज असतुलन सबसे बडी समस्या है। बौद्धिक विकास बढ रहा है, लेकिन भावात्मक विकास नही हो रहा है।

बौद्धिकता हमे विनाश की ओर ले जा रही ह। आतकवाद का वातावरण भी इसी की देन है। आतकवादी मानसिकता मे परिवतन लाने के लिए बौद्धिक और भावात्मक विकास का सतुलन अपेक्षित है।"

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण सस्थान के निदेशक श्री भवरलाल शर्मा के अतिरिक्त शिक्षको ने जीवन-विज्ञान प्रयोगो के परिणाम तथा उसे लागू करने मे आने वाली दिक्कतो का जिक्र किया।

१० दिसम्बर/प्रेक्षाध्यान-प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन। विदेशी साधक श्री रोबर्ट का आगमन। 'जागरूकता' विपय पर आयोजित प्रवचन-माला मे प्रथम प्रवचन 'जागरकता सफलता का सूत्र।'

११ दिसम्बर जागरूकता यथार्थ का स्वीकार और उपचार।
१२ ,, जागरूकता देखने का अभ्यास।
१३ ,, जागरूकता और सतुलन।
१४ ,, जागरूकता दिशा परिवतन।
१५ ,, जागरूकता जरुरी है समाज को वदलने के लिए।
१६ ,, जागरूकता प्रयोग और प्रशिक्षण।
१७ ,, जागरूकता और जीवन व्यवहार।
१८ ,, जागरूकता और जीवन विकास।

प्रेक्षाध्यान की पृष्ठभूमि मे धर्म नही विज्ञान

१३ दिसम्बर/रात्रि ७ ३० वजे/विशिष्ट साधक पिट्सवग (अमेरिका) निवासी श्री रोवट चार्ल्स प्रौफ से विशेप भेटवार्ता। सहज शान्त, शालीन स्वभाव से समृद्ध, अल्पभापी, धुन के धनी मि० रोबर्ट युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ एव प्रेक्षाध्यान से प्रभावित हुए। युवाचार्यश्री के साथ उनका वार्तालाप वहुत ही उपयोगी एव ज्ञानवद्धक हे। चर्चा का अनुवाद मुनिश्री दुलहराज ने कुशलता पूर्वक किया है।

युवाचार्यश्री—आपका ध्यान की ओर झुकाव कैसे हुआ ?

रोवर्ट— पारिवारिक परिस्थियो के कारण मेरा मानस वहुत दुखित था। मेरा जीवन कष्टो से आक्रान्त था। करीव दस वर्प पूर्व दुखद परिस्थितियो के घेरे को तोडने के लिये म ध्यान की ओर आकृष्ट हुआ।

युवाचार्यश्री—प्रेक्षाध्यान मे आपका सपक कव हुआ, कैसे हुआ ?

रोबर्ट— मैने कुछ वर्षो मे अनेक पद्धतियो का प्रयोग किया, उन्हे पढा, समझा। लेकिन मुझे उनसे कुछ कमी का अनुभव होता रहा। अमेरिका मे मेरे एक मित्र ने प्रेक्षाध्यान के कुछ पुष्प पढने को दिये। शरीर प्रेक्षा, श्वास प्रेक्षा, प्रेक्षाध्यान आधार और स्वरूप आदि पुस्तको का मैने अध्ययन किया। मुझे उनमे कुछ नवीनता, अतिरिक्तता का अहसास हुआ। मेरे भीतर इस पद्धति को अच्छे ढग से जानने, समझने और इसमे डूबने की रुचि जागृत हुई।

युवाचार्यश्री—दस-बारह वर्षो मे आपने ध्यान की विभिन्न पद्धतियो को देखा है, पढा है, और उनको प्रायोगिक रूप से जीया है उन पद्धतियो के सदर्भ मे प्रेक्षाध्यान आपको कैसा लगा? प्रेक्षाध्यान की किन-किन विशेषताओ ने आप पर प्रभाव डाला है?

रोबर्ट— प्रेक्षाध्यान से मै तीन कारणो से प्रभावित हुआ हू।

(१) किसी पद्धति मे केवल आसन-प्राणायाम कराया जाता है। किसी मे शरीर-प्रेक्षा और श्वास-प्रेक्षा का ही प्रयोग कराया जाता हे और कही कायोत्सर्ग और श्वासप्रेक्षा ये दो ही प्रयोग चलते हे। साइकिक सेन्टर (चैतन्य-केन्द्र-प्रेक्षा) की विधि भी कुछ ध्यान पद्धतियो मे है, लेकिन वह भी पर्याप्त नही हे। प्रेक्षाध्यान मे इन सव विधियो का समावेश हे, यह समग्र दृष्टि से सर्वांग वन पायी है। प्रेक्षाध्यान मे विभिन्न प्रयोगो की समन्विति ने मुझे आकृष्ट किया है।

(२) चैतन्य-केन्द्र-प्रेक्षा ग्रथितत्र को प्रभावित करती हे, प्रेक्षा ध्यान का यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण अन्यत्र मुझे कही दिखाई नही दिया। ग्रथितत्र और चतन्य-केन्द्र-प्रेक्षा को एक साथ जोडना प्रेक्षाध्यान की वहुत वडी उपलब्धि है। प्रेक्षाध्यान की इस अपूर्व खोज मे मुझे सत्य का दर्शन हुआ है।

(३) प्रेक्षाध्यान की तीसरी विशेषता यह कि इसकी पृष्ठभूमि मे धर्म नही है, विज्ञान है। इसका सपूण सैद्धातिक और

प्रायोगिक पक्ष विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है। इसमे सप्रदाय, मजहब, जाति, देश की सीमा से हटकर उन्मुक्त चितन से प्रस्फुटित, उपयोगी और सार्वजनिन विधि है। मै इस पद्धति के साथ तादात्म्य की अनुभूति करता हू।

युवाचार्यश्री—क्या किसी पद्धति मे लेश्याध्यान के प्रयोग भी करवाये जाते है ?

रोवर्ट— कही-कही यह जरुर वताया जाता है कि दर्शन-केन्द्र पर प्रकाश का आभास होता है लेकिन इसके सिवाय लेश्या ध्यान (कलर (मेडीटेशन) के वारे मे मैने कही नही सुना।

युवाचार्यश्री—क्या आपको रग दिखाई देते है ?

रोवर्ट— कुछ रग दिखाई देते है कुछ नही (बात को मोड देते हुए) युवाचायश्री ! कुछ लोग एकाग्रता और ध्यान को एक ही मानते है तथा कुछ उन्हे अलग-अलग मानते है ? आपका अभिमत क्या है ?

युवाचार्यश्री—एकाग्रता स्वय ध्यान की एक अवस्था हे। एकाग्रता (कासेन्ट्रेशन) समाधि, (कान्टेम्पलेशन) ध्यान (मेडीटेशन) ये तीनो ध्यान की ही अवस्थाए हे। एकाग्रता ध्यान की पहली स्टेज हे, समाधि दूसरी स्टेज और ध्यान तीसरी स्टेज है।

रोवर्ट— हा-हा मुझे आपका कथन ही सही महसूस होता है।

युवाचार्यश्री—हमने प्रेक्षाध्यान मे प्रेक्षा के साथ अनुप्रेक्षा को भी जोडा हे।

रोवर्ट— अनुप्रेक्षा ?

युवाचार्यश्री—अनुप्रेक्षा यानि सजेशन, ऑटोसजेशन। जैसे भय को मिटाने के लिये व्यक्ति अपने आप सुझाव देता है कि भय का भाव मिट रहा है, अभय का भाव पुप्ट हो रहा है। यह प्रयोग आदतो को वदलने मे महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ हे।

रोवर्ट— यह तो आत्मसम्मोहन का ही एक रूप हैं।

युवाचार्यश्री—हा, व्यवहार परिवर्तन के लिये यही सवसे कारगर उपाय हे।

रोवर्ट— आत्मसम्मोहन मे ही वृत्तियो का परिप्कार होता है, आपका यह कथन सही है।

युवाचार्यवर—(प्रसग वदलते हुए) आप यहा कव तक रहेगे ?

रोबर्ट— शिविर के बाद मैं आचायश्री तुलसी के दर्शन करूगा। फिर कुछ दिन दिल्ली रुक कर अमेरिका चला जाऊगा। मेरे पास वीसा थोडे समय का ही है।

युवाचार्यश्री—क्या आप स्थायी रूप से अमेरिका मे ही रहेगे ?

रोबर्ट— हालाकि मैने अभी तक कुछ निश्चय नही किया हे लेकिन अमेरिका मे ज्यादा नही रहने का फैसला मने किया है। (व्यथा भरे स्वरो मे) अमेरिका हिंसक देश है वहा लोगो मे दया, चरित्र नाम का कोई तत्त्व नही हे। वे पैसे के लिये सब कुछ करने के लिये तैयार रहते हैं।

युवाचार्यश्री—(विस्मय से) ऐसा क्यो करते हे ?

रोबर्ट— सारे लोग पैसे के पीछे दौड रहे हे। पैसे के लिये किसी को छलना, मारना तो वे अपना कर्तव्य ही मान बैठे। वे मानते है कि बुढापा, हिंसा, भय, तनाव आदि से सुरक्षा का एकमात्र उपाय धन ही है।

युवाचार्यश्री—क्या लोगो के गिरते हुए चरित्र को उठाने के प्रयत्न नही हुए ?

रोबर्ट— (अत्यन्त दु खी होकर) युवाचार्यश्री ! वहा की सस्कृति ही ऐसी हे। उनमे कोई परिवर्तन नही आता है वहा और व्यवसाय की तरह ही व्यक्ति को ऊपर उठाने वाले प्रयत्न भी व्यवसाय ही बन गये। (बात जारी रखते हुए) भारत मे भी अनेक धर्माचाय, भगवान, मुनि वहा गए लेकिन वे भी उन्हे नही बदल सके। अधिकाश धार्मिक प्रचार के अपने दायित्व, धर्म और सस्कृति को भुलाकर वहा की सस्कृति मे डूब गए। वे अपने चरित्र को नही टिका पाए और पाश्चात्य सस्कृति के चमकीले-भडकीले वातावरण मे अपनी मूल थाती को ही खो बैठे। वे पैसे और सेक्स के चक्कर मे फस गये।

युवाचार्यश्री—(धर्मगुरुओ की बात सुनकर) वहा पर भगवान् रजनीश काफी वर्षों तक रहे थे। क्या आप उनसे कभी मिले ?

रोबर्ट— नही। मेरा उनसे मिलने का कोई अवसर नही आया। उनके शिष्यो से अवश्य मेरी बातचीत हुई वे भी कन्फ्युजन-भटकाव मे लगे, अस्त-व्यस्त दिमाग वाले लगे।

युवाचार्यश्री—(प्रसग बदलते हुए) आप वहा दिन भर क्या करते है ?

रोवर्ट— मै दिन भर प्रेक्षाध्यान के प्रयोग और साहित्य पढने मे व्यस्त रहता हू । दो-तीन दिन बाद मुझे यहा से जाना है। जाते समय आप पूछेगे कि आपने क्या सीखा, क्या पाया, क्या समझा तो मै क्या जवाब दूगा । इसीलिये मैं प्रेक्षाध्यान को समझने जानने मे लगा रहता हू । (बात आगे खीचते हुए) युवाचार्य श्री ! आपने एक जगह लिखा है कि हम ध्यान सिखाते है पर यह कैसे सभव हो सकता है ?

युवाचार्यश्री—ध्यान की विधि (मैथेड) ही सिखायी जाती हे । उसे ही ध्यान सीखाना कह देते है । यह सही ध्यान स्वत घटित होता हे लेकिन यदि प्रयाग कराने वाला शक्तिशाली और पवित्र आभा-मण्डल से युक्त हो, तो उसका प्राण-बल सीखने वाले के भीतर जा सकता है वह उसे इस प्रकार से एक प्रेरणा कर सकता है ।

रोवर्ट— प्रेरणा यानि शक्तिपात ?

युवाचार्यश्री—पाश्चात्य देशो मे शक्तिपात का प्रचलित अथ यह होता है कि गुरु के पास शिष्य जाता ह और गुरु के स्पर्श से उसके सारे केन्द्र सक्रिय और जागृत हो जाते है । शक्तिपात का वास्तविक अर्थ पश्चिमी लोगो ने कितना गलत समझा हे । उन्होने अथ का अनर्थ कर डाला ।

(मूल विपय पर आते हुए)

युवाचार्यश्री—आप दो दिन से शिखर की गुफा मे सो रहे हे उस गुफा मे आप को कैसा अनुभव हुआ ।

रोवट— जागते हुए सोने का अभ्यास तो मुझे काफी अर्से से हे, मेरा पूरा शरीर सोया रहता हे और मै उसे निरन्तर देखता रहता हू । यह आत्मा और शरीर का भेद-विज्ञान मुझे दो वर्षो से निरन्तर उपलब्ध हे । परसो रात्रि को मे गुफा मे सो रहा था, तब मेरा शरीर स्वप्न ले रहा था, और मैं उसका अनुभव कर रहा था, मैंने देखा—समस्या का मूल परिग्रह (प्रोजेशन) है, हिंसा, भय, घृणा, स्वाथ ये सब उसके उपजीवी हैं । आसक्ति मूल है । यदि व्यक्ति के भीतर मूर्च्छा का प्रवाह मद हो जाये, तो हिंसा, कपाय आदि सारी विकृतिया स्वत मिट जाए । इस बात का मुझे प्रथम दिन बहुत स्पष्ट आभास हुआ । दूसरे

दिन रात्रि मे एक विचित्र और अपूर्व अनुभव हुआ।

(ये वाक्य बोलते-बोलते वह प्रसन्नता से घिर गया। कुछ क्षण तक वह कुछ भी नही बोल पाया)

युवाचार्यश्री—ऐसा क्या अनुभव हुआ ?

रोबर्ट— मैने देखा ! मै अपने सोए शरीर को देख रहा हू और देखते-देखते एक विशाल सूर्य जैसा चमकता हुआ प्रकाश मेरे शरीर के भीतर से फूटा। वह काफी देर तक चमकता हुआ दिखाई दे रहा था। बिजली की धारा जैसा वह पदार्थ मेरे शरीर से निकला तब मुझे आभास हुआ कि आत्मा शरीर से भिन्न है लेकिन वह बाहर निकलते हुए भी शरीर से जुडी रहती है। आपका इस विषय मे क्या मानना है ?

युवाचार्यश्री—आत्मा शरीर से तैजस शरीर के द्वारा जुडी रहती है ऐसा हम मानते है। तिब्बती दार्शनिक भी उसे सिल्वर कोड से जुडी हुई मानते है ?

रोबर्ट— मुझे भी ऐसा ही आभास हुआ।

युवाचार्यश्री—उस समय आपकी मन स्थिति कैसी बनी ?

रोबर्ट— मैं स्तब्ध और आश्चर्यचकित रह गया। मेरे भीतर अपूर्व आनन्द का स्रोत फूट पडा।

युवाचार्यश्री—आपने उस तेजस-शक्ति को क्या समझा ?

रोबर्ट— मैं तेजस-शरीर के बारे मे सुनता पढता रहा, लेकिन मुझे यह कभी विश्वास नही था कि मै उस शक्ति को साक्षात् देख सकूगा, मेरी यह धारणा पुष्ट और दृढ हो गई कि वास्तव मे कुण्डलिनी, तेजस-शक्ति, (तेजोलेश्या) केवल कल्पना नही बल्कि एक जीवन्त सचाई है।

युवाचार्यश्री—आप कब तक उस स्थिति मे रहे ?

रोबर्ट— मै निश्चित नही कह सकता।

युवाचार्यश्री—आप मूल स्थिति मे कैसे आए ?

रोबर्ट— मै अवाक् निस्पन्द हो गया था। मेरा शरीर सुन्न था। धीरे-धीरे शून्य-सा बना मेरा शरीर चेतनत्व को पाने लगा। शरीर मे पूर्ण चेतना और जागरूकता के सचार मे काफी समय लगा। मेरे जीवन का यह अद्भुत, रोमाचक, अविस्मरणीय अनुभव बन

गया है। मुझे दृढ विश्वास है कि व्यक्ति की यदि लगन, निष्ठा और आत्म-विश्वास प्रबल हो तो उसे निश्चित लक्ष्य पाने से कोई नही रोक सकता है।

युवाचार्यश्री—यह तेजस-शक्ति का चमत्कार है। ऐसा अनुभव अभ्यास के बाद सभव होता है। जिसकी साधना सहज रूप से गहरी हो जाती है, उसे इस प्रकार के अनुभव होते है।

रोवर्ट— हा, यह बात भी सही है कि प्रत्येक मेरा अनुभव दूसरो को भी हो, यह जरूरी नही है। सब व्यक्तियो की जागरूकता, क्षमता, साधना मे निष्ठा समान नही होती।

युवाचार्यश्री—स्थान भी आपको सहज ही बहुत अच्छा उपलब्ध हुआ।

रोवर्ट— जिस गुफा मे मैं सो रहा हू, वह शान्त, सुरम्य और दर्शनीय है। युवाचार्यश्री ! मुझे तो ऐसा लगता हैं कि यह गुफा कोई तपोभूमि रही है। यहा पर ऋषि-मुनियो ने लबे समय तक ध्यान, तप आदि की साधना की है। ऐसा मेरा दिल कहता है। अन्यथा उस गुफा मे जाते ही मेरा मन शान्त नही होता, मुझे इतनी गहरी नींद नही आती। मैंने दो दिनो मे जितनी गहरी और मस्ती भरी नींद ली, उतनी मुझे कभी नही आई। जितना गहरा ध्यान हुआ, उतना पहले नही हुआ। यह सब गुफा के प्रभास्वर, चित्ताकर्षक वातावरण का प्रभाव है।

१७ दिसम्बर राजसमन्द क्षेत्र के विधायक श्री मदनलाल खटीक, इजीनियर, आयकर अधिकारी, डॉक्टर, वकील आदि ने युवाचार्य श्री से युगीन समस्याओ और जीवन-विज्ञान पर उपयोगी चर्चा की।

१६ दिसम्बर/तुलसी साधना शिखर से काकरोली पदार्पण। इस अवसर पर प्रखर चिन्तक एव शिक्षाविद श्री हरिदास शास्त्री ने कहा—"मै मार्क्सवादी विचारो का समथक रहा हू। जिसमे धम को अफीम कहा गया है। धर्म नाम से मुझे नफरत रही है, लेकिन जब से मैने प्रेक्षाध्यान का शिविर अटेन्ड किया, तब से मेरी धारणा ही बदल गयी। प्रेक्षाध्यान का आधार वैज्ञानिक है। इस पद्धति के साधारण प्रयोगो ने असाधारण बीमारियो पर विजय पाई है। यदि हम इसके प्रयोग निरन्तरता के साथ करे, तो हमारे कर्म और वाणी मे अद्भुत साम्य आ सकता है।"

युवाचार्यश्री ने परिषद को सबोधित करते हुए कहा—"आज जितनी भी समस्याए है उनका मूल कारण मानसिक असतुलन है। मस्तिष्क के दो भाग होते है एक बाया और दूसरा दाया। बाया भाग तर्क और बुद्धि के लिए जिम्मेदार है तो दाया भाग अध्यात्म, मैत्री, करूणा नैतिकता के लिए उत्तरदायी है। आज बाया भाग बहुत सक्रिय है, विश्व पर हावी है जबकि दाया भाग सिकुड गया है, सुप्त बन गया है। यही कारण है कि आज हिंसा, आतक, अणुशस्त्रो का माहौल बना हुआ है। व्यक्ति भय और तनाव से ग्रस्त है। अध्यात्म के द्वारा मस्तिष्क के इन दोनो पक्षो मे सतुलन स्थापित किया जा सकता है। जब तक बुद्धिवाद का साम्राज्य रहेगा, समस्याओ का समाधान नही होगा। अध्यात्म की बुनियाद को मजबूत बनाकर ही हम विध्वसकारी ताकतो से बच सकते है।"

जय किशोर मडल द्वारा आयोजित हिन्दी निबध प्रतियोगिता के परिणाम भी घोषित किए गए। "परमाणु युग मे अहिंसा की उपयोगिता" विषय पर लिखने वाले युवको के समारोह मे अध्यक्ष विधायक मदनलाल खटीक के हाथो पुरस्कार प्रदान किया गया।

२० दिसबर को युवाचार्यश्री प्रात मादडी साय कुआरिया पहुचे। दोनो ही ग्रामो मे स्थानीय जनता ने युवाचार्यश्री के प्रवास का लाभ उठाया। इस अवसर पर काकरोली, राजनगर, आमेट आदि क्षेत्रो के सैकडो भाई-बहिन भी ससघ आए थे। २१ दिसबर को चौकडी पधारे। मार्ग मे पीपरी ग्राम वासियो के विशेष आग्रह पर युवाचार्यश्री वहा कुछ देर ठहरे। पीपरी मे श्रद्धा के तीन परिवार रहते है।

२२ दिसबर को रेलमगरा मे युवाचार्यश्री ने आचार्यश्री के दर्शन कर लिये। मार्गवर्ती शकरपुरा एव मदरा ग्रामवासियो की बलवती प्रार्थना को स्वीकृत कर दोनो ही ग्रामो मे युवाचार्य श्री थोडे समय के लिए ठहरे। करीब दस बजे युवाचार्य श्री की यह २५ दिवसीय पृथक् यात्रा परमाराध्य गुरुदेव के चरणो मे आकर सम्पन्न हो गई।

कानोड-थामला

आचार्यवर से पृथक् विहार कर युवाचार्यश्री प्रात बडवई पहुचे तथा साय सात किलोमीटर का रास्ता तय कर रात्रि प्रवास भीण्डर मे किया। भीण्डर मे जैन समाज की काफी अच्छी बस्ती है। स्थानीय वरिष्ठ नेता एव पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष श्री रूपलाल मेहता ने युवाचार्यश्री का स्वागत

किया। रात्रि मे हजारो लोगो के बीच "जीए लेकिन कैसे" ? विपय पर प्रवचन हुआ। स्थानीय जैन-अजैन जनता के विशेप आग्रह पर युवाचार्यश्री यहा दो दिन और ठहरे।

अगले दिन युवाचार्यश्री ने भीण्डर हायर सैकण्ड्री स्कूल मे जीवन-विज्ञान के विद्यार्थियो एव शिक्षको को सबोधित किया। जीवन-विज्ञान के प्रयोगो के प्रति विद्यार्थियो ने अपनी अभिरुचि प्रदर्शित की। उन्होने वताया कि जीवन-विज्ञान के प्रयोगो से तनाव, क्रोध, विस्मृति आदि आदतो मे असाधारण परिवर्तन आया हे। रात्रि मे 'मानसिक शान्ति का प्रश्न' विपय पर सारगर्भित प्रवचन हुआ। युवाचार्यश्री का भीण्डर मे त्रिदिवसीय प्रवास सफल और प्रभावी सिद्ध हुआ। भीण्डर से विहार कर युवाचार्य अमरपुरा पधारे। युवाचार्यश्री को अमरपुरा से भटेवर पधारना था। मध्यवर्ती ग्राम मे स्थानकवासी समाज के १०० परिवार रहते ह, उनके विशेष आग्रह पर युवाचार्यश्री ने वहा प्रात कालीन प्रवचन किया।

भटेवर से युवाचार्यश्री वल्लभनगर पधारे। स्थानीय स्थानकवासी, दिगम्बर, तेरापथी समाज ने युवाचायश्री का शानदार स्वागत किया। मध्याह्न मे बुद्धिजीवी, वकील, उपजिलाशिक्षाधिकारी आदि गणमान्य स्थानीय व्यक्तियो ने युवाचार्यश्री से आज की ज्वलन्त समस्याओ पर चर्चा की। रात्रि मे 'क्या आप सुनना चाहते हैं' विपय पर सावजनिक वक्तव्य हुआ।

१३ जनवरी को युवाचार्यश्री का मावली ग्राम मे भव्य स्वागत हुआ। एडवोकेट श्री सुन्दरलाल चेचानी, श्री भवरलाल ओस्तवाल ने प्रेक्षाध्यान का जिक्र करते हुए इसे महाप्रज्ञ की ससार को दिव्य देन वतलाया। रात्रि मे युवाचायश्री का "आप क्या वनना चाहते ह" विपय पर वक्तव्य हुआ।

१४ जनवरी को प्रात युवाचायश्री का हायर सैकन्ड्री स्कूल के अध्यापको, विद्यार्थियो के वीच "जीवन विज्ञान" पर वक्तव्य हुआ। स्कूल के अध्यापको ने जीवन-विज्ञान कायक्रम को अपनाने की प्रवल इच्छा व्यक्त की। रात्रि मे जनता को सबोधित करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'आज की सवसे वडी समस्या है व्यक्तिवादी मनोवृत्ति का विकास। हमारा घोप समाजवाद का ह किन्तु हम वन रहे है व्यक्तिवादी। कितना स्वाथ ? परमाथ मे तो हमारा पीछा ही छूट गया है। परमाथ से कोई सबध ही नही रहा। आज व्यक्ति व्यक्तिवादी वन गया और सारा दृष्टिकोण व्यक्तिवादी वन गया। परमार्थ वहुत पिछड गया। इस स्थिति मे सबसे वडा उपाय ह अध्यात्म चेतना

का जागरण। सामाजिक चेतना का जागरण करुणा के बिना सभव नही है और अध्यात्म के बिना करूणा का प्रस्फुटन नही होता। आज की समस्या है क्रूरता और उसका समाधान है—अध्यात्म चेतना का जागरण।"

प्रवचनोपरान्त सिविल जज, एडवोकेट आदि शताधिक व्यक्तियो ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग मे उत्साह के साथ भाग लिया। प्रात विहार के समय युवाचार्यश्री सिविल जज के आग्रह पर उनकी कोठी पर पधारे। युवाचार्यश्री को पात्रदान देकर सिविल जज कृत-कृत्य वन गए।

१५ जनवरी / थामला मे आयोजित स्वागत समारोह मे स्थानीय विधायक व पूर्व मत्री श्री हनुमान प्रसाद प्रभाकर ने कहा—"आज पूरा समाज विकृत हो गया है। राजनीति, व्यापार, आफिसो मे कार्यरत व्यक्तियो का चरित्र बेदाग नही है। पूरा वातावरण विपाक्त और गदला वन गया है। ऐसी स्थिति मे भी सत कमल की भाति निर्लिप्तता और पवित्रता से ओत-प्रोत है यह भारत का सौभाग्य है। ऐसे अकिंचन सतो का मार्गदर्शन एव प्रेरणा से ही मानव समाज मे व्याप्त विकृतियो को दूर किया जा सकता है। युवाचार्य महाप्रज्ञ का आगमन भ्रष्टाचार, रिश्वत, वेईमानी आदि बुराइयो को दूर करने मे सहायक सिद्ध होगा। ऐसा मेरा दृढ विश्वास है।"

युवाचार्यश्री ने कहा—'समाज को आज एक नयी करवट देनी है। उसमे व्याप्त प्रदूषण को मिटाना आज का अह प्रश्न है। इसके लिए सघन और सर्वतोमुखी प्रयत्न की जरूरत है। केवल धर्माचार्य या अध्यात्म इस दृष्टि से सफल नही हो सकते। केवल व्यवस्था या कानून के आधार पर भी इस प्रदूषण को मिटाया नही जा सकता। समाज मे स्वच्छ और सुन्दर वातावरण बनाने के लिए सबका सम्यक् योग होना जरूरी है। एक ऐसे प्रभावी मच का निर्माण हो, जिसमे प्रमुख धर्मो के नेता, प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ, वकील, साहित्यकार, कवि, लेखक आदि वरिष्ठ व्यक्ति सम्मिलित हो। वे समाज को सुधारने का सयुक्त प्रयत्न करे, एक सशक्त वातावरण का निर्माण करे। जिसके द्वारा समाज का कायाकल्प हो सके, उसमे क्रान्तिकारी परिवर्तन लाया जा सके। आज की ज्वलत, भयावह और विश्वव्यापी समस्या का यह सयुक्त मच एक समाधान सिद्ध हो सकता है।'

स्वागत कार्यक्रम मे श्री धर्मचन्द जैन, कन्या मडल, महिला मडल, युवक परिषद् आदि सस्थाओ के अतिरिक्त अनेक भाई-वहिनो ने अपने विचार व्यक्त किए।

आचार्यवर थामला मे लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व पधारे थे। उस समय आचार्यश्री का प्रवास स्थानीय ठाकुर साहब के यहा हुआ था। ठाकुर सज्जन सिहजी ने अतीत की चर्चा करते हुए कहा—'आचार्यश्री के सामने मैने पच्चीस वर्ष पूर्व शराब न पीने की प्रतिज्ञा ली थी। तब से लेकर अब तक मै उस प्रतिज्ञा को निभा रहा हू। आचार्यश्री के द्वारा लिए गए उस सकल्प से मेरा स्वास्थ्य, यश, सपत्ति और ईमान निरन्तर बढा है। मेरा परिवार एक प्रतिष्ठित और नैतिक परिवार बन गया है। यह सब आचार्यवर की कृपा का प्रसाद है।' युवाचार्यश्री उनकी अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए उनके घर पर भी पधारे।

थामला मे १५ जनवरी को विधायक श्री बिहारीलाल पारीक ने अणुव्रत ग्राम भारती के सम्बन्ध मे युवाचार्यश्री से बातचीत की।

थामला के त्रिदिवसीय प्रवास का स्थानीय जनता ने बहुत उत्साह के साथ लाभ उठाया।

१८ जनवरी को युवाचार्यश्री सालोर पधारे। यहा तेरापथ का एक ही परिवार है। आर्थिक एव धार्मिक दृष्टि से समृद्ध इस परिवार का पूरे गाव मे अच्छा प्रभाव है। सपूर्ण जैन-अजैन समाज युवाचार्यश्री को अपने मध्य पा प्रफुल्ल हो उठा। खमनोर पचायत समिति के प्रधान श्री गणेशलाल शर्मा इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे।

साध्वीश्री राजीमती, साध्वीश्री कानकवर एव साध्वीश्री सुमनश्री आदि पन्द्रह साध्वियो ने आज युवाचार्यश्री के दर्शन किए। स्वागत समारोह मे साध्वियो ने युवाचार्यश्री का अभिनन्दन करते हुए एक सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। युवाचार्यश्री से अत्यन्त आग्रहपूर्वक स्वीकृति लेकर समस्त साधु-समुदाय का आतिथ्य सत्कार भी किया। रात्रि मे मगनलालजी धीग तथा उनके सपूर्ण परिवार को युवाचार्यश्री ने आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया।

१९ जनवरी युवाचार्यश्री का जावड मे पदार्पण हुआ। यहा सामोता परिवार के सात घर है। व्यापारिक दृष्टि से ये नाथद्वारा, इन्दौर आदि क्षेत्रो मे कार्यरत है। युवाचार्यश्री के आगमन का शुभ सवाद सुनकर अधिकाश व्यक्ति इस अवसर पर पहुच गए। नाथद्वारा से सात किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित इस ग्राम मे नाथद्वारा के सैकडो सभ्रात व्यक्ति भी युवाचार्यश्री के स्वागतार्थ उपस्थित थे।

नाथद्वारा के मुन्सिफ मजिस्ट्रेट श्री भरत्चन्द्र ने कहा—'ध्यानयोग की

महान परम्परा के ज्योतिपुज साधक युवाचार्यश्री को अपने बीच पा हम प्रफुल्लित है। युवाचार्य ने ध्यान के प्रयोगो को जो वैज्ञानिकता प्रदान की है, वह मेरी दृष्टि मे केवल इनके द्वारा ही सर्वप्रथम सपन्न हुआ है। युवाचार्यश्री ने ग्रन्थितत्र और कपाय का जिस ढग से विवेचन किया है, वह अपूर्व है।'

उन्होने आगे कहा—'मै प्रेक्षाध्यान का निरन्तर प्रयोग कर रहा हू। प्रतिदिन आधा घटा समय मैं इस कार्य मे नियोजित करता हू। आज साल भर बाद मै अपने आप मे विचित्र परिवर्तन पा रहा हू। प्रेम, मानवीयता मृदुता आदि गुणो के समुचित विकास ने जहा मेरे मनोबल को मजबूत बनाया है, वही क्रोध, भयमुक्ति से परिवार मे शान्ति, सौहार्द और सद्भाव का वातावरण निर्मित हुआ है। मेरा विश्वास है कि युवाचार्यश्री का यह स्वस्थ सान्निध्य मेरी इस विकास यात्रा मे असाधारण सहयोगी सिद्ध होगा।

इस समारोह मे नाथद्वारा-रेलमगरा क्षेत्र के उपजिलाधीश श्री बी० एल० गुप्ता, हायर सैकण्डरी स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री जयदेव शर्मा, खमनोर पचायत के प्रधान श्री गणेशलाल शर्मा, पूर्व प्रिंसिपल श्री भवरलाल शर्मा, लेक्चरार रघुनाथ चित्रेश आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का सयोजन श्री ईश्वरसिंह सामोता ने किया।

जावड मे एक विशेष उद्देश्य से खमनोर के सैकडो युवक जुलूस रूप मे आए थे। वे उपजिलाधीश पर शराब का ठेका बद कराने के लिए दबाव डालना चाहते थे। यह अवसर उन्हे अपने इस लक्ष्य के अनुकूल लगा। युवाचार्यश्री ने उन युवको के प्रयास को उचित बताते हुए कहा—'शराब का प्रचलन आज अत्यधिक बढ रहा है। हिसा, आतक, बलात्कार आदि के लिए यह सबसे ज्यादा जिम्मेदार है। पहले व्यक्ति शराब को पीता है, और एक निश्चित अवधि के बाद शराब आदमी को पीने लग जाती है, जिससे मुक्ति पाना व्यक्ति के लिए असभव सा हो जाता है।'

उन्होने आगे कहा—'सरकार शराब के ठेको को इसलिए बद नही करना चाहती है कि उसे इससे आय होती है, ठेके आय के बहुत अच्छे स्रोत है। लेकिन जब इसी शराब को पीकर मनुष्य पागल, आतकवादी और समाज के सिरदर्द बन जाता है, समाज के सामने एक विकट समस्या को पैदा कर देता है, उस सिरदर्द को मिटाने के लिए, आतक, हिंसा को दबाने के लिए सरकार को प्रतिवर्ष लाखो-करोडो रुपये पानी की तरह बहाने पडते है।

लेकिन उसकी सरकार को कोई परवाह नही है। वह मूल समस्या को मिटाना नही चाहती। यदि शराब का प्रचलन सेवन बद हो जाए, तो समाज मे व्याप्त अधिकाश बुराइया स्वत कम हो जाए, मिट जाए। समाज मे शान्ति, अमन-चैन को स्थापित करने के लिए शराब मुक्त समाज की सरचना का होना अत्यन्त आवश्यक है।'

२० जनवरी को युवाचार्यश्री की इस यात्रा को विराम मिल गया। थामला से दो किलोमीटर दूर दो अभिन्न आत्माओ का मिलन हुआ और यह मिलन इस वर्ष मे आचार्यश्री से युवाचार्यश्री का अन्तिम पृथक् प्रवास सिद्ध हुआ है। यह विवरण युवाचार्यश्री की प्रभावी और महत्त्वपूर्ण यात्राओ का सक्षिप्त आकलन मात्र है।

आदर्श जीवन के उत्तुग शिखर पर

ऊचाई पर जलने वाला दीपक बहुतो को प्रकाश देने वाला होता है। ऊपरी सतह पर बैठे हुये व्यक्ति पर ध्यान अनायास चला जाता है, चाहे अच्छा काम करे या गलत काम करे, उनकी ओर सबका ध्यान जाएगा ही। आचार्य, युवाचार्य ऊपरी सतह पर आकर्षक व्यक्तित्व के धनी होते है। उनकी हर क्रिया का असर उनके शिष्य वर्ग पर होना अवश्यभावी है। तेरापथ धर्म-सघ का यह सदैव सौभाग्य रहा है इसके जितने आचार्य हुये, वे सब साधना मे बेजोड, प्रतिक्षण जागरूक, ज्योतिमय हुये है। उनकी सशक्त साधना से धर्म-सघ मे अध्यात्म ऊर्जा का अजस्र स्रोत प्रवाहित होता रहा है।

आचार्यश्री तुलसी उन ज्योतिर्धर आचार्यो की एक सशक्त कडी है। उनका प्रतिक्षण जागरूक व्यक्तित्व अलग ही आभास कराता है। प्रवृत्ति प्रधान जीवन मे निवृत्तिमय भावधारा आन्तरिक व्यक्तित्व को सतत निखारती रहती है।

बहुजनहिताय प्रवृत्ति करने वाले आचार्य तुलसी अपनी व्यक्तिगत साधना के प्रति अहर्निश जागरूक है। वे हमेशा की भाति प्रात ४ बजे नियमित रूप से उठते है, पर सोने का कोई नियत समय नही है। रात्रि मे सोने मे बारह-एक तक बज जाते है। उनका प्रतिक्षण जन-जन के कल्याण हेतु समर्पित है। वे जहा इस अवधि मे आगम कार्य, साधु-साध्वियो को अध्यापन कराते हैं, वहा समागन्तुक श्रद्धालु लोगो, जैन बधुओ तथा जैनेतर लोगो से मिलते है। उनकी समस्याओ को सुनते है और उनको समाधान देते है। उनके पास आने वाले आस्तिक-नास्तिक, बौद्धिक-अबौद्धिक सभी प्रकार के लोग होते है। अनपढ, गरीब, दलित, अनुसूचित लोग भी आचार्यश्री के पास बडी जिज्ञासा से आते है, उनसे मार्गदर्शन पाकर अपने को बदलते है, बुरी आदतो को छोड कर स्वच्छ जीवन जीने के लिये सकल्पबद्ध बनते है। हम आये दिन देखते है—आचार्यवर की अमृत वाणी को सुनकर पचास-पचास वर्षो की आदत तत्काल छोडकर सकल्पशील बन जाते है। ध्यान और स्वाध्याय का क्रम आचार्यवर का अविकल रूप से चल रहा है। बहोत्तर वर्ष की उम्र मे भी निरन्तर खडे-

लेकिन उसकी सरकार को कोई परवाह नही है। वह मूल समस्या को मिटाना नही चाहती। यदि शराब का प्रचलन सेवन बद हो जाए, तो समाज मे व्याप्त अधिकाश बुराइया स्वत कम हो जाए, मिट जाए। समाज मे शान्ति, अमन-चैन को स्थापित करने के लिए शराब मुक्त समाज की सरचना का होना अत्यन्त आवश्यक है।'

२० जनवरी को युवाचार्यश्री की इस यात्रा को विराम मिल गया। थामला से दो किलोमीटर दूर दो अभिन्न आत्माओ का मिलन हुआ और यह मिलन इस वर्ष मे आचार्यश्री से युवाचार्यश्री का अन्तिम पृथक् प्रवास सिद्ध हुआ है। यह विवरण युवाचार्यश्री की प्रभावी और महत्त्वपूर्ण यात्राओ का सक्षिप्त आकलन मात्र है।

आदर्श जीवन के उत्तुग शिखर पर

ऊचाई पर जलने वाला दीपक बहुतो को प्रकाश देने वाला होता है। ऊपरी सतह पर बैठे हुये व्यक्ति पर ध्यान अनायास चला जाता है, चाहे अच्छा काम करे या गलत काम करे, उनकी ओर सबका ध्यान जाएगा ही। आचार्य, युवाचाय ऊपरी सतह पर आकर्षक व्यत्त्विव के धनी होते है। उनकी हर क्रिया का असर उनके शिष्य वर्ग पर होना अवश्यभावी है। तेरापथ धर्म-सघ का यह सदैव सौभाग्य रहा है इसके जितने आचाय हुये वे सब साधना मे बेजोड, प्रतिक्षण जागरूक, ज्योतिर्मय हुये है। उनकी सशक्त साधना से धर्म-सघ मे अध्यात्म ऊर्जा का अजस्र स्रोत प्रवाहित होता रहा है।

आचार्यश्री तुलसी उन ज्योतिर्धर आचार्यो की एक सशक्त कडी है। उनका प्रतिक्षण जागरूक व्यक्तित्व अलग ही आभास कराता है। प्रवृत्ति प्रधान जीवन मे निवृत्तिमय भावधारा आन्तरिक व्यक्तित्व को सतत निखारती रहती है।

बहुजनहिताय प्रवृत्ति करने वाले आचार्य तुलसी अपनी व्यक्तिगत साधना के प्रति अहर्निश जागरूक है। वे हमेशा की भाति प्रात ४ बजे नियमित रुप से उठते है, पर सोने का कोई नियत समय नही है। रात्रि मे सोने मे बारह-एक तक बज जाते है। उनका प्रतिक्षण जन-जन के कल्याण हेतु समर्पित है। वे जहा इस अवधि मे आगम कार्य, साधु-साध्वियो को अध्यापन कराते हैं, वहा समागन्तुक श्रद्धालु लोगो, जैन बधुओ तथा जैनेतर लोगो से मिलते है। उनकी समस्याओ को सुनते है और उनको समाधान देते है। उनके पास आने वाले आस्तिक-नास्तिक, बौद्धिक-अबौद्धिक सभी प्रकार के लोग होते है। अनपढ, गरीब, दलित, अनुसूचित लोग भी आचायश्री के पास बडी जिज्ञासा से आते है, उनसे मार्गदर्शन पाकर अपने को बदलते है, बुरी आदतो को छोड कर स्वच्छ जीवन जीने के लिये सकल्पबद्ध बनते है। हम आये दिन देखते हैं—आचार्यवर की अमृत वाणी को सुनकर पचास-पचास वर्षो की आदत तत्काल छोडकर सकल्पशील बन जाते है। ध्यान और स्वाध्याय का क्रम आचार्यवर का अविकल रुप से चल रहा है। बहोत्तर वर्ष की उम्र मे भी निरतर खडे-

खडे ध्यान और स्वाध्याय करना अपने मे एक प्रेरक उपक्रम है। खानपान मे सीमित द्रव्यो का उपयोग करना, चीनी तथा चीनी की वनी वस्तु मात्र का परित्याग रखना खाद्य मयम का अनुकरणीय अनुष्ठान है। खाद्य सयम का प्रयोग उनके वर्षो से सलक्ष्य चल रहा है, आमेट चातुर्मास मे एक महीने से भी अधिक समय तक छह विगय का वर्जन किया, इस अवधि मे आछ (गर्म छाछ के ऊपर का पानी) का प्रयोग करते रहे।

गुरुकुलवास मे साधुओ का विवरण

दीक्षित होने के साथ ही साधु-साध्विया जप, ध्यान, स्वाध्याय आदि प्रवृत्तियो मे सलग्न वन जाते है। वहिर्मुखता को त्याग कर अन्तर्मुखता की दिशा मे गतिशील वन जाते है। उनका तप, जप, स्वाध्याय स्व-हित के लिए होता है। उनमे प्रचार पाने की आकाक्षा नही रहती, फिर भी उनकी प्रवृत्तियो से पूरा जनमानस अवगत हो, इससे लोगो को प्रेरणा मिले इस दृष्टि से आचार्यश्री के सान्निध्य मे रहने वाले साधुओ के ग्रुप का क्रम से सक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है—

१. मुनिश्री मधुकर

तपस्या—वेला-३, उपवास-१०, एकान्तर-२ महिना

वाचन (१) आगमसाहित्य-करीव ६०० पृष्ठ (२) आगमेतर-५ हजार पृष्ठ, स्वाध्याय-६० हजार गाथा

जप—प्रतिदिन लगभग आधा घटा। ध्यान-१५ मिनिट

मौन—चातुर्मास मे प्रतिदिन तीन घटा

वे ख्यात लेखन, युवक परिषद् का काय तथा समसामयिक अतरग विषयो के लेखन मे पूव की भाति जुडे हुए है।

मुनिश्री श्रीधर्मरुचि

तपस्या—उपवास-२१, पाच विगय वजन करीव आठ महीना तथा सात महीने व्यजन परिहार। वाचन-फुटकर।

मुनिश्री श्रेयासकुमार

तपस्या—उपवास-१३, अठाई-१, एकान्तर-१ महीना

जप—प्रतिदिन लगभग आधा घटा

वाचन—(१) आगम-४०० पृष्ठ (२) आगमेतर-१००० पृष्ठ

स्वाध्याय—१ लाख ७५ हजार गाथा परिमाण।

मुनिश्री दिनेशकुमार

वाचन (१) आगम-२००० पृष्ठ (२) आगमेतर-१२५० पृष्ठ

कठस्थ-६०० गाथा, स्वाध्याय-१ लाख ६० हजार गाथा

जप—नमस्कार महामत्र का सवा लाख

साधु-साध्वियो की जैन तत्व प्रवेश परीक्षा मे प्रथम व साधुओ की तत्वचर्चा परीक्षा मे वे प्रथम रहे।

मुनिश्री हीरालाल

तपस्या—उपवास-५३, बेला-३, तेला-२, एकान्तर-२ महिना

जप—प्रतिदिन १ घटा

आगम कार्य मे वे प्रारभत सलग्न है।

मुनिश्री धनजयकुमार

जप-ध्यान-प्रतिदिन १ घटा।

वाचन—(१) आगम-५०० पृष्ठ (२) आगमेतर-२००० पृष्ठ

कण्ठस्थ—१००० गाथा। स्वाध्याय १ लाख ५० हजार गाथा।

अमृत-महोत्सव पर समायोजित निबन्ध एव कहानी प्रतियोगिता मे प्रथम श्रेणी मे क्रमश द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे।

मुनिश्री प्रशातकुमार

जप-ध्यान—प्रतिदिन १ घटा, उपवास-४

वाचन-आगम-३०० पृष्ठ, आगमेतर-२००० पृष्ठ, कठस्थ-५०० गाथा, स्वाध्याय-एक लाख ५० हजार गाथा।

निबन्ध प्रतियोगिता मे द्वितीय श्रेणी मे प्रथम स्थान पर रहे।

मुनिश्री सुखलाल

६ महिने गुरुकुलवास मे रहे। तपस्या-५ आयबिल

वाचन—४००० पृष्ठ, ध्यान-जप-प्रतिदिन ४ घटा, विशेष-अणुव्रत कार्यक्रमो की समायोजना, लेखन मे विशेष रुप से सलग्न है।

मुनिश्री मोहजीतकुमार

उपवास-६, वाचन-२००० पृष्ठ, ध्यान-१ घटा

स्वाध्याय-२०० गाथा, जप-प्रतिदिन आधा घटा

मुनिश्री भूपेन्द्रकुमार

वाचन-४००० पृष्ठ, जप-ध्यान-प्रतिदिन आधा घटा

मुनि सुमेरमल "लाडनू"

तपस्या-उपवास-१४, जप-प्रतिदिन २ घटा

सत्ताईस दिवसीय जप अनुष्ठान-४ वार

वाचन-२००० पृष्ठ, सपादन-तेरापथ दिग्दर्शन १९८४

विशेप-कायक्रम-सयोजन का काय देखते है। आमेट चातुर्मास मे रात्रि मे जैन रामायण पर प्रवचन दिया।

मुनिश्री विजयकुमार

तपस्या-उपवास १८, आयविल-३

वाचन—(१) आगम-२०० पृष्ठ (२) आगमेतर-३००० पृष्ठ

स्वाध्याय-५० हजार गाथा, कठस्थ-२०० गाथा

जप—सवा लाख जप से अधिक (ॐ भिक्षु ॐ अभीराशिको नम, नवकार मत्र) प्रकाशित पुस्तक-मधु कलश (द्वितीय सस्करण) आदर्श साहित्य सघ प्रकाशन।

विशेप-मध्याह्न का व्यारयान।

मुनिश्री उदितकुमार

तपस्या—निरन्तर पाच विगय परिहार।

वाचन-आगम-३०० पृष्ठ, आगमेतर-१००० पृष्ठ

स्वाध्याय-६५ हजार गाथा, कठस्थ-२०० गाथा, जप-प्रतिदिन आधा घटा

विशेष—प्रात आचार्यवर से पूव उपदेश।

मुनिश्री धर्मेशकुमार

तपस्या-उपवास-१२, तेला-१

वाचन-आगम-५०० पृष्ठ, आगमेतर-२००० पृष्ठ

कठस्थ-५०० गाथा, स्वाध्याय-९५ हजार गाथा

जप-आधा घटा, ध्यान १ घटा, मौन-१ घटा

विशेप-तत्त्वचर्चा परीक्षा, जैनतत्त्व प्रवेश परीक्षा, श्रमण प्रतिक्रमण (द्वितीय श्रेणी) परीक्षा मे क्रमश द्वितीय, तृतीय व प्रथम रहे।

मुनिश्री अरविन्दकुमार

आगम-वाचन-२०० पृष्ठ, आगमेतर-४०० पृष्ठ, कठस्थ-१०० गाथा

स्वाध्याय-३० हजार गाथा, जप-१५ मिनट, अनुष्ठान उवसग्गहर स्तोत्र आदि।

विशेप-निबन्ध प्रतियोगिता (द्वितीय श्रेणी) मे तृतीय स्थान रहे।

मुनिश्री सुमेरमल सुदर्शन

तपस्या-उपवास-४

विशेष-आगम सपादन कार्य मे प्रारभ से सलग्न।

मुनिश्री दुलहराज

तपस्या-उपवास-१०, जप प्रतिदिन ३ घटा, जप के अनेक प्रयोग प्रयोगात्मक अनुष्ठान।

विशेष-साहित्य सपादन, टीपन लेखन

मुनिश्री श्रीचन्द

वाचन-८०० पृष्ठ, उपवास ५,

विशेष-विद्यार्थी मुनियो को कालू कौमुदी अध्यापन तथा विहार को छोडकर नियमित योगासन।

मुनिश्री राजेन्द्रकुमार

तपस्या-आयबिल ४, उपवास-३०, ध्यान और जप-प्रतिदिन २ घटा

कठस्थ-४०० गाथा, वाचन-५०० पृष्ठ, स्वाध्याय १ लाख २० हजार

विशेष-भिक्षु शब्दानुशासन के द्वितीय खड का सपादन (चालू)

मुनिश्री मुदितकुमार

तपस्या-आयबिल-५, उपवास ११, ध्यान व जप प्रतिदिन २½ घटा

वाचन-२०० पृष्ठ, स्वाध्याय-९६ हजार गाथा

विशेष-आगम कार्य मे विशेष रूप से सलग्न।

मुनिश्री ऋषभकुमार

तपस्या-उपवास-२, जप-आधा घटा, कठस्थ-१७०० गाथा

मुनिश्री लोकप्रकाश

तपस्या-उपवास-६, तेला-१, कठस्थ-२०० गाथा, स्वाध्याय-१५०० पृष्ठ

मुनिश्री बालचद (गगाशहर)

तपस्या-उपवास १८, बेला ४, एकान्तर-२ महिना, मौन २ घटा

जप-४ माला प्रतिदिन, स्वाध्याय-३०० गाथा

मुनिश्री कमलकुमार

तपस्या-वर्षीतप, बे० ६, ते० १, वाचन-२००० पृ० कठस्थ १०० गा० स्वाध्याय-३०० गाथा प्रतिदिन, जप-१५ मिनट, अनुष्ठान-तीन महिने एक

घटा जप

विशेष—मध्याह्न व्याख्यान।

मुनिश्री लाभरूचि

तपस्या-१५ आछ के आगार से, उप० ८, कठस्थ-३०० गाथा, वाचन-आवश्यक सूत्र, स्वाध्याय-४०,००० गाथा, जप-१५ मिनट

मुनिश्री कि

तपस्या-उप० १५, ते० १, वाचन-५००० पृष्ठ

जप व ध्यान २ घटा, अनुष्ठान-तीन दिनो का मौन चौविहार तेला

साहित्य प्रकाशन—१ नमस्कार महामत्र की प्रभावक कथाए गतिमान प्रकाशन, जयपुर

२ प्रेक्षाध्यान—जीवन का विज्ञान, तुलसी अध्यात्म नीडम्, लाडनू

विशेष—प्रेक्षाध्यान व जीवन-विज्ञान शिविरो मे सक्रिय प्रशिक्षण

मुनिश्री धर्मेन्द्रकुमार

तपस्या-उप० २८, बे० १, ते० १, वाचन-५००० पृष्ठ

जप व ध्यान-२ घटा, अनुष्ठान-त्रिदिवसीय विशेष जप उपक्रम

साध्वियो का विवरण

साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे वक्तृत्व कला विकास एव सस्कार निर्माण हेतु गोष्ठिया समायोजित होती रहती है। भाषण व वाद-विवाद प्रतियोगिताए आदि कार्यक्रम होते रहते है। आलोच्य वर्ष मे साध्वी प्रमुखाश्री जी ने निम्नोक्त ग्रन्थो का अध्यापन कराया—

१ सूत्रकृताग
२ दशवैकालिक
३ उत्तराध्ययन (कुछ अध्ययन)
४ ईशावास्योपनिषद्
५ विशेषावश्यक भाष्य (चालू)
६ कठोपनिषद्
७ परम्परा की जोड
८ तेरापथ मर्यादा और व्यवस्था
९ स्याद्वादमजरी

अध्ययनरत साध्विया—साध्वीश्री सूरजकवर, साध्वीश्री चदनवाला, साध्वीश्री जिनप्रभा, साध्वीश्री कल्पलता, साध्वीश्री विमलप्रज्ञा, साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञा, साध्वीश्री निर्वाणश्री आदि।

साध्वी प्रमुखाश्री द्वारा लिखित पुस्तके—

१ दस्तक शब्दो की—आदर्श साहित्य सघ
२ बहता पानी निरमला—आदर्श साहित्य सघ

ादित पुस्तके

१ बूद-बूद से घट भरे (द्वितीय सस्करण)
२ अमृत-सदेश
३ अतीत का विसर्जन अनागत का स्वागत
४ जैन तत्त्व विद्या
५ झीणी चर्चा

विशेष विवरण

साध्वीश्री सुषमाकुमारी

कण्ठस्थ—६०० गाथा, जप—प्रतिदिन आधा घण्टा
मौन—प्रतिदिन दो घटा, वाचन—१००० पृष्ठ

साध्वीश्री विभाश्री

कठस्थ—४०० गाथा, स्वाध्याय—प्रतिदिन ३०० गाथा, जप—१५

मिनट

वाचन—(१) आगम—५० पृष्ठ (२) आगमेतर—१०० पृष्ठ

साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञा

जप—प्रतिदिन १५ मिनट, स्वाध्याय—२१ हजार गाथा

वाचन—(१) आगम—१००० पृष्ठ (२) आगमेतर—१५०० पृष्ठ

विशेष—श्रमण प्रतिक्रमण परीक्षा, निवन्ध प्रतियोगिता मे क्रमश प्रथम व तृतीय

साध्वीश्री स्वर्णरेखा

कठस्थ—२०० गाथा, स्वाध्याय—४१ हजार गाथा मौन—एक घटा

सपादित पुस्तक—अमृत कलश

साध्वीश्री वर्धमानश्री

जप—प्रतिदिन २१ माला (विभिन्न मत्रो की), स्वाध्याय—५० हजार गाथा, वाचन (१) आगम—४०० पृष्ठ (२) आगमेतर—१००० पृ०

विशेप—जैन तत्त्व प्रवेश परीक्षा मे तृतीय

साध्वीश्री विमलप्रज्ञा

जप—प्रतिदिन एक घटा, स्वाध्याय—५०,००० गाथा

वाचन—आगम—४०० पृष्ठ, आगमेतर—२५०० पृष्ठ

विशेष—निबन्ध प्रतियोगिता मे तृतीय

साध्वीश्री जिनप्रभा

जप—सवा लाख (ॐ अभीराशिको नम), स्वाध्याय—५० हजार गाथा, वाचन—(१) आगम—४०० पृष्ठ (२) आगमेतर—१५०० पृष्ठ

सपादित पुस्तकें—(१) अमृत-कलश (२) उनकी कहानी मेरी जुवानी

विशेष—भगवती जोड के प्रूफ सशोधन मे सलग्न। साप्ताहिक विज्ञप्ति सपादन (अक्टूबर ८५ तक)

साध्वीश्री कल्पलता

जप—सवा लाख (पार्श्वनाथ व स्वामीजी का) प्रतिदिन ५ माला (ॐ अभीराशिको नम)

वाचन—आगम—५०० पृष्ठ, आगमेतर—२५०० पृष्ठ

सपादन—साप्ताहिक विज्ञप्ति

साध्वीश्री निर्वाणश्री

कठस्थ—२०० गाथा, स्वाध्याय—२० हजार गाथा

वाचन—(१) आगम—४०० पृ० (२) आगमेतर—२५०० पृष्ठ

लेखन—सोलह सतियो का चरित्र

सपादन—उनकी कहानी मेरी जुबानी, साप्ताहिक विज्ञप्ति (नवम्बर १९८५ से)

विशेष—निवन्ध व कहानी प्रतियोगिता मे क्रमश द्वितीय व प्रथम

साध्वीश्री अनुशासनाश्री

कठस्थ—२०० गाथा, स्वाध्याय—५१ हजार गाथा

मौन—प्रतिदिन २ घटा, वाचन—१३०० पृष्ठ

साध्वीश्री शारदाश्री

कठस्थ—४०० गाथा, स्वाध्याय—प्रतिदिन ३०० गाथा

जप—प्रतिदिन—आधा घटा, मौन—दो घटा

वाचन—आगम—५० पृष्ठ, आगमेतर—७०० पृष्ठ

विशेष—जैन तत्त्व प्रवेश परीक्षा मे तृतीय

साध्वीश्री चित्रलेखा

जप—प्रतिदिन आधा घटा, स्वाध्याय—२१ हजार गाथा, मौन—एक घटा, वाचन—८०० पृष्ठ

ीश्री अशोकश्री

जप—स्वाध्याय—प्रतिदिन तीन घटा

मिनट

वाचन—(१) आगम—५० पृष्ठ (२) आगमेतर—१०० पृष्ठ

साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञा

जप—प्रतिदिन १५ मिनट, स्वाध्याय—२१ हजार गाथा

वाचन—(१) आगम—१००० पृष्ठ (२) आगमेतर—१५०० पृष्ठ

विशेष—श्रमण प्रतिक्रमण परीक्षा, निबन्ध प्रतियोगिता मे क्रमश प्रथम व तृतीय

साध्वीश्री स्वर्णरेखा

कठस्थ—२०० गाथा, स्वाध्याय—४१ हजार गाथा मौन—एक घटा

सपादित पुस्तक—अमृत कलश

साध्वीश्री वर्धमानश्री

जप—प्रतिदिन २१ माला (विभिन्न मत्रो की), स्वाध्याय—५० हजार गाथा, वाचन (१) आगम—४०० पृष्ठ (२) आगमेतर—१००० पृ०

विशेष—जैन तत्त्व प्रवेश परीक्षा मे तृतीय

साध्वीश्री विमलप्रज्ञा

जप—प्रतिदिन एक घटा, स्वाध्याय—५०,००० गाथा

वाचन—आगम—४०० पृष्ठ, आगमेतर—२५०० पृष्ठ

विशेष—निबन्ध प्रतियोगिता मे तृतीय

साध्वीश्री जिनप्रभा

जप—सवा लाख (ॐ अभीराशिको नम), स्वाध्याय—५० हजार गाथा, वाचन—(१) आगम—४०० पृष्ठ (२) आगमेतर—१५०० पृष्ठ

सपादित पुस्तके—(१) अमृत-कलश (२) उनकी कहानी मेरी जुबानी

विशेष—भगवती जोड के प्रूफ सशोधन मे सलग्न। साप्ताहिक विज्ञप्ति सपादन (अक्टूबर ८५ तक)

साध्वीश्री कल्पलता

जप—सवा लाख (पार्श्वनाथ व स्वामीजी का) प्रतिदिन ५ माला (ॐ अभीराशिको नम)

वाचन—आगम—५०० पृष्ठ, आगमेतर—२५०० पृष्ठ

सपादन—साप्ताहिक विज्ञप्ति

साध्वीश्री निर्वाणश्री

कठस्थ—२०० गाथा, स्वाध्याय—२० हजार गाथा

वाचन—(१) आगम—४०० पृ० (२) आगमेतर—२५०० पृष्ठ

लेखन—सोलह सतियो का चरित्र

सपादन—उनकी कहानी मेरी जुबानी, साप्ताहिक विज्ञप्ति (नवम्बर १९८५ से)

विशेप—निवन्ध व कहानी प्रतियोगिता मे क्रमश द्वितीय व प्रथम

साध्वीश्री अनुशासनाश्री

कठस्थ—२०० गाथा, स्वाध्याय—५१ हजार गाथा

मौन—प्रतिदिन २ घटा, वाचन—१३०० पृष्ठ

साध्वीश्री शारदाश्री

कठस्थ—४०० गाथा, स्वाध्याय—प्रतिदिन ३०० गाथा

जप—प्रतिदिन—आधा घटा, मौन—दो घटा

वाचन—आगम—५० पृष्ठ, आगमेतर—७०० पृष्ठ

विशेप—जैन तत्त्व प्रवेश परीक्षा मे तृतीय

साध्वीश्री चित्रलेखा

जप—प्रतिदिन आधा घटा, स्वाध्याय—२१ हजार गाथा, मौन—एक घटा, वाचन—८०० पृष्ठ

ीश्री अशोकश्री

जप—स्वाध्याय—प्रतिदिन तीन घटा

खण्ड-२

अग्रगण्य—निकाय व्यवस्था प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल

सहयोगी—मुनिश्री रणजीतकुमार, मुनिश्री सुमनकुमार*, मुनिश्री पारसकुमार

चातुर्मास—बालोतरा (राजस्थान)

यात्रा—जसोल से उदयपुर—१०५५ किलोमीटर, क्षेत्र—४५

मुनिश्री रणजीत, मुनिश्री सुमन* एव मुनिश्री पारस ने केन्द्र द्वारा निर्दिष्ट छह-छह थोकडे कण्ठस्थ किये। मुनिश्री सुमन कुमार ने आगम तथा तात्विक पुस्तके, मुनिश्री रणजीत ने व्याख्यानोपयोगी कुछ पुस्तके पढी।

तपस्या

मुनिश्री बुद्धमल—उप० ३२, मुनिश्री पारस उप० २०, बेला ३, पचोला, सात, आठ और तेरह—एक-एक

बालोतरा चातुर्मास मे भाई-बहिनो की तपस्या का विवरण इस प्रकार हैं—भाइयो मे—बारी के उपवास—२, आयविल की बारी—३ पचरगी—२ $\frac{२}{१७}$, $\frac{३}{१६}$, $\frac{४}{९}$, $\frac{५}{५}$, $\frac{८}{७}$, $\frac{९}{१}$, $\frac{१७}{१}$

बहिनो मे—बारी के उपवास ७, आयबिल की बारी ७, श्रावण भाद्र मे एकातर ६३, वर्षीतप १०, बेले-बेले तप ५, तेले-तेले तप ४, नवरगी १, पचरगी ५, $\frac{२}{५०}$, $\frac{३}{७३}$, $\frac{४}{३९}$, $\frac{५}{३७}$, $\frac{६}{७}$, $\frac{७}{९}$, $\frac{९}{१३}$, $\frac{१०}{२}$, $\frac{११}{१}$

कार्यक्रम एव सपर्क

जोधपुर—जाटावास मे—९ मार्च को कवि सम्मेलन हुआ। इसमे स्थानीय १५ कवियो ने भाग लिया। १० मार्च को विचार परिषद्, २० मार्च को महामदिर मे जनसभा, २२ मार्च को पावटा मे विचार-परिषद् तथा २४ मार्च को ईनर हीनक्लब द्वारा सभा आयोजित हुई। रोटरी क्लब मे मुनिश्री का प्रभावी भाषण हुआ।

३१ मार्च को सरदारपुरा मे 'आज के परिप्रेक्ष मे महावीर' विषय पर विचार परिषद् हुई। इसमे पूव न्यायाधीश छगाणी तथा विधायक विरदमलजी सिंघी आदि ने भाग लिया।

---

*वर्तमान मे गणवाहर

खण्ड-२

अग्रगण्य—निकाय व्यवस्था प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल

सहयोगी—मुनिश्री रणजीतकुमार, मुनिश्री सुमनकुमार*, मुनिश्री पारसकुमार

चातुर्मास—बालोतरा (राजस्थान)

यात्रा—जसोल से उदयपुर—१०५५ किलोमीटर, क्षेत्र—४५

मुनिश्री रणजीत, मुनिश्री सुमन* एव मुनिश्री पारस ने केन्द्र द्वारा निर्दिष्ट छह-छह थोकडे कण्ठस्थ किये। मुनिश्री सुमन कुमार ने आगम तथा तात्विक पुस्तके, मुनिश्री रणजीत ने व्याख्यानोपयोगी कुछ पुस्तके पढी।

तपस्या

मुनिश्री बुद्धमल—उप० ३२, मुनिश्री पारस उप० २०, वेला ३, पचोला, सात, आठ और तेरह—एक-एक

बालोतरा चातुर्मास मे भाई-बहिनो की तपस्या का विवरण इस प्रकार है—भाइयो मे—बारी के उपवास—२, आयबिल की बारी—३ पचरगी—२

२/१७, ३/२६, ४/९, ५/५, ८/७, ९/१, १७/१

बहिनो मे—बारी के उपवास ७, आयबिल की बारी ७, श्रावण भाद्र मे एकातर ६३, वर्षीतप १०, बेले-बेले तप ५, तेले-तेले तप ४, नवरगी १, पचरगी ५, २/५०, ३/७३, ४/३९, ५/३७, ६/७, ७/९, ९/१३, १०/२, ११/१

कार्यक्रम एव सपर्क

जोधपुर—जाटावास मे—९ मार्च को कवि सम्मेलन हुआ। इसमे स्थानीय १५ कवियो ने भाग लिया। १० मार्च को विचार परिषद्, २० मार्च को महामदिर मे जनसभा, २२ मार्च को पावटा मे विचार-परिषद् तथा २४ मार्च को ईनर हीनक्लब द्वारा सभा आयोजित हुई। रोटरी क्लब मे मुनिश्री का प्रभावी भाषण हुआ।

३१ माच को सरदारपुरा मे 'आज के परिप्रेक्ष मे महावीर' विषय पर विचार परिषद् हुई। इसमे पूर्व न्यायाधीश छगाणी तथा विधायक विरदमलजी सिंघी आदि ने भाग लिया।

---

*वर्तमान मे गणवाहर

खण्ड-२

अग्रगण्य—निकाय व्यवस्था प्रमुख मुनिश्री बुद्धमल

सहयोगी—मुनिश्री रणजीतकुमार, मुनिश्री सुमनकुमार*, मुनिश्री पारसकुमार

चातुर्मास—बालोतरा (राजस्थान)

यात्रा—जसोल से उदयपुर—१०५५ किलोमीटर, क्षेत्र—४५

मुनिश्री रणजीत, मुनिश्री सुमन* एव मुनिश्री पारस ने केन्द्र द्वारा निर्दिष्ट छह-छह थोकडे कण्ठस्थ किये। मुनिश्री सुमन कुमार ने आगम तथा तात्विक पुस्तके, मुनिश्री रणजीत ने व्याख्यानोपयोगी कुछ पुस्तके पढी।

तपस्या

मुनिश्री बुद्धमल—उप० ३२, मुनिश्री पारस उप० २०, वेला ३, पचोला, सात, आठ और तेरह—एक-एक

बालोतरा चातुर्मास मे भाई-बहिनो की तपस्या का विवरण इस प्रकार है—भाइयो मे—बारी के उपवास—२, आयबिल की बारी—३ पचरगी—२
$\frac{२}{१७}$, $\frac{३}{१६}$, $\frac{४}{६}$, $\frac{५}{५}$, $\frac{८}{७}$, $\frac{९}{१}$, $\frac{१७}{१}$

बहिनो मे—बारी के उपवास ७, आयबिल की बारी ७, श्रावण भाद्र मे एकातर ६३, वर्षीतप १०, वेले-वेले तप ५, तेले-तेले तप ४, नवरगी १, पचरगी ५, $\frac{२}{५०}$, $\frac{३}{७३}$, $\frac{४}{३८}$, $\frac{५}{३७}$, $\frac{८}{७}$, $\frac{७}{९}$, $\frac{९}{१३}$, $\frac{१०}{२}$, $\frac{११}{१}$

कार्यक्रम एव सपर्क

जोधपुर—जाटावास मे—९ मार्च को कवि सम्मेलन हुआ। इसमे स्थानीय १५ कवियो ने भाग लिया। १० मार्च को विचार परिषद्, २० मार्च को महामदिर मे जनसभा, २२ मार्च को पावटा मे विचार-परिषद् तथा २४ मार्च को ईनर हीलक्लब द्वारा सभा आयोजित हुई। रोटरी क्लब मे मुनिश्री का प्रभावी भाषण हुआ।

३१ माच को सरदारपुरा मे 'आज के परिप्रेक्ष मे महावीर' विषय पर विचार परिषद् हुई। इसमे पूव न्यायाधीश छगाणी तथा विधायक बिरदमलजी सिंघी आदि ने भाग लिया।

---

*वर्तमान मे गणवाहर

३ अप्रेल/महावीर जयती के दिन अनेक महत्त्वपूर्ण व्यक्तियो ने भाग लिया ।

७ अप्रेल/सरदारपुरा मे विचार परिषद् । विषय—'आज के परिप्रेक्ष मे अहिंसा' जोधपुर आकाशवाणी के उपनिदेशक काजी मुहम्मद अनीस उल हक तथा प्रोफेसर कुमारी डा० रमासिह (अध्यक्ष हिंदी विभाग, जोधपुर विश्व विद्यालय) आदि ने भाग लिया । यह कार्यक्रम १५ अप्रेल को जोधपुर आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किया गया ।

२० अप्रेल को जोधपुर आकाशवाणी से 'महावीर' पर मुनिश्री से किये गये प्रश्नो के आधार पर एक वार्ता प्रसारित की गई ।

२३ मई से तीन दिनो का पचपदरा मे बालको का तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर लगा ।

३० मई को आकाशवाणी जोधपुर से हिंदी कविताओ का प्रसारण हुआ । ये कविताए जोधपुर मे ग्रहण की गई थी ।

२० जून को बालोतरा मे जूनाकोट के मैदान मे स्वागत समारोह समायोजित हुआ । १२ जुलाई को प्रमाण-पत्र वितरण जिला एव सत्र न्यायाधीश मुहम्मद असगर अली ने किया ।

२८ जुलाई को स्थानीय कवियो का सम्मेलन रखा गया, जिसमे हीरालाल कन्नोजिया, लालचद 'पुनीत', रतन लाल शर्मा (एडवोकेट) जगदीश व्यास, शान्तिलाल, 'शान्त' तथा कमलेश चोपडा आदि ने भाग लिया ।

११ अगस्त को आयोजित युवक गोष्ठी मे मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ । १५ अगस्त से २१ अगस्त तक अणुव्रत सप्ताह के कार्यक्रम रहे । उनमे मुख्य अतिथि तथा वक्ता के रूप मे भाग लेने वालो के मुख्य नाम इस प्रकार है—सनातनधर्मी सत रामचरणदासजी, जिला एव सत्र न्यायाधीश मुहम्मद असगर अली खान, डा० घनश्यामदासजी, न्यायाधीश मुहम्मद यूसुफ, धारा-शास्त्री रतनलालजी शर्मा, विधायक चपालालजी बाठिया जे० सी० सचिव ओमकुमार बाठिया, जे० सी० अध्यक्ष प्रेमकुमार पटवारी, पूव न्यायाधीश सोहनराजजी कोठारी ।

१० अक्टूबर को महिला मडल की ओर से सचालित ज्ञानशाला का उद्घाटन हुआ । उसमे प्राय सवा सौ बालको तथा की सख्या हुई है ।

३१ अक्टूबर को नगर काग्रेस कमेटी की ओर से मुनिश्री की सन्निधि मे राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। कार्यक्रम तेरापथी सभा भवन मे ही रखा गया। उसमे निम्नोक्त व्यक्तियो के भाषण हुए—नगरपालिका अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर खत्री, नगर काग्रेस महामत्री श्री केसरीमल जटिया, ब्लाक काग्रेस अध्यक्ष श्री भवरलाल एडवोकेट, धाराशास्त्री हस्तीमलजी, न्यायाधीश श्री मुहम्मद यूसुफ, पूर्व न्यायाधीश श्री मूलचद राठी, नाथूलालजी शर्मा, रामनिवासी शर्मा, सोहनराजजी कोठारी आदि।

१४ नवम्बर को आचार्यश्री का जन्म दिन मनाया गया। उसी समय सभा भवन मे 'तुलसी स्वाध्याय कक्ष' चालू किया गया। उसमे वकील श्री डूगरमल कोठारी द्वारा पुस्तके प्रदान की गई। वहा पेटी मे मूल्य डालकर तथा रजिस्टर मे पुस्तक तथा पुस्तक विक्रेता का नाम लिखकर स्वय पुस्तक खरीदने की व्यवस्था भी रखी गई।

१६ नवबर को नैनीदेवी कोठारी की स्मृति मे 'स्नेहसुमन' स्मारिका का विमोचन मुनिश्री के सान्निध्य मे जूनाकोट के ओसवाल भवन मे हुआ। उसमे वक्ता के रूप मे विशेष भाग लेने वाले व्यक्तियो के नाम निम्नोक्त है।

राजस्थान के लोक आयुक्त श्री मोहनलाल श्रीमाल, राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री जसराज चौपडा, राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री मिलापचद जैन, पूर्व विधान सभा सचिव श्री धर्मेन्द्र परिहार, मारवाड चेंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष श्री चपालाल सालेचा, डिस्ट्रिक्टजज सवाईमाधोपुर अमरसिह गोधारा, डिस्ट्रिक्टजज बालोतरा श्री जुगराज वर्मा, प्रोफेसर जोधपुर विश्वविद्यालय श्री शक्तिदान, शायर तथा अध्यापक पारस रोमानी, पूर्व जिलाधीश श्री जगत्प्रकाश माथुर।

इनके अतिरिक्त पर्युषण पर्व के अष्टाह्निक कायक्रम घोषित क्रम से होते रहे। पट्टोत्सव तथा चरमोत्सव के कायक्रम भी दो-दो चरणो मे सपन्न हुए। महिला मडल तथा कन्या मडल की समय-समय पर गोष्ठिया हुई। सगीत-गोष्ठिया तथा अन्त्याक्षरी के कार्यक्रम भी अनेक बार हुए।

पर्युषण पर्व के अवसर पर ६६ व्यक्तियो ने श्रमणोपासक साधना मे भाग लिया। उनमे २८ भाई तथा ४१ बहिने थी। उक्त अवसर पर भाइयो तथा बहिनो मे पृथक्-पृथक् अखड जप चला। 'असिआउसा' का जप लगभग ५ करोड हुआ।

अग्रगण्य—मुनिश्री सुखलाल

सहयोगी—मुनिश्री मोहजीत कुमार, मुनिश्री भूपेन्द्रकुमार

चातुर्मास—भीलवाडा (राजस्थान)

चातुर्मास मे सपन्न विविध कार्यक्रम-सघीय कार्यक्रमो के अतिरिक्त रविवासरीय प्रवचनमाला व अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का समायोजन हुआ। भीलवाडा जिले मे करीव १००० अणुव्रत परीक्षाए हुई। अणुव्रत शिक्षक सघ का गठन हुआ। विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा आयोजित सत समागम मे करीव चार हजार की महती उपस्थिति मे मुनिश्री का प्रभावी प्रवचन हुआ। निरकारी सत्सग मडल मे भी मुनिश्री का प्रवचन हुआ। अहिंसा सार्वभौम कार्यक्रम, कवि-गोष्ठी, कला प्रदशनी, तत्त्व ज्ञान परीक्षाए सपन्न हुई।

मुनिश्री का निम्नोक्त रचनात्मक प्रवृत्तियो मे अपेक्षित योगदान रहा अणुव्रत साधना सदन विद्यालय, अणुव्रत ग्रामभारती, अणुव्रत ग्राम निर्माण योजना के अन्तगत विनयरपुम्, आम्रावली, आदर्शपुरम, आदि गावो मे रचनात्मक कार्यक्रम हुए। छात्रो का एक शिविर भी लगा।

साहित्य—मुनिश्री सुखलाल की प्रकाशित पुस्तके—(१) कथाओ मे पवित्र प्रेम (२) यह है जीने की कला (३) अमृत क्षण (४) नैतिक क्रान्ति (५) अणुव्रत एक परिचय। नया लेखन (१) गाव-गाव पाव-पाव (२) जोगी तो रमता भला। मुनिश्री मोहजीत कुमार का नया लेखन—जन-जन की दृष्टि मे आचार्यश्री तुलसी।

समाचार—लेख प्रकाशन—(दैनिक पत्रो मे) लोक जीवन, प्रभावित, प्रात काल, भीलवाडा सदेश, जैन समाज, जय भारत, न्याय, नवज्योति, जलते दीप। साप्ताहिक पत्रो, मे सघीय पत्र-पत्रिकाओ के अतिरिक्त अहिंसा, समाज-सदेश, जैन जगत्, कथालोक तीर्थंकर आदि।

अग्रगण्य मुनिश्री राजकरण

सहयोगी—मुनिश्री गुणचद, मुनिश्री पूनमचद, मुनिश्री गगाराम, मुनिश्री पूर्णानन्द, मुनिश्री राजकुमार।

चातुर्मास—गगाशहर (वीकानेर—राजस्थान)

यात्रा—२८८१ किलोमीटर, क्षेत्र—५५

सन् ८४ का फारविसगज चातुर्मास परिसपन्न कर मात्र ७७ दिनो मे १६८५ किलोमीटर यात्रा कर जसोल मर्यादा-महोत्सव पर आचार्यवर के दर्शन किये। छह वर्षीय पूर्वोत्तर राज्यो की ६००० कि० मी० की यात्रा मुनिश्री ने

सानन्द सपन्न की है। जसोल मे उनकी गगाशहर सेवा केन्द्र की नियुक्ति हुई।

नाम	तपस्या	कठस्थ
मुनिश्री गुणचद	$\frac{२}{३}$	
मुनिश्री पूनमचद	$\frac{१}{५}$	
मुनिश्री राजकरण	$\frac{१}{११६}$	६ थोकडे
मुनिश्री गगाराम	$\frac{१}{१४५}$, $\frac{२}{३}$	
मुनिश्री पूर्णानन्द	$\frac{१}{९२}$, $\frac{२}{१२}$, $\frac{३}{४}$	६ थोकडे
मुनिश्री राजकुमार	$\frac{१}{९१}$, $\frac{२}{१०}$, $\frac{३}{३}$, $\frac{५}{१}$, $\frac{८}{१}$	६ थोकडे, अन्य ४०० गाथा

श्रावक-श्राविकाओ मे तपस्या

$\frac{१}{५१०५}$, $\frac{२}{१७५}$, $\frac{३}{७५}$, $\frac{४}{५६}$, $\frac{५}{१३}$, $\frac{६}{१०}$, $\frac{७}{१८}$, $\frac{८}{५७}$, $\frac{९}{१३}$, $\frac{१०}{२}$, $\frac{११}{३}$, $\frac{१२}{२}$, $\frac{१३}{३}$, $\frac{१४}{२}$, $\frac{१५}{७}$, $\frac{१६}{१}$, $\frac{३१}{१}$, $\frac{४१}{१}$ एकान्तर—१५०

३१ श्रीमती मनोहरी आचलिया तथा ४१ की तपस्या श्रीमती भीखी छाजेड ने की।

पचसूत्रीय मकल्प ५००, मत्र दीक्षा—२२६, सम्यक्त्व दीक्षा ८००, व्रतदीक्षा—६४, पाच थोकडा सीखने वाले—२०, अणुव्रत परीक्षार्थी—८०, श्रमणोपासक दीक्षा—४२, अमृत-महोत्सव पर घोपित तप-जप कायक्रम मे जप—५० करोड, तप—८०५१ आयबिल।

५ माच को गगाशहर प्रवेश। ३ अप्रेल को महावीर जयती कार्यक्रम। २३ अप्रैल को अक्षय तृतीया पर २२ भाई-बहिनो द्वारा वर्षी तप का पारणा। १७ मई से मुनिश्री के सान्निव्य मे तत्त्व ज्ञान प्रशिक्षण शिविर मे ८२ विद्यार्थियो ने भाग लिया। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत भावात्मक एकता दिवस पर सभी धर्मो के प्रतिनिधि उपस्थित थे, जिनमे स्वामी राम-सुखदासजी भी आये। मुनिश्री गगाराम का अनशन, महाप्रयाण, शवयात्रा व स्मृति सभा के रोचक कार्यक्रम हुए। आचार्यश्री के ७२वे जन्म दिन के कायक्रम मे पूर्व महाराजा कर्णीमिह, विधान सभा के मुख्य सचेतक श्री बुलाकीदास कल्ला विशेप रूप से सम्मिलित हुए। समाज की सभी मस्थाओ ने अपने-अपने क्षेत्र मे उल्लेखनीय काय किए। वहा सस्कार केन्द्र नियमित चलता है।

मुनिश्री के मपर्क मे आने वाले विशिष्ट व्यक्ति थे—स्वामी रामसुख-

दासजी, नीथल के महन्त श्री खेमारामजी, खेडापा के महतजी, ग्रथी श्री विशनसिंह, फादर बेंजमिन लोयल, जिला शिक्षा अधिकारी श्री आर० के० झा, जिला शिक्षा सहायक निदेशक श्री प्रेमराज मोहनोत ।

समाचार/लेख प्रकाशन—नवभारत टाईम्स, राजस्थान पत्रिका, जनसत्ता, राष्ट्रदूत, दैनिक युगपक्ष, गणराज्य, अधिकार, आधुनिक राजस्थान, नवज्योति, सैनानी आदि ।

समय-समय पर आचार्यवर के दर्शनार्थ अनेक विशाल सघ गये । एक मास या उससे अधिक आचार्यवर की उपासना करने वालो के नाम इस प्रकार है—

(१) श्रीमती मनोहरी आचलिया—५ महीना (२) श्री मुन्नीलाल सेठिया—५१ दिन (३) श्री सोहनलाल चौपडा—५६ दिन (४) श्री ईश्वर चन्द सेठिया—१ माह (५) श्री मोहनलाल मरोटी—१ माह (६) श्री तोलाराम सामसुखा—१ माह (७) श्रीमती रूपा सामसुखा—१ माह (८) श्री जयचदलाल सामसुखा—१ माह (९) श्री देवचद पुगलिया—१ माह (१०) श्री नेमचद डाकलिया—१ माह (११) श्री हरखचद भसाली— ३६ दिन ।

अग्रगण्य—मुनिश्री राकेश कुमार

सहयोगी—मुनिश्री हर्षलाल, मुनिश्री अभिनन्दन कुमार

चातुर्मास—सी-स्कीम, जयपुर

मुनिश्री	तपस्या	वाचन
राकेश कुमार	१/९	योग, ध्यान, मनोविज्ञान साहित्य
हर्षलाल	१/४९, आयबिल २२	जैन साहित्य, ध्यान—एक घटा
अभिनन्दन	१/२४, २/१ आयबिल—२	

साहित्य-प्रकाशन—१ सत्यम् सुन्दरम् २ निर्माण के बीज ३ स्वर्ण और सुगन्ध—आदर्श साहित्य सघ प्रकाशन । ये तीनो कृतिया मुनिश्री राकेश कुमार द्वारा लिखित है ।

कार्यक्रम—जयपुर मे

अमृत-महोत्सव के उपलक्ष मे राजस्थान विश्वविद्यालय के छात्र-सघ की ओर से हिंसात्मक तोडफोडमूलक प्रवृत्तियो से दूर रहने का प्रस्ताव पारित किया गया । छात्र-सघ के पदाधिकारियो व कार्य कारिणी के सदस्यो की दो गोष्ठिया आयोजित हुई, जिनमे अणुव्रत के सदर्भ मे अहिंसा के महत्त्व पर विस्तार से चर्चाए हुई ।

राजस्थान शिक्षक महासघ की ओर से भी अमृत-महोत्सव के उपलक्ष मे इसी प्रकार का एक प्रस्ताव पारित किया गया। राजस्थान के सभी प्रमुख शिक्षक सगठन इस महासघ के सदस्य है। शिक्षको और विद्यार्थियो के प्रतिनिधियो ने आमेट मे २२ सितम्बर को कायक्रम मे सम्मिलित होकर आचायवर को दोनो प्रस्ताव भेट किये।

अणुव्रत छात्र ससद व अणुव्रत शिक्षक ससद के सगठन का भी निर्माण हुआ। दोनो ही सगठन शिक्षको और विद्यार्थियो मे अणुव्रत के प्रसार की दृष्टि से सक्रिय है।

अमृत-महोत्सव के उपलक्ष मे सेन्ट्रल जेल मे दो कार्यक्रम आयोजित हुए। प्रवचन व प्रेक्षाध्यान का कायक्रम रहा। बन्दीजनो ने अच्छी रुचि ली।

भारत जैन महामडल की ओर से सभी जैन सम्प्रदायो के विशेष सम्मेलन आयोजित हुए, जिनमे दिगबर और श्वेताबर साधु-साध्वियो ने भाग लिया। इन कायक्रमो मे हमारे धर्मसघ की समन्वय नीति पर प्रकाश डाला गया। गणधर गोतम की पच्चीसोवी निर्वाण समिति के उपलक्ष मे भी दो कार्यक्रम आयोजित हुए।

अमृत-महोत्सव के उपलक्ष मे जयपुर के दैनिक साप्ताहिक व पाक्षिक प्राय सभी पत्रो मे आचायप्रवर के व्यक्तित्व के सबध मे निबध प्रकाशित हुए। नवभारत टाइम्स मे लगातार चार दिनो तक बहुत विस्तार से सामग्री प्रकाशित हुई।

पर्युषण पर्व के उपलक्ष मे आकाशवाणी से दो वार्ताए प्रसारित हुई। युवाचार्यश्री द्वारा लिखित वार्ता का प्रसारण सवत्सरी के दिन हुआ। स्थानीय कार्यक्रमो के समाचार दैनिक व साप्ताहिक पत्रो मे विस्तार से प्रकाशित हुए। राजस्थान पत्रिका मे मुनिश्री हर्षलाल द्वारा लिखित भगवद्गीता के सूक्ष्म अक्षरो के पत्र पर निबन्ध प्रकाशित हुआ। राजस्थान पत्रिका मे एक भेट वार्ता भी प्रसारित हुई।

ग्रीन हाऊस मे राष्ट्रीय एकता पर एक गोष्ठी आयोजित हुई, जिसमे राज्यपाल श्री ओ० पी० मेहरा ने मुख्य अतिथि के रूप मे भाग लिया। जैन बौद्धिक सम्मेलन का एक विशाल कार्यक्रम सपन्न हुआ। विभिन्न क्षेत्रो मे सेवारत बुद्धिजीवी बडी सख्या मे उपस्थित थे। आचायश्री और युवाचायश्री के जैन साहित्य के अवदान पर प्रकाश डाला गया तथा वर्तमान के सदर्भ मे प्रेक्षाध्यान की महत्ता पर विवेचन किया गया।

आचार्यप्रवर के जन्म-दिवस पर अहिंसा सार्वभौम दिवस का विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमे शिक्षामंत्री श्री हीरालाल देवपुरा, उपकुलपति श्री आर० के० अग्रवाल आदि प्रमुख लोगो ने भाग लिया। आचार्यप्रवर के दीक्षा दिवस के उपलक्ष मे 'युवा-दिवस' का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर अनेक नागो ने अपने विचार रखे।

सी० स्कीम के निकटवर्ती अन्य मप्रदायो के अनेक परिवारो ने व्याख्यान मे नियमित लाभ लिया। तेरापथ धर्मसघ के अनुशासन और आचार व्यवस्था का उनके मन मे अच्छा प्रभाव रहा। शिक्षित गुजराती बहिनें व्याख्यान मे प्रतिदिन उपस्थित होती थी। तत्त्वचर्चा व सामूहिक ध्यान के कार्यक्रम भी रहे। एक दिवसीय आध्यात्मिक प्रशिक्षण शिविर मे १२५ युवको व विद्यार्थियो ने भाग लिया।

लाडनू से जयपुर तक अत्यधिक गर्मी मे मुनिश्री की ५०० कि० मी० यात्रा हुई। विहार बडे-बडे हुए।

अग्रगण्य—मुनिश्री छत्रमल

सहयोगी—मुनिश्री नगराज, मुनिश्री मोहनलाल 'सुजान' मुनिश्री चौथमल 'छापर'

अग्रगण्य—मुनिश्री दुलीचन्द 'दिनकर'

सहयोगी—मुनिश्री रिद्धकरण, 'सुजानगढ' मुनिश्री रिद्धकरण 'डूगरगढ', मुनिश्री पानमल।

चातुर्मास—(दोनो सघाटको का सयुक्त) सरदारशहर (राज०)

मुनिश्री छत्रमल की श्रीडूगरगढ से सरदारशहर ७० कि० मी० यात्रा हुई। मुनिश्री दिनकर सरदारशहर ही प्रवासित थे। चातुर्मास मे वर्गीय अणुव्रती १५००, शीलव्रत—२ जोडो ने, व्रतदीक्षा—१५ तथा शिविर २ लगे। तेरापथ स्थापना दिवस, अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि विभिन्न कार्यक्रम समायोजित हुए। पत्राचार पाठमाला मे १० तथा जैन विद्या परीक्षा मे ८० विद्यार्थी सम्मिलित हुए। मुनि श्री छत्रमल के सिंघाडे मे कठस्थ ८०० गाथा, वाचन (१) आगम—१५०० पृष्ठ (२) आगमेतर—२००० पृ० पढे गये तथा तपस्या मे उपवास ६२, वेला—२, तेला—३ हुए।

मुनिश्री	तपस्या	वाचन	जप	मौन
दिनकर	$२०^{१}$	५०० पृष्ठ	२ घटा	१ घटा
रिद्ध 'सु'	$४^{१}$, $१^{२}$	३०० ,,	१ ,,	१ ,,
रिद्ध 'डू'	$३^{१}$, $१^{२}$, $१^{३}$			
	एकान्तर—३ माह		२ ,,	२ ,,
पानमल	$५^{१}$, $९^{३}$, $^{३}१^{३}$	८०० ,,	१ ,,	१ ,,

मुनिश्री पानमल ने विविध सकल्पो व नाना प्रयोगो से युक्त ३३ की प्रभावी तपस्या की, जिसमे मौन के साथ 'असिआउसा' जप का क्रम चला, आचार्यश्री ने उनके तप के उपलक्ष मे एक सोरठा फरमाया—

तप तेतीसो तीर्ण मौन ध्यान युत पान मुनि ।
अन्तर् मन उत्तीर्ण, दिनकरजी रे सन्निकट ।।

पारणे के दिन आचार्यवर ने आमेट मे उनके ज्येष्ठ भ्राता मुनिश्री बालचद को ग्रास देते हुए फरमाया—

पान मुनि रो पारणो, ग्रास लियो मुनि बाल ।
अन्तर् मन की एकता, कौन कठे के सवाल ।।

चारो मुनियो ने क्रमश कठस्थ—८००, ६००, १००, ६०० गाथाए की । स्वाध्याय क्रमश ७००, २००, ५००, ५०० गाथाओ की की ।

अग्रगण्य—मुनिश्री सुमेरमल 'सुमन'

सहयोगी—मुनिश्री जयचदलाल 'सुजानगढ' मुनिश्री बादरमल, मुनिश्री सुरेशकुमार, मुनिश्री रमेशकुमार

चातुर्मास—छापर-सेवाकेन्द्र (राज०)

यात्रा—१२७८* किलोमीटर, श्रमणोपासक दीक्षा—२१, अणुव्रती—१७५

जप—२ करोड, थोकडा—६, प्रतिक्रमण— ३

चातुर्मास मे अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव के कार्यक्रम समायोजित हुए । प्रेक्षाध्यान का एक शिविर मुनिश्री के सान्निध्य मे तथा समणी स्थितप्रज्ञा व श्री हेमन्तभाई पटेल के निर्देशन मे हुआ ।

---

*चातुर्मास पर्यन्त यात्रा

अग्रगण्य—मुनिश्री ताराचद

सहयोगी—मुनिश्री मिश्रीलाल, मुनिश्री सुमतिकुमार

चातुर्मास—आसीद (भीलवाडा—राजस्थान)

यात्रा—१५७० किलोमीटर, क्षेत्र—५०

मत्र दीक्षा—२५०, श्रमणोपासक दीक्षा—४२, ज्ञानशाला का विधिवत् सचालन, स्कूलो मे अणुव्रत कायक्रम।

विलक्षण अनशन

श्री गणेशलाल काठेड छिहत्तर वर्षीय दृढ सकल्पी श्रावक थे। १२ अक्टूबर को अकस्मात् उनके पेट मे दद उठा जो क्रमश असहनीय बन गया, आखिर १५ अक्टूबर को ब्यावर मे अमृतकौर चिकित्सालय मे मेल सर्जिकल बोर्ड मे भर्ती कराया गया और डॉ० आर० के० माथुर ने सफल ऑपरेशन कर दिया। १८ अक्टूबर को मध्याह्न करीब दो बजे वे मौसमी का रस पी रहे थे। पुत्र नोरतनमलजी अगूर लाने गये। इस दौरान आचाय भिक्षु के दर्शन का आभास हुआ। भिक्षु स्वामी कह रहे थे—काई कर रह्यो है? श्री काठेड—रस पी रह्यो हू। स्वामीजी—अब काई पी बोई करी?? काठेड—अब आप केवो जो करू। स्वामीजी—छोड दे। काठेड—ओ तो पीलू। स्वामीजी—पीले, पछ बस जावजीव चारो आहार पाणी रा त्याग। काठेड—मै आपने पछाण्या कोनी, आप कुण हो। स्वामीजी—भीखण हू। पुत्र अगूर लेकर आये। श्री काठेड ने कहा—मैने चोविहार अनशन कर लिया ह। पुत्र-पुत्रवधू, पत्नी, डॉक्टर सभी के आग्रहपूण निवेदन को ठुकरा दिया। उनका असहनीय दद क्रमश ठीक होता चला गया। आग्रहपूर्वक होस्पीटल से छुट्टी ली। ब्यावर मे विराजित साध्वीश्री सरोजकुमारी के दशन कर वे आसीद पहुचे। वहा मुनिश्री ताराचद के दशन किये। २० अक्टूबर को आमेट मे आचायवर की मगल सन्निधि मे पहुचे, सेवा की, आचायवर ने भी अनशन नही करवाया और उसके द्वारा कृत अनशन को प्रकट करने का भी निषेध किया। पुन आसीद आ गये। २६ अक्टूबर को मुनिश्री ताराचद ने हजारो की उपस्थिति मे आचार्यवर के निर्देश से विधिवत् अनशन का प्रत्याख्यान कराया। सदैव सैकडो-सैकडो लोगो का ताता सा लगा। अनशन के उपलक्ष मे लोगो ने अनेक विध त्याग-प्रत्याख्यान किये।

इस ग्यारह दिवसीय चौविहार अनशन मे कई दैविक उपसग हुए, किन्तु भिक्षु स्वामी के साथ सब शात होते चले गये। मुनिश्री ताराचन्द आदि

मुनियो ने अच्छा धार्मिक सहयोग दिया। आखिर ८ अक्टूबर को ११४५ बजे महाप्रयाण कर दिया। २६ अक्टूबर को शोभायात्रा मे दस हजार से भी अधिक नर-नारी मौजूद थे। अन्तिम सस्कार जन विधि से किया गया। अनशन काल मे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री एव साध्वी प्रमुखाश्री के प्रेरक सदेश भी मिले।

अनशन-काल मे अनेक चामत्कारिक घटनाए हुई, जिनमे कुछ इस इस प्रकार है—२५ अक्टूबर, मध्याह्न श्री चादमल व श्री रगलाल राका आदि स्वाध्याय करवा रहे थे। श्री गणेशलाल जी काठेड बोले—वे (पारसजी, सोहनजी, जो आचार्यप्रवर को निवेदन करने गये थे) आमेट पहुच गये है। गुरुदेव के दर्शन कर लिये है, किंतु अभी तक बातचीत नही हुई है। तत्काल चादमलजी ने टाईम नोट कर लिया। उस समय घडी मे १४० हुए थे। काठेड जी के सम्मुख रात्रि मे चर्चा चल रही थी कि अभी तक वे क्यो नही पहुचे? क्या कारण हुआ? काठेड जी ने कहा—वे सभा भवन मे पहुच गये है और सतो को समाचार सुना रहे है। इतने मे श्री शोभालाल आये और सूचना दी कि पारसमल जी और सोहन जी आ गये है। सतो के दर्शन कर यहा आने ही वाले है। जब वे दोनो काठेड जी के घर पहुचे तब लोगो ने पूछा—आप आमेट कितने बजे पहुचे? उन्होने कहा—१४० बजे। आचार्यवर की सेवा कब हुई? पारस जी—१ घटे बाद। जो बाते काठेड जी ने बताई, वे सभी सत्य साबित हुई।

२६ को रात्रि ८ ३० बजे कई श्रावको की उपस्थिति मे श्री काठेड जी ने छह बाते कही—

१ दो दिन बाद मेरा काम सिद्ध हो जायेगा।

२ मै भीखणजी स्वामी की सेवा मे जाऊगा।

३ उदयपुर मे होने वाला मर्यादा-महोत्सव ऐतिहासिक एव विशेष महत्त्वपूण होगा।

४ आचाय प्रवर अभी और तपेगे तथा दुनिया मे इनका बहुत यश फैलेगा एव साथ-साथ विरोध भी चलेगा।

५ परिवार वालो को विशेष शिक्षा दी कि भिक्षु शासन बडा जयवता है, इस पर पूण श्रद्धा रखना।

६ अमृत-महोत्सव विरोध के बावजूद सफल होगा।

२७ को मध्याह्न मुनिश्री मिश्रीलाल काठेड जी को स्वाध्याय कराने गये। पहुचने मे विलम्ब हो गया। वे बोले—सत पधारे नही। एक भाई सतो को लाने के लिए जाने लगा तब उन्होने कहा—तुम जाकर क्या करोगे, सत आ ही रहे है। भाई सीढियो से नीचे उतरा ही था कि सत सामने मिल गये। वह आश्चर्यचकित रह गया।

तपस्या

मुनिश्री ताराचद—१/२५, ३/१ आयबिल—१५

मुनिश्री मिश्रीलाल—१/५८, २/८, ३/२७, ४/१३, ५/५

मुनिश्री सुमतिकुमार—१/२२, २/१ आयबिल—१०

श्रावक-श्राविकाओ मे—१/३००१, २/१७० ३/८०, ४/१२, ५/२०, ६/१, ८/१२

एक मासिक सेवार्थी—(१) श्री सोहनलाल बाफणा (२) श्री भूरालाल राका (३) श्री गणेशलाल राका (४) श्री पन्नालाल दूगड (५) श्री तेजमल काठेड

मुनिश्री मिश्रीलाल की तपस्या पर प्रदत्त विशेष सदेश—

तपस्या हमारे धर्म सघ के भवन की मजबूत नीव है। हमारे साधु-साध्वियो ने अतीत मे इसको बहुत सुदृढ बनाया है। वर्तमान मे भी अनेक साधु-साध्विया तपस्या कर रहे है। अतीत की तरह इस नीव को गहरी से गहरी करते जा रहे है। अमृत-महोत्सव के उपलक्ष मे आसीद (मेवाड) मे मुनि ताराचदजी के सान्निध्य मे मुनि मिश्रीमलजी विलक्षण तप कर रहे है, वे पहले तेले-तेले की तपस्या करते थे, फिर चोले-२ और वो इस बार पचोले-पचोले करके इस तप यज्ञो मे एक नयी कडी जोड रहे है। तप के साथ उनका स्वावलबन स्वाध्याय, ध्यान, जप आदि का प्रयोग स्वय की कर्म निजरा के साथ हमारे धर्मसघ की अप्रतिम प्रभावना मे योग देने वाला है। ऐसे तप अनुकरणीय है। मैं सोचता हू कि अपना स्वाध्याय और शारीरिक शक्ति को ध्यान मे रखकर के तपस्या की जाये।

आमेट —आचार्य तुलसी

२८-९-८५

मुनि ताराचदजी की सन्निधि मे तपस्वी व्यक्तियो का अभिनन्दन किया जा रहा है। तपस्या स्वय एक अभिनन्दन है। मुनिश्री मिश्रीलाल जैसे तपस्वी साधु है, वहा तपस्या स्वय अभिनदित हो जाती है। स्वाध्याय, ध्यान युक्त तपस्या बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार की तपस्या को प्रोत्साहन मिलना

चाहिये। आसीन्द मे श्रद्धालु भाई-बहिनो ने जो तपस्या की है वह अवश्य ही प्रशसनीय है।

युवाचार्य महाप्रज्ञ

आमेट

२८-६-८६

अग्रगण्य—मुनिश्री बच्छराज

सहयोगी—मुनिश्री बालचद, मुनिश्री देवेन्द्रकुमार

चातुर्मास—भटिण्डा (पजाब)

यात्रा—१००० *किलोमीटर, क्षेत्र-३०

पचसूत्री-सकल्प—२००, मत्र दीक्षा—३०, सम्यक्त्व दीक्षा—१५

व्रत दीक्षा—१२, शीलव्रत-१, जैन विद्या परीक्षा-४१ थोकडा कठस्थ-६

तपस्या—(श्रावक-श्राविकाओ) $\frac{१}{३०}$, $\frac{८}{२}$

मुनिश्री बालचद $\frac{१}{२७}$, $\frac{२}{४}$, $\frac{३}{१}$ निर्धारित थोकडे सीखे।

मुनिश्री देवेन्द्र—$\frac{१}{४१}$, $\frac{२}{२}$, $\frac{३}{१}$

अग्रगण्य—मुनिश्री हनुमानमल (सरदारशहर)

सहयोगी—मुनिश्री शुभकरण (तारानगर) मुनिश्री गणेशमल "लाछूडा"

चातुर्मास—रीछेड (उदयपुर, राज०)

श्रमणोपासक दीक्षा—३, एक मास या उससे ऊपर सेवा करने वाले

१ श्री भवरलाल सिघवी
२ श्री ताराचद सिघवी
३ श्री पृथ्वीराज हिगड
४ श्री चपालाल सिघवी
५ श्री तिलोकचद सिघवी
६ श्री हस्तीमल कोठारी
७ श्री मोहनलाल कोठारी
८ श्री किशनलाल कोठारी
९ श्री चुन्नीलाल कोठारी
१० श्री भवरलाल राठौड
११ श्री भीमराज कच्छारा
१२ श्री कुनणमल कोठारी
१३ श्रीमती पानी धीग

अग्रगण्य—मुनिश्री पूनमचद (गगाशहर)

सहयोगी—मुनिश्री देवीलाल, मुनिश्री अमित प्रकाश

चातुर्मास—मेरीन ड्राईव-बबई

यात्रा—जसोल मे बबई-१०६६ कि० मी०, क्षेत्र-६१

तपस्या—श्रावक-श्राविकाओ मे १ हजारो, २ सैकडो $\frac{३}{५८}$, $\frac{४}{५}$, $\frac{५}{५}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{५१}$, $\frac{९}{५}$, $\frac{१०}{३}$, $\frac{१५}{१}$

कार्यक्रम-मत्र दीक्षा, प्रमाण पत्र वितरण समारोह, त्रिदिवसीय प्रेक्षा ध्यान शिविर, अमृत-महोत्सव का विशेप समारोह, चन्दनवाडी म्युनिसीपल बोड की स्कूल मे मुनिश्री का प्रवचन, २६ सितवर को हिन्दूजा हॉल मे भारत जैन महामडल की ओर से सामूहिक क्षमायाचना का कार्यक्रम रखा गया, जिसमे मुनिश्री के अलावा मदिर-मार्गी मुनिश्री धुरन्धर विजय, स्थानकवासी साध्वीश्री प्रेमवती उपस्थित थी। कार्यक्रम सयोजन श्री चन्दनमल "चाद" ने किया। आचार्यवर के जन्म दिन के विशेप कार्यक्रम मे हिन्दी ब्लिट्ज के सपादक श्री नदकिशोर नौटियाल, प्रोफेसर राजम् नटराजन ने भाग लिया। बबई महिला मडल ने अमृत-महोत्सव सदभ मे विकलाग व्यक्तियो को जयपुर पैर प्रदान किये।

मुनिश्री देवीलाल व मुनिश्री अमित प्रकाश ने निर्धारित पाच थोकडे कण्ठस्थ किए।

अग्रगण्य—मुनिश्री मोहनलाल 'शार्दूल'
सहयोगी—मुनिश्री सुवाहु कुमार, मुनिश्री मधु कुमार
चातुर्मास—बारडोली (गुजरात)
यात्रा—१५००+ किलोमीटर, क्षेत्र-७५
अणुव्रती—३५, वर्गीय अणुव्रती-५०, मत्र दीक्षा-४०, सम्यक्त्व दीक्षा-३०
प्रतिक्रमण—२, जैन विद्या—५४, पच सूत्री सकल्प—५००
सतो मे तपस्या—मुनिश्री मोहन—$\frac{१}{२}$, मौन—प्रतिदिन एक घटा, ध्यान $\frac{१}{२}$ घटा
मुनिश्री बाहु—$\frac{१}{१०}$, $\frac{३}{२}$ जप—"अभीराशिको नम" का सवा लाख, मुनिश्री मधु—$\frac{१}{६}$, $\frac{३}{८}$
श्रावक समाज मे आयविल ५३, बारिया ७२, एकान्तर-१० पचरगी-२
$\frac{१}{१३००}$, $\frac{२}{२१}$, $\frac{३}{१५}$, $\frac{४}{४}$, $\frac{५}{६५}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{८२}$, $\frac{९}{१}$, $\frac{१०}{१}$, $\frac{१०}{५}$, $\frac{१६}{२}$, $\frac{२१}{१}$
मुनिश्री मोहनलाल की कृतियो का प्रकाशन—१ गीतमाला (द्वितीय सस्करण) २ रूपहली कथाए (तृतीय सस्करण)

कार्यक्रम

बैंगलोर मे २५ नवबर को तेरापथ युवक परिषद् द्वारा प्रकाशित १९८५ की डायरी विमोचन तथा मुनिश्री का विदाई समारोह वल्लभ निकेतन मे सपन्न हुआ। भूतपूर्व उपराष्ट्रपति बी० डी० जत्ती ने मुनिश्री को डायरी भेट की। विधान सभा के सदस्य श्री नारायण राव तथा प्रसिद्ध साहित्यकार

अब्दुल कादर, सीताशरण शर्मा आदि ने भावभीनी विदाई दी। सयोजन मनोहर "भारतीय" ने किया।

हिरियुपुर—मुनिश्री के सान्निध्य मे १३ सितबर को युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी का दीक्षा-दिवस "युवा दिवस" के रूप मे मनाया गया, जिसमे न्यायाधीश नारायण गोडे एव डॉ० एम० एन० श्री पेटी ने भाग लिया।

चिकोडा-चिकोडी कॉलेज एव हायर सैकण्डरी स्कूल मे प्राध्यापको, विद्यार्थियो मे मुनिश्री का प्रवचन हुआ। अणुव्रतो की प्रेरणा दी।

इचलकरजी—२८ जनवरी को मर्यादा-महोत्सव समारोह सपन्न हुआ। श्रीमती सरोजनी बा खजीरे—चेयरमेन महिला सहकारी वैक लि० आमन्त्रित थी। जयसिहपुर के लोग बडी सख्या मे सम्मिलित हुए।

जयसिहपुर—१० मार्च को "जीवन जीने की कला" विषय पर एक अणुव्रत गोष्ठी व जैन हस्तकला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन भूतपूर्व नगराध्यक्ष डा० एस० के० पाटिल ने किया। प्रदर्शनी का अवलोकन वकील डॉक्टर, अध्यापक आदि ने किया।

सिरुवल—दोपहर के समय अध्यापक गोष्ठी हुई। काफी देर तक प्रश्नोत्तर चले। जयसिहपुर और पूना के मार्गवर्ती कई न्यू इग्लिश स्कूलो मे भाषण हुए। बच्चो ने मद्यपान न करने की प्रतिज्ञा की।

पूना—स्वागत कायक्रम तेरापथी सभा-भवन मे हुआ। दो दिन बाद डॉ० सचेती इन्स्टीट्यूट मे कारणवश १५ दिन का प्रवास रहा। आधुनिक उपकरणो से सुसज्जित यह अस्थि चिकित्सा का बहुत विख्यात चिकित्सालय है। डॉ० कातिलाल सचेती के पास पचासो डाक्टर डॉक्टरनियो का स्टाफ है। पूरे स्टाफ से अच्छा सपर्क हुआ। प्रेक्षाध्यान-अणुव्रत आदि का विस्तृत परिचय दिया गया। डॉ० साहब का खूब सहयोग रहा। २४ अप्रैल को इन्स्टीट्यूट के लाइब्रेरी हॉल मे "जैन हस्तकला प्रदर्शनी" का आयोजन किया गया। डॉ० साहब का परिवार, स्टाफ, सैकडो मरीजो और शहर के अनेक व्यक्तियो ने इसका अवलोकन किया। पूरी व्यवस्था स्टाफ के द्वारा की गई। स्टाफ और लोगो के निवेदन पर प्रदर्शनी दूसरे दिन भी रखी गई।

बबई—२३ को मुनिश्री बबई पहुचे। २६ मई को खार मे साध्वीश्री सूरजकुमारी से मिलन हुआ। दिनाक २ जून को बबई के प्रसिद्ध ताराबाई—हाल मे "राष्ट्रीय एकता के सूत्र" विषय पर एक विचार गोष्ठी न्यायमूर्ति

आसकरणजी तालेड की अध्यक्षता मे हुई । प्रमुख अतिथि के रूप मे नव निर्वाचित महापौर छगन भुजबल तथा प्रवक्ता के रूप मे नगर पार्षद श्री विनोद-गाधी ने भाग लिया ।

नवसारी—२३ जून को रात्रि मे कॉटन मिल्स के अधिकारियो के बीच प्रवचन हुआ ।

बारडोली—दिनाक ३० जून को चातुर्मास प्रवेश पर स्वागत समारोह का आयोजन हुआ, जिसमे नगरपति श्री प्रबोधभाई व समाज सेवी भगवती भाई पारिख ने स्वागत किया । सयोजन श्री घीसुलाल बाफना ने किया ।

अणुव्रत सप्ताह—५ अगस्त को देश के प्रख्यात स्वराज्य आश्रम मे उद्घाटन हुआ । मर्यादा मेटल इन्डस्ट्री हाल, गोविन्दाश्रम, जलाराम प्रार्थना समाज मदिर आदि सार्वजनिक स्थानो मे सप्ताह के कार्यक्रम सपन्न हुए ।

स्वराज्य आश्रम के मत्री श्री उत्तमभाई, समाज सेवी भगवती भाई, स्वामी विवेकानन्द ध्यान केन्द्र की सचालिका डॉ० कलाबहन आदि ने भाग लिया ।

जन-सम्पर्क

इचलकरजी—२३ जनवरी को सायकाल विहार कर इचलकरजी आ रहे थे । मार्ग मे सविग्न सप्रदाय के आचार्यश्री मित्रानन्दजी से मिलन हुआ । उन्हे दूसरे गाव जाना था, फिर भी वे रुके हुए थे । मिलन के प्रसग पर दोनो सप्रदाय के काफी लोग थे ।

कार्यक्रम पूव नियोजित था । मुनिश्री को आचार्यश्री मित्रानदजी ने कहा—'आपका सघ बहुत प्रगतिशील और कर्मठ हे । मै आचार्यश्री तुलसी तथा युवाचायश्री महाप्रज्ञ के ग्रन्थ बराबर पढता हू । जैन विश्व भारती से प्रकाशित तथा योग का काफी सारा साहित्य मने मगाया है ।' बहुत सौहार्दपूर्ण वार्तालाप हुआ ।

योगाश्रम के स्वामी योगानदजी से कई बार वार्तालाप हुआ । वे योगासनो के अच्छे विज्ञाता है । इन्होंने दो बार जनता के सामने अधर मे उठने का भी प्रदर्शन किया है । सशक्त स्नायु, सघन सकल्प और श्वास प्रक्रिया के आधार पर ऐसा किया जाना सभव होता है । बातचीत के दौरान उन्होने कहा—मैं इस प्रयोग की अधिक सार्थकता नही समझता ।

जससिहपुर—विधायिका सरोजिनी देवी खजिरे, डॉ० सुभापचन्द्र आकोले, डॉ० विजय एन० पाटिल होम्योपैथिक, पूना—आचाय श्री आनन्द ऋपिजी की शिष्या आदर्श ज्योति जी आदि ने मुलाकात की और प्रेक्षाध्यान प्रक्रिया की जानकारी चाही। वे दोपहर मे तीन-चार दिन लगातार प्रक्रिया अभ्यास के लिए आती रही।

हस्तकला प्रदर्शनी की भी पूण सामग्री बडे गौर से देखी और कहा—आपके सघ मे कला का उत्तम विकास हो रहा है। अन्य भेंट कर्ता सस्कृत शारदा पत्र के सपादक—डॉ० चन्द्रभूपण मणि त्रिपाठी, योगकेन्द्र के सचालक श्री आयगर, डा० एस० पी० लुणावत, डॉ० एस० डी० मेहता (बवई), बारडोली के डॉ गाधी, गवर्नर, लायन्स क्लब, दन्त विशेपज्ञ—डॉ० रमेश, डॉ० लक्ष्मी गाधी, डॉ० उर्वी, प्रो० अश्विनी भाई, गोविन्द-आश्रम के सस्थापक ११४ वर्षीय चिदानद स्वामी, कबीर वाणी (गुजराती मासिक) के सपादक श्री चपक भाई, समाज क्राति के सपादक—मागीलाल देरासरिया, मिरज-एक्सरे विशेपज्ञ मोहन, अस्थि विशेपज्ञ डॉ० एम० आर० कुलकर्णी, अस्थि विशेपज्ञ डॉ० कोरे।

डॉ० कोरे का पूरा परिवार बहुत श्रद्धावाला है। तीन-चार बार पूरे परिवार ने दर्शन किये। विभिन्न प्रकार की आध्यात्मिक जिज्ञासाए की। अपना पूरा चिकित्सालय मुनिश्री को दिखाया।

आचार्यश्री तुलसी सदेश

प्रसग—दक्षिण गुजरात तेरापथी श्रावक सम्मेलन एव तेरापथी सभा भवन के उद्घाटन समारोह पर

बारडोली दक्षिण गुजरात का एक केन्द्र है। सरदार वल्लभभाई पटेल की जो कर्मभूमि है। इस वर्ष वहा के श्रावको के अत्यन्त विनय पूर्वक अनुरोध से मुनि "शार्दूल" का चौमासा करवाया गया।

उस चौमासे मे सतो ने काफी श्रम किया। उन्होने हमारे शासन की गरिमा बढाने का काफी प्रयत्न किया। बारडोली व आस-पास के क्षेत्रो मे धर्म की अच्छी जागरणा हुई है। अभी वहा दक्षिण गुजरात तेरापथी श्रावक सम्मेलन किया जा रहा है, उसमे कुछ बातो पर चिंतन होना चाहिए।

१ समाज सगठन सुन्दर होना चाहिए।

२ सामाजिक कुरूढियो व बेकार रीति-रश्मो को मिटाने का प्रयत्न किया जावे।

३ दखावा, प्रदर्शन, अपव्यय को मिटाकर समाज मे नैतिक मूल्यो की प्रतिष्ठा कैसे हो, इसका चिंतन किया जावे।

४ अमृत-महोत्सव के उपलक्ष मे पाच सकल्पो व चार सूत्री कार्यक्रमो का अधिक से अधिक प्रसार हो।

५ समाज का जो सभा भवन बना है उसको लेकर समाज का कोई व्यक्ति आग्रह-विग्रह नही करे, इन बातो को लेकर आग्रह-विग्रह करना अनुचित है। समाज मे हर व्यक्ति को अपनी बात करने का अधिकार है, किंतु किसी प्रकार के एकाकी आग्रह की जरूरत नही है।

हमारे सत वहा है वे जैसी दृष्टि दे, उसको मानकर काम करे। सघ प्रभावक कुसुम भाई जैसे व्यक्ति जहा हो उनके इगित व सकेत का पालन करना ही समाज के हित की चीज होती है।

विशेष धार्मिक उत्साह बढता रहे।

३१ अक्टूबर, ८५   —आचार्य तुलसी
आमेट

अग्रगण्य—मुनिश्री धर्मचद "पीयूष"
सहयोगी—मुनिश्री महेशकुमार, मुनिश्री दर्शनकुमार
चातुर्मास—बैंगलूर (गाधीनगर व यशवतपुर) कर्नाटक
यात्रा—१४६५ किलोमीटर *(हुबली से बैंगलूर), क्षेत्र-५८
वर्गीय अणुव्रती—२९ विद्यालयो के हजारो विद्यार्थियो व शिक्षको ने वर्गीय अणुव्रत स्वीकार किए, पच सूत्री सकल्प-६ हजार,

मत्र दीक्षा—२५०, गुरुधारणा—१०, शीलव्रत—३, प्रेक्षाध्यान शिविर—३, श्रमणोपासक दीक्षा—९, तपस्या—मुनिश्री धर्मचद—उपवास—२२ श्रावक—श्राविकाओ मे— १/१३०००, २/६४१, ३/२४१, ४/२६ ५/४६, ६/६, ७/३, ८/६१, ९/१८, १०/४, ११/२४, १३/२, १५/५, १६/१, २१/१, ३०/५ आयबिल—१००० वेले-वेले—९, वर्षीतप—१८, दो महीने एकान्तर—१०१, बारी के उपवास—६६, अन्य मास खमण करने वाले—१ कुमारी मजु सचेती (१९ वर्ष) पुत्री श्री घेवरचद सचेती २ श्रीमती उमराव कोठारी, धमपत्नी श्री हेमराज कोठारी ३ श्रीमती लक्ष्मी सामसुखा ४ श्री रूपचद भसाली ५ श्रीमती पानी ओस्तवाल धर्मपत्नी श्रीभवरलाल ६ श्रीमती सतोषदेवी, धमपत्नी श्री उत्तमचद दक।

अमृत-महोत्सव सदर्भ मे भाई-बहिनो ने ढाई करोड जप व ३,५०,००० पृष्ठो के स्वाध्याय का सकल्प लिया।

कार्यक्रम

१ **मर्यादा महोत्सव**—सिधनूर (कर्नाटक) मुनिश्री के सान्निध्य मे तथा तोन्टदार्य मठ गदग (कर्नाटक) के जगद्गुरु श्री सिद्धलिगेश्वर महास्वामी धर्मगुरु श्रीकर बसैय्या स्वामी (हस्तरेखा विशेषज्ञ) विधायक मल्लाप्पा, डा० निजामुद्दीन, म्युनिसिपल पार्टी के चेयरमेन आदि की उपस्थिति मे मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम सपन्न हुआ।

२ **महावीर जयति**— हिरीयूर महावीर जयती का प्रान्तीय स्तर पर आयोजन हुआ, जिसमे बीस क्षेत्रो के भाई-बहिनो का आगमन हुआ। विशेष अतिथि के रूप मे आर० एच० गुडवाला एव कर्नाटक स्टेट चेयरमैन माइना-रीविग कमीशन बैंगलोर एम० आर गुडवाला, के० वी० दोडेप्पा। दोपहर मे आचार्यश्री तुलसी अमृत महोत्सव के सबध मे विचार चर्चा।

३ **अमृत महोत्सव**—चिकमगलोर मे २८ अप्रैल प्रात आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव का प्रथम चरण, प्रात अमृत-यात्रा, तत्पश्चात् रोटरी हाल मे विशाल आयोजन हुआ। आयोजन मे विधायक वी० शकर, कर्नाटक विधान परिषद के उपाध्यक्ष एस मल्लिकार जुनैय्या। जिलाधीश पार्थसारथी, एस० पी० एस० एस० पावटे, जीवराज शास्त्री आदि ने भाग लिया।

४ **अणुव्रत सप्ताह**—पन्द्रह अगस्त से प्रथम कार्यक्रम गाधी स्कूल सेवाश्रम, गाधी भवन, कुमारा पार्क, टाउन हाल भारतीय सस्कृति विद्यानगर तथा तेरापथी सभा भवन मे विशेष आयोजन हुआ, जिसमे अनेक महानुभावो ने भाग लिया। पन्द्रह अगस्त की रात्रि को शालीन कविसम्मेलन, २१ अगस्त को पत्रकार सम्मेलन हुए।

५ **अमृत महोत्सव का दूसरा चरण**— अनुशासित शालीन लगभग चार किलोमीटर लबी अनुशासित शालीन व भव्य रैली निकाली। टाउन हाल मे विराट आयोजन हुआ। सूचना एव प्रसार मत्रीश्री जीवराज अल्वा मुख्य अतिथि थे। उपस्थिति लगभग १५०० लोगो की थी।

इसी दिन रात्रि को तेयुप बैंगलोर द्वारा—आचाय तुलसी व्यक्तित्व व कतृत्व पर प्रतियोगिता तथा ज्ञानशाला के बालक-बालिकाओ द्वारा सास्कृतिक कायक्रम प्रस्तुत किया गया।

६ दो अक्टूबर गाधी जयति के अवसर पर राजभवन मे कर्नाटक राज्यपाल के आमत्रण पर सर्वधम सम्मेलन सभा मे मुनिश्री का विशेष

प्रवचन हुआ ।

जन-सम्पर्क

तोददाय मठ (गदग) के जगद्गुरु श्री गगाधर सिद्धलिगेश्वर महा-स्वामी, मैसूर युनिवर्सिटी के विभागाध्यक्ष श्री एम० एस० कृष्ण मूर्ति, दैनिक नकोदय पत्र के सपादक श्री एच० आर० कीडियूर, आनेगुंदी कस्बे मे पूर्व युव-राज श्री अच्युत देवरायल, पूर्व विधायक, श्री तिरूमल वेवरायल, वागलकोट के रेवेन्यु इसपेक्टर श्री एम० वी० जोशी, हिरिपुर मे थियोसोफिकल सोसाइटी के अध्यक्ष डा० रगय्या, हासन मे एन० एस० सी० योजना के जिलाध्यक्ष श्री के० सी० करिगोडा, कर्नाटक के राज्यपाल श्री अशोकनाथ वनर्जी आदि मुनिश्री के सपर्क मे आये । इनके अतिरिक्त शिक्षको, पत्रकारो व साहित्यकारो के साथ भी मुनिश्री का मिलन हुआ और आध्यात्मिक चर्चाए चली ।

समाचार प्रकाशन—हुवली के सयुक्त कर्नाटक, विशाल कर्नाटक, पारस वाणी, नाडनूडी, गदग के नवोदय, गगावती का प्रजा प्रपचा, वैंगलूर के धीर, तीर आदि पत्रो मे समाचार-निबन्धो का प्रकाशन हुआ ।

अनशन—१ श्रीमती तीजा दफ्तरी (७५ वष) वह एक धर्म निष्ठ श्राविका थी ।

२ श्रीमती प्यारी बोहरा (७१ वष) आमेट मे ६४ प्रहरी पौषध मे स्वगवास हो गया । वह साधु-सतो की वहुत उपासना करती थी । मुनि सुमेरमल "लाडनू" की वैंगलूर से उदयपुर तक की एक सौ दस दिवसीय यात्रा मे अहर्निश सेवा की थी ।

एक माह से अधिक गुरुदेव की उपासना करने वाले—

१ श्री सिरेमल डोसी २ श्रो सपतमल बोहरा ३ श्री मिश्रीलाल सचेती ४ श्री वस्तीमल गादिया ५ श्री सीताशरण शर्मा ६ श्रीमती अणची पोरवाल ७ श्रीमती प्यारी वोहरा ८ श्रीमती बदाम सेठिया ९ श्री डालचद हिरण १० श्री रतनचद सिरोहिया ११ श्री देवीचद सचेती १२ श्री राजमल सोलकी १३ श्री राजमल सकलेचा १४ श्री नयनमल हिरण १५ श्रीमती सुगनी बोहरा १६ श्री गणेशमल कोठारी १७ श्री दुलीचद डोसी १८ श्री पारसमल गादिया सघ रूप मे श्री मीठालाल मुथा के नेतृत्व मे ५० व्यक्तियो का तथा श्री सोहनलाल कटारिया के नेतृत्व मे ज्ञानशाला के छात्र-छात्राओ का सघ आचायवर के दर्शनार्थ आया ।

अग्रगण्य—मुनिश्री गुलाबचद ' निर्मोही"

सहयोगी—मुनिश्री मृत्युजय कुमार, मुनिश्री चैतन्यकुमार

चातुर्मास—जोरहाट (असम)

यात्रा—१००७ किलोमीटर, क्षेत्र ३५

मत्र दीक्षा—१७५, सम्यक्त्व दीक्षा—५०, व्रत दीक्षा—१०

शीलव्रत—७, पचसूत्री सकल्प—१५००, जैन विद्या परीक्षा—५८

प्रतिक्रमण—४, भक्तामर—२, चोवीसी—६

मुनिश्री "निर्मोही"—उप०—३, आयबिल—३, जप—एक घण्टा, ध्यान—३० मिनट।

मुनिश्री मृत्युजय—उप०–२, वेला—१, जप—आधा घटा, ध्यान—आधा घटा। मुनिश्री चैतन्य—उप० ६

मुनिश्री "निर्मोही" एव मृत्युजय मुनि ने कई थोकडे सीखे है तथा अन्य थोकडो का कठीकरण चालू हे। मुनियो ने सघीय-साहित्य का काफी वाचन किया।

तपस्या (श्रावक-श्राविकाओ मे)

उ $\frac{१}{५१}$, $\frac{२}{२८}$, $\frac{३}{४}$, $\frac{४}{२}$, $\frac{५}{३}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{८}{२८}$, $\frac{९}{३}$, $\frac{१०}{१}$, $\frac{११}{१}$, $\frac{१५}{१}$ कम उम्र मे अठाई तप करने वालो के नाम—१ दीपक सुराणा, २ मनोज सुराणा, ३ सुश्री सगीता पटावरी, ४ सूरज कुडलिया, ५ शशि बुच्चा, ६ सुमन कुचेरिया, ७ रेणु भसाली, ८ प्रभा वैद, ९ सगीता सुराणा, १० रेखा दूगड, ११ ममता बोथरा।

कला के क्षेत्र मे मुनिश्री मृत्युजयकुमार ने सूक्ष्मलिपि मे अनेक नये और आकर्षक डिजाइन तैयार किये। आगम, गीता, रामायण, कुरान, बाइबिल, गुरुग्रथ साहिब, समणसुत्त आदि विभिन्न ग्रथो को विभिन्न प्रतीको मे सूक्ष्म लिपि द्वारा लिखा। बौद्धिक वर्ग इससे विशेष प्रभावित हुआ।

विशेष कार्यक्रम

खारूपेटिया (असम) मे आचार्यश्री तुलसी का दीक्षा दिवस, तेजपुर (असम) मे मर्यादा महोत्सव, जोरहाट मे महावीर जयती, डीमापुर (नागालैंड) मे अक्षय तृतीया के विराट् और विशेष आयोजन हुए। स्थानीय समाज के अतिरिक्त अन्य स्थानो से बडी सख्या मे समागत लोगो एव विभिन्न वर्गो के वरिष्ठ व्यक्तियो ने इसमे भाग लिया।

धीग, मोरियाबाडी क्षेत्र मे मूलत असमी जनता का सपर्क बहुत लाभदायी सिद्ध हुआ। असमी लोग अधिकाशत श्री शकरदेव के अनुयायी है। वे मूर्तिपूजा नही करते। उनके सिद्धात जैन धम से काफी मिलते ह। उनकी धर्मोपासना के लिए नामधर (धार्मिक स्थान) होते है। नामधर मे भी कार्यक्रम आयोजित हुए, जिनका व्यापक प्रभाव पडा। इस प्रकार का अवसर असम मे प्रथम था। काफी बडी सख्या मे लोगो ने व्यसन-मुक्ति के सकल्प स्वीकार किए। प्रवचन तथा व्यक्तिगत सपर्क के द्वारा उनका सपर्क बराबर बना रहा।

जोरहाट मे अमृत-महोत्सव के विराट् कार्यक्रम का गरिमापूर्ण प्रभाव समग्र असम की धरती पर हुआ।

अमृत-महोत्सव के लिए निर्धारित राष्ट्रीय सकल्पो के व्यापक प्रसार के लिए सप्त रविवारीय कार्यक्रमो की आयोजना की गई। जोरहाट के बौद्धिक और आभिजात्य वर्ग ने इसमे विशेष रूप से भाग लिया। भावात्मक एकता दिवस के अवसर पर विभिन्न धर्मो के प्रतिनिधियो की उपस्थिति उल्लेखनीय थी। पूरे वर्ष मे प्राय सर्वत्र बौद्धिक और विशिष्ट व्यक्तियो का सपर्क रहा। उनमे वकील, डॉक्टर, इजीनियर, प्रोफेसर, प्रिंसिपल, सामाजिक कार्यकर्ता आदि प्रमुख है। विशेष उल्लेखनीय नामो मे असम की भूतपूर्व मुख्यमत्री श्रीमती अनवरा तैमूर, असम के शिक्षामत्री श्री एम० सी० शर्मा कामरूप जिला के डिप्टी कमिशनर श्री प्रतुल शर्मा, शिलोग (मेघालय) के डिप्टी कमिश्नर, गोहाटी नगर निगम के उपाध्यक्ष श्री जे० के० जैन, सनातन धर्म के प्रसिद्ध सत स्वामी रामदासजी आदि है।

विशिष्ट व्यक्तियो के उद्गार

श्रीमती अनवरा तैमूर ने कहा—"देश मे लोकतात्रिक मूल्यो की सुरक्षा मे आचार्यश्री तुलसी के अणुव्रत आदोलन का महत्त्वपूण योगदान है।"

असम के शिक्षामत्री श्री एम० सी० शर्मा ने कहा—"शिक्षा मे जीवन-विज्ञान की बात आचायश्री तुलसी का मूलस्पर्शी दृष्टिकोण है। इसके माध्यम से उनका धर्मसघ हमारा काम कर रहा है। हम भी शिक्षा मे जीवन-विज्ञान के विषय को जोडने का प्रयत्न करेगे।"

कामरूप के डिप्टी कमिशनर श्री प्रतुल शर्मा ने आचार्यश्री तुलसी, तेरापथ, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और साधु-साध्वियो की हस्तकला को देखकर

कहा—"मेरे जीवन मे आज के दो घटे का समय अविस्मरणीय रहेगा। मैं महसूस करता हू कि यदि वह सपर्क नही होता तो एक महान् उपलब्धि से मैं वचित हो जाता।"

शिलोग के डिप्टी कमिशनर ने जैन धर्म, अणुव्रत, आचार्यश्री तुलसी के सबध मे जानकारी प्राप्त करके कहा—"ऐसे सतपुरुष ही ससार को विनाश से बचा सकते है।"

गोहाटी नगर-निगम के उपाध्यक्ष श्री जे० के० जैन ने कहा—"मुझे प्रसन्नता है कि एक जैनाचार्य समूचे राष्ट्र और समाज का पथदर्शन कर रहे है। वे समूचे राष्ट्र और समाज की आशा और आस्था के केन्द्र है।"

स्वामी रामदासजी ने कहा—"उदयपुर से मुझे समाचार मिलते रहते है कि आचार्यश्री तुलसी उस क्षेत्र मे प्रभावशाली कार्य कर रहे है।

जैन सस्कारो को पुष्ट करने के लिए प्राय सभी क्षेत्रो मे ज्ञानगोष्ठी का क्रम चलाया गया, जो बहुत उपयोगी रहा।

सस्मरण : प्रेक्षा से समाधान

लका (असम) मे जैन साधुओ के आगमन का प्रथम अवसर था। जैन-जैनेतर सभी वर्ग के लोग अत्यन्त श्रद्धा से सभी कार्यक्रमो मे भाग ले रहे थे। सरदार मोहनसिंह के परिवार को लकावासियो मे अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त है। उनका पूरा परिवार सत समागम का लाभ ले रहा था। सरदार मोहन सिंह और उनकी धर्मपत्नी ने एक बार पृथक् समय लेकर मुनिश्री की उपासना की। कई प्रकार की पारिवारिक उलझनो से उनके दिमाग मे काफी तनाव था। उन्होने मुनिश्री से तनाव-मुक्ति का उपाय पूछा। मुनिश्री ने श्वास-प्रेक्षा की विधि बतलाते हुए उनका मार्गदर्शन किया। उन्होने उसका प्रयोग किया और तनाव-मुक्ति के साथ अनेक उलझनो और समस्याओ का समाधान प्राप्त कर लिया। सत समागम और प्रेक्षा के प्रति उनकी आस्था बढ गई।

प्रेक्षा से व्यसन-मुक्ति

नौगाव मे एक व्यक्ति कभी सतो के सपर्क मे नही आता था। एक दिन अकस्मात् मुनिश्री से उसका साक्षात् हो गया। मुनिश्री ने सपर्क मे नही आने का कारण पूछा। उसने अपना दिल खोलते हुए कहा—जब आपने पूछ ही लिया तो मैं साफ-साफ बतला देता हू। मेरे जीवन मे अनेक प्रकार के व्यसन है। तबाकू मैं पीता हू। जर्दा, खैनी मैं खाता हू। शराब का प्रयोग मैं

कर लेता हू । जुआ मे खेलता हू और भी अनेक प्रकार की बुरी आदतें है। यद्यपि दूसरो को इनका पूरा पता नहीं है, किन्तु म मानसिक रूप से लाचार हू। इन्हे छोड नही सकता। मन मे यह सकोच होता हे कि आपके पास आऊगा तो आप कोई न कोई नियम-सकल्प लेने के लिए कहेगे। म नियम निभा नही सकता। व्यसनो मे इतना गहरा फसा हू कि वे मुझे भले ही छोड दे, पर मै तो इस जन्म मे इन्हे नही छोड सकता।

मुनिश्री ने कहा—"मे तुम्हे कोई भी व्यसन छोडने के लिए नही कहूगा तब तो तुम सपर्क रखोगे ? उसने कहा—क्या आप मुझे बुराई छोडने के लिए नही कहगे ?

मुनिश्री ने कहा—जब तुम कोई भी व्यसन नही छोड सकते, तो मै सिर्फ दबाव देकर क्या करूगा ? हा, तुम इतने काम करते हो, तो मै तुम्हे एक काम और करने के लिए कहूगा।

उसने आश्चर्य से पूछा—कौनसा काम ?

मुनिश्री ने कहा—"तुम नियमित श्वास-दर्शन का प्रयोग किया करो।

उसने ईमानदारी से प्रयोग किया। कुछ दिन पश्चात् वह बोला—"क्या कारण हे कि आजकल न तो तबाकू पीने का मन होता है, न जरदा आदि खाने मे रुचि होती हे, न शराब की बोतल छूने का जी करता है। पहले जुए मे सारी-सारी रात बीत जाती थी, पर अब पता नही क्या हो गया उधर मुह करने को भी मन नही होता।

मुनिश्री ने कहा—तुम कहते थे न कि इस जन्म मे तो व्यसन नही छूट सकते।

वह बोला—मुझे स्वय आश्चय हो रहा हे कि यह सब कैसे हो गया ?

मुनिश्री ने कहा—श्वास-प्रेक्षा से भीतर मे रूपान्तरण होने लगता है। उसी का परिणाम हे कि विजातीय तत्त्व छूट जाते हे।

निरन्तर अभ्यास से वह सवथा व्यसन मुक्त हो गया। प्रेक्षाध्यान के प्रति उसकी आस्था बढ गई।

युवाचार्यश्री का सदेश

मुनि गुलाबचद जी ने अपने सहवर्ती दो साधुओ के साथ सुदूर प्रदेश मे लबी-लबी यात्राए की। उन्होने अच्छा काय किया हे। लोगो को धर्म की दिशा मे बहुत प्रेरित किया हे।

हमारा उद्देश्य "तिन्नाण तारयाण" अर्थात् अपनी साधना चले, वह पहली बात है, और साथ-साथ लोगो के लिए भी हम कुछ करे, उन्हे भी मार्ग दिखाए। ये दोनो कार्य चले। इससे अपना कल्याण, जनता का कल्याण और शासन की गरिमा बढती है।

उन्होने ऐसा कार्य किया हे। शासन की सेवा की हे। लबे समय तक सुदूर प्रदेशो मे रहे है। वे और अधिक इसको विकसित करे।

आमेट —युवाचार्य महाप्रज्ञ

२६ अगस्त, १६८५

अग्रगण्य—मुनिश्री विनयकुमार "आलोक"

सहयोगी—मुनिश्री कुलदीप कुमार, मुनिश्री तत्त्वरुचि

चातुर्मास—चडीगढ, (केन्द्र शासित)

तपस्या—मुनिश्री "आलोक"—उप-४४, वेला-२, तेला-३।

अणुव्रती हजारो बने। चडीगढ प्रवास के दौरान पजाब, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश के मुख्यमत्री मुनिश्री के सपर्क मे आये। विभिन्न विश्व-विद्यालयो के कुलपति विविध कार्यक्रमो मे सम्मिलित हुए। अकाली दल के अध्यक्ष सत हरचदसिह लोगोवाल, अकाली दल के वरिष्ठ नेता श्री सुरजीत-सिह बरनाला (वर्तमान मे मुख्यमत्री), पूर्व मुख्यमत्री श्री प्रकाशसिह बादल, श्री वाजपेयी, सैना मे पश्चिमी कमान के अध्यक्ष श्री के० सुदरजी, राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह, गृहमत्री शकरराव चव्हाण आदि वरिष्ठ नेताओ से मुनिश्री मिले व वातचीत की। पजाब व हरियाणा की विधानसभाओ मे मुनिश्री के भाषण हुए।

अग्रगण्य—मुनिश्री उगमराज

सहयोगी—मुनिश्री विरधीचद, मुनिश्री चिदानद

चातुर्मास—जोजावर (पाली, राज०)

तपस्या—मुनिश्री उगमराज-मासखमण—१, तेला-३२

गुरुधारणा-५

अग्रगण्य—मुनिश्री रोशनलाल

सहयोगी—मुनिश्री सभवकुमार

चातुर्मास—बाडमेर (राज०)

यात्रा—८६५ किलोमीटर, मत्र दीक्षा—३०, सम्यक्त्व दीक्षा—१२४

कर लेता हू । जुआ मे खेलता हू ओर भी अनेक प्रकार की बुरी आदते है। यद्यपि दूसरो को इनका पूरा पता नही है, किन्तु म मानसिक रूप से लाचार हू। इन्ह छोड नही सकता। मन मे यह सकोच होता है कि आपके पास आऊगा तो आप कोई न कोई नियम-सकल्प लेन के लिए कहेगे। म नियम निभा नही सकता। व्यसनो मे इतना गहरा फसा हू कि वे मुझे भले ही छोड दे, पर मे तो इस जन्म मे इन्हे नही छोड सकता।

मुनिश्री ने कहा—"मे तुम्हे कोई भी व्यसन छोडने के लिए नही कहूगा तब तो तुम सपक रखोगे ? उसने कहा—क्या आप मुझे बुराई छोडने के लिए नही कहेगे ?

मुनिश्री ने कहा—जब तुम कोई भी व्यसन नही छोड सकते, तो मैं सिफ दबाव देकर क्या करूगा ? हा, तुम इतने काम करते हो, तो मै तुम्हे एक काम और करने के लिए कहूगा।

उसने आश्चय से पूछा—कौनसा काम ?

मुनिश्री ने कहा—"तुम नियमित श्वास-दशन का प्रयोग किया करो।

उसने ईमानदारी से प्रयोग किया। कुछ दिन पश्चात् वह बोला—"क्या कारण हे कि आजकल न तो तबाकू पीने का मन होता है, न जरदा आदि खाने मे रुचि होती हे, न शराब की बोतल छूने का जी करता है। पहले जुए मे सारी-सारी रात बीत जाती थी, पर अब पता नही क्या हो गया उधर मुह करने को भी मन नही होता।

मुनिश्री ने कहा—तुम कहते थे न कि इस जन्म मे तो व्यसन नही छूट सकते।

वह बोला—मुझे स्वय आश्चर्य हो रहा हे कि यह सब कैसे हो गया ?

मुनिश्री ने कहा—श्वास-प्रेक्षा से भीतर मे रूपान्तरण होने लगता है। उसी का परिणाम है कि विजातीय तत्त्व छूट जाते ह।

निरन्तर अभ्यास से वह सवथा व्यसन मुक्त हो गया। प्रेक्षाध्यान के प्रति उसकी आस्था बढ गई।

युवाचार्यश्री का सदेश

मुनि गुलाबचद जी ने अपने सहवर्ती दो साधुओ के साथ सुदूर प्रदेश मे लबी-लबी यात्राए की। उन्होने अच्छा काय किया है। लोगो को धर्म की दिशा मे बहुत प्रेरित किया हे।

हमारा उद्देश्य "तिन्नाण तारयाण" अर्थात् अपनी साधना चले, वह पहली बात है, और साथ-साथ लोगो के लिए भी हम कुछ करे, उन्हे भी मार्ग दिखाए। ये दोनो कार्य चले। इससे अपना कल्याण, जनता का कल्याण और शासन की गरिमा बढती है।

उन्होने ऐसा कार्य किया है। शासन की सेवा की है। लबे समय तक सुदूर प्रदेशो मे रहे है। वे और अधिक इसको विकसित करे।

आमेट —युवाचार्य महाप्रज्ञ

२६ अगस्त, १६८५

अग्रगण्य—मुनिश्री विनयकुमार "आलोक"

सहयोगी—मुनिश्री कुलदीप कुमार, मुनिश्री तत्त्वरुचि

चातुर्मास—चडीगढ, (केन्द्र शासित)

तपस्या—मुनिश्री "आलोक"—उप-४४, वेला-२, तेला-३।

अणुव्रती हजारो बने। चडीगढ प्रवास के दौरान पजाव, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश के मुख्यमत्री मुनिश्री के सपर्क मे आये। विभिन्न विश्वविद्यालयो के कुलपति विविध कार्यक्रमो मे सम्मिलित हुए। अकाली दल के अध्यक्ष सत हरचदसिंह लोगोवाल, अकाली दल के वरिष्ठ नेता श्री सुरजीतसिंह बरनाला (वर्तमान मे मुख्यमत्री), पूर्व मुख्यमत्री श्री प्रकाशसिंह बादल, श्री वाजपेयी, सैना मे पश्चिमी कमान के अध्यक्ष श्री के० सुदरजी, राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह, गृहमत्री शकरराव चव्हाण आदि वरिष्ठ नेताओ से मुनिश्री मिले व बातचीत की। पजाब व हरियाणा की विधानसभाओ मे मुनिश्री के भाषण हुए।

अग्रगण्य—मुनिश्री उगमराज

सहयोगी—मुनिश्री विरधीचद, मुनिश्री चिदानद

चातुर्मास—जोजावर (पाली, राज०)

तपस्या—मुनिश्री उगमराज-मासखमण—१, तेला-३२

गुरुधारणा-५

अग्रगण्य—मुनिश्री रोशनलाल

सहयोगी—मुनिश्री सभवकुमार

चातुर्मास—बाडमेर (राज०)

यात्रा—८६५ किलोमीटर, मत्र दीक्षा—३०, सम्यक्त्व दीक्षा—१२४

कार्यक्रम—पचपदरा मे तीनो सप्रदायो की महती उपस्थिति मे महावीर जयति का कार्यक्रम मनाया गया। कवास गाव मे पच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर लगा। बाडमेर मे अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह उत्साहपूर्वक मनाया गया, जिसमे बाडमेर के जिलाधीश श्री के० एस० मणी, पुलिस अधीक्षक एस० एन० जैन, मूर्तिपूजक खरतरगच्छ सप्रदाय की साध्वी श्री चन्द्रप्रभा, रामस्नेही सतश्री स्वरूपानद, पत्रकार श्री केसरीमल, चौहटन के पूर्व विधायक श्री भगवानदास आदि ने भाग लिया।

अग्रगण्य—मुनिश्री सोहनलाल (राजगढ)

सहयोगी—मुनिश्री जयचदलाल (छापर) मुनिश्री विजयराज (राजगढ)।

चातुर्मास—लूणकरणसर (बीकानेर, राज०)।

यात्रा—स्थिर प्रवास, पच सूत्री सकल्प—५०, शीलव्रत—२।

जप—२ करोड ७२ लाख (ॐ अभीराशिको नम) जैन-विद्या-परीक्षार्थी-६६।

तपस्या—मुनिश्री सोहन-उप-४२, वेला-एक, एकान्तर-२ महीना।

मुनिश्री जयचद—उपवास-४२।

मुनिश्री विजयराज—उप-६०, वेला-१, एकान्तर-२ महीना।

श्रावक-श्राविकाओ मे—$\frac{१}{३६०१}$, $\frac{२}{७०}$, $\frac{३}{८०}$, $\frac{४}{५}$, $\frac{५}{२}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{७}{३}$, $\frac{८}{४३}$, $\frac{९}{३}$, $\frac{१०}{१}$, $\frac{११}{५}$, $\frac{१५}{२}$, $\frac{१७}{१}$।

कायक्रम—अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अन्तर्गत राजकीय चिकित्सालय मे मुनिश्री विजयराज के सान्निध्य मे व डा० साखला की अध्यक्षता मे अनेक कार्यक्रम हुए।

सस्मरण

ममीता बुच्चा (लूनकणसर) के सीने व हृदय मे खराबी थी। डॉक्टरो ने उसकी शल्य चिकित्सा की राय दी। उसने मुनिश्री की प्रेरणा से ग्याहर की तपस्या की। उसका दर्द काफूर हो गया, अच्छी नीद आने लगी, मन प्रसन्न हो उठा। इसी तरह श्रीमती सोहनी बोथरा, श्रीमती मनोहरी बुच्चा, श्रीमती कमला, श्रीमती लक्ष्मी भी विभिन्न रोगो से पीडित थी। तपस्या का क्रम प्रारभ होते ही उनके रोगो का क्रमश उपशमन होता गया।

मुनिश्री के लिए आचार्यवर का सदेश —

"लूणकरणसर मे मुनि सोहनलाल जी के आख मे तकलीफ है। मुनि जयचदजी व मुनि विजयराज बडे उत्साह से सेवा कर रहे है। एक सत की अपेक्षा बताई गई है और अपेक्षा सही भी है, जब तक ऐसा मौका नही मिलता तब तक हमारे उत्साही मुनि विजयराज को ही काम सभालना होगा। वहा की अपेक्षा हम ध्यान मे रखेगे और मौका आने से कुछ विशेष लक्ष्य रखेगे।

अग्रगण्य—मुनिश्री रवीन्द्र कुमार

सहयोगी—मुनिश्री मुनिव्रत, धर्मानद

चातुर्मास—नाभा (पजाब)

यात्रा—५५९ किलोमीटर, क्षेत्र-२०

मत्र दीक्षा—३१, सम्यक्त्व दीक्षा-१००, जैन धर्म दीक्षा-२२।

पच सूत्री सकल्प—१०१, वर्गीय अणुव्रती-८००, वर्षीतप-१।

त ा

मुनिश्री रवीन्द्र—$\frac{१}{८}$, $\frac{२}{२}$, $\frac{५}{१}$, $\frac{१५}{१}$, जप-डेढ घटा, ध्यान-आधा घटा।

मुनिश्री मुनिव्रत—$\frac{१}{४}$, $\frac{२}{१}$, जप-आधा घटा, ध्यान-आधा घटा मौन-चार घटा।

मुनिश्री धर्मानद—$_{३}\frac{१}{१}$, $\frac{२}{३}$, $\frac{३}{१}$, $\frac{४}{१}$।

मुनि त्रय ने प्रतिदिन सामूहिक कई आगमो का तथा सघीय साहित्य का भी वाचन किया।

कार्यक्रम—जगराओ मे द्विदिवसीय प्रेक्षा प्रयोग शिविर लगा, जिसमे युवक परिषद् के युवको ने सोत्साह भाग लिया। महावीर जयति व अक्षय तृतीय के भव्य कार्यक्रम हुए। नाभा मे अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि समारोह समायोजित हुए। स्थानीय जैन हाई स्कूल एव गवर्नमेंट हाई स्कूल मे मुनिश्री का प्रवचन हुआ। अकाली विधायक राजा नरेन्द्रसिह, काग्रेस सरकार के पूर्व मत्री श्री गुरुदर्शन सिह व कम्युनिस्ट नेता कामरेड गुरदेवसिह आदि ने मुनिश्री से मुलाकात की। हिसार मे तेयुप द्वारा भिक्षु वाचनालय तथा जगराओ मे लाला झडुमल वाचनालय का उद्घाटन हुआ।

अग्रगण्य—मुनिश्री मगनमल 'प्रमोद'

सहयोगी—मुनिश्री फतहचद 'पकज', मुनिश्री मैताय

अग्रगण्य—मुनिश्री मूलचद 'मराल'

सहयोगी—मुनिश्री वर्धमान

चातुर्मास—दोनो सघाटको का सयुक्त (बाव, गुजरात)

मुनिश्री मूलचद—यात्रा-८०० किलोमीटर, क्षेत्र-२५

तपस्या—$२\frac{१}{७}$, $\frac{२}{२}$, $\frac{५}{१}$, वाचना-२५०० पृष्ठ, जप-डेढ घटा, ध्यान-आधा घटा।

कार्यक्रम—१० मार्च/पालनपुर/लक्ष्मण टेकरी के विशाल हॉल मे मुनि श्री का "मानव जीवन और अणुव्रत" विपय पर सावजनिक भाषण हुआ। इस कायक्रम मे प्रमुख अतिथि श्री काति भाई सघवी ने भी अपने विचार रखे। ज्योतिर्विद श्री जयतिभाई शास्त्री ने मुनिश्री के दशन किये। राधनपुर मे अक्षय तृतीया का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस मौके पर सुश्री वसुमती ने वर्षीतप का पारणा किया। भाषण मे मुनिश्री के सान्निध्य मे महिला मडल का विशेष कार्यक्रम रहा।

बहुत बचे

मुनिश्री मूलचद एक दिन शौच से निवृत्त होकर आ रहे थे। एक पागल आदमी ने उन पर लाठी से जोरदार प्रहार किया। किंतु दूसरा प्रहार करे, उससे पहले वे सभल गये। प्रहार तो काफी तेज था, किन्तु उन्होने तत्परता से टाल दिया। गुरुदेव की कृपा से बहुत जल्दी स्वास्थ्य लाभ भी हो गया। आचार्यश्री ने इस प्रसग पर एक सदेश प्रदान किया, जिसमे आचार्यप्रवर ने मुनिश्री के साहस की सराहना की तथा मूर्तिपूजक आचार्यश्री ओकार सूरि के सौहार्द एव एकता के प्रयास को महत्वपूर्ण बताया।

मुनिश्री मगनमल "प्रमोद"

यात्रा—८५६ किलोमीटर, क्षेत्र—५०

वर्गीय अणुव्रती—हजारो, दीक्षा—७५, सम्यक्त्व दीक्षा—१७५

तपस्या—मुनिश्री "प्रमोद"—$२\frac{१}{४}$, $\frac{२}{३}$, $\frac{३}{१}$ जप एक घटा

मुनिश्री "पकज"—$\frac{१}{१७}$, $\frac{३}{३}$, $\frac{३}{४}$ जप दो घटा

मुनिश्री मैतार्य—$\frac{१}{१०}$, $\frac{३}{२}$, $\frac{६}{१}$ आयबिल—९, जप—एक घटा

कार्यक्रम—विक्रोली (बबई) से चातुर्मास परिसमाप्ति के बाद विहार किया। बबई के उपनगरो मे अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए। कुर्ला मे कच्छी वीसा ओसवाल सेवा सघ के विशाल हॉल मे मुनिश्री का विशेष प्रवचन हुआ।

मलाड मे "राष्ट्रीय एकता मे अणुव्रत का योगदान" विषय पर कार्यक्रम तथा पूरी बवई की ओर से विदाई कार्यक्रम रखा गया। ठेकाले मे निर्माणाधीन नहर के अभियता, अधिकारियो के साथ मुनिश्री का वार्तालाप हुआ। मनोर, बलसाड, सूरत, अहमदाबाद मे भी रोचक कार्यक्रम हुए। डीसा मे मुनिश्री की अस्वस्थता की वजह से पाच महीने रुके। वहा मर्यादा महोत्सव, महावीर जयति व अक्षय तृतीया के कार्यक्रम हुए।

बाव चातुर्मास मे सघाटक द्वय की युगपत् सन्निधि मे आयोजित होने वाले कार्यक्रम इस प्रकार है—अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव के अतिरिक्त अनेक अन्य कार्यक्रम भी हुए। चातुर्मासिक प्रवास मे अनेको इजीनियर, डॉक्टर आदि ने मुनिश्री से अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान आदि पर अनेक बार बातचीत की। वहा चातुर्मास कर रहे मूर्तिपूजक आचार्यश्री ओकार सूरि से पृथक्-पृथक् विषय पर वार्तालाप हुआ।

अन्य विवरण—भक्तामर—२०, प्रतिक्रमण—३०, कल्याण मदिर, चौबीसी ६, निर्धारित पाच थोकडे—८ बहिनो ने, अणुव्रत परीक्षार्थी—१५, जैन विद्या परीक्षार्थी—४७

तपस्या—(श्रावक-श्राविकाओ मे) १/३०९०, २/८५, ३/८८, ४/३५, ५/१५, ६/४, ७/४, ८/९, ९/९, १०/१२, ११/२, १२/५, १६/९, १७/१, ३१/८, ४५/१

दो मास एकान्तर—३५, उपवास बारी—१३

'ॐ अभीराशिको नम' का जप—२५ लाख

तपस्या के विभिन्न प्रयोग भी कराये गये। भिक्षु चरमोत्सव तथा दीपावली के दिन काफी बेले, तेले हुए।

मासखमण तथा उससे ऊपर तपस्या करने वाले।

१ मुनिश्री फतहचद 'पकज'—३१	२ कुमारी अरुण मेहता—३१
३ कुमारी जयश्री दोसी—३१	४ श्रीमती तारा मेहता—३१
५ कुमारी वर्षा मेहता—३१	६ श्रीमती लीला मेहता—३१
७ श्रीमती सज्जन मेहता—३१	८ कुमारी ललिता डोसी—४५
९ श्रीमती लीला मेहता—३१	१० श्रीमती चची मेहता—३१

आमेट अमृत-महोत्सव पर बाव से करीब २०० भाई-बहिन गये। मघवी परिवार मे ३ मौत हो जाने पर ६०-६५ भाई-बहिने गए। समय-समय पर लोग सघ रूप मे जाते रहे।

मुनिश्री को प्राप्त आचार्यश्री के सदेश—

मुनि मगनमल जी !

ववई से विहार किया और दर्शन की भावना को लेकर चल पडे। रास्ते मे घुटनो मे अधिक दर्द होने पर भी तुम चलते रहे, यह हमारे सघ का समर्पण, दृढ मनोवल है, पर शरीर की तरफ भी कभी-कभी ध्यान देना जरूरी होता है। कही सभव हो तो प्राकृतिक चिकित्सा का ध्यान देना जरूरी है जिससे शरीर भी हल्का रहे व ठीक हो जाये। सभी सत मानसिक समाधि से स्वस्थ रहे।

१५-१-८५ आचार्य तुलसी

मुनिश्री पूनमचद (गगाशहर) के साथ आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण सदेश प्राप्त हुए। मुनिश्री फतहचद तथा अन्य वहिनो के मासखमण की तपस्या के उपलक्ष मे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री एव साध्वी प्रमुखाश्री ने प्रेरक सदेश प्रदान किए।

अग्रगण्य—मुनिश्री जशकरण, मुनिश्री मिलापचद

सहयोगी—मुनिश्री पृथ्वीराज, मुनिश्री प्रमोदकुमार

चातुर्मास—वोरावड (नागौर राजस्थान)

यात्रा—१०० किलोमीटर, क्षेत्र—१३.

पच सूत्री सकल्प—३५०, मत्र दीक्षा—१२५, जैन धर्म दीक्षा—२, व्रत दीक्षा—१५, शीलव्रत—१०, जैन विद्या परीक्षा–१५२, अणुव्रत परीक्षा–३६, पत्राचार पाठमाला—१५, पाच थोकडा सीखने वाले ३१, थोकडा सीखने वाले ८०, कुल गाथाओ का कठीकरण १,००,००० गाथा। ३१ लडकियो ने ५४ वस्तुओ को सीखा, जिनमे थोकडे, सस्कृत स्तोत्र, गेय काव्य आदि शामिल हैं। एक-एक वहिन ने क्या-क्या ग्रन्थ सीखे, इसकी रिपोर्ट वहुत व्यवस्थित मिली है।

सतो मे पच्चीस वोल सहित छह थोकडे सीखने वाले है—मुनिश्री पृथ्वीराज, मुनिश्री प्रमोद कुमार।

साधुओ मे ६३ उपवास हुए, मुनिश्री प्रमोद ने आठ की तपस्या की। मुनिश्री मिलापचद छाछ के आगार पर उल्लेखनीय तप-तप रहे है। १७ फरवरी को उनके ३६१ दिनो की तपस्या थी। सभव है आचार्यवर के वोरा-वड पधारने पर पारणा होगा।

मुनिश्री के सान्निध्य मे विभिन्न सघीय कायक्रम हुए। मुनिश्री के

सपर्क मे आने वालो मे प्रमुख है—विधान सभा मे लोकदल मे नेता श्री नाथूराम मिर्धा, जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री कल्याणसिह कालवी, मकराना के विधायक श्री अब्दुल अजीज, प्रधान श्री भवरलाल पुरोहित, सवाददाता श्री हनुमान प्रसाद सोढाणी।

आचार्यश्री के सदेश

जसोल
४-२-१९८५

मुनि मिलाप का एक मासिक भ्रमण अच्छा रहा, ऐसा गौतम जी से ज्ञात हुआ। मुनि मिलाप परिश्रमशील है। तुम लोगो मे शासन भक्ति, समर्पण भाव सहज है सो तो है ही, पर मुनि पृथ्वीराज का सेवाभाव और विशिष्ट है। शिष्य प्रमोद भी विनम्र रहता हुआ प्रमोद भावना को न भूले।

आचार्य तुलसी

एक-दूसरे सदेश मे मुनिश्री मिलापचद के इस तप को आचार्यवर ने उत्कृष्ट मनोबल का परिचायक बताया तथा मुनिश्री के सघ के प्रति सर्वात्मना समर्पण की सराहना की। मुनिश्री जशकरण के सान्निध्य मे हो रही सतो (प्रमोद मुनि के अठाई भी) तथा श्रावक-श्राविकाओ की तपस्या के प्रति आचार्यवर ने शुभकामना प्रकट की।

एक मासिक व उससे अधिक सेवा करने वाले—१ श्रीमती मिश्रीमल भडारी, २ श्री सोहनलाल ३ श्रीमती सुन्दरलाल कोटेचा ४ श्रीमती सुन्दर लाल कोटेचा।

अ —मुनिश्री गणेशमल (गगाशहर)

सहयोगी—मुनिश्री कन्हैयालाल, मुनिश्री चारित्ररुचि

चातुर्मास—रतनगढ चूरू, (राजस्थान)

यात्रा—१११ किलोमीटर, क्षेत्र—५

पच सूत्री—सकल्प ४५०

तपस्या—मुनिश्री गणेशमल उपवास—२

मुनिश्री कन्हैया—उपवास—३६, नव—१

मुनिश्री चारित्र रुचि, उपवास—४१, एक महीना एकान्तर क्षमा आदि के भी विशेष प्रयोग हुए। जप करोडो मे हुआ। हजारो सामयिके

हुई। चातुर्मास प्रारम्भ होने के साथ अमृत-महोत्सव सदर्भ मे प्रतिदिन घर-घर मे एक दिन का अखड जाप होता। परमेष्ठी वदना से प्रारम्भ इस अनुष्ठान का समापन "सिरियारी रो सत" गीत से होता।

कार्यक्रम

चाडवास के द्विमासिक प्रवास मे अन्यान्य कार्यक्रमो के साथ मर्यादा-महोत्सव समारोह समायोजित हुआ। चैत्र मास मे मुनिश्री का पुन समागम हुआ। वहा मुनिश्री गणेशमल व मुनिश्री राकेशकुमार की युगपत् सन्निधि मे महावीर जयति का भव्य कार्यक्रम हुआ। बीदासर के प्रलम्ब प्रवास मे नियमित तत्त्व गोष्ठियो के अलावा अक्षय तृतीया का भी कार्यक्रम रहा। अमृत-महोत्सव के प्रथम चरण के प्रथम दिन का कार्यक्रम मुनिश्री व द्वितीय दिवस का समाधि केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी श्री मानकवर के सान्निध्य मे हुआ। रतनगढ मे अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि भव्य समारोह हुए।

अग्रगण्य—मुनिश्री सोहनलाल (लूणकरणसर)

सहयोगी—मुनिश्री जोधराज, मुनिश्री चारित्रप्रकाश

चातुर्मास—तारानगर, चूरू, (राज०)

यात्रा—१५० कि० मी०, क्षेत्र—५

पच सूत्री सकल्प—११५, सम्यक्त्व दीक्षा—६०, साधुओ मे ६५ उपवास हुए। भाई वहिनो मे वर्षीतप—२

$\frac{८}{१२}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{१२}{३}$

अग्रगण्य—मुनिश्री डूगरमल

सहयोगी—मुनिश्री चपालाल (सरदारशहर) मुनिश्री शोभालाल

चातुर्मास—चूरू (राज०)

कार्यक्रम

मुनिश्री का पूर्व चातुर्मास जयपुर था। जयपुर के कॉलेज, स्कूल व अन्य शिक्षण सस्थाओ मे अणुव्रत कार्यक्रम हुए। राजस्थान प्रातीय कॉलेज व माध्यमिक विद्यालयो का त्रिदिवसीय अणुव्रत सेमिनार रखा गया। जेसीस सस्था की ओर से अवधान का कार्यक्रम रखा गया।

चौमू मे दिगवर समाज के विशेष निवेदन पर महावीर जयति का कार्यक्रम मनाया गया।

चूरू मे श्री हणूतमल सुराणा की हवेली मे मुनिश्री चपालाल ने अवधान के दो कार्यक्रम प्रस्तुत किये। जिसमे राज० उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री गुमानमल लोढा, स्थानीय विधायक श्रीमती हमीदा वेगम, जिलाधीश, सेशन जज एव अन्य बुद्धिजीवी समुपस्थित थे।

वैष्णव समाज के आग्रह पर कृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम मुख्य बाजार स्थित पोद्दार भवन मे विशाल उपस्थिति मे मनाया गया। जिनमे मुनिश्री का प्रभावी भाषण हुआ। दिगवर जैन मदिर मे दो बार मुनिश्री का प्रवचन हुआ। स्थानीय बाघला व गोयनका हायर सैकेंडरी स्कूल मे अध्यापको की प्राथना पर मुनिश्री चपालाल ने रोचक अवधान कायक्रम प्रस्तुत किये। अमृत-महोत्सव का कायक्रम श्री सागरमल वैद की हवेली मे रखा गया। चातुर्मास काल मे महिलाओ, युवको की अनेक गोष्ठिया हुई, जिसमे मुनिश्री ने सघ की गतिविधियो एव प्रवृत्तियो पर सुन्दर प्रकाश डाला। चातुर्मास मे तपस्या एव जप का व्यवस्थित क्रम चला। शासन स्तभ मुनिश्री नथमल के साथ सुजानगढ मे मुनिश्री डेढ महीने रहे।

अग्रगण्य—मुनिश्री हनुमानमल 'हरीश'

सहयोगी—मुनिश्री देवराज (सायरा)

चातुर्मास—सिसोदा (उदयपुर, राजस्थान)

यात्रा—७० किलोमीटर, क्षेत्र—१०

वर्गीय अणुव्रती—१५०, पच सूत्री सकल्प—२००, पच्चीस बोल सीखने वाले—१०

कार्यक्रम—सायरा मे कवि सम्मेलन हुआ। पजाबी सतश्रीविजय मुनि तथा मूर्तिपूजक मुनिश्री जयन्तविजय से मिलन हुआ, बातचीत की। रावलिया खुर्द मे, (जो तृतीय आचायश्री रायचदजी स्वामी की निर्वाण भूमि है), उनका १३३ वा चरमोत्सव 'सेरा' प्रातीय स्तर पर मनाया गया, जिसमे सैकडो लोग उपस्थित हुए। गोगुन्दा मे मर्यादा-महोत्सव का भव्य कार्यक्रम रहा। भौर गाव मे महावीर जयति मनाई गई। सिसोदा मे अमृत-कलश पदयात्रा के दौरान समणियो एव पदयात्रियो का आगमन हुआ और प्रेरणादायी कायक्रम हुआ। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का कायक्रम भी महत्त्वपूर्ण रहा। तपस्या मे ७ अठाई हुई। एक वर्षीतप चल रहा हे।

मुनिश्री का पहले सायरा चातुर्मास घोपित था, पर सिसोदा मे आपाढ

हुई। चातुर्मास प्रारम्भ होने के साथ अमृत-महोत्सव सदर्भ मे प्रतिदिन घर-घर मे एक दिन का अखड जाप होता। परमेष्ठी वदना से प्रारम्भ इस अनुष्ठान का समापन "सिरियारी रो सत" गीत से होता।

कार्यक्रम

चाडवास के द्विमासिक प्रवास मे अन्यान्य कायक्रमो के साथ मर्यादा-महोत्सव समारोह समायोजित हुआ। चैत्र मास मे मुनिश्री का पुन समागम हुआ। वहा मुनिश्री गणेशमल व मुनिश्री राकेशकुमार की युगपत् सन्निधि मे महावीर जयति का भव्य कार्यक्रम हुआ। बीदासर के प्रलम्ब प्रवास मे नियमित तत्त्व गोष्ठियो के अलावा अक्षय तृतीया का भी कार्यक्रम रहा। अमृत-महोत्सव के प्रथम चरण के प्रथम दिन का कार्यक्रम मुनिश्री व द्वितीय दिवस का समाधि केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी श्री मानकवर के सान्निध्य मे हुआ। रतनगढ मे अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि भव्य समारोह हुए।

अग्रगण्य—मुनिश्री सोहनलाल (लूणकरणसर)

सहयोगी—मुनिश्री जोधराज, मुनिश्री चारित्रप्रकाश

चातुर्मास—तारानगर, चूरू, (राज०)

यात्रा—१५० कि० मी०, क्षेत्र—५

पच सूत्री सकल्प—११५, सम्यक्त्व दीक्षा—६०, साधुओ मे ६५ उपवास हुए। भाई बहिनो मे वर्षीतप—२

$\frac{८}{१२}, \frac{६}{६}, \frac{१३}{३}$

अग्रगण्य—मुनिश्री डूगरमल

सहयोगी—मुनिश्री चपालाल (सरदारशहर) मुनिश्री शोभालाल

चातुर्मास—चूरू (राज०)

कार्यक्रम

मुनिश्री का पूर्व चातुर्मास जयपुर था। जयपुर के कॉलेज, स्कूल व अन्य शिक्षण सस्थाओ मे अणुव्रत कायक्रम हुए। राजस्थान प्रातीय कॉलेज व माध्यमिक विद्यालयो का त्रिदिवसीय अणुव्रत सेमिनार रखा गया। जेसीस सस्था की ओर से अवधान का कार्यक्रम रखा गया।

चौमू मे दिगबर समाज के विशेष निवेदन पर महावीर जयति का कार्यक्रम मनाया गया।

चूरू मे श्री हणूतमल सुराणा की हवेली मे मुनिश्री चपालाल ने अवधान के दो कार्यक्रम प्रस्तुत किये। जिसमे राज० उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री गुमानमल लोढा, स्थानीय विधायक श्रीमती हमीदा बेगम, जिलाधीश, सेशन जज एव अन्य बुद्धिजीवी समुपस्थित थे।

वैष्णव समाज के आग्रह पर कृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम मुख्य बाजार स्थित पोद्दार भवन मे विशाल उपस्थिति मे मनाया गया। जिनमे मुनिश्री का प्रभावी भाषण हुआ। दिगंबर जैन मदिर मे दो बार मुनिश्री का प्रवचन हुआ। स्थानीय बाघला व गोयनका हायर सैकेंडरी स्कूल मे अध्यापको की प्रार्थना पर मुनिश्री चपालाल ने रोचक अवधान कार्यक्रम प्रस्तुत किये। अमृत-महोत्सव का कार्यक्रम श्री सागरमल वैद की हवेली मे रखा गया। चातुर्मास काल मे महिलाओ, युवको की अनेक गोष्ठिया हुई, जिसमे मुनिश्री ने सघ की गतिविधियो एव प्रवृत्तियो पर सुन्दर प्रकाश डाला। चातुर्मास मे तपस्या एव जप का व्यवस्थित क्रम चला। शासन स्तभ मुनिश्री नथमल के साथ सुजानगढ मे मुनिश्री डेढ महीने रहे।

अग्रगण्य—मुनिश्री हनुमानमल 'हरीश'

सहयोगी—मुनिश्री देवराज (सायरा)

चातुर्मास—सिसोदा (उदयपुर, राजस्थान)

यात्रा—७० किलोमीटर, क्षेत्र—१०

वर्गीय अणुव्रती—१५०, पच सूत्री सकल्प—२००, पच्चीस बोल सीखने वाले—१०

कार्यक्रम—सायरा मे कवि सम्मेलन हुआ। पजाबी सतश्रीविजय मुनि तथा मूर्तिपूजक मुनिश्री जयन्तविजय से मिलन हुआ, बातचीत की। रावलिया खुर्द मे, (जो तृतीय आचार्यश्री रायचदजी स्वामी की निर्वाण भूमि है), उनका १३३ वा चरमोत्सव 'सेरा' प्रातीय स्तर पर मनाया गया, जिसमे सैकडो लोग उपस्थित हुए। गोगुन्दा मे मर्यादा-महोत्सव का भव्य कार्यक्रम रहा। भौर गाव मे महावीर जयति मनाई गई। सिसोदा मे अमृत-कलश पदयात्रा के दौरान समणियो एव पदयात्रियो का आगमन हुआ और प्रेरणादायी कार्यक्रम हुआ। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का कार्यक्रम भी महत्त्वपूर्ण रहा। तपस्या मे ७ अठाई हुई। एक वर्षीतप चल रहा है।

मुनिश्री का पहले सायरा चातुर्मास घोषित था, पर सिसोदा मे आषाढ

कृष्णा २ को रात्रि मे लगभग तीन बजे अर्धांग पर पक्षाघात का आकस्मिक दौरा पडा। आधा शरीर निश्चेतन हो गया। वाणी अस्पष्ट हो गई। उस अस्पष्टता मे ही मुनिश्री ने '‌ॐ अभीराशिको नम' का जप करना प्रारम्भ कर दिया। इतने मे सहयोगी सत देव मुनि जगे, आये और घर्षण करना प्रारम्भ कर दिया। ॐ भिक्षु के निरन्तर जप व देव मुनि के घर्षण ने एक करिश्मा दिखाया और आधा अग पुन सचेतन हो गया। वाणी स्पष्ट हो गई। पक्षाघात की बीमारी तो उपशात हो गई, पर शरीर मे कमजोरी घर कर गई। ऐसी स्थिति मे अत्यन्त कृपा कर आचार्यवर ने उनका चातुर्मास परिवर्तित कर सीसोदा घोषित कर दिया।

साध्वियो का विवरण

अग्रगण्य—साध्वीश्री जयश्री (राजलदेसर)

सहयोगी—साध्वीश्री कमलप्रभाजी (बोरज), साध्वीश्री कनकरेखाजी (श्रीडूगरगढ), साध्वीश्री प्रियदर्शनाजी (सूरतगढ), साध्वीश्री मुदित प्रभाजी (उकलानामडी)

चातुर्मास—मैसूर (कर्नाटक)

यात्रा—चातुर्मास से पूर्व ९०० किलोमीटर, मैसूर से उदयपुर—१८०० किलोमीटर, अणुव्रती—२००, वर्गीय अणुव्रती—५०००, पच सूत्री सकल्प—४०००, मत्र दीक्षा—११५, सम्यक्त्व दीक्षा—१०१, जैन धर्म दीक्षा—४१, बारहव्रती—१००, शीलव्रत—५, सचित्त त्याग—५१, स्फुट त्याग—५००, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण-शिविर—५, प्रेक्षा प्रशिक्षण शिविर—१, जैन विद्या—३१, पत्राचार—२५, प्रतिक्रमण—१५, पचीस बोल—११, नई पचपद वदना—२००, भक्तामर-कल्याण मदिर—१३,

तपस्या साध्वियो मे—१/२२१, २/३, ३/५, ४/१, ८/१, ३१/१

आयबिल—४१, कठस्थ—१०० गाथा, मौन—१० घटा प्रतिदिन, जप—३ घटा प्र० दि०, ध्यान—दो घटा, स्वाध्याय—१००० गाथा प्रतिदिन, विशेप अनुष्ठान—४० लाख जप ॐ भिक्षु, ॐ अभीराशिको नम,

वाचन—सघीय साहित्य १० हजार पृष्ठ, आगम साहित्य ५ हजार पृष्ठ, आगमेतर साहित्य—दो हजार पृष्ठ

भाई-बहिनो मे १/२८००, २/३००, ३/६१, ४/–, ५/२५, ७/२, ८/५१, ९/१७, १०/१, ११/१६, १५/४, २०/१, ३१/३ ५/१, आयबिल—२०००, उपवासवारी—१५, एकान्तर—२५, बेले-बेले—१, वर्षीतप—७, जप अभीराशिको नम—१५ करोड, ३१ की तपस्या करने वालो के नाम

१ कुमारी मीनाक्षी (मात्र १८ वष), २ श्रीमती सिरिया,
३ श्रीमती पिस्ता

आचायप्रवर की दीक्षा-दिवस युवा-दिवस के रूप मे मद्रास के उपनगर तिरवात्तुर मे मनाया गया, कार्यक्रम के अध्यक्ष थे कृष्ण स्वामी रेड्डीयार। मुख्य अतिथि मद्रास हाईकोर्ट के पूव जज श्री एस० आर० एम० टी० सी०

के० गरियाजी, सर्वोदयी कार्यकर्ता गोतमजी वजाज, श्री शोभाकान्त, उषा वहिन । मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम रेड हिल्स केसरवाडी के विशाल प्रागण मे हुआ । अध्यक्ष ई० वी० के० सुलोचना सम्पत, तमिलनाडु वुक सोसाइटी के मैनिजिंग डाइरेक्टर, मुख्य अतिथि श्री सुदरम् (कमिशनर एव सैकेटरी रूरज डेवलपमेट) अखिल तमिलनाडु प्रादेशिक श्रावक सम्मेलन, ट्रिपलीकेन सभा भवन मे हुआ । विशाल कवि सम्मेलन साहूकार पेठ सभा भवन मे डा० रवीन्द्र के कुशल सचालन मे आयोजित हुआ । महावीर जयति तिरुवन्नामलै तथा अक्षय तृतीया सेलम मे मनाई गई । चातुर्मास प्रवेश पर आयोजित स्वागत समारोह के अध्यक्ष डॉ० सत्यनारायणजी (मैसूर नगर के मेयर), मुख्य अतिथि दक्षिण के कमठ कायकर्ता श्री सोवनराजजी चडालिया तथा दयारामजी जीरावला । तप अभिनदन समारोह—साध्वीश्री मुदित प्रभा के मासखमण के उपलक्ष मे कार्यक्रम के अध्यक्ष डा० जीवेन्द्र कुमार मुख्य अतिथि, स्थानकवासी श्री रीखबचदजी छल्लाणी व श्री तेजराज भडारी, मूर्ति-पूजक श्वेतावर श्री हेमचद एव श्री पुखराज, दिगवर श्री महावीर प्रसादजी, तेरापथी श्री सोहनराज चडालिया । तप अभिनदन समारोह पर आचार्यवर का सदेश ।

"साध्वी जयश्रीजी के सान्निध्य मे साध्वी मुदितप्रज्ञा के तपस्या चल रही है । वह मासखमण की भावना रखती है । यह वहुत वडी वात है । मैसूर मे गर्मी कम पडती है । मौसम की अनुकूलता के कारण तपस्या मे सुविधा रहती होगी, किंतु भूखा तो रहना ही पडता है । साध्वी मुदितप्रभा ने मासखमण का सकल्प करके साहस का परिचय दिया हे । तपस्या के साथ ध्यान, जप और स्वाध्याय का क्रम भी चलना चाहिए । इस तपस्या से मैसूर तथा उसके आस-पास के क्षेत्रो मे अच्छी धर्म जागरणा होगी, तपस्या के प्रति-शुभ कामना ।

—आचार्य तुलसी

अमृत-महोत्सव कार्यक्रम साध्वीश्री के सान्निध्य मे, पूव हिंदी प्रोफेसर श्री लक्ष्मीकात की अध्यक्षता मे सपन्न हुआ ।

अणुव्रत उद्वोधन सप्ताह मे सम्मिलित विशिष्ट व्यक्ति—

- के० एन० वरराजन अयगर, सपादक सुधर्मा सस्कृत दैनिक पत्र
- एस० आई० ओ० एम० राजेश्वरेयाजी, सपादक व पूव हिंदी प्रोफेसर
- पी० जी० सचिदानदजी सपादक व पूव हिंदी प्रोफेसर

- श्री शकरराव, प्रिंसिपल महारानी जूनियर कॉलेज
- ए० पी० ए० एल० लक्ष्मीकातजी, भूतपूर्व हिंदी प्रोफेसर
- श्री के० एम० मरिस्वामी, प्रिंसिपल मरिमल्लाया शिक्षण सस्था
- एम० एन० गोपालराव, प्रिंसिपल शारदा विलास कॉलेज
- अध्यक्ष को० ओ० सो० यूनियन के श्री के० कृष्णा
- राजेश्वरैया आराध्या, महिला ट्रेनिग कॉलेज के प्रोफेसर एव विनोबा भावे के विशिष्ठ शिष्य
- कद्रेश्वरय्याजी, कर्नाटक हिंदी प्रचार सभा के कर्मठ कार्यकर्ता, मैसूर विश्वविद्यालय के उपकुलपति
- जैन समाज के सामूहिक क्षमा याचना पर्व पर मैसूर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० वे० पी० रूद्रय्या तथा रामकृष्ण आश्रम के अध्यक्ष श्री सोमनाथ जी महाराज उपस्थित हुए ।

विशिष्ट व्यक्तियो के विचार

(१) **श्री कृष्णस्वामी रेडियार**—मद्रास हाईकोर्ट के पूर्व जज ने आचार्यप्रवर के दीक्षा समारोह मे बोलते हुए कहा—'आचार्यश्री तुलसी अध्यात्म जगत् के महान् प्रतिनिधि है। अणुव्रत आदोलन से न केवल भारत ही, किंतु सपूर्ण मानव जाति अगडाई लेगी, फिर से हमे रामराज्य देखने को मिलेगा ।

—१४-१२-८४, मद्रास

(२) **डॉ० राजेश्वरैय्या**—आचार्यश्री तुलसी से मै अनेक बार मिला हू उन्हे निकटता से भी देखा है। उनके मन मे समाज सुधार की बडी गहरी तडफ है समय-समय पर उन्होने अणुव्रतो के माध्यम से राष्ट्र के नाम सदेश भी दिये है। मुझे लगता है वे तडफती मानवता के लिए त्राण, शरण और सरक्षक है।

(३) **डॉ० सत्यनारायण, मेयर, मैसूर, नगर निगम**—स्वागत समारोह मे बोलते हुए उन्होने कहा—'आचार्यश्री तुलसी एक गगा है, जिसमे स्नान कर सारा ससार पवित्र बन रहा है। उसी गगा की एक उज्ज्वल धारा हमारे मैसूर शहर मे आई है और वह भी ग्यारह वर्षो के बाद। इसके लिए मैं आचायश्री का आभारी हू।'

अग्रगण्य साध्वीश्री यशोमती

सहयोगी—साध्वीश्री धनकवर (लाडनू) साध्वीश्री किरणमाला

(भादरा) साध्वीश्री रचनाश्री (टमकोर)
चातुर्मास—केलवा (उदयपुर, राज०)
यात्रा—५०० किमी०, क्षेत्र—४१
मत्र दीक्षा—२५, सम्यक्त्व दीक्षा—१००, पच सूत्री सकल्प—१०००
तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१
तपस्या-साध्वियो मे—$\frac{1}{85}$, आयविल—६, ध्यान—दो घटा, मौन—४ घटा

भाई-वहिनो मे—$\frac{1}{100}$, $\frac{2}{11}$, $\frac{3}{6}$, $\frac{4}{4}$, $\frac{5}{7}$, $\frac{6}{1}$, $\frac{8}{10}$, $\frac{9}{5}$, $\frac{21}{1}$, $\frac{31}{1}$, वर्षीतप—२, उपवास वारी– ८, एकान्तर—७, ३१ की तपस्या लक्ष्मीलाल कोठारी ने की। केलवा चौखले मे आयविल २४८८, जप—१३ लाख का हुआ।

कार्यक्रम—अधेरी आरी मे तेरापथ स्थापना दिवस का कार्यक्रम उत्साह पूर्वक मनाया गया। अमृत-कलश पदयात्रा के दौरान साध्वीश्री के सान्निध्य मे पडासली व धानीन मे विशेष समारोह हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सरोजकुमारी (बबई)

सहयोगिनी—साध्वीश्री चदना, साध्वीश्री चन्द्र लेखा
साध्वीश्री सोमप्रभा, साध्वीश्री निर्मला कुमारी
चातुर्मास—ब्यावर (अजमेर, राज०)
यात्रा—४०० किमी०, क्षेत्र—२१
मत्र दीक्षा—१५, पच सूत्री सकल्प—१०२, शीलव्रत—१
प्रेक्षा प्रशिक्षण शिविर– १ (५ दिन), महिला प्रशिक्षण शिविर—१ (३ दिन)

साध्वीश्री सरोज—$\frac{1}{5}$ — तीन थोकडे सीखे
साध्वीश्री चदना—$\frac{1}{27}$, $\frac{2}{1}$ वर्षीतप चालू — पाच ,, ,,
साध्वीश्री चद्र लेखा—$\frac{1}{38}$, $\frac{2}{1}$, $\frac{3}{1}$ — तीन ,, ,,
साध्वीश्री सोमप्रभा—$\frac{1}{4}$ — तीन ,, ,,
साध्वीश्री निर्मला—$\frac{1}{7}$ एकान्तर-एक माह, आयविल-सोलह — पाच ,, ,,

साध्वीश्री के सपर्क मे स्थानीय विधायक श्री माणक डाणी, विभिन्न विद्यालयो के शिक्षक, प्रधानाध्यापक साध्वीश्री से मिले। विभिन्न समारोहो के राजस्थान के पत्रो मे खबरे छपी। ब्यावर मे मासखमण की तपस्या श्रीमती सुशीला मुथा ने की। आचायवर की एक मासिक सेवा श्रीमती सुवा मुथा श्रीमती पतासी श्री श्रीमाल, श्रीमती रतन साखला, श्रीमती विदामराव ने

व्यक्तिगत की ।

८४—साध्वीश्री लक्ष्मीकुमारी (शार्दूलपुर)

सहयोगिनी—साध्वीश्री ज्ञानकुमारी (शार्दूलपुर), साध्वीश्री कानकवर (छापर), साध्वीश्री सज्जनश्री (शार्दुलपुर) साध्वीश्री कलाप्रभा

चातुर्मास—पीलीवगा (गगानगर, राज०)

यात्रा—२०० कि० मी०, क्षेत्र—१०

मत्र दीक्षा—८०, सम्यक्त्व दीक्षा—१००, श्रमणोपासक दीक्षा—७ वर्गीय अणुव्रती—७०, पच सूत्री सकल्प—२५०, शराव त्याग—२००

तपस्या	तत्त्वज्ञान
साध्वीश्री लक्ष्मी—$\frac{४६}{१}$, $\frac{३}{२}$, $\frac{३}{१}$ आयबिल	४ थोकडे सीखे
साध्वीश्री ज्ञानकुमारी—$\frac{१}{५}$, $\frac{८}{१}$ मौन साधना ३१ दिन	३ ,, ,,
साध्वीश्री कानकवर—$\frac{१}{३५}$, $\frac{२}{२}$, $\frac{४}{१}$ व्रतरतप १ आयबिल का	
साध्वीश्री सज्जन—$\frac{१}{३०}$	३ ,, ,,
साध्वीश्री कलाप्रभा—$\frac{१}{२}$	५ ,, ,,

तपस्या—(भाई-बहिनो मे) $\frac{१}{१००}$, $\frac{२}{६}$, $\frac{३}{१०}$, $\frac{४}{५}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{१३}$, $\frac{९}{२}$, $\frac{११}{१}$, $\frac{१२}{१}$, $\frac{१५}{१}$ आयबिल की वारी—२

दो बहिनो ने पाच थोकडे सीखे, जैन विद्या परीक्षार्थी—५९

कार्यक्रम—मर्यादा-महोत्सव समारोह गजसिहपुर तथा महावीर जयति कर्णपुर मनाई गई । पीलीबगा मे अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत हरिजन धर्मशाला, सैकेण्डरी स्कूल, नई मण्डी व पुरानी मण्डी मे साध्वीश्री के भाषण हुए ।

साध्वीश्री लक्ष्मीकुमारी की प्रकाशित पुस्तके-सगीत सरिता, विचार नीड् (दोनो आगरा प्रकाशन) महकते फूल, कालावाली युवक परिषद्

एक माह या उससे अधिक सेवा करने वाले—

१ श्री धनराज दफ्तरी, २ श्री चदनमल पुगलिया, ३ श्री केसरीचद नाहटा, ४ श्री मुल्तानमल वाठिया, ५ श्री केसरीचद वाठिया

अग्रगण्य—साध्वीश्री सुमनश्री

सहयोगिनी—साध्वीश्री सत्यप्रभा, साध्वीश्री सुरेखा, साध्वीश्री अमितश्री

चातुर्मास—उदासर (वीकानेर, राज०)

यात्रा—८५० कि०मी०, क्षेत्र—२५

अणुव्रती—५५, वर्गीय अणुव्रती—३००, मत्र दीक्षा—४१, सम्यक्त्व दीक्षा—५७, दहेज उन्मूलन—७१, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, तत्त्वज्ञान शिविर—१, श्रमणोपासक दीक्षा—४१, थोकडा सीखने वाले—११, कुल गाथाओ का कठीकरण—२५००, भक्तामर—८, चौवीसी—२, प्रतिक्रमण-११

साध्वियो मे तपस्या—उपवास—६१, चोला—१, आयविल १३, मौन—२ घटा

ध्यान—एक घटा, शक्ति जागरण अनुष्ठान—२ वार, वाचन आगम—२००० पृष्ठ, आगमेतर—२५०० पृष्ठ, कठस्थ—१५०० गाथा ।

भाई-बहिनो मे तपस्या—$\frac{१}{११००}$, $\frac{२}{६०}$, $\frac{३}{७५}$, $\frac{४}{१५}$, $\frac{५}{१३}$, $\frac{६}{१०}$, $\frac{७}{१४}$, $\frac{८}{२१}$, $\frac{९}{६}$, $\frac{११}{१}$, $\frac{१४}{१}$, $\frac{१५}{१}$, मासखमण—१, एकान्तर तप—२१, हरिजन जाति की श्रीमती आशा ने मासखमण की तपस्या की ।

इस वर्ष साध्वीश्री के सपर्क मे आने वाले विशिष्ट व्यक्ति हे—राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री जसराज चोपडा, जिला सेसन जज श्री प्रेमचद गोयल, चीफ जुडिशियल मजिस्ट्रेट श्री राधेश्याम, एडीसनल चीफ जुडिशियल मजिस्ट्रेट श्री डी० सी० मीणा, पुलिस अधीक्षक श्री जैन, कैप्टेन श्री अनिल चौधरी ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री केसर (सरदारशहर)

सहयोगिनी—साध्वीश्री चादकुमारी (टॉडगढ) साध्वीश्री विद्यावती (श्रीडूगरगढ), साध्वीश्री दिव्यप्रभा (गोगुदा), साध्वीश्री सूर्ययशा (श्रीडूगरगढ)

चातुर्मास—गगाशहर (बीकानेर, राज०)

यात्रा—७५ कि०मी० (नोखामडी से गगाशहर)

अस्वस्थता के कारण अधिक यात्रा नही हुई । साध्वियो मे उपवास ७५ हुए ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री जतनकुमारी "कनिष्ठा"

सहयोगिनी—साध्वीश्री अमितप्रभा (बीदासर) साध्वीश्री कचनबाला (सरदारशहर) साध्वीश्री ध्रुवरेखा (सरदारशहर) साध्वीश्री नयश्री (चाडवास)

चातुर्मास—सगरूर (पजाब)

यात्रा—१३०० कि०मी०, क्षेत्र—६१

अणुव्रती—१००, वर्गीय अणुव्रती—१५००, पचसूत्री सकल्प ७५०

मत्र दीक्षा—२५०, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, व्रत दीक्षा—१, प्रेक्षाध्यान शिविर—१ (५ दिन), तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१ (५ दिन), महिला प्रशिक्षण-शिविर—१ (३ दिन), भक्तामर—२, प्रतिक्रमण—४, पाच थोकडे सीखने वाले—१

साध्वियो मे तपस्या—$\frac{१}{७५}$, $\frac{२}{४}$, $\frac{३}{३}$, $\frac{४}{१}$, $\frac{५}{१}$, $\frac{१५}{१}$, दो साध्वियो ने कठीतप किया। साध्वीश्री नयश्री ने पाच व शेष साध्वियो ने छह-छह थोकडे कण्ठस्थ किये। दो साध्वियो ने शक्ति जागरण अनुष्ठान किया।

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{५००}$, $\frac{२}{३}$, $\frac{३}{२}$, $\frac{४}{४}$, $\frac{५}{४}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{१}$, $\frac{१५}{१}$ श्री राजकुमार सिंघला ने ५५, श्री ओमप्रकाश सिंघला ने ३६ तथा श्रीमती चेतना सिंघला ने ६६ दिन का आयबिल तप किया।

इनकी तपस्या के उपलक्ष मे युवाचार्यश्री एव साध्वी प्रमुखाश्री ने महत्त्वपूर्ण सदेश प्रदान किये।

३ अप्रैल को हिसार मे महावीर जयति कार्यक्रम रामलीला मैदान मे मनाया गया। सगरूर मे त्रिदिवसीय सार्वजनिक प्रवचनमाला, अणुव्रत उद्-बोधन सप्ताह के कार्यक्रम हुए। प्रेम सभा मॉडल स्कूल मे साध्वीश्री का भाषण हुआ।

१७ अगस्त को लक्ष्मीनारायण मन्दिर मे साध्वीश्री के सान्निध्य मे विशाल सद्भावना सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमे अकाली दल के अध्यक्ष श्री हरचदसिह लोगोवाल, वरिष्ठ अकाली दल के नेता श्री सुरजीतसिंह बरनाला, महामडलेश्वर श्री जगदीश आदि ने अपने मजे हुए विचार रखे। इस कार्यक्रम की आकाशवाणी व दूरदर्शन पर अच्छी चर्चा रही।

साध्वीश्री के सपर्क मे आने वाले विशिष्ट व्यक्ति निम्नोक्त है—

अध्यक्ष, शिरोमणी अकाली दल	श्री सत लोगोवाल
मुख्यमत्री पजाब	श्री सुरजीतसिंह बरनाला
विधायक	श्री रणजीतसिंह बालिया
प्रधान—अकाली दल	श्री पवनकुमार सिंघला
प्रधान—जनता पार्टी	बाबू रामस्वरूप (एडवोकेट)
जनरल सेक्रेटरी—जनता पार्टी	श्री नानकचन्द
व्यापार मण्डल सवाददाता— दी ट्रिब्यून अध्यक्ष	श्री ओमप्रकाश गोयल

नवजीवन के सपादक	श्री राजेन्द्रकुमार वसल (पत्रकार)
सवाददाता, इण्डियन एक्सप्रेस	श्री वीरचन्द्र 'कमल'
कैसियर कमेटी–नई, अनाज मडी सगरूर	श्री तरसेमचद
रीडर, एस डी एम ऑफिस	श्री शक्तिप्रसाद जैन
प्रो , रणवीर कॉलेज	श्री सुरजीतसिह गाधी
मुख्याध्यापक, गवर्नमेट हाईस्कूल	श्री नाथप्रकाश गोयल
प्रो अकाल डिग्री कॉलेज	श्री तेजवन्त मान
प्रो पजाव युनिवर्सिटी, पटियाला	डॉ प्रीतम सैनी
म्युनिसिपल कमेटी के प्रधान	श्री सुभाषचन्द्र ग्रोवर
सर्वोदय कार्यकर्ता	श्री प्यारेलाल शर्मा
कृषि इन्सपेक्टर	डा हरबसलाल चुध
प्रिंसिपल, दशमेश कॉलेज	डा सत्यपाल गुप्ता
साहित्यकार (स्टेडवार्ड प्राप्त)	डा कृष्णकुमार शिवहरे
सुपरिटैन्डैट, अकाली डिग्री कॉलेज	डा एस पी गुप्ता

पजाव विधानसभा के उम्मीदवार रणजीतसिह बालिया चुनाव प्रचार प्रारभ के दिन तथा जीतने के बाद सबसे पहले साध्वीश्री जतनकुमारीजी के पास आशीर्वाद लेने के लिए उपस्थित हुए। साध्वीश्री से उन्होने कहा—साध्वीजी ! हमारे सतजी आपके गुरु महाराज से आशीर्वाद लेकर आये, तो इतना सुन्दर समझौता का कार्य हुआ। हम वहा तक नही पहुच सकते। आप भी उन्ही गुरु के शिष्या है, इसलिए हम आपके पास आशीर्वाद लेने आये है।

समाचार प्रकाशित करने वाले प्रमुख समाचार पत्र—नवजीवन, पजाब केसरी, इडियन एक्सप्रेस, दी ट्रिब्यून, दैनिक ट्रिब्यून।

सगरूर तेरापथ भवन मे तेयुप द्वारा होम्योपैथिक डिस्पेसरी चलती है।

अग्रगण्य—साध्वीश्री पानकुमारी

सहयोगिनी—साध्वी धनकवर, साध्वी मानकवर, साध्वी प्रमोदश्री (पडिहारा), साध्वी प्रमोदश्री (पचपदरा), साध्वी विजयप्रभा

चातुर्मास—जोधपुर-जाटावास (राजस्थान)

यात्रा—३५० कि मी क्षेत्र—६

अणुव्रती—५१, वर्गीय अणुव्रती—५१, सम्यक्त्व दीक्षा—१०१।

व्रत दीक्षा—१, शीलव्रत—३, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१, जैन-विद्या—५३, पत्राचार पाठमाला—२३, साध्वियो मे पाच और चार के एक-एक थोकडे हुए। भाई-बहिनो मे पचरगी—२, अठाई—४, नौ—१, दस—१ हुए। श्रीमती गुलाब एव श्रीमती पुष्पा ने मासखमण किये।

कार्यक्रम

महालक्ष्मी स्कूल, उम्मेद स्कूल, महिलाबाग स्कूल मे साध्वी श्री प्रमोदश्री और विजयप्रभाजी के जीवन-विज्ञान पर प्रवचन हुए। जैन सिलाई स्कूल मे जैन सस्कार निर्माण पर साध्वीश्री धनकवर और साध्वीश्री विजय-प्रभा के प्रवचन हुए। महावीर भवन मे तीनो सप्रदायो के बीच विश्व मैत्री दिवस पर साध्वीश्री प्रमोदश्री का प्रवचन हुआ।

आकाशवाणी जोधपुर से मैत्री-दिवस पर साध्वीश्री प्रमोदश्री की रेडियो वार्ता प्रसारित हुई। साध्वीश्री की सन्निधि मे नारी जागरण का कार्य-क्रम रहा, जिसमे मुख्य अतिथि लेक्चरार श्रीमती इन्द्रा, मुख्य वक्ता लेक्चरार कन्या रत्न सुश्री कुसुम भडारी थी। साध्वीश्री धनकवर, साध्वीश्री प्रमोदश्री, साध्वीश्री विजयप्रभा का प्रवचन हुआ।

साध्वीश्री से मिलने वाले विशिष्ट व्यक्ति—

१ श्री चपालाल सालेचा, अध्यक्ष, चेम्बर आफ कॉमर्स
२ डॉ आर के दूगड, व्याख्याता, हिन्दी विभाग
३ श्री लक्ष्मीचदजी सुराणा, अध्यक्ष महावीर जैन नवयुवक मडल
४ श्री बिरदमल सिघवी, विधायक
५ श्री कानसिह परिहार, न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय
६ श्री नेमीचन्द जैन 'भावुक', गाधी शान्ति प्रतिष्ठान के महामत्री

इन्होने समय-समय पर कार्यक्रमो मे उपस्थित होकर आचार्यश्री के विविध आयामो की मुक्त कण्ठ से सराहना करते हुए वर्तमान परिस्थिति मे आचार्यश्री की देनो को बहुत ही उपयोगी बताया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री जतनकुमारी (राजलदेसर)

सहयोगिनी—साध्वीश्री लिछमा (सूरतगढ), साध्वीश्री सगीतश्री (श्रीडूगरगढ), साध्वीश्री शातिप्रभा (लाडनू)

चातुर्मास—टोहाना (हरियाणा)

यात्रा—१५० कि मी, क्षेत्र—४

मत्र दीक्षा—१००, पच सूत्री सकल्प—५१, सम्यक्त्व दीक्षा—चार पूरे घर, अन्य—३५, व्रत दीक्षा—४१, शीलव्रत—३, त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर श्री सुरेन्द्र जैन व श्रीमती सतोप जैन के निदेशन मे आयोजित हुआ, पाच थोकडे सीखने वाली—३ वहिने, कालू तत्त्व शतक व प्रतिक्रमण—१५, जैन विद्या—५५, श्रमणोपासक दीक्षा—१५ ।

साध्वीश्री	तपस्या	तत्त्वज्ञान
जतनकुमारी	५ विगय के त्याग	५ थोकडे कठस्थ
लिछमा	$\frac{१}{२५}$, आयविल—२	,,
सगीतश्री	$\frac{१}{३५}$, १ माह एकातर, वेला–२	,,
शातिप्रभा	$\frac{१}{३६}$, १ माह एकातर, $\frac{२}{१}$, $\frac{५}{१}$	,,

भाई वहिनो मे—$\frac{१}{१०००}$, $\frac{२}{२५}$, $\frac{२}{९१}$, $\frac{४}{३}$, $\frac{५}{३}$, $\frac{८}{७}$, $\frac{६}{१}$, आयविल—एक, अठाई—एक, आयविल की पचरगी—एक

साध्वीश्री के सान्निध्य मे अणुव्रत उद्‌वोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव के भव्य कार्यक्रम हुए । चातुर्मास मे सस्कारो को परिपुप्ट वनाते हुए प्रत्येक परिवार की पृथक्-पृथक् गोष्ठिया समायोजित हुई ।

साध्वीश्री जतनकुमारी के टखने मे टी० वी० का घाव हो गया । करीब पाच महीने बीत गये अलग-अलग इलाज कराते-कराते, पर कुछ भी फायदा नही हुआ । सबकी चिता वढना स्वाभाविक था । एक दिन यकायक साध्वीश्री वोल उठी-यदि आचार्यश्री की मेरे ऊपर कृपा हो जाये । वे मेरे ठीक होने का कह दें, तो मैं अवश्य ठीक हो जाऊगी ।" साध्वीश्री के विचारो का ऐसा सप्रेपण हुआ कि आचार्यश्री ने टोहाना के श्रावको (जो दर्शनार्थ गये हुए थे) से कहा—अव वीमारी ज्यादा नहीं चलेगी, जल्दी ही वह स्वस्थ वन जायेगी ।" आचार्यश्री के वात्सल्य पूर्ण शब्दो का ऐसा जादुई असर हुआ कि साध्वीश्री द्वारा लाइलाज मानी जाने वाली यह वीमारी मात्र तीन दिनो मे विदा हो गई । अव साध्वीश्री जी पूर्वापेक्षया स्वय को अधिक स्वस्थ व तदुरुस्त मानती है ।

टोहाना के श्री वसतीलाल की पत्नी का पौने तीन घटे के तिविहार व ढाई घटे के चौविहार अनशन मे ११ अक्टूबर को समाधि-मरण हुआ । साध्वी श्री जतनकुमारी ने भरपूर सहयोग दिया । उस क्षेत्र मे इस अनशन की सुदर प्रतिक्रिया हुई ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री विनयश्री (श्री डूगरगढ)

सहयोगिनि—साध्वीश्री केसर (श्री डूगरगढ) साध्वीश्री कानकुमारी (लाडनू) साध्वीश्री—मजु प्रभा (छापर), साध्वीश्री विशुद्धप्रभा (वीदासर) ।

चातुर्मास—राजगढ (चुरु, राज०)

यात्रा—२८० किलोमीटर, क्षेत्र-७ ।

अणुव्रती—५१, पच सूत्री सकल्प—३००, सम्यक्त्व दीक्षा-२१, व्रत दीक्षा-९, थोकडा सीखने वाले-७, जैन विद्या परीक्षार्थी—२८, ।

साध्वियो मे उपवास—५१, आयविल-२१, आयविल तेला-३, आगम वाचन—११ हजार पृष्ठ, आगमेतर साहित्य-वाचन-३ हजार पृष्ठ, मौन-७ घटा प्रतिदिन, जप-४ घटा प्रतिदिन ।

भाई—बहिनो मे तपस्या—$\frac{१}{८५१}$, $\frac{२}{१३}$, $\frac{३}{२१}$, $\frac{३}{४}$, $\frac{५}{७}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{७}{२}$, $\frac{८}{९}$, $\frac{९}{१}$ एकान्तर—३, सोलिया-२, मौन पचरगी-२५, जप-सवा लाख ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सोनाजी ।

सहयोगिनी—साध्वीश्री मानकुमारी, साध्वीश्री धनकुमारी, साध्वीश्री शशिप्रभा, साध्वीश्री लब्धिश्री ।

चातुर्मास—काटाभाजी (उडीसा) ।

यात्रा—१६०० किलोमीटर, क्षेत्र-२५ ।

अणुव्रती—५१, पच सूत्री सकल्प-५००, मत्र दीक्षा-५१, सम्यक्त्व दीक्षा-४१ ।

शीलव्रत—५, तत्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-५, जैन विद्या परीक्षार्थी-६८, भक्तामर—६, चौबीसी-२, प्रतिक्रमण-८, थोकडा सीखने वाले-१४

साध्वियो मे तपस्या—

साध्वीश्रीसोना—उपवास-५७, वेला-७, तेला-१ ।

साध्वीश्रीमान—उपवास-३५, वेला-३ ।

साध्वीश्री धन—उपवास-३६, वेला-२ ।

साध्वीश्री शशिप्रभा—उपवास३७, वेला-१, पचोला-१ ।

साध्वीश्री लब्धिश्री—उपवास-२९, वेला-१ ।

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{१२२१}$, $\frac{२}{९१}$, $\frac{६}{२३}$, $\frac{४}{७}$, $\frac{५}{२}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{८}{१५}$, $\frac{३}{४}$, $\frac{१०}{१}$, $\frac{१८}{१}$, $\frac{३१}{१}$, आयबिल-८७०, वर्षीतप-४ ।

केसिगावासी श्रीमती शाति जैन ने ३१ की तपस्या की ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री विनयश्री (श्री डूगरगढ)

सहयोगिनि—साध्वीश्री केसर (श्री डूगरगढ) साध्वीश्री कानकुमारी (लाडनू) साध्वीश्री—मजु प्रभा (छापर), साध्वीश्री विशुद्धप्रभा (बीदासर)।

चातुर्मास—राजगढ (चुरु, राज०)

यात्रा—२८० किलोमीटर, क्षेत्र-७।

अणुव्रती—५१, पच सूत्री सकल्प—३००, सम्यक्त्व दीक्षा-२१, व्रत दीक्षा-६, थोकडा सीखने वाले-७, जैन विद्या परीक्षार्थी—२८,।

साध्वियो मे उपवास—५१, आयविल-२१, आयविल तेला-३, आगम वाचन—११ हजार पृष्ठ, आगमेतर साहित्य-वाचन-३ हजार पृष्ठ, मौन-७ घटा प्रतिदिन, जप-४ घटा प्रतिदिन।

भाई—बहिनो मे तपस्या—$\frac{१}{८५१}$, $\frac{२}{१३}$, $\frac{३}{२१}$, $\frac{३}{४}$, $\frac{५}{७}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{७}{२}$, $\frac{८}{९}$, $\frac{९}{१}$ एकान्तर—३, सोलिया-२, मौन पचरगी-२५, जप-सवा लाख।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सोनाजी।

सहयोगिनी—साध्वीश्री मानकुमारी, साध्वीश्री धनकुमारी, साध्वीश्री शशिप्रभा, साध्वीश्री लब्धिश्री।

चातुर्मास—काटाभाजी (उडीसा)।

यात्रा—१६०० किलोमीटर, क्षेत्र-२५।

अणुव्रती—५१, पच सूत्री सकल्प-५००, मत्र दीक्षा-५१, सम्यक्त्व दीक्षा-४१।

शीलव्रत—५, तत्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-५, जैन विद्या परीक्षार्थी-६८, भक्तामर—६, चौबीसी-२, प्रतिक्रमण-८, थोकडा सीखने वाले-१४

साध्वियो मे तपस्या—

साध्वीश्रीसोना—उपवास-५७, वेला-७, तेला-१।

साध्वीश्रीमान—उपवास-३५, वेला-३।

साध्वीश्री धन—उपवास-३६, वेला-२।

साध्वीश्री शशिप्रभा—उपवास३७, वेला-१, पचोला-१।

साध्वीश्री लब्धिश्री—उपवास-२६, वेला-१।

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{१२२१}$, $\frac{२}{९१}$, $\frac{६}{२३}$, $\frac{४}{७}$, $\frac{५}{२}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{८}{१५}$, $\frac{३}{४}$, $\frac{३१}{१}$, आयविल-८७०, वर्षीतप-४।

केसिंगावासी श्रीमती शाति जैन ने ३१ की तपस्या की।

मत्र दीक्षा—१००, पच सूत्री सकल्प—५१, सम्यक्त्व दीक्षा—चार पूरे घर, अन्य—३५, व्रत दीक्षा—४१, शीलव्रत—३, त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर श्री सुरेन्द्र जैन व श्रीमती सतोप जैन के निदेशन मे आयोजित हुआ, पाच थोकडे सीखने वाली—३ वहिने, कालू तत्त्व शतक व प्रतिक्रमण—१५, जैन विद्या—५५, श्रमणोपासक दीक्षा—१५ ।

साध्वीश्री	तपस्या	तत्त्वज्ञान
जतनकुमारी	५ विगय के त्याग	५ थोकडे कठस्थ
लिछमा	$\frac{१}{२५}$, आयविल—२	,,
सगीतश्री	$\frac{१}{३५}$, १ माह एकातर, वेला–२	,,
शातिप्रभा	$\frac{१}{३६}$, १ माह एकातर, $\frac{२}{१}$, $\frac{५}{१}$	,,

भाई वहिनो मे—$\frac{१}{१०००}$, $\frac{२}{२५}$, $\frac{२}{११}$, $\frac{४}{३}$, $\frac{५}{३}$, $\frac{८}{७}$, $\frac{६}{१}$, आयविल—एक, अठाई—एक, आयविल की पचरगी—एक

साध्वीश्री के सान्निध्य मे अणुव्रत उद्वोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव के भव्य कार्यक्रम हुए । चातुर्मास मे सस्कारो को परिपुष्ट वनाते हुए प्रत्येक परिवार की पृथक्-पृथक् गोष्ठिया समायोजित हुई ।

साध्वीश्री जतनकुमारी के टखने मे टी० वी० का घाव हो गया । करीव पाच महीने बीत गये अलग-अलग इलाज कराते-कराते, पर कुछ भी फायदा नही हुआ । सबकी चिंता वढना स्वाभाविक था । एक दिन यकायक साध्वीश्री बोल उठी-यदि आचार्यश्री की मेरे ऊपर कृपा हो जाये । वे मेरे ठीक होने का कह दें, तो मैं अवश्य ठीक हो जाऊगी ।" साध्वीश्री के विचारो का ऐसा सप्रेषण हुआ कि आचार्यश्री ने टोहाना के श्रावको (जो दर्शनार्थ गये हुए थे) से कहा—अव वीमारी ज्यादा नही चलेगी, जल्दी ही वह स्वस्थ वन जायेगी ।" आचार्यश्री के वात्सल्य पूर्ण शब्दो का ऐसा जादुई असर हुआ कि साध्वीश्री द्वारा लाइलाज मानी जाने वाली यह वीमारी मात्र तीन दिनो मे विदा हो गई । अव साध्वीश्री जी पूर्वापेक्षया स्वय को अधिक स्वस्थ व तदुरुस्त मानती है ।

टोहाना के श्री वसतीलाल की पत्नी का पौने तीन घटे के तिविहार व ढाई घटे के चौविहार अनशन मे ११ अक्टूबर को समाधि-मरण हुआ । साध्वी श्री जतनकुमारी ने भरपूर सहयोग दिया । उस क्षेत्र मे इस अनशन की सुदर प्रतिक्रिया हुई ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री विनयश्री (श्री डूगरगढ)

सहयोगिनि—साध्वीश्री केसर (श्री डूगरगढ) साध्वीश्री कानकुमारी (लाडनू) साध्वीश्री—मजु प्रभा (छापर), साध्वीश्री विशुद्धप्रभा (बीदासर)।

चातुर्मास—राजगढ (चुरु, राज०)

यात्रा—२८० किलोमीटर, क्षेत्र-७।

अणुव्रती—५१, पच सूत्री सकल्प—३००, सम्यक्त्व दीक्षा-२१, व्रत दीक्षा-९, थोकडा सीखने वाले-७, जैन विद्या परीक्षार्थी—२८,।

साध्वियो मे उपवास—५१, आयविल-२१, आयविल तेला-३, आगम वाचन—११ हजार पृष्ठ, आगमेतर साहित्य-वाचन-३ हजार पृष्ठ, मौन-७ घटा प्रतिदिन, जप-४ घटा प्रतिदिन।

भाई—बहिनो मे तपस्या—$\frac{१}{८२१}$, $\frac{२}{५३}$, $\frac{३}{२१}$, $\frac{३}{४}$, $\frac{५}{७}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{७}{२}$, $\frac{८}{९}$, $\frac{९}{१}$ एकान्तर—३, सोलिया-२, मौन पचरगी-२५, जप-सवा लाख।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सोनाजी।

सहयोगिनी—साध्वीश्री मानकुमारी, साध्वीश्री धनकुमारी, साध्वीश्री शशिप्रभा, साध्वीश्री लब्धिश्री।

चातुर्मास—काटाभाजी (उडीसा)।

यात्रा—१६०० किलोमीटर, क्षेत्र-२५।

अणुव्रती—५१, पच सूत्री सकल्प-५००, मत्र दीक्षा-५१, सम्यक्त्व दीक्षा-४१।

शीलव्रत—५, तत्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-५, जैन विद्या परीक्षार्थी-६८, भक्तामर—६, चौबीसी-२, प्रतिक्रमण-८, थोकडा सीखने वाले-१४

साध्वियो मे तपस्या—

साध्वीश्रीसोना—उपवास-५७, बेला-७, तेला-१।

साध्वीश्रीमान—उपवास-३५, बेला-३।

साध्वीश्री धन—उपवास-३६, बेला-२।

साध्वीश्री शशिप्रभा—उपवास३७, बेला-१, पचोला-१।

साध्वीश्री लब्धिश्री—उपवास-२९, बेला-१।

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{१२२१}$, $\frac{२}{९१}$, $\frac{६}{२३}$, $\frac{४}{७}$, $\frac{५}{२}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{८}{१५}$, $\frac{३}{४}$, $\frac{१०}{१}$, $\frac{१८}{१}$, $\frac{३१}{१}$, आयविल-८७०, वर्षीतप-४।

केसिगावासी श्रीमती शाति जैन ने ३१ की तपस्या की।

कार्यक्रम—साध्वीश्री के सान्निध्य मे केसिगा मे मर्यादा महोत्सव, रायपुर मे महावीर जयति, टिटलागढ मे अक्षय तृतीया के कार्यक्रम हुए। अमृत महोत्सव का भव्य समारोह समायोजित हुआ।

साध्वीश्री भेट करने वाले विशिष्ट व्यक्ति थे—टिटिलागढ के सब डिविजनल अफसर श्री दिगवर महन्ती, केसिगा के विधायक श्री भूपेन्द्रसिंह काटावाजी के विधायकश्री चैतन्य प्रधान, कजुमर्स को-प्रेटिव फेडरेशन केसिगा के मैनेजर श्री ओकारनाथ मिश्र, काटावाजी के पत्रकार श्री रमेशचद शर्मा आदि।

साध्वीश्री के सान्निध्य मे समय-समय पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमो की नवभारत, देशबधु अमृत-सदेश, समाज आदि पत्रो मे चर्चा रही।

सस्मरण—६ जनवरी, १६८६। उडीसा प्रात के बलागीर जिले का छोटा सा गाव कुरसुड। साध्वीश्री केसिगा चातुर्मास सपन्न कर कुरसुड पधारी। बारह वर्षीय बालक मनोज गठिया वायु से जुडा हुआ था। साध्वियो के गोचरी पदार्पण पर मनोज की दादी ने साध्वीश्री से उसे मगलपाठ सुनाने को कहा। मगल पाठ सुनाया और ११ माला भिक्षु स्वामी की फेरने का साध्वी श्री ने कहा। जप का उस बालक पर ऐसा अचूक प्रभाव पडा कि उसी दिन बिल्कुल नही चल-फिर सकने वाला वह बालक एक फर्लांग चलकर साध्वी श्री के दर्शन करने आ गया। साध्वीश्री के विहार के बाद भी उसने कई बार दर्शन कर लिये। इस घटना ने मनोज को भिक्षु स्वामी के प्रति अगाध श्रद्धाशील बना दिया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री फूलकुमारी (सुजानगढ)

सहयोगिनी—साध्वीश्री सज्जना (सेवत्री), साध्वीश्री मणिप्रभा (छापर) साध्वीश्री—प्रमिला कुमारी (सुजानगढ) साध्वीश्री त्रिशलाकुमारी (सुजानगढ)

चातुर्मास—लुधियाना (पजाव)

यात्रा—४०० किलोमीटर, क्षेत्र-३०।

अणुव्रती—१२५, पत्र सूत्री सकल्प-७००, सम्यक्त्व दीक्षा-३१, शीलव्रत-५, दहेज उन्मूलन-७०, सचित्त त्याग-५१,।

साध्वियो के उपवास—८, आयबिल-४५, तेला-१, शक्ति जागरण अनुष्ठान व असिआउसा का प्रयोग, आगम वाचन-एक हजार पृष्ठ, आगमेतर साहित्य वाचन-७ हजार पृष्ठ।

भाई-बहिनो मे उपवास—५००, आयबिल-३२१, तेला-३, नौ-१, ग्यारह-२, पन्द्रह-१, जप-दो करोड तीन लाख।

कायक्रम—फिल्लौर मे मर्यादा महोत्सव, गोविन्दगढ मे महावीर जयति के प्रभावी कार्यक्रम हुए, जिसमे अनेको डॉक्टर, वकील आदि बुद्धिजीवी उपस्थित थे। अणुव्रत सप्ताह का कार्यक्रम तुलसी कुज मे हुआ। एम० डी० गर्ल्स हाई स्कूल मे साध्वीश्री का भाषण हुआ, जिसमे स्कूल का पूरा स्टाफ व विद्यार्थी उपस्थित थे।

लुधियाना मे साध्वीश्री के सान्निध्य म पजाव प्रातीय तेरापथ महिला मडल का अधिवेशन हुआ, जिसमे सैकडो बहिनो ने भाग लिया। स्थानीय जैन गर्ल्स कॉलेज की प्रिंसिपल श्री सरोज गुप्ता ने अपने विचार रखे। साध्वीश्री का इस अवसर पर विशेष प्रवचन हुआ। आचायश्री ने इस अधिवेशन पर विशेप सदेश प्रदान किया। वह इस प्रकार हैं—

"आज विश्व मे अन्यान्य प्रसगो की भाति महिला जागरण का प्रसग भी बहुत जरूरी है। महिला जागरण का अर्थ है—समाज का जागरण। वह तब होता हे, जब महिलाए अपने अस्तित्व को समझे, अपनी क्षमताओ को पहचाने, शक्तियो के विकास मे जागरूक रहे और उनका नियोजन करें।

हमारे समाज की महिलाए बहुत तीव्रता से आगे बढने का प्रयत्न कर रही है। यह अच्छी बात है। लुधियाना मे पजाव क्षेत्रीय महिला मडलो का वार्षिक अधिवेशन होने जा रहा हे। उसमे महिला सगठनो को सक्रिय करने, जागृति मूलक प्रयत्नो को तीव्र करने और सस्कारी महिलाओ के निर्माण हेतु विशेप चिंतन हो, यह अपेक्षित है।

—आचार्य तुलसी

अग्रगण्य—साध्वीश्री राजीमती

सहयोगिनी—साध्वीश्री कानकवर, साध्वीश्री मानकवर, साध्वीश्री करुणाश्री, साध्वीश्री समताश्री।

चातुर्मास—चाडवास (चूरू, राज०)

यात्रा—३०० कि०मी० क्षेत्र—१३, (लगभग पूरा थली प्रदेश) अणुव्रती—६०, पच सूत्री सकल्प—१३०, मत्र दीक्षा—३३१, सम्यक्त्व दीक्षा—सामूहिक रूप मे कई बार, व्रत दीक्षा, ४२५, शीलव्रत—२१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—६, (थली के विभिन्न क्षेत्रो मे) योग प्रशिक्षण अध्यात्म शिविर—१३, चोवीसी, भक्तामर—६०, श्रमणोपासक दीक्षा—२१

प्रेक्षा-ध्यान शिविर—२

तपस्या	तत्त्वज्ञान
साध्वीश्री राजीमती—उपवास—७, आयविल—६	
साध्वीश्री कानकवर—उपवास ३०,	६ थोकडे सीखे
साध्वीश्री मानकवर—उपवास—३,	
साध्वीश्री करुणाश्री—उपवास—७	७ थोकडे सीखे
साध्वीश्री समताश्री—उपवास—७,	८ थोकडे सीखे

भाई-वहिनो मे—

वारी के उपवास—६, सोलिया तप—८, एकान्तर १०, एक इक्कीस प्रहरी पौषध, एक वगाली युवक द्वारा अठाई व ॐ अभीराशिको नम का जप करोडो मे हुआ।

अनशन—श्रीमती आईदान सेठिया (साध्वीश्री विवेकश्री की ससार पक्षीया दादी) का ७७ वर्ष की आयु मे १० दिनो के तिविहार व १५ मिनट के चौविहार अनशन मे स्वर्गवास हो गया। उनका अन्तिम समय तक मनो-बल ऊचा रहा।

श्रीमती मखूदेवी लूणिया (धर्मपत्नी श्री चदनमल) का १५ मिनट के चौविहार अनशन मे स्वर्गवास हो गया। वह सघ-सघपति के प्रति सर्मपित एव दृढ आस्थावाली महिला थी।

विशेष लक्ष्य को लेकर चूरू मे साध्वीश्री की सन्निधि मे अ भा ते यु प के सचालन मे श्रावक-सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमे आचार्यवर के महत्त्वपूर्ण सदेश का वाचन हुआ।

साध्वीश्री राजीमती की प्रकाशित पुस्तके

१ ज्योतिकिरण २ दैनिक योग साधना ३ योग की प्रथम किरण

सेवा—श्रीमती केसर देवी दूगड ने करीव तीन माह आचार्यवर की उपासना की।

अमृत-महोत्सव के सदर्भ मे एक साथ ५१ तेले, ५१ आयविल, १५१ एकासन, ५१०० सामायिक, ५१ तपस्या के वडे थोकडे, ५१ वार्षिक व्रह्म-चारी, ५१ रात्रि भोजन परित्याग (एक वर्ष के लिए) किया। चातुर्मास में भापण, वाद-विवाद, निवन्ध प्रतियोगिता आदि अन्य कार्यक्रम आयोजित हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रूपाजी (लाडनू)

सहयोगिनी—साध्वीश्री भत्तु (सरदारशहर), साध्वीश्री पन्नाजी (गादाणा) साध्वीश्री ज्ञानवती, साध्वीश्री रतिप्रभा

चातुर्मास—खिवाडा (पाली, राज०)

यात्रा—३०० किमी, क्षेत्र—१३, पचसूत्री सकल्प—५१, सम्यक्त्व दीक्षा—१३

प्रतिक्रमण—२, भक्तामर—१, प्रेक्षाध्यान शिविर—१ (पाली मे)

तपस्या—साध्वीश्री रूपा—उप— ३१, वेला—१, भत्तुजी—उप—४५, वे—३, ते—१, सा० पन्ना—उपवास— २१, सा० ज्ञानवती—उपवास—५, सा० रतिप्रभा उपवास—२३

भाई-वहिनो मे उपवास—४६१ वे—१३ तेला—१२ अठाई—२

स्थानीय हायर सेकेण्डरी स्कूल मे साध्वीश्री का प्रवचन हुआ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री भीखा (नोहर)

सहयोगिनी—साध्वीश्री राजकुमारी, साध्वीश्री रमाकुमारी, साध्वीश्री जयमाला, साध्वीश्री जयश्री।

यात्रा—१०० किमी क्षेत्र—३

अणुव्रती—२१, वर्गीय अणुव्रती—५१, पच सूत्री सकल्प—५००

मत्र दीक्षा—२५, सम्यक्त्व दीक्षा—६, शीलव्रत—२, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—एक, पाच थोकडा कण्ठस्थ—१, जैन विद्या परीक्षार्थी—५०, श्रमणोपासक दीक्षा—४

साध्वीश्री भीखा—उपवास—५, आयबिल—४,

साध्वीश्री राजकुमारी—आयबिल—५१ (एक साथ), उप २६, वे १, ते ३

साध्वी रमाकुमारी—उपवास—२, आयबिल अठाई—१

साध्वीश्री जयमाला—उपवास—३५, बेला—२, तेला—१, आयबिल—७

साध्वीश्री रमाकुमारी व साध्वीश्री जयमाला ने छह-छह थोकडे सीखे।

२० वर्षो मे निरन्तर मौन, पच द्रव्य व विगय त्रय उपरात परिहार करने वाली साध्वीश्री राजकुमारी के एक साथ ५१ की आयविल तपस्या पर उनका अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर राजनगर चातुर्मासिरत साध्वी

श्री सोमलता भी उपस्थित थी। साध्वीश्री द्वारा लिखित एक पुस्तक "निरामया" प्रकाशित हुई। एक मासिक व उससे अधिक के सेवार्थी—

१ श्री अर्जुनलाल सोनी, २ श्री कन्हैयालाल सोनी, ३ श्री तेजराज भाणा वाले, ४ श्री मागीलाल पगारिया, ५ श्री हीरालाल वाफना, ६ श्री मोहनलाल पगारिया, ७ श्री सोहनलाल पगारिया, ८ श्रीसुन्दरलाल कच्छारा, ९ श्री मोहनलाल वाफना, १० श्री भवरलाल वाफना, ११ श्री भवरलाल चडालिया, १२ श्री वावुलाल चोरडिया, १३ श्री केशवलाल चौरडिया, १४ श्री वावुलाल तलेसरा, १५ श्री रोशनलाल कोठारी।

अग्रगण्य—साध्वीश्री क्षमाश्री

सहयोगिनी—सा० सिरेकवर, सा० गणेशा, सा कैलाशवती सा० पकजश्री

चातुर्मास—शेरपुर (पजाव)

यात्रा—३६५ किमी, क्षेत्र—२५

अणुव्रती—२, वर्गीय अणुव्रती—१०००, पच सूत्री सकल्प—२०१ मत्र दीक्षा—१०१, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, शीलव्रत—१, भक्तामर—५, प्रतिक्रमण—१

	तपस्या	तत्त्वज्ञान
साध्वीश्री क्षमाश्री	उपवास—३१, वे—१,	६ थोकडे सीखे
साध्वीश्री सिरेकवर	उपवास—२५,	६ थोकडे सीखे
साध्वी गणेशा	उपवास—३८, वे—१, आयविल—६	,,
साध्वीश्री कैलाशवती	उपवास—५१, आयविल—८, वेला—१	६ थोकडे सीखे
साध्वी पकजश्री	उप०—३१, वे—१, तेला—१	६ ,,

भाई-बहिनो मे उप०—४२५, आयविल—१६०, वे०—५, तेला—२, चो०—१ आयविल तला—७

कायक्रम—वुढलाढा मे साध्वीश्री के सान्निध्य मे श्री कृष्णचद की अध्यक्षता मे मर्यादा-महोत्सव, जाखल मे आचार्यश्री तुलसी दीक्षा दिवस, सुनाम मे महावीर जयती व अक्षय तृतीया कायक्रम नगरूर मे आयोजित हुए। अमृत-महोत्सव कार्यक्रम के साथ श्री प्रेमचद सीघला को अभातेयुप० द्वारा "युवक रत्न" अलकरण प्रदान किए जाने पर अभिनदन किया गया। साध्वीश्री से नेत्र विशेषज्ञ डा राजकुमार (भोखी), कुरु क्षेत्र के न्यायाधीश श्री सुभापचद्र,

एस डी ओ श्री एस एल जिंदल आदि विशिष्ट व्यक्ति मिले और बात-चीत की ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री भागवती (बाव)

सहयोगिनी—सा० पानकवर (शार्दूलपुर), सा मनोहरा (भादरा), सा कचनरेखा (बाव)

चातुर्मास—नोखामडी (बीकानेर, राज०)

यात्रा—११०० कि०मी०, क्षेत्र—३५

मत्र दीक्षा—७५, सम्यक्त्व दीक्षा—९५, शीलव्रत—१, पचसूत्री सकल्प—१५०, पाच थोकडे सीखने वाले—३, जैन विद्या—४३,

साध्वियो मे तपस्या—सा० भागवती—उप०—२५, सा० पानकवर—उप—४५, सा० मनोहरा—उप०—४१, बेला—१, ते—१, चो—१, साध्वी कचनरेखा—उप—२४

चातुर्मास मे अन्यान्य कार्यक्रमो के साथ अमृत-महोत्सव का कार्यक्रम भव्य रहा ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री कमलप्रभा

सहयोगिनी—सा० अकलकुमारी, सा० सुधाश्री, सा० लघिमाश्री, सा० कीर्तिसुधा

चातुर्मास—कानोड (उदयपुर, राज०)

यात्रा—६०० कि०मी०, क्षेत्र—१३

मत्र दीक्षा—५१, सम्यक्त्व दीक्षा—२१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—२, भक्तामर—४, चौबीसी—७, थोकडा सीखने वाले—२

साध्वीश्री कमलप्रभा—$\frac{१}{१३}$,

मौन—३ घटा, जप $\frac{१}{२}$ घटा

सा० श्री अकलकुमारी—$\frac{१}{६१}$, $\frac{२}{५}$, $\frac{२}{३}$, $\frac{३}{२}$ मौन—२ घटा जप—$\frac{१}{२}$ घटा

सा० सुधाश्री—$\frac{१}{३५}$, $\frac{४}{१}$ आयबिल—५, मौन—तीन घटा, जप व ध्यान आधा घटा, सा० लघिमाश्री—४ माह आयबिल-एकान्तर, मौन—२ घटा, जप—$\frac{१}{२}$ घटा ध्यान—$\frac{१}{२}$ घटा

सा० कीर्तिसुधा—$\frac{१}{६१}$ आयबिल—४, मौन—एक घटा

सभी साध्वियो मे अभीराशिको नम, ओम् भिक्षु आदि मत्रो के अनुष्ठान हुए। सभी साध्वियो ने केद्र द्वारा निर्दिष्ट पाच थोकडे कण्ठस्थ

किये ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री आनदश्री

सहयोगिनी—सा० रजतरेखा, सा० गुणप्रभा, सा० दीपाजी,

चातुर्मास—कोटा (राजस्थान)

यात्रा—६०० किमी , क्षेत्र—५

अणुव्रती—२००, वर्गीय अणुव्रती—७००, पच सूत्री सकल्प—५०० सम्यक्त्व दीक्षा—२५,

साध्वियो मे तपस्या—उपवास—२७, आयबिल—६

कार्यक्रम—चातुर्मास मे जैन एकता सम्मेलन, अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, स्कूलो मे सार्वजनिक प्रवचन, सवाददाता सम्मेलन, द्वितीय श्रावण मे ग्यारह दिन तक खरतगरच्छ मदिर मे साध्वीश्री द्वारा कल्पसूत्र का वाचन आदि प्रभावी कार्यक्रम हुए ।

साध्वीश्री की सन्निधि मे आयोजित समारोहो की राष्ट्रदूत, नवज्योति, राजस्थान पत्रिका, अधिनायक, जननायक, देश की धरती आदि पत्रो मे खबरे छपी ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सिरेकवर (श्रीडूगरगढ)

सहयोगिनी—सा० केशर, सा० लीला, सा० मनोहरा, सा० कुशलरेखा सा० काव्यलता

चातुर्मास—गोगुन्दा (उदयपुर, राज०)

यात्रा—५७१, कि०मी०, क्षेत्र—३१

अणुव्रती—५१, वर्गीय अणुव्रती—५१, पच सूत्री सकल्प—३५१, मत्र दीक्षा—१४५, सम्यक्त्व दीक्षा—२५०, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३, शीलव्रत—२, व्रत दीक्षा—२८, श्रमणोपासक दीक्षा—२७, प्रतिक्रमण—१३, भक्तामर—५, थोकडा सीखने वाली बहिने—५ श्रमणोपासक दीक्षा—२६

साध्वियो मे तपस्या—उप—७०, बे—३, ते—१, इक्कीस—१

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{१३०९}$, $\frac{२}{६५}$, $\frac{३}{४६}$, $\frac{५}{१८}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{८}{४}$, $\frac{९}{१}$, $\frac{१०}{१}$

साध्वीश्री काव्यलता ने २१ की तपस्या की । तपस्या के १५ वे दिन प्रदत्त अपने सदेश मे आचार्यवर ने कहा—साध्वी सिरेकवरजी के साथ साध्वी काव्यलता तपस्या कर रही है । १४ दिन पार कर दिये । आगे बढ रही है,

अच्छा है। जब तक तन और मन साथ दे और साथ ही जप, स्वाध्याय, ध्यान चलता रहे, तब तक चलना चाहिये। पारणे मे विशेष खाद्य सयम रखना है। जितने दिन की तपस्या हो, उतने दिन खाद्य सयम रखना है।"

साध्वी कुशलरेखा व साध्वी काव्यलता ने क्रमश चार व छह थोकडे कण्ठस्थ किये।

कोठारिया गाव मे साध्वीश्री के प्रवास मे श्री भेरूलाल ने अनशनपूर्वक समाधि-मरण का वरण किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रायकुमारी (चाडवास)

सहयोगिनी—सा० भीखा (राजलदेसर), सा० लीलावती, सा० विद्याकुमारी (सिसाय), सा० सयमप्रभा

चातुर्मास—डीडवाना (नागौर, राज०)

यात्रा—स्थिर प्रवास

अणुव्रती—१५, वर्गीय अणुव्रती—२१, मत्र दीक्षा—३१, सम्यक्त्व दीक्षा—४१, व्रत दीक्षा—७

साध्वियो मे तपस्या—उपवास—१८५, बे—८, ते—१ हुआ।

भाई-बहिनो मे—उपवास— ३०५, बे—७, ते—७, छह—१, अठाई ५, नौ—१०, ग्यारह—१

अग्रगण्य—साध्वीश्री सुखदेवाजी (सरदारशहर),

सहयोगिनी—सा० भीखा, सा०, चादकवर, सा० मधुबाला, सा० विज्ञान श्री

चातुर्मास—रानी स्टेशन (पाली, राज०)

यात्रा—६७५ किमी, क्षेत्र—५

अणुव्रती—२०६, वर्गीय अणुव्रती—२५, पच सूत्री सकल्प—१२५

मत्र दीक्षा—५०, सम्यक्त्व दीक्षा—१५०, व्रत दीक्षा—११, भक्तामर—१५, चौबीसी—७, प्रतिक्रमण—२५

साध्वियो मे तपस्या—उपवास—१२५, अठाई—१ हुई

साध्वीश्री मधुबाला व साध्वीश्री विज्ञान श्री ने पाच-पाच थोकडे कण्ठस्थ किये।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सोहनकुमारी (छापर)

सहयोगिनी—सा० गणेशा, सा० जेठा, सा० लज्जावती, सा०

किये ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री आनदश्री

सहयोगिनी—सा० रजतरेखा, सा० गुणप्रभा, सा० दीपाजी,

चातुर्मास—कोटा (राजस्थान)

यात्रा—६०० किमी , क्षेत्र—५

अणुव्रती—२००, वर्गीय अणुव्रती—७००, पच सूत्री सकल्प—५०० सम्यक्त्व दीक्षा—२५,

साध्वियो मे तपस्या—उपवास—२७, आयविल—६

कार्यक्रम—चातुर्मास मे जैन एकता सम्मेलन, अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, स्कूलो मे सार्वजनिक प्रवचन, सवाददाता सम्मेलन, द्वितीय श्रावण मे ग्यारह दिन तक खरतगरच्छ मदिर मे साध्वीश्री द्वारा कल्पसूत्र का वाचन आदि प्रभावी कार्यक्रम हुए ।

साध्वीश्री की सन्निधि मे आयोजित समारोहो की राष्ट्रदूत, नवज्योति, राजस्थान पत्रिका, अधिनायक, जननायक, देश की धरती आदि पत्रो मे खबरे छपी ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सिरेकवर (श्रीडूगरगढ)

सहयोगिनी—सा० केशर, सा० लीला, सा० मनोहरा, सा० कुशलरेखा सा० काव्यलता

चातुर्मास—गोगुन्दा (उदयपुर, राज०)

यात्रा—५७१, कि०मी०, क्षेत्र—३१

अणुव्रती—५१, वर्गीय अणुव्रती—५१, पच सूत्री सकल्प—३५१, मत्र दीक्षा—१४५, सम्यक्त्व दीक्षा—२५०, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३, शीलव्रत—२, व्रत दीक्षा—२८, श्रमणोपासक दीक्षा—२७, प्रतिक्रमण—१३, भक्तामर—५, थोकडा सीखने वाली वहिनें—५ श्रमणोपासक दीक्षा—२६

साध्वियो मे तपस्या—उप—७०, वे—३, ते—१, इक्कीस—१

भाई-वहिनो मे—$\frac{१}{१३०९}$, $\frac{२}{९५}$, $\frac{३}{४६}$, $\frac{५}{१८}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{८}{४}$, $\frac{९}{१}$, $\frac{१०}{१}$

साध्वीश्री काव्यलता ने २१ की तपस्या की । तपस्या के १५ वे दिन प्रदत्त अपने सदेश मे आचार्यवर ने कहा—साध्वी सिरेकवरजी के साथ साध्वी काव्यलता तपस्या कर रही है । १४ दिन पार कर दिये । आगे वढ रही है,

अच्छा है। जब तक तन और मन साथ दे और साथ ही जप, स्वाध्याय, ध्यान चलता रहे, तब तक चलना चाहिये। पारणे मे विशेष खाद्य सयम रखना है। जितने दिन की तपस्या हो, उतने दिन खाद्य सयम रखना है।"

साध्वी कुशलरेखा व साध्वी काव्यलता ने क्रमश चार व छह थोकडे कण्ठस्थ किये।

कोठारिया गाव मे साध्वीश्री के प्रवास मे श्री भेरुलाल ने अनशनपूर्वक समाधि-मरण का वरण किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रायकुमारी (चाडवास)

सहयोगिनी—सा० भीखा (राजलदेसर), सा० लीलावती, सा० विद्याकुमारी (सिसाय), सा० सयमप्रभा

चातुर्मास—डीडवाना (नागौर, राज०)

यात्रा—स्थिर प्रवास

अणुव्रती—१५, वर्गीय अणुव्रती—२१, मत्र दीक्षा—३१, सम्यक्त्व दीक्षा—४१, व्रत दीक्षा—७

साध्वियो मे तपस्या—उपवास—१८५, बे—८, ते—१ हुआ।

भाई-बहिनो मे—उपवास— ३०५, बे—७, ते—७, छह—१, अठाई ५, नौ—१०, ग्यारह—१

अग्रगण्य—साध्वीश्री सुखदेवाजी (सरदारशहर)।

सहयोगिनी—सा० भीखा, सा०, चादकवर, सा० मधुबाला, सा० विज्ञान श्री

चातुर्मास—रानी स्टेशन (पाली, राज०)

यात्रा—६७५ किमी क्षेत्र—५

अणुव्रती—२०६, वर्गीय अणुव्रती—२५, पच सूत्री सकल्प—१२५

मत्र दीक्षा—५०, सम्यक्त्व दीक्षा—१५०, व्रत दीक्षा—११, भक्तामर —१५, चौबीसी—७, प्रतिक्रमण—२५

साध्वियो मे तपस्या—उपवास—१२५, अठाई—१ हुई

साध्वीश्री मधुबाला व साध्वीश्री विज्ञान श्री ने पाच-पाच थोकडे कण्ठस्थ किये।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सोहनकुमारी (छापर)

सहयोगिनी—सा० गणेशा, सा० जेठा, सा० लज्जावती, सा०

लावण्य श्री

चातुर्मास—उदयपुर (राज०)

यात्रा— २८०० किमी, क्षेत्र—४२

मत्र दीक्षा—५१, सम्यक्त्व दीक्षा—७४, व्रत दीक्षा—१६, अणुव्रती—३६ वर्गीय अणुव्रती—८००, प्रतिक्रमण—३२, पचीस बोल—४०, भक्तामर—१२, चौवासी—२, श्रमणोपासक दीक्षा—७

साध्वीश्री सोहनकुमारी—उप० २५, ४ थोकडे सीखे

साध्वीश्री गणेशा-बेला—६, प० ६, तीन माह एकान्तर, प्रतिमाह ४ उपवास

साध्वीश्री लज्जावती—उप० १३, ३ थोकडे सीखे

साध्वीश्री लावण्यश्री—उप०-१, ४ थोकडे सीखे

भाई-बहिनो मे—१-२-सैंकडो, ३/१०८, ४/२५, ५/१५, ६/१, ७/२, ८/१५, ९/२

मासखमण—१, सामूहिक आयबिल-४५०

कार्यक्रम—बसती विगहा मे साध्वी के सान्निध्य मे अणुव्रत गोष्ठी हुई तथा सिधारिया मे तुलसी मानस विद्या मदिर हाईस्कूल मे अध्यापको के बीच प्रेक्षाध्यान व अणुव्रत पर चर्चा हुई। अजीतमल डिग्री कॉलेज के प्राचार्य ने प्रेक्षाध्यान मे काफी रुचि प्रदर्शित की और प्रेक्षाध्यान की पत्रिका कॉलेज की लायब्रेरी मे मगाने का प्रस्ताव किया।

ग्राम बकेवर मे जनता महाविद्यालय के प्राचार्य श्री शिवसेवक तिवारी ने अपने विद्यालय मे साध्वीश्री के सान्निध्य मे विशेष कार्यक्रम रखा। सिरसा मे जैन इटर कॉलेज मे अध्यापक तथा विद्यार्थियो के बीच मध्याह्न तथा साय दो कार्यक्रम हुए, जिसमे प्राचार्य एव शिक्षको ने प्रेक्षाध्यान शिविर मे आने की इच्छा प्रकट की। चातुर्मास मे अणुव्रत सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि कार्यक्रम समायोजित हुए।

साध्वीश्री के सपर्क मे आने वाले विशिष्ट व्यक्ति हैं—जिला एव सत्र न्यायाधीश श्री प्रेमचद जैन, पूर्व जिला एव सत्र न्यायाधीश श्री आर० एल० शाह, विधायक सुश्री गिरिजा व्यास, जिला रसद अधिकारी श्री पी० सी० बलाई, मेवाड मडलेश्वर महत श्री मुरली मनोहर शरण, जनजाति विकास आयुक्त श्री एम० एल० मेहता, रा० वि० पीठ के सस्थापक उपकुलपति श्री जनार्दनराय नागर, उदयपुर नगर प्रन्यास के पूर्व चैयरमैन श्री गिरधारीलाल

शर्मा, विधानसभा अध्यक्ष श्री हीरालाल देवपुरा, पूव मुख्यमत्री श्री शिवचरण माथुर आदि ।

एक माह या उससे अधिक सेवा करने वाले—

१ श्रीमती बदाम बाई गादिया (६ माह से चालू) २ श्री नानालाल खीमावत ३ श्रीमती हुलासबाई पोरवाल ४ श्रीमती प्रतापबाई करनपुर वाला ५ श्रीमती स्वागबाई तोतावत ६ श्रीमती अवाबाई धर्मावत ७ श्रीमती नाथी बाई चवाण ८ श्रीमती नोजीबाई चवाण (कोचलावाला) ९ श्री मोहनलाल धूपिया १० श्री भवरलाल पगारिया ११ श्रीमती अजय तलेसरा १२ श्रीमती कस्तुर राजनगरवाला १३ श्रीमती विमला सुराणा १४ श्रीमती मोहन कोठारी १५ श्रीमती रतन भोलावत १६ श्रीमती मगन १७ श्रीमती मोहन करनपुरवाला १८ श्रीमती भवरी मजावदवाला १९ श्रीमती प्राण खाकड-वाला २० श्रीमती ककु सहलोत २१ श्रीमती रोशन २२ सुश्री चद्रा मारू

७४—साध्वीश्री सोहना (लाडनू)

सहयोगिनी—सा० रतनकुमारी (सरदारशहर), सा० विनयश्री (श्रीडूगरगढ), सा० सवेगप्रभा (लूनकरणसर), सा० मजुलता (लाडनू)

चातुर्मास—साक्री (महाराष्ट्र)

यात्रा—५०० कि०मी०, क्षेत्र—२५

सम्यक्त्व दीक्षा—५५, श्रमणोपासक दीक्षा—९, थोकडा सीखने वाले—५, शीलव्रत—१, अणुव्रती-५१, पच सूत्री सकल्प—२५१, प्रतिक्रमण—१६

साध्वीश्री	तपस्या	तत्त्वज्ञान
सोहना	—उप०-१४, बे०—१, छह—१ आयबिल—५	
रतनकुमारी	—उप०-२५, बे०-१, ते०-१, चो०-१, आय-३१	
विनयश्री	—उप०-१, आय-५	५ थोकडे सीखे
सवेगश्री	—उप०-८, चो०-१, आय०-५	५ ,, ,,
मजुलता	—उप०-२, आय-३	५ ,, ,,

भाई-बहिनो मे—१/५०१, २/१३, ३/१३, ४/१, ७/१, ८/४, ९/१, ११/३, १२/१, ३०/१, ३१/२ आयबिल मासखमण—१, हरिजन समाज मे १/११, २/४, ३/३। श्रीमती शाता कार्करिया, श्रीमती कमला कोटेचा, श्री रगडूलाल टाटिया ने मासखमण किया ।

साध्वीश्री के सान्निध्य मे लोहारा मे प्रेक्षाध्यान शिविर, पाचाराम मे मर्यादा-महोत्सव, कन्हैगाव मे सावजनिक प्रवचन, मनमाड मे महावीर जयति व अक्षय तृतीया कायक्रम हुए ।

सस्मरण—साक्री निवासी श्री नमीचद पगारिया का पुत्र ववलू । उम्र ८ साल । रविवार के दिन ७ वजे ट्रेक्टर के नीचे आकर दव गया । जिला अस्पताल मे ववलू का ल गए । डॉक्टरो ने ऑपरेशन करने से इकार कर दिया । श्रीमती पुष्पा ने अपन लाल लाडले का गोद मे लिटाया और भिक्षु स्वामी-भिक्षु-स्वामी का जप प्रारम्भ कर दिया । पूरे परिवार ने जप-मय वातावरण हा गया । दा घट वाद ववलू न आख खोल ली । डॉक्टर भी अव आपरशन करन के लिए सहमत हा गये । ऑपरेशन सफल हो गया । माता पुष्पा अपन वच्चे क वचने का एक मात्र कारण आराध्य भिक्षु-स्वामी के जप का मानती ह ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री नगीना (टॉडगढ)

सहयागिनी—सा० पद्मावती (शाहदा), सा० कचनकवर (उदयपुर), सा० पुष्पावती (वाव), सा० गवेपणाश्री (समदडी)

चातुमास—वालारम, हदरावाद (आध्रप्रदेश)

यात्रा—५३६ कि०मी०, क्षेत्र—३१

मत्र दीक्षा—७०, सम्यक्त्व दीक्षा—१३७, शीलव्रत—४, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, सचित्त त्याग—११, वर्गीय अणुव्रती—३००, पच सूत्री सकल्प—५००, जैन विद्या—१५५, पत्राचार पाठमाला—६, प्रतिक्रमण—३७, भक्तामर—११, पचीस बाल—१०, थोकडा सीखने वाले—२५

साध्वियो मे उपवास—१८५, वे०—२, सा० कचनकवर, सा० पुष्पावती न मासखमण किये, साध्वियो मे प्रतिदिन मौन ६ घटा, जप—साढे तीन घट, ध्यान—२ घटा, आयविल—५१, तथा ॐ अभीराशिको नम का सोलह लाख से भी अधिक का जप विशेष अनुष्ठान के रूप मे हुआ ।

भाई-वहिनो मे—$\frac{१}{१८२१}$, $\frac{२}{३५}$, $\frac{३}{७५}$, $\frac{४}{४}$, $\frac{५}{२}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{७}{३}$, $\frac{८}{८}$, $\frac{६}{३}$, $\frac{११}{३}$, $\frac{१२}{१}$, $\frac{१५}{१}$ आयबिल—६६५५, ॐ अभीराशिको नम का जप—६२ करोड

तपस्या के उपलक्ष मे आचायश्री का सदेश

साध्वी पुष्पावनी ने हैदरावाद मे मासखमण की तपस्या की है । यह अच्छी वात ह । हमारा सघ त्याग-तपस्या के वल पर ही टिका हुआ ह ।'

त्याग-तपस्या से ही इसकी दीप्ति बढ रही है। इस मासखमण तपस्या से अन्यान्य लोगो को प्रेरणा मिलेगी।

आचार्य तुलसी

आमेट

१६ जुलाई, १६८५

आचार्यश्री ने जागृति पत्र के लिए भी सदेश प्रदान किया।

कार्यक्रम

८ जनवरी से १४ जनवरी तक साध्वीश्री के सान्निध्य मे एव जेठाभाई व नगीनभाई के निर्देशन मे 'प्रेक्षाध्यान शिविर' का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन इनकमटैक्स कमीशनर श्री विमलचद झावक ने किया।

२८ फरवरी/'मर्यादा-महोत्सव' समारोह साध्वीश्री के सान्निध्य मे आयोजित हुआ। प्रमुख वक्ता थे अल्लाडी श्री कुप्पुस्वामी चीफ जस्टीस ऑफ आध्रा, कृपि निदेशक मौलवी श्री जैनलाबुद्दीन आध्रप्रदेश, यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डॉ० चद्रभाण रावत।

१ मार्च/साध्वीश्री के सान्निध्य मे 'आध्रा मे जैन धर्म' विपय पर विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। आध्रप्रदेश के अनेक गणमान्य विद्वानो ने भाग लिया। शोध निवध पढे गये और जैन धर्म की प्राचीनता सिद्ध करने वाली अनेक झाकिया पर्दे पर प्रस्तुत की गई।

३ मार्च/महावीर जयति के उपलक्ष मे चारो सम्प्रदाय का विशाल समारोह हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन आध्रप्रदेश के राज्यपाल डॉ० शकरदयाल शर्मा ने किया। साध्वीश्री के भापण से लोग प्रभावित हुए। उपस्थिति करीब ७-८ हजार की थी। तेलगू और हिंदी दूरदर्शन पर इस कार्यक्रम को रिले किया गया था। स्थानीय पत्रो मे भी अच्छी चर्चा रही।

७ मार्च/'जैन धर्म की विश्व को देन' विषय पर रवीद्र भारती मे विशेप कार्यक्रम हुआ। मुख्य अतिथि थे—आध्र के मत्री श्री अशोक गणपति राजू। प्रोफेसर श्री शातिलालजी डागा आदि।

११ जुलाई/साध्वीश्री पुष्पावती जी के मासखमण के उपलक्ष मे विशाल जनमेदिनी के बीच तप अभिनदन-समारोह का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आध्र विधानसभा के अध्यक्ष श्री नारायण रावजी।

२६ जुलाई/साध्वीश्री के सान्निध्य मे 'सर्व धर्म समन्वय' का विराट् आयोजन हुआ। उद्घाटन कर रहे थे महामहिम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल-

सिंह। अन्यान्य धर्मो के प्रमुख श्री गोपालराव, चीफ जस्टिस, डॉ० के० डेविड, प्रिंसिपल आध्र खिश्चिन थियोलोजीकल कॉलेज, महमूद पासा ब्रादम तख्त-नशीन स्टेट प्रेसिडेंट जेमीएटस सोफिया आध्रप्रदेश, श्री ब्रह्माकुमारी राजयोगिनी प्रीतमकारजी, श्री डी० रामचद्रराव आदि। कायक्रम बहुत सुदर रहा। कायक्रम के समाचार हिंदी मिलाप, हैदरावाद समाचार, सिटीजन, न्यूज टाइम, हिंदुस्तान, जैन सदेश आदि पत्रो मे प्रकाशित हुए। तेलगु तथा दिल्ली दूरदशन तथा आकाशवाणी से कायक्रम प्रसारित किया गया।

आध्रा के मुख्यमत्री श्री एन० टी० रामाराव का साध्वीश्री नगीना से मिलन हुआ। अणुव्रत, आचार्यश्री तुलसी तथा अन्य विपयो पर वार्तालाप हुआ।

६ अक्टूबर/साध्वीश्री कचनकवरजी के मासखमण के उपलक्ष मे साध्वीश्री नगीना के सान्निध्य मे तप अभिनदन समारोह रखा गया। प्रमुख अतिथि थे—श्री वदेमातरम रामचद्रराvजी।

सस्मरण—स्वामीजी के नाम का चमत्कार

मध्याह्न का समय। प्रवचन समाप्त हुआ। श्री कन्हैयालाल नखत (सिकन्दरावाद) अपनी पुत्रियो के साथ ऑटोरिक्शा से घर लौट रहे थे। चौराहे पर पहुचते ही एक ट्रक ने सामने से आकर टक्कर मार दी। ऑटो उलट गया। आखो सामने अधेरी छा गई। मुह से भिक्षु स्वामी के अतिरिक्त और कुछ नही निकला। नाम का ऐसा अमोघ प्रभाव पडा है कि जो ट्रक सबको कुचलकर आगे निकलने वाला था हठात् वही रुक गया। श्री कन्हैयालाल साहस वटोरकर खडे हुये। अपनी एक लडकी नीचे दब गयी थी खीचकर वाहर निकाला। ड्राईवर को गहरी चोट लगी। ये पाचो सदस्य वाल-वाल वच निकले। सबको आश्चर्य यह था कि बिना रोके ही ट्रक कैसे रुक गई। वापस आकर साध्वीश्री से मगलपाठ सुना और स्वय और तथा तीन पुत्रियो के बाल-वाल वच जाने के पीछे भिक्षु स्वामी के नाम को माना।

द्वार लोहकवच बना

यात्रा के दौरान एक दिन साध्वीश्री का प्रवास नवनिर्मित छत्रम् हुआ। श्रद्धालु लोगो के घर करीव एक कि०मी० दूर थे। वाहर से आने वाले लोग कायक्रम के वाद अपने-अपने गाव लौट गये। कासीद साथ था नही। काली कजरारी रात। ४-५ व्यक्ति आकर दस्तक देने लगे। यहा केवल हम साधु

लोग है, उन्हे सूचित कर दिया गया था, किंतु उनकी इच्छा पूर्ति नही होने से क्रोध उभर आया। हर हालत मे अदर घुसने के लिए कृत सकल्प हो गये। छत्रम् के आगे-पीछे और ऊपर से रास्ता खोजने लगे। भीतर प्रवेश का सुराख नही मिला। जोर-जोर से दस्तक देकर द्वार तोडने का भरसक प्रयास कर रहे थे। उधर द्वार लोहकवच बनता जा रहा था। सफलता कही से भी हाथ नही लगी। लगभग साढे दस बजे से प्रात ५ बजे तक यह क्रम चलता रहा। साध्वियो के 'ॐ-भिक्षु' और 'जय भिक्षु-जय तुलसी' का स्वर गूजता रहा। इस प्रकार साध्विया इस विघ्न से निर्विघ्न बन गई।

अग्रगण्य—साध्वीश्री जतनकुमारी (सरदारशहर)

सहयोगिनी—सा० पानकुमारी, सा० कमलावती, सा० गरीमाश्री
चातुर्मास—टापरा (बाडमेर, राज०)

यात्रा—६०० कि०मी०, क्षेत्र—१५

मत्र दीक्षा—३००, सम्यक्त्व दीक्षा—२००, शीलव्रत—२, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, पच सूत्री सकल्प—१४५, श्रमणोपासक दीक्षा—४, भक्तामर—३, चोवीसी—३, जैन तत्त्व प्रवेश, (भाग एक) की परीक्षा मे परीक्षार्थी—४१

सा० जतनकुमारी के उप०—१५, बे०—१, सा० कमलावती उप०—२७, बे०—१, सा० गवेषणाश्री उप०—९, साध्वीश्री गवेषणाश्री ने छह थोकडे कठस्थ किये। भाई-बहिनो मे आयबिल—२५०० हुए। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह व अमृत-महोत्सव के सुन्दर कार्यक्रम रहे।

अग्रगण्य—साध्वीश्री गुलाब कवर

सहयोगिनी—सा० फूलकुमारी, सा० रायकवर, सा० चद्रकला, सा० हेमरेखा

चातुर्मास—मारवाड जक्शन (राज०)
यात्रा—६९० कि०मी०, क्षेत्र—३५

अणुव्रती—४५, अणुव्रती—५०१, पच सूत्री सकल्प—१०१, मत्र दीक्षा—१५१, सम्यक्त्व दीक्षा—१५१, व्रत दीक्षा—५, शीलव्रत—१, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, भक्तामर—१३, चौवीसी—१

साध्वियो मे पन्द्रह—१, प०—१, अठाई—२, उपवास—५०१

अग्रगण्य—साध्वीश्री कानकुमारी

सहयोगिनी—सा० प्रभाश्री, सा० मधुरेखा, सा० सविताश्री, सा० कुदनप्रभा, सा० प्रेमप्रभा ।

चातुर्मास—बीकानेर (राज०)

यात्रा—४०० कि०मी०, क्षेत्र—६

वर्गीय अणुव्रती—२४१, पच सूत्री सकल्प—२४०, मत्र दीक्षा—१०५, सम्यक्त्व दीक्षा—१५१, व्रत दीक्षा—५१, शीलव्रत—३, प्रेक्षाध्यान शिविर—३, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३, ५ थोकडे सीखने वाले—१, तीन थोकडे सीखने वाले—३, पचीस बोल—१०१

साध्वियो मे तपस्या—उप०—७२, ते०—२१

भाई-बहिनो मे—१/१०००, २/५१ ३/८५, ४/९७, ५/१५, ६/७, ७/५, ८/११, ९/३, १०/३, ११/३, १३/१, १५/१, ३०/१ आयबिल मासखमण—१

साध्वीश्री से भेट करने वाले विशिष्ट व्यक्ति-जिला पुलिस अधीक्षक श्री पी० पी० सी० भडारी, राज० नहर आयुक्त श्री पी० सी० जैन, नगर विकास न्यास के श्री भवानीशकर शर्मा, राज० पत्रिका के सवाददाता श्री श्याम शर्मा, नवज्योति के श्री विष्णु शर्मा, युगपक्ष के श्री जशकरण सुखानी आदि । गण-राज्य पत्र ने आचार्यवर के अमृत-महोत्सव पर विशेषाक प्रकाशित किया ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रूपा (सरदारशहर)

सहयोगिनी—सा० चादकवर (हासी), सा० पानकवर (सरदारशहर), सा० सूरजकवर (बीदासर), सा० सिरेकवर (सुजानगढ), सा० सरस्वती (हासी)

चातुर्मास—श्रीडूगरगढ (चूरू, राज०)

यात्रा—८० कि०मी०, क्षेत्र—५

वर्गीय अणुव्रती—६००, मत्र दीक्षा—२७०, सम्यक्त्व दीक्षा—१०२ प्रेक्षाध्यान शिविर—५, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—४ ५ थोकडे सीखने वाले—५, भाई-बहिनो के करीब चार लाख गाथाये कठस्थ हुई ।

तपस्या—सा० रूपा, सा० सिरेकवर प्रतिमाह ४ उपवास, सा० सरस्वती ते०—१

भाई-बहिनो मे बारी उपवास—१७, एकान्तर—१६, आयबिल बारी—१९, सोलिया—२७, पखवाडा—२, एक साथ तेले—१६५, एक साथ

आयबिल—२२१, वर्षीतप—६

अमृत-महोत्सव के सदभ मे तपस्वी श्री मूलचद वाफणा ने ४५, ३८, ५४ की एक ही वर्ष मे तपस्या की। कम उम्र मे अठाई करने वाली सुश्री ज्योति पुगलिया—११ वर्ष २ सुश्री नीलम छाजेड—६ वर्ष ३ सुश्री मधु भसाली—साढे आठ वर्ष ४ प्रदीपकुमार छाजेड—साढे आठ वर्ष।

साध्वीश्री के सान्निध्य मे अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए। पूर्व विधायक श्रीमती काता खतूरिया साध्वीश्री से मिली व बातचीत की। इस वर्ष आदर्श साहित्य सघ से सा० रूपाजी द्वारा लिखित 'उनकी कहानी मेरी जुबानी' पुस्तक प्रकाशित हुई।

श्रीडूगरगढ मे जै० श्वे० तेरा० सभा द्वारा सावजनिक पुस्तकालय तेरापथी महिला मडल द्वारा सार्वजनिक सिलाई, बुनाई प्रशिक्षण दिया जाता है। महिला मडल द्वारा गरीबो की मदद हेतु सिलाई मशीनो का वितरण किया गया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री मेणरया

सहयोगिनी—सा० छोटा, सा० केशर, सा० सवेगश्री

चातुर्मास—झकनावद (मध्यप्रदेश)

यात्रा—५४० कि०मी०, क्षेत्र—२२

पच सूत्री सकल्प—१७५, मत्र दीक्षा—२३, सम्यक्त्व दीक्षा—१५७ व्रत दीक्षा—६, मद्य निषेध व मास परिहार करने वाले—६०, जैन विद्या परीक्षार्थी—५१, अणुव्रत परीक्षार्थी—२५, पचीस बोल—४१, लघु दडक, तत्त्व चर्चा—६, प्रतिक्रमण—६, भक्तामर—१

साध्वियो मे उपवास—६६, ते०—१ हुआ। सभी साध्वियो ने पाच-पाच थोकडे कण्ठस्थ किये।

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{६७५}$, $\frac{२}{१५}$, $\frac{३}{१०}$, $\frac{४}{३}$, $\frac{५}{७}$, $\frac{८}{७}$, $\frac{६}{९}$ एकान्तर—तेले-तेले—१, वेले-वेले—१, बारी उपवास—६, आयबिल—३२

साध्वीश्री के सान्निध्य मे अनेक समारोह समायोजित हुए। नई दुनिया, स्वदेश, दैनिक भास्कर (इदौर) आदि पत्रो मे कई बार समाचार प्रकाशित हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सोमलता

सहयोगिनी—सा० किस्तुरा, सा० कीर्तिलता, सा० शातिलता, सा०

शकुन्तला

चातुर्मास—राजसमद (उदयपुर, राज०)

यात्रा—५०० कि०मी०, क्षेत्र—कई

श्रमणोपासक दीक्षा—२१, प्रेक्षाध्यान अभ्यास शिविर—१ (५ दिन का)

साध्वीश्री सोमलता उप०—९, मौन—४ घटा, ध्यान आधा घटा, स्वाध्याय—१००० गा०

साध्वी किस्तुरा—२ घटा मौन, ३०० गा० स्वाध्याय

साध्वीश्री कीर्तिलता—उप० ३०, दो घटा मौन, ६०० गा० स्वाध्याय

साध्वीश्री शातिलता—३ घटे मौन, १५ मिनट ध्यान, ३०० गा० स्वाध्याय

साध्वीश्री शकुन्तला—दो घटे मौन, १५ मिनट ध्यान, ३०० गा० स्वाध्याय

साध्वियो मे जप के विशेष प्रयोग भी हुए।

आचार्यवर के आमेट चातुर्मास मे राजसमद से सैकडो-सैकडो लोगो का दर्शनार्थ आना-जाना रहा। साध्वीश्री के सान्निध्य मे अनेकविध कार्यक्रम हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री इन्द्रूजी

सहयोगिनी—सा० रायकवर (सुजानगढ), सा० पुना (सुजानगढ), सा० लिछमा (गगा), सा० मर्यादाश्री (गोगुन्दा)

चातुर्मास—पीपाड शहर (पाली, राज०)

यात्रा—५०० कि०मी०, क्षेत्र—८

मत्र दीक्षा—११, सम्यक्त्व दीक्षा—५५, शीलव्रत—१, श्रमणोपासक दीक्षा—८, पच सूत्री सकल्प—८४, भक्तामर—९, कल्याण मदिर—२, जैन तत्त्व प्रवेश—१, चौबीसी व आराधना—७, पच सूत्रम्—२, तत्त्व चर्चा—५०, जैन सिद्धात दीपिका—१, कालू तत्त्व शतक—३९ प्रतिक्रमण—६९, पच्चीस बोल—८४

तपस्या—साध्वियो मे—सा० इन्द्रूजी—उप० ७, सा० पुना—उप० ८६, बे०—२, ते०—१, सा० रायकवर—उप० २५, ते०—१, सा० लिछमा—उप० ९, सात—१, सा० मर्यादाश्री—उप० ८१, बे०—१, ते०—२

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{३६२}$, $\frac{२}{१६}$, $\frac{३}{६}$, $\frac{४}{३}$, $\frac{५}{४}$, $\frac{८}{५}$, $\frac{९}{२}$, $\frac{११}{२}$, $\frac{१६}{१}$ साध्वीश्री

मर्यादाश्री ने आलोच्य वर्ष मे १०३६ गाथा कठस्थ की ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री चारित्रश्री

सहयोगिनी—सा० मनोहरा, सा० विनयश्री, सा० धमलता, सा० हेमलता

चातुर्मास—पालघर (महाराष्ट्र)

यात्रा—७०० कि०मी०, क्षेत्र—७५

मत्र दीक्षा—१५०, जैन विद्या परीक्षा—८५, प्रतिक्रमण—४१, वर्गीय अणुव्रती—२५, शीलव्रत– १ सचित्त त्याग—२, भक्तामर—८, पचीस बोल—१०, थोकडा सीखने वाले—७, व्रत दीक्षा—१५, सम्यक्त्व दीक्षा—६२

साध्वीश्री चारित्रश्री—उप० १६, बे०-१, ते०-१, मौन-दो घटा, वाचन-३५०० पृ०, स्वाध्याय-४०० गाथा

साध्वीश्री मनोहरा—उप०-६, मौन-तीन घटे

साध्वीश्री विनयश्री—उप०-१३, बे०-१, ते०-१ दो घटे मौन

साध्वीश्री धर्मलता—उप०-१२, ते०-१, मौन-डेढ घटे, वाचन-५०० पृ०

साध्वीश्री हेमलता—उप०-४२, ते०-१, मौन-दो घटे, वाचन-२००० पृ०, स्वाध्याय-५०० गाथा

चारित्रश्री ने ४००, सा० हेमलता ने ३००० गाथा कण्ठस्थ की ।

भाई-बहिनो मे—$\frac{२}{३१}$, $\frac{३}{५३}$, $\frac{४}{१}$, $\frac{५}{३}$। $\frac{८}{१५}$, $\frac{१७}{१}$, $\frac{३०}{१}$, $\frac{३३}{१}$

साध्वीश्री के सान्निध्य एव जेठाभाई व नगीन भाई के निदेशन मे दो प्रेक्षाध्यान शिविर लगे । ४ सितबर को पालधर कॉलेज मे साध्वीश्री का 'शिक्षण व नीति' विषय पर प्रवचन हुआ । वहा नियमित ज्ञानशाला चलती है जिसमे ५०-६० विद्यार्थी पढते है । पालधर क्षेत्र मे यह प्रथम चातुर्मास है । साध्वीश्री के चातुर्मास के साथ ही यह क्षेत्र चातुर्मासिक क्षेत्रो की गिनती मे आ गया है ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री तीजा

सहयोगिनी—सा० इन्दुमती, सा० सत्यवती, सा० पुण्यदर्शना

चातुर्मास—रतलाम (मध्यप्रदेश)

यात्रा—१२०० कि०मी०, क्षेत्र—३१

अणुव्रती—२१, वर्गीय अणुव्रती—५१, पच सूत्री सकल्प—५००, मत्र-दीक्षा—८५, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, व्रत दीक्षा—६, शीलव्रत—५,

प्रेक्षाध्यान शिविर—१ (रतलाम मे), थोकडा सीखने वाले—५, भक्तामर व चौबीसी—५, जैन विद्या परीक्षा—६७

साध्वियो मे तपस्या—उप०—११५, बे०—३, ते०-४, प० २, आयबिल—३१, एकान्तर—१ माह, मौन व जप-२-२ घ०, ध्यान—आधा घटा

भाई-बहिनो मे—बे०—१५, ते०—३१, सोलह—१, पचरगी—१

साध्वीश्री सत्यवती व साध्वीश्री पुण्यदशना ने पाच-पाच थोकडे सीखे।

आचार्यश्री ने ५ मई को कानाना से साध्वीश्री तीजा को एक सदेश प्रदान किया जो इस प्रकार है—

'मालवा प्रदेश मे विहरमान साध्वी तीजाजी ! सुखपृच्छा। तुम लोग समाधि पूर्वक विहार करना। साध्वी तीजाजी को कई वर्ष हो गये। सुदूर विहार करके आए है। सब जगह अच्छा काम किया है। स्वास्थ्य का ध्यान रखना। जहा कही रहो, शासन की प्रभावना करना।'

युवाचार्यश्री ने रतलाम मे आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविर के लिए एक सदेश प्रदान किया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत भावात्मक एकता दिवस के दिन गुरुसिंह सभा के अध्यक्ष श्री हरदयालसिंह, रवीन्द्र नाथ भटर, इमामश्री मौलाना जाहीद साहब, जमीयत उलमा के महाराज मसूद अरीबसा, महाविद्यालय के प्रोफेसर श्री बी० एल० आच्छा आदि महानुभावो ने भाग लिया।

साध्वी तीजाजी अपनी सहयोगिनी साध्वियो के साथ बदनावर से पेटलावद जा रही थी। किशनगढ व घुघरी मध्य विशाल माही नदी वह रही थी। उस नदी पर जो कच्चा पुल बना हुआ था उससे साध्विया चली। साध्विया चढ तो गई, पर उतरना कठिन हो गया। वापिस उसी रास्ते से उतरना शुरु किया। अगर एक भी पैर इधर-उधर हो जाये, तो कोई भी दुर्घटना घट सकती है। साध्विया भिक्षु स्वामी के नाम को मन व वाणी मे रखते हुए उस विषम परिस्थिति से उबर गईं।

अग्रगण्य—साध्वीश्री विद्यावती (श्रीडूगरगढ)

सहयोगिनी—सा० गुणसुन्दरी, सा० महाकवर, सा० प्रियवदा

चातुर्मास—जलगाव (महाराष्ट्र)

यात्रा—८०० कि०मी०, क्षेत्र—२१

अणूव्रती—१५१, पच सूत्री सकल्प—२५००, सम्यक्त्व दीक्षा—१५०, व्रत दीक्षा—६, शीलव्रत—४, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—४, पचीस बोल—११, भक्तामर—२२, प्रतिक्रमण—१५, कल्याण मदिर—४

सा० विद्यावती, सा० महाकवर एव सा० प्रियवदा ने ६-६ थोकडे सीखे। साध्वियो मे उप०—१८, आयविल—१२ हुए।

भाई-वहिनो मे—१/८००, २/६५, ३/३०, ४/७, ८/५, ६/१८, ११/५, उपवास की बारी—४, जलगाव के एक ही छाजेड परिवार की ७ वालिकाओ ने एक साथ ९ की तपस्या की।

कायक्रम—जलगाव मे आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविर पर आचार्यश्री, युवाचायश्री के महत्त्वपूर्ण सदेश प्राप्त हुए। इस शिविर मे ७१ शिविरार्थियो ने भाग लिया। शिविर समापन के अवसर पर महाराष्ट्र काग्रेस एस० के उपाध्यक्ष व विधायक श्री सुरेश दादा जैन, स्थानकवासी समाज के सघपति श्री नथमल लूकड उपस्थित थे।

साध्वीश्री के सान्निध्य मे पश्चिमाचल तेरापथ श्रावक सघ का छठा अधिवेशन सम्पन्न हुआ, जिसमे ५० क्षेत्रो के ३०० प्रतिनिधि आये। कार्यक्रम मे विधायक श्री सुरेश दादा जैन, सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री भवरलाल जैन, वबई के श्री वशीलाल कुचेरिया, श्रावक सघ के मत्री श्री शातिलाल नादेचा आदि की प्रेरक उपस्थिति थी। इस अधिवेशन मे कई प्रस्ताव पारित्त किये गये। अधिवेशन पर प्रदत्त आचार्यवर का सदेश—

पश्चिमाचल वहुत लम्बा चौडा क्षेत्र हे। हजारो तेरापथी इस क्षेत्र मे रहते हे। उनके मन मे धमसघ एव सघपति के प्रति सहज ही गहरी निष्ठा एव श्रद्धा के भाव है।

तेरापथ धमसघ की सबसे उल्लेखनीय बात यह हे कि वह एक नेतृत्व और अनुशासन मे उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर हो रहा हे। साधु-साध्वियो की तरह श्रावक-श्राविकाए भी धमसघ के अग है। उनका दायित्व ह कि वे भी अपने सामाजिक सगठन को सब प्रकार से सुदृढ वनाये।

पश्चिमाचल तेरापथ श्रावक सघ अपना आगामी अधिवेशन जलगाव मे साध्वी विद्यावती के सान्निध्य मे करने जा रहा है। इसमे विचारशील श्रावको के भाग लेने की सभावना है। आशा हे उस अवसर पर इन विपयो पर भी चितन करेगे।

१ भावी पीढी के युवको और युवतियो मे किस प्रकार धार्मिक सस्कारो को सुरक्षित रखा जाए ।

२ अमृत-महोत्सव के अवसर पर घोपित पचसूत्री कायक्रम का व्यवस्थित रूप मे किस प्रकार प्रचार-प्रसार किया जाए ।

३ समाज मे किस प्रकार सादगी की भावना को वढावा मिले तथा प्रदर्शन की भावना समाप्त हो ।

—आचाय तुलसी

विधायक श्री सुरेश दादा जैन जलगाव के विधायक ह । युवा प्रतिभा सपन्न जैन श्रावक है । चातुर्मास मे वे, उनके भाई व माताजी साध्वीश्री के सपर्क मे रहे । आचार्यश्री ने उन्हे व्यक्तिश सदेश भी प्रदान किया ।

घाटजी, आर्णी, जवला दाव्हा, खामगाव, लोणी, गवली, मेहर, देवल गावमाली, लोणार, पहूर व जलगाव मे साध्वीश्री ने अवधान प्रयोग किये तथा हस्तकला प्रदर्शनी का भी आयोजन हुआ । आकोला मे मर्यादा-महोत्सव एव श्रावक-सम्मेलन, मेहकर मे महावीर जयति मनाई गयी ।

साध्वीश्री के सान्निध्य मे आयोजित कार्यक्रमो मे सम्मिलित होने वाले व भेटकर्ता विशिष्ट व्यक्ति थे—सिविल जज श्री नरवाडे, विधायक श्री सुरेश दादा जैन, मराठी कवि श्री नामदेव राठा, इजीनियरिंग कॉलेज के प्रिंसिपल श्री बी० के० श्रीवास्तव, एम० जे० कॉलेज के प्रिंसिपल डी० एस० नेमाडे, नूतन मराठा कॉलेज के प्रिंसिपल श्री के० आर० सोनवणे, पूर्व विधायक ईश्वर बाबू जैन, विधायक श्री हरिभाऊ, टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज के प्रिंसिपल श्री सुन्दरलाल मल्हारा आदि । उन्होने आचार्यश्री एव उनके द्वारा की जा रही प्रवृत्तियो की प्रशसा की ।

साध्वीश्री के सान्निध्य मे मनाये गये अमृत-महोत्सव कार्यक्रम मे महिला मडल ने २१ सकल्प लिये । चातुर्मास मे साध्वीश्री के सान्निध्य मे दो बार प्रेस कान्फ्रेस हुई । दो बार आकाशवाणी से 'जैन धम व आचार्य तुलसी' तथा 'राष्ट्रीय एकात्मकता व मेरा धर्म' विषय पर साध्वीश्री के विशेष वक्तव्य प्रसारित हुए ।

अनेकविध कार्यक्रमो के समाचार जिन पत्रो मे प्रकाशित हुए, वे प्राय मराठी भाषा के हैं । वे है—मातृभूमि, शिवशक्ति, युक्तिवाद, आकोला समाचार, विश्व सागर, द० हितवारा (अग्रेजी) नवभारत, युग-धम, लोकमत, लादमीदार आदि ।

सस्मरण—साध्वीश्री विद्यावती के साथ साध्वीश्री प्रियवदा है। उनके बाये पैर मे लगभग तीन वर्षो से एक गाठ थी। उनके विभिन्न रूप थे। कभी वह लाल, कभी उसमे सूजन तथा कभी दर्द उठ जाता था। डॉ० ने ऑपरेशन की सलाह दी। जलगाव मे आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविर मे जब जेठाभाई का आना हुआ तब उनसे सलाह मशविरा करके साध्वीश्री प्रियवदा ने ध्यान व अनुप्रेक्षा का अभ्यास प्रारभ किया। दस दिनो मे ही ऐसा चमत्कार घटित हुआ कि वह गाठ शनै शनै लुप्त हो गई, दर्द दूर हो गया।

अग्रगण्य—साध्वी रतनश्री (लाडनू)

सहयोगिनी—सा० कुलप्रभा, सा० रमावती, सा० शुक्ल प्रभा

चातुर्मास—फिल्लौर (पजाब)

यात्रा—२५० कि०मी०, क्षेत्र—१३

अणुव्रती—५१, वर्गीय अणुव्रती—७१, पच सूत्री सकल्प—१११, सम्यक्त्व दीक्षा—७०, ६ पूरे परिवार, शीलव्रत—५, प्रतिक्रमण—८, भक्तामर—३, पचीस बोल—५१, मद्य-मास त्याग—५५१, सचित्त त्याग—५८०, ठहराव परित्याग—५१, चाय-त्याग—५१

भाई-बहिनो मे सवा लाख का जप व ४५१ आयबिल हुए।

भटिण्डा बाजार मे सार्वजनिक प्रवचन, जेतोमण्डी मे महावीर जयति कार्यक्रम तथा कोटकपुरा मे सनातन मदिर मे साध्वीश्री का प्रवचन हुआ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सूरजकवर (जयपुर)

सहयोगिनी—सा० पानकवर, सा० रायकवर (जयपुर), सा० जय-कवर (खाटू), सा० कुदनरेखा (हिसार)

चातुर्मास—कालू (बीकानेर, राज०)

यात्रा—१८५ कि०मी०, क्षेत्र—३

अणुव्रती—५१, वर्गीय अणुव्रती—५१, पच सूत्री सकल्प—५१, श्रमणोपासक दीक्षा—५१, मत्र दीक्षा—६६, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, शीलव्रत—५, थोकडे सीखने वाले—७, भक्तामर—७, प्रतिक्रमण—५, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, (८ दिन का), व्रत दीक्षा—५१

तपस्या साध्वियो मे—सा० सूरजकवर—उप० ३३, ते०—१, सा० पानकवर उप० ३७, सा० रायकवर उप०—४६, बे०—१, सा० जयकवर उप०—४१, ते०—१, सा० कुन्दनरेखा उप०—६१, बे०—२, ते०—२,

चो०—१, आयविल ते०—१, सा० रायकवर, सा० जयकवर व सा० कुदन-रेखा ने छह-छह थोकडे कण्ठस्थ किये ।

भाई-वहिनो मे—$\frac{२}{८५}$, $\frac{३}{१३०}$, $\frac{५}{११}$, $\frac{६}{७}$, $\frac{८}{५५}$, $\frac{९}{११}$

नव वर्षीय पाच कन्याओ ने अठाई तप किया, वे है—समता नाहटा, समता साड, सुनीता, चचल व सरिता वोथरा ।

साध्वीश्री के सान्निध्य मे अणुव्रत उद्‌वोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव के कार्यक्रम हुए । तपस्या का उत्कृष्ट उपक्रम चला । अनेको सास्कृतिक, वक्तृत्व कला विकास के कार्यक्रम सपादित हुए ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री राजकुमारी

सहयोगिनी—सा० जतनकुमारी, सा० कमलरेखा, सा० सोमयशा

चातुर्मास—वायतू (वाडमेर, राज०)

यात्रा—६०० कि०मी०, क्षेत्र—२०

अणुव्रती—२०, पच सूत्री सकल्प—१५०, सम्यक्त्व दीक्षा—७१, प्रेक्षाध्यान शिविर—२, भक्तामर – १३, चौवीसी—१०,

साध्वियो मे काफी आयविल हुए । भाई-वहिनो मे सैकडो उपवास व अन्य तपस्याए हुई । सा० राजकुमारी के उप०—४०, वे०—१ तथा साध्वी कमलरेखा के उपवास—१५, तेला—१० हुए ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री पिस्ता

सहयोगिनी—सा० पुन्ना (बीदासर), सा० दीपमाला (उमरा), सा० स्वणलता (श्री करणपुर)

चातुर्मास—टॉडगढ (अजमेर, राज०)

यात्रा—४५० कि०मी०

अणुव्रती—२१, पच सूत्री सकल्प—२१, व्रत दीक्षा—२१

तपस्या सा० पिस्ता—उप०—४१, आयविल—१४, वे०—१, ते०—२, अठाई—१, सा० पुन्ना—उप०—३१, आयविल—८, वे०—१, सा० दीपमाला—उप०—३२, आयविल—५, वे०—१, सा० स्वर्णलता—उप०—२२, आयविल—८, अठाई—११

भाई-वहिनो मे—$\frac{१}{८०१}$, $\frac{२}{३५}$, $\frac{३}{७}$, $\frac{४}{२}$, $\frac{५}{६}$, $\frac{८}{११}$, $\frac{१०}{१}$ वर्षीतप—२, दो महीने एकान्तर—३, सामूहिक आयविल हुए—६९, टाडगढ मे उप जिलाधीश श्री माणकचद जैन, पुलिस उप अधीक्षक श्री भोपालसिंह साध्वीश्री से मिले ।

८—साध्वीश्री चादकुमारी (लाडनू)

सहयोगिनी—सा० राकेशकुमारी (राजलदेसर), सा० तिलकश्री (सुजानगढ), सा० मजुबाला (मोमासर), सा० तितिक्षाश्री

चातुर्मास—कलकत्ता महासभा भवन

यात्रा—१८३१ कि०मी० (दिल्ली-कलकत्ता) क्षेत्र—३१

अणुव्रती—२००, वर्गीय अणुव्रती—७००, पच सूत्री सकल्प—हजारो, मत्र दीक्षा—१०००, सम्यक्त्व दीक्षा—६१, व्रत दीक्षा—५१, शीलव्रत—५, प्रेक्षाध्यान-शिविर—१, तत्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—२, जैन विद्या परीक्षा—६०, थोकडा—१३१, प्रतिक्रमण—२१

साध्वियो मे उप०—४५, मौन—प्रतिदिन पाच घटा, जप—तीन घटा, ध्यान—२ घटा, विशेष अनुष्ठान—ॐ अभीराशिको नम ६ लाख, स्वाध्याय—५ हजार पृष्ठ

भाई-बहिनो मे उपवास—हजारो तथा बेले, तेले, सैकडो हुए। ४१ दिन की तपस्या श्री चैनरूप वैद, ३५ की श्री नेमीचद मालू ने की। अन्य तपस्याए—४/५१, ५/८१, ६/२१, ८/१५१, ९/४१, १०/१, ११/७, १३/२, १५/५, १६/१, ३५/१, ४१/१ वर्षीतप—१६, सोलिय तप—६ एकान्तर १५१, बेले-बेले एकान्तर—१ बारी के उपवास—२१, सामूहिक तेले—२५१, सामूहिक आयबिल—१११

क ॅ म

२१ जनवरी को इलाहाबाद की सेन्ट्रल जेल मे कार्यक्रम। कारागृह के मुख्य जेलर ने अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान से प्रभावित होकर अपने हस्ताक्षर सहित रिपोर्ट प्रस्तुत की।

उत्तर प्रदेश प्रान्त मिर्जापुर के दिगम्बर जैन मदिर मे मर्यादा-महोत्सव का भव्य आयोजन हुआ।

झूमरी तिलैया (कोडरमा) दिगम्बर जैन धर्मशाला मे और जीवन-व्यवहार विषय पर विचार परिषद् का कार्यक्रम रहा। जैन व जैनेतर लोगो मे प्रेक्षाध्यान पद्धति की अच्छी प्रतिक्रिया रही।

दुर्गापुर (बेनाचट्टी) मे अक्षय तृतीया का भव्य आयोजन हुआ।

वर्द्धमान/कलकत्ता महासभा के तत्वावधान मे अमृत-महोत्सव का प्रथम चरण उल्लासपूर्ण वातावरण मे मनाया गया। सैकडो भाई-बहिनो ने आयबिल तप स्वीकार किया।

तारकेश्वर/कलकत्ता तेरापथ युवक परिषद् द्वारा अमृत-महोत्सव के

चो०—१, आयबिल ते०—१, सा० रायकवर, सा० जयकवर व सा० कुदन-रेखा ने छह-छह थोकडे कण्ठस्थ किये ।

भाई-वहिनो मे—२/८५, ३/१३०, ५/११, ६/७, ८/५५, ९/११

नव वर्षीय पाच कन्याओ ने अठाई तप किया, वे हे—समता नाहटा, समता साड, सुनीता, चचल व सरिता वोथरा ।

साध्वीश्री के सान्निध्य मे अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव के कार्यक्रम हुए । तपस्या का उत्कृष्ट उपक्रम चला । अनेको सास्कृतिक, वक्तृत्व कला विकास के कार्यक्रम सपादित हुए ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री राजकुमारी

सहयोगिनी—सा० जतनकुमारी, सा० कमलरेखा, सा० सोमयशा

चातुर्मास—बायतू (बाडमेर, राज०)

यात्रा—६०० कि०मी०, क्षेत्र—२०

अणुव्रती—२०, पच सूत्री सकल्प—१५०, सम्यक्त्व दीक्षा—७१, प्रेक्षाध्यान शिविर—२, भक्तामर– १३, चौवीसी—१०,

साध्वियो मे काफी आयविल हुए । भाई-बहिनो मे सैकडो उपवास व अन्य तपस्याए हुई । सा० राजकुमारी के उप०—४०, वे०—१ तथा साध्वी कमलरेखा के उपवास—१५, तेला—१० हुए ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री पिस्ता

सहयोगिनी—सा० पुन्ना (बीदासर), सा० दीपमाला (उमरा), सा० स्वर्णलता (श्री करणपुर)

चातुर्मास—टॉडगढ (अजमेर, राज०)

यात्रा—४५० कि०मी०

अणुव्रती—२१, पच सूत्री सकल्प—२१, व्रत दीक्षा—२१

तपस्या सा० पिस्ता—उप०—४१, आयविल—१४, वे०—१, ते०—२, अठाई—१, सा० पुन्ना—उप०—३१, आयविल—८, वे०—१, सा० दीपमाला—उप०—३२, आयविल—५, वे०—१, सा० स्वर्णलता—उप०—२२, आयविल—८, अठाई—११

भाई-वहिनो मे—१/८०१, २/३५, ३/७, ४/२, ५/६, ८/११, १०/१ वर्षीतप—२, दो महीने एकान्तर—३, सामूहिक आयविल हुए—६६, टॉडगढ मे उप जिलाधीश श्री माणकचद जैन, पुलिस उप अधीक्षक श्री भोपालसिह साध्वीश्री से मिले ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री चादकुमारी (लाडनू)

सहयोगिनी—सा० राकेशकुमारी (राजलदेसर), सा० तिलकश्री (सुजानगढ), सा० मजुबाला (मोमासर), सा० तितिक्षाश्री

चातुर्मास—कलकत्ता महासभा भवन

यात्रा—१८३१ कि०मी० (दिल्ली-कलकत्ता) क्षेत्र—३१

अणुव्रती—२००, वर्गीय अणुव्रती—७००, पच सूत्री सकल्प—हजारो, मत्र दीक्षा—१०००, सम्यक्त्व दीक्षा—६१, व्रत दीक्षा—५१, शीलव्रत—५, प्रेक्षाध्यान-शिविर—१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—२, जैन विद्या परीक्षा—६०, थोकडा—१३१, प्रतिक्रमण—२१

साध्वियो मे उप०—४५, मौन—प्रतिदिन पाच घटा, जप—तीन घटा, ध्यान—२ घटा, विशेष अनुष्ठान—ॐ अभीराशिको नम ६ लाख, स्वाध्याय—५ हजार पृष्ठ

भाई-बहिनो मे उपवास—हजारो तथा बेले, तेले, सैकडो हुए। ४१ दिन की तपस्या श्री चैनरूप वैद, ३५ की श्री नेमीचद मालू ने की। अन्य तपस्याए—४/५१, ५/९१, ६/२१, ८/१२१, ९/४८, १०/१, ११/७, १३/२, १५/५, १६/१, ३५/१, ४१/१ वर्षीतप—१६, सोलिय तप—६ एकान्तर १५१, बेले-बेले एकान्तर—१ वारी के उपवास—२१, सामूहिक तेले—२५१, सामूहिक आयबिल—१११

कार्यक्रम

२१ जनवरी को इलाहाबाद की सेन्ट्रल जेल मे कार्यक्रम। कारागृह के मुख्य जेलर ने अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान से प्रभावित होकर अपने हस्ताक्षर सहित रिपोर्ट प्रस्तुत की।

उत्तर प्रदेश प्रान्त मिर्जापुर के दिगम्बर जैन मदिर मे मर्यादा-महोत्सव का भव्य आयोजन हुआ।

झूमरी तिलैया (कोडरमा) दिगम्बर जैन धर्मशाला मे धर्म और जीवन-व्यवहार विषय पर विचार परिषद् का कार्यक्रम रहा। जैन व जैनेतर लोगो मे प्रेक्षाध्यान पद्धति की अच्छी प्रतिक्रिया रही।

दुर्गापुर (बेनाचट्टी) मे अक्षय तृतीया का भव्य आयोजन हुआ।

वर्द्धमान/कलकत्ता महासभा के तत्त्वावधान मे अमृत-महोत्सव का प्रथम चरण उल्लासपूर्ण वातावरण मे मनाया गया। सैकडो भाई-बहिनो ने आयबिल तप स्वीकार किया।

तारकेश्वर/कलकत्ता तेरापथ युवक परिषद् द्वारा अमृत-महोत्सव के

उपलक्ष मे विशेप कायक्रम रखा गया । सैकडो युवको द्वारा पच सूत्र स्वीकार किये गए ।

रिसडा/स्थानीय सभा के तत्वावधान मे पच दिवसीय अध्यात्म प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ । निर्देशिका श्रीमती निर्मला जैन थी ।

रिसडा कन्या मडल ने अमृत-महोत्सव के उपलक्ष मे सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया ।

कलकत्ता चातुर्मास मे परिसपन्न कार्यक्रम

११ अगस्त को विराट् महिला सम्मेलन । सान्निध्य—साध्वीश्री चाद कुमारीजी । अध्यक्षा—अखिल भारतीय तेरापथ महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती सज्जनदेवी चोपडा । प्रमुख वक्ता—डा० प्रभा खेतान, विशेष अतिथि—राजकुमारी बैगानी, जैन बालिका विद्यालय की प्रधानाध्यापिका ।

प्रत्येक रविवार को महत्त्वपूर्ण विषयो पर विशेष आयोजन हुए ।

क्षमापना पर्व के उपलक्ष मे जैन सभा के तत्वावधान मे "मैत्री पर्व" का कार्यक्रम । अध्यक्ष—श्री धर्मचद जी सरावगी, भूतपूर्व विधान परिषद् सदस्य । प्रमुख वक्ता— प्रो० कल्याणमल जी लोढा, कलकत्ता विश्वविद्यालय ।

२२ सितम्बर को अमृत-महोत्सव का द्वितीय चरण "जनाभिनदन समारोह" के रूप मे विशाल पैमाने पर मनाया गया । कलकत्ता महानगर की ७१ सस्थाओ के द्वारा आचार्यप्रवर का अभिनदन किया गया । उद्घाटनकर्ता—श्री कमल वसु—मेयर, कलकत्ता नगर निगम । प्रधान अतिथि—श्री अशोक कुमारसेन, विधि मत्री—भारत सरकार । अध्यक्षता—श्रीमती पद्मा खास्तगीर, न्यायाधीश कलकत्ता उच्च न्यायालय । प्रमुख वक्ता—श्री कल्याणमल लोढा, कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एव श्री राजेश खेतान, विधायक पश्चिम बगाल विधान सभा ।

२२ अक्टूबर को महासभा के तत्वावधान मे पच दिवसीय "जीवन-विज्ञान अध्यात्म प्रशिक्षण शिविर" का समायोजन । जिसमे १२५ बालक-बालिकाओ ने भाग लिया । शिविर मचालन काय तुलसी अध्यात्म नीडम् के निदेशक श्री धर्मानदजी ने किया । अध्यक्षता श्री मोहनलाल लोढा ने की ।

१४ नववर को अहिंसा सावभौम दिवस का विशिष्ट कायक्रम रहा । अध्यक्ष—श्री देवकीनदन पोद्दार, विधायक प० वगाल विधान सभा । प्रमुख-वक्ता—श्री शातिलाल जैन, कौंसिलर कलकत्ता नगर निगम ।

आज के दिन गृहमत्री, श्रममत्री आदि अनेक राजनेताओ, साहित्यकारो पत्रकारो आदि के विशेष मदेश मिले।

१७ नवबर को "अहिसा सार्वभौम दिवस" का द्वितीय चरण उत्साह-पूर्ण वातावरण मे सपन्न हुआ।

अध्यक्ष—श्री सौगतराय, भूतपूव केन्द्रीय मत्री।

प्रमुख वक्ता—श्री अजित सेन गुप्ता, माननीय न्यायमूर्ति, कलकत्ता उच्च न्यायालय। श्री राजेश खेतान—विधायक, प० बगाल विधान सभा।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सतोका

सहयोगिनी—सा० मधु, सा० मानकवर, सा० सयमश्री, सा० जगत् प्रभा, सा० सुलेखा।

चातुर्मास—मोमासर (चूरू, राज०)

यात्रा—स्थिर प्रवास

अणुव्रती—८०, पच सूत्री सकल्प—२०००, व्रत दीक्षा—७५, प्रेक्षा-ध्यान शिविर-१ तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-१, जैन विद्या परीक्षा-३०, पाच थोकडे सीखने वाले—५०

तपस्या साध्वियो मे—$\frac{१}{१०८}$, $\frac{२}{११}$, $\frac{३}{७}$, $\frac{४}{१}$, $\frac{५}{१}$ सा० सयमश्री, सा० जगत्प्रभा, सा० सुलेखा ने छह-छह थोकडे कण्ठस्थ किये।

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{२०००}$, $\frac{२}{८०}$, $\frac{३}{७०}$, $\frac{४}{१५}$, $\frac{५}{१०}$, $\frac{६}{५}$, $\frac{७}{७}$, $\frac{८}{१९}$, $\frac{९}{४}$, $\frac{१५}{१}$

वर्षीतप—१, दस वर्षीया लडकी सुधा नाहटा ने अठाई की तपस्या की।

साध्वीश्री के सान्निध्य मे अनेकविध कार्यक्रम आयोजित हुए। कई विशिष्ट व्यक्ति साध्वी श्री के सपर्क मे आए, वे है—पूर्व नहरमत्री श्री चदनमल वैद, प्रधानाध्यापक श्री गौरीशकर जोशी, विश्व हिंदू परिषद् के अध्यक्ष श्री सूरजमल आर्य आदि। मोमासर जैन सस्कारो की पुष्टि मे उल्लेखनीय है। वहा श्री भोजराज सचेती कुशल सस्कारक है।

अग्रगण्य—साध्वीश्री अजितप्रभा (लावा सरदारगढ)

सहयोगिनी—सा० भत्तु (केलवा), श्री हेमकवर (देवरिया), सा० अजितप्रभा (रामसिह का गुडा)

चातुर्मास—मायरा (उदयपुर, राज०)

यात्रा—९५० कि०मी०, क्षे०-४०

उपलक्ष मे विशेप कार्यक्रम रखा गया । सैकडो युवको द्वारा पच सूत्र स्वीकार किये गए ।

रिसडा/स्थानीय सभा के तत्वावधान मे पच दिवसीय अध्यात्म प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ । निर्देशिका श्रीमती निर्मला जैन थी ।

रिसडा कन्या मडल ने अमृत-महोत्सव के उपलक्ष मे सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया ।

कलकत्ता चातुर्मास मे परिसपन्न कार्यक्रम

११ अगस्त को विराट् महिला सम्मेलन । सान्निध्य—साध्वीश्री चाद कुमारीजी । अध्यक्षा—अखिल भारतीय तेरापथ महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती सज्जनदेवी चोपडा । प्रमुख वक्ता—डा० प्रभा खेतान, विशेष अतिथि—राजकुमारी बैगानी, जैन बालिका विद्यालय की प्रधानाध्यापिका ।

प्रत्येक रविवार को महत्त्वपूर्ण विपयो पर विशेप आयोजन हुए ।

क्षमापना पर्व के उपलक्ष मे जैन सभा के तत्वावधान मे "मैत्री पर्व" का कार्यक्रम । अध्यक्ष—श्री धर्मचद जी सरावगी, भूतपूर्व विधान परिषद् सदस्य । प्रमुख वक्ता— प्रो० कल्याणमल जी लोढा, कलकत्ता विश्वविद्यालय ।

२२ सितम्बर को अमृत-महोत्सव का द्वितीय चरण "जनाभिनदन समारोह" के रूप मे विशाल पैमाने पर मनाया गया । कलकत्ता महानगर की ७१ सस्थाओ के द्वारा आचार्यप्रवर का अभिनदन किया गया । उद्घाटनकर्ता—श्री कमल वसु—मेयर, कलकत्ता नगर निगम । प्रधान अतिथि—श्री अशोक कुमारसेन, विधि मत्री—भारत सरकार । अध्यक्षता—श्रीमती पद्मा खास्तगीर, न्यायाधीश कलकत्ता उच्च न्यायालय । प्रमुख वक्ता—श्री कल्याणमल लोढा, कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एव श्री राजेश खेतान, विधायक पश्चिम बगाल विधान सभा ।

२२ अक्टूबर को महासभा के तत्वावधान मे पच दिवसीय "जीवन-विज्ञान अध्यात्म प्रशिक्षण शिविर" का समायोजन । जिसमे १२५ बालक-बालिकाओ ने भाग लिया । शिविर सचालन कार्य तुलसी अध्यात्म नीडम् के निदेशक श्री धर्मानदजी ने किया । अध्यक्षता श्री मोहनलाल लोढा ने की ।

१४ नवबर को अहिंसा सार्वभौम दिवस का विशिष्ट कार्यक्रम रहा । अध्यक्ष—श्री देवकीनदन पोद्दार, विधायक प० बगाल विधान सभा । प्रमुख-वक्ता—श्री शातिलाल जैन, कौंसिलर कलकत्ता नगर निगम ।

आज के दिन गृहमत्री, श्रममत्री आदि अनेक राजनेताओ, साहित्यकारो पत्रकारो आदि के विशेष सदेश मिले।

१७ नवबर को "अहिसा सार्वभौम दिवस" का द्वितीय चरण उत्साह-पूर्ण वातावरण मे सपन्न हुआ।

अध्यक्ष—श्री सौगतराय, भूतपूव केन्द्रीय मत्री।

प्रमुख वक्ता—श्री अजित सेन गुप्ता, माननीय न्यायमूर्ति, कलकत्ता उच्च न्यायालय। श्री राजेश खेतान—विधायक, प० बगाल विधान सभा।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सतोका

सहयोगिनी—सा० मधु, सा० मानकवर, सा० सयमश्री, सा० जगत् प्रभा, सा० सुलेखा।

चातुर्मास—मोमासर (चूरू, राज०)

यात्रा—स्थिर प्रवास

अणुव्रती—८०, पच सूत्री सकल्प—२०००, व्रत दीक्षा—७५, प्रेक्षा-ध्यान शिविर-१ तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-१, जैन विद्या परीक्षा-३०, पाच थोकडे सीखने वाले—५०

तपस्या साध्वियो मे—१/१०८, २/११, ३/७, ४/१, ५/१ सा० सयमश्री, सा० जगत्प्रभा, सा० सुलेखा ने छह-छह थोकडे कण्ठस्थ किये।

भाई-बहिनो मे—१/२०००, २/८०, ३/७०, ४/१५, ५/१०, ६/५, ७/७, ८/१६, ९/४, १५/१

वर्षीतप—१, दस वर्षीया लडकी सुधा नाहटा ने अठाई की तपस्या की।

साध्वीश्री के सान्निध्य मे अनेकविध कार्यक्रम आयोजित हुए। कई विशिष्ट व्यक्ति साध्वी श्री के सपर्क मे आए, वे हे—पूव नहरमत्री श्री चदनमल वैद, प्रधानाध्यापक श्री गौरीशकर जोशी, विश्व हिंदू परिषद् के अध्यक्ष श्री सूरजमल आर्य आदि। मोमासर जैन सस्कारो की पुष्टि मे उल्लेखनीय है। वहा श्री भोजराज सचेती कुशल सस्कारक है।

अग्रगण्य—साध्वीश्री अजितप्रभा (लावा सरदारगढ)

सहयोगिनी—सा० भत्तु (केलवा), श्री हेमकवर (देवरिया), सा० अजितप्रभा (रामसिंह का गुडा)

चातुर्मास—मायरा (उदयपुर, राज०)

यात्रा—६५० कि०मी०, क्षेत्र-४०

मत्र दीक्षा—१०१, श्रमणोपासक दीक्षा—२०, सम्यक्त्व दीक्षा—१३, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-१, पच सूत्री सकल्प-५३५, प्रेक्षाध्यान शिविर-१, जैन विद्या परीक्षा-५४, प्रतिक्रमण-६ साध्वीश्री भत्तुजी ने तीन माह एकातर किया व एक वेला किया। श्री जीतमल भोगड ने मासखमण किया। श्री भवरलाल मेहता, श्री चुन्नीलाल सोलकी व श्री जसराज जैन ने गुरुदेव की एक माह से भी अधिक उपासना की।

साध्वीश्री के सान्निध्य मे कई स्कूलो व सावजनिक स्थानो मे अणुव्रत कायक्रम हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री कचनकुमारी (उदयपुर)

सहयोगिनी—सा० गुलाबा, सा० श्रद्धाश्री, सा० विजयमाला, सा० प्रज्ञाश्री

चातुर्मास—जसोल (वाडमेर, राज०)

यात्रा—३०० किमी०

वर्गीय अणुव्रती—५१, पच सूत्री मकल्प-२००, सम्यक्त्व दीक्षा—३०० मत्र दीक्षा—१००, व्रत दीक्षा—१००, ६ नये परिवारो ने गुरु धारणा की, भक्तामर—२५, पाच थोकडे सीखने वाले— ३,

साध्वियो मे उप—८७, वेला—२, सा० कचनकुमारी, सा० श्रद्धाश्री सा० विजयमाला, सा० प्रज्ञा श्री ने छह-छह थोकडे कण्ठस्थ किये।

भाई-वहिनो मे उपवास—६०००, वे—३००, अठाई—१६, नव—२, दस—२, आयविल—२५००। श्री सोहनलाल वुरड ने मौन मासखमण किया।

भाई-वहिनो ने धार्मिक ग्रथो की सैकडो गाथाए कठस्थ की।

अग्रगण्य—साध्वीश्री भाग्यवती (श्री डूंगरगढ)

सहयोगिनी—सा० लिखमावती, सा० मजूश्री, सा० शरद्प्रभा

चातुर्मास—भीनासर (वीकानेर, राज०)

यात्रा—१७ कि०मी०, क्षेत्र—४

अणुव्रती—५१, वर्गीय अणुव्रती—१००, पचसूत्री सकल्प—१०५, मत्र-दीक्षा—११, व्रत दीक्षा—१५, शीलव्रत—७, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१, भक्तामर—४, पच्चीस वोल—७

तपस्या—सा० लिखमावती-उप—११, वेला—६, सा० मजूश्री उप—

१९, सा० शरद्प्रभा-उप—२२।

भाई-बहिनो मे—१/६००, २/२०, ३/१२, ४/६, ६/१, ८/६, ६/२ वर्षीतप—९, आयबिल—१०१०, जप—एक करोड ४५ लाख।

साध्वीश्री के सान्निध्य मे अणुव्रत सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि कार्यक्रम समायोजित हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रतनश्री (श्रीडूगरगढ)

सहयोगिनी—सा० सुव्रता, सा० कुलबाला, सा० सुमनप्रभा (श्रीडूगरगढ), सा० मुक्तिप्रभा (फतहगढ)

चातुर्मास—गाधीधाम (कच्छ, गुजरात)

यात्रा—१०४१ क्षेत्र—२६

मत्र दीक्षा—२५, सम्यक्त्व दीक्षा—१०१, जैन धर्म दीक्षा—२, वर्गीय अणुव्रती—१०१, पच सूत्री सकल्प—१०१, व्यसन मुक्ति—१००, जैन विद्या परीक्षा—५०, अणुव्रत परीक्षा—२०, प्रतिक्रमण—११, भक्तामर—५।

कार्यक्रम—साध्वीश्री के सान्निध्य मे मर्यादा-महोत्सव भुज, महावीर जयति मौरवी (सौराष्ट्र) मे आयोजित हुई, जिसमे स्थानकवासी सप्रदाय के मुनिश्री भास्कर, साध्वीश्री जयाबाई, नगरसेठ विक्रम भाई आदि उपस्थित थे।

गाधीधाम मे आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रमो मे नगराध्यक्ष श्री छोटाभाई शाह, विकास अधिकारी श्री रगाडुरै, सत्यनारायण सत्सग मडल के प्रमुख श्री एच० एम० बोरा उपस्थित थे। सबने आचार्यश्री की विविधमुखी प्रवृत्तियो की प्रशसा की।

आठ कोटि स्थानकवासी सघ के आचार्यश्री छोटालालजी महाराज ने साध्वीश्री से मिलने पर कहा—तेरापथ एक सुव्यवस्थित धर्मसघ है। इस सघ के आचार्य तेजस्वी है। इसके साधु-साध्विया अनुशासित एव साहसी है।' मौरवी मे लीमडी सप्रदाय की सुप्रसिद्ध साध्वीश्री जयाबाई स्वामी से साध्वीश्री का मिलना हुआ। जैन क्राति के सम्पादक श्री रसिक भाई दोषी ने उलाहने के अदाज मे कहा—'आपको यहा एक कमरे मे किसने बैठा दिया। विश्व विश्रुत आचार्य तुलसीजी की शिष्याए आई हैं, तो उनका सार्वजनिक कार्यक्रम होना चाहिये, जिससे जैन धर्म का वर्चस्व बढे।' उनके मन मे तेरापथ की उज्ज्वल छवि अकित थी।

तपस्या—सा० रतनश्री—उप० ५, सा० सुव्रता—उप० ९, सा०

मत्र दीक्षा—१०१, श्रमणोपासक दीक्षा—२०, सम्यक्त्व दीक्षा—१३, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-१, पच सूत्री मकल्प-५३५, प्रेक्षाध्यान शिविर-१, जैन विद्या परीक्षा-५४, प्रतिक्रमण-६ साध्वीश्री भत्तुजी ने तीन माह एकातर किया व एक वेला किया। श्री जीतमल भोगड ने मासखमण किया। श्री भवरलाल मेहता, श्री चुन्नीलाल सोलकी व श्री जसराज जैन ने गुरुदेव की एक माह से भी अधिक उपासना की।

साध्वीश्री के सान्निध्य मे कई स्कूलो व सावजनिक स्थानो मे अणुव्रत कार्यक्रम हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री कचनकुमारी (उदयपुर)

सहयोगिनी—सा० गुलावा, सा० श्रद्धाश्री, सा० विजयमाला, सा० प्रज्ञाश्री

चातुर्मास—जसोल (वाडमेर, राज०)

यात्रा—३०० किमी०

वर्गीय अणुव्रती—५१, पच सूत्री मकल्प-२००, सम्यक्त्व दीक्षा—३०० मत्र दीक्षा—१००, व्रत दीक्षा—१००, ६ नये परिवारो ने गुरु धारणा की, भक्तामर—२५, पाच थोकडे सीखने वाले— ३,

साध्वियो मे उप—८७, वेला—२, सा० कचनकुमारी, सा० श्रद्धाश्री सा० विजयमाला, सा० प्रज्ञा श्री ने छह-छह थोकडे कण्ठस्थ किये।

भाई-वहिनो मे उपवास—६०००, वे—३००, अठाई—१६, नव–२, दस—२, आयविल—२५००। श्री सोहनलाल बुरड ने मौन मासखमण किया।

भाई-वहिनो ने धार्मिक ग्रथो की सैकडो गाथाए कठस्थ की।

अग्रगण्य—साध्वीश्री भाग्यवती (श्री डूंगरगढ)

सहयोगिनी—सा० लिखमावती, सा० मजूश्री, सा० शरद्प्रभा

चातुर्मास—भीनासर (बीकानेर, राज०)

यात्रा—१७ कि०मी०, क्षेत्र—४

अणुव्रती—५१, वर्गीय अणुव्रती—१००, पचसूत्री सकल्प—१०५, मत्र-दीक्षा—११, व्रत दीक्षा—१५, शीलव्रत—७, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१, भक्तामर—४, पच्चीस वोल—७

तपस्या—सा० लिखमावती-उप—११, वेला—६, सा० मजूश्री उप—

१६, सा० शरद्प्रभा-उप—२२।

भाई-बहिनो मे—१/१००७, २/२०, ३/१२, ४/१, ६/१, ८/१, ६/२ वर्षीतप—६, आयबिल—१०१०, जप—एक करोड ४५ लाख।

साध्वीश्री के सान्निध्य मे अणुव्रत सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि कार्यक्रम समायोजित हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रतनश्री (श्रीडूगरगढ)

सहयोगिनी—सा० सुव्रता, सा० कुलवाला, सा० सुमनप्रभा (श्रीडूगरगढ), सा० मुक्तिप्रभा (फतहगढ)

चातुर्मास—गाधीधाम (कच्छ, गुजरात)

यात्रा—१०४१ क्षेत्र—२६

मत्र दीक्षा—२५, सम्यक्त्व दीक्षा—१०१, जैन धर्म दीक्षा—२, वर्गीय अणुव्रती—१०१, पच सूत्री सकल्प—१०१, व्यसन मुक्ति—१००, जैन विद्या परीक्षा—५०, अणुव्रत परीक्षा—२०, प्रतिक्रमण—११, भक्तामर—५।

कार्यक्रम—साध्वीश्री के सान्निध्य मे मर्यादा-महोत्सव भुज, महावीर जयति मौरवी (सौराष्ट) मे आयोजित हुई, जिसमे स्थानकवासी सप्रदाय के मुनिश्री भास्कर, साध्वीश्री जयाबाई, नगरसेठ विक्रम भाई आदि उपस्थित थे।

गाधीधाम मे आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रमो मे नगराध्यक्ष श्री छोटाभाई शाह, विकास अधिकारी श्री रगादुरै, सत्यनारायण सत्सग मडल के प्रमुख श्री एच० एम० बोरा उपस्थित थे। सबने आचार्यश्री की विविधमुखी प्रवृत्तियो की प्रशसा की।

आठ कोटि स्थानकवासी सघ के आचार्यश्री छोटालालजी महाराज ने साध्वीश्री से मिलने पर कहा—तेरापथ एक सुव्यवस्थित धर्मसघ है। इस सघ के आचाय तेजस्वी हे। इसके साधु-साध्विया अनुशासित एव साहसी है।' मौरवी मे लीमडी सप्रदाय की सुप्रसिद्ध साध्वीश्री जयाबाई स्वामी से साध्वीश्री का मिलना हुआ। जैन क्राति के सम्पादक श्री रसिक भाई दोषी ने उलाहने के अदाज मे कहा—'आपको यहा एक कमरे मे किसने बैठा दिया। विश्व विश्रुत आचाय तुलसीजी की शिष्याए आई हैं, तो उनका सार्वजनिक कार्यक्रम होना चाहिये, जिससे जैन धर्म का वर्चस्व बढे।' उनके मन मे तेरापथ की उज्ज्वल छवि अकित थी।

तपस्या—सा० रतनश्री—उप० ५, सा० सुव्रता—उप० ६, सा०

मुक्तिश्री—उप० १६

भाई-बहिनो मे—१/११०१, २/६५, ३/३८, ४/१, ५/६, ६/४, ७/१, ८/२५, ९/७, १३/१, १६/१
आयबिल—४००, वर्षीतप—५, एकान्तर—७

आचार्यश्री की समन्वयपरक व मण्डनात्मक नीति से पूरे जैन समाज मे व्यापक प्रभाव पडा है। सौराष्ट्र की राजधानी राजकोट जैसे धार्मिक कट्टरता वाले क्षेत्र मे साध्वीश्री पधारी। तेरापथ के साधु-साध्वियो का १८ वर्षो की प्रलब अवधि के बाद आगमन हुआ। वहा साध्वीश्री से सैकडो-सैकडो लोग मिलते, प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत पर बातचीत करते। राजकोट स्थानकवासी सघ के सघपति श्री जयतीभाई दोषी ने सरदारनगर स्थानक मे साध्वीश्री से प्रवचन करने का निवेदन किया। साध्वीश्री उस स्थान मे गई, तो वहा समागत शानाबाई स्वामी प्रवचन-हॉल मे बैठ गई। साध्वीश्री को देखते ही वह झुझला गई और उठकर जाने लगी। साध्वीश्री ने पाय मे प्रवचन देने की बात कही, पर उन्होने अनसुनी कर दी। उस क्षेत्र के प्रमुख श्री मूलजी भाई ने कहा—आप प्रवचन दे। सात दिन तक साध्वीश्री का उस स्थानक मे प्रवचन हुआ। लोगो ने अच्छा लाभ लिया। २०-२५ घर तेरापथी बने। श्री मगनभाई शाह ने वृद्धावस्था मे साध्वीश्री की अच्छी सेवा की। सुलेखा ने छह थोकडे कण्ठस्थ किये।

अग्रगण्य—साध्वीश्री विजयश्री

सहयोगिनी—सा० जयप्रभा, सा० शशिरेखा, सा० मृदुलाकुमारी, सा० सुधाकुमारी

चातुर्मास—भिवानी (हरियाणा)

यात्रा—४०० कि०मी०, क्षेत्र—५

अणुव्रती—१५, पच सूत्री सकल्प—१०००, मत्र दीक्षा—४५, सम्यक्त्व दीक्षा—१५, जैन-विद्या परीक्षा—५०

कार्यक्रम—सनातन धर्म हाई स्कूल, भिवानी के प्रागण मे करीब ४ हजार की उपस्थिति मे जैन समाज की ओर से एक कार्यक्रम रखा गया, जिसमे साध्वीश्री का भाषण हुआ। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि कार्यक्रम भी समायोजित हुए। फतहपुर मे विषयबद्ध प्रवचनमाला व रतनगढ मे दो बार कवि सम्मेलन हुआ।

साध्वीश्री के सपर्क मे आने वाले विशिष्ट व्यक्ति है—वैश्य ट्रस्ट,

भिवानी के ट्रस्टी डा० वी० डी० गिरिधर, ब्रह्मचर्य संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्यश्री कृष्णचन्द्र पंत, वैश्य हायर सैकेण्डरी स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री एस० एन० महता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता श्री भूषण मलिक आदि।

अग्रगण्य—साध्वीश्री हुलासा (गंगाशहर)

सहयोगिनी—सा० केशर (पडिहारा), सा० शीलवती (लाडनूं), सा० ऋजुप्रज्ञा (वाव), सा० मंगलमाला

चातुर्मास—भगवतगढ (सवाई माधोपुर, राज०)

यात्रा—९०० कि० मी० क्षेत्र—३३

मंत्र दीक्षा—२८, सम्यक्त्व दीक्षा—२००, श्रमणोपासक दीक्षा—२१, प्रेक्षाध्यान शिविर—२, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१, पचीस बोल—१७, प्रतिक्रमण—५, तत्त्वचर्चा व तेरह द्वार—६, चौबीसी व आराधना—१, जैन-विद्या परीक्षा—५८, पांच थोकडा सीखने वाले—६

तपस्या—साध्वियों मे—सा० हुलासा उप०—६५, बे०—१, ते०—१, विगय वर्जन का प्रयोग, मौन—५ घंटा

सा० केशर उप०—२३, बे०—१, एकांतर—१ माह

सा० शीलवती उप०—४३, बे०—३, आयंबिल—७, एकांतर—२ माह

सा० ऋजुप्रज्ञा उप०—२५, उन्होंने छह थोकडे कण्ठस्थ किये।

सा० मंगलमाला उप०—२१, आयंबिल—७, एकांतर—१ माह

भाई-बहिनों मे—$\frac{१}{११०३}$, $\frac{२}{१७}$, $\frac{३}{५३}$, $\frac{४}{३}$, $\frac{५}{५}$, $\frac{८}{१}$ एकांतर—५, वर्षीतप—९, श्री मिश्रीलाल जैन पिछले १२ वर्षों से वर्षीतप कर रहे, पिछले वर्ष उनका निधन हो गया।

जप—७ करोड ८९ लाख २४ हजार, आयंबिल कुल—५५६७

अमृत-महोत्सव के संदर्भ मे लोगों ने विविध संकल्प ग्रहण किये। अणुव्रत से संबंधित कई कार्यक्रम हुए। भगवतगढ से श्री मिश्रीलाल मास्टर ने सपत्नी एक माह से ऊपर आचार्यवर की उपासना की।

संस्मरण—साध्वीश्री सन् १९८५ २१ अप्रैल को जयपुर-भगवतगढ मध्य अहीरों के टापरे गांव पधारी। जिस मकान मे साध्वीश्री ठहरी, उस मकान के मालिक श्री रामनारायण का तीन वर्षीय पौत्र अकस्मात् बेहोश हो गया। नब्ज पकड मे नहीं आ रही थी। सभी परिकरों की आंखों से आंसू बरसने लगे। उस भयंकर गर्मी के मौसम मे उसे किसी भी अस्पताल मे भर्ती

मुक्तिश्री—उप० १६

भाई-वहिनो मे—१/११०१, २/६५, ३/३८, ४/१, ५/६, ६/४, ७/१, ८/५, ९/७, १३/१, १६/१
आयविल—४००, वर्पीतप—५, एकान्तर—७

आचायश्री की समन्वयपरक व मण्डनात्मक नीति से पूरे जैन समाज मे व्यापक प्रभाव पडा है। सौराष्ट्र की राजधानी राजकोट जैसे धार्मिक कट्टरता वाले क्षेत्र मे साध्वीश्री पधारी। तेरापथ के साधु-साध्वियो का १८ वर्षो की प्रलब अवधि के वाद आगमन हुआ। वहा साध्वीश्री से सैकडो-सैकडो लोग मिलते, प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत पर वातचीत करते। राजकोट स्थानकवासी सघ के सघपति श्री जयतीभाई दोपी ने सरदारनगर स्थानक मे साध्वीश्री से प्रवचन करने का निवेदन किया। साध्वीश्री उस स्थान मे गई, तो वहा समागत शाताबाई स्वामी प्रवचन-हॉल मे वैठ गई। साध्वीश्री को देखते ही वह झुझला गई और उठकर जाने लगी। साध्वीश्री ने पाथ मे प्रवचन देने की बात कही, पर उन्होने अनसुनी कर दी। उस क्षेत्र के प्रमुख श्री मूलजी भाई ने कहा—आप प्रवचन दे। सात दिन तक साध्वीश्री का उस स्थानक मे प्रवचन हुआ। लोगो ने अच्छा लाभ लिया। २०-२५ घर तेरापथी बने। श्री मगनभाई शाह ने वृद्धावस्था मे साध्वीश्री की अच्छी सेवा की। सुलेखा ने छह थोकडे कण्ठस्थ किये।

अग्रगण्य—साध्वीश्री विजयश्री

सहयोगिनी—सा० जयप्रभा, सा० शशिरेखा, सा० मृदुलाकुमारी, सा० सुधाकुमारी

चातुर्मास—भिवानी (हरियाणा)

यात्रा—४०० कि०मी०, क्षेत्र—५

अणुव्रती—१५, पच सूत्री सकल्प—१०००, मत्र दीक्षा—४५, सम्यक्त्व दीक्षा—१५, जैन-विद्या परीक्षा—५०

कायक्रम—सनातन धर्म हाई स्कूल, भिवानी के प्रागण मे करीब ४ हजार की उपस्थिति मे जैन समाज की ओर से एक कायक्रम रखा गया, जिसमे साध्वीश्री का भापण हुआ। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव आदि कार्यक्रम भी समायोजित हुए। फतहपुर मे विपयवद्ध प्रवचनमाला व रतनगढ मे दो वार कवि सम्मेलन हुआ।

साध्वीश्री के सपक मे आने वाले विशिष्ट व्यक्ति है—वैश्य ट्रस्ट,

भिवानी के ट्रस्टी डा० वी० डी० गिरिधर, ब्रह्मचर्य सस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्यश्री कृष्णचद्र पत, वैश्य हायर सैकेण्डरी स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री एस० एन० महता राष्टीय स्वयसेवक सघ के कार्यकर्ता श्री भूपण मलिक आदि।

अग्रगण्य—साध्वीश्री हुलासा (गगाशहर)

सहयोगिनी—सा० केशर (पडिहारा), सा० शीलवती (लाडनू), सा० ऋजुप्रज्ञा (बाव), सा० मगलमाला

चातुर्मास—भगवतगढ (सवाई माधोपुर, राज०)

यात्रा—९०० कि० मी० क्षेत्र—३३

मत्र दीक्षा—२८, सम्यक्त्व दीक्षा—२००, श्रमणोपासक दीक्षा—२१, प्रेक्षाध्यान शिविर—२, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१, पचीस बोल—१७, प्रतिक्रमण—५, तत्त्वचर्चा व तेरह द्वार—६, चौबीसी व आराधना—१, जैन-विद्या परीक्षा—५८, पाच थोकडा सीखने वाले—६

तपस्या—साध्वियो मे—सा० हुलासा उप०—६५, वे०—१, ते०—१, विगय वजन का प्रयोग, मौन—५ घटा

सा० केशर उप०—२३, वे०—१, एकातर—१ माह

सा० शीलवती उप०—४३, वे०—३, आयविल—७, एकातर—२ माह

सा० ऋजुप्रज्ञा उप०—२५, उन्होने छह थोकडे कण्ठस्थ किये।

सा० मगलमाला उप०—२१, आयविल—७, एकातर—१ माह

भाई-बहिनो मे—११०२^{1}, १७^{2}, ५३^{3}, ३^{4}, ५^{5}, १^{8} एकातर—५, वर्षीतप—९, श्री मिश्रीलाल जैन पिछले १२ वर्षो से वर्षीतप कर रहे, पिछले वर्ष उनका निधन हो गया।

जप—७ करोड ८९ लाख २४ हजार, आयविल कुल—५५६७

अमृत-महोत्सव के सदर्भ मे लोगो ने विविध सकल्प ग्रहण किये। अणुव्रत से सबधित कई कार्यक्रम हुए। भगवतगढ से श्री मिश्रीलाल मास्टर ने सपत्नी एक माह से ऊपर आचार्यवर की उपासना की।

सस्मरण—साध्वीश्री सन् १९८५ २१ अप्रैल को जयपुर-भगवतगढ मध्य अहीरो के टापरे गाव पधारी। जिस मकान मे साध्वीश्री ठहरी, उस मकान के मालिक श्री रामनारायण का तीन वर्षीय पौत्र अकस्मात् बेहोश हो गया। नब्ज पकड मे नही आ रहीथी। सभी परिकरो की आखो से आसू बरसने लगे। उस भयकर गर्मी के मौसम मे उसे किसी भी अस्पताल मे भर्ती

कराने के लिए कम से कम ८ कि०मी० दूरी तथा वाहन के रूप मे साइकिल ही उपलब्ध थी। उस विपम स्थिति मे साध्वीश्री ने मगलपाठ सुनाया। 'विघ्न हरण' गीतिका करीब आधा घटे सुनाई। इस बीच वच्चे ने आखे खोल ली और वह ठीक हो गया। उस बच्चे के माता-पिता एव पूरे परिवार के लोगो ने इसके पीछे साध्वीश्री का उपकार माना। दूसरे दिन अति आग्रहपूर्वक भिक्षा दी और बहुत दूर तक पहुचाने गये।

अग्रगण्य—साध्वीश्री कमलाकुमारी (उज्जैन)

सहयोगिनी—सा० इन्द्राकुमारी (चारभुजा), सा० सतोपकुमारी (हासी), सा० रतनकुमारी (सरदारशहर), सा० कुसुमश्री (सुजानगढ), सा० राजप्रभा (फारविसगज)

चातुर्मास—फतहपुर (सीकर, राज०)

यात्रा—२०८ कि०मी०, क्षेत्र—५

अणुव्रती—१०१, वर्गीय अणुव्रती—५१, पच सूत्री सकल्प—३००, मत्र दीक्षा—५१, व्रत दीक्षा—२१, जैन विद्या परीक्षा—३७, पत्राचार पाठमाला—१५, प्रतिक्रमण—१८

साध्वियो मे तपस्या—उप०—६, वेला—४, चोला—२१ साध्वियो मे पृथक्-पृथक् मत्रो का १३ लाख का जप हुआ। साध्वियो मे २ हजारो पृष्ठ प्रमाण आगम व सघीय साहित्य का वाचन हुआ। हजारो गाथाओ का स्वाध्याय हुआ। ध्यान व जप का भी उत्कृष्ट क्रम चला। साध्वीश्री राजप्रभा ने महाबल मलयासुदरी पर २५० पृष्ठ प्रमाण एक गेय काव्य लिखा है तथा अग्रेजी भापा का एक काव्य 'एम्वोसियस ओसन' लिखा, जिसमे १०५ पद्य है।

भाई-वहिनो मे तपस्या—उप०—३११, वे०—६१, ते०—३, चो०—५, प०—३, सात—१, अठाई—३, नौ—१, दस—१, आयविल—११६, एकातर—१६। भाई-वहिनो मे जप के कई अनुष्ठान चले।

कार्यक्रम—सीकर के जिलाधीश श्री सुधीन्द्र गोमावत ने साध्वीश्री के सान्निध्य मे ज्ञानशाला का उद्‌घाटन किया। पुलिस उपअधीक्षक श्री नारायणसिंह राठौड ने साध्वीश्री से भेट की। झूझनू के सासद परमवीर चक्र विजेता श्री अय्यूव खा, विधानसभा के उपसचेतक श्री अश्क अली टाक ने साध्वीश्री से अणुव्रत पर वातचीत की। प्रमाण-पत्र वितरण समारोह मे एस० डी० एम० श्री भवरलाल वर्मा उपस्थित थे।

१८ अगस्त को 'देश की समस्याए व पचसूत्री कायक्रम' परिचर्चा मे राजस्थान के स्वास्थ्य मत्री श्री रामदेवसिंह महरिया विशेष रूप से उपस्थित थे। साध्वीश्री के सान्निध्य मे अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह, अमृत-महोत्सव तथा अन्य प्रभावी कार्यक्रम हुए।

साध्वीश्री के अनथक प्रयत्नो से दो घरो मे घरेलू कारणो से आत्म-हत्या करने वाली दो महिलाओ को आत्महत्या का परित्याग करा दिया। कालातर से उनके घरो मे शाति भी हो गई।

अग्रगण्य—साध्वीश्री फूलकुमारी (लाडनू)

सहयोगिनी—सा० सुमनकुमारी, सा० गुप्तिप्रभा, सा० मगलप्रभा, सा० शीतलप्रभा

चातुर्मास—सूरत (गुजरात)

यात्रा—२२२६ कि०मी०, क्षेत्र-४५

मत्र दीक्षा—११०, सम्यक्त्व दीक्षा—१२५, जैन धर्म दीक्षा—२५, व्रत दीक्षा—६२, शीलव्रत—३, मद्य-त्याग—६७, पच सूत्री सकल्प—५००, प्रतिक्रमण—१३, पच्चीस बोल—३८, श्रमणोपासक दीक्षा—११, अणुव्रती—२०१, पचसूत्री सकल्प—६०००, शीलव्रत—३१, पत्राचार पाठमाला—२३, अणुव्रत परीक्षा—१३, भक्तामर—२

साध्वियो मे तपस्या—

सा० फूलकुमारी—उप०-३१, ४ थोकडे सीखे

सा० सुमनकुमारी—उप०—७५, बे०—१, ते०—२, चो०—१, ३ थोकडे सीखे

सा० गुप्तिप्रभा—उप०—३१, बे०—१, ६ थोकडे सीखे।

सा० मगलप्रभा—उप०-३८, बे०—१, ५ थोकडे सीखे

सा० शीतलप्रभा—उप०—२२, बे०—२६, ते०—१, चो०—१, १ माह आयबिल तेले

भाई-बहिनो मे—२/५५, ३/५५, ४-७/३१, ८/७, ३/४, १०/१, ११/१, १५/१

बारी उपवास—२७, अभीराशिको नम का जप—१२ करोड ८ लाख, ५१,००० पृष्ठो का वाचन ५१ व्यक्तियो मे।

कार्यक्रम—जीवन-विज्ञान के प्रचाराथ ७ स्कूलो व कॉलेज के विद्यार्थियो व शिक्षको के बीच साध्वीश्री का प्रवचन हुआ। साध्वीश्री के सान्निध्य

मे प्रेक्षाध्यान की नियमित कक्षा लगती । प्रेक्षाध्यान के अनेक शिविर भी लगे । साध्वीश्री से मिलने के लिए कई विशिष्ट महानुभाव आये उनमे अम्वाजी के दिगम्बर जैन श्री रतनलाल है । वे प्रेक्षाध्यान शिविर मे भाग लेने के वाद निरतर अभ्यास करते हैं ।

सूरत के सनातन धर्म के प्रमुख कार्यकर्ता श्री पोपावाला ने आचायश्री तुलसी के युग को स्वर्णिम युग वताया । गुजरात के पूर्व शिक्षामत्री श्री चोखावाला, इन्जीनियर श्री भारतभूपण, सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री महेश भाई तथा डॉक्टरो, प्रोफेसरो, अध्यापको, इजीनियरो, पत्रकारो आदि ने साध्वीश्री से भेट की तथा विविध विपयो पर वातचीत की । मूरत कारागृह मे कैदियो के वीच साध्वीश्री ने प्रवचन दिया । सस्कार केन्द्र का शुभारभ हुआ ।

समाचार-प्रकाशन—समय-समय पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमो की कई पत्रो मे खवरे प्रकाशित हुई । अमृत-महोत्सव के सदभ मे आचाय श्री के व्यक्तित्व व कर्तृत्व से सवधित अनेक लेख प्रकाशित हुए । मुस्य पत्रो के नाम इस प्रकार है—गुजरात मित्र, गुजरात समाचार, प्रताप आदि ।

सस्मरण—अनुप्रेक्षा . एक चमत्कार

१६ वर्ष पूर्व साध्वीश्री गुप्तिप्रभा को वमन की शिकायत थी । जानबूझकर किसी के सामने उन्होने वात प्रकट नही की । अपितु सोचा अच्छा है खाना खाती रहूगी, तो काम चलेगा और वमन से मोटापा नही होगा । वेकार-वेकार सव निकल जाता है । व्यक्त करने से दीक्षा मे वाधा आयेगी एव दवाओ का आश्रय लेना पडेगा । उसी छोटी-सी वीमारी का उग्र रूप सामने आया—उन्हे दिन मे १५-२०, ऊपर मे २७ वार तक वमन हो गई । आहार की तो वात दूर रही पानी भी सम्यक् प्रकार से पच नही सकता । स्थिति चितनीय थी, शरीर पर उसका गहरा प्रभाव पडा—आयुर्वेदिक, होमियापैथिक एव एलोपैथिक दवाइया लेते-लेते तग हो गई तात्कालिक लाभ होता है और फिर वही स्थिति वन जाती है । आखिर उन्होने किसी अदृश्य प्रेरणा से स्वय के मनोवल को टटोला एव कृत सकल्प वन गई कि मुझे इस वीमारी को अपनी शक्ति से समाप्त करना है । सोचा मेरे वमन का कारण है—पित्त की प्रवलता और स्वस्थता का चिह्न है वात पित्त कफ की समानता । अत "समदोष समाग्निश्च" इस सूत्र के सामने देखती हुई यकृत पर हाथ रख अनुप्रेक्षा करू । लगभग ३ महिने तक रात्रि ११ वजे के वाद सोये-सोये दो-एक घटा प्रयोग

नियमित चला—मानसिक चितन एव भावो की दृढता ने आत्म विश्वास के फलक पर साकार रूप ले लिया। परिणामत २५ अप्रैल १९८५ से आज तक वमन नही हुई। वह सकल्प वर्तमान मे भी चल रहा है।

सूरत मे साध्वीश्री सान्निध्य मे तथा श्री जेठाभाई व नगीनभाई के निर्देशन मे एक प्रेक्षाध्यान शिविर लगा, जिसमे आचायश्री, युवाचार्य श्री, साध्वी प्रमुखाश्री के महत्त्वपूर्ण सदेश मिले।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रतनकुमारी (सरदारशहर)

सहयोगिनी—सा० कानकुमारी, सा० रतनकुमारी, सा० प्रशमरती सा० प्रेक्षा श्री

चातुर्मास—नोहर (गगानगर, राजस्थान)

यात्रा—६०० कि०मी० क्षेत्र—५२२

व्रत दीक्षा—१५, सम्यक्त्व दीक्षा—१२१, दहेज त्याग—५१, पचसूत्री ५२५, प्रेक्षाध्यान शिविर—१ (नोहर मे), तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-२ जैन-विद्या परीक्षा—४७, अणुव्रत परीक्षा—२१, थोकडा—३१, चौबीसी व आराधना—१, भक्तामर—२

साध्वियो मे—उपवास—५५, आयबिल—२१, बे०—१, ते०—२, अठाई—६, मौन—२ घटा, जप—१३० घ०, ध्यान—१ घ०। साध्वियो ने विभिन्न ग्रन्थो की २२०० गाथा कण्ठस्थ की। आगम-साहित्य के २५०० व आगमेतर-साहित्य के ७०० पृष्ठ पढे गये। साध्वियो मे ओम् भिक्षु का १२ लाख, शक्ति जागरण अनुष्ठान का सवा लाख व ओम् अभीराशिको नम का ९ लाख जप हुआ।

भाई-बहिनो मे—१/१७००, २/२५, ३/९, ४/२, ७/३, ८/२, ९/१, १०/१, वर्षीतप—१, एकातर—२, ओम् अभीराशिको नम का जप—१ करोड, ९१ लाख, आयबिल—९७५३, २१ लोगो ने १ हजार पृष्ठ साहित्य-वाचन का सकल्प लिया।

भादरा मे साध्वीश्री के सान्निध्य मे महावीर जयति का कार्यक्रम मनाया गया। स्कूलो मे अणुव्रत-कार्यक्रम हुए। पजाब केसरी, नवभारत टाईम्स, जैन समाज, दैनिक नवज्योति, प्रताप केसरी, सीमा किरण आदि पत्रो मे विभिन्न कायक्रमो के समाचार प्रकाशित हुए।

अग्रगण्य—साध्वी कमलश्री

सहयोगिनी—सा० पानकुमारी (लाडनू), सा० झमकू (सरदारशहर),

सा० जिनरेखा (गगाशहर), सा० इलाकुमारी (गगाशहर)

चातुर्मास—शाही बाग, अहमदाबाद (गुजरात)

यात्रा— १५०० कि० मी०, क्षेत्र—७

वर्गीय अणुव्रती—७५, पच सूत्री सकल्प—३०००, मत्र दीक्षा—५०, सम्यक्त्व दीक्षा—१५, व्रत दीक्षा—६०, प्रेक्षाध्यान शिविर—२, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—२, थोकडा—११, भक्तामर—२५,

तपस्या—सा० कमल श्री—उप०—३०, वे०—१, आयविल—१६

सा० पानकुमारी— उप०—३५, दे०—१, आयविल—५

सा० झमकू—उप०—४५, वे०—१, ते०—१, आयविल—५१

सा० जिनरेखा—उप०—५, आयविल—२

सा० इलाकुमारी—उप०—५५, वे०—१, चो०—१, आयविल—१७

भाई-वहिनो मे—२/८०, ३/४००, ४/६०, ५/२५, ६/६, ७/११, ८/६०, ९/१८, १०/१५, ११/१०, १५/२, १७/१, ३१/५ ३७/१, ५५/१ श्रीमती प्रेमलता ने ५५ व श्रीमती पुष्पा कोठारी ने ३७ की तपस्या की।

कार्यक्रम—अहमदाबाद मार्ग मे भागली प्याऊ मे मूर्तिपूजक मुनि कमल विजय जी व लेखेन्द्र विजयजी आदि ९ सत तथा साध्वी महेन्द्रश्री जी के साथ दो दिन कार्यक्रम चला। वे साध्वीश्री से वडे ही आत्मीय भाव से मिले। वे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री से पूर्व मे मिले हुए है। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री व तेरापथ की विशेपताओ से वे काफी प्रभावित हे। रानीवाडा मे महावीर जयति व पालनपुर मे अक्षय तृतीया के कार्यक्रम आयोजित हुए।

अणुव्रत उद्वोधन सप्ताह के अतर्गत गुजरात विद्यापीठ मे एक विशेप कार्यक्रम रखा गया। शाहीवाग तेरापथ भवन मे व्रह्मकुमारियो का दशावदी महोत्सव मे निरन्तर दस दिनो तक साध्वीश्री का प्रवचन हुआ। उन पर जैन-दर्शन का अच्छा प्रभाव पडा।

गुजरात के प्राय सभी पत्रो मे अमृत-महोत्सव के उपलक्ष मे लेख छपे। धानेरा मे दो परिवारो के बीच कई वर्षो से भारी मन-मुटाव चल रहा था। साध्वीश्री के प्रयासो से उन्होने परस्पर खमतखामना किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री मनसुखा

सहयोगिनी—सा० गणेशा (लाडनू), सा० सिरेकुमारी (चूरू), सा० विवेक श्री (फतेहगढ), सा० विद्युत्प्रभा (मोमासर)

चातुर्मास—आडसर (चूरू, राजस्थान)

यात्रा—स्थिर प्रवास

अणुव्रती—५१, पचसूत्री, मकल्प—१०१, मत्र दीक्षा—२१, सम्यक्त्व दीक्षा—२५, व्रत दीक्षा—११, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१ (५ दिनो का) कुल गाथाओ का कठीकरण—५०००

तपस्या—सा० गणेशा—उप०—३९, वे—१, ते—१

सा० सिरेकुमारी—उप०—४६, वे—१, ते०—१, सा० विवेकश्री—उप०—३१, सा० विद्युतप्रभा—उप०—३२

भाई-बहिनो मे—वे०—११, ते०—५, चो०—१, पाच—१, अठाई—१, नौ—१, तेरह—१

जसोल से प्रदत्त आचार्यश्री का सदेश—

४-२-८५

साध्वी मनसुखा जी !

सुख पृच्छा, तुम छोटे गाव आडसर मे खूब समाधि से रह रही हो। प्रसन्नता से अपनी सयम चर्या चला रही हो, यह विशेप बात है। सभी साध्विया चित समाधि-पूर्वक रहना। क्षेत्र को अच्छे ढग से सभालना,

शेपम् कुशलम्

साध्वी प्रमुखाश्री ने अपने सदेश मे साध्वीश्री मनसुखाजी के समर्पण भाव, सहजता व सहिष्णुता को उल्लेखनीय बताया तथा उन्होने अन्य सहवर्ती साध्वियो मे नया प्रतिक्रमण सार्थ सीखने का इगित किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सुबोध कुमारी (बीदासर)

सहयोगिनी—सा० सुन्दर, सा० केसर, सा० कचनकवर, सा० सुदशना श्री

चातुर्मास—देवगढ (उदयपुर, राजस्थान)

यात्रा—१००० कि०मी०, क्षेत्र—१५

अणुव्रती—५००, वर्गीय अणुव्रती—८००, पचसूत्री सकल्प—१५००, मत्र दीक्षा—२००, सम्यक्त्व दीक्षा—२००, व्रत दीक्षा—१४, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३, जैन-विद्या परीक्षा—१०१, पत्राचार पाठमाला—७, प्रतिक्रमण—५१, थोकडा—५, भक्तामर—५, चौबीसी व आराधना—१

साध्वीश्री सुवोध—कण्ठस्थ—१००० गाथा, वाचन—३०० पृष्ठ, मौन—३ घटा, जप—१ घटा

सा० सुदर—वाचन—१५०० पृ०, मौन—५ घ०, जप—१ घ०

सा० केसर—वाचन—३१०० पृ०, मौन—५ महीने निरतर, जप—१-१ घ०

सा० कचनकवर—वाचन—३१०० पृ०, मौन—५ महीने निरतर, जप—१ घ०

सा० सुदर्शना श्री—कण्ठस्थ—५०० गाथा, वाचन—२०० पृ०, मौन—२ घटा, जप—१ घटा मवा लाख नवकार—जप का विशेप अनुष्ठान

साध्वियो मे उप०—२००, तें०—३१, छह—३

भाई-वहिनो मे—$\frac{१}{२०००}$, $\frac{२}{५१}$, $\frac{३}{२५०}$, $\frac{४}{१३}$, $\frac{५}{१४}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{२५}$, $\frac{९}{५}$, $\frac{११}{२}$, $\frac{१३}{१}$, $\frac{१५}{१}$, $\frac{१६}{१}$, $\frac{३०}{३}$

साध्वीश्री के सान्निध्य मे शिविर आयोजित हुआ। देवगढमे आयोजित श्रावक सम्मेलन मे राव साहब श्री नाहरसिंह, सर्वोदय नेता मनोहरसिंह मेहता, विकास अधिकारी मीठुसिह आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियो ने भाग लिया। चातुर्मास मे सामान्य-ज्ञान प्रतियोगिता हुई, जिसमे ६६ भाई-वहिनो ने सोत्साह भाग लिया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री झमकू (राजलदेसर)

सहयोगिनी—सा० चादकवर (जोधपुर), सा० मूला (सुजानगढ), सा० मदनकवर (उज्जैन)

चातुर्मास—देशनोक (बीकानेर, राजस्थान)

यात्रा—स्थिर प्रवास

अणुव्रती—११, वर्गीय अणुव्रती—२४, पचसूत्री सकल्प—४, मत्र दीक्षा—२५, वारह व्रत—२४, प्रेक्षाध्यान शिविर—१, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१, थोकडा सीखने वाले—७, श्रमणोपासक दीक्षा—१

तपस्या—सा० झमकू—उप०—१२, सा० चादकवर—उप०—२१, सा० मूला—उप०—९, सा० मदनकवर—२५, वे०—४

भाई-वहिनो मे—$\frac{१}{५३१}$, $\frac{२}{२५}$, $\frac{३}{१५}$, $\frac{४}{२}$, $\frac{५}{३}$, $\frac{८}{६}$, $\frac{११}{१}$, $\frac{१५}{५}$, एकातर—११, वारी उपवास—२, वर्षी तप—२

काफी भाई-वहिनो ने अमृत-महोत्सव के सदर्भ मे उपवास, आयबिल, नवकारसी, पोरसी, माला फेरने आदि के नियम ग्रहण किए। नव वर्षीय लडकी मजू छाजेड ने अठाई तप किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री पानकुमारी 'प्रथम' (श्रीडूगरगढ)

सहयोगिनी—सा० राजकुमारी, सा० अनोपकुमारी, सा० ऋजु श्री, सा० परमयशा

चातुर्मास—सुनाम (पजाव)

यात्रा—६०० कि०मी०, क्षेत्र-३१

अणुव्रती—३१, पचसूत्री सकल्प—२२७, सम्यक्त्व दीक्षा—२०१, प्रेक्षाध्यान शिविर—२ (जाखल व सुनाम), तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३ (जाखल, सुनाम, लोगोवाल), प्रतिक्रमण—७

साध्वियो मे—उप०—११५, बे—१, ते०—१, आयविल—१०१

भाई-वहिनो मे १०१ सामूहिक आयविल हुए।

कायक्रम—जाखल हायर सेकेण्ड्री स्कूल मे साध्वीश्री का प्रवचन हुआ। इन्दिरा वस्ती मे अणुव्रत बाल भारती व मॉडल वेसिक स्कूल मे अणुव्रत कार्यक्रम हुआ। वहा तीन नये घर तेरापथी बने। लोगोवाल गाव मे साध्वीश्री की प्रेरणा से ५ घर नये तेरापथी वने। कई व्यक्तियो ने व्यसन मुक्त जीवन जीने का सकल्प लिया। अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह मे अनेक परिसवाद व सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। स्थान-स्थान पर प्रतिष्ठित लोगो ने साध्वीश्री से सपर्क किया।

साध्वीश्री परमयशा के ससार पक्षीय बावा श्री चपालाल गोलछा साध्वियो की मार्ग की सेवा कर रहे थे। उनकी धर्मपत्नी अकस्मात् जीप से गिरने से गहरी चोट लगी। वचने की कोई आशा नही थी। खून से लथपथ श्रीमती गोलछा वेहोश हो गई थी। उसी समय साध्वीश्री ने नवकार महामत्र, विघ्न हरण गीत सुनाया। उस विषम अवस्था मे श्री चपालाल के मुख से एक ही बात थिरकती रही कि देव, गुरु, धम के प्रताप से सव ठीक ही होगा। श्रीमती गोलछा को चूरू अस्पताल मे दाखिल कराया गया। वहा इलाज होने के वाद वह पूण स्वस्थ वन गई।

अग्रगण्य—साध्वीश्री आशाकुमारी

सहयोगिनी—सा० मानकुमारी, सा० लिछमा, सा० कलाश्री, सा० कल्याणमित्रा

चातुर्मास—नरवाना (हरियाणा)

यात्रा—१४६ कि०मी०, क्षेत्र—१०

पचसूत्री सकल्प—२१, मत्र दीक्षा—६०, सम्यक्त्व दीक्षा—१०

तपस्या—सा० आशा—उप०—३५, बे०—३, ते०—१, सा० मान कुमारी—उप०—३०, सा० लिछमा—उप०—८१, बे०—१, सा० कल्याण-मित्रा—२८। सा० आशा ने पाच, सा० मान व सा० कला श्री ने छह तथा सा० लिछमा व सा० कल्याणमित्रा ने पाच थोकडे कठस्थ किए।

भाई-बहिनो मे—उप०—४००, बे०—१३, ते०—२, चो०—४, प०—१, अठाई—१, आयबिल—१८००

माघ महीने मे साध्वीश्री जींद विराज रही थी। साय अर्हत् वदना के पश्चात् वहा के प्रमुख श्रावक श्री किशोरीलाल जैन अचानक बेहोश हो गये। उस समय साध्वीश्री कलाश्री ने स्वामीजी का, ओम् अभीराशिको नम का मत्र जोर-जोर से सुनाया। पौण घटे के बाद बिना किसी दवा के वे होश मे आ गए और क्रमश स्वस्थ हो गए। इस घटना ने श्री किशोरीलाल को स्वामीजी के प्रति प्रगाढ श्रद्धाशील बना दिया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री पानकुमारी (सरदारशहर)

सहयोगिनी—सा० छगना, सा० लक्ष्मीवती, सा० कुशलश्री, सा० ललितकला

चातुर्मास—आसाढा (बाडमेर, राजस्थान)

यात्रा—२६ कि० मी०, क्षेत्र—३

वर्गीय अणुव्रती—१२३, पच सूत्री सकल्प—५४, मत्र दीक्षा—३५ शिविर—२, कालू तत्त्वशतक—५, भक्तामर—५, पचसूत्रम्—२, थोकडा—६, प्रतिक्रमण—५, जैन विद्या परिक्षा—५५, श्रमणोपासक-दीक्षा—१५, व्रत दीक्षा—१०

साध्वियो मे—उप० १८३, बे०—६, प०—१, नौ—२, ओम् अभी-राशिको नम का जप—३४ लाख, वाचन—५००० पृ०। सा० पानकुमारी ने २००, सा० कुशल श्री ने २३०० व ललितकला ने १५०० गाथा कण्ठस्थ की तथा छह-छह थोकडे सीखे। साध्वीश्री पानकुमारी ने ५१ दिन की विशेष साधना मे प्रतिदिन २२ घ० मौन, २ घ० ध्यान, १ घ० जप, २ घ० स्वाध्याय व १५ द्रव्य से ज्यादा खाने का सकल्प किया।

भाई-बहनो मे—$\frac{१}{१५००}$ $\frac{२}{६०}$ $\frac{३}{४०}$ $\frac{४}{२०}$ $\frac{५}{२१}$ $\frac{६}{१}$ $\frac{८}{१७}$ $\frac{९}{२}$ $\frac{२६}{१}$ वर्षीतप—२ एकान्तर—१४, आयबिल की बारी—१० अनेको ने रात्रिभोजन, सचित्त आदि का त्याग किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री गुलाबकवर (भादरा)

सहयोगिनी—सा० भत्तु, सा० ज्योतिप्रभा, सा० धर्मप्रभा, सा० सयमलता

चातुर्मास—भादरा (गगानगर, राजस्थान)

यात्रा—८०० कि० मी०, क्षेत्र—१६

मत्र दीक्षा—२५, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, पच सूत्री सकल्प—१३००

तपस्या—सा० गुलाव—उप० ६५ बे०—१ ते० २ सा० भत्तु—उप० ५०, बे०—१

सा० ज्योतिप्रभा—उप०—५५, बे०—१, छह—१, अठाई, सा० धर्मप्रभा उप०—५०

सा० सयमलता-उप० ४५

साध्वी श्री के सान्निध्य मे स्कूलो मे कई सार्वजनिक कार्यक्रम हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री धनकुमारी (सरदारशहर)

सहयोगिनी—सा० कमलू, सा० ज्योतिश्री, सा० कुथु श्री, सा० भावना-श्री

चातुर्मास—हासी (हरियाणा)

यात्रा—१२११ कि० मी०, क्षेत्र—५५

मत्र दीक्षा—१६, व्रत दीक्षा—१४, श्रमणोपासक दीक्षा—३, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३ (तोषाम, ऊमरा सिसाय), प्रेक्षाध्यान शिविर—१ (हासी)

तपस्या—सा० धनकुमारी-उप०—३०, चो—१, सा० कमलू-उप०—२० नौ—१, सा० ज्योतिश्री—उप० ४१, सा० कुथु श्री—२०, सा० भावना श्री-उप०—२६

साध्वी श्री का लोगोवाल स्कूल मे प्रवचन हुआ। तोषाम मे महावीर जयति मनाई गई। हासी मे चार महीने चातुर्मास मे निरन्तर ज्ञानशाला चली।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रायकुमारी (रतनगढ)

सहयोगिनी—सा० रतनकुमारी (चूरू), सा० रविप्रभा (लाडनू) सा० पूर्णिमा श्री (सरदारशहर)

चातुर्मास—पाली (राजस्थान)

अणुव्रती—३०, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, प्रतिक्रमण—२१, ओम् अभी-

तपस्या—सा० आशा—उप०—३५, वे०—३, ते०—१, सा० मान कुमारी—उप०—३०, सा० लिछमा—उप०—८१, वे०—१, सा० कल्याण-मित्रा—२८। सा० आशा ने पाच, सा० मान व सा० कला श्री ने छह तथा सा० लिछमा व सा० कल्याणमित्रा ने पाच थोकडे कठस्थ किए।

भाई-बहिनो मे—उप०—४००, वे०—१३, ते०—२, चो०—४, प०—१, अठाई—१, आयविल—१८००

माघ महीने मे साध्वीश्री जीद विराज रही थी। साय अर्हत् वदना के पश्चात् वहा के प्रमुख श्रावक श्री किशोरीलाल जैन अचानक बेहोश हो गये। उस समय साध्वीश्री कलाश्री ने स्वामीजी का, ओम् अभीराशिको नम का मत्र जोर-जोर से सुनाया। पौण घटे के बाद बिना किसी दवा के वे होश मे आ गए और क्रमश स्वस्थ हो गए। इस घटना ने श्री किशोरीलाल को स्वामीजी के प्रति प्रगाढ श्रद्धाशील बना दिया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री पानकुमारी (सरदारशहर)

सहयोगिनी—सा० छगना, सा० लक्ष्मीवती, सा० कुशलश्री, सा० ललितकला

चातुर्मास—आसाढा (बाडमेर, राजस्थान)

यात्रा—२६ कि० मी०, क्षेत्र—३

वर्गीय अणुव्रती—१२३, पच सूत्री सकल्प—५४, मत्र दीक्षा—३५ शिविर—२, कालू तत्त्वशतक—५, भक्तामर—५, पचसूत्रम्—२, थोकडा—६, प्रतिक्रमण—५, जैन विद्या परिक्षा—५५, श्रमणोपासक-दीक्षा—१५, व्रत दीक्षा—१०

साध्वियो मे—उप० १८३, वे०—६, प०—१, नौ—२, ओम् अभी-राशिको नम का जप—३४ लाख, वाचन—५००० पृ०। सा० पानकुमारी ने २००, सा० कुशल श्री ने २३०० व ललितकला ने १५०० गाथा कण्ठस्थ की तथा छह-छह थोकडे सीखे। साध्वीश्री पानकुमारी ने ५१ दिन की विशेष साधना मे प्रतिदिन २२ घ० मौन, २ घ० ध्यान, १ घ० जप, २ घ० स्वाध्याय व १५ द्रव्य से ज्यादा खाने का सकल्प किया।

भाई-बहनो मे—$\frac{१}{१५००}$ $\frac{२}{६०}$ $\frac{३}{४०}$ $\frac{४}{२०}$ $\frac{५}{२१}$ $\frac{६}{१}$ $\frac{८}{१७}$ $\frac{९}{२}$ $\frac{२६}{१}$ वर्षीतप—२ एकान्तर—१४, आयविल की बारी—१० अनेको ने रात्रिभोजन, सचित्त आदि का त्याग किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री गुलाबकवर (भादरा)

सहयोगिनी—सा० भत्तु, सा० ज्योतिप्रभा, सा० धर्मप्रभा, सा० सयमलता

चातुर्मास—भादरा (गगानगर, राजस्थान)

यात्रा—८०० कि० मी०, क्षेत्र—१६

मत्र दीक्षा—२५, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, पच सूत्री सकल्प—१३००

तपस्या—सा० गुलाव—उप० ६५ बे०—१ ते० २ सा० भत्तु—उप० ५०, बे०—१

सा० ज्योतिप्रभा—उप०—५५, बे०—१, छह—१, अठाई, सा० धर्मप्रभा उप०—५०

सा० सयमलता-उप० ४५

साध्वी श्री के सान्निध्य मे स्कूलो मे कई सार्वजनिक कार्यक्रम हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री धनकुमारी (सरदारशहर)

सहयोगिनी—सा० कमलू, सा० ज्योतिश्री, सा० कुथु श्री, सा० भावनाश्री

चातुर्मास—हासी (हरियाणा)

यात्रा—१२११ कि० मी०, क्षेत्र—५५

मत्र दीक्षा—१६, व्रत दीक्षा—१४, श्रमणोपासक दीक्षा—३, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३ (तोषाम, ऊमरा सिसाय), प्रेक्षाध्यान शिविर—१ (हासी)

तपस्या—सा० धनकुमारी-उप०–३०, चो–१, सा० कमलू-उप०–२० नौ—१, सा० ज्योतिश्री—उप० ४१, सा० कुथु श्री—२०, सा० भावना श्री-उप०—२६

साध्वी श्री का लोगोवाल स्कूल मे प्रवचन हुआ। तोषाम मे महावीर जयति मनाई गई। हासी मे चार महीने चातुर्मास मे निरन्तर ज्ञानशाला चली।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रायकुमारी (रतनगढ)

सहयोगिनी—सा० रतनकुमारी (चूरू), सा० रविप्रभा (लाडनू) सा० पूर्णिमा श्री (सरदारशहर)

चातुर्मास—पाली (राजस्थान)

अणुव्रती—३०, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, प्रतिक्रमण—२१, ओम् अभी-

तपस्या—सा० आशा—उप०—३५, बे०—३, ते०—१, सा० मान कुमारी—उप०—३०, सा० लिछमा—उप०—८१, बे०—१, सा० कल्याण-मित्रा—२८। सा० आशा ने पाच, सा० मान व सा० कला श्री ने छह तथा सा० लिछमा व सा० कल्याणमित्रा ने पाच थोकडे कठस्थ किए।

भाई-बहिनो मे—उप०—४००, बे०—१३, ते०—२, चो०—४, प०—१, अठाई—१, आयबिल—१८००

माघ महीने मे साध्वीश्री जीद विराज रही थी। साय अर्हत् वदना के पश्चात् वहा के प्रमुख श्रावक श्री किशोरीलाल जैन अचानक बेहोश हो गये। उस समय साध्वीश्री कलाश्री ने स्वामीजी का, ओम् अभीराशिको नम का मत्र जोर-जोर से सुनाया। पौण घटे के बाद बिना किसी दवा के वे होश मे आ गए और क्रमश स्वस्थ हो गए। इस घटना ने श्री किशोरीलाल को स्वामीजी के प्रति प्रगाढ श्रद्धाशील बना दिया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री पानकुमारी (सरदारशहर)

सहयोगिनी—सा० छगना, सा० लक्ष्मीवती, सा० कुशलश्री, सा० ललितकला

चातुर्मास—आसाढा (बाडमेर, राजस्थान)

यात्रा—२६ कि० मी०, क्षेत्र—३

वर्गीय अणुव्रती—१२३, पच सूत्री सकल्प—५४, मत्र दीक्षा—३५ शिविर—२, कालू तत्त्वशतक—५, भक्तामर—५, पचसूत्रम्—२, थोकडा—६, प्रतिक्रमण—५, जैन विद्या परिक्षा—५५, श्रमणोपासक-दीक्षा—१५, व्रत दीक्षा—१०

साध्वियो मे—उप० १८३, बे०—६, प०—१, नौ—२, ओम् अभी-राशिको नम का जप—३४ लाख, वाचन—५००० पृ०। सा० पानकुमारी ने २००, सा० कुशल श्री ने २३०० व ललितकला ने १५०० गाथा कण्ठस्थ की तथा छह-छह थोकडे सीखे। साध्वीश्री पानकुमारी ने ५१ दिन की विशेष साधना मे प्रतिदिन २२ घ० मौन, २ घ० ध्यान, १ घ० जप, २ घ० स्वाध्याय व १५ द्रव्य से ज्यादा खाने का सकल्प किया।

भाई-बहनो मे—१/१५०० २/६० ३/४० ४/२० ५/२१ ६/१ ८/१७ ९/२ २६/१ वर्षीतप—२ एकान्तर—१४, आयबिल की बारी—१० अनेको ने रात्रिभोजन, सचित्त आदि का त्याग किया।

अग्रगण्य—साध्वीश्री गुलाबकवर (भादरा)

सहयोगिनी—सा० भत्तु, सा० ज्योतिप्रभा, सा० धर्मप्रभा, सा० सयमलता

चातुर्मास—भादरा (गगानगर, राजस्थान)

यात्रा—८०० कि० मी०, क्षेत्र—१६

मत्र दीक्षा—२५, सम्यक्त्व दीडा—५१, पच्च सूत्री सकल्प—१३००

तपस्या—सा० गुलाव—उप० ६५ वे०—१ ते० २ सा० भत्तु—उप० ५०, वे०—१

सा० ज्योतिप्रभा—उप०—५५, बे०—१, छह—१, अठाई, सा० धर्मप्रभा उप०—५०

सा० सयमलता-उप० ४५

साध्वी श्री के सान्निध्य मे स्कूलो मे कई सार्वजनिक कार्यक्रम हुए।

अग्रगण्य—साध्वीश्री धनकुमारी (सरदारशहर)

सहयोगिनी—सा० कमलू, सा० ज्योतिश्री,सा० कुथु श्री, सा० भावना-श्री

चातुर्मास—हासी (हरियाणा)

यात्रा—१२११ कि० मी०, क्षेत्र—५५

मत्र दीक्षा—१६, व्रत दीक्षा—१४, श्रमणोपासक दीक्षा—३, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३ (तोपाम, ऊमरा सिसाय), प्रेक्षाध्यान शिविर—१ (हासी)

तपस्या—सा० धनकुमारी-उप०–३०, चो–१, सा० कमलू-उप०–२० नौ—१, सा० ज्योतिश्री—उप० ४१, सा० कुथु श्री—२०, सा० भावना श्री-उप०—२६

साध्वी श्री का लोगोवाल स्कूल मे प्रवचन हुआ। तोषाम मे महावीर जयति मनाई गई। हासी मे चार महीने चातुर्मास मे निरन्तर ज्ञानशाला चली।

अग्रगण्य—साध्वीश्री रायकुमारी (रतनगढ)

सहयोगिनी—सा० रतनकुमारी (चूरू), सा० रविप्रभा (लाडनू) सा० पूर्णिमा श्री (सरदारशहर)

चातुर्मास—पाली (राजस्थान)

अणुव्रती—३०, सम्यक्त्व दीक्षा—५१, प्रतिक्रमण—२१, ओम् अभी-

राशिको नम की ३ माला का नियम—११०० ने लिया। सा० रायकुमारी ने उप० ३५, बे० १ किया। चातुर्मास मे ज्ञानशाला निरन्तर चली।

अग्रगण्य—साध्वी श्री जतनकुमारी (राजगढ)

सहयोगिनी—सा० सूरजकुमारी (टमकोर), सा० धनकुमारी (लाडनू) सा० गुणवती (टमकोर), सा० अमितरेखा (जसोल)

चातुर्मास—पुर (भीलवाडा, राजस्थान)

यात्रा—३१३ कि० मी०, क्षेत्र—१६

मत्र दीक्षा—२००, सम्यक्त्व दीक्षा—५२, जैन विद्या परीक्षा—१६० तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३ (नान्दशा, आमली, पीतास) अणुव्रत परीक्षा—६० पत्राचार पाठशाला—१५

भाई-बहिनो मे—उप०—५००, बे०—६० ते०—७१, चो० से नौ तक—१०, आयबिल—२००

साध्वीश्री की विशेष प्रेरणा से ५० हरिजनो ने मद्य-मास का परित्याग किया।

ण्य— ीश्री मोहना (श्रीडुगरगढ)

सहयोगिनी—सा० चादा, सा० प्रेमलता (श्रीडुगरगढ), सा० प्रतिभा श्री (गगाशहर), सा० लोकप्रभा (लाडनू)

चातुर्मास—पेटलावद (मध्यप्रदेश)

यात्रा—१२०० कि० मी०।

साध्वियो मे उप० १०६ हुए।

भाई-बहिनो मे उप०—२०००, बेले से सात तक—७७, अठाई से सोलह तक ३३, ३०० विद्यार्थियो ने अणुव्रतो को स्वीकार किया। २०० व्यक्तियो ने मद्य-पेय का त्याग किया। साध्वीश्री की प्रेरणा से ४२ व्यक्तियो ने अमृत-महोत्सव सदर्भ मे १४०० आयबिल करने का सकल्प लिया।

अग्रगण्य साध्वीश्री रतनकुमारी (लाडनू)

सहयोगिनी—सा० सुमतिकुमारी (लाडनू) सा० राकेश कुमारी (बायतु) सा० हिम श्री (सरदारशहर), सा० मधुरलता (रामसिंह गुडा)

चातुर्मास—सरदारपुरा—जाधपुर (राजस्थान)

यात्रा—६०० कि० मी०।

साध्वियो मे उपवास—५२।

भाई-बहिनो मे ५००० आयविल हुए । पच सूत्री सकल्प—४००

अग्रगण्य—साध्वीश्री पानकुमारी 'द्वितीय' (श्रीडूगरगढ)

सहयोगिनी—सा०—चम्पा (श्रीडूगरगढ), सा०—मूला (फतहगढ), सा० प्रभावती (फतहगढ)

चातुर्मास—ईडवा (नागौर, राजस्थान)

यात्रा—८०० कि० मी, पच सूत्री सकल्प—१४१ ।

साध्वियो मे—उप०—११०, बे०—२, चो०—१, जप—६ लाख

भाई-बहिनो मे—आयविल—२२४०, मासखमण—१

अग्रगण्य—साध्वीश्री मोहनकुमारी (राजगढ)

सहयोगिनी—सा० मालू (मोमासर) सा० रतनकवर, सा० कनक श्री (राजगढ), सा० धर्मयशा

चातुर्मास—जौहरी बाजार—जयपुर (राजस्थान)

यात्रा—८०० कि० मी० । साध्वियो मे—उप०—११२, ते०—७ साध्वी श्री के सान्निध्य मे ।

मदनगज—किशनगढ मे साध्वीश्री के सान्निध्य मे महावीर जयती का भव्य कार्यक्रम रहा । इस अवसर पर स्थानकवासी साध्वी श्री पुष्पावती भी उपस्थित थी । जोबनेर कॉलेज मे साध्वी श्री का भाषण हुआ ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री कचनप्रभा (सुजानगढ)

सहयोगिनी—सा० मनोहरा (छापर), सा० मजुरेखा (बाव), सा० उदितप्रभा (उकलाना)

चातुर्मास—गगापुर (भीलवाडा, राजस्थान)

यात्रा—३०० कि० मी०, साध्वियो मे—उप० ४५

अग्रगण्य—साध्वीश्री गोराजी

सहयोगिनी—सा० चेतना श्री (सरदारशहर), सा० उज्ज्वल कुमारी (सिसाय), सा० लाभवती (बाव), सा० जिनबाला (गगाशहर)

चातुर्मास—जगराओ (पजाब)

यात्रा—२५०० कि० मी०

अणुव्रती—२०२, पचसूत्री सकल्प—४५०, मत्र दीक्षा—५१, सम्यक्त्व दीक्षा—१२१, प्रेक्षा अभ्यास शिविर—१ (तीन दिन)

साध्वियो म उप०—११० । भाई-बहनो मे जप काफी हुआ ।

अग्रगण्य—साध्वीश्री सतोषकुमारी

सहयोगिनी—सा० गुलाबकुमारी (सरदारशहर), सा० सोहना (राजलदेसर), सा० धनकवर (लाडनू) सा० शशिकला (हासी)

चातुर्मास—राणावास (पाली, राजस्थान)

यात्रा—५४१ कि० मी०, क्षेत्र—१५

सम्यक्त्व दीक्षा—७६, प्रतिक्रमण २८, थोकडा—२७, भक्तामर-६, धूम्रपान त्याग—५१, अणुव्रती—३५, विशेप जप ५१ लाख

तपस्या—साध्वी श्री सतोप कुमारी उप०—८२, बे०—५, ते०—१

सा० गुलाब कुमारी—उप०—५६, ते०—१

सा० सोहना—उप०—३८, बे०—५, ते०—१

सा० धनकवर—उप०—५१, सा० शशिकला—उप० २६

अग्रगण्य—साध्वी श्री रायकुमारी (राजलदेसर)

सहयोगिनी—सा० कानकुमारी (राजलदेसर), सा० मदन श्री (बीदासर,) सा० अणिमा श्री (मोमासर), सा० सघप्रभा (राजलदेसर)

चातुर्मास—मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)

चातुर्मास के दोरान साध्वी श्री के सान्निध्य मे वाग्वर्धिनी सगोष्ठियो के अन्तगत दो चर्चास्पर्धा प्रतियोगिता समायोजित हुई । दीपावली के दिन साध्वी वृन्द म करीव सात घटे निरन्तर जपाराधना चली । १६ नवम्बर को साध्वी श्री के सन्निधि मे सतरह वर्षीया लडकी सुश्री ममता वरडिया के मास-खमण का तप अभिनन्दन समारोह आयोजित था, जिसमे जैन-जैनतर समाज ने सोत्साह भाग लिया । इस मौके पर प्रमुख समाज सेवी वैद्य श्री हरनाथ शर्मा उपस्थित थे । १४ नवम्बर को आचाय श्री का जन्म दिन अहिंसा सावभौम दिवस के रूप मे मनाया गया । इस कायक्रम मे मिर्जापुर जिला काग्रेस (आई) के महामत्री श्री माता प्रसाद दुबे, जिला भारतीय जनता पाटी के उपाध्यक्ष श्री सुरजीतसिह, जिलाधीश श्री नागेश्वर नाथ उपाध्याय, वैद्य श्री रोशनप्रसाद, जैन दशन के विद्वान् श्री जय कुमार जैन, प्रतिष्ठित नागरिको, पत्रकारो ने भाग लिया ।

अग्रगण्य—साध्वी श्री किस्तुरा (लाडनू)

सहयोगिनी—सा० शुभवती (सिसाय), सा० गुणमाला (उदयपुर)

सा० चद्रप्रभा, सा० सम्यक्प्रभा (सरदारशहर)

चातुर्मास—मद्रास (तमिलनाडू)

मत्र दीक्षा—१००, श्रमणोपासक दीक्षा—३५, प्रतिक्रमण—२०

तपस्या—भाई-बहिनो मे १/हजारो, २/सैकडो ३/२५०, ४/९०, ५/२५, ६/३, ७/४, ८/३६, ९/२१, १०/२, ११/१०, १४/१, १५/४, १७/२, २१/१, ३२/२, ५१/१।

श्रीमती कन्या भसाली ने ५४ व श्रीमती सुशीला वोहरा तथा श्रीमती बदामी डूगरवाल ने ३१ की तपस्या की। एकान्तर—३७, वेले-वेले एकातर—५, वर्षीतप—७, आयविल—२७८००, ओम् अभीराशिको नम का जप—२८ करोड, ५१-५१ व्यक्तियो ने जमीकद, सचित्त रात्रिभोजन आदि का त्याग किया।

साध्वी श्री के सान्निध्य मे सास प्रशिक्षण शिविर, वहु प्रशिक्षण शिविर, वाल प्रशिक्षण शिविर तथा कई वाद-विवाद व भाषण प्रतियोगिताए हुई। २० सित० को मध्याह्न तेरापथ भवन मे सभी जैन सम्प्रदायो का सामूहिक क्षमापना का रोचक कार्यक्रम हुआ। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत बी० जी० हायर सेकेण्ड्री स्कूल, सुगनीबाई सनातन हायर सेकेण्ड्री स्कूल, गणेश बाई गेलडा हायर सेकेण्ड्री स्कूल आदि स्कूलो मे साध्वी श्री का भाषण हुआ।

साध्वी श्री की पावन निश्रा मे अमृत-महोत्सव का भव्य कार्यक्रम रहा, जिसमे मुख्य अतिथि थे तमिल फिल्मो के हास्य अभिनेता व तमिल 'मासिक' तुगलक के सम्पादक श्री चो० एस० रामस्वामी। उन्होने अपने वक्तव्य मे आचार्यप्रवर के विभिन्न आयामो की प्रशसा करते हुए उन जैसे सतो की मौजूदा हालात मे सख्त जरूरत बताई। इस अवसर पर साध्वियो ने अपने भावभरे उद्गार व्यक्त किये।

८ दिसम्बर को समाज-भूषण श्री जसवतमल सेठिया को उनके ७८ वे जन्म दिवस पर एक विराट् अभिनन्दन समारोह मे ७८ हजार रुपयो की थैली भेट की गई।

अग्रगण्य—साधना निकाय व्यवस्थापिका साध्वीश्री यशोधरा

सहयोगिनी—सा० नीतिश्री (देवगढ), सा० आनन्दप्रभा (हिसार), सा० ज्योत्स्नाकुमारी (श्रीडूगरगढ), सा० गुणरेखा (बीदासर)

चातुर्मास—भागलपुर (विहार)

साध्वीश्री यशोधराजी पिछले पाच वर्षो से बगाल, विहार, असम जैसे सुदूरवर्ती उत्तरी-पूर्वी राज्यो मे परिभ्रमण कर रही थी। वहा उन्होने

कलकत्ता आदि क्षेत्रो मे चातुर्मास किया। पूरे वगाल प्रवास के दौरान उनके प्रवचनो मे हजारो वगाली, गामीण, शहरी, बुद्धिजीवी लोग उपस्थित होते क्योकि साध्वी श्री उनकी ही भाषा वगला मे धाराप्रवाह वोलती थी। साध्वी श्री का वगला भाषा वोलने, लिखने, पढने पर अच्छा अधिकार है। उनके प्रवास के दौरान धमसघ की उल्लेखनीय प्रभावना हुई। पचवर्षीय सकल यात्रा के वाद साध्वी श्री ने उदयपुर अमृत एव मर्यादा महोत्सव पर आचार्य वर के दर्शन किये। मर्यादा-महोत्सव के पावन प्रसग पर उनकी साध्वी नियोजिका के रूप मे महत्वपूर्ण नियुक्ति हुई।

खड २ मे साधु-साध्वियो की जो रिपोर्ट हमे मिली। उसे देने का प्रयास किया है। कुछ साधु-साध्वियो की तेरापथ-दिग्दशन रिपोट सक्षिप्त एव सुव्यस्थित थी, कुछ की अति विस्तृत थी। कुछ साधु-साध्वी सघाटको का विवरण हमे आचार्यवर को समर्पित होने वाले वार्षिक विवरणो से भी मिला। दिग्दशन की रिपोर्ट प्रस्तुति के लिए जैन विश्व भारती, शिविर कार्यालय से कई परिपत्र भी प्रेपित हुए थे जिन साधु-साध्वी सघाटको की हमे विल्कुल रिपोर्ट नही मिली, उनका विवरण निम्नोक्त है —

	सघाटकपति	चातुर्मास
१	मुनिश्री वालचद (आसीद)	दौलतगढ (भीलवाडा, राजस्थान)
२	,, शुभकरण (सरदारशहर)	राजसमद (तुलसी साधना शिखर)
३	,, मुल्तानमल	पचपदरा (वाडमेर, राज०)
५	,, नवरत्नमल	लाडनू, जैन विश्व भारती (राज०)
५	,, अगरचद	छोटी खाटू (नागौर, राज०)
६	,, नथमल (वागोर)	सुजानगढ (चूरू, राज०)
७	,, अमोलक चद, मुनि श्री हसराज	पडिहारा (चूरु, राज०)
८	,, जयचद लाल	इन्दौर (मध्यप्रदेश)
९	,, सागरमल 'श्रमण'	अहमदगढ (पजाव)
१०	,, सोहनलाल (श्रीडूगरगढ) मुनि श्री सगीत	हिसार (हरियाणा)
११	,, जवरीमल	सिरसा (हरियाणा)
१२	,, महेन्द्र कुमार	अणुव्रत-विहार, नई दिल्ली
१३	साध्वीश्री कचन कुमारी (राजनगर) ,, भीखाजी (लाडनू)	लाडनू सेवाकेन्द्र (नागौर राज०)
१४	,, चादकुमारी (मोमासर)	शार्दूलपुर (चूरू, राज०)

१५	साध्वीश्री	मनोहरा (सुजानगढ)	साडवा (,, ,,)
१६	,,	मोहनकुमारी (डीडवाना)	छापर (,, ,,)
१७	,,	हर्षकुमारी (सरदारशहर)	सरदारशहर (,, ,,)
	,,	सुखदेवा (चूरू)	
१८	,,	भीखा (सरदारशहर)	राजलदेसर (,, ,,)
	,,	छगना ,,)	
१९	,,	मोहनकुमारी (तारानगर)	श्रीगगानगर (राजस्थान)
२०	,,	भीखा (श्रीडूगरगढ)	नाल (बीकानेर, राज०)
२१	,,	मानकुमारी (सरदारशहर)	बीदासर, समाधि केन्द्र (चूरु, राज०)
२२	,,	मोहनकुमारी (राजलदेसर)	ग्वालियर (मध्यप्रदेश)
२३	,,	सूरजकुमारी (सरदारशहर)	मलाड (बम्बई)
२४	,,	सिरेकुमारी (,,)	गोविन्दगढ (पजाब)
२५	,,	रायकुमारी (सुजानगढ)	पटियाला (पजाब)
२६	,,	कमलाकुमारी (सरदारशहर)	कालावाली (हरियाणा)
२७	,,	रामकुमारी (,,)	जीन्द (,,)
२८	,,	सघमित्रा (श्रीडूगरगढ)	(सदर बाजार) दिल्ली

-साध्वियो की उत्कृष्ट तपस्या

अमृत-महोत्सव मे इस बार साधु-साध्वियो मे बहुत तपस्याए हुई है। गुरुकुलवास मे मुनि श्री अर्जुनलाल ने पानी के आगार पर मासखमण की तपस्या की। उनके तप की पूर्णाहुति पर आचार्यवर ने एक दोहा फरमाया—

वय चिहोत्तर वर्ष मे, वाह मुनि अर्जुन वीर।
मासखमण आमेट मे, साध्यो सत सधीर ॥

मुनिश्री भवभूति ने १५, मुनिश्री श्रेयासकुमार ने ८ व मुनिश्री जिनेश कुमार ने ५ की तपस्या की। मुनिश्री लाभरुचि ने आछ के आगार पर १५ की तपस्या की।

साध्वियो मे दीर्घ तपस्विनी साध्वीश्री पन्नाजी ने आछ के आगार पर १८ अगस्त को ५१ दिनो की तपस्या सानद सपन्न की। आचार्यवर व युवाचार्य श्री ने एक साथ ग्रास दिया। आचार्यश्री ने उनके बारे मे एक पद्य फरमाया—

पन्ना दीर्घ यपस्विनी, इक्यावन दिन साज।
युवाचार्य आचार्य कर, करै पारणो आज ॥

उल्लेखनीय बात यह थी कि सदा की भाति साध्वीश्री पन्नाजी ने इस

वार भी कुछ अभिग्रह स्वीकार किए। वे अभिग्रह है—

१ आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री साध्वियो के स्थान पर पधार कर एक साथ ग्रास दे।

२ साध्वी प्रमुखाश्री जी एक साथ २१ साध्वियो के साथ पारणे के लिए कहे।

३ सवा लाख का जप पूरा हो जाये।

४ माधु-साध्विया साध्वी पन्नाजी के पास आकर कुछ खाए या पीए।

ये चारो अभ्ग्रिह पूरे न होते, तो सात दिन की तपस्या आगे वढाई जाती। ये चारो ही अभिग्रह पूर्ण हो गये और उन्होने सानन्द पारणा कर लिया।

साध्वीश्री स्वयप्रभा जी के आछ के आगार पर २९ सितवर को १२१ दिनो की उत्कृष्ट तपस्या का अतिम दिन था। प्रातकालीन कार्यक्रम मे आचार्यवर के सान्निध्य मे उनका अभिनदन किया गया। दूसरे दिन ३० को आचार्यवर साध्वियो के स्थान पर पधारे। आचार्यवर ने साध्वीश्री को अपने हाथ से ग्रास दिया और उनके प्रति यह दोहा फरमाया—

चौमासी तप आदर्‌यो, आछ ग्रहण उपरान्त।
अमृतोत्सव आमेट मे, स्वयप्रभा चित्त शात॥

साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा—

सुगुरु चरण सान्निध्य, तप रो दिवलो चास।
स्वयप्रभा सहज्या वस्यो, आत्मानद उजास॥

इनके अतिरिक्त साध्वीश्री सुमति श्री ने आछ के आगार पर मास-खमण किया।

साधु-साध्वियो का महाप्रयाण

(१) साध्वीश्री मनोहराजी (सरदारशहर) का लाडनू मे २२ फरवरी १९८५ रात्रि मे आठ दिन की तपस्या तथा दो दिन के चौविहार अनशन मे स्वर्गवास हो गया। वे ७२ वर्ष की थी। आचार्यश्री के शब्दो मे वे प्रकृति की सरल और भद्र थी।

(२) साध्वीश्री पद्मश्री जी (वोरावड) का ददरेवा (चूरु) मे ११ मार्च को आकस्मिक स्वर्गवास। वे साध्वीश्री सुखदेवाजी (चूरु) के साथ थी।

(३) साध्वीश्री किस्तूराजी (सरदारशहर) सुजानगढ मे २ मई को केसर की बीमारी मे स्वगस्थ हुई। वह मुनिश्री नगराज (सरदारशहर) की

ससार पक्षीया भगिनी थी। आचार्यश्री के उद्गार—"साध्वी किस्तूरांजी एक अच्छी सेवाभाविनी साध्वी थी। केसर पीडित साध्वी राजाजी की उनने बहुत अग्लान भाव से सेवा की थी। आखिर उसने अपना गृहीत सयम भार समाधि-पूर्वक सपन्न किया।

(४) साध्वीश्री सुजानाजी (मोमासर) का गगापुर मे ५ जून को स्वर्गवास। वे अपनी ससार पक्षीया पुत्री साध्वीश्री आनदकुमारी के साथ थी। पिछले दो वर्षो से वे गगापुर मे स्थिरवासिनी थी। उन्हे अतिम समय मे ११ दिन तिविहार तथा कुछ समय चौविहार अनशन आया। अतिम सस्कार मे ३५ गावो के हजारो व्यक्ति सम्मिलित हुए। आचार्यश्री के उद्गार—"मे जब गगापुर गया तो साध्वी सुजानाजी ने कहा—अतिम अवस्था मे मुझे आपके दर्शन हो गए। मै निहाल हो गई। अब मेरी मन की सारी कामनाए पूर्ण हो गई है। एक ही कामना शेष है सथारा करने की। उनकी यह अतिम इच्छा भी पूरी हुई और वे अनशन पूर्वक स्वर्गवासी हो गई।"

(५) साध्वीश्री केशरजी "लाडनू" आमेट मे १५ अगस्त ८५ को मध्याह्न दस्त की बीमारी मे स्वर्गस्थ हो गई। दूसरे दिन दाह-सस्कार मे हजारो व्यक्ति सम्मिलित थे। विस्तृत विवरण पूर्व मे प्रकाशित हो गया है।

(६) मुनिश्री मानमल (श्रीडूगरगढ) का १५ सितबर को पश्चिम रात्रि मे पक्षाघात की बीमारी मे आशाहोली (भीलवाडा) मे स्वर्गवास हो गया। दाह सस्कार मे करीब तीन हजार व्यक्ति थे। विस्तृत विवरण पूर्व मे प्रकाशित है।

(७) साध्वीश्री सुदर्शनाजी (गगाशहर) का देशनोक (बीकानेर) मे सवत्सरी के दिन (१६ सितबर) रात्रि मे हृदय गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। इक्यावन वर्षीया साध्वीजी मुनिश्री सुमति चद्रजी की ससार पक्षीया धर्मपत्नी थी। वह सजोडे सवत् २०१० मे दीक्षित हुई थी। वे पहले गुरुकुलवास मे, फिर मातुश्रीजी के पास मे रही। अभी वे साध्वीश्री भमकूजी के साथ थी। यह एक सयोग था कि उनका जन्म भी सवत्सरी को हुआ। वे बहुत भद्र प्रकृति वाली साध्वी थी।

(८) मुनिश्री गगाराम (गगाशहर) का गगाशहर मे २५ अक्टूबर मध्याह्न मे मुनिश्री राजकरण के सान्निध्य मे स्वर्गवास हो गया। उन्हे २५ घटा २५ मिनट तिविहार तथा ४१ मिनट चौविहार अनशन आया। आचार्यवर ने उनके बारे मे एक दोहा फरमाया—

बार भी कुछ अभिग्रह स्वीकार किए। वे अभिग्रह है—

१ आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री साध्वियो के स्थान पर पधार कर एक साथ ग्रास दे।

२ साध्वी प्रमुखाश्री जी एक साथ २१ साध्वियो के साथ पारणे के लिए कहे।

३ सवा लाख का जप पूरा हो जाये।

४ साधु-साध्विया साध्वी पन्नाजी के पास आकर कुछ खाए या पीए।

ये चारो अभिग्रह पूरे न होते, तो सात दिन की तपस्या आगे बढाई जाती। ये चारो ही अभिग्रह पूर्ण हो गये और उन्होने सानन्द पारणा कर लिया।

साध्वीश्री स्वयप्रभा जी के आछ के आगार पर २९ सितबर को १२१ दिनो की उत्कृष्ट तपस्या का अतिम दिन था। प्रातकालीन कार्यक्रम मे आचार्यवर के सान्निध्य मे उनका अभिनदन किया गया। दूसरे दिन ३० को आचार्यवर साध्वियो के स्थान पर पधारे। आचार्यवर ने साध्वीश्री को अपने हाथ से ग्रास दिया और उनके प्रति यह दोहा फरमाया—

चौमासी तप आदर्यो, आछ ग्रहण उपरान्त।
अमृतोत्सव आमेट मे, स्वयप्रभा चित्त शात॥

साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा—

सुगुरु चरण सान्निध्य, तप रो दिवलो चास।
स्वयप्रभा सहज्या वस्यो, आत्मानद उजास॥

इनके अतिरिक्त साध्वीश्री सुमति श्री ने आछ के आगार पर मास-खमण किया।

साधु-साध्वियो का महाप्रयाण

(१) साध्वीश्री मनोहराजी (सरदारशहर) का लाडनू मे २२ फरवरी १९८५ रात्रि मे आठ दिन की तपस्या तथा दो दिन के चौविहार अनशन मे स्वर्गवास हो गया। वे ७२ वर्ष की थी। आचार्यश्री के शब्दो मे वे प्रकृति की सरल और भद्र थी।

(२) साध्वीश्री पद्मश्री जी (बोरावड) का ददरेवा (चूरू) मे ११ मार्च को आकस्मिक स्वर्गवास। वे साध्वीश्री सुखदेवाजी (चूरु) के साथ थी।

(३) साध्वीश्री किस्तूराजी (सरदारशहर) सुजानगढ मे २ मई को केसर की बीमारी मे स्वर्गस्थ हुई। वह मुनिश्री नगराज (सरदारशहर) की

गगा गगा मे किया, अनशन गगा स्नान।
पितृ ऋण से उऋण हुए, राजपूर्ण पुनवान ॥

(९) साध्वीश्री झमकूजी (राजलदेसर) का देशनोक मे २७ दिसवर को प्रात १० बजे ८ घटे तिविहार व २ घटे चौविहार अनशन मे स्वगवास हो गया। चर्म रोग व लीवर की खरावी के कारण वे पिछले सात वर्षो से स्थिरवासिनी थी। उनका चूरू सुराणा परिवार मे पीहर तथा राजलदेसर नाहर परिवार मे श्वसुराल था। साध्वीश्री नोजाजी के साथ वे कई वर्षो तक रही। आचार्यश्री के शब्दो मे साध्वी झमकूजी शासनभक्त, समर्पित व कलाकार साध्वी थी।

(१०) साध्वीश्री गणेशाजी (चाडवास) का राजलदेसर मे जनवरी के प्रथम सप्ताह मे स्वर्गवास हो गया। वे कुछ वर्षों से वहा स्थिरवासिनी थी। पूज्य कालूगणी के हाथो वे दीक्षित हुई थी। उनकी वडी वहिन साध्वी नाथाजी का स्वर्गवास कुछ वप पूव हुआ था।

(११) मुनिश्री जसकरण (राजलदेसर) का छोटी खाटू मे ६ जनवरी ८६, मध्याह्न १२ ३० वजे स्वर्गवास हो गया। मिरगी की बीमारी व अत समय मे पक्षाघात से पीडित मुनिश्री जसकरण मुनिश्री अगरचद के साथ थे। आचार्यश्री के उद्गार—"मुनि जसकरण एक समर्पित सन था। मिरगी की बीमारी मे भी उसका मनोवल मजवूत था। इस वर्ष वह एकातर तप कर रहा था।"

(१२) साध्वीश्री लिछमाजी (सरदारशहर) लाडनू मे ८ जनवरी प्रात ८ बजे स्वर्गस्थ हो गई। उनका पीहर कालू व ससुराल सरदारशहर था। आचार्यश्री के शब्दो मे "वह स्वभाव से वहुत शात थी।"

वहिर्गमन

(१) आचार्यश्री जोधपुर चातुर्मास परिसपन्न कर पचपदरा पधार रहे थे। मार्गवर्ती गाव थोव मे आचायवर पधारे। आचार्यवर थोव से पाटौदी प्रस्थित हो गये, जवकि मुनि आत्मप्रकाश जी विना आज्ञा पचपदरा चले गए। पिछले कुछ अर्से से अनुशासनहीनता और उग्रता के कारण उनकी शिकायते आ रही थी। इससे पूर्व भी २ जून ८४ को मुनिश्री मुल्तानमल की आज्ञा की अवहेलना कर वे चले गये थे। फिर कानाना मे लिखत करवाया और उन्हे जोधपुर साथ मे वुला लिया। पहले मुनि श्री किशनलाल के साथ रखा, पर वहा अनुकूल नही रहने पर मुनिश्री मधुकर के साथ रखा किंतु उनमे

गगा गगा मे किया, अनशन गगा स्नान ।
पितृ ऋण से उऋण हुए, राजपूर्ण पुनवान ।।

(९) साध्वीश्री झमकूजी (राजलदेसर) का देशनोक मे २७ दिसवर को प्रात १० वजे ८ घटे तिविहार व २ घटे चौविहार अनशन मे स्वगवास हो गया। चर्म रोग व लीवर की खरावी के कारण वे पिछले सात वर्षो से स्थिरवासिनी थी। उनका चूरू सुराणा परिवार मे पीहर तथा राजलदेसर नाहर परिवार मे श्वसुराल था। साध्वीश्री नोजाजी के साथ वे कई वर्षो तक रही। आचार्यश्री के शब्दो मे साध्वी झमकूजी शासनभक्त, समर्पित व कलाकार साध्वी थी।

(१०) साध्वीश्री गणेशाजी (चाडवास) का राजलदेसर मे जनवरी के प्रथम सप्ताह मे स्वर्गवास हो गया। वे कुछ वर्षो से वहा स्थिरवासिनी थी। पूज्य कालूगणी के हाथो वे दीक्षित हुई थी। उनकी वडी वहिन साध्वी नाथाजी का स्वर्गवास कुछ वर्ष पूर्व हुआ था।

(११) मुनिश्री जसकरण (राजलदेसर) का छोटी खाटू मे ६ जनवरी ८६, मध्याह्न १२ ३० वजे स्वर्गवास हो गया। मिरगी की बीमारी व अत समय मे पक्षाघात से पीडित मुनिश्री जसकरण मुनिश्री अगरचद के साथ थे। आचार्यश्री के उद्गार—"मुनि जसकरण एक समर्पित सन था। मिरगी की बीमारी मे भी उसका मनोवल मजवूत था। इस वर्ष वह एकातर तप कर रहा था।"

(१२) साध्वीश्री लिछमाजी (सरदारशहर) लाडनू मे ८ जनवरी प्रात ८ वजे स्वर्गस्थ हो गई। उनका पीहर कालू व ससुराल सरदारशहर था। आचार्यश्री के शब्दो मे "वह स्वभाव से वहुत शात थी।"

वहिर्गमन

(१) आचार्यश्री जोधपुर चातुर्मास परिसपन्न कर पचपदरा पधार रहे थे। मार्गवर्ती गाव थोव मे आचार्यवर पधारे। आचार्यवर थोव से पाटौदी प्रस्थित हो गये, जवकि मुनि आत्मप्रकाश जी विना आज्ञा पचपदरा चले गए। पिछले कुछ अर्से से अनुशासनहीनता और उग्रता के कारण उनकी शिकायते आ रही थी। इससे पूर्व भी २ जून ८४ को मुनिश्री मुल्तानमल की आज्ञा की अवहेलना कर वे चले गये थे। फिर कानाना मे लिखत करवाया और उन्हे जोधपुर साथ मे वुला लिया। पहले मुनि श्री किशनलाल के साथ रखा, पर वहा अनुकूल नहीं रहने पर मुनिश्री मधुकर के माथ रखा किंतु उनमे

आज्ञा व अनुशासन का अभाव बना रहा। अभी वे अपने आप पचपदरा चले गये। इस पर आचार्यश्री ने अनुशासनात्मक कार्यवाही करते हुए पचपदरा स्थित मुनिश्री मुल्तानमल तथा मुनिश्री पूनमचद आदि को उन्हे साथ न लेने का आदेश फरमा दिया। दूसरे दिन वे आये, आचार्यवर के दूर से दर्शन किए। विहार मे एक दो सतो से बोझ मागा, पर उसे नही दिया गया। तब बातचीत किये बिना ही उसी समय वापिस चले गये। पुन नही आये, अत सघ से बहिर्भूत हो गये। पजाब से उनके बडे भाई रामचद जैन व उनकी पत्नी कृष्णा बहन ने बायतू मे गुरुदेव के दर्शन किए। आत्म प्रकाश को सघ मे लेने की प्रार्थना की, आचार्यवर ने उसकी अनुशासनहीनता के प्रसग सुनाये, वे दोनो आत्मप्रकाश को समझाने जसोल आये, समझाने का प्रयास किया, किंतु असफल रहा।

(२) २२ जून ८५ को सयम के प्रति अस्थिर भावना के कारण जिलोला मे मुनि उत्तमकुमार (गगाशहर) सघ से बहिर्भूत हो गये और गृहस्थ बन गये।

(३) मुनिश्री सुमनकुमार (सरदारशहर) ५ जनवरी, १९८६ को कानोड मे गण से बहिर्भूत हो गये। वे अत्यधिक अह के प्रदर्शक, उग्र भाषक, विचित्र प्रकृति वाले थे। वे मुनिश्री बुद्धमल के साथ थे।

८ नवबर १९८४ से १७ फरवरी १९८६ तक के इस दिग्दर्शन वर्ष मे ३ साधु व ९ साध्विया स्वर्गस्थ हुई, जिनमे १ मुनि व ३ साध्वियो ने अनशनपूर्वक समाधि मृत्यु का वरण किया। तीन मुनि सघ से बहिर्भूत हुए। आलोच्य वर्ष मे ९ साध्वियो की जैन भागवती दीक्षा सपन्न हुई तथा पूर्व मे सघ से बहिर्भूत मुनि को पुन दीक्षा दी गई। इस प्रकार १७ फरवरी १९८६ को साधु-साध्वियो की सख्या इस प्रकार थी—

साधु—१५५, साध्विया—५४६, कुल—७०१

चामत्कारिक अनशन व मरण

२८ सितम्बर/लाडनू निवासी श्री जीवनमल दूगड की धर्मपत्नी ९२ वर्षीया वयोवृद्ध श्राविका श्रीमती गोगादेवी दूगड के पेट मे करीब २० किलो वजनी गाठ थी। इधर भयकर वेदना उधर असाधारण समता। बिल्कुल विरोधी दृश्य था। उस भयकर वेदना के बावजूद भी उनके मुख से उफ तक नही निकला। शरीर को साधना मे असहयोगी मान उन्होने सथाराव्रत स्वी-

कार कर लिया।

तिविहार सथारा के चौवीसवे व अतिम दिन दोपहर ११ वजे वे वोली—"आज चले जाना है।" दो घटे वाद जाने का समय शाम ६ वजे वताया। करीब पौण वजे साध्वी सूरजकवरजी उन्हे दर्शन देने गई, श्रीमती दूगड ने हाथ ऊचा किया, तव साध्वीश्री ने पूछा—'क्या साध्विया दीख रही है?" "नही, नही"—वे वोली। साध्वीश्री ने फिर पूछा—क्या सत दीख रहे है? उन्होने जवाव दिया—हा। फिर पूछा—स्वामीजी दिख रहे है? इतना कहते ही उनका चेहरा खिल उठा और गर्दन हिलाकर स्वीकृति देते हुए कहा—अब तो म्हे जास्या।

स्वाध्याय का क्रम यथावत् चालू था। घडी ने चार वजे की सूचना दी, उस समय श्रीमती दूगड ने कहा—"विमाण आ गयो है आज छह वजे जास्यू" दो घटे पहले इस तरह कह देना विस्मयकारक था। पाच से छह वजे के बीच उन्होने कई वार अपने जाने की वात प्रमोद भाव से की। वात गगाशहर मे फैल गई, काफी लोग इकट्ठे हो गये। इधर घडी मे छह के 'टणके' लगे, उधर श्रीमती गोगादेवी का शरीर निढाल हो गया। उन्होने स्वर्ग की ओर महाप्रयाण कर दिया। अतिम समय मे उनके पास साध्वी-वृन्द, मुमुक्षु बहिने व भरे पूरे पारिवारिक जनो तथा पास-पडोस के लोगो की महती उपस्थिति थी। उनके दाह सस्कार मे सैकडो भाई-वहिनो ने भाग लिया।

रविवार को मुनिश्री नवरत्नमल के सान्निध्य मे स्मृति-सभा का आयोजन हुआ। उनके परिकरो ने तीसरे दिन ही आमेट मे आचार्यवर के दर्शन कर लिये।

आचार्यवर ने उनके वारे मे कहा—"गोगादेवी ने अचानक सथारा किया और अतिम प्रयाण का अपना समय भी वता दिया, जो शत-प्रतिशत ठीक निकला। ऐसे सथारो से धर्म-शासन की प्रभावना होती है।"

स ी वर्ग · गति-प्रगति

परमाराध्य पूज्य गुरुदेव के चिरपालित स्वप्न का प्रतिफलन है समण-दीक्षा। गृहस्थ जीवन से आगे और मुनि जीवन से पूव का यह एक प्रायोगिक जीवन है, जिसमे शिक्षा, साधना, साहित्य-निर्माण, धर्म-यात्रा और जन-सम्पक आदि की दृष्टि से पर्याप्त सुविधाजनक अवकाश है, पर व्यक्तित्व विकास की दृष्टि मे इस श्रेणी मे चरित्र-विकास और अनुशासन का सर्वोपरि मूल्य है।

पाच वर्षो की स्वल्प अवधि मे समण श्रेणी ने अपनी पहचान बनाई है, समाज ने इसका मूल्याकन किया है। समय-समय पर आयोजित विविध समारोहो मे समणीवग की उपस्थिति इसका स्वयभू प्रमाण है।

आलोच्य वष मे समणीवग द्वारा सम्पादित कार्यक्रमो की रूपरेखा इस प्रकार रही—

शिविर का आयोजन

इस वष समणीजी ने लाडनू, चाडवास, बीदासर, छापर, विद्याबाडी, देवगढ आदि स्थानो पर लगे शिविरो मे सक्रिय प्रशिक्षण दिया। शिविर मे प्रेक्षाध्यान व आसन का अभ्यास करवाया गया। सभी स्थानो पर शिविर की अच्छी प्रतिक्रियाए रही। सैकडो-सैकडो भाई-बहिनो का ऐसा अनुभव रहा कि वास्तव मे प्रेक्षाध्यान के द्वारा हम मानसिक स्वास्थ्य के साथ-साथ शारीरिक स्वास्थ्य भी प्राप्त कर सकते है।

आध्यात्मिक सहयोग—सूरतगढ मे साधु-साध्वियो का चातुर्मास नही था। समणी मल्लिप्रज्ञाजी की ससारपक्षीया माताजी अनशन करना चाहती थी। उनकी इच्छा थी कि मुझे अन्तिम समय मे धर्माराधना का सहयोग मिले। इस हेतु समणी सरल प्रज्ञाजी व समणी मल्लिप्रज्ञाजी सूरतगढ गए। श्रीमती राका ने ९ घण्टे के अनशन के बाद समाधि मृत्यु को प्राप्त किया।

दिल्ली—मर्यादा-महोत्सव के कुछ समय पूव ही श्री जवरीमल बैगाणी की धमपत्नी ने अनशन स्वीकार किया। साधु-साध्विया उस समय दिल्ली मे नही थे। उन्होने समणीजी को आमन्त्रण भेजा। समणी सुप्रज्ञाजी व श्रुतप्रज्ञाजी दिल्ली मे लगभग चालीस दिन तक रहे। सवा महीने तक अनशन चला। अनशन मे समणीजी का बराबर धार्मिक सहयोग उन्हे प्राप्त हुआ।

जीवन-विज्ञान सगोष्ठी—७ अगस्त १९८५ को उदयपुर मे शिक्षा गोष्ठी का आयोजन किया गया था, जिममे १७० प्रधानाध्यापक सम्मिलित हुए थे। समणी स्थित प्रज्ञाजी व कुसुमप्रज्ञाजी ने भी उममे भाग लिया। 'शिक्षा का नया आयाम जीवन-विज्ञान' के बा~ मे अपने महत्त्वपूर्ण विचार व्यक्त किए।

२५ अक्टूबर १९८५ को उदयपुर मे व्याख्याता सघ की ओर से नई शिक्षा नीति पर विचार विमर्श हेतु सगोष्ठी आयोजित की गई थी। समणी नियोजिका स्मितप्रज्ञाजी, सुप्रज्ञाजी एव मुदितप्रज्ञाजी ने उसमे भाग लिया। 'शिक्षा की नवीन नीति कैसी होनी चाहिए' इस विषय पर अपने सुझाव प्रस्तुत किए।

लाडनू मे 'जीवन-विज्ञान' सगोष्ठी मे १५० से अधिक प्रधानाध्यापको ने भाग लिया, जिसमे समणी कुसुमप्रज्ञाजी व सरलप्रज्ञाजी ने जीवन-विज्ञान पर प्रकाश डाला।

तपस्या का विशिष्ट प्रयोग—सामान्यत समणीवर्ग मे चतुदशी का उपवास व अष्टमी को एकासन की तपस्याए चलती है। चूकि यह वप हमारे धर्मसघ मे अमृत-महोत्सव के रूप मे मनाया जा रहा है इसलिए समणीवर्ग ने भी तपस्याओ के द्वारा आचार्यवर के चरणो मे अपनी भावभरी भावाञ्जलि अर्पित की। श्रावण के कृष्णपक्ष मे अर्थात् मात्र १५ दिन की अवधि मे १ से ९ तक की लडी सम्पन्न हुई। तपस्याओ का क्रम इस प्रकार है—समणी सुप्रज्ञाजी ९, अक्षयप्रज्ञाजी, मुदितप्रज्ञाजी, परमप्रज्ञाजी ८, उज्ज्वलप्रज्ञाजी, शशिप्रज्ञाजी ७, निर्भयप्रज्ञाजी ६, स्वस्थप्रज्ञाजी, मगलप्रज्ञाजी ५, गुरुप्रज्ञाजी ४, भावित प्रज्ञाजी ३, कुसुमप्रज्ञाजी, सरलप्रज्ञाजी २। इसके अतिरिक्त समणी सुप्रज्ञाजी ७, ३, मगलप्रज्ञाजी ४, स्वस्थप्रज्ञाजी २, ३।

शोध एव उच्च शिक्षा विभाग—समणी नियोजिका स्मितप्रज्ञाजी

साधना विभाग—समणी स्थितप्रज्ञाजी

समण सस्कृति सकाय—समणी परमप्रज्ञाजी

आगम व साहित्य विभाग—समणी कुसुमप्रज्ञाजी

प्रेक्षा-ध्यान पत्रिका का सपादन गत ३-४ वर्षो से नियमित रूप से समणी स्थितप्रज्ञाजी कर रही हैं। सहयोगी के रूप मे समणी सरलप्रज्ञाजी व श्रुतप्रज्ञाजी उनके साथ काम कर रही हे।

आचायप्रवर के अमृत वचनो को एकत्रित करने के लिए समणी

सुप्रज्ञाजी व गुरुप्रज्ञाजी प्रयत्नशील है ।

मुमुक्षु से पूर्व उपासिका श्रेणी मे प्रशिक्षण—पा० शि० सस्था मे प्रवेश लेने से पूर्व दीक्षार्थी बहिने उपासिका के रूप मे प्रशिक्षण ग्रहण करती है । वह प्रशिक्षण समणीजी द्वारा दिया जाता है । उस प्रशिक्षण मे उत्तीण उपासिका ही मुमुक्षु दीक्षा को स्वीकार कर सकती है । इस प्रशिक्षण मे सभी समणीजी का सहयोग रहता है । मुख्य रूप से समणी मधुरप्रज्ञाजी सभी उपासिकाओ की देख-रेख कर रही है ।

विश्वकोश-आगमकोश—समणी उज्ज्वलप्रज्ञाजी व चिन्मयप्रज्ञाजी विश्वकोश का कार्य डा० नथमलजी टाटिया की देखरेख मे कर रही है ।

आगमकोश का कार्य पुन सपादित करने के लिए समणी स्मितप्रज्ञाजी, मधुरप्रज्ञाजी, कुसुमप्रज्ञाजी, अक्षयप्रज्ञाजी व शशिप्रज्ञाजी को नियुक्त किया गया है । समणी कुसुमप्रज्ञाजी निर्युक्तियो का काय कर रही है तथा समणी मधुरप्रज्ञाजी व उज्ज्वलप्रज्ञाजी आगमो की पदानुक्रमणिका का कार्य भी कर रही है ।

सभी समणीजी का अध्ययन का क्रम भी व्यवस्थित चलता है । समणी मल्लिप्रज्ञाजी, निर्भयप्रज्ञाजी व निर्मलप्रज्ञाजी पारमार्थिक शिक्षण सस्था मे अध्ययन करने नियमित रूप से जाती है ।

आचार्य प्रवर व युवाचार्य श्री की पावन सन्निधि—प्रत्येक २ या ३ महीने के अन्तराल के बाद समणीजी के किसी एक ग्रुप को आचायवर की सन्निधि का सौभाग्य मिल ही जाता है । कुछ समणीजी आसीन्द से ही आचाय-वर के साथ यात्रायित थे । इसके बाद अक्षय तृतीया से आमेट तक सभी समणीजी (२२) ने पदयात्रा की थी । पदयात्रा मे आचायश्री, युवाचायश्री व साध्वी प्रमुखाश्रीजी का पावन सान्निध्य भी उन्हे उपलब्ध होता । इस पदयात्रा के दौरान आचार्य प्रवर से सिंदुर प्रकर, युवाचार्यश्री से पातञ्जल योग-दर्शन, साध्वी प्रमुखाश्रीजी से कल्याण मन्दिर के वाचन का उन्हे सौभाग्य भी मिला । आचार्यवर की मगल सन्निधि मे अनायास ही जीवन निर्माण के सूत्र मिल जाते ।

पद-यात्रा

अमृत-महोत्सव के उपलक्ष मे ५० दिन की अमृत-कलश पदयात्रा का कायक्रम नियोजित किया गया था । प्रतिदिन १०-१५ कि० मी० की पदयात्रा होती थी । इस यात्रा मे समणीजी के साथ-साथ गृहस्थ भाई और बहिन भी

थे। यात्रा मे ४ ग्रुप थे। जिनका नेतृत्व किया था—

समणी कुसुमप्रज्ञाजी	—	गगापुर से आसीद	१५ दिन
,, मधुर प्रज्ञाजी	—	आसीद से रीछेड	,, ,,
,, परम प्रज्ञाजी	—	रीछेड से राजसमद	,, ,,
,, सुप्रज्ञाजी	—	राजसमद से आमेट	७ ,,

जैन विद्या परिषद्

अहमदावाद मे आयोजित आल इडिया ओरियन्टल काफ्रेन्स मे स० कुसुमप्रज्ञाजी ने निर्युक्ति पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया था। स० सुप्रज्ञाजी गुरुप्रज्ञाजी ने भी काफ्रेस मे भाग लिया था। आयोजन की अध्यक्षा ई० एस० सोलोमन से लगभग पौन घटे तक समणीजी का वार्तालाप हुआ। उस काफ्रेस मे देश के लगभग १३०० विद्वानो ने भाग लिया। २६ से २८ अक्टूबर को आमेट मे आयोजित जैन विद्या परिपद् मे कई समणियो ने भाग लिया।

सिरियारी मे भिक्षु चरमोत्सव

भिक्षु चरमोत्सव के अवसर पर समणी कुसुमप्रज्ञाजी, परमप्रज्ञाजी, मजुप्रज्ञाजी एव चिन्मयप्रज्ञाजी सिरियारी गए। वहा शातिलालजी मरलेचा के हाट की तकलीफ होने से कार्यक्रम के बीच मे ही समणीजी से गीतिका सुनते-सुनते उनका स्वर्गवास हो गया। राणावास मे स्कूल और कॉलेज मे जीवन-विज्ञान के कार्यक्रम रहे।

कलकत्ता यात्रा

साधु-साध्वियो की अनुपस्थिति मे क्षेत्र सभालने की दृष्टि से प्रथम वार समणी मधुरप्रज्ञाजी, उज्ज्वलप्रज्ञाजी व स्वस्थप्रज्ञाजी का कलकत्ता मे चार मास का प्रवास हुआ। इन चार महिनो की अवधि के दौरान डेढ महिना महासभा भवन मे प्रवास हुआ। प्रात काल का व्याख्यान नियमित रूप से चलता था व प्रत्येक रविवार को विशेष विपयो पर प्रवचन होते थे।

पारिवारिक व व्यक्तिगत परिचय की दृष्टि से कलकत्ता के अलग-अलग उपनगरो हावडा, रामेश्वरमलियालेन, शिवपुर, काशीपुर, अलीपुर, काकुड-गाच्छी, शाटलेक, लेकटाऊन, वाग वाजार, वालीगज, लीलवा आदि मे हुआ।

महासभा भवन मे मर्यादा महोत्सव, होली व महावीर जयती के विशेप कार्यक्रम हुए।

एशियाटिक सोसायटी द्वारा आयोजित महावीर जयती के कायक्रम मे समणीजी उपस्थित थी।

रात्रि मे भारतीय भाषा परिषद् द्वारा आयोजित महावीर जयंति का कार्यक्रम मनाया गया जिसमे पश्चिम बगाल के गवर्नर व उच्चाधिकारी वर्ग उपस्थित था। समणीजी ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये।

अक्षय तृतीया का कार्यक्रम महासभा भवन मे समणीजी के सान्निध्य मे आयोजित हुआ। तीन बहिनो ने वर्षीतप के पारणे किये व कुछ बहिनो ने आगामी वर्ष के लिए वर्षीतप का सकल्प स्वीकार किया।

विश्व हिंदू परिषद् द्वारा चैतन्य महाप्रभु की ५०० वी जन्म शताब्दी का आयोजन किया गया। उन लोगो के विशेष निमत्रण पर समणीजी भी प्रोग्राम मे सम्मिलित हुए व अपने विचार व्यक्त किए।

पर्युषण पर्व पर यात्राए

इस वर्ष समणी वर्ग ने पर्युषण पर्व पाच स्थानो मे मनाए थे। चार ग्रुप बाहर गए थे तथा समणी स्थितप्रज्ञाजी व समणी मगलप्रज्ञाजी ने आचार्य-वर की सन्निधि मे सवत्सरी मनाई।

नेपाल-बिहार की यात्रा

समणी स्मितप्रज्ञाजी, श्रुतप्रज्ञाजी, गुरुप्रज्ञाजी और उज्ज्वलप्रज्ञाजी ने नेपाल व बिहार का सवा दो महीने का दौरा किया। यह यात्रा नेपाल, बिहार अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री हुलासमलजी गोलछा एव अन्य पदाधि-कारियो द्वारा आयोजित की गई थी। सभी क्षेत्रो मे समणीजी के आगमन की पूर्व सूचना थी। प्रत्येक क्षेत्र मे दूसरे क्षेत्र के लोग लेने के लिए पहुच जाते। सभी क्षेत्रो के श्रावको ने व्यवस्था का दायित्व कुशलता से वहन किया।

बिहार—किसनगज, गुलाब बाग, भट्टा, अररिया कोर्ट और आरएस, बिहारीगज, त्रिवेणीगज, सुपौल, प्रतापगज, फारबिसगज, पटना, नालन्दा, पावापुरी, गया, बोधगया आदि।

नेपाल—धरान, धुलाबाडी, राजबिराज, वीरगज, विराटनगर आदि।

पर्युषण पर्व

नेपाल-बिहार की इस यात्रा मे १० दिन का पडाव नेपाल की राज-धानी काठमाण्डौ मे रहा। वहा पर्युषण पर्व मनाया गया। प्रातःकालीन प्रवचन मे निर्धारित विषयो पर भाषण तथा व्याख्यान का कार्यक्रम और रात्रि मे सामयिक समस्याओ के सदर्भ मे चर्चा चली। पर्युषण पर्व के दौरान श्री

भेरुलाल नवलखा ने श्रमणोपासक दीक्षा स्वीकार की। १५०० से अधिक पच-सूत्री सकल्प भरे गये।

जीवन-विज्ञान—नेपाल व बिहार की लगभग ३० स्कूल और कॉलेज मे अणुव्रत व जीवन-विज्ञान पर चर्चा सगोष्ठी हुई।

विराटनगर मे अमृत-महोत्सव

पहला चरण—स्थान-वीरेन्द्र सभागार (town hall)

मुख्य अतिथि—१ डी० आई० जी० रणबहादुर चद २ प्रमुख जिला अधिकारी बाबुलाल पीडेल ३ जिला न्यायाधीश श्री योगनाथ उपाध्याय

दूसरा चरण जैन श्वेताम्बर तेरापथी सभा मे मनाया गया। नेपाल व बिहार के २८ क्षेत्रो के लोग इस अवसर पर उपस्थित थे।

प्रमुख अतिथि—जनता कानून केम्पस के प्रमुख विश्वेश्वरप्रसाद

मुख्य कार्यक्रम

काठमाण्डो मे रॉटरी क्लब मे भाषण। विषय—Tensions release through preksha meditation

लियो और लायन्स क्लब विराटनगर मे सामाजिक सेवा दिवस के उपलक्ष मे 'सेवा के सदर्भ मे मानवीय मूल्यो का विकास' विषय पर वक्तव्य हुआ।

मुख्य अतिथि—१ जिला पचायत सभापति चैतुलाल चौधरी २ सिविल सजन डा० कल्याण राज पाण्डे ३ सनातन धर्म सेवा समिति के अध्यक्ष श्री रामेश्वरलाल अयोल।

विराटनगर मे जेसीज (युवको की अतर्राष्ट्रीय सस्था) मे कार्यक्रम। महेन्द्र मोरग आदर्श बहुमुखी केन्द्रीय केम्पस के समिक्षालय मे विराटनगर के अध्यक्ष श्री बैजनाथ थपालिया की अध्यक्षता मे करीब ६०-७० प्राध्यापको की उपस्थिति मे 'शिक्षा का नया आयाम जीवन-विज्ञान' विषय पर परिचर्चा चली।

राजगृह मे श्रावक सम्मेलन

पटना से लगभग १६० भाई-बहिने सघ रूप मे श्रावक सम्मेलन मे भाग लेने पहुचे। बिहार के अन्य क्षेत्रो से भी लोग आए थे।

वीरायतन मे उपाध्याय अमरमुनि के साथ लगभग १ घटे का वार्तालाप हुआ।

इस प्रकार अमृत-महोत्सव के उपलक्ष्य मे ५३ दिनो की नेपाल और बिहार की यात्रा सानद सम्पन्न कर समणी वर्ग ने आमेट मे ६ नवम्बर १९८५ को आचार्यवर के दर्शन किए ।

गुजरात यात्रा

समणी परमप्रज्ञाजी, सहजप्रज्ञाजी, भाविल प्रज्ञाजी और निर्मलप्रज्ञाजी ने पर्युपण पर्व भुज (गुजरात) मे मनाया। बाव, कच्छ, गाधीधाम आदि अनेक क्षेत्रो मे भी कार्यक्रम समायोजित हुए ।

बगाल-असम यात्रा

समणी मधुरप्रज्ञाजी के नेतृत्व मे समणी सरलप्रज्ञाजी, शशिप्रज्ञाजी व मल्लिप्रज्ञाजी का ग्रुप प्रतापसिहजी बैद के साथ सिलिगुडी गया। दो माह के अन्तराल मे बिहार, बगाल, असम एव भुटान इन चार प्रान्तो मे समणीजी के कार्यक्रम रहे । यात्रा के दौरान स्कूलो, कॉलेजो मे जीवन-विज्ञान विषय पर समणीजी के कार्यक्रम रहते, जिसमे विद्यार्थी वर्ग ने विशेष उत्सुकता दिखाई।

१ Lions culb द्वारा आयोजित Three star होटल मे drug awarness पर कार्यक्रम हुआ जिसमे प्रबुद्ध लोग सम्मिलित थे ।

२ शिक्षक लोगो के मध्य धुबरी मे Distict library मे कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमे समणीजी ने अपने विचार प्रस्तुत किए ।

३ B S F कैम्प मे सैनिक अधिकारियो के बीच प्रेक्षाध्यान का प्रयोग कराया गया जिसमे सैनिक लोगो ने एक विशेष प्रकार की शाति का अनुभव किया और कहा कि जब भी मौका मिले, आप यहा आए और हमे प्रेक्षाध्यान का व्यावहारिक प्रयोग करवाए ।

गौहाटी मे पञ्चदिवसीय प्रवास रहा, जिसमे रात्रि मे अलग-अलग विषयो पर प्रवचन रहते ।

दिगम्बर समाज के एक प्रबुद्ध श्रावक जयकुमार जैन ने कहा कि अगर इस नवीन श्रेणी का निर्माण २००० वर्ष पहले होता तो आज जैन धर्म का विस्तृत रूप सामने आता ।

पर्युषण पर्व का कार्यक्रम सिलीगुडी मे मनाया गया। भाई-बहिनो को प्रशिक्षण व रात्रि मे प्रवचन का कार्यक्रम रहता ।

सिलीगुडी मे पञ्चदिवसीय शिविर का आयोजन हुआ, जिसमे युवक लोगो ने विशेष रूप से रुचि दिखाई।

सिलिगुडी मे तुलसी प्राइमरी स्कूल का उद्‌घाटन समारोह समणीजी के सान्निध्य मे मनाया गया, जिसमे समणीजी ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

महाराष्ट्र—खानदेश की यात्रा

समणी कुसुमप्रज्ञाजी, मुदितप्रज्ञाजी, चिन्मयप्रज्ञाजी एव अक्षयप्रज्ञाजी का ग्रुप प्रेमचदजी सुराणा के साथ औरगावाद गया। २४ दिनो की यात्रा के दौरान जलगाव, साक्री, धूलिया, चालीसगाव, जालना, लातूर, लोणार, जालोर, भुसावल, जामनेर, कुररा, बीड, रतलाम आदि २३ गावो मे कायक्रम रहे। यात्रा मे करीबन २० स्कूल और कॉलेजो मे कायक्रम रहा, जिसमे अनेक विद्यार्थियो एव अध्यापको ने जीवन-विज्ञान मे रुचि दिखाई तथा सकल्प-पत्र भरे। २५-३० हजार विद्यार्थियो को जीवन-विज्ञान की जानकारी दी तथा लगभग ६००० सकल्प पत्र भरवाए। पर्युपण के दौरान श्रमणोपासक दीक्षा का सक्षिप्त कायक्रम रहा। ८ दिनो मे भाई-बहिनो मे १२ लाख का जप हुआ। व्यक्तिगत रूप से कुछ पारिवारिक कलहो का निपटारा हुआ। औरगाबाद सभा मे अथ को लेकर कुछ मनमुटाव था, उसमे पारस्परिक प्रेम का वातावरण बना। वहा के प्रमुख पत्रकार श्री गाधी से दो दिन तक वार्तालाप हुआ जिसमे वह बहुत प्रभावित हुआ।

विशेष कार्यक्रम

जलगाव मे साध्वी विद्यावतीजी के सान्निध्य मे अनेक गणमान्य व्यक्तियो की उपस्थिति मे पाच सावजनिक कायक्रम रहे। विपय—महावीर की साधना का रहस्य, अमृत पान कैसे करे ? सुन्दर कौन ? इत्यादि।

धूलिया मे स्थानकवासी साध्वी प्रीतिसुधाजी के साथ कायक्रम रहा। उन्होने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—आचार्यश्री ने समणश्रेणी की स्थापना करके वास्तव मे जैन जगत् के लिए अद्वितीय काय किया है। युवाचायश्री के साहित्य को देखकर मन बासो उछलने लगता है।

बीड मे M P केशरदेवी तथा ब्रह्मकुमारी लता बहिन के साथ विजय टाकीज मे 'मानसिक तनाव के कारण और निवारण' पर सुन्दर कायक्रम रहा। M P ने विचार व्यक्त करते हुए कहा—आचार्यश्री ने साध्वियो और समणियो मे छोटी आयु मे भी अच्छी शिक्षा का प्रचार किया हे। मै उनसे दिल्ली मे मिली थी तभी से उनसे बहुत प्रभावित हू।

चालीसगाव मे स्थानकवासी साध्विया ज्ञानप्रभाजी आदि के साथ

रात्रि प्रवास रहा। उनको तेरापथ की जानकारी दी जिससे वे बहुत प्रभावित हुई।

जालना के सार्वजनिक कार्यक्रम मे नगराध्यक्ष, S P तथा मुख्य न्यायाधीश कुलकर्णीजी आदि उपस्थित थे।

औरगाबाद हाईकोर्ट मे लगभग ६०० वकील तथा ४ न्यायाधीशो के बीच कार्यक्रम रहा। न्यायाधीश तथा वकीलो मे अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा—'आज तक हम अधकार का जीवन जी रहे थे, पैसे को ही सब कुछ मानते थे लेकिन आज मस्तिष्क मे प्रकाश का अनुभव हुआ है। आचार्य तुलसी देश के लिए बहुत कार्य कर रहे है।'

गुरुद्वारे मे अनेक सिखो के मध्य कार्यक्रम रहा। पर्युषण के दौरान स्थानकवासी और मूर्तिपूजक साध्वियो के साथ सामूहिक कार्यक्रम रहा। जिसकी प्रतिक्रिया बहुत अच्छी रही। सामान्य कार्यक्रमो मे भी अन्य जैन समाज के लोगो की अच्छी उपस्थिति होती थी। महिला सम्मेलन, श्रावक सम्मेलन का आयोजन भी रहा।

मध्यप्रदेश—उडीसा यात्रा

समणी सुप्रज्ञाजी, स्वस्थप्रज्ञाजी, मजुप्रज्ञाजी व निर्भयप्रज्ञाजी का लाडनू से १ ६ ८५ को प्रस्थान हुआ। समणीजी के सान्निध्य मे सूरत मे सार्वजनिक कार्यक्रम व प्रेस कान्फ्रेन्स हुई। बारडोली मे 'वर्तमान युग मे धर्म की आवश्यकता' विषय पर चर्चा-परिचर्चा। नागपुर, राजनादगाव, दुर्ग, राजिम तथा उडीसा मे काटाभाजी, टिटिलागढ, केसिगा मे भी सुन्दर कार्यक्रम हुए।

रायपुर मे पर्युषणपर्व के नवाह्निक कार्यक्रम हुए। वहा तप-जप अनुष्ठान, श्रावक सम्मेलन, युवक सम्मेलन एव महिला सम्मेलन का आयोजन हुआ।

२१ दिनो की इस यात्रा मे मूर्तिपूजक, स्थानकवासी साधु-साध्वियो से कई बार मिलन व वार्तालाप हुआ। इस यात्रा मे १७ क्षेत्रो मे विविध कार्यक्रम हुए।

रायपुर के अतिरिक्त सूरत, नागपुर व जगदलपुर के कार्यक्रम विशेष प्रभावोत्पादक रहे।

मुमुक्षु बहिनो की पर्युषण यात्रायें

पर्युषण के पावन अवसर पर जिन क्षेत्रो मे साधु-साध्वियो का चातुर्मास

नही होता, वहा के लोग चाहते है कि उन क्षेत्रो मे समणिया और मुमुक्ष बहिने आकर उनकी धर्माराधना मे सहयोगी बने। इस बार अनेक क्षेत्रो से निमत्रण प्राप्त हुए थे, किंतु जिन क्षेत्रो से निमत्रण पहले मिला, प्राथमिकता भी सबसे पहले उन्ही को दी गई। समणिया पाच व मुमुक्षु बहिने तीन स्थानो पर गई। मुमुक्षु बहिने जिन क्षेत्रो मे गई, उनके नाम इस प्रकार हे—

१ मुमुक्षु समता	विशाखापत्तनम् (आन्ध्र प्रदेश)
२ मुमुक्षु सुप्रभा	कटक (उडीसा)
३ मुमुक्षु ज्योति	अजमेर (राजस्थान)

उपासक श्री मानव मित्र (श्री मानमल आचलिया-सरदारशहर) तथा मुमुक्षु गणेश पर्युषण मनाने के लिए जावद गये।

जिन क्षेत्रो मे समणिया, मुमुक्षु बहिने व उपासक गए, वहा बहुत अच्छा काम हुआ। पार्श्ववर्ती क्षेत्रो के लोग भी कार्यक्रमो मे सोत्साह भाग लेते थे। पिछले कुछ अर्से से प्रारम्भ इस क्रम की समाज मे सुन्दर प्रतिक्रिया हुई है।

उपासक श्री मानवमित्र

श्री मानमल आचलिया जिन्होने गत वर्ष भाद्रव शुक्ला १३ को जोधपुर मे आचार्यवर से एक वष के लिए उपासक-दीक्षा स्वीकार की थी। उन्होने इस साधनाकाल मे पैसे को छूने तक का त्याग कर दिया। अमृत-महोत्सव पर समायोजित अमृत-कलश-पदयात्रा मे सर्वाधिक पैदल चलने वाले वे ही थे। यह यात्रा जब आमेट मे परिसम्पन्न हुई, उस समय आचार्यवर ने उनका नाम मानमल से बदल कर मानव मित्र कर दिया।

२५ जून को आमेट से जोधपुर मेल से लाडनू जा रहे थे। रेल मे बहुत ज्यादा भीड थी मानवमित्र जी गाडी के दरवाजे के पास बैठ गये। उसी डिब्बे मे बैठा एक बडा मजदूर परिवार, (जिसमे युवक, युवतिया, बच्चे सभी बैठे थे।) ने उनसे छेडखानी करनी शुरू कर दी। किसी ने उनके कपडे खीचना शुरू कर दिया। कोई उनके बाल नोचने लग गये। बच्चे उनके सिर पर मुक्के से वार करते रहे। उनके थेले को भी इधर उधर कर दिया और उनसे गाडी से नीचे उतरने का दबाव डाला। मानवमित्र जी ने उनको समझाने की कोशिश की। इतने मे गाडी रवाना हो गई। जब उन लोगो ने उन्हे नीचे गिराने की धमकी दी, तो उन्होने कहा—देखो, अगर इस तरह तुम लोग करते हो, यह ठीक नही, इसका परिणाम बुरा होगा। ज्योही अगला स्टेशन आया उस मजदूर

परिवार का एक सदस्य गाडी के नीचे आ गया, तत्काल पूरा परिवार नीचे उतर गया। डिब्बे मे बैठे अन्य लोग कहने लगे—देखो, बाबा को तग किया और यह दुर्घटना हो गई। अब तो सबने बाबा मानवमित्रजी के चरण छूए और क्षमा मागी। उनका बेला भी उन्हे पुन मिल गया।

लाडनू मे मानवमित्र जी को हनुमानगढ मे सघीय दृष्टि से कार्य करने का सकेत मिला। श्री रतनलाल चौपडा के साथ वे रवाना हुए। गगाशहर, श्रीकरणपुर होते हुए हनुमानगढ पहुचे। वहा समाज के प्रमुख श्री खेताराम बाठिया से वे मिले और अपने आने का उद्देश्य बताया। वहा समाज का कोई सार्वजनिक स्थान नही है। गाव के बीच स्थित धमशाला मे वे रहे। प्रात व्याख्यान देते, जिसमे पाच-सात भाई व चालीस-पचास बहिने आ जाती। पचपन तेरापथ के घरो वाले इस नगर मे वे सतरह दिन रहे। इस दौरान सघ से बहिर्भूत साधुओ के अनुयायियो ने उन्हे परेशान करने का काफी प्रयास किया, फिर भी वे अविचल भाव से अपने काम करने मे लगे रहे। उन्होने एक-एक परिवार की धार्मिक आस्था को टटोला। कई परिवारो को श्रद्धा मे स्थिर करने का भी उन्होने प्रयत्न किया। वे वर्षीतप भी कर रहे है। वे अपने इस प्रवास के बीच पीलीबगा भी गये। वहा विराजित साध्वी श्री लिछमाजी के दर्शन किये। उनकी यह यात्रा भी सघीय दृष्टि से महत्त्वपूण साबित हुई।

मुमुक्षु हसमुख की जीवन-विज्ञान यात्रा

मुमुक्षु श्री हसमुख भाई जीवन-विज्ञान के प्रशिक्षक है। उन्होने जैन विश्व भारती मे जीवन-विज्ञान का सक्रिय प्रशिक्षण लिया हे। उन्होने राणावास व जयपुर की यात्रा मे प्रेक्षाध्यान व जीवन-विज्ञान के प्रयोगो से विद्यार्थियो, शिक्षको व अन्य रुचि रखने वाले लोगो को अवगत कराया। राणावास के पचदिवसीय प्रवास का विद्यार्थियो पर अच्छा प्रभाव पडा। सुमति शिक्षा सदन, जहा जीवन-विज्ञान का प्रयोग चल रहा है, के प्रधानाध्यापक ने यात्रा की परिसम्पन्नता पर १० अक्टूबर ८५ को प्रदत्त अपने एक पत्र मे लिखा—

जीवन-विज्ञान—प्रेक्षाध्यान

(दिनाक ५ मे अक्टूबर तक)

हमारे विद्यालय मे श्री हसमुख भाई दिनाक ५ १० ८५ को आये। इन्होने प्रार्थना सभा मे सभी छात्रो को जीवन-विज्ञान की वार्ता द्वारा जानकारी दी।

विद्यालय मे छात्र सख्या की अधिकता से छात्रो को ग्रुप मे विभाजित

नही होता, वहा के लोग चाहते है कि उन क्षेत्रो मे समणिया और मुमुक्ष वहिने आकर उनकी धर्माराधना मे सहयोगी वने। इस वार अनेक क्षेत्रो से निमत्रण प्राप्त हुए थे, किंतु जिन क्षेत्रो से निमत्रण पहले मिला, प्राथमिकता भी सबसे पहले उन्ही को दी गई। समणिया पाच व मुमुक्षु वहिने तीन स्थानो पर गई। मुमुक्षु वहिने जिन क्षेत्रो मे गई, उनके नाम इस प्रकार है—

१ मुमुक्षु समता	विशाखापत्तनम् (आन्ध्र प्रदेश)
२ मुमुक्षु सुप्रभा	कटक (उडीसा)
३ मुमुक्षु ज्योति	अजमेर (राजस्थान)

उपासक श्री मानव मित्र (श्री मानमल आचलिया-सरदारशहर) तथा मुमुक्षु गणेश पर्युषण मनाने के लिए जावद गये।

जिन क्षेत्रो मे समणिया, मुमुक्षु वहिने व उपासक गए, वहा वहुत अच्छा काम हुआ। पार्श्ववर्ती क्षेत्रो के लोग भी कायक्रमो मे सोत्साह भाग लेते थे। पिछले कुछ अर्से से प्रारम्भ इस क्रम की समाज मे सुन्दर प्रतिक्रिया हुई है।

उपासक श्री मानवमित्र

श्री मानमल आचलिया जिन्होने गत वर्ष भाद्रव शुक्ला १३ को जोधपुर मे आचार्यवर से एक वप के लिए उपासक-दीक्षा स्वीकार की थी। उन्होने इस साधनाकाल मे पैसे को छूने तक का त्याग कर दिया। अमृत-महोत्सव पर समायोजित अमृत-कलश-पदयात्रा मे सर्वाधिक पैदल चलने वाले वे ही थे। यह यात्रा जब आमेट मे परिसम्पन्न हुई, उस समय आचार्यवर ने उनका नाम मानमल से वदल कर मानव मित्र कर दिया।

२५ जून को आमेट से जोधपुर मेल से लाडनू जा रहे थे। रेल मे वहुत ज्यादा भीड थी मानवमित्र जी गाडी के दरवाजे के पास वैठ गये। उसी डिव्वे मे वैठा एक वडा मजदूर परिवार, (जिसमे युवक, युवतिया, वच्चे सभी वैठे थे।) ने उनसे छेडखानी करनी शुरू कर दी। किसी ने उनके कपडे खीचना शुरू कर दिया। कोई उनके वाल नोचने लग गये। वच्चे उनके सिर पर मुक्के से वार करते रहे। उनके थेले को भी इधर उधर कर दिया और उनसे गाडी से नीचे उतरने का दबाव डाला। मानवमित्र जी ने उनको समझाने की कोशिश की। इतने मे गाडी रवाना हो गई। जब उन लोगो ने उन्हे नीचे गिराने की धमकी दी, तो उन्होने कहा—देखो, अगर इस तरह तुम लोग करते हो, यह ठीक नही, इसका परिणाम वुरा होगा। ज्योही अगला स्टेशन आया उस मजदूर

परिवार का एक सदस्य गाडी के नीचे आ गया, तत्काल पूरा परिवार नीचे उतर गया। डिब्बे मे बैठे अन्य लोग कहने लगे—देखो, बाबा को तग किया और यह दुर्घटना हो गई। अब तो सबने बाबा मानवमित्रजी के चरण छूए और क्षमा मागी। उनका थेला भी उन्हे पुन मिल गया।

लाडनू मे मानवमित्र जी को हनुमानगढ मे सघीय दृष्टि से कार्य करने का सकेत मिला। श्री रतनलाल चौपडा के साथ वे रवाना हुए। गगाशहर, श्रीकरणपुर होते हुए हनुमानगढ पहुचे। वहा समाज के प्रमुख श्री खेताराम बाठिया से वे मिले और अपने आने का उद्देश्य बताया। वहा समाज का कोई सार्वजनिक स्थान नही हे। गाव के बीच स्थित धर्मशाला मे वे रहे। प्रात व्याख्यान देते, जिसमे पाच-सात भाई व चालीस-पचास बहिने आ जाती। पचपन तेरापथ के घरो वाले इस नगर मे वे सतरह दिन रहे। इस दौरान सघ से बहिर्भूत साधुओ के अनुयायियो ने उन्हे परेशान करने का काफी प्रयास किया, फिर भी वे अविचल भाव से अपने काम करने मे लगे रहे। उन्होने एक-एक परिवार की धार्मिक आस्था को टटोला। कई परिवारो को श्रद्धा मे स्थिर करने का भी उन्होने प्रयत्न किया। वे वर्षीतप भी कर रहे है। वे अपने इस प्रवास के बीच पीलीबगा भी गये। वहा विराजित साध्वी श्री लिछमाजी के दर्शन किये। उनकी यह यात्रा भी सघीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण साबित हुई।

मुमुक्षु हसमुख की जीवन-विज्ञान यात्रा

मुमुक्षु श्री हसमुख भाई जीवन-विज्ञान के प्रशिक्षक है। उन्होने जैन विश्व भारती मे जीवन-विज्ञान का सक्रिय प्रशिक्षण लिया हे। उन्होने राणा-वास व जयपुर की यात्रा मे प्रेक्षाध्यान व जीवन-विज्ञान के प्रयोगो से विद्या-र्थियो, शिक्षको व अन्य रुचि रखने वाले लोगो को अवगत कराया। राणावास के पचदिवसीय प्रवास का विद्यार्थियो पर अच्छा प्रभाव पडा। सुमति शिक्षा सदन, जहा जीवन-विज्ञान का प्रयोग चल रहा है, के प्रधानाध्यापक ने यात्रा की परिसम्पन्नता पर १० अक्टूबर ८५ को प्रदत्त अपने एक पत्र मे लिखा—

जीवन-विज्ञान—प्रेक्षाध्यान

(दिनाक ५ से अक्टूबर तक)

हमारे विद्यालय मे श्री हसमुख भाई दिनाक ५ १० ८५ को आये। इन्होने प्रार्थना सभा मे सभी छात्रो को जीवन-विज्ञान की वार्ता द्वारा जान-कारी दी।

विद्यालय मे छात्र सरया की अधिकता से छात्रो को ग्रुप मे विभाजित

कर जीवन-विज्ञान का प्रायोगिक प्रशिक्षण करवाया। सभी छात्र व अध्यापक वर्ग ने इसमे प्रसन्नता पूवक भाग लिया। सभी ने काय को सराहा एव इसे नियमित रखे जाने की रुचि वताई।

हम सभी हसमुख भाई के आभारी हैं। शाला परिवार ऐसे कायकर्ता के श्रम की सराहना करता है तथा निवेदन करता है कि ऐसे अनुभवी व्यक्तियो को भेजकर इस प्रकार के शिक्षण को नियमित रखा जाय।"

जयपुर के २७ सितम्बर से ४ अक्टूवर के सप्तदिवसीय प्रवास मे श्री हसमुख ने तेरापथ शिक्षा समिति की अनेक शिक्षण सस्थाओ मे प्रेक्षाध्यान व जीवन-विज्ञान का प्रयोग सिखाया। इस कार्य मे उन्हे श्री निर्मल सुराणा, श्री पन्नालाल बाठिया, स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री आर० एस० पाल, अन्य अध्यापको व विद्यार्थियो का अच्छा सहयोग मिला। शिविर समाप्ति के बाद स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री पाल ने एक पत्र प्रेपित किया, जो इस प्रकार है—

"मृदु भाषी भाई हसमुख ने श्री जैन श्वेनाम्वर तेरापथी शिक्षा समिति के अधीन सचालित शिक्षण सस्थाओ मे जिस सहजता और सुबोधता के साथ प्रेक्षाध्यान एव जीवन-विज्ञान का त्रिदिवसीय शिविर का सचालन किया वह प्रशसनीय ही नही, प्रेरणास्पद भी रहा।

सम्वन्धित सस्थाओ मे अध्ययन रत कक्षा पचम से हायर सैकण्डरी वग तक के शिक्षार्थियो के साथ शाला के शिक्षक वर्ग ने भी अभिप्रेरित होकर इस शिविर सचालन मे अपना सक्रिय योगदान ही नही दिया, वल्कि खुलकर भाग भी लिया। जो विपय उपादेयता का सहज द्योतक है।

प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान-कार्यक्रम का सचालन, छात्र वर्ग के द्वारा शिविर समाप्ति के बाद भी होता रहेगा, पर योग्य व प्रशिक्षित अध्यापक के अभाव मे इसे वह रूप देने मे कुछ असम्भावनाये नजर आती है, जिस रूप की कल्पना विचाराधीन है।"

स्कूलो के अतिरिक्त श्री हसमुख ने वहा विराजित मुनि श्री राकेश-कुमार के सान्निध्य मे सी० स्कीम व साध्वी श्री मोहनकुमारी के सान्निध्य मे मिलाप भवन मे प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाये। इसके अतिरिक्त योगासनो का अभ्यास व जीवन-विज्ञान के सैद्धातिक स्वरूप की भी अवगति दी। उनके जयपुर प्रवास के जीवन-विज्ञान व प्रेक्षाध्यान कायक्रमो की पत्रो मे अच्छी चर्चा रही।

परिशिष्ट

परिशिष्ट—१

१२१ वें मर्यादा-महोत्सव पर आचार्यवर द्वारा समुच्चारित गीतिका

सता ! शासण ओ स्वामीजी रो, जग मे अनमोल हीरो।
गौरवमय जिनशासन री शान हे,
हो सता ! आपा रे आस्था रो आस्थान है ॥*
तेरापथ अनत शान्ति रो साधन हे, शोधन हे।
अनुशासन रो उदाहरण हे विघनहरण अविघन है।
लाखा-लाखा रो जीवन धन हे, जन-जन रो सजीवन हे।
दीना रो, अत्राणा रो त्राण हे ॥१॥
ज्ञान-ध्यान री पावन धारा बहे सदा क्षण-क्षण मे।
नया-नया आयाम प्रगति रा, जागृति हे कण-कण मे।
प्रेक्षा-सरिता मे जनता न्हावै, जडता जड स्यू मिट ज्यावे।
पावै सहज्या जीवन-विज्ञान हे ॥२॥
तीव्र तपोवल धारी भारी सत हुया इण गण मे।
रम्या निरन्तर श्रम-सेवायुत सयम रे प्रागण मे।
अनशन आतापन इचरजकारी, आचार्यां स्यू इकतारी।
सारी स्थितिया रो अनुसन्धान है ॥३॥
काढे गली गिवार, महाजन "जय" गुरु-आणा ओटी।
म्हारे आप बाप हो गुरुवर ! चढग्यो "कनक" कसौटी।
आ हे अपणे शासण री शैली, अद्भुत अनुभूत नवेली।
जुग-जुग रो जो इतिहास प्रमाण हे ॥४॥
आज्ञा-अनुशासन रा भागल भटक्या हे, भटकै है।
नो ह्नवाए नो पाराए अधविच ही अटके हे।
देखो अब तक की ख्यात पुराणी, पावो प्रत्यक्ष पितवाणी।
भिक्षु-वाणी रो ओ वरदान है ॥५॥
मर्यादा री मीनारा पर अक्षय ज्योत जलावा।
मानव मन रे गलियारा रो तामस दूर भगावा।
भावी पीढी नै सुघड बणावा, गहरा सस्कार जमावा।
मर्यादा-मोच्छव रो आह्वान हे ॥६॥
मालाणी "जसवल" जनबल री छटा छबीली छाई।
भी भा रा ज म मा डा का करुणा "तुलसी" तरुणाई।
च्यारू तीरथ मे खूब खुशाली, खिल री, है रू-रूवाली।
अब जल्दी मेवाडा प्रस्थान है ॥७॥

*लय : सखियो ! रह-रह कर याद आती।

परिशिष्ट-२

वर्षीतप का पारणा करने वाले भाई-बहिनो के नाम—

१ श्रीमती कमलादेवी मादरेचा, चारभुजा
२ ,, इचरजदेवी चौरडिया, विलासीपाडा
३ ,, श्रीदेवी चोरडिया, विलासीपाडा
४ ,, बरजीदेवी घोडावत, लाडनू
५ ,, पुष्पादेवी बोहरा देवगढ
६ ,, मागीबाई मेहता, सेवत्री
७ ,, भवरीदेवी जैन, बीदासर
८ ,, मागीदेवी भूतोडिया, सुजानगढ
९ ,, सन्तोपदेवी मूथा, ब्यावर
१० ,, ककुदेवी मुणोत, बोराणा
११ ,, भवरीदेवी डाकलिया, गगाशहर
१२. ,, सुन्दरदेवी पगारिया, लाडनू
१३ ,, तारादेवी सेठिया, तिरुकोइलूर
१४ ,, कचनदेवी श्रीमाल, दीवेर
१५ ,, बादामदेवी जैन, दीवेर
१६ ,, शोभादेवी भण्डारी, इरोड
१७ ,, मोहनीदेवी मरलेचा, पूना
१८ ,, रूपकवर मेहता, भीलवाडा
१९ ,, सल्लूदेवी वडाला, पडासली
२० ,, छोटादेवी सिंघवी, गगाशहर
२१ ,, लहरीदेवी नागावत, ऊमरी
२२ ,, मजूदेवी नागावत, ऊमरी
२३ ,, सौभागदेवी वडाला, पडामली
२४ ,, रूपालीदेवी पटावरी, चारभुजा
२५ ,, राजीदेवी पटावरी, चारभुजा
२६ ,, शातिदेवी जैन, बालोतरा
२७ ,, रूपादेवी स्यामसुखा, गगाशहर

२८ श्रीमती छगनीदेवी चोरडिया, विलासीपाडा
२९ ,, सोनादेवी कोठारी, चूरू
३० ,, पन्नादेवी बाठिया, चूरू
३१ ,, मीठूदेवी जैन, पारडी
३२ ,, रतनदेवी जैन, सरदारशहर
३३ ,, कमलादेवी जैन, सवाईमाधोपुर
३४ ,, मनहरदेवी जैन, ,,
३५ ,, कल्याणीदेवी, ,,
३६ ,, चन्द्रादेवी जैन, जयपुर
३७ ,, चौसरदेवी जैन, उदयपुर
३८ ,, कचनदेवी जैन, सवाईमाधोपुर
३९ ,, भवरीदेवी जैन, नाथद्वारा
४० ,, सावजीदेवी जैन, मदाना
४१ ,, कचनदेवी सचेती, कुवारिया
४२ ,, गोरजादेवी जैन, तारानगर
४३ ,, लक्ष्मीदेवी जैन, ,,
४४ ,, छगनदेवी जैन, ,,
४५ ,, कवरदेवी जैन, फतेहपुर
४६ ,, हुलासीदेवी जैन, सुजानगढ
४७ ,, फूलीदेवी जैन, बालोतरा
४८ ,, हीरादेवी जैन, श्रीडूगरगढ
४९ ,, नरकलदेवी मेहता, मभेरा
५० ,, कमलादेवी मेहता, मभेरा
५१ ,, मनोहरीदेवी जैन, फारविसगज
५२ ,, रायकवरीदेवी जैन, ,,
५३ ,, गोदीदेवी जैन, गगावती
५४ ,, सतोपदेवी, चारभुजा
५५ ,, दाडमबाई, पेटलावद
५६ ,, शान्तादेवी, आसीन्द
५७ ,, आशादेवी, उदासर
५८ ,, शीरूदेवी, छापर

५९ श्रीमती केसीबाई, बडाखेडा
६० ,, भवरीदेवी, मेडता
६१ ,, शान्तिदेवी, मेडता
६२ ,, पानीदेवी, पारडी
६३ ,, पतासीबाई, ब्यावर
६४ ,, मानादेवी, राजलदेसर
६५ ,, तीजूदेवी, श्रीडूगरगढ
६६ ,, गीगीदेवी, बोरावड
६७ ,, नारायणीदेवी, बीकानेर
६८ ,, वरजीदेवी डागा, कलकत्ता
६९ ,, पिस्तादेवी सकलेचा, बैंगलोर
७० ,, पानादेवी गोलछा, लाडनू
७१ ,, शकरीबाई कोठारी, गजपुर
७२ ,, गीगीदेवी सालेचा, अहमदाबाद
७३ ,, शीशरबाई, सरवडी
७४ ,, रसालदेवी वोका, काचीपुरम्
७५ ,, सज्जनबाई, नाथद्वारा
७६ ,, सोहनबाई, पहुना
७७ ,, मागीबहिन, लाबोडी
७८ ,, उर्मिलादेवी, देवगढ
७९ ,, बादामबाई, देवगढ
८० ,, गेरीबाई, देवगढ
८१ ,, मनभरबाई, सवाईमाधोपुर
८२ ,, प्रतापबाई जैन, केलवा
८३ ,, कचनदेवी जैन, करेडा
८४ ,, भवरीदेवी लोढा, गगाशहर
८५ ,, छोटीदेवी सेठिया, उदासर
८६ ,, उदीदेवी तातेड, श्रीडूगरगढ
८७ ,, कमलादेवी बूचा, गगाशहर
८८ ,, शीशरदेवी जैन, राजनगर
८९ ,, बदामबाई जैन, रेवाडी

९० ,, भागीरथी जैन, सरदारशहर
९१ ,, एस० एस० मेहता, भीलवाडा
९२ ,, पेफीदेवी डोसी, पाली
९३ ,, असनकवर वडाला, पडासली
९४ ,, रतनदेवी दूगड, श्रीडूगरगढ
९५ ,, राजादेवी वैद, गगाशहर
९६ ,, तीजादेवी कोठारी, कालू
९७ ,, रुक्मादेवी भसाली, गगाशहर
९८ ,, पेमीदेवी बोथरा, ,,
९९ ,, मोरीदेवी सुराना, पडिहारा
१०० ,, नीकूबाई, अहमदाबाद
१०१ ,, हगामीबाई, मोखुन्दा
१०२ ,, झमकूदेवी, जसोल
१०३ ,, इन्दिरादेवी सुराना, गोहाटी
१०४ ,, रेशमीदेवी, जसोल
१०५ ,, शातिदेवी चोपडा, बालोतरा
१०६ ,, लक्ष्मीबाई सोलकी, कुठवा
१०७ ,, कमला जैन, शाकरडा (अहमदाबाद)
१०८ ,, भवरीदेवी बरडिया, (श्रीडूगरगढ)
१०९ ,, झमकूदेवी चोपडा, बालोतरा
११० ,, पुष्पाबाई, कोटा
१११ ,, मथुरादेवी जैन, भगवतगढ
११२ ,, सुखराजदेवी दूगड, बीदासर
११३ ,, नजरदेवी, बागपुरा (उदयपुर)
११४ ,, नाथाबाई, उदयपुर
११५ ,, गट्टू जैन, चिकमगलूर
११६ ,, पानीबाई, कटार (आसीन्द)
११७ ,, भवरबाई, उदयपुर
११८ ,, झिनकारदेवी चोरडिया, राजविराज
११९ श्री मिश्रीलाल जैन, सवाईमाधोपुर
१२० ,, चदनमलजी जैन, सवाईमाधोपुर

१२१ श्री लूणकरणजी सेठिया, भीनासर
१२२ ,, चम्पालाल गादिया, चिकमगलूर
१२३ ,, मागीलाल दूगड, लाडनू
१२४ ,, हरखचद भसाली, गगाशहर

परिशि —३

बधाई-गीत

भैक्षव शासन के शृगार, मानवता के व्याख्याकार,
गण की आज बधाई लो,
गण की आभा बढाई जो ॥*

'सघे शक्ति कलौ युगे' यह पाया मत्र निधान,
शिष्य वर्ग को दिया अनुत्तर विद्या का वरदान।
पहला पाठ व्यक्ति-निर्माण,
निखरा सबमे जीवन-प्राण ॥१॥

बढे चरण आगे अब गूजा अणुव्रत का जय नाद,
विस्मृत नैतिकता के स्वर ने पाया फिर सवाद।
सयम ही जीवन यह घोष,
उभरा नैसर्गिक सतोष ॥२॥

दो पैरो से नापा प्राय सारा हिन्दुस्तान,
जन-साधारण से साधा, सीधा सम्पर्क महान्।
की वैचारिक धार्मिक क्राति
निकली जन-मानस की भ्राति ॥३॥

परम्परा मे परिवर्तन का मणि-काचन सयोग,
युग बदला, बदला मानस भी अभिनव किए प्रयोग।
पहले मानव है इन्सान,
हिन्दू मुसलमान फिर मान ॥४॥

नया मोड महिला जागृति का खुला नया आयाम,
रूढि विमुक्त समाज सृजन का काम चला अविराम।
पाया शाश्वत मे युग-बोध,
युग की भाषा का अनुरोध ॥५॥

सघर्षो मे प्रबल पराक्रम साहस का उत्कर्ष,
भावात्मक सतुलन निरन्तर बना रहा आदर्श।
जब भी आया विकट विरोध,
समझा उसको सदा विनोद ॥६॥

धर्म-क्राति के पच सूत्र ने दिया नया सन्देश,
और साम्प्रदायिक-समता का पचपदी उन्मेष ।
बौद्धिक जन मे धर्म-प्रभाव,
जागा जन-जन मे सद्भाव ॥७॥

आगम-सूत्र वाचना सुन्दर सम्पादन साक्षात्,
युग चिन्तन की रचनाओ से आया नया प्रभात ।
है आश्वासन प्रेक्षा-ध्यान,
शिक्षा मे जीवन-विज्ञान ॥८॥

युग प्रधान पद हुआ अलकृत पा जागृत व्यक्तित्व,
श्रम, शिक्षा, समणी दीक्षा से चमक उठा कर्तृत्व ।
अमृत महोत्सव का उल्लास,
'महाप्रज्ञ' हो सतत विकास ॥९॥

*लय नीले घोडे रा र

परिशि -४

अमृत-महोत्सव गीत

अन्तर् आत्मा की आवाज है, अब नया सवेरा आए,
अमृत-महोत्सव की आवाज है, अब नया सवेरा आए,
नया सवेरा आए, अब सोया मन जग जाए,
अन्तर् आत्मा* ॥

आज बनी है हिंसा मानो जीवन की परिभाषा,
मूढ मनुज करता है उससे समाधान की आशा,
यह मिटे मनस की भ्राति जी,
हो घटित अहिंसक क्राति जी,
सत्य–अहिंसा शोध खोज मे शक्ति स्रोत बहाए ॥१॥
अर्जन और विसर्जन की युति नया मोड लाएगी,
सविभाग का अभिसिंचन पा समता लहराएगी,
सग्रह विग्रह का मूल जी,
निश्चित ही नैतिक भूल जी,
"अपरिग्रह ही परम धम" यह घोष मुखर बन जाए ॥१॥
वैचारिक आग्रह ने अणु अस्त्रो को जन्म दिया है,
सह अस्तित्व, समन्वय पर परदा सा डाल दिया है,
है सारा जग भयभीत जी,
है गौण हार या जीत जी,
अनेकान्त, सापेक्ष–सत्य से उलझन को सुलझाए ॥३॥
सामाजिक दायित्व–बोध से नैतिक बल फिर जागे,
आध्यात्मिक बल का सम्बल पा मानव मूर्च्छा त्यागे,
प्रामाणिकता का तत्र जी,
है मानवता का मत्र जी,
मानस और व्यवस्था दोनो मे परिवतन लाए ॥४॥
सहिष्णुता से अनुशासन, अनुशासन से सक्षमता,
सक्षमता से समता, समता से विलीन तरतमता,
यह आस्था का अवदान जी,
स्वर्णिम युग का सधान जी,
अमृतोत्सव वेला मे 'तुलसी' जन-जन-मन उलसाए ॥५॥

*लय—स्वामीजी ! थारी साधना री

परिशिष्ट–५

अमृत-पद्य

१. युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ

निर्मित नथमल नाम से, महाप्रज्ञ मतिमान ।
गुप्त अतीन्द्रिय ज्ञान सम, क्षयोपशम-सधान ।।
विनय-विलक्षण सतत श्रम, निरभिमान-निर्माण ।
महाप्रज्ञ से सीख लो, स्वय-स्वय की छाण ।।
आगम सम्पादन कुशल, प्रेक्षा-ध्यान प्रधान ।
महाप्रज्ञ प्रस्तुत करे, नव जीवन विज्ञान ।।
युवाचार्य आचार्यवर अविच्छिन्न अनुबध ।
महाप्रज्ञ तुलसी युगल, उदाहरण अद्वन्द ।।

२ मुनिश्री अर्जुन (नाथद्वारा)

अर्जुन रो अर्पण सदा, गुरु चरणा सर्वस्व ।
सहज समर्पण भाव से, बढे शिष्य वर्चस्व ।।

३. मुनिश्री सुमेरमल सुदर्शन (सुजानगढ)

सजम सेवा मे सजग, शिष्य सुमेर सुजान ।
आखिर अपणी साधना, अपणो अनुसधान ।।

४ मुनिश्री सुमेरमल (लाडनू)

सघ सघपति चरण मे, सहज समर्पण भाव ।
क्यो नहिं बढे सुमेर मुनि, गण मे प्रबल प्रभाव ।।

५ मुनिश्री बालचद (गगाशहर)

श्रम सेवा सभाल मे, चालै चपक चाल ।
गुरु इगित आराधना, मे विशाल मुनि बाल ।।

६. मुनिश्री मधुकर (गगाशहर)

मुनि मधुकर री मधुरिमा, धैर्य और गाम्भीर्य ।
गण मे गूजे गुरु कृपा, पा वर्चस्वी वीर्य ।।

७ मुनिश्री हीरालाल (बीदासर)

रे हीरा ! तू हर पलक, आगम पाठ अबेर।
मोटा भागा स्यू मिले, सूत्र-गगन की सैर ॥

८ मुनिश्री जतनमल (लाडनू)

रतन जतन कर राख, जोगारम जोखिम भर्यो।
सारी दुनिया शाख, भरै अगर निज मन भरै ॥

९ मुनिश्री श्रीचद "कमल" (टमकोर)

बना वासना से विरत, मन इन्द्रिय निर्द्वन्द्व।
विकट साधना वृत्ति से, सुलभ साध्य श्रीचद ॥

१०. मुनिश्री मोहनलाल (आमेट)

डरै घणो दायित्व स्यू, करे स्वय सब सेट।
तन दुर्बल आत्मा सबल, मुनि मोहन आमेट ॥

११ मुनिश्री दुलहराज (दुघोड़)

दुलह-दुलह श्रमशीलता, और जम्यो जप जोग।
भारहीन मन जो बने, तो सार्थक उद्योग ॥

१२ मुनिश्री किशनलाल (मोमासर)

किशन-मिशन समझे सफल, श्रम समता के साथ।
प्रेक्षा की प्रेक्षा सतत, एक बात दिन-रात।

१३ मुनिश्री भवभूति (काकरोली)

शात भाव सजम सझे, भद्र प्रकृति भवभूति।
बडा बडेरा री विमल, याद करे अनुभूति ॥

१४ मुनिश्री धर्मरुचि (मोमासर)

धर्मघोष शिष्य धर्मरुचि, आगम युग अणगार।
एक धर्मरुचि आज है, विमल विवेक विचार ॥

१५ मुनिश्री राजेन्द्र कुमार (हासी)

सहज साधना सत सी, ऋजु मृदु मुनि राजेन्द्र।
मणि काचन सयोग स्यू, महाप्रज्ञ को केन्द्र ॥

१६ मुनिश्री विजयकुमार (सुजानगढ)

विजय-विजय के गीत गा, सीखा जो सगान।
सघ-सघपति शासना, पाकर परम निधान ॥

१७ मुनिश्री कमल कुमार (गगाशहर)

खिलतो रहजे कमल ज्यू, अमल कमल ज्यू और ।
शम सयम श्रम साधना, कमल कलेजा कोर ।।

१८ मुनिश्री श्रेयासकुमार (गगाशहर)

प्रामाणिकता पुष्ट कर, श्रेयार्थी श्रेयास ।
एक साधना मे सजग, लगा समय अधिकाश ।।

१९ मुनिश्री धर्मेन्द्र कुमार (राजलदेसर)

साधे नित जप जोग नै, समझ साधना केन्द्र ।
सघ शासना मे सतत, धर धीरज धर्मेन्द्र ! ।।

२० मुनिश्री उदित कुमार (सरदारशहर)

उदितोदित हो उदित मुनि, सयम समता साथ ।
पा पाथेय सुमेर से, निशिदिन रहे सनाथ ।।

२१ मुनिश्री मुदित कुमार (सरदारशहर)

मुदित ! मुदित मन रात-दिन, रहे स्वास्थ्य से स्वस्थ ।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमना, अपनी धुन मे मस्त ।।

२२ मुनिश्री अरविंद कुमार (लाडनू)

विना शर्त गुरु चरण मे, अर्पित हो अरविंद ।
आग्रह वृत्ति विरक्त चित्त, अनुशासित अहमिद ।।

२३ मुनिश्री धनञ्जय कुमार (श्रीडूगरगढ)

धार धनञ्जय धीरता, वर अध्यात्म अमोल ।
ले तप सयम की तुला, स्वय-स्वय को तोल ।।

२४ मुनिश्री जिनदास (सिसाय)

रोज रोप आक्रोश से, घर हाणी जग हास ।
प्रकृति विजय अभ्यास से, जग कहसी जिनदास ।।

२५ मुनिश्री प्रशान्त कुमार (उदासर)

स्थिर सतुलन हर स्थिति, सह रह कर चित्त शात ।
निश्चित गुण निष्पन्न व्है, थारो नाम प्रशात ।।

२६ मुनिश्री दिनेश कुमार (टापरा)

एके साधे सब सधे, धर शिर गुरु आदेश ।
पा मधुकर से प्रेरणा, देखे प्रगति दिनेश ।।

२७ मुनिश्री जिनेश कुमार (जसोल)

तर जीवन जोखिम भर्यो, सहर हर सक्लेश ।
जीवन निमल निशल्ल जी, जागृत शिष्य जिनेश ।।

२८. मुनिश्री ऋषभ कुमार (तारानगर)

बणणो है धोरी वृषभ, ऋषभ ! न रच्च अधीर।
ऋषभ चरण की शरण मे, धीर वीर गभीर ।

२९ मुनिश्री लाभरुचि (राजलदेसर)

बन ललित से लाभरुचि, कलि-कारागृह मुक्त ।
सजम समता मे सजग, रहे सतत सयुक्त ।।

३० मुनिश्री लोकप्रकाश (पचपदरा)

लेश नही लोकैषणा, और नही आवेश ।
यह स्वरूप अखिलेश का, लक्ष्य बना लोकेश ।।

३१ मुनिश्री " कुमार (काजीवरम्)

त्रिविध धर्म आराधना, कर धर चित धर्मेश ।
ध्यान अध्ययन अरु तप, कटसी निश्चित क्लेश ।।

३२. मुनिश्री अभय कुमार (सरदारशहर)

अभय अभय अब है न भय, सजम-लय मे लीन ।
हीन भावना क्षीण कर, गण नन्दन बन सीन ।।

साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभा

स्वस्थ महाश्रमणी सजग साध्वी प्रमुखा शान्त ।
तुलसी युग की तरुणिमा कनकप्रभा सक्रात ।।
पद यश लिप्सा से परे अनासक्त अभ्रान्त ।
तुलसी युग की तरुणिमा कनकप्रभा सक्रात ।।
परम समर्पण भाव का, उदाहरण आदर्श ।
कनकप्रभा की कृति कला, पा तुलसी उत्कर्ष ।।
पद से नही प्रवर्तिनी प्रवर्तिनी-प्रायोग्य ।
कनकप्रभा प्रतिभा प्रवण, अनुपमेय आरोग्य ।।

१. साध्वीश्री नजरकवर (वास)

निजरकवर राखी निजर, सयम मे इकधार ।
प्रथम अक पायो प्रवर, श्रमणीगण मे सार ।।

२ साध्वीश्री टमकू (लाडनू)

झमकू जुग री है सती, दाखाजी री देन ।
टमकू गुरुकुलवास मे, चित्त मे पावै चैन ।।

३ साध्वीश्री ू (जयपुर)

कमलू सती समाज मे, सम्मानित सोल्लास ।
प्रमुखा जी रै तीसरै, युग मे गुरुकुलवास ।।

४ साध्वीश्री पन्ना (देरासर)

पन्ना दीर्घ तपस्विनी, तप रो प्रबल प्रभाव ।
धर्मसघ इतिहास मे, पन्ना तरणी नाव ।।

५ साध्वीश्री आनन्द कुमारी (मोमासर)

आनदित आनद कुमारी, मात सुजाणा रो सुरवास ।
अति उल्लासे परम प्रयासे, पायो अवकी गुरुकुलवास ।।

६ साध्वीश्री हुलासा (लाडनू)

वेटी धनजी वैद री, नजरकवर री बेन ।
हुलासा सजम सझै, खूमा जी री देन ।।

७. साध्वीश्री सुन्दर (सरदारशहर)

सुदर-सुदर पथ लियो, चरणामृत चारित्र।
पाप भीरुता स्यू हुवै, जीवन परम पवित्र ॥

८. साध्वीश्री केशर (लाडनू)

केशर तू करणी करण, मत गिण साझ सवेर।
दीक्षित थारे भातृयुग, है हनुमान सुमेर ॥

९. साध्वीश्री मेहताबा (सरदारशहर)

तन चेतन की भिन्नता, महताबा मजूर।
करो हरो आठू करम, तो शिव-सदन न दूर ॥

१० साध्वीश्री केसर (लाडनू लूकड)

केसर परमेशर समर, हर क्षण धर चित्त धीर।
विषय वासना नै विसर, तो करसी भव तीर ॥

११ साध्वीश्री भत्तु (लाडनू)

भत्तू भा शुभ भावना, क्षण-क्षण जागृत जोग।
अपणै आडो आवसी, अपणो शुभ उपयोग ॥

१२. साध्वीश्री मालू (चूरू)

तू भागण मालू सती, महाप्रज्ञ सा भ्रात।
पिण अपणै पुरुषार्थ स्यू, मिटसी यातायात ॥

१३. साध्वीश्री बिदामा (पीपली)

अपणे आपै मे सदा, प्रतिपल रहे प्रकाम।
वो ही शिवपुर साधसे, हो चाहे दाख बिदाम ॥

१४. साध्वीश्री भीखा (पीपली)

भीखा निज भगवान स्यू, भले मागले भीख।
सुख मे दुख मे समर तू, आ तुलसी की सीख ॥

१५ साध्वीश्री सूरजकुमारी (रतननगर)

साध्य सिद्धि सूरज ग्रहै, साधक अपणै हाथ।
पापभीरुता पथ वहै, प्रामाणिकता साथ ॥

१६. साध्वीश्री विजयश्री (सरदारशहर)

पन्ना तपसण पास, निशदिन रहती निमल दिल।
आत्म विजय विश्वास, वृद्धिगत कर विजयश्री ॥

१७ साध्वीश्री विदामा (खिवाडा)
वाणी मन की विमलता, वद्धमान अविराम ।
तो अक्षय सुख सन्निकट, समझै सती विदाम ॥

१८ साध्वीश्री केशर (टमकोर)
केशर री क्यार्‌या खिली, सतिया हर्ष विभोर ।
तिण मे एक कडी जुडी, केशरजी टमकोर ॥

१९ साध्वीश्री पानकुमारी (सुजानगढ)
घर परिकर तज सहज मे, पानकवर ली दीख ।
तो सहजे हर परिस्थिति, रहजे मीठी ईख ॥

२० साध्वीश्री रामकुमारी (लाडनू)
रामकुमारी लिपिकला, कुशल बणी अभिराम ।
प्रेक्षा कौशल प्राप्त कर, अब बण आत्माराम ॥

२१ साध्वीश्री जतनकुमारी (लाडनू)
जतनी ! मयम रतन ने खूब जतन कर राख ।
कथनी करनी एकता, स्यू भरसी जग शाख ॥

२२ साध्वीश्री इन्दिरा (सरदारशहर)
अतर मन स्यू इन्दिरा, अपणी वृत्ति सुधार ।
तो तू निश्चित जाणज्ये, वशवर्ती ससार ॥

२३ साध्वीश्री राजवती (श्रीडूगरगढ़)
शान्ति सलिल स्यू शात है, जो कषाय की लाय ।
तो राजी वाजी सभी, नित समता की चाय ॥

२४. साध्वीश्री वसुमती (सरदारशहर)
सुमती सीखे वसुमती, शल्य शात कर तीन ।
सहजानद समद मे, होस्ये स्वय विलीन ॥

२५ साध्वीश्री जसवती (सरदारशहर)
जशकामी जश ना लहे, लहे सुजश निष्काम ।
तो करणी निष्काम कर, 'जश' पूरे मन हाम ॥

२६ साध्वीश्री धर्मवती (गगाशहर)
तन मे मन मे वचन मे, निवसे निशदिन धर्म ।
धर्म नाम सार्थक सती, मेटी मन रो भर्म ॥

२७ साध्वीश्री प्रकाशवती (सिसाय)

स्वय प्रकाशी रै हुवै, पर प्रकाश अवकाश ।
हर अन्तर् तम नाम कर, सार्थक सती प्रकाश ।।

२८ साध्वीश्री कनकश्री (लाडनू)

कनक[1] कनक सौ टच सो, जी जीवन अविराम ।
शात, दात, उपशात सब, बने व्याधिया वाम ।।

२९. साध्वीश्री सुप्रभा (श्रीडूगरगढ)

सुप्रभात है सुप्रभा, गई अधेरी रात ।
कर पुरुषार्थ अबै इसो, पल पल रहे प्रभात ।

३० साध्वीश्री चन्दनबाला (दिल्ली)

कभी न विसरो चदना, चदनबाला नाम ।
वढे मनोबल आत्मवल, बने व्याधिया वाम ।।

३१ साध्वीश्री सुमतिश्री (सरदारशहर)

गर्भावस्था मे सुमति, बने सुमति दातार ।
स्वय सुमति ले सुमति दे, तो निश्चित निस्तार ।।

३२ साध्वीश्री अशोकश्री (सरदारशहर)

अर्हद् आश्रय से अगर, बनता वृक्ष अशोक ।
तो सद्‌गुरु शरणागता, क्यो नहि सती अशोक ।।

३३ साध्वीश्री स्वयप्रभा (सरदारशहर)

स्वयप्रभा जी तप सझै, विजित कषाय विकार ।
तब ही अभिधा स्वयप्रभा, सार्थक हो साकार ।।

३४ साध्वीश्री ज्ञानप्रभा (सरदारशहर)

जो क्षमोपशम भाव से ज्ञानावरणी कर्म ।
ज्ञानप्रभा विकसित सुगम, हो निज मे निज मर्म ।।

३५ साध्वीश्री कीर्तिश्री (तारानगर)

कीर्ति श्री की कामना, करे मनुज वेकार ।
तदनुरूप जो साधना, कीर्ति श्री साकार ।।

३६ साध्वीश्री कुसुमलता (तारानगर)

कुसुम सुकोमलता विना, कुसुम नाम निक्षेप ।
मदुता ऋजुता योग स्यू, निपट कुसुम निर्लेप ।।

३७. साध्वीश्री जिनप्रभा (लाडनू)

पा जिन प्रवचन जिनप्रभा, पलक न करे प्रमाद।
अप्रमाद की साधना, स्वय सुखद सवाद ।।

३८. साध्वीश्री कल्पलता (लाडनू)

कल्पलता की कल्पना, कोरी वात हि वात।
खडी सामने देखलो, कल्पलता साक्षात् ।।

३६. साध्वीश्री प्रज्ञावती (वाव)

पा प्रज्ञा प्रज्ञावती, कहलावै सो साच।
ते नाम्ना प्रज्ञावती, जन्मजात प्रोवाच ।।

४०. साध्वीश्री वीणाकुमारी (सरदारशहर)

बणो प्रवीणा ज्ञान वल, और चरण वल तोल।
वीणा मृदु वीणास्वरी, वोलो झीणा वोल ।।

४१ साध्वीश्री सुषमा कुमारी (सरदारशहर)

तू सुषमा! दुषमार मे, पायो तेरापथ।
भद्रे! थारै भाग्य रो, के वरणू वृत्तत ।।

४२. साध्वीश्री प्रभावनाश्री (टमकोर)

करणी सघ प्रभावना, कठिन कठिनतर कार।
थारो नाम प्रभावना, निज जीवन उद्धार ।।

४३. साध्वीश्री उर्मिलाश्री (गगाशहर)

उठे उर्मिला के हृदय, हर्ष उर्मि हर वार।
जैन धर्म मानव जनम, तेरापथ पथ पार ।।

४४. साध्वीश्री विमलप्रज्ञा (बीदासर)

विमलता यह विमलप्रज्ञा, विमल जीवन जी सदा।
सिद्ध कर आत्मानुशासन, सर्वदा स्ववशवदा ।।

४५ साध्वीश्री सि ज्ञा (लाडनू)

अप्पुस्सुए अवहिल्लेसे, साध्य अपणो साधती।
सिद्धप्रज्ञा ज्ञान-दर्शन चरण वर आराधती ।।

४६ साध्वीश्री निर्वाणश्री (श्रीडूगरगढ)

चरम लक्ष्य चारित्र को, निश्चित परिनिर्वाण।
निर्मल दिल निर्वाण श्री, अर्पित हो दश प्राण ।।

४७ साध्वीश्री वर्धमानश्री (दिल्ली)

वर्धमान विद्या विनय, वर्धमान विज्ञान।
वर्धमान श्री विरतचित, अविरल हो अभियान ।।

४८ साध्वीश्री स्वर्णरेखा (श्रीडूगरगढ)

स्वर्णरेखा की चमक, चारित्र के आचरण मे।
स्वर्ण रेखा तभी सार्थक, समर्पण गुरु-शरण मे ।।

४९ साध्वीश्री उज्ज्वल रेखा (सरदारशहर)

उज्ज्वल उज्ज्वल ही रहे, सदा सुकृत की रेख।
श्रवण मनन पूर्वक पढे—आगम के आलेख।

५०. साध्वीश्री मधुस्मिता (सरदारशहर)

मजिल दूर मधुस्मिता ! पर क्यो बने निराश।
सही मार्ग मकल्प-दृढ, हो अनवरत प्रयास ।।

५१ साध्वीश्री चित्रलेखा (लाडनू)

देखो दृग-युग मूदकर, चित्रा ! अपना चित्र।
परिमार्जन की प्रक्रिया, से हो परम पवित्र ।।

५२. साध्वीश्री मधुलता (गगाशहर)

बनो मधुलता ! मधुव्रता, गुरुपादाम्बुज लीन।
स्वय स्वय की स्वामिनी, सदा-सदा स्वाधीन ।।

५३ साध्वीश्री विभाश्री (गगाशहर)

अपने विभुवर की विभा, मे बन भागीदार।
नाम विभाश्री की करो, सार्थकता साकार ।।

५४ साध्वीश्री सौम्य प्रभा (सरदारशहर)

समता शीतलता नही, नहीं शान्ति सद्भाव।
सौम्यप्रभा अभिधान का, कैसे बढे प्रभाव ।।

५५ साध्वीश्री ऋषभप्रभा (सरदारशहर)

त्याग तितिक्षा विमलता, ऋजु मृदुता सौहार्द।
क्या समझे इसके बिना, ऋषभप्रभा का हार्द ।।

५६ साध्वीश्री अर्हत् प्रभा (सरदारशहर)

थोडी सी अर्हत् प्रभा, यदि जीवन मे प्राप्त।
क्षमा मरलता, सहजता, पा लेगी पर्याप्त ।।

५७ साध्वीश्री शारदाश्री (भीनासर)

क्या श्री-शोभा शारदा, की ली तुमने छीन ?
स्वय शारदाश्री बणी, सयम मे तल्लीन ।।

५८ साध्वीश्री मनीषाश्री (चाडवास)

अपने मन की मालकिन, बनी मनीषा मौज ।
सतत साधनारत रहो, स्वय-स्वय की खोज ।।

५९. साध्वीश्री विवेकश्री (चाडवास)

वय चाहे छोटी बडी, जागृत विमल विवेक ।
तो जीवन की सफलता, कहू कल्पना छेक ।।

६० साध्वीश्री अनुशासनश्री (गगाशहर)

अनुशासन अनुशासना, जीवन मे अनिवार्य ।
सदा सहज स्वीकृत रहे, अति प्रसन्न आचार्य ।।

६१ साध्वीश्री प्रेरणाश्री (मद्रास)

सदा प्रकृति प्रेरित रहे, प्रामाणिकता पन्थ ।
फिर गुरुवर की प्रेरणा, है आभार अनन्त ।।

६२ साध्वीश्री लब्धिप्रभा (टिटिलागढ)

विन गुरु करुणा कठिनतर, है तरणो भव अब्धि ।
सुगुरु चरण की शरण यदि, लब्धि श्री उपलब्धि ।।

६३ साध्वीश्री पीयूषप्रभा (सरदारशहर)

प्रख्याति पीयूष की, सुणी सुणाई बात ।
गुरु-वय सच पीयूष है, सदा मिले साक्षात् ।।

६४ साध्वीश्री अमृतप्रभा (सरदारशहर)

अमृतोत्सव उपलक्ष मे, अमृत प्रभा अभिधान ।
पर यह बना यथार्थ अब, करलो अनुसधान ।।

१. समणी स्मितप्रज्ञा (लाडनू)

नियता प्रथम नियोजिका, स्मितप्रज्ञा अभिधान ।
समण श्रेणि रो साहसी, एक चल्यो अभियान ।

२ समणी स्थितप्रज्ञा (लाडनू)

स्थितप्रज्ञा सुस्थित बणी, वर जीवन-विज्ञान ।
सदा प्रगति पथ सामनै, पावन प्रेक्षा-ध्यान ।।

३. समणी मधुरप्रज्ञा (भीनासर)

मन वाणी की मधुरता, मधुर-मधुर मुस्कान।
वढे मधुरप्रज्ञा! विशद, समण श्रेणि की शान॥

४. समणी कुसुमप्रज्ञा (आगरा)

शोधकला शिक्षण सबल, सुन्दरतम सगान।
सरल, कुसुमप्रज्ञा! कठिन, अपणो अनुसधान॥

५. समणी सरलप्रज्ञा (मोमासर)

सरलप्रज्ञा! सरलता, हो साधना का माप।
समण श्रेणी की अपूरव, पडे जग मे छाप॥

६ समणी परमप्रज्ञा (बीदासर)

परमप्रज्ञा! परम पद की, प्राप्ति का सकल्प।
सुदृढ हो तो समणता, सोपान पक्ती कल्प॥

७. समणी मुदितप्रज्ञा (सरदारशहर)

मुदितप्रज्ञा! मुदित मानस, साधना सदेश।
समणश्रेणी का सुनाओ, देश और विदेश॥

८ समणी श्रुतप्रज्ञा (सरदारशहर)

श्रुतप्रज्ञा! श्रुत साधना, शील साधना शान्त।
करो समर्पण भाव से, अविश्रान्त एकात॥

९ समणी सुप्रज्ञा (राजगढ)

समणश्रेणी का सघ मे, हे अभिनव आयाम।
स्वय स्वय का सवरण, सुप्रज्ञा अविराम॥

१० समणी गुरुप्रज्ञा (लाडनू)

गुरु इगित समझो गुरुप्रज्ञा!, समण साधना मे तल्लीन।
अपने तन-मन और वचन को, भाव क्रिया मे करो विलीन॥

११ समणी उज्ज्वलप्रज्ञा (हासी)

उज्ज्वलप्रज्ञा! उज्ज्वल जीवन, जीना है समणीगण मे।
देह त्यजेन्न धर्म शासन, अप्रतिहत अपने प्रण मे।

१२. समणी चिन्मयप्रज्ञा (हासी)

चिन्मयप्रज्ञा! मृन्मय तन से, चिन्मय चिदानन्द आसीन।
गहरी प्रेक्षा मे प्रविष्ट हो, साक्षात् देखो सुन्दर सीन॥

१३ समणी ज्ञा (टापरा)

भरा है, अक्षय खजाना, जरा भीतर झाक लो ।
समण श्रेणी साधना का, मूल्य मन भर आक लो ।।

१४ समणी सहजप्रज्ञा (टापरा)

सहजप्रज्ञा ! सहजता हो, सरल स्व्यवहार मे ।
छद्म छलना से परे हो, समणता सस्कार मे ।।

१५ समणी शशिप्रज्ञा (टमकोर)

शशिप्रज्ञा ! सतत रहो, शान्त-दान्त-उपशात ।
समणश्रेणि शोभा बढे, नियमित रूप नितात ।।

१६ समणी भावितप्रज्ञा (समदडी)

श्रम-सेवा-सयम-समता से, भावितप्रज्ञा भावित हो ।
समणश्रेणी तुम से, तुम उससे दोनो परम प्रभावित हो ।

१७ समणी स्वस्थप्रज्ञा (सरदारशहर)

स्वस्थ समणी स्वस्थप्रज्ञा, अभय मे अभ्यस्त हो ।
ध्यान मे, स्वाध्याय मे, विद्या-विनय मे व्यस्त हो ।।

१८ समणी मगलप्रज्ञा (मोमासर)

मुद मगल हित मगलप्रज्ञा, मगल मार्ग किया स्वीकार ।
समण श्रेणि हो मुदमगलमय, सचित हो ऐसे सस्कार ।।

१९ समणी मजुप्रज्ञा (सरदारशहर)

मजुप्रज्ञा मजुता हो, विनय मे, व्यवहार मे ।
प्राण अर्पण समणश्रेणी के, अमित उपकार मे ।।

२० समणी मल्लिप्रज्ञा (सूरतगढ)

मल्लीप्रज्ञा सामने, मल्लि का आदर्श ।
अविचल अपना लक्ष्य हो, विचलन हो न विमर्श ।।

२१. समणी निर्भयप्रज्ञा (वाव)

निभयता निर्णीत है, प्रज्ञा का परिणाम ।
तुझे सहज सार्थक मिला, निभयप्रज्ञा नाम ।।

२२ समणी निर्म (वाव)

निमलता निर्णीत है, प्रज्ञा का परिणाम ।
तुझे सहज सार्थक मिला, निमलप्रज्ञा नाम ।।

परिशिष्ट—६

जीवन-वि गीत

विद्या के प्रागण मे अब व्यापक जीवन विज्ञान हो,
शिक्षा का नव अभियान हो।*
बौद्धिकता के समरागण मे भावो का सम्मान हो,
शिक्षा का नव अभियान हो।
सर्वांगीण विकास व्यक्ति का विद्यार्जन का ध्येय बने,
शारीरिक बल और बुद्धि बल मानस बल आदेय बने,
भावात्मक बल पर आधारित सस्कृति का सधान हो।१।
केवल पुस्तकीय शिक्षा ही जीवन मे पर्याप्त नही,
आसेवन के द्वारा वह हो आचरणो मे व्याप्त नही,
सैद्धातिक, प्रायोगिक दोनो का सयुत सगान हो।२।
शिक्षा के सकाय बहुत है, पर आध्यात्मिक आय नही,
वर्तमान पीढी का भावी-पीढी के प्रति न्याय नही,
'सा विद्या या भवति मुक्तये' का मुख-मुख आह्वान हो।३।
प्रामाणिकता, क्षमा, समन्वय लोकतन्त्र के त्राण है,
करुणा, सह-अस्तित्व, सन्तुलन मानवता के प्राण है,
मूल्य परक शिक्षा के द्वारा जन-जन का निर्माण हो।४।
अणुव्रत की आचार सहिता मजिल है, आदर्श है,
प्रेक्षाध्यान-साधना से हो जाता उसका स्पर्श है,
राष्ट्रतत्र की रुग्णा दशा का 'तुलसी' सही निदान हो।५।

*लय—बस्ती-बस्ती आगन-आगन

प्रेक्षाध्यान गीत

आत्म—साक्षात्कार प्रेक्षाध्यान के द्वारा।
स्वप्न हो साकार इस अभियान के द्वारा।।*
आत्मना आत्मावलोकन, है यही दर्शन,
अन्तरात्मा मे सहज हो सत्य का स्पर्शन,
क्षीण हो सस्कार अन्तर्धान के द्वारा।।१।।

मानसिक सतुलन, जागृति और चित्त समाधि,
निकट आती, दूर जाती व्याधि, आधि, उपाधि
प्रेम का विस्तार निज सधान के द्वारा ।।२।।
बदल जाते है रसायन, ग्रन्थियो के स्राव,
बदलते व्यवहार सारे, बदलते हैं भाव,
बदलता ससार आनापान के द्वारा ।।३।।
समस्या आवेग की है, विकटतम जग मे,
आदतो की विवशता है, व्याप्त रग-रग मे,
हो रहा उपचार इस अवदान के द्वारा ।।४।।
अनुप्रेक्षा और लेश्याध्यान, कायोत्सर्ग,
श्वास-प्रेक्षा से धरा पर, उतर आए स्वर्ग,
हृदय हो अविकार, केवल ज्ञान के द्वारा,
हृदय हो अविकार 'तुलसी' ज्ञान के द्वारा ।।५।।

***लय—मेरा जीवन कोरा कागज**

अहिसा-गीत

जय हे ! जय जीवनदाता,
समभाव सुधा का सिंचन दो अमिताभ अहिसा माता ।
जय हे ! जय जीवनदाता ।।
मैत्री करुणा समता सयम, शम आत्म-तुला ये सारे,
है तेरे नाना रूप शान्ति के सदा सजग रखवारे,
अभय और आश्वासन की तू अनुपम अनुसन्धाता ।।१।।
जन-जन के मन मे कुटिल क्रूरता हृदय-हीनता जागी,
मानव, मानव से दूर हुआ वैभव का बन अनुरागी,
स्वार्थपूण शोषण-चक्की मे चेतना पिसता जाता ।।२।।
वैचारिक-आग्रह की कारा मे बन्दी है ध्रुवतारा,
है मजिल मे भटकाव नाव से अब तक दूर किनारा,
मतवादो के गहन-तिमिर मे तू आलोक-प्रदाता ।।३।।
अणु-अस्त्रो की स्पर्धा मे महाशक्तिया अडी हुई है,
हा ! महाप्रलय का दृश्य दिखाने मानो खडी हुई है,
जलती हिंसा की ज्वाला मे तू ही है बस त्राता ।।४।।

छलना, लंचा दानव दहेज का खुलकर खेल रहा है,
बेमेल मिलावट से नैतिकता का प्रासाद ढहा है,
जाति रंग का दर्प मनुज को छुआछूत सिखलाता ॥५॥
शक्ति, श्रम, साधन की जग मे हिंसा जितनी आभारी,
मिलता शतांश भी तुझे अगर मिट जाती उलझन सारी,
शोध प्रयोग प्रशिक्षण तेरा नूतन युग ले आता ॥६॥
विश्वास हृदय का बोल रहा—यदि मानव सुख का प्यासा,
तो उसे समझनी होगी शाश्वत शान्ति-सूत्र की भाषा,
'तुलसी' इस अनुभव वाणी का बने विश्व उद्गाता ॥७॥

*लय यह भारत देश है मेरा

परिशिष्ट—७

भिक्षु-चरमोत्सव-गीत

श्री जिन शासन के उद्गाता मर्यादा के नव निर्माता,
भिक्षु भारत भू मण्डल मे बन अवतार आए,
लो स्वीकारो श्रद्धा-सुमनो का उपहार लाए ।*
दिया मूल्य सयम को गहरा बाह्य दृष्टि फिर नही पली,
आचार प्रथमो धर्म की स्वर लहरी अविराम चली,
आध्यात्मिक अनुभव की सरिता आत्म–निरीक्षण से निकली,
प्रवल मनोबल धाराधर से कोधी उजली सी बिजली,
है अनुशासन तो सहयोगी सघ सगठन है उपयोगी,
पानी होने पर ही रक्षा–हेतु विचार आए ।।१।।
अनुशासन के बिना मूल्य सयम का होता कही-नही,
अनुशासन के प्रथम धर्म का है पवित्र सन्दर्भ यही,
मर्यादा की गगोत्री से अमल व्यवस्था धार बही,
सम आचार-विचार और सामाचारी भी सही-सही,
सुन्दरता आई मनभाई शक्ति साधना की सहनाई,
लाई गहराई सयम मे नए निखार आए ।।२।।
पूर्ण समर्पण पूर्ण विसर्जन हृदय व्यवस्था योग मिला,
सघ-सघपति के चरणो मे भाव-सुमन उद्यान खिला,
है सतोष शिष्य शाखा का अह मम का पीठ हिला,
साम्यवाद का प्रथम बीज पनपा पा सम आधार शिला,
सेवाश्रम की हुई व्यवस्था सबकी मौलिक एक व्यवस्था,
वैयक्तिक आधार गौण, व्यापक आधार पाए ।।३।।
वीतराग आदर्श हमारा रागद्वेष बन्धन कारा,
बल प्रयोग, मानस-परिवर्तन धूप-छाह ज्यो है न्यारा,
साध्य और साधन सबधित जैसे नभ मे ध्रुव तारा,
हिंसा और अहिंसा विश्लेषण अतर का उजियारा,
तीन सात दृष्टान्त सुनहरे तर्क नए वहा पर ठहरे,
आस्था और बुद्धि दोनो मे ही अधिकार पाए ।।४।।

दान, विसर्जन मे अन्तर देखा सन्मति के दर्पण मे,
शाश्वत धर्म अलौकिक लौकिक धर्म बदलता क्षण-क्षण मे,
सत्य-सत्य व्यवहार रहे व्यवहार धर्म के प्रागण मे,
सूत्र दिए तुमने दी व्याख्या अभय सदा अपने प्रण मे,
गण मे नई चेतना आई, युग ने भी है छाप लगाई,
वाणी वह कल्याणी 'तुलसी' अब विस्तार पाए ।।५।।

*लय सिरियारी रो सत

परिशि -८

प्रेक्षा-ध्यान

क्र०स०	समय	सान्निध्य	निदेशन	स्थान	साधक
१	१८ से २० नवम्बर तक	साध्वीश्री सीरेकुमारीजी	—	हिसार-हासी मार्ग मे स्थित जिंदल विद्यादेवी मदिर स्कूल मे—१	६०
२	८ से १४ जनवरी तक	—	जेठाभाई तथा नगीन भाई	बोलारम	७१
३	६ से १३ अक्टूबर तक	धमचदजी "पीयूप"	नगीन भाई व माणकचद साखला	हुवली	६१
४	१४ से १८ जनवरी तक	साध्वीश्री सोहनकुमारीजी	—	लोहारा	३१
५	३१ से २ फरवरी तक	आचार्यश्री	युवाचायश्री	जसोल	२७
६	११ से १७ फरवरी तक	धर्मानदजी	—	महरौली, नई दिल्ली	१५
७	१६ से २५ फरवरी तक	आचायश्री	युवाचार्यश्री	पाली, मारवाड	४६
८	१५ से २० तक	सूरजकुमारीजी	—	दादर	–
६	५ से ७ तक	रवीन्द्रकुमारजी	—	जगराओ	—
१०	७ से ६ तक	मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी	जेठाभाई	जयपुर	—
११	१० से १४ मई तक	साध्वीश्री कस्तुराजी	—	तीरुवत्तुर, मद्रास	१५७
१२	१५ से २० मइ तक	साध्वीश्री राजीमतीजी	—	लाडनू	१२१
१३	२० से २६ मइ तक	आचार्यश्री तुलसी	युवाचार्यश्री	भीलवाडा	१०३
१४	४ से ६ जून तक	साध्वीश्री कमलश्रीजी	—	अहमदाबाद	४३

१५	१० से १२ मई तक	—	हुकुमलालजी	महरौली, दिल्ली	१५
१६	२९ से २ जून तक	साध्वीश्री चादकुमारीजी	—	रिसडा	२१
१७	८ से १७ तक	आ० श्री और युवाचार्यश्री	भवरलाल शर्मा	आमेट (अध्यापको मे)	१०८
१८	२ से ४ अगस्त तक	मुनिश्री पूनमचदजी	जेठाभाई, नगीनभाई चादमलजी बोहरा	बम्बई	३०
१९	२५ से २७ जुलाई तक	साध्वीश्री कमलश्रीजी	—	अहमदाबाद	४५
२०	३ से ६ अगस्त तक	साध्वीश्री राजीमतीजी	समणी स्थितप्रज्ञा, धर्मानद, रसिकभाई	चाडवास	५१
२१	५ से ११ अगस्त तक	साध्वीश्री फूलकुमारीजी	जेठाभाई, नगीनभाई, चादमल बोहरा	सूरत	९०
२२	२८ जुलाई (एक दिवसीय)	मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी	—	दिल्ली (प्रबुद्ध व्यक्तियो)	३००
२३	१४ से १८ अगस्त तक	मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी	मोहनलालजी कठौतिया एव धर्मानदजी	महरौली	४१
२४	२० से २४ अगस्त तक	साध्वीश्री रतनकवरजी	धर्मानदजी	नोहर	४०
२५	पचदिवसीय	साध्वीश्री जतनकुमारीजी	—	सगरूर	१००
२६	१४ से १८ अगस्त तक	साध्वीश्री चारित्रश्रीजी	जेठाभाई, नगीनभाई, चादमल बोहरा	पालघर	८०
२७	२६ से २८ अगस्त तक	समणीवृद	धर्मानदजी, शकरलालजी, सुवा सोनी	लाडनू	४३
२८	१९ से २३ अगस्त तक	समणी स्थितप्रज्ञा	—	विद्यावाडी	
२९	२३ से २९ अगस्त तक	साध्वीश्री मानकवरजी	समणी स्थितप्रज्ञा एव कुसुमप्रज्ञाजी	वीदासर	५१
३०	२३ से २७ अगस्त तक	मुनिश्री धर्मानदजी "पीयूष"	जेठाभाई, नगीनभाई, केवलचद दरला	बेंगलोर	३५

३१	१ से १० सितम्बर तक	आचार्यश्री तुलसी	युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ	आमेट	१०८
३२	६ से १० सितम्बर तक	साध्वीश्री विद्यावतीजी	जेठाभाई	जलगाव	७१
३३	१३ से १७ सितम्बर तक	—	समणी मधुरप्रज्ञा, सरलप्रज्ञा, मल्लिप्रज्ञा	सिलीगुडी	३०
३४	३ से ६ अक्टूबर तक	मुनिश्री सोहनलालजी	एस०के० जैन, सतोप जैन	हिसार	५०
३५	२ से ६ अक्टूबर तक	साध्वीश्री तीजाजी	माणकचदजी साखला	रतलाम	२२
३६	१२ से २१ अक्टूबर तक	युवाचायश्री	शकरलाल मेहता, रसिक मेहता हसमुख भाई दोपी	आमेट	७१
३७	२८ सित० से ४ अक्टू० तक	मुनिश्री राकेशकुमारजी साध्वीश्री मोहनकुमारीजी	—	सी स्कीम, जयपुर	१८०० १००
३८	५ से १० अक्टूबर तक	साध्वीश्री सतोकाजी	—	राणावास	१२००
३९	६ से २९ अक्टूबर तक	साध्वीश्री जतनकुमारीजी	श्री सुरेन्द्रकुमार, श्रीमती सतोप जैन	टोहाना	१००
४०	३ से ५ नवम्बर तक	साध्वीश्री रामकुमारीजी	समणी स्थितप्रज्ञा, उज्ज्वलप्रज्ञा	डीडवाना	४५
४१	२८ अक्टू० से ३ नव० तक	साध्वीश्री यशोधराजी	श्री धर्मचदजी	भागलपुर	३५
४२	३ से ६ नवम्बर तक	साध्वीश्री कचनप्रभाजी	सुश्री सुधा हिरण	गगापुर	३५
४३	७ से १० नवम्बर तक	साध्वीश्री गौराजी	श्री अमृतलाल गुप्ता	जगराओ	४०
४४	४ से ८ नवम्बर तक	साध्वीश्री राजीमतीजी	—	चाडवास	५२
४५	१४ से २० नवम्बर तक	मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुमन'	समणी स्थितप्रज्ञा, श्री हेमतदास पटेल	छापर	२७
४६	२ से ६ नवम्बर तक	साध्वीश्री सुबोधकवरजी	समणी मधुरप्रज्ञा, अक्षयप्रज्ञा	देवगढ	५५
४७	२८ अक्टू० से ६ नव० तक	साध्वीश्री फूलकुमारीजी	मुमुक्षु हसमुख	सूरत	१५०
४८	१६ से २० नवम्बर तक	मुनिश्री पूनमचदजी	श्री चादमलजी बोहरा	बम्बई	७१

प्रेक्षा-चमत्कार के नव सस्मरण

विचित्र रोग विचित्र ढग से मिटा

जीवन मे कुछ घटनाए ऐसे घटित हो जाती है, जिन पर विश्वास नही किया जाता, लेकिन जब प्रत्यक्ष ऐसा होता है तब उसे स्वीकार करना ही होता है। बहिन सुशीला कच्छारा ३६ वे प्रेक्षाध्यान शिविर आमेट मे आई। वह वर्षो से भयकर और विचित्र रोग से ग्रसित थी। ८ वर्ष से वह किसी प्रकार का भोजन नही ले सकती थी। भोजन के नाम पर केवल चार बार चाय पीती थी, किन्तु चाय भी पीते ही तत्काल उल्टी हो जाती थी। इस प्रकार ८ वर्ष अत्यन्त पीडाजनक गुजरे। परिवार वाले परेशान थे। वह स्वय जीवन से निराश थी। जसलोक हॉस्पिटल, बम्बई तथा देश के अन्य श्रेष्ठ चिकित्सालयो एव चिकित्सको की चिकित्सा से कोई लाभ नही हुआ। हजारो-हजारो रुपयो की औषधिया भी असफल रही। प्रेक्षा-ध्यान शिविर मे शारीरिक, मानसिक एव भावात्मक परिवर्तन के लिए आसन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा, प्रेक्षाध्यान के विभिन्न प्रयोग करवाए गये। वह बडे मनोयोग से प्रयोग कर रही थी। कायोत्सर्ग मे अनुप्रेक्षा एव सकल्प के विशेष प्रयोग के साथ बीजाक्षर मत्र का एक प्रयोग पेट की विभिन्न अवयवो की क्रिया को समुचित बनाने के लिए बताया गया। साथ ही पेट को साफ करने की क्रिया का उपयोग किया गया। उसके पश्चात् उसे कभी उल्टिया नही हुई। अब वह चाय के अतिरिक्त द्राक्षा, अजीर, मोसम्बी का रस आदि लेने लगी। धीरे-धीरे वह सामान्य जीवन की ओर अग्रसर हो रही है। प्रेक्षाध्यान का वह नियमित अभ्यास कर रही है। चालीसवे प्रेक्षाध्यान शिविर मे पुन उसने अपने पति के साथ शिविर मे भाग लिया। प्रेक्षा के प्रयोग से उद्भूत यथार्थ को अपनी लेखनी से वह (सुशीला कच्छारा) लिख रही है, कि मैं शारीरिक, मानसिक एव भावात्मक दृष्टि से स्वस्थ हो रही हू। उसने अपने अनुभवो को इस प्रकार शब्दो मे अभिव्यक्त किया है "मुझे ध्यान मे बहुत आनन्द की अनुभूति होने लगी है, पूरी तरह से मेरा ध्यान जमने लगा। मेरे आचरण, व्यवहार, प्रकृति मे बहुत फर्क आने लगा है", वस्तुत प्रेक्षा-प्रयोग परिवर्तन का आधार बनता है, चाहे फिर वह शारीरिक, मानसिक और भावात्मक कठिनाई क्यो न हो ?

सुनते रहते है कि श्रद्धा परम बल है। विश्वास नही होता था श्रद्धा

३१	१ से १० सितम्बर तक	आचार्यश्री तुलसी	युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ	आमेट	१०८
३२	६ से १० सितम्बर तक	साध्वीश्री विद्यावतीजी	जेठाभाई	जलगाव	७१
३३	१३ से १७ सितम्बर तक	—	समणी मधुरप्रज्ञा, सरलप्रज्ञा, मल्लिप्रज्ञा	सिलीगुडी	३०
३४	३ से ६ अक्टूबर तक	मुनिश्री सोहनलालजी	एस०के० जैन, सतोष जैन	हिसार	५०
३५	२ से ६ अक्टूबर तक	साध्वीश्री तीजाजी	माणकचदजी साखला	रतलाम	२२
३६	१२ से २१ अक्टूबर तक	युवाचार्यश्री	शकरलाल मेहता, रसिक मेहता हसमुख भाई दोपी	आमेट	७१
३७	२८ सित० से ४ अक्टू० तक	मुनिश्री राकेशकुमारजी साध्वीश्री मोहनकुमारीजी	—	सी स्कीम, जयपुर	१८०० १००
३८	५ से १० अक्टूबर तक	साध्वीश्री सतोकाजी	—	राणावास	१२००
३९	६ से २९ अक्टूबर तक	साध्वीश्री जतनकुमारीजी	श्री सुरेन्द्रकुमार, श्रीमती सतोष जैन	टोहाना	१००
४०	३ से ५ नवम्बर तक	साध्वीश्री रामकुमारीजी	समणी स्थितप्रज्ञा, उज्ज्वलप्रज्ञा	डीडवाना	४५
४१	२८ अक्टू० से ३ नव० तक	साध्वीश्री यशोधराजी	श्री धर्मचदजी	भागलपुर	३५
४२	३ से ६ नवम्बर तक	साध्वीश्री कचनप्रभाजी	सुश्री सुधा हिरण	गगापुर	३५
४३	७ से १० नवम्बर तक	साध्वीश्री गोराजी	श्री अमृतलाल गुप्ता	जगराओ	४०
४४	४ से ८ नवम्बर तक	साध्वीश्री राजीमतीजी	—	चाडवास	५२
४५	१४ से २० नवम्बर तक	मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुमन'	समणी स्थितप्रज्ञा, श्री हेमतदास पटेल	छापर	२७
४६	२ से ६ नवम्बर तक	साध्वीश्री सुबोधकवरजी	समणी मधुरप्रज्ञा, अक्षयप्रज्ञा	देवगढ	५५
४७	२८ अक्टू० से ६ नव० तक	साध्वीश्री फूलकुमारीजी	मुमुक्षु हसमुख	सूरत	१५०
४८	१६ से २० नवम्बर तक	मुनिश्री पूनमचदजी	श्री चादमलजी बोहरा	बम्बई	७१

प्रेक्षा-चमत्कार के चद सस्मरण

विचित्र रोग विचित्र ढग से मिटा

जीवन मे कुछ घटनाए ऐसे घटित हो जाती है, जिन पर विश्वास नही किया जाता, लेकिन जब प्रत्यक्ष ऐसा होता है तब उसे स्वीकार करना ही होता है। बहिन सुशीला कच्छारा ३६ वे प्रेक्षाध्यान शिविर आमेट मे आई। वह वर्षो से भयकर और विचित्र रोग से ग्रसित थी। ८ वर्ष से वह किसी प्रकार का भोजन नही ले सकती थी। भोजन के नाम पर केवल चार बार चाय पीती थी, किन्तु चाय भी पीते ही तत्काल उल्टी हो जाती थी। इस प्रकार ८ वर्ष अत्यन्त पीडाजनक गुजरे। परिवार वाले परेशान थे। वह स्वय जीवन से निराश थी। जसलोक हॉस्पिटल, बम्बई तथा देश के अन्य श्रेष्ठ चिकित्सालयो एव चिकित्सको की चिकित्सा से कोई लाभ नही हुआ। हजारो-हजारो रुपयो की औषधिया भी असफल रही। प्रेक्षा-ध्यान शिविर मे शारीरिक, मानसिक एव भावात्मक परिवर्तन के लिए आसन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा, प्रेक्षाध्यान के विभिन्न प्रयोग करवाए गये। वह बडे मनोयोग से प्रयोग कर रही थी। कायोत्सर्ग मे अनुप्रेक्षा एव सकल्प के विशेष प्रयोग के साथ बीजाक्षर मत्र का एक प्रयोग पेट की विभिन्न अवयवो की क्रिया को समुचित बनाने के लिए बताया गया। साथ ही पेट को साफ करने की क्रिया का उपयोग किया गया। उसके पश्चात् उसे कभी उल्टिया नही हुई। अब वह चाय के अतिरिक्त द्राक्षा, अजीर, मोसम्बी का रस आदि लेने लगी। धीरे-धीरे वह सामान्य जीवन की ओर अग्रसर हो रही है। प्रेक्षाध्यान का वह नियमित अभ्यास कर रही है। चालीसवे प्रेक्षाध्यान शिविर मे पुन उसने अपने पति के साथ शिविर मे भाग लिया। प्रेक्षा के प्रयोग से उद्भूत यथार्थ को अपनी लेखनी से वह (सुशीला कच्छारा) लिख रही है, कि मै शारीरिक, मानसिक एव भावात्मक दृष्टि से स्वस्थ हो रही हू। उसने अपने अनुभवो को इस प्रकार शब्दो मे अभिव्यक्त किया है "मुझे ध्यान मे बहुत आनन्द की अनुभूति होने लगी है, पूरी तरह से मेरा ध्यान जमने लगा। मेरे आचरण, व्यवहार, प्रकृति मे बहुत फर्क आने लगा है", वस्तुत प्रेक्षा-प्रयोग परिवतन का आधार बनता है, चाहे फिर वह शारीरिक, मानसिक और भावात्मक कठिनाई क्यो न हो ?

सुनते रहते है कि श्रद्धा परम बल है। विश्वास नही होता था श्रद्धा

से गूगा बोलने लगता है, पगु चलने लगता है। होती होगी किसी भाग्यशाली के जीवन मे ऐसी घटनाए लेकिन अपनी बुद्धि पर विश्वास करने वाला आदमी इन्हे अतिशयोक्तिया ही मानता है।

जीवन मे जब कभी ऐसा अकल्पनीय घटित हो जाता है, तब विश्वास के सिवाय दूसरा कोई उपाय ही शेप नही रहता। श्री गेहरीलाल (मदारिया वाले) अपने निजी अनुभवो मे लिखते है—"मेरे गले मे एक गाठ हुई। गाठ को ठीक करने के लिए ऐलोपैथी दवा लेना प्रारम्भ किया। हजारो रुपयो के खर्च के बावजूद भी कोई लाभ नही हुआ। डॉक्टरो ने कह दिया—यह एलर्जी है। साथ ही शरीर पर सफेद दाग बढने लगे। श्वेत दागो से मानस अत्यधिक परेशान हो रहा था। इससे मुक्ति का मुझे कोई उपाय नही सूझ रहा था। सयोग से आचार्यप्रवर एव युवाचार्यश्री का आगमन अहमदाबाद मे हुआ। मैने अपना दु ख-दर्द युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के सम्मुख करते हुए उनसे समाधान मागा। युवाचायश्री ने करुणा कर सकल्पसूत्र प्रदान किया। मै अत्यन्त आस्था से उनके बताये प्रयोगो को नियमित करता रहा। मुझे जोधपुर चातुर्मास प्रवास मे दस दिन का सान्निध्य मिला। मेरी आस्था प्रयोग पर दृढ थी। देखते-देखते वे श्वेत चमडी के दाग एक-एक कर गायब हो गए।" इसे सकल्प शक्ति का चमत्कार माने या अशुभ सस्कारो का विलय माने। मानने को कुछ भी माना जा सकता है, किन्तु किसी कार्य के पीछे कारण अवश्य होता है, उस नियम की खोज न होने से चमत्कार की सज्ञा दे देते ह, परन्तु वास्तविकता मे नियम के बिना कोई घटना नही घट सकती ह। भीतर रोग पैदा होने के कारण है, तो निरोग होने के कारण भी भीतर ही छिपा हुआ है। सद्गुरु के द्वारा दिये गये सकल्प के द्वारा उसे पुनर्जीवित किया जा सकता है।

क्रोध, सुस्ती और दर्द गायब

प्रेक्षाध्यान शिविर की चर्चा करते मुझे मेरे परिवार के लोग परामर्श देते कि तू शिविर मे शामिल हो जा तुम्हारा गुस्सा और वेदना चली जाएगी। मुझे यह बहुत बुरा लगता, प्रत्युत् गुस्से मे आकर कहती—आप ही प्रेक्षा शिविर मे भाग ले लीजिए, मुझे ये शिविर अच्छे नही लगते। पिताजी के विशेष आग्रह से मै अपनी भाभी को साथ लेकर शिविर मे अनमना आई। मन नाना शकाओ से भयभीत था। जब प्रयोग प्रारम्भ हुआ तब प्रेक्षा-शिविर के स्वच्छ और मृदु वातावरण मे सारा भय निरस्त होने लगा। मे सजगता से

इन प्रयोगो मे उतर रही थी। सात्विक भोजन, नियमित चर्या, आसन, प्राणा-याम, कायोत्सर्ग, प्रेक्षा और अनुप्रेक्षा के विविध प्रयोग से न केवल सुस्ती और दद गायब होने लगा, बल्कि मेरे गुस्से मे आश्चर्यकारी परिवर्तन होने लगा। हालाकि मै समझती हू कि शिविरकालीन वातावरण मे गुस्से आदि आवेगो को उभर कर आने का अवसर ही नही मिलता। परिवार के वातावरण मे रहने से ही पता चलेगा कि प्रेक्षा की भावधारा का क्या प्रभाव रहा। उपरोक्त भाव मजु तातेड (धानीन) ने अपने सस्मरण मे लिखा है। आगे वे लिखती है—"मै आत्मविश्वास के साथ कह सकती हू कि प्रेक्षा के इन प्रयोगो ने मेरे शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को उपलब्ध कराने मे चामत्कारिक कार्य किया है। निराश, दु खी जीवन को नई दिशा उपलब्ध हुई है।"

सक्रियता की अनुभूति

प्रेक्षाध्यान शिविरो मे तेरापथी, जैन ही नही, जैनेतर लोग भी बडे उत्साह के साथ भाग लेते है। शिविरो मे पुलिस, सेना, तथा अन्य सरकार के विभिन्न विभागो के वरिष्ठ अधिकारी भी रुचि के साथ आते है। शिविर मे सम्मिलित एव वरिष्ठ सैनिक अशोक श्री सुरेगावकर ने अपने सस्मरण मे लिखा है—"मै एक सैनिक हू, बहुत दिनो से प्रेक्षा-ध्यान शिविर की चर्चा सुन रहा था। देखने की इच्छा से शिविर मे प्रविष्ट हुआ, पर अब अनुभव हो रहा है कि प्रेक्षा-ध्यान शिविर जीवन को सुखी और शातिमय बनाने के लिये बहुत जरूरी है। प्रेक्षाध्यान के विविध प्रयोगो से शरीर के हर अग मे सक्रियता की अनुभूति हो रही है।"

जीवन-विज्ञान परियोजना

जीवन-विज्ञान शिक्षा जगत् मे अभिनव प्रयोग है। सतुलित जीवन को जीने की विद्या है। जीवन-विज्ञान मूल्यपरक शिक्षा की एक प्रयोग पद्धति है। जीवन-विज्ञान को मस्तिष्क प्रशिक्षण प्रणाली भी कह सकते है। जीवन मिला है, उसे किस तरह से जीए जिससे चैतन्य की सुप्त शक्तियो को जागृत किया जा सके। भाव परिवर्तन के द्वारा श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सके। व्यक्ति के निर्माण से ही समाज, राष्ट्र और विश्व का निर्माण होता है।

जीवन-विज्ञान अपने आप मे अभिनव सभावनाओ को अपने अन्तर मे समेटे हुए भविष्य की ओर अग्रसर हो रहा है। शिक्षा और समाज एक दूसरे से लाभान्वित होते है। शिक्षा के द्वारा समाज व्यवस्था को गतिशील बनाने वाले व्यक्तियो का निर्माण किया जाता है। शिक्षा समाज की आवश्य-

कता और जीवन को गतिशीलता प्रदान करती है। इसलिए उस शिक्षा को सर्वागीण बनाने की दृष्टि से शिक्षा के साथ जीवन-विज्ञान के बीज वपित किए गये है।

जीवन-विज्ञान की इस प्रणाली को समाज एव राष्ट्रव्यापी बनाने के लिए शिक्षा तत्र का सहयोग आवश्यक ही नही, अपितु अनिवार्य है। व्यक्ति मे नैतिक मूल्यो और चरित्र निर्माण के अभाव को दूर करने के लिए अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान के प्रयोगो के साथ जीवन-विज्ञान प्रणाली का आविष्कार युग की अपेक्षा ही नही अनिवार्यता भी हे।

विद्यार्थी को केवल सिद्धान्त बोध चर्चा द्वारा उसे अपनी अस्मिता की पहचान कराई जा सके। यह कम सम्भव हे। सिद्धान्त और प्रयोग का समन्वय अपेक्षित हे जिससे नई पीढी का निर्माण किया जा सके जीवन-विज्ञान मूल्य घटक शिक्षा से सोलह मूल्य निर्धारित किए गए।

१ सामाजिक मूल्य—कर्त्तव्य-निष्ठा, स्वावलम्बन।
२ बौद्धिक-आध्यात्मिक मूल्य (१) सत्य (२) समन्वय (३) सप्रदाय-निरपेक्षता ४ मानवीय-एकता।
३ मानसिक मूल्य—(१) मानसिक सतुलन (२) धैर्य।
४ नैतिक मूल्य—(१) प्रामाणिकता (२) एकता (३) सहअस्तित्व।
५ आध्यात्मिक मूल्य—(१) अनासक्ति (२) सहिष्णता (३) मृदुता (४) अभय (५) आत्मानुशासन।

इन सोलह मूल्यो को आधार मानकर जीवन-विज्ञान की चार पुस्तको की परिकल्पना राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रस्तुत हुई। तुलसी अध्यात्म नीडम् जैन विश्व भारती ने आचार्य श्री तुलसी एव युवाचार्य श्री महाप्रज्ञजी के निर्देशन मे इस समायोजना को साकार रूप प्रदान करके लेखको की सगोष्ठी भीलवाडा मे बुलाई गई, जिसमे विभिन्न लेखको को प्रेक्षाध्यान एव जीवन-विज्ञान ग्रथ माला की पुस्तको के आधार पर पाठ्य पुस्तको के निर्माण का तय किया।

जीवन-विज्ञान परियोजना का यह क्रम राजस्थान शिक्षा विभाग के द्वारा पहली बार सितम्बर १९८२ से फरवरी १९८३ की अवधि निश्चित की गई। परियोजना के प्रारम्भ करने से पूर्व शिक्षको को विधिवत् ट्रेनिंग एव विद्यार्थियो की शारीरिक-मानसिक जाच भी करना आवश्यक था। इसके लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान परिपद् (एन० सी० ई० आर० टी) द्वारा दत्त

सकलन हेतु निम्न परीक्षण किए गए।

१ सामान्य मानसिक योग्यता	५ नैराश्य सहिष्णुता
२ रचनात्मक चिन्तन	६ समस्या समाधान योग्यता
३ चिन्ता	७ सामाजिक एव आर्थिक स्तर
४ समायोजना	८ सामान्य शैक्षिक उपलब्धि

इन परीक्षणो को नवी कक्षा के छात्रो पर किए गए। उसके पश्चात् उनके विभाग कर एक पर निश्चित किए हुए पाठ्यक्रम के माध्यम से प्रशिक्षण एव प्रयोग करवाए गए। दूसरे ग्रुप को कोई प्रयोग नही करवाया गया। छह महिने प्रतिदिन चालीस मिनिट के इस नियमित अध्ययन मे अच्छे परिणाम आये। छात्रो, अध्यापको एव अभिभवाको की सयुक्त राय से यह पाया गया कि, बालक के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एव भावात्मक व्यक्तित्व मे रूपान्तरण हुआ। इस प्रयोग के परिणामो एव अनुसधान की जिम्मेदारी एन० सी० ई० आर० टी० के कुशल अनुसधान अधिकारियो को सौंपी गई। छात्रो पर किये गये प्रयोगो से उनके व्यक्तिगत अनुभव, अध्यापको का विमर्श और वातावरण के अकन से यह निष्कर्ष उपलब्ध हुआ कि विद्यार्थी के जीवन-विकास एव अनुशासन आदि की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा। जीवन-विज्ञान की उपयोगिता निर्विवाद सिद्ध है। इसी से प्रेरित होकर व्यक्तिगत तथा निजी सस्थाओ मे अभ्यास समय-समय पर चलता रहा।

राजीव गाधी के प्रधानमत्री होने के साथ ही शिक्षा नीति के सदर्भ मे एक राष्ट्रीय परिचर्चा प्रारभ हुई। शिक्षा के स्वरूप एव क्रियान्वयन पर अनेक गोष्ठिया एव विचार मथन समय-समय पर सुलभ होने लगा। भारत सरकार के तत्कालीन शिक्षा मत्री श्री कृष्णचन्द्र पत ने आचार्य श्री एव युवाचार्य श्री से विचार-विमर्श किया। जीवन-विज्ञान की शिक्षा को व्यक्तित्व निर्माण के लिए स्वीकृति मिलनी चाहिये। जीवन-विज्ञान को स्वतत्र विद्या शाखा के रूप मे किस तरह प्रतिष्ठित किया जाये, गहन चितन हुआ। इससे पूर्व राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमत्री श्री शिवचरण माथुर व शिक्षा सचिव आदि अनेक शिक्षाविदो के साथ जीवन-विज्ञान के सदर्भ मे विचार-विमर्श हुआ। सबने इस योजना एव चिन्तन को सराहा ही नही अपितु उसे क्रियान्वयन के लिए अपनी शक्ति और सामर्थ्य को इस प्रविधि के लिए समर्पित किया। राजस्थान राज्य सरकार के तत्कालीन शिक्षा मत्री श्री रामपाल उपाध्याय के मध्य आसीद मे जीवन-विज्ञान परियोजना का विस्तार से

कता और जीवन को गतिशीलता प्रदान करती है। इसलिए उस शिक्षा को सर्वांगीण बनाने की दृष्टि से शिक्षा के साथ जीवन-विज्ञान के बीज वपित किए गये है।

जीवन-विज्ञान की इस प्रणाली को समाज एव राष्ट्रव्यापी बनाने के लिए शिक्षा तत्र का सहयोग आवश्यक ही नही, अपितु अनिवार्य हे। व्यक्ति मे नैतिक मूल्यो और चरित्र निर्माण के अभाव को दूर करने के लिए अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान के प्रयोगो के साथ जीवन-विज्ञान प्रणाली का आविष्कार युग की अपेक्षा ही नही अनिवार्यता भी हे।

विद्यार्थी को केवल सिद्धान्त बोध चर्चा द्वारा उसे अपनी अस्मिता की पहचान कराई जा सके। यह कम सम्भव हे। सिद्धान्त और प्रयोग का समन्वय अपेक्षित हे जिससे नई पीढी का निर्माण किया जा सके जीवन-विज्ञान मूल्य घटक शिक्षा से सोलह मूल्य निर्धारित किए गए।

१ सामाजिक मूल्य—कर्त्तव्य-निष्ठा, स्वावलम्बन।
२ बौद्धिक-आध्यात्मिक मूल्य (१) सत्य (२) समन्वय (३) सप्रदाय-निरपेक्षता ४ मानवीय-एकता।
३ मानसिक मूल्य—(१) मानसिक सतुलन (२) धैर्य।
४ नैतिक मूल्य—(१) प्रामाणिकता (२) एकता (३) सहअस्तित्व।
५ आध्यात्मिक मूल्य—(१) अनासक्ति (२) सहिष्णता (३) मृदुता (४) अभय (५) आत्मानुशासन।

इन सोलह मूल्यो को आधार मानकर जीवन-विज्ञान की चार पुस्तको की परिकल्पना राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रस्तुत हुई। तुलसी अध्यात्म नीडम् जैन विश्व भारती ने आचार्य श्री तुलसी एव युवाचार्य श्री महाप्रज्ञजी के निर्देशन मे इस समायोजना को साकार रूप प्रदान करके लेखको की सगोष्ठी भीलवाडा मे बुलाई गई, जिसमे विभिन्न लेखको को प्रेक्षाध्यान एव जीवन-विज्ञान ग्रथ माला की पुस्तको के आधार पर पाठ्य पुस्तको के निर्माण का तय किया।

जीवन-विज्ञान परियोजना का यह क्रम राजस्थान शिक्षा विभाग के द्वारा पहली बार सितम्बर १९८२ से फरवरी १९८३ की अवधि निश्चित की गई। परियोजना के प्रारम्भ करने से पूव शिक्षको को विधिवत् ट्रेनिंग एव विद्यार्थियो की शारीरिक-मानसिक जाच भी करना आवश्यक था। इसके लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान परिपद् (एन० सी० ई० आर० टी) द्वारा दत्त

की दृष्टि से तुलसी साधना शिविर पर पच दिवसीय जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का समायोजन किया गया। यह शिविर भी अध्यापकों के अभ्यास को परिपक्व करने की दृष्टि से महत्त्वपूण रहा। इस शिविर मे कुछ अध्यापक आवश्यक कार्य से उपस्थित नही हो पाये। राज्य सरकार ने अवशिष्ट अध्यापक-अध्यापिकाओ को कानोड मे प्रशिक्षण प्रदान करवाने का जीवन-विज्ञान परियोजना के प्रशिक्षको का पुनर्मूल्याकन की दृष्टि से त्रिदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम युवाचार्य श्री एव आचार्य प्रवर के मागदर्शन मे रखा। मुनिश्री किशनलालजी ने उनके परीक्षण और प्रशिक्षण को व्यवस्थित रूप से सचालित किया। जीवन-विज्ञान का यह उपक्रम राजस्थान के विभिन्न जिलो की निम्न २७ स्कूले अपने यहा परियोजना को सफलता से सचालित कर रही हैं।

राजस्थान की उन स्कूलो के नाम इस प्रकार है—

क्रम स०	विद्यालय का नाम	स्थान	जिला
१	राज० उच्च मा० वि०	जहाजपुर	भीलवाडा
२	,, ,, मा० बा० वि०	आसीद	भीलवाडा
३	,, ,, उच्च मा० वि०	दौसा	जयपुर
४	,, ,, पटेल उच्च मा० वि०	ब्यावर	अजमेर
५	,, ,, जैन गुरुकुल उ० मा० वि०	,,	,,
६	,, ,, उच्च बा० मा० वि०	,,	,,
७	,, ,, उ० मा० वि०	रिड	नागौर
८	राज० उच्च मा० वि०	राजसमद	उदयपुर
९	,, ,, ,, ,, ,,	प्रतापनगर	भीलवाडा
१०	,, ,, ,, ,, ,,	चित्तौडगढ	चित्तौडगढ
११	,, ,, ,, ,, ,,	निम्बाहेडा	,, ,,
१२	,, ,, ,, ,, ,,	रावतभाटा	,, ,,
१३	,, ,, बा० वि०	जगदीश चौक	उदयपुर
१४	,, ,, गुरु गो० उ० मा० वि०	,, ,,	,, ,,
१५	,, ,, सुमति शिक्षा उ० मा० वि०	राणावास	पाली
१६	,, ,, उच्च मा० वि०	रियाबडी	नागौर
१७	,, ,, ,, ,, ,,	बोरावड	,, ,,
१८	,, ,, ,, ,, ,,	भीममण्डी	कोटा
१९	,, ,, ,, ,, ,,	माडल	भीलवाडा

वार्तालाप हुआ । उन्होने अपने मत्रालय के सचिव एव अन्य विद्वान् चिन्तको के मध्य सगोष्ठी का आयोजन कर चालीस स्कूलो के शिक्षको को प्रशिक्षित करवाने के लिए राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसधान केन्द्र उदयपुर के माध्यम से जीवन-विज्ञान परियोजना पर विधिवत कार्य करने का निर्देश दिया। आमेट चातुर्मास के प्रारभ मे एस० आई० ई० आर० टी० द्वारा तुलसी अध्यात्म नीडम् के तत्वावधान मे प्रशिक्षण प्रारभ किया । जिसमे राजस्थान के विभिन्न स्कूलो के अध्यापक एव प्रधानाध्यापक उपस्थित हुए। एस० आई० ई० आर० टी० के निदेशक श्री भवर लाल शर्मा, बोर्ड के चेयरमैन श्री जगन्नाथ सिह मेहता आदि भी उपस्थित थे । जीवन-विज्ञान का यह प्रशिक्षण आचार्य श्री के सान्निध्य मे एव युवाचार्य श्री महाप्रज्ञजी के निर्देशन मे प्रेक्षा-प्रशिक्षको के प्रयोग एव प्रशिक्षणो से सम्पन्न हुआ । मुनिश्री किशनलालजी ने प्रशिक्षण कार्य अत्यन्त कुशलता से किया । उनके सहयोगी मुनि धर्मेन्द्र कुमार, श्री जेठा भाई, धर्मानन्द जी, श्री रसिक भाई, एव हसमुख भाई थे । व्यवस्था का कार्य नीडम् एव स्थानीय चातुर्मास व्यवस्था समिति ने सफलता पूर्वक किया । समापन समारोह मे हजारो लोगो के मध्य परीक्षा के परिणामो की घोषणा की गई । अध्यापक प्रधानाध्यापक एव शिक्षा अधिकारियो ने जीवन-विज्ञान परियोजना को विद्यार्थियो के लिए कल्याणकारी बताया । राजस्थान शिक्षा विभाग एव एस० आई० ई० आर० टी० के सहयोग से २७ स्कूलो मे जीवन-विज्ञान परियोजना को क्रियान्वित करने का निर्णय लिया गया । एस० आई० ई० आर० टी० ने जीवन-विज्ञान परियोजना को सुव्यवस्थित सचालित करने की दृष्टि से श्री चतरसिह मेहता के निर्देशन मे श्री लक्ष्मी लालजी जोशी आदि को कार्यभार सोपा, उन्होने इस कार्य को मनोयोग पूर्वक सम्पन्न करने का पुरुषार्थ किया । २७ स्कूलो मे शारीरिक, मानसिक जाच (परीक्षण) के पश्चात्, कक्षा के विद्यार्थियो के दो ग्रुप बना दिये गये । एक सुरक्षित ग्रुप दूसरा प्रायोगिक ग्रुप । जिसमे विधिवार जीवन-विज्ञान के निश्चित प्रयोग किये जा रहे हैं । जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण केन्द्र के अन्तर्गत श्री मागी लालजी जैन एव श्री पारसमल राका ने समय-समय पर निरीक्षण कर इस परियोजना को अग्रसर बनाया । एस० आई० ई० आर० टी० ने तो अपने सम्पूर्ण नैतिक दायित्व के साथ सजगता से समय-समय पर सूचनाए एव कार्य को गति देने के लिए अत्यधिक श्रम किया । स्कूलो मे जीवन-विज्ञान का शिक्षण विधिवत् प्रारभ होने के पश्चात् अध्यापको को पुन विशेष प्रशिक्षण एव जानकारी

की दृष्टि से तुलसी साधना शिविर पर पच दिवसीय जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का समायोजन किया गया। यह शिविर भी अध्यापको के अभ्यास को परिपक्व करने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा। इस शिविर मे कुछ अध्यापक आवश्यक कार्य से उपस्थित नही हो पाये। राज्य सरकार ने अवशिष्ट अध्यापक-अध्यापिकाओ को कानोड मे प्रशिक्षण प्रदान करवाने का जीवन-विज्ञान परियोजना के प्रशिक्षको का पुनर्मूल्याकन की दृष्टि से त्रिदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम युवाचार्य श्री एव आचार्य प्रवर के मार्गदशन मे रखा। मुनिश्री किशनलालजी ने उनके परीक्षण और प्रशिक्षण को व्यवस्थित रूप से सचालित किया। जीवन-विज्ञान का यह उपक्रम राजस्थान के विभिन्न जिलो की निम्न २७ स्कूले अपने यहा परियोजना को सफलता से सचालित कर रही हैं।

राजस्थान की उन स्कूलो के नाम इस प्रकार है—

क्रम स०	विद्यालय का नाम	स्थान	जिला
१	राज० उच्च मा० वि०	जहाजपुर	भीलवाडा
२	,, ,, मा० बा० वि०	आसीद	भीलवाडा
३	,, ,, उच्च मा० वि०	दौसा	जयपुर
४	,, ,, पटेल उच्च मा० वि०	ब्यावर	अजमेर
५	,, ,, जैन गुरुकुल उ० मा० वि०	,,	,,
६	,, ,, उच्च बा० मा० वि०	,,	,,
७	,, ,, उ० मा० वि०	रिड	नागौर
८	राज० उच्च मा० वि०	राजसमद	उदयपुर
९	,, ,, ,, ,, ,,	प्रतापनगर	भीलवाडा
१०	,, ,, ,, ,, ,,	चित्तौडगढ	चित्तौडगढ
११	,, ,, ,, ,, ,,	निम्बाहेडा	,, ,,
१२	,, ,, ,, ,, ,,	रावतभाटा	,, ,,
१३	,, ,, बा० वि०	जगदीश चौक	उदयपुर
१४	,, ,, गुरु गो० उ० मा० वि०	,, ,,	,, ,,
१५	,, ,, सुमति शिक्षा उ० मा० वि०	राणावास	पाली
१६	,, ,, उच्च मा० वि०	रियाबडी	नागौर
१७	,, ,, ,, ,, ,,	बोरावड	,, ,,
१८	,, ,, ,, ,, ,,	भीममण्डी	कोटा
१९	,, ,, ,, ,, ,,	माडल	भीलवाडा

२०	राज० उच्च मा० वि०	वदनौर	भीलवाडा
२१	,, ,, ,, ,, ,,	मडपिया	,, ,,
२२	,, ,, ,, ,, ,,	नाथद्वारा	उदयपुर
२३	,, ,, ,, ,, ,,	सलुम्बर	उदयपुर
२४	,, ,, ,, ,, ,,	वेगु	चित्तौडगढ
२५	,, ,, ,, ,, ,,	देवरिया	भीलवाडा
२६	,, ,, ,, ,, ,,	भिडर	उदयपुर
२७	,, ,, ,, ,, ,,	वल्लभनगर	,, ,,

जीवन-विज्ञान की महत्ता को ध्यान मे रखकर अखिल भारतीय अणुव्रत समिति ने शिक्षा मे जीवन-विज्ञान की आवश्यकता पर परिचर्चा आचायश्री, युवाचार्यश्री के सान्निध्य मे समायोजित की। जिसकी अनुशसाए श्रीरामजीसिह भागलपुर ने प्रस्तुत की। जीवन-विज्ञान की अनेक सगोष्ठिया हुई। जयपुर दिल्ली, उदयपुर, आमेट आदि विभिन्न क्षेत्रो मे मुनियो, साध्वियो, समणियो द्वारा शिक्षाविदो के मध्य सगोष्ठिया आयोजित की। जिससे जीवन-विज्ञान की विचारधारा को अग्रसर होने का अवसर मिला। जीवन-विज्ञान शिक्षा क्षेत्र मे अभिनव प्रयोग और व्यक्तित्व के सर्वागीण विकास की आधारशिला वन सकता है। जीवन-विज्ञान के इस कार्यक्रम को व्यवस्थित और सुचारु ढग से सचालित करने की दृष्टि से जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण केन्द्र की परिकल्पना की गई, जिससे जीवन-विज्ञान के प्रशिक्षक तैयार होकर देश और विदेशो मे प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान का प्रशिक्षण और प्रसार कर सके। जीवन-विज्ञान के इस क्रम मे दो वर्ष का पाठ्यक्रम निश्चित किया गया। जिसमे जीवन-विज्ञान, स्वास्थ्य-विज्ञान, मानसिक चिकित्सा, समाज-विज्ञान पर्यावरण-विज्ञान के अतिरिक्त प्रेक्षाध्यान एव शिक्षा सम्बन्धी शोध प्रवन्ध लिखना होता है।

जीवन-विज्ञान शिक्षण-पाठ् का आवश्यक अग

राजस्थान सरकार ने शिक्षा मे नैतिक मूल्यो को समाविष्ट करने की दृष्टि से राज्य के शिक्षा शास्त्रियो की दिनाक ८ ४ ८५ को जयपुर मे आयोजित गोष्ठी मे लिए गये निर्णय के अनुसार एक समिति का गठन दिनाक २३ ५ ८५ को निम्न आदेशानुसार किया।

राजस्थान सरकार

शिक्षा (ग्रुप-१) विभाग

क्रमाक एफ १६/२८ शिक्षा-१/८१ जयपुर दिनाक २३ ५ ८५

आज्ञा

मानवीय शिक्षा मत्री महोदय की अध्यक्षता मे ८ अप्रैल, १६८५ को जीवन-विज्ञान प्रायोजना के सबध मे आयोजित बैठक मे जीवन-विज्ञान के गहन अध्ययन एव शिक्षा क्रम के क्रियाकलापो मे अनिवार्य रूप से सम्मिलित करने के उद्देश्य से एक समिति का गठन किया गया है। जिसके सदस्य निम्नानुसार है —

१	शिक्षा सचिव	अध्यक्ष
२	श्री जे० एस० मेहता, अध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षाबोर्ड, अजमेर।	सदस्य
३	निदेशक, प्राथमिक एव माध्यमिक शि० बीकानेर।	सदस्य
४	श्री मनमोहन अग्रवाल, निदेशक, प्रौढ शिक्षा, जयपुर	सदस्य
५	श्री सी० के० नागर, सयुक्त निदेशक शिक्षा जयपुर।	सदस्य
६	सयुक्त निदेशक (प्राथमिक) प्राथमिक माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर	सदस्य
७	श्रीमती सीता अग्रवाल, शिक्षा उपनिदेशक (महिला) उदयपुर	सदस्य
८	प्रिंसिपल, शारीरिक शिक्षा महावि० जोधपुर	सदस्य
६	श्रीमती कमला शास्त्री, जिला शिक्षा अधिकारी (महिला) जयपुर	सदस्य
१०	श्री हीरालाल आचार्य, उप जिला शिक्षा अधिकारी, शारीरिक शिक्षा, प्राथमिक एव माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर	सदस्य
११	श्री भवर लाल शर्मा, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण सस्थान, उदयपुर।	सदस्य

आज्ञा से
(वी० पी० वर्मा)
विशेषाधिकारी, शिक्षा

समिति के गहन अध्ययन के आधार पर राज्य सरकार ने राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण मस्थान, उदयपुर को जीवन-विज्ञान के शिक्षण-प्रशिक्षण के क्रम की शीघ्र ही कार्यवाही प्रारम्भ करने का निर्देश दिया, जिसके अन्तर्गत सस्थान ने जुलाई, ८५ से राज्य के २७ विभिन्न विद्यालयो मे जीवन-विज्ञान के शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रारभ करने के लिए अध्यापको को जीवन-विज्ञान शिक्षण के प्रणेता आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य मे प्रशिक्षण लेने हेतु आमेट शिविर मे पहुचने के लिए आदेश निकाले।

राज्य सरकार, शिक्षा विभाग एव माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के निर्देशानुसार राज्य के चयनित विभिन्न २७ विद्यालयो मे प्रशिक्षण अध्यापको ने जीवन-विज्ञान के शिक्षण को जुलाई ८५ से प्रारभ किया। सारे कार्यक्रम का आयोजन राज्य शैक्षिक अनुसधान सस्थान उदयपुर की देखरेख मे हो रहा है। आचार्यश्री तुलसी, युवाचाय श्री महाप्रज्ञ जी एव मुनिश्री किशनलाल तथा जीवन-विज्ञान के अन्य विशेपज्ञो ने अध्यापको का प्रशिक्षण समय पर अच्छे तरीके से सपन्न किया है। अध्यापकगण अपने-अपने विद्यालयो मे इसका शिक्षण बहुत ही अच्छे ढग से करा रहे है। इसका समय-समय पर मूल्याकन भी किया जा रहा है। छात्रो मे बहुत ही उत्साह लगा। जीवन मे अच्छे परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए है।

परिशिष्ट-६

अमृत-महोत्सव-द्वितीय चरण पर

दैनिक समाचार पत्रो मे प्रकाशित सामग्री

१ हिन्दुस्तान, नई दिल्ली	२२/६/८५
'खोजने पर उजालो की कमी नही	आचार्य तुलसी
२ नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली	२२/६/८५
'धर्मशासना का पचासवा वर्ष'	आचार्य तुलसी
३ पजाब केशरी, नई दिल्ली	२२/६/८५
'आचार्य तुलसी की क्राति अर्चना'	देवेन्द्रकुमार कर्णावट
४ जनसत्ता, नई दिल्ली	२२/६/८५
'अहिसा सावभौम और आचार्य तुलसी'	जैनेन्द्र कुमार
५ ट्रिब्यून, चण्डीगढ	२२/६/८५
'अभिनन्दन आध्यात्मिक चेतना का'	युवाचार्य महाप्रज्ञ
६ नई दुनिया, इन्दौर	२२/६/८५
'अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी'	डॉ० नेमीचन्द जैन
७ नवभारत टाइम्स, जयपुर	२३/६/८५
'राजनीति पर धर्म का अकुश आवश्यक'	आचाय तुलसी
८ राष्ट्रदूत, जयपुर	२२/६/८५
'राजनीति पर धर्म का अकुश'	आचार्य तुलसी
९ नवज्योति, जयपुर	२२, २३, २४/६/८५
अमृत कीर्ति के धनी आचार्य तुलसी'	राजेन्द्रशकर भट्ट
'अभिनन्दन आध्यात्मिक चेतना का'	युवाचार्य महाप्रज्ञ
'नई दृष्टि और सवेदना के वाहक'	डॉ० नरेन्द्र भानावत
१० कन्नड प्रभा, बेंगलोर	२२/६/८५
आचार्य तुलसी परिचय	
११ द समाज, कटक	२७/६/८५
'आचार्य तुलसी समर्पित जीवन'	युवाचाय महाप्रज्ञ
१२ Indian Express, Ahmedabad	21/9/85
'He Showed the light'	S K SURANA

१३ सदेश, अहमदाबाद	२०/६/८५
'आचार्य तुलसी'	रतीलाल दीपचद्र देसाई
१४ गुजरात समाचार, अहमदाबाद	२२,२३/६/८५
'मानवता के मसीहा'	साध्वी फूलकुमारी
'धर्म उपासना प्रधान नही'	शशिन
'आचार्य श्री तुलसी'	हसमुख बक्षी
१५ जय हिन्द, अहमदाबाद	२२/६/८५
'शत शत वन्दना'	रोहित शाह
१६ प्रताप, सूरत	२२/६/८५
'राष्ट्रसत आ० तुलसी'	मुनि मोहनलाल 'शार्दुल'
१७ नवभारत, रायपुर	२२/६/८५
'युगप्रधान' युवाचार्य, 'अभिवन्दना' समणी सुप्रज्ञा	
१८ अमृत सदेश, रायपुर	२२/६/८५
१९ युग धर्म, रायपुर	२२/६/८५
२० देशबन्धु, रायपुर	२२/६/८५
'बीसवी सदी के युग प्रधान आचार्य'	युवाचार्य महाप्रज्ञ
'आचार्य काल के पचास वर्ष'	दलसुख मालवणिया
२१ हिम प्रभा, चडीगढ	२४/६/८५
२२ शिवालिक सदेश, चडीगढ	२४/६/८५
'प्रकाशपुज आचार्य तुलसी'	मुनि विनयकुमार 'आलोक'
'अभिनन्दन' ज्योतिपुज'	मुनि तत्वरुचि-कुलदीप
२३ उदयपुर एक्सप्रेस, उदयपुर	२१,२२/६/८५
'आचार्य तुलसी अमृत-महोत्सव'	रणजीत अग्रवाल
अणुव्रत नैतिक क्राति	आचार्य तुलसी
२४ नवजीवन, उदयपुर	२२/६/८५
'पचासवी जयति पर चिंतन'	मुनि सुखलाल
२५ जय राजस्थान, उदयपुर	२२/६/८५
नैतिक क्राति की दिशा अणुव्रत	सनत जोशी
अभिनन्दन आध्यात्मिक चेतना का	युवाचार्य महाप्रज्ञ
२६ जलते दीप, जोधपुर	२२/६/८५
अभिनन्दन	साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

२७ आधुनिक राजस्थान, अजमेर — २२/८/८५
जरूरत है धर्म मे क्राति की — आचार्य तुलसी
२८ लोकमत, बीकानेर — २१/६/८५
अभिनन्दन आध्यात्मिक चेतना का — युवाचार्य महाप्रज्ञ
२९ धरती करे पुकार, कोटा — २३/६/८५
अभिनन्दन आध्यात्मिक चेतना का — युवाचार्य महाप्रज्ञ
३० अणिमा, जयपुर — २७/६/८५
अभिनन्दन आध्यात्मिक चेतना का — युवाचार्य महाप्रज्ञ
३१ सयुक्त कर्नाटक, बैंगलोर — १६/८/८५
अणुव्रत आन्दोलन — आचार्य तुलसी
३२ खामोश, टोक — २२,२३/६/८५
युग पुरुष आचार्य तुलसी — साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
३३ हिन्दू [सिंधी] अजमेर — १६/६/८५
34 The Hindustan Times — 2/10/85
Behind the Scenes — Promilla Karhar
३५ युग पक्ष, बीकानेर [विशेषाक] — २२/६/८५
३६ प्रभावित, भीलवाडा [विशेषाक] — २२/६/८५

प्रमुख साप्ताहिक

१ ब्लिट्ज, बम्बई — २१/६/८५
अमृत वर्षायी आचार्य तुलसी — नन्दकिशोर नौटियाल
२ सा० हिन्दुस्तान, नई दिल्ली — २६/६/८५
अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी
३ धर्मयुग, बम्बई — २२/६/८५
आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव — हस्तीमल हस्ती

र्य तुलसी अमृत-महोत्सव विशेषांक

दैनिक पत्र [दो]

युगपक्ष बीकानेर, प्रभावित भीलवाडा

साप्ताहिक पत्र [बारह]

जैन भारती कलकत्ता, उदयपुर साप्ताहिक उदयपुर
हमारा वतन जयपुर, मरू अमृत श्रीगगानगर
हाडौती मानव कोटा, टाइम्स आफ अरावली पाली

१३	सदेश, अहमदावाद	२०/६/८५
	'आचार्य तुलसी'	रतीलाल दीपचद्र देसाई
१४	गुजरात समाचार, अहमदाबाद	२२,२३/६/८५
	'मानवता के मसीहा'	साध्वी फूलकुमारी
	'धर्म उपासना प्रधान नही'	शशिन
	'आचार्य श्री तुलसी'	हसमुख बक्षी
१५	जय हिन्द, अहमदाबाद	२२/६/८५
	'शत शत वन्दना'	रोहित शाह
१६	प्रताप, सूरत	२२/६/८५
	'राष्ट्रसत आ० तुलसी'	मुनि मोहनलाल 'शार्दुल'
१७	नवभारत, रायपुर	२२/६/८५
	'युगप्रधान' युवाचार्य, 'अभिवन्दना' समणी सुप्रज्ञा	
१८	अमृत सदेश, रायपुर	२२/६/८५
१९	युग धर्म, रायपुर	२२/६/८५
२०	देशबन्धु, रायपुर	२२/६/८५
	'बीसवी सदी के युग प्रधान आचार्य'	युवाचार्य महाप्रज्ञ
	'आचार्य काल के पचास वर्ष'	दलसुख मालवणिया
२१	हिम प्रभा, चडीगढ	२४/६/८५
२२	शिवालिक सदेश, चडीगढ	२४/६/८५
	'प्रकाशपुज आचार्य तुलसी'	मुनि विनयकुमार 'आलोक'
	'अभिनन्दन' ज्योतिपुज'	मुनि तत्वरुचि-कुलदीप
२३	उदयपुर एक्सप्रेस, उदयपुर	२१,२२/६/८५
	'आचार्य तुलसी अमृत-महोत्सव'	रणजीत अग्रवाल
	अणुव्रत नैतिक क्राति	आचार्य तुलसी
२४	नवजीवन, उदयपुर	२२/६/८५
	'पचासवी जयति पर चिंतन'	मुनि सुखलाल
२५	जय राजस्थान, उदयपुर	२२/६/८५
	नैतिक क्राति की दिशा अणुव्रत	सनत जोशी
	अभिनन्दन आध्यात्मिक चेतना का	युवाचार्य महाप्रज्ञ
२६	जलते दीप, जोधपुर	२२/६/८५
	अभिनन्दन	साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

२७ आधुनिक राजस्थान, अजमेर — २२/८/८५
जरूरत है धर्म मे क्रांति की — आचार्य तुलसी

२८ लोकमत, बीकानेर — २१/९/८५
अभिनन्दन आध्यात्मिक चेतना का — युवाचार्य महाप्रज्ञ

२९ धरती करे पुकार, कोटा — २३/९/८५
अभिनन्दन आध्यात्मिक चेतना का — युवाचार्य महाप्रज्ञ

३० अणिमा, जयपुर — २७/९/८५
अभिनन्दन आध्यात्मिक चेतना का — युवाचार्य महाप्रज्ञ

३१ सयुक्त कर्नाटक, बैंगलोर — १९/८/८५
अणुव्रत आन्दोलन — आचार्य तुलसी

३२ खामोश, टोंक — २२,२३/९/८५
युग पुरुष आचार्य तुलसी — साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

३३ हिन्दू [सिंधी] अजमेर — १९/९/८५

34 The Hindustan Times — 2/10/85
Behind the Scenes — Promilla Karhar

३५ युग पक्ष, बीकानेर [विशेषाक] — २२/९/८५

३६ प्रभावित, भीलवाडा [विशेषाक] — २२/९/८५

प्रमुख साप्ताहिक

१ ब्लिट्ज, बम्बई — २१/९/८५
अमृत वर्षायी आचार्य तुलसी — नन्दकिशोर नौटियाल

२ सा० हिन्दुस्तान, नई दिल्ली — २९/९/८५
अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी

३ धर्मयुग, बम्बई — २२/९/८५
आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव — हस्तीमल हस्ती

आचार्य तुलसी अमृत-महोत्सव विशेषांक

दैनिक पत्र [दो]

युगपक्ष बीकानेर, प्रभावित भीलवाडा

साप्ताहिक पत्र [बारह]

जैन भारती कलकत्ता, उदयपुर साप्ताहिक उदयपुर
हमारा वतन जयपुर, मरू अमृत श्रीगगानगर
हाडौती मानव कोटा, टाइम्स आफ अरावली पाली

१३ सदेश, अहमदाबाद — २०/६/८५
'आचार्य तुलसी' — रतीलाल दीपचद्र देसाई

१४ गुजरात समाचार, अहमदाबाद — २२,२३/६/८५
'मानवता के मसीहा' — साध्वी फूलकुमारी
'धर्म उपासना प्रधान नही' — शशिन
'आचार्य श्री तुलसी' — हसमुख वक्षी

१५ जय हिन्द, अहमदाबाद — २२/६/८५
'शत शत वन्दना' — रोहित शाह

१६ प्रताप, सूरत — २२/६/८५
'राष्ट्रसत आ० तुलसी' — मुनि मोहनलाल 'शार्दुल'

१७ नवभारत, रायपुर — २२/६/८५
'युगप्रधान' युवाचार्य, 'अभिवन्दना' समणी सुप्रज्ञा

१८ अमृत सदेश, रायपुर — २२/६/८५

१९ युग धर्म, रायपुर — २२/६/८५

२० देशबन्धु, रायपुर — २२/६/८५
'बीसवी सदी के युग प्रधान आचार्य' — युवाचार्य महाप्रज्ञ
'आचार्य काल के पचास वर्ष' — दलसुख मालवणिया

२१ हिम प्रभा, चडीगढ — २४/६/८५

२२ शिवालिक सदेश, चडीगढ — २४/६/८५
'प्रकाशपुज आचार्य तुलसी' — मुनि विनयकुमार 'आलोक'
'अभिनन्दन' ज्योतिपुज' — मुनि तत्वरुचि-कुलदीप

२३ उदयपुर एक्सप्रेस, उदयपुर — २१,२२/६/८५
'आचार्य तुलसी अमृत-महोत्सव' — रणजीत अग्रवाल
अणुव्रत नैतिक क्राति — आचार्य तुलसी

२४ नवजीवन, उदयपुर — २२/६/८५
'पचासवी जयति पर चितन' — मुनि सुखलाल

२५ जय राजस्थान, उदयपुर — २२/६/८५
नैतिक क्राति की दिशा अणुव्रत — सनत जोशी
अभिनन्दन आध्यात्मिक चेतना का — युवाचार्य महाप्रज्ञ

२६ जलते दीप, जोधपुर — २२/६/८५
अभिनन्दन — साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

२७ आधुनिक राजस्थान, अजमेर — २२/८/८५
जरूरत है धर्म मे क्रांति की — आचार्य तुलसी

२८ लोकमत, बीकानेर — २१/६/८५
अभिनन्दन आध्यात्मिक चेतना का — युवाचार्य महाप्रज्ञ

२६ धरती करे पुकार, कोटा — २३/६/८५
अभिनन्दन आध्यात्मिक चेतना का — युवाचार्य महाप्रज्ञ

३० अणिमा, जयपुर — २७/६/८५
अभिनन्दन आध्यात्मिक चेतना का — युवाचार्य महाप्रज्ञ

३१ सयुक्त कर्नाटक, बैंगलोर — १६/८/८५
अणुव्रत आन्दोलन — आचार्य तुलसी

३२ खामोश, टोंक — २२,२३/६/८५
युग पुरुष आचार्य तुलसी — साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

३३ हिन्दू [सिंधी] अजमेर — १६/६/८५

34 The Hindustan Times — 2/10/85
Behind the Scenes — Promilla Karhar

३५ युग पक्ष, बीकानेर [विशेषांक] — २२/६/८५

३६ प्रभावित, भीलवाड़ा [विशेषांक] — २२/६/८५

प्रमुख साप्ताहिक

१ ब्लिट्ज, बम्बई — २१/६/८५
अमृत वर्षायी आचार्य तुलसी — नन्दकिशोर नौटियाल

२ सा० हिन्दुस्तान, नई दिल्ली — २६/६/८५
अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक **आचार्य श्री तुलसी**

३ धर्मयुग, बम्बई — २२/६/८५
आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव — हस्तीमल हस्ती

आचार्य तुलसी अमृत-महोत्सव विशेषांक

दैनिक पत्र [दो]

युगपक्ष बीकानेर, प्रभावित भीलवाड़ा

साप्ताहिक पत्र [बारह]

जैन भारती कलकत्ता, उदयपुर साप्ताहिक उदयपुर
हमारा वतन जयपुर, मरू अमृत श्रीगंगानगर
हाड़ौती मानव कोटा, टाइम्स आफ अरावली पाली

सार्दूलपुर टाइम्स सार्दूलपुर, अणुवीक्षक वीकानेर
पूर्वोदय जयपुर, गणराज्य वीकानेर
चहक जयपुर, उजाले की ओर पहुना

पाक्षिक पत्र [तीन]

भारतीय समाज लाडनू, मेवाड काफ्रेन्स, कारण वैगलोर

मासिक पत्र [तीन]

युवादृष्टि गगाशहर, प्रेक्षाध्यान लाडनू, जागृति हैदराबाद

☐ निम्न समाचार पत्रो मे विशेष पठनीय सामग्री प्रकाशित ☐

साप्ताहिक [चौईस]

सेनानी (बीकानेर), पूर्वोदय (जयपुर), निभय पथिक (बम्वई), ब्लास्ट (जोधपुर), जनमगल (उदयपुर), ग्राम समाज (भीलवाडा), धीर (वैगलोर), जय काठल (प्रतापगढ), यगटाइम्स (टोक), शातिदूत (जयपुर), सरदारशहर टाइम्स, अमर ज्योति (जयपुर), जालौरकी धरती (जयपुर), सास्कृतिक चेतना (जयपुर), शेखावाटी उद्गार (खेतडी), रिमझिम (अजमेर), मसीहा सैलाव (अजमेर), मजदूर ललकार (मारवाड मूण्डवा), बीकानेर केसरी (बीकानेर), राष्ट्रवाणी (अजमेर), दिवाकर दिप्ति (रतलाम), पशुपत (जयपुर), गगानगर ज्योति (श्रीगगानगर), श्रमिक विकास (जयपुर)

पाक्षिक अणुव्रत, पाथेय, निर्विवाद (कोटा) [तीन]

मासिक जैन जगत्, श्री अमर भारती, धर्मधारा [तीन]

परिशिष्ट—१०

राष्ट्रीय समिति प्रकाशन

अमृत-बिन्दु आकर्षक फोल्डर्स

१ अहिंसा सार्वभौम	आचार्य श्री तुलसी
२ व्यवसाय जगत् की बीमारी मिलावट	,,
३ भावनात्मक एकता	,,
४ सर्व धर्म सद्भाव	,,
५ अस्पृश्यता	,,
६ एक मर्मान्तिक पीडा दहेज	,,
७ अनेक बुराइयो की जड मद्यपान	,,
८ क्या खोया क्या पाया	,,
९ जीवन-विज्ञान मूल्यपरक शिक्षा की प्रयोग पद्धति	युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ
१० जीवन-विज्ञान मस्तिष्क प्रशिक्षण की प्रणाली	,,
११ नेतृत्व की कसौटिया	साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
१२ अमृत-महोत्सव क्या, क्यो, कैसे	,,
१३ जैन एकता कुछ बिंदु	आचार्य श्री तुलसी
१४ काव्याञ्जलि	,,
१५ अहिंसक क्राति के उद्घोषक	श्री यशपाल जैन
१६ अहिंसा सार्वभौम दिवस	
१७ युग की चुनौतिया और अहिंसा की शक्ति	आचार्य श्री तुलसी
१८ राष्ट्र जीवन मे आचार्य श्री तुलसी	
१९ युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी	साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
२० शिक्षा के सदर्भ मे अणुव्रत	आचार्य श्री तुलसी
२१ क्रातिकारी दिशा अणुव्रत आदोलन	
२२ जीवन-विज्ञान सर्वाङ्गीण व्यक्तित्व विकास का सकल्प	युवाचार्य महाप्रज्ञ

२३ समन्वय क्यो
२४ जैन समन्वय सम्मेलन क्या और क्यो ?

लघु पुस्तिकाए

१ आचार्य श्री तुलसी जीवन रेखा	युवाचार्य महाप्रज्ञ
२ आचार्य श्री तुलसी एक सपूर्ण व्यक्तित्व	साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
३ अमृत क्षण	मुनि श्री सुखलाल
४ नई शिक्षा और जीवन-विज्ञान	प० जर्नादन राय नागर
५ आगम सपादन एक दृष्टि	मुनि श्री सुमेरमल 'सुदर्शन'
६ आचार्य भिक्षु और आचार्य तुलसी	श्री सोहनराज कोठारी

सचित्र दिग्दर्शिका

१ अमृत-कलश अभियान	डॉ० महेन्द्र कर्णावट

परिशिष्ट —११

११२ वें मर्यादा महोत्सव व अमृत महोत्सव (तृतीय चरण के अवसर पर

समुच्चारित गीत

सजग हो आत्मानुशासन को जगाए हम।
सघ की अनुशासना रग-रग रमाए हम ॥स॥
अर्हतो की शासना है सघ का आधार,
साधना का सूत्र पहला अमलतम आचार।
समर्पण की पुण्य सरिता मे नहाए हम ॥१॥
सघ का विस्तार उसकी नीतिमत्ता मे,
हो नही विश्वास पूजा और सत्ता मे।
भिक्षु की शुभ भावना दिल मे बसाए हम ॥२॥
सघ मे ही शक्ति इसमे है नही सदेह,
प्राण है आचार उसका सगठन है देह।
देह को शोषण कुपोषण से बचाए हम ॥३॥
एक ही नेतृत्व गण मे है नई शैली,
एक मर्यादा सभी की रीत अलबेली।
पथ की पहचान को उज्ज्वल बनाए हम ॥४॥
प्रबलतम पुरुषार्थ की बहती रही धारा,
भिक्षु का जीवन निदर्शन चमकता तारा।
इस विरासत को सतत आगे बढाए हम ॥५॥
भाग्य से हमने सचेतन सघ यह पाया,
गीत नव निर्माण का पल-पल सफल गाया।
सृजन का साक्षी बना इसको दिखाए हम ॥६॥
मार्ग का अस्तित्व कब तक पुष्ट जब तक नीति,
न्याय से आचार से आचार्य से वर प्रीति।
आज मर्यादा दिवस तुलसी मनाए हम,
उदयपुर मे अमृत का निर्झर बहाए हम ॥७॥

लय—मेरा जीवन

१२. थाए

अखिल भारतीय तेरापथ युवक-परिषद्, गगाशहर

आलोच्य वर्ष की उपलब्धिया

१ युवालोक योजना क्रमश प्रगति पर—केन्द्रीय कार्यालय लाडनू से गगाशहर स्थानान्तरण निर्णय की क्रियान्विति के साथ सबसे पहला कार्य था आवश्यक भूखड की प्राप्ति एव तदनन्तर विविधमुखी प्रवृत्तियो के केन्द्र स्थल युवालोक के निर्माण का। इस कार्य मे काफी प्रगति हो रही है।

२ शाखा परिषदो के लिए सविधान को लागू किया गया।

३ जैन सस्कार—पुस्तक का नवीनीकरण, विधि मे सशोधन, उपसमिति का गठन; जैन सस्कार मण्डल का गठन, मगलभावना-पत्रक का प्रकाशन, विवाह प्रमाणीकरण पत्र का प्रचलन आदि।

४ मत्र दीक्षा कार्यक्रमो का राष्ट्रव्यापी आयोजन।

५ युवा दिवस (आचार्यश्री तुलसी का दीक्षा दिवस)

६ सकल्प ग्रहण समारोह का शुभारम्भ (तेयुप शाखाओ द्वारा)

७ तेयुप सस्कार केन्द्रो का शुभारम्भ।

८ तेयुप गति-प्रगति प्रदर्शनी का आयोजन।

९ प्रकाशन—१ साहित्य प्रकाशन—(समाज की प्रतिभाओ के साहित्य का प्रकाशन)
२ सत्सस्कार माला
३ जैन-दर्शन माला
४ समाज-निर्माण माला

१० युवादृष्टि—नियमितता, ग्राहकवृद्धि अभियान, सुरुचिपूर्ण साहित्य का प्रकाशन, नये स्तम्भ।

११ पाथेय—नया रूप समाचार बुलेटिन के रूप मे।

१२ प्रतियोगिताओ पर चल विजयोपहार—१ तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता एव
२ चर्चा स्पर्धा।

१३ अन्यान्य प्रतियोगिताए—१ सामान्यज्ञान प्रतियोगिता ।
२ सस्कार-केन्द्र योगासन प्रतियोगिता ।

१४ सरक्षक योजना मे वृद्धि ।

१५ सगठन यात्राए—मारवाड, मेवाड, थली, हरियाणा, पजाब, पूर्वांचल, दक्षिणाचल, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश आदि ।

१६ आचलिक सम्मेलन—गौहाटी मे पूर्वांचल सम्मेलन ।

१७ तेयुप बेज का निर्माण ।

१८ तेयुप सस्कार सूत्र (बच्चो को मत्रदीक्षा के उपलक्ष मे उपहार स्वरूप)

१९ मगल गीत—प्रकाशन एव प्रसारण ।

२० सघीय सेवा—यात्राओ एव विज्ञप्ति प्रसारण के माध्यम से ।

२१ स्थानीय परिषदो को स्वागत बोर्ड के लिए प्रारूप ।

इस वर्ष परिषद् के अध्यक्ष श्री पदमचद पटावरी, मत्री श्री सुभाषचद सुराणा, सहमत्री श्री ईश्वरचद बैद आदि पदाधिकारियो ने हरियाणा, पजाब, बगाल, असम व दक्षिण भारत का व्यापक दौरा किया । उनकी इन यात्राओ का उद्देश्य था सगठन को मजबूत बनाना ।

पूरे देश मे ९५ पजीकृत शाखापरिषदे है । वे अपने-अपने क्षेत्रो मे सघीय कार्यक्रमो की सफल समायोजना के साथ सार्वजनिक कार्यों मे भी सक्रिय हिस्सा लेती है ।

साहित्य-प्रकाशन

१ कर्मलोक (प्रेस मे)
२ मगल गीत (तृतीय सस्करण)
३ तेरापथ परिचायिका
४ आचार्यश्री तुलसी (जीवन गाथा)
५ अर्हत् आदीश्वर
६ साधना के शिखर पर (घासीरामजी स्वामी की जीवनी)
७ जैन सस्कार—तृतीय सस्करण
८ जैन सस्कार—चतुर्थ सस्करण
९ तत्त्वज्ञान भाग-२
१० आहार और स्वास्थ्य
११ अनमोल बोल—आचार्यश्री तुलसी के

१२ तेरापथ धर्म और दर्शन
१३ इक्कीसवी सदी मे युवको का योगदान

अखिल भारतीय महिला मडल भी समाज की महिलाओ मे सस्कार निर्माण व रूढि उन्मूलन की दिशा मे सक्रिय है। मडल की अध्यक्षा श्रीमती सज्जनदेवी चौपडा, मत्री श्रीमती निर्मला दूगड ने कई सगठन यात्राए की। मडल से 'नारीलोक' विज्ञप्ति का प्रकाशन होता है।

जैन विश्व भारती

आज से करीब १५ वर्ष पूर्व जैन विश्व भारती की स्थापना शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, स्वास्थ्य, सेवा आदि व्यापक एव कल्याणकारी उद्देश्यो के विकास के लिए हुई। यह सस्था इन उद्देश्यो की पूर्ति की ओर उत्तरोत्तर प्रगति करती रही है।

इस जन कल्याणकारी प्रतिष्ठान मे विविध उपयोगी प्रवृत्तिया व्यापक रूप से चल रही है। इसकी प्रवृत्तियो का सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है

१. साधना-विभाग (तुलसी अध्यात्म नीडम्) •

साधना-विभाग अपनी बहु-आयामी प्रवृत्तियो के द्वारा समाज मे अध्यात्म-चेतना को जागृत करने के लिए सतत प्रयत्नशील है।

(क) प्रेक्षा-ध्यान —इस वर्ष मे साधको का अच्छा आवागमन रहा है। उनको नियमित रूप से प्रेक्षा-ध्यान का प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता रहा है।

(ख) शिविर —तनाव से ग्रस्त लोगो को शान्ति प्रदान करने हेतु जीवन-विज्ञान और प्रेक्षा-ध्यान के लगभग ३०० से भी ऊपर शिविर आयोजित हो चुके है। प्रेक्षा-ध्यान को जन-व्यापी बनाने की दृष्टि से इस वर्ष श्री मोहनलालजी कठोतिया और श्री धर्मानन्दजी ने विदेश यात्रा की तथा वहा अलग-अलग स्थानो पर प्रेक्षा-ध्यान के प्रयोग करवाए। प्रयोगो का वहा के जन-मानस पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा।

(ग) साहित्य-प्रकाशन —प्रेक्षा-ध्यान से सबधित पूर्व प्रकाशित ग्रथो के अतिरिक्त इस वर्ष २० पुस्तके प्रकाशित की गई है।

(घ) प्रेक्षा-ध्यान पत्रिका —यह अध्यात्म की सामग्री से परिपूर्ण मासिक पत्रिका है। यह पत्रिका उत्तरोत्तर लोकप्रिय बनती जा रही है। इस

वर्ष जीवन-विज्ञान-विशेपाक और अमृत-विशेपाक भी प्रकाशित किए गए है। इसका वार्षिक शुल्क २५/- रु० है।

(ड) जीवन-विज्ञान —(1) इस वर्ष जीवन-विज्ञान-प्रशिक्षको का पाठ्यक्रम दो वर्षो मे विभाजित कर दिया गया है। पहले वर्ष के प्रशिक्षको की परीक्षाए हो चुकी है। अभी दोनो वर्षो के अध्ययन का क्रम चल रहा है। उदयपुर मे विशेष रूप से अध्ययन की व्यवस्था की गयी है। ये प्रशिक्षक स्थान-स्थान पर प्रेक्षा-ध्यान-केन्द्र एव शिविरो का सचालन करेगे।

(11) शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और भावात्मक—इन चारो आयामो का सतुलित विकास हो सके, इस दृष्टि से राजस्थान के २७ जिलो के २७ विद्यालयो मे जीवन-विज्ञान-पाठ्यक्रम को इस वर्ष प्रारम्भ किया गया है। अध्यापको को प्रशिक्षित करने के लिए इस वर्ष आचार्यश्री के सान्निध्य एव युवाचार्यश्री के निर्देशन मे जीवन-विज्ञान के चार शिविर राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण-सस्थान, उदयपुर और तुलसी अध्यात्म नीडम् के सयुक्त तत्त्वावधान मे आयोजित किए गए।

इस विभाग की पथदर्शिका—समणी श्री स्थितप्रज्ञाजी, विभागाधिपति—श्री जेठाभाई जवेरी, निदेशक—श्री शकरलालजी मेहता, श्री धर्मानन्दजी एव श्री जेसराजजी सेखानी है।

२. स्वास्थ्य एव सेवा (सेवाभावी कल्याण-केन्द्र) :

इस केन्द्र के अन्तर्गत एक चिकित्सालय तथा एक रसायनशाला का सचालन हो रहा है। चिकित्सालय से लगभग २५० रोगी प्रतिदिन नि शुल्क औषधिया प्राप्त कर स्वास्थ्य लाभ उठा रहे है।

सलग्न रसायनशाला के अन्तर्गत विशुद्ध आयुर्वेदिक तथा बहुमूल्य औषधियो का निर्माण-कार्य किया जाता है। रसायनशाला मे लगभग—३५० औषधियो का निर्माण हो चुका है जिनमे—रस-रसायन, भस्म, पर्पटी, वटी, गुग्गुल, चूर्ण, आसव, अरिष्ट, क्वाथ, अनुभूत तथा स्वर्ण-घटित औषधिया भी है। इन सपूर्ण औषधियो का लाभ जनता-जनार्दन को प्राप्त हो—इस हेतु एक उचित मूल्य का विक्रय-विभाग भी चलाया जा रहा है।

श्री दुलीचन्दजी बोथरा द्वारा अपनी स्व० पत्नी की स्मृति मे प्रदत्त भवन मे श्रीमती कानकवरी बोथरा आयुर्वेदिक अनुसन्धान एव चिकित्सा-केन्द्र का शुभारभ आम जनता की सेवा हेतु शार्दूलपुर मे दिनाक २६-६-८५ को हो

चुका है जो सेवाभावी-कल्याण-केन्द्र के अन्तर्गत सचालित होता हुआ प्रतिदिन लगभग १२० रोगियो को नि शुल्क चिकित्सा-सेवा प्रदान कर रहा है ।

आरोग्य शोध-पीठ

अनुसधान-काय हेतु इस विभाग द्वारा सचालित आरोग्य शोधपीठ के अन्तगत केसर रोग की दवा का निर्माण एव वाधक्य-निवारण कार्य भी चालू है । इस विभाग के द्वारा समय-समय पर कतिपय सेमिनारो का आयोजन भी किया जाता है ।

सम्प्रति इस विभाग के अध्यक्ष श्री झूमरमलजी वेंगानी एव निदेशक श्री सोहनलालजी दाधीच है ।

३. शिक्षा (जय-विद्या-विहार)

ब्राह्मी विद्यापीठ पारमार्थिक शिक्षण सस्था का प्रमुख अग है जो मुमुक्षु वहिनो के लिए स्नातक स्तर की शिक्षा की व्यवस्था करता है । विद्यापीठ मे पाठ्यक्रम दो प्रकार का है—एक राजस्थान विश्वविद्यालयी तथा दूसरा जैन विश्व भारती द्वारा निर्धारित ।

स्नातकोत्तर स्तर के अध्ययन का काय शोध-विभाग द्वारा सपादित किया जाता है । विद्वान् एव अनुभवी व्यारयाताओ द्वारा हिन्दी, अग्रेजी, सस्कृत (व्याकरण और साहित्य), प्राकृत, जैन-विद्या, दर्शन-शास्त्र, जीवन-विज्ञान आदि विपयो का अध्यापन-कार्य सुचारु रूप से चल रहा है । अध्यापन-काय मे समणी-वृन्द एव स्नातकोत्तर मे मुमुक्षु वहनो का सहयोग भी निरन्तर उपलब्ध है ।

वर्तमान मे श्री भैरूलालजी वरडिया निदेशक पद पर तथा श्री सीतारामजी दाधीच प्राचार्य पद पर कायरत है ।

४. शोध विभाग ·

(क) अनेकात शोध-पीठ

अनेकान्त शोधपीठ को राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा "जैन-विद्या एव प्राकृत शोध-केन्द्र" के रूप मे मान्यता प्राप्त हो चुकी है । इसके निदेशक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त जैन एव वौद्ध दर्शन के विशेषज्ञ डॉ० नथमल टाटिया है । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा भी इस शोध-केन्द्र के लिए प्राच्य भाषाओ मे शोध निमित्त मान्यता प्राप्त करने के प्रयास चल रहे है ।

इस अनुभाग के अन्तगत जैन विश्व-कोष निर्माण, जैनागमकोश-

निर्माण, विशिष्ट ग्रन्थो के अग्रेजी अनुवाद, स्नातकोत्तर अध्ययन एव अध्यापन, समणी-वृन्द को अग्रेजी भाषा मे विशिष्ट अध्यापन, जैन-विद्या परिषद् का आयोजन आदि अनेक विन्दुओ पर कार्य किया जा रहा है। जैन-विद्या के विविध आयामो पर विद्वानो, साधु-साध्वियो, समणियो तथा मुमुक्षु साधिकाओ द्वारा महत्त्वपूर्ण शोध-कार्य किए जा रहे है। सूयगडो, समवाओ, एकार्थक कोश, निरुक्त कोश, तुलसी मजरी, पाइय-सगहो—जैसे ग्रन्थो का प्रकाशन शोध-विभाग की उपादेयता का प्रतीक है। सप्रति "चित्त समाधि जैन योग" नामक एक द्विभाषी ग्रन्थ का मुद्रण कराया जा रहा है, जिसमे साधना के विषय मे भारतीय एव विदेशी विद्वानो की उच्चस्तरीय सामग्री समाविष्ट की जा रही है।

विभागीय त्रैमासिक शोध पत्रिका "तुलसी-प्रज्ञा" का प्रकाशन नियमित रूप से किया जा रहा है। इसका वार्षिक शुल्क ३५/- रु० है। इसका प्रत्येक अक विद्वानो के शोधपूर्ण लेखो से भरपूर है, फलत सग्रहणीय है।

(ख) वर्द्धमान ग्रन्थागार

"श्रुत सन्निधि" नामक इस भव्य इमारत मे शोध-कार्य हेतु कई लाख रुपयो की लागत के १४२१० ग्रन्थ है। शोध-छात्रो द्वारा इन ग्रथो का अहर्निश उपयोग हो रहा है।

५. समण-सस्कृति सकाय :

(क) जैन विद्या परीक्षाए (सप्तवर्षीय पाठ्यक्रम)

सत्र १९८५-८६ मे भारत, नेपाल, भूटान आदि देशो मे जैन विद्या परीक्षाओ के २२२ केन्द्र स्थापित हुये जिनमे १७२ केन्द्रो मे करीब साढे नौ हजार परीक्षार्थी-आवेदन-पत्र भरे गये। परीक्षार्थियो की सख्या साढे छ हजार रही। इन परीक्षाओ से अब तक करीब साढे इक्कावन हजार छात्र-छात्राए लाभान्वित हो चुके है।

उपरोक्त पाठ्यक्रम के साथ द्विवर्षीय पाठ्यक्रम और जोडने का चितन चालू है।

(ख) पत्राचार पाठमाला (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)

सत्र १९८४-८५ मे प्रथम वर्ष मे २४५ एव द्वितीय वर्ष मे २५ परीक्षार्थी थे। वर्तमान सत्र (१९८५-८६) मे प्रथम वर्ष मे ३२२ तथा द्वितीय वर्ष मे ५१ परीक्षार्थी है।

अव तक करीव साढे वारह सौ परीक्षार्थी इस योजना से लाभान्वित हो चुके ह।

(ग) यात्रा

जैन विद्या परीक्षा एव पत्राचार पाठमाला योजनाओ के प्रचार-प्रसार हेतु विभागीय निदेशक श्री मूलचद घोसल द्वारा इस वार मेवाड यात्रा गत प्रथम श्रावण मास मे की गयी, जो प्रचार-प्रसार एव मघ-हित की दप्टि से सफल रही ।

(घ) जय-तिथि-पत्रक का प्रकाशन । (ङ) जैन-विद्या-प्रशिक्षण-शिविर का आयोजन । (च) केन्द्र-व्यवस्थापक-गोष्ठी । (छ) पत्र व्यवहार एव विविध ।

इस विभाग की पथदर्शिका—समणी परमप्रज्ञाजी तथा निदेशक श्री मूलचद घोसल ह ।

केन्द्रीय कार्यालय :

जैन विश्व भारती के सामान्य प्रशासन, श्रम, नीति, वित्त, मुद्रण, जीरोक्स, साहित्य-विक्रय, हिसाव-किताव, पत्र-व्यवहार, आतिथ्य, जन-सपर्क, राजकीय-सपक, छात्रवृत्ति, वार्पिक अधिवेशन, शिविर कार्यालय, सामग्री-क्रय, स्टोक-स्टोर्म, निर्माण, विकास, साफ-सफाई, सडक, भवन, वाहन, सिंचाई, हरितीकरण, पेयजल, विद्युत् व अमृत-निधि आदि से सवधित सर्व कार्य का सचालन मत्री-कार्यालय द्वारा होता है ।

४१ सदस्यो की मचालिका समिति द्वाग लिये गये नीति सवधी निर्णयो की क्रियान्विति का दायित्व इसी केन्द्रीय मत्रालय पर होता ह । सम्प्रति सस्था के कुलपति श्री श्रीचदजी रामपुरिया, अध्यक्ष श्री खेमचदजी सेठिया, मत्री श्री श्रीचदजी बैगानी एवम् कोपाध्यक्ष श्री हनुमानमलजी वैगानी हे। सस्था का वार्पिक वजट इस समय २० लाख रुपये का ह, जो उक्त सचालिका समिति द्वारा पारित किया जाता है ।

आलोच्य वर्ष मे प्रकाशित साहित्य

१ सूयगडो	आचायश्री तुलसी युवाचायश्री महाप्रज्ञ
२-३ वूद-वूद से घट भरे (भाग-१, २)	आचायश्री तुलसी
४ अणुव्रत विशारद	,, ,,

५ अणुव्रत गति-प्रगति	आचार्यश्री तुलसी
६ प्रेक्षा-ध्यान प्राणविज्ञान	,,
७ Bhagwan Mahaveer	,,
८ Illuminatoı of Jaına Tenets	,,
९ कैसे सोचे ?	युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ
१० भिक्षु विचार दर्शन	,,
११ प्रेक्षा-ध्यान शरीर-प्रेक्षा	,,
१२ प्रेक्षा-ध्यान आधार और स्वरूप	,,
१३ प्रेक्षा-ध्यान श्वासप्रेक्षा	,,
१४ किसने कहा मन चचल हे	,,
१५ अनेकात हे तीसरा नेत्र	,,
१६ मैं मेरा मन मेरी शाति	,,
१७ महावीर की साधना का रहस्य	,,
१८ प्रेक्षा-ध्यान कायोत्सग	,,
१९ प्रेक्षा-ध्यान चैतन्यकेन्द्र-प्रेक्षा	,,
२० प्रेक्षा-ध्यान शरीर-प्रेक्षा	,,
२१ जैन दशन मे तत्त्व-मीमासा	,,
२२ आहार और अध्यात्म	,,
२३ एकला चलो रे	,,
२४ Perksha Dhvana Self-Awareness bv Relaxatıon	,,
२५ Preksha Dhvana Perceptıon of Breathıng	,,
२६ Preskha Dhyana Perceptıon of Psvchıc Colours	,,
२७ Aspects of Jaına Monastıcısm	,,
२८ झीणी चरचा	जयाचार्य
२९ लाडनू गौरव	मुनिश्री नवरत्नमलजी
३०-३३ शासन समुद्र (भाग-१२, १३, १४, १५)	,,
३४ तेरापथ दिग्दर्शन	मुनिश्री सुमेरमलजी (लाडनू)
३५-३८ जैन विद्या भाग-१, २, ३, ४	मुनिश्री सुमेरमलजी (सुदशन)

अव तक करीव साढे वारह सौ परीक्षार्थी इस योजना से लाभान्वित हो चुके है।

(ग) यात्रा

जैन विद्या परीक्षा एव पत्राचार पाठमाला योजनाओ के प्रचार-प्रसार हेतु विभागीय निदेशक श्री मूलचद घोसल द्वारा इस वार मेवाड यात्रा गत प्रथम श्रावण मास मे की गयी, जो प्रचार-प्रसार एव सघ-हित की दष्टि से सफल रही।

(घ) जय-तिथि-पत्रक का प्रकाशन। (ङ) जैन-विद्या-प्रशिक्षण-शिविर का आयोजन। (च) केन्द्र-व्यवस्थापक-गोष्ठी। (छ) पत्र व्यवहार एव विविध।

इस विभाग की पथदर्शिका—समणी परमप्रज्ञाजी तथा निदेशक श्री मूलचद घोसल है।

केन्द्रीय कार्यालय.

जैन विश्व भारती के सामान्य प्रशासन, श्रम, नीति, वित्त मुद्रण, जीरोक्स, साहित्य-विक्रय, हिसाव-किताव, पत्र-व्यवहार, आतिथ्य, जन-सपक, राजकीय-सपर्क, छात्रवृत्ति, वार्षिक अधिवेशन, शिविर कार्यालय, सामग्री-क्रय, स्टोक-स्टोम, निर्माण, विकास, साफ-सफाई, सडक, भवन, वाहन, सिंचाई, हरितीकरण, पेयजल, विद्युत् व अमृत-निधि आदि से सवधित सव कार्य का सचालन मत्री-कार्यालय द्वारा होता है।

४१ सदस्यो की सचालिका समिति द्वारा लिये गये नीति सवधी निर्णयो की क्रियान्विति का दायित्व इसी केन्द्रीय मत्रालय पर होता हे। सम्प्रति सस्था के कुलपति श्री श्रीचदजी रामपुरिया, अध्यक्ष श्री खेमचदजी सेठिया, मत्री श्री श्रीचदजी वैगानी एवम् कोपाध्यक्ष श्री हनुमानमलजी वैगानी हे। सस्था का वार्षिक वजट इस समय २० लाख रुपये का ह, जो उक्त सचालिका समिति द्वारा पारित किया जाता है।

आलोच्य वर्ष मे प्रकाशित साहित्य

१ सूयगडो — आचायश्री तुलसी, युवाचायश्री महाप्रज्ञ

२-३ वूद-वूद से घट भरे (भाग-१, २) — आचायश्री तुलसी

४ अणुव्रत विशारद — ,, ,,

५ अणुव्रत गति-प्रगति	आचार्यश्री तुलसी
६ प्रेक्षा-ध्यान प्राणविज्ञान	,,
७ Bhagwan Mahaveer	,,
८ Illuminator of Jaina Tenets	,,
९ कैसे सोचे ?	युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ
१० भिक्षु विचार दर्शन	,,
११ प्रेक्षा-ध्यान शरीर-प्रेक्षा	,,
१२ प्रेक्षा-ध्यान आधार और स्वरूप	,,
१३ प्रेक्षा-ध्यान श्वासप्रेक्षा	,,
१४ किसने कहा मन चचल हे	,,
१५ अनेकात ह तीसरा नेत्र	,,
१६ मैं मेरा मन मेरी शाति	,,
१७ महावीर की साधना का रहस्य	,,
१८ प्रेक्षा-ध्यान कायोत्सग	,,
१९ प्रेक्षा-ध्यान चैतन्यकेन्द्र-प्रेक्षा	,,
२० प्रेक्षा-ध्यान शरीर-प्रेक्षा	,,
२१ जैन दर्शन मे तत्त्व-मीमासा	,,
२२ आहार और अध्यात्म	,,
२३ एकला चलो रे	,,
२४ Perksha Dhvana Self-Awareness bv Relaxation	,,
२५ Preksha Dhvana Perception of Breathing	,,
२६ Preskha Dhyana Perception of Psychic Colours	,,
२७ Aspects of Jaina Monasticism	,,
२८ झीणी चरचा	,,
२९ लाडनू गौरव	जया[illegible]
३०-३३ शासन समुद्र (भाग-१२, १३, १४, १५)	मुनिश्री नवरत्न[illegible]
३४ तेरापथ दिग्दशन	,,
	मुनिश्री सुमेरमलजी ([illegible]
३५-३८ जैन विद्या भाग-१, २, ३, ४	मुनिश्री सुमेरमलजी ([illegible]

३९ प्रज्ञा की परिक्रमा मुनि श्री किशनलाल
४० आसुओ का दान ,,
४१ प्रेक्षा-ध्यान शरीर-विज्ञान मुनिश्री महेन्द्रकुमार
४२ प्रेक्षा-ध्यान प्राण-चिकित्सा साध्वीश्री राजीमती

यह सारा साहित्य जैन विश्व भारती प्रेस से प्रकाशित हुआ।

साहित्य-सस्थान, टाडगढ

प्रकाशित श्रमण-साहित्य को प्रचारित करने की दृष्टि से १९ अक्टूबर १९७१ को साहित्य-सस्थान का प्रादुर्भाव हुआ। इसी क्रम मे आचार्य श्री तुलसी के ५१ वे दीक्षा-दिवस पर "भगवान् महावीर चल साहित्य सेवा" के नाम से घर-घर साहित्य पहुचाने की एक प्रवृत्ति प्रारभ की गई। इस हेतु पैसठ हजार की लागत का एक वाहन काछबली के शाह मिश्रीलाल धमचन्द सुराणा के सहयोग से जुटाया गया। भगवान् महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष मे "भगवान् महावीर ग्रथागार" के नाम से एक समृद्ध पुस्तकालय की नियोजना प्रारभ की गई जिसमे कम से कम २५०० जैन ग्रथो के सकलन का लक्ष्य रखा गया। शोधार्थियो के लिए "पुरा-सकलन" मय शोध कक्ष की व्यवस्था के बाद २० जून ८४ को सस्था ने अपना निजी भवन खरीद लिया। इस भवन को प्रज्ञा-शिखर नाम दिया गया। जहा अब शिक्षा, साहित्य भाषा और शब्द ससार के विकास के लिए गति है।

भगवान् महावीर ग्रथागार—२६ जनवरी १९८५ को आचार्य श्री तुलसी के अमृत-महोत्सव के उपलक्ष मे नन्हे बच्चो के व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से यह नन्हा सा उपक्रम प्रारभ किया गया। सर्वप्रथम सस्थान के निदेशक श्री लालचन्द कोठारी द्वारा राष्ट्रीय-ध्वज फहराया गया। इसके बाद "प्रज्ञा-शिखर" पर आयोजित समारोह मे राज्यपाल-पुरस्कार प्राप्त कुमारी कुसुम महेश्वरी द्वारा बाल मदिर के उद्घाटन-स्वरूप ज्योति प्रज्वलित की गई। १० बच्चो को प्रथम प्रवेश दिया गया जिनके माथे पर तिलक लगाकर श्री जॉर्ज द्वारा गुड से मुह मीठा किया गया। स्थानीय राजकीय उच्च मा० विद्यालय प्रधानाध्यापक द्वारा बच्चो को "सयम खलु जीवनम्" का प्रतीक धारण करवाया गया। श्री भीकमचद कोठारी "भ्रमर", निदेशक, साहित्य-सस्थान ने इस अवसर पर उपस्थित सैकडो लोगो को बाल मदिर की कल्पना और योजना से अवगत करवाया। बच्चो के अध्ययन सबधी सामग्री की एक प्रदर्शनी भी इस अवसर पर आयोजित की गई जो बच्चो के अभिभावको के विशेष आक-

र्षणका विषय थी। बाल मदिर मे फर्नीचर, अध्यापन-सामग्री एव बच्चो को लाने ले जाने के लिए एक मिनी-बस की व्यवस्था जन-सहयोग से की गई। "प्रज्ञा शिखर" पर इस हेतु तीन कमरे और बरण्डा उपलब्ध करवाया गया।

बाल विकास योजना—भगवान् महावीर बाल मदिर को चलाने मे आय से अधिक होने वाले व्यय को अर्जित करने की दृष्टि से एक जनाधारित योजना का जून १९८५ से प्रारभ किया। इस योजना के अन्तर्गत २०० ऐसे लोगो की सकलना की गई जो प्रतिमाह साहित्य-सस्थान को १००/-एक सौ रुपया ७ सात प्रतिशत वार्षिक ब्याज पर तीन वर्ष तक उधार देगे। इस तरह प्राप्त होने वाली राशि को सस्थान अधिक ब्याज पर देगा और होने वाली आय बाल मदिर के लिए उपलब्ध करवाई जाएगी। इस योजना के सदस्यो मे हिन्दु, मुस्लिम, जैन, सनातन-धर्मी और हरिजन, ब्राह्मण सभी विद्यमान है। प्रतिमाह योजना के भाग्यशाली सदस्य का चयन किया जाता है और उसे उपहार दिया जाता है।

जैन विद्या ८५—जैन-साहित्य प्रदर्शनी—आचार्यश्री तुलसी के अमृत-महोत्सव हेतु मेवाड-प्रवेश के उपलक्ष मे टॉडगढ आगमन पर साहित्य-सस्थान ने अपने "प्रज्ञा-शिखर" भवन मे इस विशाल पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया। प्रदशनी मे सारे भारतवर्ष के कोई १५० जैन-साहित्य प्रकाशको द्वारा प्रकाशित जैन-साहित्य की २००० से अधिक उत्कृष्ट कृतिया प्रदर्शित की गई। पुस्तको के पास आचार्य श्री तुलसी और तेरापथ से सबधित अनेक प्रकार की सामग्री भी प्रदर्शनी मे विद्यमान थी। प्रदर्शनी मे प्रथम प्रवेश आचार्य श्री द्वारा किया गया और इस अवसर पर अपने उद्घाटन भाषण मे आचार्य श्री ने साहित्य-सस्थान के प्रयत्नो की सात्विक अनुशसा की। पाच दिन तक चली इस प्रदर्शनी को हजारो लोगो ने देखा और मुक्त कठ से प्रशसा की। सीमित ससाधनो के बावजूद जिस विशाल परिमाण मे प्रदर्शनी का आयोजन था लोगो को आश्चर्यान्वित कर रहा था।

भगवान् महावीर बालोद्यान—"प्रज्ञा-शिखर" को सौदर्य प्रदान करने, बाल मदिर के बच्चो के लिए रमणीय क्रीडा-स्थल का विकास करने एव पर्यावरण-विकास को मध्य नजर रखते हुए "प्रज्ञा-शिखर" पर एक स्मृति वन विकसित किया गया है। लगभग ५० प्रकार के विविध पेड-पौधे इस उद्यान मे लगाए गए है। कडी सुरक्षा और कीमती सिचाई के साथ सुन्दर रख रखाव

मे लगभग १००० पेड पौधो को विकसित किया जा रहा है। इस उद्यान के लिए स्थायी सिंचाई व्यवस्था के लिए एक पम्प योजना भी प्रगति पर है। पेडो के सरक्षण के लिए विविध लोगो की स्मृति मे सुन्दर ट्री-गार्ड स्थापित किए हैं।

जैन-विद्या शिक्षण—आचाय श्री के आमेट चातुर्मास प्रवास मे, जैन-दर्शन के अधिकारिक प्रवक्ता तैयार करने की दृष्टि से आयोजित जैन-विद्या शिक्षण कायक्रम के सचालन का भार भी साहित्य-सस्थान ने अपने कधे पर लिया और तेरापथ युवक परिषद् आमेट के सहयोग से उसे विधिवत् सचालित किया था। राणावास चातुर्मास मे यह कार्य साहित्य-सस्थान ने ही सर्वप्रथम प्रारभ किया था।

इसके अतिरिक्त साहित्य-सस्थान के "प्रज्ञा-शिखर" परिसर मे मुमुक्षु वहिन सुश्री ज्योति द्वारा कोई ५० समणी और मुमुक्षु बहिनो की उपस्थिति मे वाल मदिर के एक जिर्णोद्धृत-कक्ष का उद्घाटन किया गया। अनेक शोधार्थियो को शोध-सामग्री उपलब्ध करवायी गई। ग्रथागार मे नए ग्रथो का समावेश किया गया। सस्थान का विधान पुर्ननिमित किया गया।

तुलसी साधना शिखर—राजसमन्द

तुलसी साधना शिखर का निर्माण स्थानीय लोगो के लिए बिल्कुल अप्रत्याशित एव अकल्पित था। किसी ने सोचा तक नही था कि यह विषमोन्नत भूमि एक भव्य रमणीय साधना स्थली के रूप मे विकसित होगी। पर, यह सब सच हुआ। इसे साकार रूप देने वाले थे—श्री भवरलाल कर्णावट (राजसमद), श्री भवरलाल डागलिया (उदयपुर) तथा देवेन्द्र कुमार कर्णावट (राजसमद)। इन तीन व्यक्तियो के सतत अध्यवसाय, सहयोग और कल्पना का ही सुपरिणाम है वर्तमान तुलसी साधना शिखर। भवरलाल कर्णावट राजसमद के प्रमुख समाज सेवी एव वकील है। इसके निर्माण मे उनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण है। वे आज भी प्राण-प्रण से जुटे हुए है।

आचार्य श्री का मगल आशीर्वाद तथा मुनिश्री शुभकरण जी का सतत सानिध्य उनके लिए अनवरत पथ-प्रकाशी बना रहा। चार वर्षों के थोडे से समय मे ही तुलसी साधना शिखर आज अपनी भव्यता, रमणीयता और प्राकृतिक सुषमा से हजारो-हजारो लोगो के लिए प्रेरणीय और दर्शनीय स्थान बन चुका है।

साधना शिखर की प्राकृतिक छटा अनूठी है। उसकी अवस्थिति इस

ढग से हुई ह माना स्वय प्रकृति ने ही उसे गोद मे लिया हो। चतुर्दिग्व्यापी सहज सौन्दय वहा के वायुमण्डल को अत्यत सजीव बनाये हुए है। प्राची मे उदय होता भव्य अरुणोदय, विशाल वनराशि, काकरोली स्थित द्वारकाधीश का प्राचीन मदिर, पश्चिम मे आदिनाथ ऋषभदेव का पवित्र जिनालय, उत्तर मे ऐतिहासिक राजसमद झील, विपुल जलराशि, पक्षियो का कर्णप्रिय मधुर कलरव, जलक्रीडा और दक्षिण मे रामेश्वर महादेव का मदिर दूर-दूर तक फैला शून्य नील गगन यहा की सुषमा को द्विगुणित बनाये हुए है।

तुलसी साधना शिखर योग-साधना की दृष्टि से न केवल तेरापथ समाज का वरन् समग्र जैन समाज का एक विशाल और सुन्दर सस्थान है। यह लगभग १०२, २६१ स्क्वायर फीट भूमि पर फैला हुआ है। अब तक वहा हुए निर्माण है—दो मजिली एक भव्य इमारत, भूमिगत साधना कक्ष, प्रवचन हाल, चित्त-प्रेक्षा गुफा आदि प्रमुख है।

इन चार वर्षों के सक्षिप्त कार्य काल मे जहा साधना शिखर ने काफी विकास किया है वहा अब भी काफी कुछ करना अवशेष है। मुख्य रूप से वहा की अग्रिम भावी योजनाए ये है—

(१) "चिद् विभा" इमारत की दूसरी मजिल का निर्माण।

(२) दो गुफाओ का निर्माण।

(३) रमणीय और प्राकृतिक फव्वारे, झरने।

(४) दो बडे उद्यानो का निर्माण।

(५) साधक भोजन-गृह का निर्माण।

(६) हरितीकरण।

यह वहा की छोटी-सी रूपरेखा है। योग की बढ़ती माग को पूरा करने मे यह स्थान एक अच्छा और उपयोगी केन्द्र बन सकता है। यहा की मुख्य-प्रवृत्तिया साधना सम्बन्धी ही रहेगी। मनुष्य अपने आप को पहचाने, अपनी चेतना का साक्षात्कार करे, यही तुलसी साधना शिखर का विशेष ध्येय है।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापथी मानव हितकारी सघ, राण (पाली)

इस सस्थान मे निम्न प्रवृत्तिया चालू है—

१ श्री जैन तेरापथ महाविद्यालय, राणावास

२ श्री सुमति शिक्षा सदन उच्च माध्यमिक विद्यालय, राणावास

३ श्री सुमति शिक्षा सदन प्राथमिक विद्यालय, राणावास

४ श्री पी० एच० रूपचद्र डोसी माध्यमिक विद्यालय, गुडारामसिह

उपरोक्त महाविद्यालय/विद्यालय से सम्बद्ध निम्न छात्रावास भी सस्थान द्वारा ही सचालित किए जा रहे है—

१ श्री रायचद छोगालाल जैन छात्रावास (महाविद्यालय छात्रो हेतु)

२ श्री आदर्श निकेतन छात्रावास (श्री सुमति शिक्षा सदन विद्यालय छात्रो हेतु)

३ श्री हस्तीमल घीसूलाल गादिया जैन तेरापथ औषधालय, गुडाराम सिंह

साहित्यिक प्रकाशन

१ महाविद्यालय अपने स्तर पर वार्षिक पत्रिका अनुशीलन का प्रकाशन प्रतिवर्ष करता है।

२ इसी प्रकार श्री सुमति शिक्षा सदन उच्च माध्यमिक विद्यालय अपने स्तर पर विवेक पत्रिका प्रकाशित करवाता है।

३ इसी प्रकार सत्र के दौरान महाविद्यालय एव विद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिताओ का आयोजन करता है तथा जिला एव राज्य स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओ मे छात्रो को भेजता हे।

अन्य रचनात्मक कार्य

शैक्षणिक प्रवृत्तियो से सबधित छात्रावासो मे छात्रो के व्यक्तित्व को निखारने एव उन्हे भारत के अच्छे नागरिक तैयार के प्रयत्न रहते हे।

जीवन-विज्ञान एव प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण नियमित रूप से छात्रावास प्रणाली का अग बना दिया गया है।

समय-समय शिविर का आयोजन कर छात्रो को दैनिक-जीवन मे उपयोगी कार्यो का प्रशिक्षण एव उन्हे स्वावलम्वी जीवन के प्रति रुचि उत्पन्न करने का कार्य करवाया जाता है।

परीक्षा परिणाम—हायर सेकेण्ड्री

वर्ग/संकाय	कुल छात्र	उत्तीर्ण	पूरक	अनुत्तीर्ण	प्रतिशत
कला	१७	१२	१	४	७० ७%
विज्ञान	१९	१२	२	५	७३%
वाणिज्य	४८	४४	—	४	९०%
योग	८४	६८	३	१३	८१%
सेकण्ड्री					
कला	१०	८	०	२	८०%
विज्ञान	१७	१७	०	—	१००%
वाणिज्य	६०	४६	४	१०	७६ ६%
योग	८७	७१	४	१२	८१ ७%
महाविद्यालय-कला संकाय					
प्रथम वर्ष	२७	२४	—	३	८५ १८%
द्वितीय वर्ष	१०	७	—	३	७०%
तृतीय वर्ष	८	८	—	—	१००%
वाणिज्य संकाय					
प्रथम वर्ष	७५	४९	—	२६	६५ ३०%
द्वितीय वर्ष	४८	३५	—	१३	७२ ९१%
तृतीय वर्ष	२०	१८	—	२	९०%

इस संस्थान मे वक्तृत्व कला विकास, खेलकूद मे रुचि-जागरण व नई प्रतिभाओ की खोज के अनेक उपक्रम सम्पन्न हुए। अनेक वादविवाद व भाषण प्रतियोगिताए समायोजित हुई। अनेक छात्रो ने प्रांतीय स्तर की निबन्ध, रेखा चित्र, खेलकूद आदि प्रवृत्तियो मे भाग लिया और अच्छा स्थान प्राप्त किया। जैन विश्व भारती द्वारा संचालित जैन विद्या परीक्षाओ मे इस संस्थान का परीक्षा परिणाम लगभग शतप्रतिशत ठीक रहा। श्री दिनेश बाफना ने जैन विद्या रत्न द्वितीय वर्ष मे अखिल भारतीय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

राणावास स्कूल के अतिरिक्त तेरापन्थ समाज द्वारा अनेको प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, उच्च माध्यमिक तथा महाविद्यालय संचालित है, जिनमे कलकत्ता स्कूल, चूरु स्कूल, जय विद्या विहार (जयपुर) मुख्य है। कलकत्ता मित्र परिषद् की भी अपनी पृथक् पहचान है। इस संस्थान के अन्तर्गत स्थापित युवाचार्य महाप्रज्ञ साहित्य प्रकाशन कोष से युवाचार्यश्री की पुस्तके प्रकाशित

होती रहती है । तेरापथ सेवा समिति, अहमदाबाद ने गरीब बच्चो को नि शुल्क कॉपिया वितरित कर सामाजिक दायित्व का निवहन किया । नियोजन मडल, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापथी महासभा ने मघीय-कायक्रमो का कुशलतापूवक सचालन किया ।

जय तुलसी फाउण्डेशन ने प्रतिवप की भाति सन् १९८४ का अणुव्रत पुरस्कार भूदान आदोलन के प्रणेता श्री विनोवा भावे के अनुज श्री शिवाजी भावे को तथा १९८५ का सुप्रसिद्ध गाधीवादी विचारक, पूव गृह मत्री श्री गुलजारीलाल नदा को दिया गया । उनको प्रशस्ति पत्र के साथ एक लाख रुपये का चेक भी दिया गया । फाउण्डेशन का मुख्य उद्देश्य समाज के असहाय, अक्षम परिवारो को रोजगार मुहैया कराना तथा आर्थिक सहायता करना है ।

अखिल भारतीय अणुव्रत ममिति द्वारा अणुव्रत पाक्षिक पत्र व अणुव्रत परीक्षाओ का सचालन होता है । राजसमद मे तुलसी साधना शिखर के सलग्न ही अणुव्रत विश्व भारती का निर्माण कार्य चल रहा हे । इसकी विस्तृत योजना है, अनेको प्रवृत्तिया चल रही है ।

आदर्श साहित्य सघ का अणुव्रत के उत्स के साथ ही प्रारम्भ हो गया । तव से अव तक सैकडो पुस्तके इस सस्थान द्वारा छपी ह ओर जनता द्वारा समादृत हुई हैं । वर्तमान मे इसके अध्यक्ष श्री वच्छराज कठौतिया तथा प्रवन्धक श्री कमलेश चतुर्वेदी है । इस सस्थान द्वारा प्रति सप्ताह आचाय श्री, युवाचार्य श्री एव साध्वी प्रमुखा श्री के सान्निध्य मे हो रहे कायक्रमो का सुन्दर सकलन होता हे । आलोच्य वर्ष मे सस्थान द्वारा अनेको पुस्तके प्रकाशित हुई ।

पारमार्थिक शिक्षण सस्था मे जो वहिने आती ह । वे साधना के साथ-साथ ज्ञानाभ्यास भी करती है । इस सस्था के द्वारा अनेको वहिने सस्कृत, प्राकृत, अग्रेजी, सिद्धान्त आदि विषयो मे निष्णात वनी ह । सस्था द्वारा सचालित ब्राह्मी विद्यापीठ मे विश्वविद्यालय तथा जैन विश्व भारती— इन दोनो द्वारा मान्यता प्राप्त पाठ्यक्रम पढाया जाता है । आलोच्य वप मे सम्पन्न परीक्षाओ मे प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त मुमुक्षु वहिनो के नाम निम्नोक्त है—

वार्षिक परीक्षा १९८४-८५ मे प्रथम, द्वितीय, तृतीय

प्राक् स्नातक प्रथम वर्ष

१ मुमुक्षु गुलाव जैन—प्रथम ७७ ०५%

२ ,, मनोज जैन—द्वितीय ७० ०६%
३ ,, कल्पना जैन—तृतीय ५६ ३७%

प्राक् स्नातक प्रथम वर्ष
१ मुमुक्षु आरती जैन—प्रथम ७०%
२ ,, कान्ता जैन—द्वितीय ६७ ८३%
३ ,, नन्दा जैन—तृतीय ६६ ४३%

स्नातक प्रथम वष
१ मुमुक्षु सम्पत जैन—प्रथम ७१ ७२%
२ ,, स्वस्तिका जैन—द्वितीय ६६ ६८%
३ ,, मीनाक्षी जैन—तृतीय ६३ ०४%

स्नातक द्वितीय वर्ष
१ मुमुक्षु आशा जैन—प्रथम ६६ २८%
२ ,, मधु जैन—द्वितीय ६७ २८%
३ ,, हसा जैन—तृतीय ६७ १२%

स्नातक तृतीय वर्ष
१ मुमुक्षु मुक्ता जैन—प्रथम ७४ ६७%

आशिक तृतीय वर्ष
१ मुमुक्षु सरला—प्रथम ८३ ६१%
२ ,, ममता—द्वितीय ८१ ८०%

बी० ए० द्वितीय वर्ष
१ मुमुक्षु लेखा जैन—प्रथम ६८ ८३%
२ , सुबोध जैन—द्वितीय ६७%
३ ,, राजू जैन—तृतीय ६३ ६७%

बी० ए० तृतीय वर्ष
१ मुमुक्षु प्रतिभा जैन—प्रथम ६४ ७३%
२ ,, नलिनी जैन—द्वितीय ६२ ४७%

विद्यापीठ मे प्रथम, द्वितीय, तृतीय
१ मुमुक्षु सरला जैन—प्रथम
२ ,, ममता जैन—द्वितीय
३ ,, गुलाव जैन—तृतीय